अहले दिल के तड़पा देने वाले

वाक़िआत

इफ़ादात

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़्क़ार साहब नक़्शबंदी

तर्तीब

मुफ़्ती इनामुलहक़ साहब क़ासमी

अहले दिल के तड़पा देने वाले वाक़िआत

इफ़ादात

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़ुक़्क़ार साहब नक़्शबंदी

तर्तीब

मुफ़्ती ईनामुलहक़ क़ासमी

فرید بک ڈپو (پرائیویٹ) لمیٹڈ
FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.
NEW DELHI-110002

फ़हरिस्त-मज़ामीन
(विषय-सूची)

मुहब्बते इलाही

* * *

मुहब्बते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

* * *

इत्तिबाए रसूल (सल्ल॰लाहु अलैहि वसल्लम)

* * *

सोहबते शेख़

* * *

ज़िक्रे इलाही

* * *

मआरिफ़त व मअइयत

* * *

अक़ीदत और मुहब्बत व अदब

* * *

निस्बत और बरकत व करामत

* * *

ईमान व यक़ीन व इस्तिक़ामत

* * *

बरकते इल्म

* * *

शौक़े इल्म और ज़ौक़े मुताला

* * *

ज़हानत व ज़कावत

* * *

तर्बियत और परवरिश

* * *

इबादत व रियाज़त

* * *

हज-ए-बैतुल्लाह

* * *

तिलावते कलाम पाक

* * *

दुआ और आह व ज़ारी

* * *

इख़्लास और रिया

* * *

क़द्र व मंज़िलत और हौसला अफ़ज़ाई

* * *

ज़ोहद व इस्तिग़ना

* * *

ख़ुदाई रिज़्क़ और जूद व सख़ा

* * *

ख़ौफ़ व ख़शियत और तौबा व मग़फ़िरत

* * *

शैतान और गुनाह व मआसियत

* * *

शर्म व हया और इफ़्फ़त व पाकदामनी

* * *

शुक्र व इम्तिनान (एहसान करना)

* * *

तवाज़ो व इन्किसारी और उज्ब व किब्र

* * *

उजब व किब्र (घमंड)

* * *

हिर्स व हसद

* * *

हुस्ने मआशरत और हुस्ने अख़्लाक़

* * *

मौत क़ब्र और मैदाने हश्र

* * *

मुक़द्दमा

कलामे रब्बानी और किताबे इलाही के एक हिस्से में क़िस्से ज़िक्र किए गए हैं जिसका मक़सद किसी बड़ी हक़ीक़त को क़िस्सों और मिसाल के अन्दाज़ में ज़हन में बिठाना, सोए हुए दिलों को जगाना और अल्लाह के ख़ास बन्दों के नक़्शे क़दम पर चलने का शौक़ दिलाना है और क़ौमों के उठने और गिरने की दास्तान सुनाकर आला अख़्लाक़ की रोशनी दिखाना। इसी हिकमत और मसलेहत को सामने रखते हुए हर दौर में नबुव्वत के इल्म के पासबान तक़रीर और तहरीर में, इताअत व इबादत, मुहब्बत और मारिफ़त, इल्म व इस्तिक़ामत और अच्छे अख़्लाक़ हासिल करने के लिए तड़पा देने वाले वाक़िआत बयान करते आए हैं। इसी क़िस्म के वाक़िआत का यह मजमुआ है जो हज़रत अक़्दस आरिफ़बिल्लाह मौलाना ज़ुलफ़ुक़्क़ार साहब नक़्शबंदी दामत बरकातुहुम की ज़बाने फ़ैज़ से निकला है।

इस तर्तीब में नीचे लिखी बातें ध्यान में रखी गयीं हैं:

1. हर वाक़िए को किसी न किसी उनवान के तहत ज़िक्र किया गया है।
2. वाक़िआत हज़रतवाला के अल्फ़ाज़ में ही नक़्ल किए गए हैं।
3. एक ही वाक़िए के चंद पहलुओं को ध्यान में रखते हुए हज़रत ने अलग-अलग जगहों पर एक ही वाक़िए को बयान फ़रमाया है लेकिन यहाँ ज़्यादती से बचने के लिए किसी एक ही बाब में ज़िक्र किया गया है।

4 हज़रत की सत्रह किताबों (ख़ुत्बाते ज़ुलफ़ुक्क़ार 12 हिस्से, सकूने दिल, तमन्नाए दिल और दवाए दिल, इश्क़े इलाही, इश्क़ रसूल में ज़िक्र किए गए वाक़िआत इसमें जमा किए गए हैं।)

5. सन् 1427 हि० में मौसमे हज के मौक़े पर मक्का मुकर्रमा में हज़रत अक़्दस मौलाना पीर ज़ुलफ़ुक्क़ार नक़्शबंदी को यह मज़मून पेश किया तो हज़रत मौलाना ने ही इस किताब का नाम यह तय फ़रमाया।

शुक्रिया

इस किताब के लिखने में मैं अपने तमाम मोहसिनों का शुक्र अदा करना ज़रूरी समझता हूँ जिनकी मदद शामिल रही। जिनमें बतौर ख़ास हज़रत अक़्दस के ख़लीफ़ा ख़ास मौलाना सलाहुद्दीन साहब नक़्शबंदी हैं जिनकी हिम्मत बढ़ाने और रहनुमाई से हौसला मिला। इसके अलावा रफ़ीक़ मुकर्रम जनाब मौलाना रज़ी आलम साहब क़ासमी का दिल की गहराई से शुक्रगुज़ार हूँ जिन्होंने हर क़िस्म की मशग़ूलियों के बावजूद प्रुफ़रीडिंग का काम ख़ूबी के साथ अंजाम दिया। और रफ़ीक़ मोहतरम जनाब मौलाना मज़हर आलम साहब क़ासमी का भी दिल से शुक्रगुज़ार हूँ जिन्होंने नक़ल वग़ैरह में भरपूर साथ दिया। इसी के साथ मौलाना साजिद साहब भाईजी ख़ानपूरी का भी शुक्रगुज़ार हूँ कि जिन्होंने अपनी खुली तबियत से कम्पोज़िंग का काम अच्छी तरह अंजाम दिया।

﴿جزاهم الله خير الجزاء في الدارين﴾

❋ ❋ ❋

﴿والذين آمنوا اشد حبا لله﴾

मुहब्बते इलाही

पत्थर से हो खुदा से या फिर किसी से हो
आता नहीं है चैन मुहब्बत के बग़ैर
दिल बहरे मुहब्बत है मुहब्बत ही करेगा
लाख इसको बचाओ किसी पर तो मरेगा

मुहब्बते इलाही

ज़िक्रे हबीब ने तड़पा दिया दिल

एक बार हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम अपनी बकरियों का रेवड़ चरा रहे थे। एक आदमी क़रीब से गुज़रा। गुज़रते हुए उसने अल्लाह तआला की शान में ये अल्फ़ाज़ ज़रा बुलंद आवाज़ से कहे,

سبحان ذی الملك والملكوت سبحان ذی العزت
والعظمة والهيبة والقدرة الكبرياء والجبروت.

पाक है वह ज़मीन की बादशाही और आसमान की बादशाही वाला। पाक है वह इज़्ज़त, बुज़ुर्गी, हैबत और क़ुदरत वाला और बड़ाई दबदबे वाला।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने जब अपने महबूबे हक़ीक़ी की तारीफ़ इतने प्यारे अल्फ़ाज़ से सुनी तो दिल मचल उठा। फ़रमाया कि ऐ भाई ये अल्फ़ाज़ एक बार और कह देना। उसने कहा कि मुझे इसके बदले में क्या देंगे। आपने फ़रमाया आधा रेवड़। उसने ये अल्फ़ाज़ दोबारा कह दिए। आपको इतना मज़ा आया कि बेक़रार होकर फ़रमाया ऐ भाई ये अल्फ़ाज़ एक बार फिर कह दीजिए। उसने कहा अब इसके बदले में मुझे क्या दोगे? फ़रमाया बाक़ी आधा रेवड़। उसने ये अल्फ़ाज़ तीसरी बार कह दिए। आपको इतना सुरूर मिला कि एकदम कहा ऐ भाई ये अल्फ़ाज़ एक बार और कह दीजिए। उसने कहा अब तो आपके पास देने के लिए कुछ बचा नहीं, अब आप क्या देंगे? फ़रमाया कि ऐ भाई मैं तेरी बकरियाँ चराया करूँगा, तुम एक बार मेरे महबूब की तारीफ़ और कर दो। उसने कहा हज़रत

इब्राहीम ख़लीलुल्लाह आपको मुबारक हो, मैं तो फ़रिश्ता हूँ। मुझे अल्लाह तआला ने भेजा है कि जाओ और मेरा नाम लो और देखो कि वह मेरे नाम के क्या दाम लगाता है। (इश्के इलाही 31)

एकदम भी मुहब्बत छिप न सकी जब तेरा किसी ने नाम लिया

जान दी दी हुई उसी की थी हक़ तो यह के हक़ अदा न हुआ

दरबारे हबीब में पहुँच जाऊँ कब?

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की रूह लेने के लिए मौत के फ़रिश्ते आए। उन्होंने फ़रमाया :

﴿هل رايت خليلا يقبض روح خليله.﴾

क्या आपने किसी ऐसे दोस्त को देखा जो अपने ख़लील की रूह क़ब्ज़ कर रहा हो?

उन्होंने कहा अच्छा मैं अल्लाह तआला से पूछता हूँ। मौत के फ़रिश्ते ने अल्लाह तआला के हुज़ूर में अर्ज़ किया। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि जाओ मेरे हबीब को पैग़ाम दे दो,

﴿هل رايت خليلا يكره لقاء خليله.﴾

क्या तुमने किसी दोस्त को देखा कि अपने दोस्त की मुलाक़ात से इंकार करे?

जैसे ही उनको पता चला कि मौत अल्लाह तआला की मुलाक़ात का तरीक़ा है, कहने लगे ﴿عجل عجل﴾ जल्दी कर, जल्दी रूह क़ब्ज़ कर, मुझे अपने मालिक से मिला दे। यह थी तमन्ना हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की कि अब तो जल्द से जल्द अपने प्यारे अल्लाह के हुज़ूर में जा पहुँचें और मुलाक़ात हबीब से लुत्फ़अंदोज़ हों। इसीलिए हदीस पाक में फ़रमाया, हदीसे क़ुदसी है :

﴿الا طال شوق الابرار الى لقائى وانا اليهم لاشد شوقا.﴾

मुलाक़ात कर, कि मेरे नेक लोगों का शौक़ मेरी मुलाक़ात के लिए बढ़ गया और मैं उनकी मुलाक़ात के लिए उनसे भी ज़्यादा मुश्ताक़ हूँ।

(तमन्नाए दिल 239)

उलफ़त में जब मज़ा है के हों वह भी बेक़रार
दोनों तरफ़ हो आग बराबर लगी हुई

इबादतों का तोहफ़ा ग़िलाफ़े मुहब्बत के साथ

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने देखा कि हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा बैठी हुई दिरहम धो रही हैं। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम हैरान हुए। फ़रमाया, हुमैरा। जवाब दिया लब्बैक या रसूलुअल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)। (आपने फ़रमाया) यह क्या कर रही हो? कहने लगीं ऐ अल्लाह के नबी दिरहम धो रही हूँ। फ़रमाया किस लिए? ऐ अल्लाह के नबी मैंने आपकी ज़बाने मुबारक से यह बात सुनी है कि जब अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने वाला किसी सवाली को देता है तो वह पैसे सवाली के हाथ में पहुँचने से पहले अल्लाह तआला के हाथ में पहुँच जाते हैं। जब से मैंने यह बात सुनी, मैं हमेशा सदक़ा उन पैसों का देती हूँ जिनको पहले से धो लेती हूँ ताकि मेरे आक़ा के हाथों में साफ़ और पाक माल पहुँच जाए। अल्लाहु अकबर! यह मुहब्बत देखिए। जिससे मुहब्बत होती है उसको फलों की टोकरी भी भेजता है तो उसको गिफ़्ट पैक करके के भेजता है। मंगनी और ईद पर अगर बिस्कुट का डिब्बा हो तो उसको भी गिफ़्ट-पैक करके भेजता है। अल्लाह वाले भी इसी तरह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की इबादत करते हैं तो वह भी अपनी नमाज़ों को

मुहब्बत की गिलाफ़ में पैक करके अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुज़ूर में भेज रहे होते हैं। (तमन्नाए दिल स० 51)

मेरी क़िस्मत से इलाही पाएं ये रंग क़ुबूल
फूल कुछ मैंने चुने हैं उनके दामन के लिए

मेरे महबूब को क़सम की ज़रूरत क्या है

एक सहाबी बकरियाँ चराते थे। जब कभी मदीना तैय्यबा वापस होते तो पूछते कि क़ुरआन पाक की कौन सी नई आयतें उतरी हैं? नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कोई ख़ास बात इर्शाद फ़रमाई? उनको बता दिया जाता। एक दफ़ा वापस आकर पूछा तो उन्हें बता दिया गया कि यह आयत उतरी है जिनमें अल्लाह तआला ने क़सम खाकर फ़रमाया मेरे बंदो! मैं ही तुम्हें रिज़्क़ देने वाला हूँ। जब उन्होंने यह बात सुनी तो वह नाराज़ होने लगे और कहने लगे कि वह कौन है जिसको यक़ीन दिलाने के लिए मेरे अल्लाह को क़सम खानी पड़ी? सुब्हानअल्लाह! यह मुहब्बत की बात है।

तेरे इश्क़ की इन्तिहा चाहता हूँ
मेरी सादगी तो देख क्या चाहता हूँ

हज़रत ज़िन्नेरा की मुहब्बते इलाही में बेताबी

सैय्यदा ज़िन्नेरा एक सहाबिया हैं जो कि अबूजहल की ख़ादिमा थीं। आपने कलिमा पढ़ लिया। अबूजहल को भी पता चल गया। उसने आकर पूछा, क्या कलिमा पढ़ लिया? फ़रमाया हाँ। आप बड़ी उम्र की थीं, मुशक़्क़तें नहीं उठा सकती थीं मगर अबूजह्ल ने एक दिन अपने दोस्तों को बुलाया और उनके सामने उन्हें मारना शुरू कर दिया लेकिन बरदाश्त करती रहीं क्योंकि वह तो अल्लाह के नाम पर

बड़ी से बड़ी तकलीफ़ बरदाश्त करने के लिए तैयार थीं। जब उसने देखा कि मारने के बावजूद उनकी ज़बान से कुछ नहीं निकला तो उसने आपके सर पर कोई चीज़ मारी जिससे आपकी आँखों की रोशनी चली गई और आप अंधी हो गयीं। अब उन्होंने मज़ाक़ करना शुरू कर दिया। कहने लगे देखा हमारे बुतों की पूजा छोड़ चुकी थी इसलिए हमारे बुतों ने तुम्हें अंधा कर दिया। मार बरदाश्त कर चुकी थीं, मुशक़्क़तें उठा चुकी थीं। ये सब सज़ाए बरदाश्त करना आसान थीं। मगर जब उन्होंने यह बात कही तो आप बरदाश्त न कर सकीं चुनाँचे फ़ौरन तड़प उठीं। उसी वक़्त कमरे में जाकर सज्दे में गिर गयीं और अपने महबूबे हक़ीक़ी से राज़ व नियाज़ की बातें करने लग गयीं। अर्ज़ किया ऐ अल्लाह! उन्होंने मुझे सज़ाए दीं तो मैंने बरदाश्त किया और मेरी हड्डियाँ भी तोड़ देते, वे मेरे जिस्म को छलनी कर देते तो मैं यह सब कुछ बरदाश्त कर लेती मगर तेरी शान में गुस्ताख़ी की कोई बात बरदाश्त नहीं कर सकती। वे तो यूँ कहते हैं कि हमारे माबूदों ने तुम्हारी रोशनी छीन ली। ऐ अल्लाह! जब मैं कुछ नहीं थी तो तूने मुझे बना दिया, रोशनी भी अता कर दी, अब तूने ही रोशनी वापस ले ली। ऐ अल्लाह! तू मुझे दोबारा रोशनी अता फ़रमा दे ताकि इन पर तेरी अज़मत खुल जाए। अभी दुआ वाले हाथ चेहरे पर नहीं फेरे थे कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने आपकी रोशनी लौटा दी। सुब्हानअल्लाह! इस वक़्त मर्द तो मर्द औरतों में भी मुहब्बते इलाही का जज़्बा भरा हुआ था। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 3/36)

जब इश्क़ से तेरे भर गए हम
तू ही रहा जिधर गए हम
तेरी ही तरफ़ को राह निकली
भूले भटके जिधर गए हम

ख़ुदा से मुहब्बत भरी गुफ़्तगू

बनी इसराईल में एक सादा सा आदमी बैठा बातें कर रहा था कि ऐ अल्लाह! मैंने सुना है कि तेरी बीवी नहीं, तेरे बच्चे नहीं, कभी मेरे पास आता तो मैं तेरी ख़िदमत करता, मैं तेरे कपड़े धोता, तुझे खाना देता। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम उधर से गुज़रे। फ़रमाने लगे, ऐ अल्लाह के बंदे! यह तो अल्लाह की शान में गुस्ताख़ी है। सादा सा आदमी था, डर गया, काँप गया। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त को उसका डरना और काँपना इतना पसंद आया कि अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम कि तरफ़ 'वही' फ़रमा दी जिसको किसी शायर ने यूँ कहा—

तू बराए वस्ल करदन आमदी
ने बराए फ़स्ल करदन आमदी

ऐ नबी! मैंने तुझे जोड़ने के लिए भेजा था, तोड़ने के लिए नहीं भेजा था। क्यों? इसलिए कि अगरचे ज़ाहिरी तौर पर बातों का मतलब सही नहीं था लेकिन मुहब्बत तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से थी।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 1/104)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुलबजादैन रज़ियल्लाहु अन्हु और मुहब्बते इलाही

मुहब्बते इलाही का जज़्बा इंसान के दिल में हो तो अल्लाह तआला बड़ी क़द्रदानी फ़रमाते हैं। मुहब्बत में ऐसी कैफ़ियत हो जैसी हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुल-बजादैन रज़ियल्लाहु अन्हु को नसीब हुई थी।

यह एक नौजवान सहाबी थे जो मदीना तैय्यबा से कुछ फ़ासले पर एक बस्ती में रहते थे। दोस्तों से मालूम हुआ कि मदीने तैय्यबा में

एक पैग़म्बर अलैहिस्सलातु वस्सलाम तशरीफ़ लाए हैं। चुनाँचे हाज़िर हुए और चोरी छिपे कलिमा पढ़ लिया। वापस घर आए। घर के सब लोग अभी काफ़िर थे लेकिन मुहब्बत तो वह चीज़ है जो छिप नहीं सकती। अपनी तरफ़ से तो छिपाया कि किसी को पता न चले मगर नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम का कोई ज़िक्र करता तो ये मुतवज्जेह होते—

एकदम भी मुहब्बत छिप न सकी
जब तेरा किसी ने नाम लिया

चुनाँचे घर वालों ने अंदाज़ा लगा लिया कि कोई न कोई मामला ज़रूर है। एक दिन चचा ने खड़ा करके पूछा बताओ भाई कलिमा पढ़ लिया है? फ़रमाने लगे जी हाँ। चचा कहने लगा अब तेरे सामने दो रास्ते हैं या तो कलिमा पढ़कर घर से निकल जा और अगर घर में रहना है तो फिर हमारे दीन को क़ुबूल कर ले। चुनाँचे एक ही लम्हे में फ़ैसला कर लिया। फ़रमाने लगे मैं घर तो छोड़ सकता हूँ लेकिन अल्लाह के दीन को नहीं छोड़ सकता। चचा ने मारा पीटा भी और जाते हुए जिस्म के कपड़े भी उतार लिए जिस्म पर कोई कपड़ा न था। माँ आख़िर माँ होती है, शौहर की वजह से ज़ाहिर में कुछ कह तो न सकी लेकिन छिपकर अपनी चादर पकड़ा दी कि बेटा! सतर छिपा लेना। वह चादर लेकर जब बाहर निकले तो उसके दो टुकड़े किए। एक से सतर छिपा लिया और दूसरी ओढ़ ली। इसीलिए ज़ुल बजादैन यानी दो चादरों वाले मशहूर हो गए। अब कहाँ गए? जहाँ सौदा कर चुके थे। क़दम अपने आप मदीना तैय्यबा की तरफ़ बढ़ रहे हैं। रात को सफ़र करके सुबह को नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने देखा तो चेहरे पर अजीब ख़ुशी की कैफ़ियत ज़ाहिर हुई।

सहाबा किराम मुतवज्जेह हुए कि यह कौन आया कि जिसको देखकर अल्लाह के महबूब का चेहरा यूँ तमतमा उठा है—

दोनों जहाँ किसी की मुहब्बत में हार के
वह आ रहा है कोई शबे ग़म गुज़ार के

हाज़िरे ख़िदमत हुए और अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी! सब कुछ छोड़ चुका हूँ। अब तो आप सल्लल्लहु अलैहि वसल्लम के क़दमों में हाज़िर हुआ हूँ। लिहाज़ा अस्हाबे सुफ़्फ़ा में शामिल हो गए और वहीं रहना शुरू कर दिया।

क्योंकि क़ुर्बानी बहुत बड़ी दी थी। मुहब्बते इलाही में अपना सब कुछ दाँव पर लगा दिया था इसलिए इसका बदला ऐसा ही मिलना चाहिए था। इसलिए उनको ऐसी कैफ़ियतें हासिल थीं कि मुहब्बते इलाही में कभी-कभी जज़्ब में आ जाते थे। आजकल के लोग पूछते हैं कि जनाब जज़्ब क्या होता है? जनाब हदीसे मुबारका पढ़ो फिर पता चलेगा कि जज़्ब सहाबा किराम पर भी तारी होता था। हदीसे मुबारका में आया है कि यह (हज़रत अब्दुल्लाह ज़ुल-बजादैन रज़ियल्लाहु अन्हु) मस्जिदे नबवी के दरवाज़े पर कभी-कभी बैठे होते थे और ऐसा जज़्ब तारी होता था कि ऊँची आवाज़ में *अल्लाह! अल्लाह! अल्लाह!* कह उठते थे। हज़रत उमर रज़ियल्लहु अन्हु ने देखा तो उन्होंने डांटा कि क्या करता है। यह सुनकर अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, उमर! अब्दुल्लाह को कुछ न कहो। यह जो कुछ कर रहा है इख़्लास से कर रहा है।

कुछ अरसा गुज़रा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक ग़ज़्वे में तशरीफ़ ले गए। हज़रत अब्दुल्लाह भी साथ थे। रास्ते में एक जगह पहुँचे तो बुख़ार हो गया। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पता चला तो आप, अबूबक्र व उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा

को साथ लेकर तश्रीफ़ लाए। जब वहाँ पहुँचे तो हज़रत अब्दुल्लाह के कुछ लम्हें बाक़ी थे। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके सर को अपनी गोद मुबारक में रख लिया। यह वह ख़ुशनसीब सहाबी हैं जिनकी निगाहें चेहरा-ए-रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर लगी हुई थीं और वह अपनी ज़िंदगी के आख़िरी साँस ले रहे थे, सुब्हानअल्लाह। गोद मुबारक में अपनी जान इस कैफ़ियत में जान देने वाले के सुपुर्द कर दी।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि कफ़न-दफ़न की तैयारी करो। आपने अपनी चादर मंगवाई और फ़रमाया कि अब्दुल्लाह को इस चादर में कफ़न दिया जाएगा। सुब्हानअल्लाह! वाह अल्लाह! तू भी कितना क़द्रदान है कि जिस बदन को तेरी राह में नंगा किया गया था आज तू उस बदन को अपने महबूब की कमली में छिपा रहा है। सुब्हानअल्लाह! सौदा करके तो देखें। फिर देखें कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त कैसी क़द्रदानी फ़रमाते हैं। हम लोग ही बेक़द्रे हैं कि अल्लाह तआला को भी कहना पड़ा,

﴿وما قدروا الله حق قدره﴾

और उन्होंने अल्लाह तआला की क़द्र नहीं की जैसी करनी चाहिए थी।

ख़ुद नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनका जनाज़ा पढ़ाया। फिर जनाज़ा लेकर क़ब्रिस्तान की तरफ़ चले। शरिअत का मस्अला यह है कि जो आदमी मैय्यत का सबसे ज़्यादा क़रीबी हो तो वह क़ब्र में उसको उतारने के लिए उतरे। उस वक़्त अबूबक्र व उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा भी खड़े थे। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने ख़ुद क़ब्र में उतरकर फ़रमाया कि अपने भाई को पकड़ा दो मगर उनके अदब का ख़्याल रखना। आपने उस आशिक़ सादिक़ को अपने हाथों

में लिया और ज़मीन पर लिटा दिया गोया अपनी अमानत को ज़मीन के सुपुर्द कर दिया।

हदीसे मुबारक का ख़ुलासा है अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब उनको ज़मीन पर रखा तो आप ने इर्शाद फ़रमाया,

"ऐ अल्लाह मैं अब्दुल्लाह से राज़ी हूँ तू भी इससे राज़ी हो जा।"

ये ऐसे बोल थे कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु भी सुनकर वज्द में आ गए और कहने लगे मेरा जी चाहता है कि काश! आज नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुबारक हाथों में मेरी मैय्यत होती। देखा मेहनत व मुजाहिदा और क़ुर्बानियाँ करने वालों को अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त यूँ बदला दिया करते हैं। आप सोचिए कि जो आक़ा अपने कमज़ोर बंदों को हुक्म फ़रमाता है,

﴿هل جزاء الاحسان الا الاحسان﴾

तो कोई अगर उसके लिए क़ुर्बानियाँ दे तो क्या अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त क़द्रदानी नहीं फ़रमाएंगे। ज़रूर फ़रमाएंगे, सुब्हानअल्लाह।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 5/35-36)

मुहब्बत पर लाख रुपए का शे'र

ख़्वाजा अब्दुल अज़ीज़ मज्ज़ूब रह० हज़रत अक़्दस थानवी रह० के ख़लीफ़ा मजाज़ थे। उन्होंने एक शे'र लिखा और अपने पीर व मुर्शिद को दिखाया। हज़रत थानवी रह० ने शे'र सुनकर फ़रमाया कि अगर मैं मालदार होता तो एक लाख रुपया ईनाम देता। यह उस ज़माने की बात है जब स्कूल जाने के लिए एक पैसा भी नहीं मिलता था। यह उस दौर की बात है जब इंजीनियर की तंख़्वाह पंद्रह रुपया हुआ करती थी। वह शे'र क्या था? बड़ा छोटा सा, सादा, दिल में उतर जाने

वाला, अजीब बात कही मगर दिल की कहानी बयान कर दी, फ़रमाया–

हर तमन्ना दिल से रुख़सत हो गई
अब तो आजा अब तो ख़लवत हो गई

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 3/56)

महबूब की रज़ा में खोटे सिक्के भी मंज़ूर

हज़रत उस्मान ख़ैराबादी रह० एक बुज़ुर्ग गुज़रे हैं। उनकी एक दुकान थी। उनकी आदत थी कि जब कोई ग्राहक आता और उसके पास कभी कोई खोटा सिक्का होता तो वह पहचान तो लेते थे मगर फिर भी वह रख लेते और सौदा दे देते थे। उस दौर में चाँदी के बने हुए सिक्के होते थे। वह सिक्के घिसने की वजह से खोटे कहलाते थे। वह खोटे सिक्के जमा करते रहते थे। सारी ज़िंदगी यही मामूल रहा। जब मौत का वक़्त क़रीब आया तो आख़िरी वक़्त उन्होंने पहचान लिया। उस वक़्त अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुज़ूर हाथ उठाकर दुआ करने लगे कि ऐ अल्लाह! मैं सारी ज़िंदगी तेरे बंदों के खोटे सिक्के वसूल करता रहा तो तू भी मेरे खोटे अमलों को क़ुबूल फ़रमा ले। *सुब्हानअल्लाह!* मुहब्बते इलाही के रंग में ऐसे रंगे हुए थे।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 3/85)

इश्क़ व मुहब्बत की दुकान देखी है आपने

मेरे दोस्तो! अल्लाह की क़सम खाकर अर्ज़ करता हूँ, इस आजिज़ ने कभी इस तरह क़समें नहीं खायीं मगर आज मेरे जी ने चाहा कि यह बात अर्ज़ कर दी जाए कि इस आजिज़ ने भी अपनी ज़िंदगी में इश्क़ की एक दुकान देखी है, इसके गवाह हज़रत हकीम अब्दुल लतीफ़ साहब बैठे हैं। वह इश्क़ की दुकान चकवाल में देखी थी। वहाँ पीने वाले आते थे। कोई पूरब से आता कोई पश्चिम से आता, कोई

पेशावर से आता था तो कोई कराची से आता था, कहीं से मुनीर साहब चले आ रहे होते थे, कहीं से हकीम अब्दुल लतीफ़ साहब आ रहे होते थे, कहीं से मौलाना नईमुल्लाह साहब आ रहे होते थे। कहीं से कोई इश्क़ की पुड़िया लेने आता था और कहीं से कोई इश्क़ का प्याला पीने के लिए आता था। ये इश्क़ के सौदाई, ये मुहब्बते इलाही के मंगते, ये मुहब्बते इलाही लेने वाले फ़क़ीर बेताब होकर अपने घरों से खिंचे चले आते थे।

ये यहाँ जाते थे। वहाँ एक मोहसिन और शेख़ थे जिनकी ज़िंदगी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुक्मों के मुताबिक़ ढल चुकी थी, जिनका सीना इश्क़े इलाही से भर चुका था। वह इश्क़ की दवा देते थे। कभी किसी को तन्हाइयों में बिठाकर देते थे, कभी किसी से बयान करवा देते थे, कभी किसी को सामने बिठाकर देते, कभी किसी को डांट पिलाकर देते। जो इश्क़ की दवा पी लेते थे वे अपने सीनों में इश्क़ की गर्मी लेकर जाते थे। मैं कभी-कभी सोचता हूँ कि जब इन हज़रात के सीनों में उन्होंने इश्क़ की ऐसी गर्मी भर दी तो पता नहीं कि अल्लाह तआला ने उनके दिल में इश्क़ की क्या आग रखी होगी।

जिस क़ल्ब की आहों ने दिल फूंक दिए लाखों
उस क़ल्ब में या रब क्या आग भरी होगी

अहले मुहब्बत आज़माए भी जाते हैं

एक सहाबिया रज़ियल्लाहु अन्हा का अजीब वाक़िआ लिखा है कि उनकी शादी हुई। अल्लाह तआला ने उनको हुस्न व जमाल भी अजीब दिया था और शादी भी एक बड़े अमीर कबीर सहाबी से हुई जिनके पास रिज़्क़ की फ़राख़ी थी। हर तरह का ऐश व आराम के सामान थे। मियाँ-बीवी में ख़ूब मुहब्बत थी और अच्छी तरह वक़्त गुज़र रहा था। बीवी अपने ख़ाविंद की ख़िदमत भी करती और उन्हें ख़ुश भी

रखती। दोनों मियाँ-बीवी ख़ुशी-ख़ुशी से ज़िंदगी गुज़ार रहे थे।

एक रात ख़ाविंद को प्यास महसूस हुई। उसने बीवी से कहा, मुझे पानी दो। बीवी उठी और पानी ले आई। जब पानी लेकर वापस आई तो ख़ाविन्द सो चुका था। वह पानी का प्याला लेकर खड़ी रहीं हत्ताकि जब ख़ाविंद की दोबारा आँख खुली तो देखा कि बीवी पानी लेकर खड़ी है। वह बड़े ख़ुश हुए। उन्होंने उठकर पानी पिया और बीवी से कहा कि मैं इतना ख़ुश हूँ कि तुम इतनी देर पानी का प्याला लेकर मेरे इंतिज़ार में खड़ी रहीं। आज तुम जो कहोगी मैं तुम्हारी फ़रमाइश पूरी करूंगा। जब ख़ाविन्द ने यह कहा तो बीवी कहने लगी क्या आप अपनी बात में पक्के हैं कि मैं जो कहूँगी आप पूरा करेंगे? कहने लगे हाँ पूरा करके दिखाऊँगा। कहने लगी अच्छा फिर आप मुझे तलाक़ देकर फ़ारिग़ कर दीजिए। अब जब तलाक़ की बात हुई तो वह सहाबी बहुत परेशान हुए कि इतनी ख़ूबसूरत और सीरत, इतनी वफ़ादार और ख़िदमतगार बीवी कह रही है कि आप मुझे तलाक़ दीजिए। पूछने लगे बीबी क्या तुझे मुझसे कोई तकलीफ़ पहुँची है? कहने लगी बिल्कुल नहीं। बीबी क्या मैंने आपकी बेक़द्री की? हर्गिज़ नहीं। किसी उम्मीद को तोड़ा है, कोई बात आपकी पूरी नहीं की हो? नहीं ऐसी भी कोई बात नहीं। बीबी! क्या आप मुझसे ख़फ़ा हैं? कहने लगी हर्गिज़ नहीं। तो फिर मुझसे तलाक़ क्यों चाहती हो क्या आप मुझे पसंद नहीं करती हो? कहने लगी यह बात भी नहीं। पसंद भी बहुत करती हूँ, मुहब्बत करती हूँ इसीलिए तो ख़िदमत करती हूँ। आपने कहा था कि मैं आपकी बात को पूरा करूंगा, लिहाज़ा आप मुझे तलाक़ देकर फ़ारिग़ कर दीजिए। वह सहाबी परेशान हैं कि क़ौल भी दे बैठे। कहने लगे अच्छा सुबह होगी तो हम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में जाएंगे और आपसे जाकर फ़ैसला करवा लेंगे। वह कहने लगी बहुत अच्छा। लिहाज़ा मियाँ-बीवी दोनों रात को सो गए।

सुबह हुई तो बीवी कहने लगी चलो जल्दी चलते हैं। लिहाज़ा दोनों मियाँ-बीवी घर से बाहर निकले ही थे कि ख़ाविन्द का किसी वजह से पाँव अटका और वह नीचे गिरे और उनके जिस्म से ख़ून निकलने लगा। बीवी ने फ़ौरन अपना दुपट्टा फाड़ा और ख़ाविन्द के ज़ख़्म पर पट्टी बांधी और उनके जिस्म का सहारा दिया और कहने लगी चलो घर वापस चलते हैं। मैं आपसे तलाक़ नहीं लेती। वह हैरान हुए कि जब तुमने तलाक़ का मुतालबा किया तो न मुझे उस वक़्त समझ में आया और अब कहती हो कि तलाक़ नहीं चाहिए तो न अब मुझे समझ में आ सका। कहने लगीं घर तशरीफ़ ले चलें, वहाँ जाकर मैं आपको बता दूँगी। जब घर जाकर बैठे तो कहने लगे मुझे बताओ तो सही क्या बात है। कहने लगी आपने कुछ दिन पहले नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस सुनाई थी कि जिस बंदे से अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त मुहब्बत करते हैं उस बंदे के ऊपर इस तरह परेशानियाँ आती हैं जिस तरह पानी ऊँचाई से ढलान की तरफ़ जाया करता है। मैंने नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम का फ़रमान सुना तो मैं दिल में सोचती रही कि मैंने अपने घर में कोई परेशानी नहीं देखी, कोई ग़म नहीं देखा, कोई मुसीबत नहीं देखी तो मेरे दिल में ख़्याल आया कि मेरे आक़ा की बात सच्ची है। ऐसा तो नहीं कि मेरे ख़ाविन्द के ईमान में फ़र्क़ हो, मेरे ख़ाविंद के आमाल में फ़र्क़ हो। मेरे ख़ाविन्द से अगर परवरदिगार को मुहब्बत नहीं तो मैं उस बंदे की क्या ख़िदमत करूंगी। इसलिए जब आपने कहा कि मैं तुम्हारी बात पूरी करूंगा तो मैंने कहा कि मैं इस बंदे से तलाक़ चाहती हूँ जिससे मेरे परवरदिगार मुहब्बत नहीं करते। फिर जब हम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में इल्म हासिल करने जा रहे थे, यह अल्लाह का रास्ता था, आप गिरे और ख़ून निकला तो मैं फ़ौरन समझ गई कि अल्लाह के रास्ते का ग़म पहुँचा, मुसीबत पहुँची, तकलीफ़ पहुँची। यक़ीनन

अल्लाह तआला को आपसे प्यार है और अल्लाह तआला ने आपको अपनी नाराज़गी की वजह से ख़ुशियाँ नहीं दी हुई बल्कि अल्लाह तआला को आपसे मुहब्बत है। अब मुझे तलाक़ लेने की कोई ज़रूरत नहीं। इसलिए मैं सारी ज़िंदगी आपकी ख़ादिमा बनकर आपकी ख़िदमत किया करूंगी, सुब्हानअल्लाह। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 5/74)

ज़िक्रे दुनिया करके देखा फ़िक्र उक़्बा करके देख
सबको अपना कर देखा रब को अपना करके देख

हुकूमत तो लैला को सजती है

एक दफ़ा मजनूँ जा रहा था। उन दिनों हज़रत इसन रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के हक़ में हुकूमत छोड़ दी थी और हुकूमत उनके हवाले कर दी थी। हज़रत हसन ने फ़रमाया कि मैं ख़िलाफ़त से एक तरफ़ हो गया हूँ और मैंने हुकूमत उन्हीं को दे दी जिनको सजती थी। जब उसने यह सुना तो कहने लगा हज़रत मेरे ख़्याल में तो हुकूमत लैला को सजती है। हज़रत ने फ़रमाया, "तू तो मजनूँ है?" तब से उसका नाम क़ैस की जगह मजनूँ पड़ गया। दीवाना था बेचारा अपने बस में नहीं था।

(तमन्नाए दिल स० 95)

एक बार उसके बाप ने कहा कि बेटा बहुत बदनामी हो गई। अब दुआ मांग अल्लाह लैला की मुहब्बत मेरे दिल से निकाल दीजिए, ख़त्म कर दीजिए, उसने फ़ौरन हाथ उठाये और दुआ मांगी ﴿اللهم زدني حبا ليلى﴾ ऐ अल्लाह! लैला की मुहब्बत और बढ़ा दीजिए चुनाँचे उसके वालिद एक बार उसको पकड़कर बैतुल्लाह ले गए। कहने लगे कि बहुत बदनामी हो गई, आज मैं तुझे नहीं छोड़ूँगा जब तक कि तू सच्ची तौबा न कर ले। चल तौबा कर, यह तौबा करने लगा तो उसने

कहा :

الهي تبت من كل المعاصي   ولكن حب ليله لا اتوب

अल्लाह मैंने हर गुनाह से तौबा कर ली लेकिन लैला की मुहब्बत से तौबा नहीं करता।

उसके वालिद ने नाराज़ होकर कहा तू क्या कर रहा है? जब वह बहुत ज़्यादा नाराज़ तो उसने मजबूर होकर हाथ उठाए और वालिद के सामने दुआ मांगने लगा:

الهي لا تسلبني حبها ابدا   ويرحم الله عبدا قال آمينا

या अल्लाह उसकी मुहब्बत मेरे दिल से कभी न निकालना और अल्लाह उस बन्दे पर रहम करे जो इस दुआ पर आमीन कहे।

मुहब्बत में दीवार और कुत्ते के क़दम चूमना

एक बार मजनूँ को किसी ने देखा कि एक कुत्ते के पाँव चूम रहा है। उसने पूछ ऐ मजनूँ! तुम ऐसा क्यों कर रहे हो? मजनूँ ने कहा यह कुत्ता लैला की गली से होकर आया है। मैं इसलिए इसके पाँव चूम रहा हूँ। ऐसे मस्त और अक़्ल में ख़राबी आए हुए इंसान को मजनूँ पागल न कहा जाए तो क्या कहा जाए। किसी फ़ारसी शायर ने यही बात शे'र में कही है—

پائے سگ بوسید مجنوں گفتند ایں چہ بود   گفت کایں سگے در کوئے لیلیٰ رفتہ بود

मजनूँ लैला की गली का तवाफ़ किया करता था और यह शे'र पढ़ा करता था—

اطوف على جدار ديار ليلى   اقبل ذا الجدار وذا الجدارا
وما حب الديار شغفن قلبي   ولكن حب من سكن الديارا

मैं लैला के घर की दीवारों का तवाफ़ करता हूं। कभी यह दीवार चूमता हूँ कभी वह दीवार चूमता हूं। और दरअसल इन घरों की मुहब्बत मेरे दिल पर नहीं छा गई बल्कि उसकी मुहब्बत जो इन घरों में रहने वाली है।

एक दफ़ा हाकिम शहर ने सोचा कि लैला को देखना चाहिए कि मजनूँ और उसकी मुहब्बत के अफ़साने हर एक की ज़बान पर हैं। जब सिपाहियों ने लैला को पेश किया तो हाकिम हैरान रह गया कि एक आम सी लड़की थी न शक्ल न रंग न रूप था। उसने लैला से कहा,

"तू दूसरी हसीनाओं से ज़्यादा बेहतर नहीं है? कहने लगी ख़ामोश रह क्योंकि तू मजनूँ नहीं है।" (इश्के इलाही 55)

देखिए मगर मजनूँ की आँख से

एक बादशाह ने लैला के बारे में सुना कि मजनूँ उसकी मुहब्बत में दीवाना बन चुका है। उसके दिल में ख़्याल पैदा हुआ कि मैं लैला को देखूं तो सही। जब उसने देखा तो उसका रंग काला था और शक्ल भद्दी थी। वह इतनी काली थी कि उसके माँ-बाप ने लैल (रात) जैसी (काली) होने की वजह से उसको लैला (काली) का नाम दिया। लैला के बारे में बादशाह का ख़्याल था कि वह बड़ी नाज़नीन और परी जैसे चेहरे की होगी। मगर जब उसने लैला को देखा तो उससे कहा-

"तू दूसरी औरतों से तू ज़्यादा ख़ूबसूरत नहीं है?"

जब बादशाह ने यह कहा तो लैला ने जवाब में यह कहा-

"ख़ामोश हो जा तेरे पास मजनूँ की आँख नहीं।"

अगर मजनूँ की आँख होती तो तुझे दुनिया में मेरे जैसा ख़ूबसूरत कोई नज़र न आता। इसी तरह मेरे दोस्तो! मुहब्बते इलाही की आँखों से उसकी काएनात को देखेंगे तो हर जगह जमाले खुदावंदी नज़र आएगा। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक्कार 11/25)

मौलाना रोमी रह० फ़रमाते हैं कि एक बार उसको किसी ने देखा कि रेत की ढेर पर बैठे कुछ लिख रहा है। इस पर उन्होंने कहा :

जंगल में एक आदमी ने एक बार मजनूँ को देखा कि ग़म के बयाबान में अकेला बैठा हुआ था। रेत को उसने काग़ज़ बनाया हुआ था और अपनी उंगली को क़लम और किसी को ख़त लिख रहा था। उसने पूछा कि ऐ मजनूँ शैदा तू क्या लिख रहा है? तू किसके नाम यह ख़त लिख रहा है? मजनूँ ने कहा लैला के नाम की मश्क़ कर रहा हूँ। उसके नाम को लिखकर अपने दिल को तसल्ली दे रहा हूँ।

इससे मालूम हुआ कि जब दुनिया के महबूब का नाम लिखने और बोलने से सुकून मिलता है तो महबूबे हक़ीक़ी के ज़िक्र व नाम लेने से किस क़द्र सुकून मिलेगा। (तमन्नाए दिल स० 35)

नमाज़ी को मजनूँ की तंबीह

एक दफ़ा एक आदमी नमाज़ पढ़ रहा था। मजनूँ लैला की मुहब्बत में ग़र्क़ था। वह इसी मदहोशी में उस नमाज़ी के सामने से गुज़र गया। उस नमाज़ी ने नमाज़ पूरी करके मजनूँ को पकड़ लिया। कहने लगा तूने मेरी नमाज़ ख़राब कर दी कि मेरे सामने से गुज़र गया, तुझे इतना नज़र नहीं आया। उसने कहा कि ख़ुदा के बंदे! मैं मख़्लूक़ की मुहब्बत में गिरफ़्तार हूँ मगर वह मुहब्बत इतनी हावी हुई कि मुझे पता न चला कि मैं किसी के सामने से गुज़र रहा हूँ और तू ख़ालिक़ की मुहब्बत में गिरफ़्तार है कि नमाज़ पढ़ रहा था। तुझे अपने सामने से जाने वालों का पता चल रहा था।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 3/48)

मुझको न अपना होश न दुनिया का होश है
बैठा हूँ मस्त हो के तुम्हारे जमाल में

मुहब्बत व तौहीद का सबक़ दिया भी तो किसने

हज़रत जुनैद बग़दादी रह० फ़रमाते हैं कि मुझे तो एक औरत ने तौहीद सिखा दी। किसी ने पूछा कि हज़रत वह कैसे? फ़रमाने लगे कि मेरे पास एक औरत आई जो पर्दे में थी। कहने लगी कि मेरा ख़ाविंद दूसरी शादी करना चाहता है। आप फ़तवा लिखकर दें कि उसको दूसरी शादी करने की इजाज़त नहीं है। उन्होंने समझाया कि अल्लाह बंदी! अगर वह अपनी ज़रूरत के तहत दूसरी शादी करना चाहता है तो शरिअत ने चार तक की इजाज़त दी है। मैं कैसे लिखकर दे सकता हूँ? फ़रमाते हैं कि जब मैंने यह कहा तो उस औरत ने ठंडी साँस ली और कहने लगी कि हज़रत! शरिअत का हुक्म रास्ते में रुकावट है वरना अगर इजाज़त होती तो मैं आपके सामने चेहरा खोल देती और आप मेरे हुस्न व जमाल को देखते तो आप इस बात के लिखने पर मजबूर हो जाते कि जिसकी बीवी इतनी ख़ूबसूरत हो उसको दूसरी शादी करने की इजाज़त नहीं। फ़रमाते हैं कि वह तो यह बात कहकर चली गई मगर मेरे दिल में यह बात आई कि ऐ अल्लाह! आपने औरत को आरज़ी हुस्न व जमाल अता किया। उसको अपने हुस्न पर इतना नाज़ है कि वह कहती है कि मैं जिसकी बीवी हूँ अब उसको मुहब्बत की नज़र दूसरी तरफ़ डालने की इजाज़त नहीं तो ऐ परवरदिगार! तेरे अपने हुस्न व जमाल का क्या आलम है। आप कहाँ पसंद करेंगे कि आपके होते हुए कोई बंदा मुहब्बत की नज़र किसी ग़ैर की तरफ़ उठा सके।

(ख़ुत्बात ज़ुल्फ़िक़ार 5/296)

हर ग़म मुझे मंज़ूर मगर मुहब्बत में शिर्कत

हज़रत हसन बसरी रह० फ़रमाते हैं कि मुझे एक धोबन ने तौहीद

सिखाई। किसी ने पूछा हज़रत वह कैसे? फ़रमाने लगे कि मेरे पड़ौस में एक धोबी रहता था। मैं एक बार अपने घर की छत पर बैठा गर्मी की रात में क़ुरआन पाक की तिलावत कर रहा था। पड़ौस से मैंने ज़रा ऊँचा-ऊँचा बोलने की आवाज़ सुनी, सोचा ख़ैरियत तो है ये क्यों ऊँचा बोल रहे हैं? जब ग़ौर से सुना तो मुझे पता चला कि बीवी अपने मियाँ से झगड़ रही थी। वह अपने मियाँ को कह रही थी कि देख तेरी ख़ातिर मैंने इतनी तकलीफ़ें बरदाश्त कीं, फ़ाक़े काटे, सादा लिबास पहना, मुशक़्क़तें उठायीं, हर दुख-सुख मैंने तेरे ख़ातिर बरदाश्त किया और मैं तेरी ख़ातिर हर दुख बरदाश्त करने के लिए अब भी तैयार हूँ लेकिन अगर तू चाहे कि मेरे सिवा किसी और से निकाह कर ले तो फिर मेरा तेरा गुज़ारा नहीं हो सकता। मैं तेरे साथ कभी नहीं रह सकती। फ़रमाते हैं कि यह बात सुनकर मैंने क़ुरआने पाक पर नज़र डाली तो क़ुरआने मजीद की आयत सामने आई,

﴿إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَٰلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ﴾

अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि ऐ बंदे! जो भी गुनाह लेकर आएगा मैं चाहूँगा, सब माफ़ कर दूँगा लेकिन मेरी मुहब्बत में किसी को शरीक बनाएगा तो फिर मेरा तेरा गुज़ारा नहीं हो सकता।

(तमन्नाए दिल स० 38)

शिबली जोशे मुहब्बत मुझे न दिखा

एक बार हज़रत शिबली रह० वुज़ू करके घर से निकले। रास्ते में ही थे अल्लाह तआला की तरफ़ से इल्हाम हुआ शिबली! ऐसा गुस्ताख़ी वाला वुज़ू करके तू मेरे घर की तरफ़ जा रहा है। वह सहम गए और पीछे हटने लगे। जब वह पीछे हटने लगे तो फिर दोबारा

इल्हाम हुआ शिबली तू मेरा घर छोड़कर कहाँ जाएगा? वह फिर डर गए और ज़ोर से "अल्लाह" की ज़र्ब लगाई। जब "अल्लाह" लफ़्ज़ कहा तो इल्हाम हुआ शिबली तू हमें अपना जोश दिखाता है? हज़रत शिबली रह० यह सुनकर दुबक कर बैठ गए। फिर थोड़ी देर के बाद इल्हाम हुआ शिबली तू हमें अपना सब्र दिखाता है। आख़िरकार कहने लगे ऐ अल्लाह! मैं तेरे ही सामने फ़रियाद करता हूँ। असल में अल्लाह तआला अपने प्यारे के साथ ज़रा मुहब्बत की बातें करना चाहते थे।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 7/128)

तेरे इश्क़ की इंतिहा चाहता हूँ
मेरी सादगी तो देख क्या चाहता हूँ

नाज़ का मामला ही अलग है

हज़रत शिबली रहमतुल्लाहि अलैहि पर एक बार अजीब कैफ़ियत थी। अल्लाह तआला ने उनके दिल पर इल्हाम फ़रमाया, शिबली! क्या तू यह चाहता है कि मैं तेरे ऐब लोगों पर खोलकर ज़ाहिर कर दूँ ताकि तुझे दुनिया में कोई मुँह लगाने वाला न रहे। वह भी ज़रा नाज़ के मूड में थे। लिहाज़ा जब यह इल्हाम हुआ तो वह उसी वक़्त अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की हुज़ूर में कहने लगे, अल्लाह! क्या आप चाहते हैं कि मैं आपकी रहमत खोल खोलकर लोगों पर ज़ाहिर कर दूँ ताकि आपको दुनिया में कोई सज्दा करने वाला न रहे। जैसे ही यह बात कही ऊपर से इल्हाम हुआ, शिबली! न तू मेरी बात कहना और न मैं तेरी बात कहता हूँ। सोचिए तो सही कि ताल्लुक़ की वजह से अल्लाह तआला अपने महबूब बंदों के साथ किस तरह राज़ व नियाज़ और मुहब्बत व शफ़्क़त की बातें करते हैं।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 7/128)

मुहब्बत में राबिया बसरिया रह० का ग़लबए हाल

राबिया बसरिया रह० एक हाथ में पानी लेकर दूसरे हाथ में आग लेकर जा रही थीं और कह रही थी कि आग से जन्नत को जलाऊँगी और पानी से जहन्नम को बुझाऊँगी ताकि लोग जन्नत और जहन्नम के लिए इबादत न करें। यह राबिया बसरिया के जोश का वाक़िआ है। हज़रत मुजद्दिद अलफ़ेसानी रह० फ़रमाते हैं :

"अगर राबिया बेचारी भेद से वाक़िफ़ होती तो वह ऐसा काम न करती इसलिए कि अल्लाह तआला ख़ुद जन्नत की तरफ़ बुला रहे हैं,

﴿وَاللّٰهُ يَدْعُوْا إِلٰى دَارِ السَّلَامِ﴾

और जिस तरफ़ अल्लाह तआला बुलाएं उसकी तरफ़ जाना ऐन अल्लाह तआला की मंशा होती है।

अल्लाह वालों की मुहब्बते इलाही में ऐसी बातें कर जाना यह मुहब्बत की वजह से होता है। (सुकूने दिल स० 216)

बंदगी से हमें तो मतलब है
हम सवाब व अज़ाब क्या जानें

नफ़्सानी और रहमानी मुहब्बत का बदला

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम एक जगह जा रहे थे। आवाज़ सुनी कि वीरानों में कोई आवाज़ दे रहा है,

﴿سبحان من جعل الملك عبدا بالمعصية وجعل العبد ملوكا بالطاعة﴾

पाक है वह ज़ात जिसने बादशाहों को नाफ़रमानी की वजह से गुलाम बना दिया और गुलामों को फ़रमांबरदारी की वजह से बादशाह बना दिया।

सुब्हानअल्लाह! अल्लाह तआला हक़ीक़त में ऐसी ही ज़ात है जो

उसकी इताअत करता है अल्लाह तआला उसको दुनिया में भी इज़्ज़तें देते हैं। तो हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने पूछा ऐ बुढ़िया तू कौन है?

﴿انا التي اشتريتك بالجواهر و الذهب والفضة﴾

मैं वही हूं जिसने तुम्हें सोने, चाँदी, हीरे और मोतियों के बदले ख़रीदा था।

अल्लाहु अकबर! ज़ुलेख़ा को यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से मुहब्बत थी। मलका से हटा कर भिखारन बना दी गई और यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला से मुहब्बत थी, अल्लाह तआला ने गुलामी से निकालकर वक़्त का बादशाह बना दिया।

यही नफ़्सानी और रहमानी मुहब्बत में फ़र्क़ होता है। हर दौर हर ज़माने में जो यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के नक़्शे क़दम पर चलेगा, अल्लाह तआला उसे फ़र्श से उठाएंगे और अर्श तक पहुँचाएंगे और जो ज़ुलेख़ा के नक़्शे क़दम पर मख़्लूक़ की मुहब्बत में गिरफ़्तार होगा अल्लाह तआला मलिका के दर्जे से हटकार उसको भिखारन बनाकर खड़ा कर देंगे। इसलिए अल्लाह की मुहब्बत असल है। हमें अल्लाह तआला से अल्लाह की मुहब्बत मांगने की ज़रूरत है। अल्लाह तआला की मुहब्बत जब दिल में हो तो ग़म, ग़म नहीं रहता।(तमन्नाए दिल स० 45)

करीम मुझ पर करम कर बड़े अज़ाब में हूँ
के तेरे सामने बैठा हूँ और हिजाब में हूँ

मुहब्बत की शमा कहाँ जलती है

हज़रत इब्राहीम बिन अदहम रह० ने एक ख़्वाब देखा कि एक फ़रिश्ता लिख रहा था। पूछा क्या लिख रहे हो? कहने लगे आशिक़ों का नाम लिख रहा हूं। उन्होंने कहा मेरा नाम भी है? फ़रिश्ते ने कहा तुम्हारा नाम नहीं है। कहने लगे कि ऐसा करो कि अल्लाह के आशिक़ों

से मुहब्बत करने वालों में मेरा नाम लिखो। वह फ़रिश्ता कहता है बहुत अच्छा और चला गया। फिर कुछ अर्से के बाद ख़्वाब देखा। देखते हैं कि फ़रिश्ता लिख रहा है। पूछा क्या लिख रहे? कहने लगा कि उन लोगों के नाम लिख रहा हूँ जिनसे अल्लाह तआला मुहब्बत करते हैं। उन्होंने कहा कि अच्छा मेरा नाम भी कहीं है? तो उसने दिखाया कि जिनसे अल्लाह तआला मुहब्बत किया करते हैं उस सफ़हे के सबसे ऊपर इब्राहीम बिन अदहम रह० का नाम लिखा हुआ था। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि जो मेरे आशिक़ों से मुहब्बत करते हैं मैं उन बंदों के साथ मुहब्बत किया करता हूँ। इसलिए अल्लाह वालों से मुहब्बत अल्लाह की मुहब्बत मिलने का ज़रिया बन जाती है। जब अल्लाह से मुहब्बत होती है तो अल्लाह के नाम से भी मुहब्बत हो जाती है। (तमन्नाए दिल स०-47)

एक दम भी मुहब्बत छिप न सकी
जब तेरा किसी ने नाम लिया

दीदारे इलाही का यह नुस्ख़ा भी अजीब

एक बार हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की रह० के पास एक आदमी आया। वह कहने लगा, हज़रत! ज़िक्र व अज़्कार और इबादत में ज़िंदगी गुज़र गई मगर मेरा दिल एक तमन्ना की वजह से जल रहा है, जी चाहा कि आज आपके सामने वह तमन्ना ज़ाहिर कर दूँ। आपने पूछा कौन सी तमन्ना है? कहने लगा हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रह० को ख़्वाब में सौ बार अल्लाह तआला का दीदार हुआ, मेरा भी जी चाहता है कि मुझे भी अपने ख़ालिक़ का दीदार नसीब हो जाए।

हाजी साहब रह० तबियत के समझने में माहिर थे। फ़रमाने लगे आज तुम इशा की नमाज़ पढ़ने से पहले सो जाना। इसमें हिक्मत थी मगर वह बंदा समझ न सका। वह घर आया। जब मग़रिब के बाद

का वक़्त हुआ तो सोचने लगा कि हज़रत ने फ़रमाया था कि इशा की नमाज़ पढ़े बग़ैर वैसे ही सो जाना लेकिन फ़र्ज़ तो आख़िर फ़र्ज़ है। चलो मैं फ़र्ज़ पढ़कर सुन्नत छोड़कर सो जाऊँगा और बाद में पढ़ लूँगा। लिहाज़ा वह फ़र्ज़ पढ़कर सो गया।

रात को ख़्वाब में नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम का दीदार नसीब हुआ। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "तुमने फ़र्ज़ तो पढ़ लिए मगर सुन्नतें क्यों न पढ़ीं?" उसके बाद उसकी आँख खुल गई। सुबह आकर उसने हाजी साहब रह० को बताया। हाजी साहब रह० ने फ़रमाया, "ओ अल्लाह के बंदे! तूने इतने साल नमाज़ें पढ़ते हुए गुज़ार दिए, भला अल्लाह तआला तेरी नमाज़ क़ज़ा होने देते, कभी ऐसा न होता बल्कि वह तेरे अमलों की हिफ़ाज़त फ़रमाते अगर तू मग़रिब के बाद सो जाता तो ख़्वाब में अल्लाह तआला का दीदार भी हो जाता, वह तुझे जगा भी देते और तुझे इशा की तौफ़ीक़ भी अता फ़रमा देते। मगर तू राज़ को न समझ सका। तूने सिर्फ़ सुन्नतें छोड़ दीं तो महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दीदार हुआ अगर तू फ़र्ज़ छोड़ देता तो तुझे अल्लाह तआला का दीदार नसीब हो जाता।" (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 4/129)

जी ढूंढता है फिर वही फ़ुर्सत के रात दिन
बैठे रहें तसव्वुरे जानाँ किए हुए

मुहब्बत के ग़लबे में दो बूढ़ों की हाथापाई

मक़ामाते ज़वारिया में एक अजीब बात लिखी हुई है। एक बार एक ख़ानक़ाह फ़ैसलाबाद में दो बूढ़े आपस में उलझना शुरू हो गए। देखने वाले बड़े हैरान हुए कि ये दोनों ज़ाहिर में बड़े नेक और मुत्तक़ी नज़र आते हैं, सुन्नत का इत्तिबा उनके जिस्म पर बिल्कुल ज़ाहिर है मगर एक दूसरे से लड़ रहे हैं। एक उसके थप्पड़ लगाता है दूसरा

उसको लगाता है, वह इसे खींचता है यह उसे खींचता है और कुछ बातें कर रहे हैं। एक साहब क़रीब हुए कि आख़िर बात क्या है? जब क़रीब हुए तो क्या देखते हैं कि ये दोनों मुहब्बते इलाही में डूबे हुए थे कि आपस में बैठे हुए उनमें से एक ने कह दिया, "अल्लाह मैडा ऐ" यानी अल्लाह मेरा है। जब दूसरे ने सुना तो वह उलझने लगा कि नहीं, "अल्लाह मैडा ऐ" यह उसे मारता है और कहता है कि "अल्लाह मैडा ऐ।" वह उसे मारता है और कहता है कि "अल्लाह मैडा ऐ" और मुहब्बत का इतना ग़लबा था कि दोनों इस बात पर उलझ रहे थे, अल्लाहु अकबर। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 3/47)

मुझको न अपना होश न दुनिया का होश है
बैठा हूँ मस्त हो के तुम्हारे जमाल में

शर्बते दीदार से रोज़े का इफ़्तार

मवाहिबे लदद्दुनिया में यह वाक़िआ लिखा है कि अब्दुल अज़ीज़ मख़्ज़ूमा एक बुज़ुर्ग थे उन्होंने दुआ मांगी थी कि ऐ अल्लाह जंगे यमामा के लिए जा रहा हूँ। अब इस जंग में मेरे हर-हर हिस्से पर ज़ख़्म आए। यह दुआ मांगी और वाक़ई में ऐसा ही हुआ कि वह घमसान के रन में ऐसे घिर गए कि उनके जिस्म के हर उज़्व पर ज़ख़्म आए। जब ज़ख़्मी हालत में थे और रूह परवाज़ करने के क़रीब थी, एक मुसलमान क़रीब हुआ तो उस मुसलमान ने कहा क्या मैं आपको पानी पिला दूँ। आपके जिस्म का हर हर उज़्व ज़ख़्मी हो चुका है तो अब्दुल्लाह बिन मख़्ज़ूमा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाने लगे नहीं मैं इस वक़्त रोज़े की हालत में हूँ। मैं शर्बते दीदार से अपने रोज़े को खोलना चाहता हूँ। ऐसी भी मुहब्बत होती है, अल्लाहु अकबर। अल्लाह तआला मुहब्बत का थोड़ा सा नशा हमें भी अता फ़रमा दे फिर हमें इबादतों के अन्दर सुकून नसीब हो जाएगा। इसलिए कहा

﴿العشق نار يحرق ما سوى الله﴾ इश्क़ एक आग है जो अल्लाह के सिवा सब कुछ जलाकर रख देती है। अल्लाह की मुहब्बत दिल में आती है, ग़ैर से इन्सान की निगाहें उठ जाती हैं–

इश्क़ की आतिश का जब शोला उठा
मा सिवा माशूक़ सब कुछ जल गया
तेग़ 'ला' से क़त्ल ग़ैरे हक़ हुआ
देखिए फिर बाद उसके क्या बचा
फिर बचा अल्लाह बाक़ी सब फ़ना
मरहबा ऐ इश्क़ तुझ को मरहबा

मुहब्बते इलाही आख़िर तू संभाल लेती है

अमरीका में एक मुसलमान नौजवान था लेकिन दफ़्तर में काम करता था। दफ़्तर में काम करने वाली एक अमरीकन लड़की से उसका ताल्लुक़ बन गया। और उसकी मुहब्बत का ताल्लुक़ यह इतना बढ़ा कि उसने महसूस किया कि अब मैं उसके बग़ैर रह नहीं सकता। लिहाज़ा उसने उसके माँ-बाप को पैग़ाम भेजा कि मैं उससे शादी करना चाहता हूँ। उसके माँ-बाप ने कहा हमारी शर्त यह है कि हम ईसाई हैं। आपको अपना दीन छोड़कर ईसाई बनना पड़ेगा, माँ-बाप से ताल्लुक ख़त्म करना पड़ेगा। आप अपने मुल्क वापस नहीं जाया करेंगे। जिस समाज में आप रहते हैं उससे आप बिल्कुल मिला ही नहीं करेंगे। अगर आप ये सब शर्तें पूरी कर देंगे तो हम अपनी बेटी की शादी आपसे कर देंगे। यह अपने जज़्बात में इतना दबा हुआ था कि इस अल्लाह के बन्दे ने सारी शर्तें कुबूल कर लीं। माँ-बाप से रिश्ता ख़त्म, अज़ीज़ व क़रीबी लोगों से रिश्ता ख़त्म, मुल्क से रिश्ता ख़त्म और जिस समाज में रहता था उनसे रिश्ता ख़त्म हत्ताकि यह

ईसाई बनकर ईसाइयों के माहौल में ज़िन्दगी गुज़ारने लग गया। उसने अपनी शादी कर ली। मुसलमान बड़े परेशान कभी-कभी वह उसको तलाश करने की कोशिश करते मगर यह उनसे मिलने से भी घबराया करता था। कभी कहीं से किसी को देख भी लेता तो दूर से कतरा जाता था। लोग आख़िर थक गए। किसी ने कहा कि इसके दिल पर मुहर लग गई है, किसी ने कहा यह इस्लाम से फिर गया, किसी ने कहा इसने जहन्नम ख़रीद ली, किसी ने कहा इसने बड़ा मंहगा सौदा ख़रीदा। हर एक की अपनी अपनी बातें थीं। तीन चार साल इसी हालत में गुज़र गए। यहाँ तक कि दोस्त अहबाब सबकी याद्दाश्त से भी निकलने लगा, भूली बिसरी चीज़ बनता चला गया। एक दिन इमाम साहब ने फ़ज्र की नमाज़ के लिए जब दरवाज़ा खोला तो देखा एक नौजवान आया उसने वुज़ू किया और मस्जिद में नमाज़ की सफ़ में बैठ गया। इमाम साहब बड़े हैरान। उनके लिए यह चीज़ तो बड़ी अजीब थी। नमाज़ पढ़ाई और उसके बाद उसको सलाम किया फिर उसको लेकर अपने हुजरे में गए और मुहब्बत प्यार से ज़रा पूछा कि आज बड़ी मुद्दत के बाद आपकी ज़ियारत नसीब हुई। उस वक़्त उसने अपनी हालत बताई कि मैंने उस लड़की की मुहब्बत में अपना सब कुछ क़ुर्बान कर दिया, बहुत कुछ मैंने अपना ज़ाए कर दिया। लेकिन जिस घर में मैं रहता था उस घर में अल्लाह का क़ुरआन रखा होता था। मैं जब कभी आता-जाता और उस पर मेरी नज़र पड़ती तो मैं अपने दिल में सोचता कि यह मेरे मौला का कलाम है, यह मेरे अल्लाह का क़ुरआन है और मेरे घर में मौजूद है। मैं अपने नफ़्स को मलामत करता। अमाल तो मेरे बुरे थे लेकिन दिल मुझे कहा करता था कि नहीं जिसका मैंने कलिमा पढ़ा, मैं उससे मुहब्बत करता ज़रूर हूँ। उसकी निशानी मैंने अपने घर में रखी ज़रूर है। इसी तरह कई साल गुज़र गए। एक दिन मैं आया और आदत के मुवाफ़िक़ मैंने

गुज़रते हुए उस जगह पर नज़र डाली। मुझे क़ुरआन नज़र न आया। मैंने बीवी से पूछा कि यहाँ एक किताब हुआ करती थी वह कहाँ है? उसने कहा मैंने घर की सफ़ाई की थी। उसमें ग़ैर ज़रूरी चीज़ों को मैंने फेंक दिया है। उसने कहा उस किताब को भी। उसने कहा हाँ। यह वहाँ से वापस गया और कूड़ा फेंकने की जगह से उस किताब को उठाकर ले आया। जब लड़की ने देखा कि यह बहुत ज़्यादा इस किताब का एहसास कर रहा है तो वह भी एहसास करने लगी कि आख़िर वजह क्या है? उसने कहा बस मैं इस किताब को रखना चाहता हूँ। उस लड़की ने जब देखा कि यह तो अरबी में है। उसने कहा हाँ कोई न कोई ताल्लुक़ इसका इस्लाम से है। तो उसने कहा देखो इस घर में या तो यह किताब रहेगी या फिर मैं रहूँगी। तुम्हें इसमें से किसी एक के बारे में फ़ैसला करना होगा। वह कहने लगा कि जब लड़की ने यह कहा तो मेरे लिए यह ज़िन्दगी का अजीब वक़्त था। मैंने अपने दिल से पूछा कि तूने अपने ख़्वाहिशात को पूरा करने के लिए वह कुछ कर लिया जो तुझे नहीं करना चाहिए था। आज तेरा रिश्ता परवरदिगार से हमेशा के लिए टूट जाएगा। अब तू फ़ैसला कर ले कि तू इसको चाहता है या इसके परवरदिगार को चाहता है। जब मैंने दिल में यह सोचा तो दिल ने यह आवाज़ दी कि नहीं मैं अपने मौला से कभी भी नहीं कटना चाहता। मैंने लड़की को तलाक़ दे दी। अब मैंने दोबारा कलिमा पढ़ा और अब मैं हमेशा के लिए पक्का मुसलमान बन चुका हूँ। सोचिए इतने ग़ाफ़िल मुसलमान के दिल में भी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मुहब्बत का बीज मौजूद होता है।

(तमन्नाए दिल स० 65)

दुनिया की महफ़िलों से उकता गया हूँ या रब
क्या लुत्फ़ अंजुमन का जब दिल ही बुझ गया हो

मुहब्बते इलाही के कैसे क़ैदी हों

हसन बसरी रह० फ़रमाते हैं कि मुझे चार वाक़िआत ज़िन्दगी में बड़े अजीब लगे। लोगों ने पूछा हज़रत वे कौन से? कहने लगे:

1. एक नौजवान के हाथ में चिराग़ था तो मैंने नौजवान से सवाल किया कि यह रोशनी कहाँ से आई तो जैसे ही मैंने यह पूछा कि यह रोशनी कहाँ से आई? उसने फूंक मारकर चिराग़ बुझाया और कहने लगा हज़रत जहाँ चली गई वहीं से आई थी। फ़रमाया कि मैं उस नौजवान की हाज़िर जवाबी पर आज तक हैरान हूँ।
2. एक बार दस बारह साल की एक लड़की आ रही थी। उसकी बात ने मुझे हैरान कर दिया। बारिश हुई थी, मैं मस्जिद जा रहा था और वह बाज़ार से कोई चीज़ लेकर आ रही थी। जब ज़रा मेरे क़रीब आई तो मैंने कहा कि बच्ची ज़रा संभल कर क़दम उठाना, कहीं फिसल न जाना। जब मैंने यह कहा तो उसने आगे से जवाब दिया हज़रत मैं फिसल गई तो मुझे नुक़सान होगा, आप ज़रा संभलकर क़दम उठाना अगर आप फिसल गए तो क़ौम का क्या बनेगा? कहने लगे उस लड़की की बात मुझे आज तक याद है। उस लड़की ने कहा था कि आप संभलकर क़दम उठाना अगर आप फिसल गए तो क़ौम का क्या बनेगा?
3. एक बार मैंने एक हीजड़े को देखा। जब उसे पता चल गया कि मैंने उसे पहचान लिया तो कहने लगा मेरा राज़ न खोलना अल्लाह तआला क़यामत के दिन तुम्हारे राज़ों पर पर्दा डालेंगे।
4. एक आदमी नमाज़ पढ़ रहा था। उसके सामने से एक औरत रोती हुई खुले चेहरे, खुले सर के साथ उसके आगे से गुज़री। उसने सलाम फेरा तो उस औरत पर बड़ा नाराज़ हुआ कि मैं

नमाज़ पढ़ रहा था, तुझे शर्म नहीं आई, ध्यान नहीं नंगे सर खुले चेहरे के साथ मेरे सामने से गुज़र गई। औरत ने पहले तो माफ़ी मांगी और फिर माफ़ी मांगकर कहने लगी देखो मेरे मियाँ ने मुझे तलाक़ दे दी और मैं उस वक़्त ग़मज़दा थी, मुझे पता न चला कि आप नमाज़ पढ़ रहे हैं या नहीं। मैं इस हालत में आपके सामने से गुज़र गई मगर हैरान इस बात पर हूँ कि तुम अल्लाह की मुहब्बत में कैसे गिरफ़्तार हो कि खड़े हो परवरदिगार के सामने और देख मेरा चेहरा रहे हो। हसन बसरी रह० फ़रमाते हैं कि उस औरत की यह बात मुझे आज तक याद है। और वाक़ई हमारी नमाज़ का यही हाल है। नीचे की मंज़िल पर अगर नमाज़ पढ़ रहे हों और ऊपर की मंज़िल में कोई हमारा नाम ले दे तो हमें नमाज़ में पता चल जाता है कि हमारा नाम पुकारा गया है। हमारी नमाज़ की तवज्जेह का यह आलम होना चाहिए था—

अल्लाह वह दिल दे जो तेरे इश्क़ का घर हो
दाइमी रहमत की तेरी उस पर नज़र हो
दिल दे कि तेरे इश्क़ में यह हाल हो इसका
महशर का गर शोर हो तो भी ख़बर न हो

इश्क़ व मुहब्बत की दुकान किधर को है

मौलाना मुहम्मद अली मुंगेरी रह० ने हज़रत शाह फ़ज़्लुर्रहमान गंज मुरादाबादी रह० की सोहबत में जाना शुरू कर दिया। यह ज़रा अक़्लमंद थे। एक बार हज़रत शाह साहब रह० ने बड़े राज़दाराना लहजे में पूछा कि मुहम्मद अली! क्या तुमने कभी इश्क़ की दुकान देखी है?-उन्होंने थोड़ी देर सोचा, फिर कहने लगे जी हज़रत! मैंने इश्क़ की दो दुकानें देखी हैं, एक शाह आफ़ाक़ रह० की और दूसरी

शाह अब्दुल्लाह की, गुलाम अली देहलवी रह० जो नक्शबंदी सिलसिले के शेख़ हैं और हज़रत मुजद्दिद अलफ़ेसानी रह० की औलाद में से है। दुकानों से मुराद ख़ानक़ाहें हैं क्योंकि इश्क़े इलाही का सौदा अल्लाह वालों की ख़ानक़ाहों से मिलता है। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 3/85)

निगाहे वली में वह तासीर देखी
बदलती हज़ारों की तक़दीर देखी

मुहब्बत की हक़ीक़त इनसे पूछो

इमाम मालिक रह० के सामने मुहब्बत का लफ़्ज़ आया तो फ़रमाया कि अगर इसके लफ़्ज़ी मतलब पूछना हो तो हम भी बता देंगे, शश अक़्साम (छठी क़िस्म) में से कौन सा लफ़्ज़ है, हफ़्त (सातवीं) अक़्साम में से कौन सा लफ़्ज़ है, बाब इसका कौन सा है, यह तो हम भी बता देंगे लेकिन इसकी हक़ीक़त पूछनी हो तो तुम्हें फ़लाँ शेख़ के पास जाना होगा। वह तुम्हें इसकी हक़ीक़त समझाएंगे। इसी तरह उम्मत के उलमा वक़्त के मशाइख़ के साथ राब्ता रखते।

(दवाए दिल: स० 249)

जिधर मौला उधर शाहदौला

एक बुज़ुर्ग गुज़रे हैं शाहदौला उनकी बस्ती के क़रीब एक बंध बंधा हुआ था। सैलाब आता तो बस्ती डूबने का ख़तरा होता। इसलिए लोगों ने बंध बांध दिया। एक बार पानी बहुत ज़्यादा आ गया और एक जगह डर हुआ कि कहीं बंध टूट न जाए। लिहाज़ा लोग उनके पास गए कि जी दुआ करें कि कहीं बंध टूट न जाए। वह अपना कुदाल लेकर आए और उस जगह को देखा जहाँ से टूटने का ख़तरा था और उसको खोदना शुरू कर दिया। लोग हैरान कि हज़रत हम तो आपको इसलिए लाए हैं कि बंध टूटे नहीं, आप उलटा खोद

रहे हैं। कहने लगे, "जिधर मौला उधर शाहदौला।"

अगर मेरे रब को तोड़ना मंज़ूर है तो मैं ख़ुद ही क्यों न तोड़ दूँ। उनकी यह आजिज़ी अल्लाह को पसंद आ गई और पानी घटना शुरू हो गया। सैलाब जहाँ से आया था वहीं वापस हो गया। अल्लाह वाले सरापा तसलीम व रज़ा होते हैं। (दवाए दिल: स० 104)

तेरा ग़म भी मुझको अज़ीज़ है के वह तेरी दी हुई चीज़ है

हज़रत शिबली रह० गवर्नरी से फ़क़ीरी तक

अब्बासी दौर में इस्लामी हुकूमत लाखों मुरब्बअ (स्कवायर) मील के इलाक़े तक फैल चुकी थी। अलग-अलग इलाक़ों के गवर्नर अपने असर को इस्तेमाल करते हुए हुकूमत का निज़ाम चला रहे थे। अक्सर इलाक़ों से अद्ल व इंसाफ़ की ख़बरें मिल रही थीं। फिर भी कुछ इलाक़ों के हालात और बेहतर बनाने की ज़रूरत महसूस हो रही थी। वक़्त के ख़लीफ़ा ने सोचा कि तमाम गवर्नर हज़रात को मर्कज़ बुलाया जाए और अच्छी तरह काम अंजाम देने वालों को ईनाम व इकराम से नवाज़ा जाएं ताकि दूसरों को भी हालात ठीक रखने का शौक़ हो। चुनाँचे फ़रमाने शाही कुछ दिनों में हर इलाक़े में पहुँच गया कि फ़लाँ दिन सब गवर्नर हज़रात मर्कज़ में इकट्ठे हों। आख़िर वह दिन आ पहुँचा जिसके लिए गवर्नर हज़रात हज़ारों मील का सफ़र तय करके आए थे। ख़लीफ़ए वक़्त ने एक ख़ास बैठक में उन सबको जमा किया। कुछ अच्छी तरह काम करने वालों को ख़ास ईनाम व इकराम से नवाज़ा और बाक़ी लोगों को नसीहतें कीं। महफ़िल के ख़त्म पर ख़लीफ़ा ने सब हज़रात को अपनी तरफ़ से पौशाकें दीं और अगले दिन ख़ुसूसी दावत का एहतिमाम किया। सब हज़रात अपनी-अपनी ख़ुसूसी पौशाक पहनकर अगले दिन दावत में आए।

शानदार खानों और फलों की मेहमानदारी का लुत्फ़ उठाया। खाने के बाद एक दूसरे से ख़्यालात और हालात के जानने की महफ़िल गर्म हुई। सब लोग बहुत खुश थे। ख़लीफ़ए वक़्त की ख़ुशी भी उसके चेहरे से झलक रही थी। ठीक उसी वक़्त एक गवर्नर को छींक आ रही थी और वह अपनी क़ुव्वत से दबा रहा था। थोड़ी देर की कशमकश के बाद गवर्नर को दो तीन छींके इकठ्ठी आयीं। थोड़ी देर के लिए महफ़िल का माहौल बदल गया। सब लोगों ने उसकी तरफ़ देखा। छींक आना एक तबियती चीज़ है मगर जिस गवर्नर को छींक आई वह शर्म महसूस कर रहा था क्योंकि उसकी नाक से कुछ मवाद निकल आया था। जब सब लोग ख़लीफ़ा की तरफ़ मुतवज्जेह हुए तो उस गवर्नर ने मौक़ा ग़नीमत जानते हुए अपनी पौशाक के एक कोने से नाक को साफ़ कर लिया। अल्लाह तआला की शान कि ठीक उसी लम्हे ख़लीफ़ए वक़्त उस गवर्नर को देख रहा था। जब उसने देखा कि उसकी अता की हुई पौशाक से नाक से निकले मवाद को साफ़ किया गया है तो उसके गुस्से की हद न रही। ख़लीफ़ा ने गवर्नर को तंबीह की कि तुमने शाही पौशाक की बेक़द्री की और सब लोगों के सामने उसकी पोशाक वापस ले ली उसे दरबार से बाहर निकलवा दिया। मजलिस की ख़ुशियाँ ख़ाक में मिल गयीं। सब गवर्नर हज़रात परेशान हो गए कि कहीं उनका हश्र भी इस जैसा न हो।

समझदार वज़ीर ने मौक़े की नज़ाकत का ख़्याल करते हुए ख़लीफ़ए वक़्त से कहा कि आप महफ़िल ख़त्म कर दें। लिहाज़ा महफ़िल ख़त्म होने का ऐलान कर दिया गया। सब गवर्नर हज़रात अपने ठिकानों की तरफ़ लौट गए। दरबार में ख़लीफ़ा और वज़ीर बाक़ी रह गए। थोड़ी देर दोनों हज़रात ख़ामोश रहे और इस नापसंदीदा वाक़िए पर अफ़सोस कर रहे थे। थोड़ी देर बाद दरबान ने आकर ख़बर दी कि नहावंद के इलाक़े का गवर्नर अंदर आने की इजाज़त चाहता है।

ख़लीफ़ा ने अंदर आने की इजाज़त दी। गवर्नर ने अंदर आकर सलाम किया और पूछा की छींक आना अपने क़ाबू की बात है या क़ाबू से बाहर की बात है? ख़लीफ़ा ने सवाल की नज़ाकत को भांप लिया और कहा तुम्हें ऐसा पूछने की क्या ज़रूरत है जाओ अपना काम करो। गवर्नर ने दूसरा सवाल पूछा कि जिस आदमी ने शाही पौशाक से नाक साफ़ की उसकी सज़ा यही लाज़मी थी कि भरे दरबार में ज़लील कर दिया जाए या इससे कम सज़ा भी दी जा सकती थी?

यह सवाल सुनकर ख़लीफ़ा ने कहा कि तुम्हारे सवाल से मुहासबे की बू आती है। मैं तुम्हें तंबीह करता हूँ कि ऐसी बात मत करो वरना पछताओगे। गवर्नर ने कहा बादशाह सलामत! मुझे एक बात समझ में आई कि आपने एक शख़्स को पौशाक पहनाई और उसने पौशाक की नाक़द्री की तो आपने बीच दरबार उसको ज़लील व रुसवा कर दिया। मुझे ख़्याल आया कि रब्बे करीम ने भी मुझे इंसानियत का लिबास पहनाकर दुनिया में भेजा है। अगर मैंने इस लिबास की नाक़द्री की तो अल्लाह मुझे भी रोज़े महशर इसी तरह रुसवा कर देगा। यह कहकर उसने अपनी पौशाक उतारकर तख़्त पर फेंकी और कहा कि मैं इंसानी लिबास (वजूद) की क़द्र करूँ ताकि महशर की ज़िल्लत से बच जाऊँ। गवर्नर यह कहकर और गवर्नरी को लात मारकर दरबार से बहार निकल गया। बाहर निकलकर सोचा कि क्या करूं तो दिल में ख़्याल आया कि जुनैद बग़दादी रह० की ख़िदमत में जाकर बातिनी नेमत को हासिल करनी चाहिए।

हज़रत शिबली रह० मुहब्बत और मआरिफ़त की दुकान में

हज़रत जुनैद बग़दादी रह० की ख़िदमत में पहुँचे तो कहा कि हज़रत आपके पास बातिनी नेमत है आप यह नेमत मुझे अता करें चाहे इसको मुफ़्त दे चाहें तो क़ीमत तलब करें। हज़रत ने फ़रमाया

कि क़ीमत मांगें तो तुम दे नहीं सकोगे और अगर मुफ़्त दें तो तुम्हें उसकी क़द्र नहीं होगी। गवर्नर ने कहा फिर आप जो फ़रमाएं मैं वही करने को तैयार हूँ। हज़रत जुनैद रह० ने फ़रमाया कि कुछ अरसे यहाँ रहो, जब हम दिल के आइने को साफ़ पाएंगे तो यह नेमत अता कर देंगे। कई महीने के बाद हज़रत ने पूछा कि तुम क्या करते हो? अर्ज़ किया कि फ़लाँ इलाक़े का गवर्नर रहा हूँ। फ़रमाया कि अच्छा जाओ बग़दाद शहर में गंधक की दुकान बनाओ। गवर्नर साहब ने शहर में गंधक की दुकान बना ली। एक तो गंधक की बदबू दूसरे ख़रीदने वाले आम लोगों की बहस बाज़ी गवर्नर की तबियत बहुत खीजती। लाचारी में एक साल गुज़रा तो हज़रत की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि हज़रत एक साल की मुद्दत पूरी हो गई है। हज़रत ने फ़रमाया कि अच्छा तुम दिन गिनते रहे हो जाओ एक साल दुकान और चलाओ। अब तो दिमाग़ ऐसा साफ़ हुआ कि दुकान करते करते साल से ज़्यादा अरसा गुज़र गया मगर वक़्त का हिसाब न रखा। एक दिन हज़रत ने फ़रमाया कि गवर्नर साहब आपका दूसरा साल पूरा हो गया है। अर्ज़ किया पता नहीं। हज़रत ने कटोरा हाथ में देकर फ़रमाया कि जाओ बग़दाद शहर में भीख मांगो। गवर्नर साहब हैरान रह गए। हज़रत ने फ़रमाया कि अगर नेमत चाहने वाले हो तो हुक्म को मानो वरना जिस रास्ते से आए हो उसी रास्ते से वापस चले जाओ। गवर्नर साहब ने फ़ौरन कटोरा हाथ में पकड़ा और बग़दाद शहर में चले गए। कुछ लोगों को एक जगह देखा और हाथ आगे बढ़ाया कि अल्लाह के नाम पर कुछ दे दो। उन्होंने चेहरे को देखा तो फ़क़ीर का चेहरा लगता ही नहीं था। लिहाज़ा उन्होंने कहा कामचोर शर्म नहीं आती मांगते हुए। जाओ मेहनत मज़दूरी करके खाओ। गवर्नर साहब ने जली कटी सुनकर ग़ुस्से का घूँट पिया और "क़हर दरवेश बरजान दरवेश" (दरवेश का ग़ुस्सा दरवेश की जान पर) वाला मामला। अजीब बात

तो यह थी कि साल भर भीख मांगते रहे मगर किसी ने कुछ नहीं दिया हर एक ने झिड़कियाँ ही दीं। यह बातिनी सुधार का तरीका था। हज़रत जुनैद बग़दादी रह० गवर्नर साहब के दिमाग़ से नाज़ व घमंड निकालना चाहते थे। लिहाज़ा एक साल लोगों के सामने हाथ फैलाकर गवर्नर साहब के दिल में यह बात उतर गई कि मेरी कोई कीमत नहीं और मांगना हो तो बजाए मख़्लूक़ के ख़ालिक़ से मांगना चाहिए। पूरा साल इसी काम में गुज़र गया।

एक दिन हज़रत जुनैद बग़दादी रह० ने बुलाकर गवर्नर साहब से पूछा कि आपका नाम क्या है? अर्ज़ किया शिबली। फ़रमाया, अच्छा अब आप हमारी मजलिस में बैठा करें। गोया तीन साल के मुजाहिदे के बाद अपनी मजलिस में बैठने की इजाज़त दी मगर शिबली रह० के दिल का बर्तन पहले ही साफ़ हो चुका था। अब हज़रत की एक-एक बात से सीने में नूर भरता गया और आँखें बसीरत से माला माल हो गयीं। कुछ महीनों के अंदर हालात और कैफ़ियत में ऐसा बदलाव आया कि दिल अल्लाह की मुहब्बत से लबरेज़ हो गया। आख़िरकार हज़रत जुनैद बग़दादी रह० ने एक दिन बुलाया और फ़रमाया कि आप नहाविंद के इलाक़े के गवर्नर रहे हैं, आपने किसी पर ज़्यादती की होगी, किसी का हक़ दबाया होगा, आप एक फ़हरिस्त बनाएं कि किस-किस का हक़ आपने दबाया।

आपने एक फ़हरिस्त बनानी शुरू की। हज़रत ने तवज्जेह दीं। लिहाज़ा तीन दिन में एक कई सफ़हों वाली लम्बी फ़हरिस्त तैयार हो गई। हज़रत जुनैद बग़दादी रह० ने फ़रमाया बातिन की निस्बत उस वक़्त तक नसीब नहीं हो सकती जब तक मामलात में सफ़ाई न हो। जाओ उन लोगों से हक़ माफ़ करवा के आओ। चुनाँचे आप नहाविंद तशरीफ़ ले गए और एक एक आदमी से माफ़ी मांगी। कुछ ने तो एकदम माफ़ कर दिया और कुछ ने कि हम उस वक़्त तक माफ़ नहीं

करें। जब तक तुम इतनी देर धूप में न खड़े रहो। कुछ ने कहा हम जब तक माफ़ नहीं करेंगे जब तक तुम हमारे मकान की तामीर में मज़दूर बनकर काम न करो। आप हर आदमी की ख़्वाहिश के मुताबिक़ उसकी शर्त पूरी करते, उनसे हक़ बख़्शवाते रहे यहाँ तक कि दो साल के बाद वापस बग़दाद पहुँचे। अब आपकी ख़ानक़ाह में आए तो पाँच साल का अरसा गुज़र गया था। मुजाहिदे और रियाज़त की चक्की में पिस पिसकर नफ़्स मर चुका था, "मैं" निकल गई थी, बातिन में तू ही तू के नारे थे। बस रहमते इलाही ने जोश मारा और एक दिन जुनैद बग़दादी रह० ने उन्हें बातिनी निस्बत से माला माल कर दिया। बस फिर क्या था आँख का देखना बदल गया, पाँव का चलना बदल गया, दिल व दिमाग़ की सोच बदल गई, ग़फ़लत ख़त्म हो गई, माआरिफ़ते इलाही से सीना पुर नूर होकर ख़ज़ीना बन गया और आप अल्लाह के आरिफ़ बन गए। (इश्क़े इलाही: स० 33-35)

जो दुनिया की सूरत पर होते हैं शैदा
हमेशा वो रंज ओ अलम देखते हैं

गुड़ के बदले सोने की अंगूठी

शेख़ सअदी रह० ने एक क़िस्सा लिखा है कि वह फ़रमाते हैं कि मैं छोटा सा था तो मेरी वालिदा ने मुझे सोने की अंगूठी बनवाकर दी। मैं अंगूठी पहनकर बाहर निकला मुझे एक ठग मिल गया। उसके पास गुड़ की डली थी। उसने मुझे बुलाया और कहा कि यह चखो। मैंने गुड़ को चखा तो मीठा लगा फिर वह कहने लगा कि अब अपनी अंगूठी को चखो। जब मैंने अपनी अंगूठी को चखा तो कुछ लज़्ज़त महसूस नहीं हुई। वह मुझे कहने लगा कि यह बेमज़ा चीज़ दे दो और मज़ेदार चीज़ ले लो। मैंने उसकी बातों में आकर उसे सोने की अंगूठी दे दी और गुड़ की डली ले ली। इसी तरह अगर मुहब्बते इलाही की

क़द्र व क़ीमत हमारे दिल में न हो तो आदमी ग़फ़लत व गुनाहों की वजह से उसको ज़ाए कर देता है। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 8/122)

हुस्ने फ़ानी की सजावट पे न जा
यह मुनक़्क़श साँप है डस जाएगा

मुहब्बत के लिए हाँ तो कह दे

एक बंदे की झोपड़ी थी सरकंडे की बनी हुई। एक हाथी वाला कहीं से आ गया। हाथी वाले ने झोपड़ी वाले से कहा कि मैं आपसे दोस्ती करना चाहता हूँ। उसने कहा जी मैं तो नहीं कर सकता? उसने कहा कि आप हाथी वाले हैं हाथी लेकर आएंगे और मेरी झोपड़ी में हाथी तो आ नहीं सकता। हाथी वाला मुस्कुराया और कहने लगा कि बस तुम हाँ कर दो। मैं तुम्हारी झोपड़ी को भी महल बना दूँगा। सोचिए जहाँ हाथी आ जाता है अगर हाथी वाला मुहब्बत के इक़रार करने पर उसी झोपड़ी को महल बना सकता है।

बिल्कुल यही मामला परवरदिगार ने क़ुरआन में फ़रमा दिया,

﴿اللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِينَ آمَنُوا﴾

अल्लाह तआला दोस्त है ईमान वालों का।

अल्लाह तआला की मिसाल हाथी वाले की तरह है और मोमिन की मिसाल झोपड़ी वाले की है। अब अगर मोमिन हाँ कह दे। अल्लाह तआला आपसे दोस्ती करना चाहते हैं। हम भी उस दोस्ती पर लब्बैक कहना चाहते हैं तो परवरदिगार हमारी झोपड़ी को महल ख़ुद बना देंगे और मुहब्बत के आदाब ख़ुद सिखाकर हमें अपनी मुहब्बत की नेमत ख़ुद अता फ़रमा देंगे। बड़े की तरफ़ से मुहब्बत का इशारा है, तो जब इशारा है तो हम उसके लिए हाज़िर हैं कि ऐ महबूब हम आपसे मुहब्बत के लिए तैयार हैं आप हमें अपनी मुहब्बत में शामिल

कर लीजिए। (खुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 1/109, तमन्नाए दिल: 212)

दुनिया की महफ़िलों से उकता गया हूँ या रब
क्या लुत्फ़ अंजुमन का जब दिल ही बुझ गया

महबूब मिला सब कुछ मिला

सुबक्तगीन बादशाह अपनी एक बीवी से बहुत ज़्यादा मुहब्बत करता था। एक बार दूसरी बीवियों ने उससे कहा कि आप अपनी बीवी फ़लाँ से ज़्यादा मुहब्बत रखते हैं हालाँकि हुस्न में हम उससे ज़्यादा हैं, समझदारी में भी हम उससे ज़्यादा हैं। आख़िर उसमें कौन सी ऐसी ख़ास बात है, हमें तो उसके अंदर कुछ नज़र नहीं आता मगर आप की मुहब्बत की निगाह जो उस पर उठती है वह किसी दूसरी बीवी पर नहीं उठती, आख़िर क्या वजह है? बादशाह ने कहा अच्छा मैं कभी इस बात का जवाब दे दूँगा। उसके बाद उसकी बीवियाँ यह बात भूल गयीं।

एक दिन सुबक्तगीन ने अपने घर के सहन में बैठकर कहा कि आज मैं अच्छे मूड में हूँ, इसलिए मैं चाहता हूँ कि मैं तुम में से हर एक को अच्छे अच्छे ईनाम से नवाज़ूँ। वे यह बात सुनकर खुश हुई कि आज हमें शाही ख़ज़ाने से ईनाम मिलेगा। सहन में सोने चाँदी और जवाहरात के ढेर लगा दिए गए। बादशाह ने सबको बुलाकर कहा कि इस सहन में जो चीज़ें पड़ी हुई हैं उनमें से जिस चीज़ पर जो बीवी भी हाथ रख लेगी उसको वह चीज़ ईनाम के तौर पर दे दी जाएगी। चुनाँचे जिस वक़्त मैं इशारा करूं तुम दौड़कर अपनी पसंद की चीज़ पर हाथ रख लेना। बीवियाँ तैयार हो गयीं और उन्होंने अपनी-अपनी पसंद की चीज़ों पर निगाह जमा लीं। किसी ने याक़ूत के ऊपर, किसी ने हीरे के ऊपर, किसी ने सोने के ऊपर, किसी ने

चाँदी के ऊपर। बादशाह ने इशारा किया तो बीवियों ने दौड़कर अपनी अपनी पसंदीदा चीज़ों पर हाथ रख लिए लेकिन वह बीवी जिस पर उसकी मुहब्बत की ख़ास नज़र रहती थी वह अपनी जगह खड़ी रही। जब सबने देखा कि हमने क़ीमती चीज़ों पर हाथ रख लिए मगर इसने किसी चीज़ पर हाथ नहीं रखा तो वे हँसने लगीं और बादशाह से कहने लगीं बादशाह! सलामत हम कहा करती थीं कि यह बेवक़ूफ़ है और इसके अंदर अक़्ल की कमी है और आज इसकी अक़्ल की कमी खुलकर सामने आ गई। यह तो बस सोचती रही लिहाज़ा आज इसके पल्ले कुछ नहीं आएगा। बादशाह ने उससे पूछा कि ऐ अल्लाह की बंदी! तूने किसी चीज़ पर हाथ क्यों नहीं रखा। वह कहने लगी बादशाह सलामत! मैं पूछना चाहती हूँ कि आपने यही कहा है न कि आज जो जिस चीज़ पर हाथ रखेगी वह चीज़ उसकी हो जाएगी। बादशाह ने कहा हाँ यही तो मैंने कहा है। उसने यह सुना तो आगे बढ़ी और बादशाह के कंधे पर हाथ रख दिया और कहने लगी बादशाह सलामत! जब आप मेरे हो गए तो सारा ख़ज़ाना मेरा बन गया। बादशाह ने उसकी यह बात सुनकर अपनी दूसरी बीवियों से कहा कि देखो इस की अक़्लमंदी और मुहब्बत की वजह से मैं इसके साथ ज़्यादा मुहब्बत करता हूँ। इसी तरह जब इंसान मुहब्बते इलाही को थाम लेता है तो काएनात की चीज़ें उसके लिए मुसख़्ख़र (क़ाबू में) हो जाती हैं। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 7/150)

इश्क़ की दीवानगी तय कर गई कितने मक़ाम
अक़्ल जिस मंज़िल पे थी अब तक उसी मंज़िल पे है

मुहब्बते इलाही में मौलाना मुहम्मद अली जौहर रह० सरशार (मस्त)

मौलाना मुहम्मद अली जौहर रह० क़रीब ज़माने में एक बुज़ुर्ग

गुज़रे हैं। हमारे नक़्शबंदी बुज़ुर्गों के साए में रहे, उनसे तर्बियत पाई। अल्लाह तआला ने उनके दिल में अपनी मुहब्बत भर दी। दिल में अहद कर लिया कि मुसलमानों को जब तक आज़ादी नहीं मिलेगी मैं उस वक़्त तक क़लम के ज़रिए से जिहाद करता रहूँगा। लिहाज़ा इंगलैंड तशरीफ़ ले गए। वहाँ अख़बारों में अपने मज़मून लिखते थे कि अंग्रेज़ों को चाहिए कि वे मुसलमानों को आज़ादी दे दें। क़लमी जिहाद करते रहे और यह नीयत कर ली कि जब तक आज़ादी नहीं मिल जाती वापस घर नहीं जाऊँगा। इसी हालत में कई बार उनको तक्लीफ़ें भी आयीं। जेल में भी डाले गए। उन्होंने जेल में कुछ अश'आर लिखे, फ़रमाते हैं—

तुम यूँ ही समझना कि फ़ना मेरे लिए है
पर ग़ैब में सामान मेरे लिए है
तौहीद यह है कि ख़ुदा हश्र में कह दे
यह बंदा दो आलम से ख़फ़ा मेरे लिए है

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 1/114)

मरने से पहले अब्बा जी की ज़ियारत

हज़रत मौलाना मुहम्मद अली जौहर रह० की बेटी बीमार हुई। डाक्टरों ने जवाब दे दिया। जवान उम्र लड़की थी। माँ ने पूछा कि कोई आख़िरी तमन्ना कोई आख़िरी ख़्वाहिश? कहा अब्बा जी की ज़ियारत को जी चाहता है। माँ ने ख़त लिखवा दिया। जवान उम्र बेटी का ख़त परदेस में मिला कि मैं अपनी उम्र की आख़िरी घड़ियाँ गिन रही हूँ, दिल की आख़िरी तमन्ना है कि अब्बा हुज़ूर तशरीफ़ लाएं तो मैं आपका दीदार कर लूँ। कितनी बड़ी बात थी। हज़रत को वह ख़त मिला। हज़रत मौलाना मुहम्मद अली जौहर रह० ने उस ख़त की

पीठ पर दो शे'र लिखकर वह ख़त वापस भेज दिया। बेटी को इस हाल में क्या जवाब लिखा? वह फ़रमाते हैं—

मैं तो मजबूर हूँ अल्लाह तो मजबूर नहीं
तुझ से मैं दूर हो वह तो मगर दूर नहीं
तेरी सेहत हमें मंज़ूर है लेकिन उसको
नहीं मंज़ूर तो फिर हम को भी मंज़ूर नहीं

यह कैफ़ियत नसीब हो जाए तो ज़िंदगी का मज़ा आ जाए। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमारे लिए अपनी यह नेमत आसान फ़रमा दे। (आमीन) (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 1/115)

मुहब्बते इलाही की बरकत से हो गए सब अपने

शेख़ अब्दुल वाहिद रह० कि एक बार मैंने अल्लाह तआला से दुआ मांगी कि ऐ अल्लाह आपने जन्नत में जिसको मेरा साथी बनाना है दुनिया में ही मेरी उससे मुलाक़ात करा दीजिए। फ़रमाते हैं कि मुझे ख़्वाब में बताया गया कि हब्शा की रहने वाली एक औरत मैमूना है जो जन्नत में तुम्हारी साथी बनेगी। लिहाज़ा मैं उस बस्ती की तरफ़ चल पड़ा। जाकर बस्ती वालों से पूछा तो उन्होंने कहा कि वह तो बकरियाँ चराती है और इस वक़्त बाहर कहीं बकरियाँ चरा रही होगी। फ़रमाते हैं कि मैं चल पड़ा। जब मैंने बस्ती से बाहर निकलकर देखा तो हैरान हुआ कि बकरियाँ एक ही जगह पर चर रही हैं और इधर उधर भागती नहीं हैं और एक औरत पेड़ के नीचे खड़ी नमाज़ पढ़ रही है। जब मैंने ग़ौर किया तो मैंने देखा कि जहाँ बकरियाँ चर रही थीं वहाँ उस चारागाह के किनारे कुछ भेड़िए बैठे नज़र आए। उन भेड़ियों की वजह से वे बकरियाँ कहीं बाहर नहीं भाग रही थीं और एक जगह पर ही चर रही थीं। जब उस औरत ने सलाम फेरा और

मुझे देखा तो कहने लगी अब्दुल वाहिद! अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने मुलाक़ात की वायदागाह तो जन्नत बनाई है। इसलिए तुम दुनिया में कैसे आ गए? मैंने कहा कि मैंने दुआ मांगी थी जो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के यहाँ क़ुबूल हो गई। मगर अब मैं आपसे एक बात पूछना चाहता हूँ कि मैंने ऐसा मंज़र तो कभी नहीं देखा कि आप नमाज़ पढ़ रही थीं, बकरियाँ चर रही थीं और भेड़िए बैठे हुए थे और वे बकरियों को कुछ नहीं कह रहे थे। मुझे इसका राज़ समझ में नहीं आ रहा है। वह कहने लगीं अब्दुल वाहिद! यह बात समझनी आसान है कि जिस दिन से मैंने अपने परवरदिगार से सुलह कर ली है उस दिन से भेड़ियों ने मेरी बकरियों से सुलह कर ली है। मालूम हुआ कि "फ़ज़्कुरूनी उज़्कुरुकुम" का एक मतलब यह बना कि ऐ बंदो! मैं तुम मुझ से सुलह कर लो, मैं मख़्लूक़ की तुम्हारे साथ सुलह कर दूँगा। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 7/45)

सारी चमक दमक तो इन्हीं मोतियों से है
आँसू नहीं तो इश्क़ में कुछ आबरू नहीं

दरबारे इलाही में अहले मुहब्बत की लाज

एक बार मुसलमान और एक ईसाई सफ़र के साथी बने क्योंकि दोनों को एक ही मंज़िल पर जाना था। लिहाज़ा सोचा कि इकट्ठे सफ़र अच्छा गुज़रेगा। अभी मंज़िल पर पहुँचने में दो दिन बाक़ी थे कि दोनों का सफ़र में खाने का सामान ख़त्म हो गया। आपस में सोच-विचार करने बैठे। मुसलमान ने सुझाव दिया कि एक दिन आप दुआ करें कि खाना मिले दूसरे दिन मैं दुआ करूंगा कि खाना मिले। ईसाई ने कहा पहले आप दुआ करें। लिहाज़ा मुसलमान ने एक तरफ़ होकर अपने परवरदिगार से दुआ मांगी तो थोड़ी देर में एक आदमी गर्म-गर्म खाने के तश्त लेकर आ गया। मुसलमान बहुत ख़ुश हुआ

कि अल्लाह तआला ने इज़्ज़त रख ली। खाना खाकर दोनों चैन की नींद सो गए। दूसरे दिन ईसाई की बारी थी। वह देखने में बड़ा सुकून में नज़र आ रहा था। उसने एक तरफ़ होकर दुआ की। थोड़ी देर में पहले दिन से दुगना खाना आया। ईसाई की ख़ुशी की हद न रही मगर मुसलमान अपने दिल में बहुत परेशान हुआ। उसका जी ही नहीं चाहता था कि खाना खाए। ईसाई ने देखा तो कहने लगा आप खाना खाएं तो मैं आपको दो ख़ुशख़बरियाँ सुनाऊँगा। जब खाने से फ़ारिग़ हो गए तो मुसलमान ने पूछा कि बताएं क्या ख़ुशख़बरी है। ईसाई ने कहा पहली ख़ुशख़बरी तो यह कि मैं कलिमा पढ़कर मुसलमान होता हूँ और दूसरी ख़ुशख़बरी यह है कि मैंने यह दुआ मांगी थी कि ऐ अल्लाह अगर इस मुसलमान का आपके यहाँ कोई मक़ाम है तो आप खाना अता फ़रमा दें। लिहाज़ा अल्लाह तआला ने खाने के दो तश्त आपके इकराम की वजह से अता फ़रमाए। आशिक़ सादिक़ की अल्लाह तआला के यहाँ बड़ी क़द्र व क़ीमत होती है।

मुहब्बत में बाहर आने नहीं देते

एक आदमी ने मछली ख़रीदी और एक मज़दूर से कहा कि घर ाहुँचा दो तो इतनी मज़दूरी मिल जाएगी। मज़दूर ने कहा बहुत अच्छा ागर रास्ते में नमाज़ का वक़्त हो गया तो मैं पहले नमाज़ पढूँगा फिर ाछली पहुँचाउंगा। इस पर वह आदमी राज़ी हो गया। जब चले तो ाफ़ी दूर जाकर अज़ान हुई। मज़दूर ने कहा कि वायदे के मुवाफ़िक़ तो नमाज़ पढूँगा। आदमी ने कहा, बहुत अच्छा मैं मछली के पास ाड़ा होता हूँ तुम जल्दी से नमाज़ पढ़कर आ जाओ। मज़दूर मस्जिद दाख़िल हुआ और नमाज़ पढ़ने में लग गया। जब दूसरे लोग माज़ पढ़कर बाहर निकल आए तो भी यह मज़दूर नमाज़ पढ़ रहा ा।

उस आदमी ने देखा कि बहुत देर लग गई तो आवाज़ देने लगा। ऐ मियाँ इतनी देर हो गई तुम्हें कौन बाहर आने नहीं देता। उस मज़दूर ने जवाब दिया कि जनाब जो आपको अंदर नहीं आने देता वही मुझे बाहर जाने नहीं देता। सुब्हानअल्लाह इश्क़ व मुहब्बत वालों का अजीब हाल होता है वह नमाज़ में यूँ महसूस करते हैं जैसे अपने महबूबे हक़ीक़ी से राज़ व नियाज़ की बातें कर रहे हों।

(इश्क़े इलाही: स० 44)

उसको मुहब्बत न होती तो तहज्जुद की तौफ़ीक़ न देता

एक आदमी बाज़ार जा रहा था। उसने देखा कि एक बांदी का मालिक उसे बेच रहा है मगर ख़रीदार कोई नहीं। वह बांदी देखने में बहुत दुबली पतली सी नज़र आ रही थी। उस आदमी ने उस बांदी को मामूली दामों में ख़रीद लिया। जब रात को आँख खुली तो उसने देखा कि यह बांदी तहज्जुद की नमाज़ पढ़कर दुआ कर रही है और कह रही है कि ऐ अल्लाह! आपको मुझे मुहब्बत रखने की क़सम। उस आदमी ने टोका कि यूँ न कहो बल्कि यह कहो कि ऐ अल्लाह मुझे तुझसे मुहब्बत रखने की क़सम। यह सुनकर वह बांदी बिगड़ गई और कहने लगी मेरे आक़ा अगर अल्लाह तआला को मुझसे मुहब्बत न होती तो मुझे सारी रात मुसल्ले पर न बिठाता और आपको यूँ मीठी नींद न सुलाता। यह कहकर उस बांदी ने रो रोकर दुआ की ऐ अल्लाह अब तक मेरा मामला पोशीदा था अब लोगों को पता चल गया है तू मुझे अपने पास बुला ले। चुनाँचे वहीं मुसल्ले पर बैठे बैठे उसकी रूह निकल गई। (इश्क़े इलाही: स० 44)

मुहब्बते इलाही में भूख व प्यास का गुज़र कहाँ

एक बार हज़रत हसन व हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा बहुत बीमार

हो गए। तबियत संभल ही नहीं रही थी। ख़ातूने जन्नत हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने दोनों शहज़ादों की सेहत के लिए मन्नत मानी कि या अल्लाह दोनों बच्चों को सेहत मिल गई तो हम मियाँ-बीवी तीन दिन लगातार नफ़्ली रोज़े रखेंगे। अल्लाह तआला ने अपनी रहमत ख़ास से दोनों शहज़ादों को सेहत अता फ़रमा दी। चुनाँचे हज़रत अली और हज़रत फ़ातिमा ने रोज़े रखने शुरू किए। जब इफ़्तार का वक़्त हुआ तो दोनों के पास सिर्फ़ एक रोटी थी। इतने में दरवाज़े पर दस्तक हुई। पूछा कौन तो जवाब मिला मिस्कीन हूँ, भूखा हूँ, इस दर पर आया हूँ कि कुछ मिल जाए। मियाँ-बीवी ने सोचा कि हम बग़ैर खाए गुज़ारा कर लेंगे मगर हमें मांगने वाले को ख़ाली नहीं भेजना चाहिए। लिहाज़ा रोटी उठाकर मांगने वाले को दे दी और खुद बग़ैर खाए सिर्फ़ पानी से रोज़ा इफ़्तार कर लिया। सुबह सहरी भी सिर्फ़ पानी पीकर हुई। दूसरे दिन हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने कुछ काम किया मगर उजरत इतनी मिली कि फिर दोनों के लिए सिर्फ़ एक रोटी। जब इफ़्तारी का वक़्त क़रीब आया तो फिर दरवाज़े पर दस्तक हुई। पता चला कि एक यतीम सवाली बनकर आया है और कुछ खाने के लिए मांग रहा है। मियाँ-बीवी ने सोचा कि हम आज फिर खाए बग़ैर गुज़ारा कर लेंगे मगर यतीम को इंकार करना ठीक नहीं। लिहाज़ा रोटी यतीम को दे दी गई और ख़ुद पानी से रोज़ा इफ़्तार कर लिया। सहरी के वक़्त सिर्फ़ पानी था। तीसरे दिन हज़रत अली कुछ लेकर आए मगर वह भी इतना कि मियाँ-बीवी मुश्किल से इफ़्तार कर सकते थे। लेकिन इस दिन एक क़ैदी ने दस्तक दी और सवाल किया। गोया तीन दिन लगातार भूखा रहने से हज़रत अली और हज़रत फ़ातिमा की हालत बहुत कमज़ोर हो गई थी। कमज़ोरी बहुत ज़्यादा थी। भूख की शिद्दत ने बेचैन कर दिया था मगर अल्लाह के नाम पर सवाल करने वालों को ख़ाली भेज देना उनके नज़दीक मुनासिब नहीं था।

लिहाज़ा तीसरे दिन भी रोटी उठाकर सवाल करने वाले को दे दी। अपने ऊपर तंगी बरदाश्त कर ली मगर मुहब्बते इलाही से दिल ऐसा लबरेज़ था कि अल्लाह के नाम पर जान देना भी आसान था यह तो फिर रोटी की बात थी। आशिक़ों की ज़िंदगियों का एक खुला पहलू यही होता है कि वे अपना सब कुछ अल्लाह तआला की ख़ातिर क़ुर्बान करने के लिए तैयार होते हैं। (इश्क़े इलाही: स० 46)

यह बाज़ी इश्क़ की बाज़ी है जो चाहो लगा दो डर कैसा
जीत गए तो क्या कहना गर हार गए तो मात नहीं

सजदे में महबूब ने प्यार ले लिया

हज़रत शाह फ़ज़्लुर्रहमान गंज मुरादाबादी रह० एक बहुत बड़े शेख़ थे। एक बार हज़रत थानवी रह० तशरीफ़ ले गए। हज़रत ने फ़रमाया, अशरफ़ अली! जब सजदा करता हूँ तो मुझे यूँ लगता है कि जैसे अल्लाह तआला ने मेरा प्यार ले लिया हो और अशरफ़ अली! जब क़ुरआन पढ़ता हूँ तो यूँ लगता है कि जैसे परवरदिगार से बातचीत कर रहा हूँ और मुझे इतना मज़ा आता है कि जन्नत में कुछ हूरें मेरे पास आएं तो मैं उनसे कहूँ बीबी! मुझे थोड़ा से क़ुरआन सुना दो, सुब्हानअल्लाह।

मुझे मेरा महबूब बचाएगा

एक बार नबी सल्लल्लाहु अलैहिस्सलाम एक पेड़ के नीचे आराम फ़रमा रहे हैं। एक काफ़िर ने देखा कि तलवार लटक रही है और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आराम फ़रमा रहे हैं। उसने सोचा कि अच्छा मौक़ा है, कुछ काम कर दिखाऊँ। उसने आगे बढ़कर तलवार को हाथ में ले लिया उसी दौरान नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जाग गए तो यह पूछता है,

﴿من يمنعك مني يا محمد﴾

ऐ मुहम्मद अब आपको मुझसे कौन बचाएगा?

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "अल्लाह" इस अल्लाह के लफ़्ज़ में कोई ऐसी तासीर थी कि उस काफ़िर के दिल पर एक हैबत तारी हुई। इतना काँपा कि उसके हाथ से तलवार गिर गई। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तलवार ली, फ़रमाया,

﴿من يمنعك مني﴾

अब तुझे मुझसे कौन बचाएगा?

वह काफ़िर मिन्नतें करने लगा कि आप तो करीम हैं, आप तो बड़े हैं, फ़लाँ हैं और फ़लाँ हैं। आप मुझे माफ़ कर दीजिए। आपने अपने रहमतुल्लिल-आलमीन होने का सबूत दिया कि अच्छा तू ऐसे सख़ी से माफ़ी मांग रहा है जिसे रहमतुल्लिल-आलमीन कहा गया। फ़रमाया जा तुझे मैंने माफ़ कर दिया। कहने लगा हुज़ूर! आपने मुझे माफ़ कर दिया और ज़रा कलिमा पढ़ा दीजिए ताकि मुझे अल्लाह तआला भी माफ़ फ़रमा दें। मैं आज से आपके ग़ुलामों में शामिल होता हूँ।

महबूब की हिफ़ाज़त दुश्मन की गोद में

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की वालिदा के साथ अल्लाह तआला ने वादा फ़रमाया और उन्होंने अल्लाह तआला के वादे पर भरोसा कर लिया। नतीजा क्या हुआ? ज़रा वाक़िआ मुख़्तसर सा सुन लीजिए। अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं,

﴿وأوحينا إلى أم موسى أن أرضعيه فإذا خفت عليه فألقيه في اليم﴾

हमने "वही" की मूसा अलैहिस्सलाम की वालिदा को कि आप इस बच्चे को दूध पिलाइए और अगर आपको इसके बारे में डर

लग जाए (फ़िरऔन के सिपाही पकड़ न ले जाएं और ज़िब्ह न कर दें) तो उसको फिर पानी में डाल देना।

और इर्शाद फ़रमाया,

﴿فَلْيُلْقِهِ الْيَمُّ بِالسَّاحِلِ يَأْخُذْهُ عَدُوٌّ لِّي وَعَدُوٌّ لَّهُ﴾

फिर इसका वह ताबूत किनारे पर आ लगेगा, इसको वह पकड़ेगा जो मेरा भी दुश्मन है और इसका भी दुश्मन है।

अब बताइए अक़्ल से पूछें। अक़्ल चीख़ेगी, चिल्लाएगी और कहेगी परवरदिगार आपने हिफ़ाज़त भी करनी है तो यह बच्चा इन सिपाहियों को नज़र ही न आए, वे सिपाही इधर आ ही न सकें, मुझे फ़रमा दें मैं कहीं गुफ़ा में छिपा आती हूँ, छत पर लिटा देती हूँ, रब्बे करीम यह क्या बात है कि इसको दरिया में डालें, बच्चा है ताबूत बनाकर डालना पड़ेगा। ताबूत में डालें तो पानी भरने का अंदेशा और अगर पानी से बचाने के लिए वाटर टाइट बनाएं तो हवा भी बंद हो जाएगी, हवा बंद होने से बच्चा मरेगा। समझ नहीं आती कि क्या करें। हवा के लिए सुराख़ भी रखें तो पानी जाने का ख़तरा है और पानी से बचाने की कोशिश करें तो हवाब बंद होने का ख़तरा, अक़्ल कहती है कि यह बच्चा बचता नहीं है मगर रब्बे करीम क्या फ़रमाते हैं,

﴿وَلَا تَخَافِي وَلَا تَحْزَنِي إِنَّا رَادُّوهُ إِلَيْكِ وَجَاعِلُوهُ مِنَ الْمُرْسَلِينَ﴾

तुमने ख़ौफ़ भी नहीं खाना और तुमने डरना भी नहीं है, हम उसे लौटाएंगे तुम्हारे पास और हमने तो उसे रसूलों में बनाना है।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की वालिदा ने इस बात पर यक़ीन कर लिया। लिहाज़ा बेटे को दरिया में डाल दिया। उसको फ़िरऔन के कारिन्दों ने पकड़ लिया। अब जब खोलकर देखा तो उसमें बच्चा था।

अल्लाह तआला फ़रमाते हैं,

﴿القيت عليك محبة مني﴾

हमने आप पर मुहब्बत डाल दी।

मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि मूसा अलैहिस्सलाम की आँखें इतनी दिलकश थीं, जाज़िब थीं कि जैसे ही फ़िरऔन और उसकी बीवी ने देखा तो वे अपना दिल दे बैठे। फ़िरऔन की बीवी कहने लगी,

﴿لا تقتلوه عسىٰ ان ينفعنا او نتخذه ولدا﴾

तुमने इसे क़त्ल नहीं करना, हम इसको अपना बेटा बनाएंगे, हमें नफ़ा होगा।

फ़िरऔन कहने लगा ठीक है। लिहाज़ा शाही फ़रमान जारी हुए कि हमने इसे बेटा बना लिया। हज़ारों बच्चों को ज़िब्ह करवाने वाला अपना दिल दे बैठा है। कहता है, ठीक है इसे क़त्ल नहीं करना। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं,

﴿وحرمنا عليه المراضع من قبل﴾

हमने उन पर बाक़ी औरतों के दूध को हराम कर दिया।

अब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम दूध नहीं पीते तो फ़िरऔन ख़ुद परेशान होता है कि बच्चा दूध नहीं पीता, क्या होगा? लिहाज़ा औरतों को बुलवाया। जो औरतें आती हैं बच्चा दूध नहीं पीता। इसी हाल में रात गुज़र गई। उधर मूसा अलैहिस्सलाम की वालिदा की हालत भी अजीब थी। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं,

﴿ان كادت لتبدي به لولا ان ربطنا علىٰ قلبها﴾

वह तो अपनी बात का इज़्हार ही कर बैठती अगर हमने उसके दिल पर गिरह न डाल दी होती।

बेचारी रो बैठी, आख़िर माँ थी, रात गुज़र गई। सोचती थी कि क्या पता मेरा बेटा किस हाल में है? रो रहा है या ख़ुश है, जाग रहा है या सोया हुआ है, किसके हाथ में है, किसके हाथ में नहीं है। माँ थी, इन ख़्यालों ने बहुत परेशान किया हुआ था। लिहाज़ा बेक़रार होकर अपनी बेटी से कहा, जाओ ज़रा भाई की ख़बर लाओ। वह भागी गई, जाकर मन्ज़र देखती है कि बहुत सारी औरतें दूध पिलाने आ रही है मगर वह बच्चा किसी का दूध ही नहीं पीता। वह आगे बढ़ी और फ़िरऔन से कहा,

﴿هل ادلكم على اهل بيت يكفلونه لكم وهم له ناصحون﴾

मैं तुम्हें बताऊँ ऐसे घर वालों के बारे में जो इसे दूध भी पिलाएं और इसके बड़े ख़ैर ख़्वाह होंगे।

मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि फ़िरऔन को यह बात खटकी। कहने लगा कौन जो इसके बड़े ख़ैरख़्वाह होंगे। यह भी नबी की बहन थीं, कहने लगीं हम आपकी रिआया हैं अगर हम आपकी ख़ैरख़्वाही नहीं करेंगे तो कौन करेगा। फ़िरऔन कहने लगा, बात समझ में आ गई, अच्छा ले जाओ। चुनाँचे बहन आई और वालिदा को ले गई। उन्होंने दूध पिलाया। जब बच्चे ने दूध पी लिया तो फ़िरऔन बहुत ख़ुश हुआ। कहने लगा बीबी! इस बच्चे को अपने घर ले जाओ। वहाँ जाकर इसे दूध पिलाना और दूध पिलाने की तन्ख़्वाह हम अपने ख़ज़ाने से भेज दिया करेंगे। रब्बे करीम फ़रमाते हैं,

فرددناه الى امه كى تقر عينها ولا تحزن ولتعلم ان وعد

الله حق ولكن اكثر الناس لا يعلمون.

उसकी आँखें ठंडी हों और ग़मज़दा न हो और वह जान ले कि अल्लाह के वादे सच्चे हैं लेकिन अक्सर लोग इस बात को नहीं जानते।

देखा अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के वादे कैसे सच्चे हैं। इसलिए फ़रमाया, ﴿ومن اصدق من الله قيلا﴾ और कौन है अल्लाह से ज़्यादा सच्ची बात कहने में।

सुब्हानअल्लाह, अल्लाह इस तरह अपने नेक बंदों की हिफ़ाज़त करते हैं। (वाक़िआत फ़क़ीर 45-46)

राहे इश्क़ व वफ़ा में धोका भी गवारा

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के बारे में आता है कि जब वह अपने गुलामों में से किसी को अच्छे अंदाज़ से नमाज़ पढ़ते देखते तो वह उस गुलाम को आज़ाद कर देते थे। जब आहिस्ता-आहिस्ता गुलामों को पता चला तो हर गुलाम ने यही तरीक़ा अपना लिया। गुलाम अच्छी तरह नमाज़ पढ़कर दिखा देते और वह उन्हें आज़ाद कर देते। किसी ने कहा हज़रत आपके गुलाम दिखावा करते हैं और वे आपके सामने बना संवार कर नमाज़ पढ़ लेते हैं और आप उनको आज़ाद कर देते हैं। वे तो इस तरह आपको धोका देते हैं। इस पर अब्दुल्लाह बिन उमर ने फ़रमाया,

"मैं अल्लाह की मुहब्बत में सच्चा कैसे हो सकता हूँ जब तक उसकी मुहब्बत में धोका न खाऊँ।" (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 10/24)

इश्क़े इलाही के तीन इम्तिहान

इश्क़े इलाही के मैदान में सैय्यदना इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने मज़बूत क़दम रखा। अल्लाह तआला ने जब उनको आज़माया तो वह इस आज़माइश में कामयाब हो गए। इसी हक़ीक़त को क़ुरआन मजीद में यूँ बयान किया गया है,

﴿واذا ابتلى ابراهيم ربه بكلمت فاتمهن. (البقرة: ١٢٤)﴾

और याद करो उस वक़्त को आज़माया इब्राहीम को उसके रब ने कुछ बातों में और वह उसमें कामयाब हुआ।

हमारे हज़रत मुर्शिदे आलम रह० फ़रमाते थे कि "फ़अतम्माहुन्ना" का मतलब यह है कि वह इसमें सौ फ़ीसद कामयाब हुए। अब आपकी ख़िदमत में इन चंद बातों की तफ़्सील करता हूँ:

1. बेझिझक कूद पड़े आतिशे नमरूद में

किताबों में लिखा है:

اوحی اللّٰہ تعالیٰ نبیہ ابراھیم علیہ الصلوۃ والسلام یا ابراھیم انک لی
خلیل فاحذر ان اطلع علی قلبک فاجد مشغولا بغیری فیقطع حبک
منی فانی انما اختار لحبی من لو احرقہ بالنار لم یلتفت قلبہ عنی

"अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने अपने नबी इब्राहीम अलैहिस्सलाम की तरफ़ 'वही' नाज़िल फ़रमाई कि ऐ इब्राहीम! आप मेरे ख़लील हैं। इस बात से परहेज़ करना कि मैं आपके दिल की तरफ़ तवज्जोह करूं और मैं आपके दिल को किसी ग़ैर के साथ मशग़ूल पाऊँ इसलिए कि जिसको मैं अपनी मुहब्बत के लिए चुन लेता हूं तो वह ऐसा होता है कि अगर उसको आग भी जला दे तो उसका दिल मेरी तरफ़ से दूसरी तरफ़ मुतवज्जेह नहीं होता।"

लिहाज़ा ज़िन्दगी में वह वक़्त भी आया जब नमरूद ने आपको आग में डाल देने का हुक्म दिया। तफ़्सीरों में उस आग की तफ़्सील बयान की गई है। उन लकड़ियों को एक ही वक़्त में आग लगाई गई। जब सारी लकड़ियाँ जल गयीं तो नमरूद सोचने लगा कि हज़रत इब्राहीम को आग में कैसे डाले। आख़िरकार शैतान नमरूद के पास आया और उसने समझाया कि एक झूला बना लीजिए और उसमें बिठाकर इनको आग में फेंक दीजिए। इस तरह यह आग के ठीक

बीच में आकर गिरेंगे। लिहाज़ा झूला बनवा लिया गया और आपको उसमें बिठाकर फेंक दिया गया।

अभी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का झूला हवा में था कि फ़रिश्ते ताज्जुब से कहने लगे, ऐ अल्लाह इब्राहीम के दिल में आपकी कितनी मुहब्बत है, आपकी मुहब्बत की वजह से आग में डाले जा रहे हैं। उन्होंने असबाब की कोई परवाह नहीं की। ऐ अल्लाह इनकी मदद फ़रमा दीजिए। मगर अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों को फ़रमाया, "तुम लोग उनके पास चले जाओ और अपनी मदद पेश कर लो। फिर मेरा ख़लील क़ुबूल कर ले तो मदद कर देना वरना ख़लील जाने और ख़लील का रब जलील जाने क्योंकि यह मेरा और मेरे ख़लील का मामला है।"

लिहाज़ा फ़रिश्तों ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पास आकर मदद पेश की मगर आप अलैहिस्सलाम ने उनकी बात सुनकर फ़रमाया ﴿ حاجة لي اليكم ﴾ मुझे तुम्हारी हाजत कोई नहीं।

फिर हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम हाज़िर हुए और मदद पेश की। इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने पूछा जिब्रील! आप अपनी मर्ज़ी से आए हैं या अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने भेजा है? जिब्रील अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया कि मैं आया तो अल्लाह की मर्ज़ी से हूँ मगर अल्लाह तआला ने मुझे फ़रमाया है कि अगर मदद क़ुबूल करें तो मदद कर देना। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, "नहीं जब मेरे अल्लाह को मेरे हाल का पता है तो फिर मुझे यही काफ़ी है कि परवरदिगार जानता है की इब्राहीम किस हाल में है। मेरा मालिक और महबूब जानता है कि मुझे उसके नाम पर आग में डाला जा रहा है। लिहाज़ा मैं आग में जाना ही पसन्द करूंगा।"

जब फ़रिश्ते वापस चले गए तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने आग से

मुख़ातिब होकर इर्शाद फ़रमाया,

﴿ينار كوني بردا وسلما على ابراهيم﴾ (سورة انبياء ٦٩)

ऐ आग मेरे इब्राहीम पर सलामती वाली ठंडक वाली बन जा।

इस तरह अल्लाह तआला ने आग को उनके लिए गुलज़ार बना दिया।

2. वीरान वादी में

हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की पैदाइश हो गई तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम से फ़रमाया, "ऐ मेरे प्यारे ख़लील! आप अपनी बीवी को वीरान वादी में छोड़ आइए।" इसलिए आप अपनी बीवी हज़रत हाजरा रज़ियल्लाहु अन्हा और बच्चे हज़रत इस्माईल को बैतुल्लाह के क़रीब जहाँ पानी और हरियाली का नाम व निशान भी नहीं था, छोड़ देते हैं। कोई बात भी नहीं करते और फिर वापस मुल्के शाम जाने के लिए खड़े हो जाते हैं। यह कोई आसान काम नहीं था। ज़रा तसव्वुर करके देखिए कि अपनी बीवी को अकेले मकान में छोड़कर आने के लिए बंदे का दिल तैयार नहीं होता हालाँकि शहर के अंदर होता है। फिर अपनी बीवी और बच्चे को ऐसे वीराने में छोड़ देना जहाँ पीने को पानी भी न मिले और हर तरफ़ पत्थर ही पत्थर नज़र आएं, कितनी बड़ी आज़माइश है। जब अल्लाह के हुक्म से उन्हें छोड़कर वापस आने लगे तो बीवी ने पूछा, आप हमें यहाँ क्यों छोड़कर जा रहे हैं? मगर आपने कोई जवाब नहीं दिया। दोबारा पूछा कि आप हमें यहाँ क्यों छोड़कर जा रहे हैं? मगर फिर भी आपने कोई जवाब नहीं दिया। वह भी आख़िर नबी के साथ रही थीं। तीसरी बार पूछने लगीं कि क्या आप हमें अल्लाह के हुक्म से यहाँ छोड़कर जा रहे हैं? आपने जवाब देने के बजाए सर हिला दिया कि

हाँ मैं अल्लाह के हुक्म से आपको यहाँ छोड़कर जा रहा हूँ। जब उस नेक बीवी ने यह सुना तो कहने लगीं अगर आप हमें अल्लाह के हुक्म से यहाँ छोड़कर जा रहे हैं तो अल्लाह तआला हमें कभी ज़ाए नहीं फ़रमाएंगे। फिर आप अपने बीवी बच्चे को वहाँ छोड़कर वापस मुल्के शाम चले गए।

3. सिखाए किसने इस्माईल (अलैहिस्सलाम) को फ़रज़न्दी

अपनी जान देना आसान होता है लेकिन अपने सामने अपने बच्चे को मरते देखना इससे भी ज़्यादा मुश्किल काम है। इसीलिए तो बच्चे को बचाने के लिए माँ-बाप आ जाते हैं और कहते हैं कि पहले हमें मारो फिर बच्चे को हाथ लगाना। मालूम हुआ कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का आग में डाले जाने का इम्तिहान एक दर्जा पीछे था और औलाद को अपने हाथों से ज़िब्ह करना उससे भी एक दर्जा आगे था। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम अपनी बीवी और बच्चे से मिलने मुल्के शाम से मक्का मुकर्रमा आए। आपने आठ ज़िलहिज्जा को ख़्वाब देखा कि मैं अपने बेटे को अल्लाह के नाम पर ज़िब्ह कर रहा हूँ। आप सुबह उठते तो सोचने लगे कि शायद क़ुर्बानी मक़सूद है। इसलिए आपने सत्तर ऊँट अल्लाह के रास्ते में क़ुर्बान कर दिए। नवीं रात को फिर वही ख़्वाब देखा। इसलिए दूसरे तो दिन भी सत्तर ऊँट क़ुर्बान कर दिए। लेकिन दसवीं रात को फिर वही ख़्वाब देखा कि मैं अपने बेटे को अल्लाह के नाम पर क़ुर्बान कर रहा हूँ तो वाज़ेह तौर पर समझ गए कि अल्लाह तआला को मेरे बेटे की ही क़ुर्बानी मतलूब है। इसलिए आपने पक्का इरादा कर लिया कि अब मैंने अपने सात साला बेटे इस्माईल को अल्लाह की राह में क़ुर्बान करना है।

चुनाँचे जब सुबह हुई तो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने बच्चे को प्यार किया और कहा बेटा! मेरे साथ चलो। बीवी ने पूछा

कहाँ? आपने फ़रमाया, किसी बड़े की मुलाक़ात करनी है। नाम न बताया क्योंकि वह आख़िर माँ हैं, मुमकिन है क़ुर्बानी का नाम सुनकर उसका दिल पसीज जाए और उसकी आँखों से आँसू आ जाएं और सब्र व बरदाश्त में कुछ फ़र्क़ आ जाए। इसलिए मोटी सी बात कर दो कि किसी बड़े की मुलाक़ात के लिए जाना है। बीबी हाजरा रज़ियल्लाहु अन्हा ने हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को नहलाया, सर में तेल भी लगाया, कंघी भी कर दी। लेकिन उनको मालूम नहीं था कि उनका बेटा आज किसी आज़माइश में जा रहा है। अलबत्ता रवाना होते वक़्त इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने बेटे को कह दिया, बेटा! एक रस्सी और छुरी भी ले लो। उसने पूछा, अब्बा जान! रस्सी और छुरी किस लिए लेनी है? फ़रमाया, बेटा! जब बड़े से मुलाक़ात होती है तो फिर क़ुर्बानियाँ भी देनी पड़ती हैं। बेटा समझा कि शायद किसी जानवर को क़ुर्बान करेंगे। यूँ हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम अपने जिगर के टुकड़े को क़ुर्बान करने के लिए घर से चल पड़े।

जब वह अपने घर से चले गए तो पीछे शैतान मलऊन बीबी हाजरा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास आया और कहने लगा तुझे पता भी है कि आज तेरे बेटे के साथ क्या होने वाला है? उन्होंने पूछा क्या? वह कहने लगा तेरा मियाँ तेरे बेटे को ज़िब्ह कर देगा। उन्होंने कहा बूढ़े! तेरी अक़्ल चली गई, कभी बाप भी अपने बेटे को ज़िब्ह करता है? वह कहने लगा हाँ, उनको अल्लाह का हुक्म हुआ है। जब उसने यह कहा तो कहने-लगीं अगर अल्लाह का हुक्म हुआ है तो मेरे बेटे को क़ुर्बान होने दो क्योंकि अगर मेरे बारे में अल्लाह का हुक्म होता तो मैं भी उसके रास्ते में क़ुर्बान होने के लिए तैयार हो जाती।

जब शैतान का बीबी हाजरा के सामने कोई बस न चला तो वह रास्ते में हज़रत इस्माईल के पास आया और उनसे पूछा सुनाओ तुम

कहाँ जा रहे हो? किसी बड़े की मुलाक़ात के लिए जा रहा हूँ। यह कहने लगा हर्गिज़ नहीं, तुझे ज़िब्ह कर दिया जाएगा। उन्होंने कहा यह कैसे हो सकता है, कोई बाप भी अपने बेटे को ज़िब्ह करता है? कहने लगा हाँ अल्लाह का हुक्म है। हज़रत इस्माईल कहने लगे अगर अल्लाह तआला का हुक्म है तो मैं हाज़िर हूँ। लिहाज़ा शैतान फिर नाकाम हुआ।

फिर रास्ते में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पास आया और कहने लगा, बेटे को क्यों ज़िब्ह करते हो, कभी ख़्वाब के पीछे भी कोई अपनी औलाद को ज़िब्ह करता है? देखिए क़ाबील ने हाबील को क़त्ल किया था लेकिन आज तक उसका नाम रुसवाए ज़माना मशहूर है। अगर आप भी अपने बेटे को ज़िब्ह कर देंगे तो कहीं आपका नाम भी ऐसे ही बुरा न मशहूर हो जाए लिहाज़ा ऐसा काम हर्गिज़ न करना। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, अरे बदबख़्त! मालूम होता है तू शैतान है। क़ाबील ने तो अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश की वजह से बंदे को मारा था और मैं तो रहमानी ख़्वाब को पूरा करने के लिए अपने बेटे को क़ुर्बान करना चाहता हूँ। मेरे ख़्वाब का उसके अमल के साथ कोई ताल्लुक़ और वास्ता भी नहीं है। क़ाबील तो औरत का मिलाप चाहता था और मैं अपने पाक परवरदिगार का मिलाप चाहता हूँ। लिहाज़ा मैं आज अपने बेटे की क़ुर्बानी देकर दिखाऊँगा। उसके बाद जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम आगे बढ़े तो शैतान आकर रास्ते में खड़ा हो गया और कहने लगा मैं नहीं जाने देता। उस वक़्त उन्होंने सात कंकरिया उठाकर शैतान को मारी और अल्लाह तआला ने वहाँ से शैतान को भगा दिया। जहाँ उसे हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने कंकरिया मारीं उस जगह का नाम जमरतुल-ऊला पड़ गया। फिर दूसरी जगह पर जाकर रास्ता रोका और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने वहाँ भी उसकी रमी जमार की।

शैतान फिर भाग गया। उस जगह का नाम जमरतुल-वुस्ता पड़ गया। फिर तीसरी जगह भी उसको कंकरियाँ लगीं और उस जगह का नाम जमरतुल-उक़्बा पड़ गया। जमरतुल-उक़्बा से आगे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से पूछा, अब्बा जान! आपने फ़रमाया कि बड़े के लिए जाना है, बताइए कि उस बड़े की मुलाक़ात कब होगी? अब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने बेटे को सारी बात बताई कि,

﴿يٰبُنَيَّ اِنِّيْٓ اَرٰى فِي الْمَنَامِ اَنِّيْٓ اَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرٰى.(الصّٰفّٰت:١٠٢)﴾

ऐ मेरे बेटे! मैंने ख़्वाब देखा है कि मैं तुम्हें ज़िब्ह कर रहा हूँ, बता तेरी क्या राय है?

बेटा भी बड़े दर्जे के नबी के घर का चश्म व चिराग़ था और बाद में रिसालत के ओहदे पर बैठने वाला था। इसलिए कम उम्री के बावजूद इताअत के साथ सर झुकाते हुए बहुत ही अदब से अर्ज़ करने लगा,

﴿يٰٓاَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ سَتَجِدُنِيْٓ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰبِرِيْنَ.(الصّٰفّٰت:١٠٢)﴾

ऐ अब्बा जान! कर गुज़रिए जिस बात का आपको हुक्म हुआ है, आप मुझे सब्र करने वाला पाएंगे।

सुब्हानअल्लाह! जब बाप के दिल में मुहब्बत इलाही का जज़्बा जोश मार रहा होता है तो फिर घर के दूसरे लोगों के अंदर भी उसके नमूने नज़र आते हैं। जब बेटे ने यह जवाब दिया तो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम उनको ज़िब्ह करने के लिए तैयार हो गए। यह देखकर वह कहने लगे, "अब्बा जान! मैं आपसे चार बातें अर्ज़ करना चाहता हूँ।" हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया मेरे बेटे! तुम मुझे बताओ कि तुम इस वक़्त क्या कहना चाहते हो? अर्ज़ किया अब्बा जान! पहली बात तो यह कहना चाहता हूँ कि आप छुरी को अच्छी तरह तेज़ कर लीजिए ऐसा न कि छुरी खुंडी हो और मुझे ज़िब्ह करने

में ज़्यादा वक़्त लग जाए। मैंने जब अल्लाह के नाम पर जान देनी ही है तो छुरी तेज़ होने की वजह से मेरी जान जल्दी निकलेगी और मैं अल्लाह से वासिल हो जाऊँगा।"

यह सुनकर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने छुरी और भी तेज़ कर ली और पूछा बेटा! दूसरी बात कौन सी है? बेटे ने अर्ज़ किया, "अब्बा जान! मैं छोटा हूँ, मुझे रस्सी से बाँध दीजिए।"

लिहाज़ा इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने उनको रस्सी से बाँध दिया और पूछा बेटा! तीसरी बात क्या है? बेटे ने अर्ज़ किया, "अब्बा जान! जब आप मुझे ज़िब्ह करेंगे तो मेरा चेहरा ऊपर आसमान की तरफ़ न करना क्योंकि मैं चाहता हूँ कि मुझे सज्दे की हालत में मौत आए। वैसे भी जब आपकी तरफ़ पीठ होगी तो आपके दिल में बाप वाली मुहब्बत भी जोश नहीं मारेगी।"

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, बेटा! मैं यह भी कर दूँगा। आप अब और क्या बात करना चाहते हो? अर्ज़ किया, "अब्बा जान! जब आप मुझे ज़िब्ह कर चुकें तो आप मेरे कपड़े मेरी वालिदा को दिखा देना और कहना कि आपका बेटा अल्लाह के नाम पर कामयाब हो गया।" हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की चौथी बात पर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम रो पड़े और अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से फ़रियाद की, "ऐ अल्लाह आपने बुढ़ापे में औलाद दी और अब इस मासूम बच्चे की क़ुर्बानी मांगते हैं, ऐ अल्लाह! अपने ख़लील पर रहम फ़रमा और इस बच्चे पर भी जो क़ुर्बानी के लिए तैयार है।"

फिर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को औंधे मुँह लिटाकर उनके गले पर छुरी रखी दी। वह उनको ज़िब्ह करना चाहते थे मगर छुरी उनको ज़िब्ह नहीं करती थी। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने जिब्रील अलैहिस्सलाम को हुक्म दिया, "जिब्रील! जाओ और छुरी को थाम लो अगर रगों में से कोई रग कट गई तो

फ़रिश्तों के दफ़्तर से तुम्हारा नाम निकाल दूँगा।" लिहाज़ा हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम आकर छुरी को थाम लेते हैं। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम छुरी को चलाने की कोशिश करते हैं लेकिन छुरी नहीं चलती। फिर अपना पूरा बोझ उस के ऊपर डाल देते हैं मगर छुरी ने बच्चे को फिर भी ज़िब्ह न किया। चुनाँचे हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम गुस्से में आकर छुरी से कहते हैं, ऐ छुरी! तू क्यों नहीं चलती? छुरी ने जवाब में पूछा, ऐ इब्राहीम ख़लीलुल्लाह! जब आपको आग में डाला गया था तो आप को आग ने क्यों नहीं जलाया था? हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, आग को अल्लाह का हुक्म था कि इब्राहीम को नहीं जलाना। फिर छुरी कहने लगी, "ऐ इब्राहीम ख़लीलुल्लाह! आप मुझे एक बार कहते हैं कि गला काटो और अल्लाह मुझे सत्तर बार कह रहे हैं कि हर्गिज़ नहीं काटना। अब बताए कि मैं गला कैसे काट सकती हूँ?" अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की शान देखिए कि उसने हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को ज़िंदा बचा लिया और उनके बजाए एक मेंढा क़ुर्बान हो गया। अल्लाह तआला को हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की यह अदा इतनी पसन्द आई कि अल्लाह तआला ने उनके बेटे को महफ़ूज़ भी फ़रमा लिया और फ़रमाया,

﴿وفديناه بذبح عظيم﴾ (الصفٰت: آیۃ ۱۰۷)

उसकी जगह हमने एक बड़ी क़ुर्बानी दे दी।

मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि अल्लाह तआला ने "अज़ीम" का लफ़्ज़ इसलिए इर्शाद फ़रमाया कि हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की पेशानी में दो नबुव्वतों का नूर था। एक अपनी नबुव्वत का और एक सैय्यदना रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबुव्वत का। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं,

﴿إن هذا لهو البلاء المبين﴾ (الصّٰفّٰت: ١٠٦)

बेशक यह बहुत बड़ी आज़माइश थी।

फिर फ़रमाया,

﴿سلام على إبراهيم﴾ (الصّٰفّٰت: ١٠٩)

ऐ इब्राहीम! तुझ पर सलामती हो यानी ऐ इब्राहीम! तुझे शाबाश हो, इब्राहीम! तू जीता रहे कि तूने ऐसी क़ुर्बानी करके दिखाई।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने अपने ख़लील की इतनी हौसला अफ़्ज़ाई फ़रमाई कि,

﴿وتركنا عليه في الآخرين﴾ (الصّٰفّٰت: ١٠٨)

और हमने आने वालों में इस अमल को जारी कर दिया यानी ऐ इब्राहीम! हमें तेरा यह अमल इतना पसंद आया कि हम तेरे इस अमल को क़यामत तक सुन्नत बनाकर जारी कर देंगे।

देखिए जो इश्क़े हक़ीक़ी में कामयाब होते हैं अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तरफ़ से उनको यूँ इज़्ज़तें मिलती हैं। आज भी ईमान वालों की ज़िन्दगियों में मुहब्बते इलाही के आसार नज़र आते हैं। कितनी माँएं हैं जो आज भी अपने बेटों को दीने इस्लाम की सरबुलन्दी के लिए मैदाने जिहाद में भेजती हैं और कहती हैं कि जाइए और अपनी जान क़ुर्बान कर दीजिए।

आज भी गर हो इब्राहीम सा ईमां पैदा
आग कर सकती है अंदाज़े गुलिस्तां पैदा

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 10/33-43)

हज़रत मारूफ़ करख़ी रह० पर मुहब्बते इलाही

किताबों में लिखा है कि सिर्री सिक़्ती रह० ने एक बार ख़्वाब

देखा और उन्हें क़यामत का मंज़र दिखाया गया। उन्होंने देखा कि क़यामत का दिन है। लोग अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की हुज़ूर में खड़े हैं और उनमें एक आदमी है जो अल्लाह की मुहब्बत में मस्त और दीवाना है और दीवानों की तरह अल्लाह की याद में लगा हुआ है। पूछा गया कि यह कौन है? तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने फ़रमाया, ऐ अहले मौक़फ़! ऐ यहाँ खड़े होने वाले लोगो! तुम इस बन्दे को हैरान होकर देख रहे हो। यह मेरा बन्दा मारूफ़ करख़ी है। इस पर मेरी मुहब्बत का जज़्बा तारी है। इसको उस वक़्त तक सकून नहीं मिलेगा जब तक मेरा दीदार नहीं कर लेगा। लिहाज़ा अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उनको अपना दीदार अता फ़रमाएंगे तब उनके जिस्म में सुकून होगा।

(ख़ुत्बाते ज़ुलफ़ुक़्क़ार 5/300)

मुहब्बते इलाही की पहचान

एक साहब कहते हैं कि मैं एक बांदी ख़रीदकर लाया। देखने में वह कमज़ोर सी थी, बीमार सी लगती थी। सारा दिन उसने घर के काम किए और इशा की नमाज़ के बाद मुझसे पूछने लगी कोई और काम भी मेरे ज़िम्मे है? मैंने कहा जाओ आराम कर लो। उसने वुज़ू किया और मुसल्ले पर आ गई और मुसल्ले पर आकर वह नफ़्लें पढ़ने लगी। कहने लगे मैं सो गया। तहज्जुद के वक़्त जब मेरी आँख खुली तो मैंने देखा कि वह उस वक़्त अल्लाह तआला से दुआ मांग रही थी। मुनाजात कर रही थी और मुनाजात में यह कह रही थी कि ऐ अल्लाह! आपको मुझसे मुहब्बत रखने की क़सम! आप मेरी यह बात पूरी फ़रमा दीजिए। कहते हैं कि जब मैंने यह सुना कि ऐ अल्लाह आपको मुझसे मुहब्बत रखने की क़सम तो मैंने उसको टोका और कहा, ऐ लड़की! यह न कह कि ऐ अल्लाह! आपको जो मुझसे मुहब्बत रखने की क़सम बल्कि यूँ कह कि ऐ अल्लाह! मुझे आपसे

मुहब्बत रखने की क़सम। फ़रमाते हैं कि जब उसने यह सुना तो नाराज़ होने लग गई, बिगड़ गई और कहने लगी मेरे मालिक! बात यह है कि अगर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त को मुझसे मुहब्बत न होती तो यूँ वह मुझको मुसल्ले पर न बिठाता और आपको सारी रात मीठी नींद न सुलाता। आपको जो मीठी नींद सुला दिया और मुझे मुसल्ले पर बिठाकर जगा दिया, मेरे साथ कोई ताल्लुक़ तो है कि मुझे जगाया हुआ है। सुब्हानअल्लाह! एक वह वक़्त वह था कि तहज्जुद के वक़्त यूँ अपने रब से यूँ अपने ताल्लुक़ के वास्ते दिया करते थे, ऐ अल्लाह! आपको मुझसे मुहब्बत रखने की क़सम। वाक़ई अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त को उनसे मुहब्बत होती थी और उन लोगों को अल्लाह तआला से मुहब्बत होती थी। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 5/126)

ﷺ

"لا يومن احدكم حتى اكون احب اليه من والده وولده والناس اجمعين." (مسلم)

मुहब्बते रसूल

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

सबसे पहले मशीयत के अनवार से
नक़्श रूए मुहम्मद बनाया गया
फिर उसी नूर से मांग कर
बज़्म कून ओ मकाँ सजाया गया
वह मुहम्मद भी अहमद भी महमूद भी
हुस्ने फ़ितरत का शाहिद भी मशहूद भी
इल्म व हिकमत में वह ग़ैरमहदूद भी
ज़ाहिरन उम्मियों में उठाया गया

मुहब्बते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

मुहब्बते नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर बशारत

एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ करते हैं कि ऐ अल्लाह के नबी! मैं एक बात से बहुत परेशान हूँ। जिस वक़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत हमारे दिलों में लहरें मारती हैं। हम हाज़िर होकर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत से अपनी आँखों को ठंडा कर लेते हैं। लेकिन जन्नत में तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) बहुत आला दर्जे पर होंगे। वहाँ पर अगर आपकी ज़ियारत न हुई तो हमें जन्नत का क्या मज़ा आएगा। इसलिए उसी वक़्त हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम आए और आकर ख़बर दी। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस आदमी को बुलाया और ख़ुशख़बरी सुनाई (المرء مع من احب) आदमी उसके साथ होगा जिससे उसको मुहब्बत होगी। सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम फ़रमाते हैं कि पूरी ज़िन्दगी में ईमान के बाद जितनी ख़ुशी इस हदीस से हुई किसी और हदीस से नहीं हुई क्योंकि यक़ीन हो गया कि आख़िरत में हमें हुज़ूर का साथ नसीब हो जाएगा। सहाबा किराम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इस तरह मुहब्बत करते थे। (ख़ुत्बात ज़ुल्फ़ुक़्क़ार: 2/104)

मुहम्मद की मुहब्बत है सनद आज़ाद होने की
ख़ुदा के दामने तौहीद में आबाद होने की

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का इश्क़े रसूल

सहाबा किराम नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आशिक़ थे और उनमें पहला नम्बर हज़रत अबूबक्र सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु का था। हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० नक़ल करते हैं कि एक महफ़िल में हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, मुझे तीन चीज़ें बहुत महबूब हैं, ख़ुशबू, नेक बीवी और मेरी आँखों की ठंडक नमाज़ में है। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़ौरन बोल उठे ऐ अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुझे भी तीन चीज़ें बहुत महबूब हैं, आपके चेहर-ए-अनवर को देखते रहना, दूसरा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अपना माल ख़र्च करना और तीसरा यह कि मेरी बेटी आपके निकाह में है। अब ज़रा तीनों बातों का अंदाज़ा लगाइए कि इनका मर्क़ज़ और जड़ कौन बनता है? वह नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ाते अक़्दस। जब हिजरत का हुक्म हुआ तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के घर तशरीफ़ ले गए। हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के दरवाज़े पर दस्तक दी तो फ़ौरन हाज़िर हुए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हैरान होकर पूछा, ऐ अबूबक्र! क्या आप जाग रहे थे? अर्ज़ किया जी हाँ। कुछ अरसे से मेरा दिल महसूस कर रहा था कि जल्दी ही आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हिजरत का हुक्म होगा तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ज़रूर मुझे अपने साथ ले जाने का शर्फ़ अता फ़रमाएंगे। बस मैंने उस दिन से रात का सोना छोड़ दिया कि कहीं ऐसा न हो कि आप तशरीफ़ लाएं और मुझे जागने में देर हो जाए।

जंग तबूक के मौक़े पर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हुक्म फ़रमाया कि जिहाद के लिए अपना माल पेश करो। हज़रत

उमर रज़ियल्लाहु अन्हु अपने घर का आधा माल ले आए और सोचते रहे कि आज में हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु से नेकी में बढ़ जाऊँगा। लेकिन जब सिद्दीके अकबर आए तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा ऐ अबूबक्र! अपने पीछे अपने बीवी बच्चों के लिए क्या छोड़ आए? अर्ज़ किया अपनी बीवी बच्चों के लिए अल्लाह और उसके रसूल को छोड़ आया हूँ।

परवाने को चिराग़ है बुलबुल को फूल बस
सिद्दीक के लिए है ख़ुदा का रसूल बस

जब नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का विसाल मुबारक हुआ तो सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपना ग़म इन अल्फ़ाज़ में ज़ाहिर किया:

لما رأيت نبينا متجند لا ضاقت على بعرضهن الاور لا فارتاع

قلبي عند ذالك لهلاكه والعظم ما حيث كسير باليتى من قبل

لهلك صاحبي غيبت في حدث على صخور.

जब मैंने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को वफ़ात की हालत में देखा तो मकानात अपनी वुसअत के बावजूद मुझ पर तंग हो गए। उस वक़्त आपकी वफ़ात पर मेरा दिल लरज़ उठा और ज़िंदगी भर मेरी कमर टूटी रहेगी। काश! मैं अपने आक़ा के इन्तिक़ाल से पहले क़ब्र में दफ़न कर दिया गया होता और मुझ पर पत्थर होते।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार: 2/98)

सिद्दीके अकबर के सिद्क़ व वफ़ा की इन्तिहा

जब ग़ारे सौर में पहुँचने के लिए पहाड़ पर चढ़ने का वक़्त था तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पाँव के पंजे लगा रहे थे और

हाथों के बल ऊपर चढ़ रहे थे। पूरा पाँव नहीं लगा रहे थे। इस तरह चढ़ने का मक़सद यह था कि क़दमों के निशान न लगें ताकि दुश्मन क़दमों के निशान देखकर पीछे न आ जाएं। जब हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह देखा कि महबूब ज़मीन पर पाँव नहीं लगा रहे हैं सिर्फ़ पंजे लगा रहे हैं तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के महबूब! अबूबक्र हाज़िर है, मेहरबानी फ़रमाइए। आप मेरे कंधों पर सवार हो जाइए। चुनाँचे नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम उनके कंधों पर सवार हुए और वह नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को लेकर ग़ारे सौर तक पहुँचे।

(ख़ुत्बाते ज़ुलफ़ुक़्क़ार 6/58)

यह मैराजे मुहब्बत है यह ऐजाज़े मुहब्बत है
हज़ारों ज़ख़्म खाकर मुस्कराना शादमा रहना

गुलाब के फूल पर शबनम

इश्क़ व मुहब्बत की यह दास्तान भी अजीब है कि ग़ारे सौर में जिस सूराख़ पर सैय्यदना सिद्दीक़ं अकबर ने पाँव रखा हुआ था उसमें एक साँप था। उसने हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के पाँव मुबारक पर काट लिया। जैसे ही साँप ने काटा, हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को तकलीफ़ हुई और ज़हर ने असर किया। अदब की वजह से ज़बान से कोई लफ़्ज़ न निकाला कि कहीं मेरे महबूब सल्लल्लहु अलैहि वसल्लम की नींद में ख़लल न आ जाए लेकिन दर्द की वजह से आँखों से आँसू आ गए और यह सआदत भी अल्लाह तआला ने हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को देनी थी कि जब आँसू गिरा तो ज़मीन पर नहीं बल्कि नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के मुबारक गाल पर गिरा। चेहराए अक़्दस पर आँसू पड़ते ही नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आँख खुल गई। आपने पूछा

(ما یبکیک یا ابابکر) ऐ अबूबक्र! तू क्यों रोता है। अरे रहमतुल्लिल-आलमीन तो तेरी गोद में है, इस हाल में भी रोता है, इसकी क्या वजह है? सैय्यदना हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की आँखों में आँसू थे। बता दिया कि ऐ अल्लाह के महबूब! मेरा पाँव इस सुराख़ पर था। किसी ज़हरीली चीज़ ने काट लिया है। जिसके ज़हर की वजह से आँसू निकल आए और आँसू भी गिरे तो कहाँ गिरे। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के चेहरए अनवर पर गिरे। किसी शायर ने इस पर भी मज़मून बाँध दिया—

आँसू गिरा है रुए रिसालते मआब पर
क़ुर्बान होने आई है शबनम गुलाब पर

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 6/63)

सुब्हानअल्लाह! हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु का आँसू शबनम की तरह और मेरे आक़ा महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रुख़सार गुलाब की तरह। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने पूछा, अबूबक्र! क्यों रोते हो? अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी! इस ज़हर की वजह से तकलीफ़ ज़्यादा है, इसलिए रो रहा हूँ। लिहाज़ा ताजदारे मदीना सरवरे काएनात फ़ख़्रे मौजूदात सैय्यदना मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने लुआबे मुबारक को उस ज़ख़्म के ऊपर लगाया जिसकी वजह से तकलीफ़ भी जाती रही और ज़ख़्म भी ठीक हो गया।

अबूक़ुहाफ़ा के बेटे की सुनहरी वफ़ादारी

तीन रोज़ के बाद ग़ारे सौर से निकलकर मदीना की तरफ़ रवाना हुए तो नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने देखा कि अबूबक्र कभी आगे चलते हैं, कभी पीछे चलते हैं, कभी दाएं चलते हैं, कभी बाएं चलते हैं। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया, अबूबक्र! यह क्या

मामला है? अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के महबूब! जब पीछे चलता हूँ तो डर लगता है कि दुश्मन कहीं दाएं से न आ जाए तो इधर चलने लग जाता हूँ। फिर डर लगता है कि कहीं बाएं से न हमलावर हो तो उधर चलने लग जाता हूँ। जिस तरह शमा के गिर्द परवाना चक्कर लगा रहा होता है एक आशिक़ सादिक़ अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के गिर्द यूँ चक्कर लगा रहा था।

जब नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम उम्मे माबद के घर पहुँचे तो भूख की वजह से आगे सफ़र जारी रखना दुश्वार हो रहा था। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने उम्में माबद की इजाज़त से बकरियों का दूध निकाला और नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ख़िदमत में पेश किया। जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़ूब जी भरकर पी लिया तो अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़ुशी हुई। चुनाँचे बाद में किसी मौक़े पर क़िस्सा सुनाते हुए अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, ﴿شرب حتى رضيت﴾ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लभ ने इतना दूध पिया कि मैं ख़ुश हो गया।

इश्क़े नबवी की यह कितनी प्यारी मिसाल है कि दूध तो महबूब पी रहे हैं और सच्चे आशिक़ का दिल ख़ुशी से फूला नहीं समाता हालाँकि भूख अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को भी निढाल कर रही थी। जब मदीने तैय्यबा पहुँचे तो मदीने वालों ने दोनों मेहमानों का इस्तिक़बाल किया मगर क्योंकि अन्सार ने पहले से नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ज़ियारत नहीं की थी लिहाज़ा वे ग़ल्ती से अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के गिर्द जमा होने लगे। इत्तिबा इतनी कामिल थी कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु में फ़र्क़ करना मुश्किल हो गया था। रफ़्तार, बातचीत, चाल-ढाल, लिबास वग़ैरह में इतना मिलते थे कि नक़ल और असल मे कोई फ़र्क़ करना मुश्किल था। हज़रत अमीर ख़ुसरो

रह० फ़रमाते हैं—

من تو شدم تو من شدی من جاں شدم تو جاں شدی
تا کس نگوید بعد ازیں من دیگرم تو دیگری

मैं तू हो गया, तू मैं हो गया। मैं जान बन गया तू जान हो गया। अब कोई नहीं कह सकता कि मैं और हूँ और तू और है।

यह फ़ना-फ़िश्शेख़ का मुक़ाम है। (इश्के रसूलः स० 62)

इश्के रिसालत मआब में आगे निकल गए

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने हमें अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने का हुक्म दिया। मेरे पास काफ़ी माल था। मैंने सोचा मैं आज अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु से आगे निकल जाऊँगा। लिहाज़ा मैंने आधा माल सदक़ा किया। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने पूछा घर वालों के लिए क्या छोड़ा? मैंने अर्ज़ किया, इसके बराबर। इतने में अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु भी अपना माल लेकर आए। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा, ﴿ما ابقيت لاهلك قال ابقيت لهم الله ورسوله﴾ घर वालों के लिए क्या छोड़ा? अर्ज़ किया अल्लाह और उसके रसूल को।

यह सुनकर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, ﴿لا اسابقك الى شئ ابدا﴾ मैं तुम्हारे साथ किसी चीज़ में मुक़ाबला नहीं करूंगा।

अल्लामा इक़बाल रह० ने इस वाक़िए को अजीब अंदाज़ में पेश किया है—

इतने में वह रफ़ीक़े नबुव्वत भी आ गया
जिससे बिनाए इश्क़ ओ मुहब्बत है उस्तवार

ले आया अपने साथ वह मर्दे वफ़ा सरश्स्त
हर चीज़ जिसका चश्मे जहाँ में हुआ एतिबार

मुल्के यमीनो दिरहमो दिनारो रख़्त ओ जिन्स
अस्प क़मर सुमो शुतरो क़ातिरो हम्मार

बोले हुज़ूर चाहिए फ़िक्रे अयाल भी
कहने लगा वह इश्क़ो मुहब्बत का राज़दार

ऐ तुझ से दीदए मय ओ अंजुम फ़रोग़ गीर
ऐ तेरी ज़ात बाइसे तकवीन रोज़गार

परवाने को चिराग़ है बुलबुल को फूल बस
सिद्दीक़ के लिए है ख़ुदा और रसूल बस

(इश्के रसूलः स० 65)

इश्क़ ने मशक़्क़त में हलावत पैदा कर दी

एक बार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अबूबक्र रज़ियल्लाहु को फटे कपड़ों में देखा तो फ़रमाया ऐ अबूबक्र! तुम पर एक वक़्त कितना ख़ुशहाली का था। अब तुम्हें दीन की वजह से कितनी मुशक़्क़ते उठानी पड़ रही हैं। हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु एकदम तपड़ कर बोले,

اما لو عشت عمر الدنيا وعذاب به جمعيا اشد العذاب لايفرجنى فرج الملح.

अगर सारी ज़िन्दगी इसी मुशक़्क़त में गुज़ारूं और शदीद अज़ाब में मुब्तला हूँ फिर भी दोस्त की दोस्ती में जो वुसअत और कुशादगी है वह हासिल नहीं होती। (इश्के रसूल स० 66)

अगर क़ुबूल हो जाए तो ज़हे नसीब

हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु एक बार अपने घर में रो रोकर दुआ मांग रहे थे। जब फ़ारिग़ हुए तो घरवालों ने पूछा क्या वजह थी? फ़रमाया कि मेरे पास कुछ माल है जो मैं नबी अलैहिस्सलातु

वस्सलाम की ख़िदमत में पेश करना चाहता हूँ मगर देने वाले का हाथ ऊपर होता है, लेने वाले का नीचे होता है। मैं अपने आक़ा की इतनी बेअदबी नहीं करना चाहता। इसलिए रब्बे काएनात से रो रोकर दुआ मांग रहा था, ऐ अल्लाह मेरे महबूब के दिल में यह बात डाल दे कि वह अबूबक्र के माल को अपना समझकर ख़र्च करे। इसलिए दुआ क़ुबूल हुई। हदीस पाक का ख़ुलासा है कि नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के माल को अपने माल की तरह ख़र्च करते थे। एक हदीस पाक में है कि नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया,

﴿ان من امن الناس علی فی صحبته وماله ابوبکرؓ﴾

बेशक लोगों में सबसे बड़ा मोहसिन ख़िदमत और माल के एतिबार से अबूबक्र (रज़ियल्लाहु अन्हु) है। (इश्क़े रसूल स० 66)

सिद्दीक़े अकबर के इश्क़ व वफ़ा की हद तो देखिए

एक दफ़ा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हरम शरीफ़ में थे। कुफ़्फ़ार ने आकर नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम को तकलीफ़ पहुँचानी शुरू कर दी। एक काफ़िर कहीं बाहर से निकला। उसने अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को देखा और कहने लगा ﴿ادرك صاحبك﴾ कि तू अपने दोस्त का ख़्याल कर कि उसको तो कुफ़्फ़ार तकलीफ़ पहुँचा रहे हैं। आप भागे हुए मस्जिद में पहुँचे और मजमे को चीरकर अन्दर गए और फ़रमाने लगे, ﴿اتقتلون رجلا ان يقول ربی الله﴾ क्या तुम उस हस्ती को मारना चाहते हो जो यह कहते हैं कि मेरा रब अल्लाह है?

अब काफ़िरों ने नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम को छोड़कर उनको मारना शुरू कर दिया। रिवायत में आया है कि सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ज़बान से सिर्फ़ इतना कह रहे थे ﴿تبارك يا ذا الجلال والاكرام﴾ काफ़िरों ने इतना मारा कि बेहोश हो गए। उस वक़्त उनके

क़बीले के लोग वहाँ पहुँचे और उन्हें उठाकर घर ले आए, बहुत देर के बाद होश में आए, रात गुज़र गई। जब होश में आए तो वालिदा ने कहा बेटा कुछ खा लो। उस वक़्त अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी वालिदा से पूछा अम्मा! मुझे बताओ कि नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम किस हाल में हैं? उसने कहा बेटा! तेरा अपना हाल यह है कि जिस्म ज़ख़्मों से चूर-चूर हो चुका है। अब भी पूछ रहे हो कि उनका क्या हाल है? फ़रमाया हाँ, जब तक मुझे उनके हाल का पता नहीं चलेगा मैं कुछ नहीं खाऊँगा। उनकी वालिदा ने कहा मुझे तो नहीं पता कि वह किस हाल में है? अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने उम्मे जमील रज़ियल्लाहु अन्हा का नाम बताया और फ़रमाया कि उनके पास जाइए, वह आपको बताएंगी। लिहाज़ा उनसे पूछा गया तो उन्होंने बताया कि दारे अरक़म में हैं। जब नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम को पता चला तो अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी वालिदा के साथ दारे अरक़म पहुँचे। रिवायत में आता है कि जब सिद्दीक़े अकबर दारे अरक़म पहुँचे तो सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की इस कैफ़ियत को देखकर नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का बोसा लिया और उसके बाद सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का बोसा लिया, सुब्हानअल्लाह।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़क़्क़ार: 6/51)

मरकर किसी की ज़ुल्फ़ पे मालूम हो तुझे
फ़ुरक़त की रात कटती है किस पेच ओ ताब में

सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की नेकियाँ सितारों की मानिन्द

एक दफ़ा हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा आराम फ़रमा रही थीं। आसमान पर सितारे चमक रहे थे। उनके दिल में ख़्याल आया

कि आसमान पर जितने सितारे हैं उतनी नेकियाँ भी किसी की होंगी। उन्होंने यही सवाल नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम से पूछा कि क्या किसी की नेकियाँ भी सितारों के बराबर होंगी? नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया कि हाँ उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की होंगी। यह सुनकर हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ख़ामोश हो गयीं। फिर थोड़ी देर के बाद नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने खुद पूछा, आएशा! तुम सोच रही होगी कि मेरे वालिद का नाम नहीं लिया। कहने लगीं, जी हाँ बिल्कुल यही सोच रही थी, फ़रमाया, आएशा! उनकी बात क्या पूछती हो उनकी तो ग़ारे सौर में गुज़ारी हुई एक रात की नेकियाँ आसमान के सितारों से भी ज़्यादा हैं, सुब्हानअल्लाह। (खुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार: 6/68)

तेरी रात का मुक़ाम

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी ज़िन्दगी में हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा करते थे आप मेरी सारी ज़िन्दगी की नेकियाँ ले लीजिए और मुझे ग़ारे सौर वाली तीन रातों की नेकियाँ दे दीजिए क्योंकि मुझे उन तीन रातों की नेकियाँ अपनी सारी ज़िन्दगी की नेकियों से ज़्यादा नज़र आती हैं। इश्क़ व मुहब्बत ने इन नेकियों को किस क़द्र क़ीमती बना दिया। (खुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार: 6/69)

इश्क़ व मुहब्बत के चंद बिखरे मोती

जब नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम मर्ज़ुल-वफ़ात की हालत में थे तो हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु नमाज़ की इमामत करवाते थे। एक बार नमाज़ पढ़ा रहे थे कि नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम तशरीफ़ लाए तो अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़ौरन पीछे हटे। नमाज़ से फ़ारिग़ होने पर नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया, अबूबक्र! मैं खुद तुम्हें हुक्म कर चुका था तो तुमको अपनी जगह पर खड़े रहने से

कौन सी चीज़ रुकावट थी। अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! अबू क़हाफ़ा का बेटा इस लायक़ नहीं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आगे बढ़कर नमाज़ पढ़ाए।

जब नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने दुनिया से पर्दा फ़रमा लिया तो सहाबा किराम पर ग़म का पहाड़ टूट पड़ा। हज़रत उमर जैसे बड़े दर्जे के सहाबी हाथ में तलवार लेकर खड़े हो गए कि जिसने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़ौत हो गए, मैं उसका सर क़लम कर दूँगा। जब अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को पता चला तो आप तश्रीफ़ लाए। बुख़ारी शरीफ़ में है,

فجاء ابوبكر وكشف عن رسول الله صلى عليه وسلم فقبله

قال بابي انت وامي طبت حيا وميتا.

बस अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु आए और नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के चेहरे से चादर हटाकर माथे का बोसा लिया और कहा आप पर मेरे माँ-बाप क़ुर्बान। आपने ज़िन्दगी भी पाकीज़ा गुज़ारी और पाकीज़गी से ही ख़ालिक़ को जा मिले।

हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु को कुछ अलामतों से पता चल चुका था कि अब महबूब से जुदाई होने वाली है। इसलिए जब सूरः नसर नाज़िल हुई तो सहाबा किराम ख़ुश हुए मगर आशिक़े ज़ार अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु दिल थामकर मस्जिद के कोने में रोने बैठ गए। सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने कहा लोग फ़ौज दर फ़ौज इस्लाम में दाख़िल होंगे तो यह ख़ुशी का पैग़ाम है। फ़रमाया, हाँ लेकिन जब काम पूरा हो गया तो महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी तो महबूबे हक़ीक़े से जा मिलेंगे। मैं जुदाई के तसव्वुर से बैठा रो रहा हूँ।

जब फ़तेह मक्का के दिन अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के वालिद

अबू क़हाफ़ा ईमान लाए तो नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने बहुत ख़ुशी का इज़्हार फ़रमाया। इस पर सच्चे आशिक़ ने कहा, क़सम है उस ज़ात की जिसने आपको दीने हक़ के साथ भेजा है कि उनके इस्लाम लाने से मुझे आपके चचा अबू तालिब के इस्लाम लाने की ज़्यादा ख़ुशी होती। (असाबा)

हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु इश्के रसूल में इतना कमाल हासिल कर चुके थे कि अब उनको अपने महबूब की शान में ज़रा सी गुस्ताख़ी भी बरदाश्त नहीं थी। चुनाँचे ईमान लाने से पहले एक बार उनके वालिद ने नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की शान में कोई ना मुनासिब बात कर दी तो हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक ज़ोरदार थप्पड़ रसीद किया। एक बार अबूजहल ने नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की शान में कोई गुस्ताख़ी की तो अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु शेर की तरह उस पर झपटे और फ़रमाया, तू दफ़ा हो जा और जाकर लात व मनात की शर्मगाह को चाट। यह सबूत है इस बात का कि इश्क़ मसलेहत अंदेश नहीं हुआ करता।

जब नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने पर्दा फ़रमा लिया तो मदीने के आसपास के लोग दीने इस्लाम से फिर गए। सियासी हालात ने नाज़ुक हो गए। अक्सर सहाबा की राए थी कि उसामा रज़ियल्लाहु के लश्कर को वापस बुला लिया जाए जिस को नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम क़ैसर व रोम के मुक़ाबले में रवाना कर चुके थे लेकिन हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, क़सम है उस ज़ात की जिसके सिवा कोई माबूद नहीं, अबूबक्र से हर्गिज़ नहीं हो सकता कि उस लश्कर को वापस करे जिसे अल्लाह के महबूब ने आगे भेजा है। मैं उस लश्कर को हर्गिज़ वापस नहीं बुलाऊँगा चाहे मुझे यह यक़ीन हो कि कुत्ते हमारी टांगे खींच कर ले जाएंगे। इश्क़ का फ़ैसला अक़्ल के फ़ैसले के ख़िलाफ़ था। लेकिन दुनिया ने देखा कि ख़ैर उसी में थी।

साज़िशें अपने आप दम तोड़ गयीं। दुश्मनों के हौसले पस्त हो गए, सियासी हालात की काया पलट गई। इश्क़ एक बार फिर जीत गया।

हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी वफ़ात से कुछ घंटे पहले हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछा कि नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की वफ़ात किस दिन हुई और कितने कपड़ों में कफ़न दिया गया। मक़सद यह था कि मुझे भी वफ़ात का दिन और कफ़न नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की तरह नसीब हो। ज़िन्दगी में तो मुशाबिहत थी ही सही मरने में भी मुशाबिहत मतलूब थी।

अल्लाह अल्लाह यह शौक़ इन्तिहा है आख़िर
थे जो सिद्दीक़े अकबर बल्कि आशिक़े अकबर

हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने वफ़ात से पहले वसीयत की थी कि जब मेरा जनाज़ा तैयार हो जाए तो रौज़-ए-अक़्दस के दरवाज़े पर ले जाकर रख देना अगर दरवाज़ा खुल जाए तो वहाँ दफ़न कर दें वरना जन्नतुल-बक़ी मे दफ़न करना। लिहाज़ा जब आप का जनाज़ा दरवाज़े पर रखा गया तो ﴿انشق القفل وفتح الباب.﴾ ताला खुल गया और रवाज़ा भी खुल गया।

और एक आवाज़ सब सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने सुनी, कहा, ﴿ادخلوا الحبيب الى الحبيب.﴾ एक दोस्त को दूसरे दोस्त की तरफ़ ले आओ। (इश्क़े रसूलः 67-69, शवाहिद नबुव्वत)

जान ही दे दी जिगर ने आज पाए यार पे
उम्र भर की बेक़रारी को क़रार आ ही गया

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु और इश्क़े रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कुछ अनोखे नमूने

सैय्यदना हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु बहुत ही साफ़ और निखरी

हुई शख़्सियत के मालिक थे। जब कुफ़्र की हालत में थे तो नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम को शहीद करने की नीयत से घर से निकले। जब ईमान क़ुबूल कर लिया तो बैतुल्लाह शरीफ़ के क़रीब होकर ऐलान किया, ऐ क़ुरैशे मक्का! अब मुसलमान खुल्लम खुल्ला नमाज़ पढ़ेंगे। जो अपनी बीवी को बेवा और बच्चों को यतीम करवाना चाहता है वह उमर के मुक़ाबले में आए। आपके ईमान से अल्लाह तआला ने मुसलमानों को ताक़त बख़्शी। एक बार दिल में आया कि नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम मुझे अपनी जान के अलावा हर चीज़ से ज़्यादा अज़ीज़ हैं। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हक़ीक़त को वाज़ेह फ़रमाया तो कहने लगे कि ऐ अल्लाह के नबी! अब आप मुझे अपनी जान से भी ज़्यादा अज़ीज़ हैं। फिर सारी ज़िन्दगी इसी पर जमे रहे। इस जमे रहने पर कुछ मिसालें नीचे लिखी हैं :

1. फ़तेह मक्का में हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु अपने ख़च्चर पर सवार हज़रत अबू सुफ़ियान बिन हर्ब को बिठाकर लाए और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी! मैंने अबू सुफ़ियान को पनाह दी। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी इस दुश्मने ख़ुदा ने आपको बहुत तकलीफ़ें पहुँचायीं मुझे इजाज़त दें कि मैं इसका सर काट दूँ। हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़ मुतवज्जेह होकर कहा कि ऐ उमर! अगर अबू सुफ़ियान क़बीला बनी अदी में से होते तो आप ऐसा न कहते। जवाब में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा ऐ अब्बास! जिस दिन आप इस्लाम लाए तो आपका ईमान लाना मुझे अपने वालिद ख़त्ताब के ईमान लाने से ज़्यादा महबूब था इसलिए कि आपके ईमान लाने से नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम को ख़ुशी हुई थी। इससे मालूम हुआ कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु अपने आक़ा की ख़ुशी को हर चीज़ पर

तरजीह देते थे। (बैहिक़ी, बज़्ज़ार, असाबा)

2. नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के सामने एक बार एक यहूदी और मुनाफ़िक़ मुक़दमा पेश हुआ। क्योंकि यहूदी हक़ पर था लिहाज़ा नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने उसके हक़ में फ़ैसला दे दिया। मुनाफ़िक़ ने सोचा कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु यूहदियों पर सख़्ती करते हैं। ज़रा उनसे भी फ़ैसला करवा लें। जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को मालूम हुआ कि नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम फ़ैसला दे चुके हैं और यह मुनाफ़िक़ अपने हक़ में फ़ैसला करवाने की नीयत से मेरे पास आया है। आप अपने घर से तलवार लाए और मुनाफ़िक़ की गर्दन उड़ा दी। फिर कहा जो नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के फ़ैसले को नहीं मानता उमर उसका इसी तरह फ़ैसला करता है।

(तारीख़ ख़ुलफ़ा स० 88)

3. हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जब विसाले नबवी का यक़ीन हो गया तो उन्होंने यह कलिमात कहे

يا رسول الله صلى الله عليه وسلم ابى انت وامى لقد كنت تخطبنا على جذع النخلة فلما كثر الناس اتخذت منبرا لتسمعهم فحن الجذع لفراقك حتى جعلت يدك عليه فسكن فانتك اولى بالحنين اليك نسافا زقيهما.

या रसूलुल्लाह! आप पर मेरे माँ-बाप क़ुर्बान हों। आप खजूर के एक तने के साथ हमें ख़ुत्बा दिया करते थे। जब लोगों की कसरत हुई तो आपने एक मिम्बर बनवाया ताकि सब को आवाज़ पहुँचा सकें। आप मिम्बर पर बैठे तो पेड़ आपकी जुदाई पर रोने लगा। आपने अपना हाथ उस पर रखा तो वह चुप हुआ। जब एक तने का आप की जुदाई में यह हाल हुआ तो आपकी उम्मत को आपके फ़िराक़ पर ज़्यादा नाला व फरियाद करने का हक़ पहुँचता है। (अज़मते इस्लाम स० 7)

4. हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने दौरे ख़िलाफ़त में हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हुमा का वज़ीफ़ा साढ़े तीन हज़ार और अपने बेटे अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा का वज़ीफ़ा तीन हज़ार मुक़र्रर किया। इब्ने उमर ने पूछा कि आपने उसामा को तरजीह क्यों दी। वह किसी जंग में मुझसे आगे नहीं रहे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जवाब दिया कि उसामा नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम को तुम्हारे से ज़्यादा महबूब था और उसामा का बाप तुम्हारे बाप से ज़्यादा नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम को प्यारा था। बस मैंने नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के महबूब को अपने महबूब पर तरजीह दी। (तिर्मिज़ी, किताबुल मनाक़िब बिन हारसा)

5. एक बार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने शिफ़ा बिन्त अब्दुल्लाह अदविया को बुला भेजा। वह आयीं तो देखा कि आतिका बिन्ते उसैद पहले से मौजूद थीं। कुछ देर बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु दोनों को एक-एक चादर दी लेकिन शिफ़ा की चादर कम क़ीमत की थी। उन्होंने कहा कि मैं आपकी चचा ज़ाद बहन हूँ और इस्लाम में पुरानी हूँ, आपने मुझे ख़ास इसी मक़सद के लिए बुलाया है, आतिका यूँही आ गई थीं। आप ने फ़रमाया वाक़ई यह चादर मैंने तुम्हें देने के लिए रखी थी लेकिन जब आतिका आ गयीं तो मुझे नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की रिश्तेदारी का लिहाज़ करना पड़ा।

(असाबा, तज़्किरा आतिका बिन्त उसैद)

6. अपने दौरे ख़िलाफ़त में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु एक बार रात को गश्त कर रहे थे। आपने एक घर से किसी के अश'आर पढ़ने की आवाज़ सुनी। जब क़रीब हुए तो पता चला कि एक बूढ़ी औरत नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की मुहब्बत और जुदाई में अश'आर पढ़ रही है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की आँखों में आँसू आ गए और दरवाज़ा खटखटाया। बूढ़ी औरत ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु

अन्हु को देखा तो हैरान हुई और कहने लगी अमीरुल मुमिनीन आप रात के वक़्त मेरे दरवाज़े पर। आपने फ़रमाया हाँ मगर एक फ़रियाद लेकर आया हूँ कि वह अश'आर मुझे दोबारा सुना दो जो आप पढ़ रही थीं। बूढ़ी औरत ने अश'आर पढ़े—

على محمد صلوٰة الابرار　　صلى عليه الطيبون الاخيار

قد كان قوما يبكي بالاسحار　　يا ليت شعري والمنايا اطوار

هل تجمعني وحبيبي الدار

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नेक और अच्छे लोग दरूद पढ़ रहे हैं। वह तो रातों को जागने वाले और सुबह के वक़्त रोज़ा रखने वाले थे। मौत तो आनी ही है। काश मुझे यक़ीन हो जाए कि मरने के बाद मुझे महबूब का विसाल नसीब होगा।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु वहीं ज़मीन पर काफ़ी देर तक रोते रहे। दिल इतना ग़मज़दा हुआ कि कई दिन बीमार रहे।

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की उलफ़त व मुहब्बत बारगाहे नबुव्वत में

1. जब सुलह हुदैबिया के मौक़े पर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को नुमाइन्दा बनाकर मक्का मुकर्रमा भेजा गया तो क़ुरैशे मक्का ने मुसलमानों को मक्का मुकर्रमा में दाख़िल होने की इजाज़त नहीं दी। जब सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम का पता चला तो वह बहुत दुखी हुए। बाज़ ने कहा कि वह ख़ुशक़िस्मत हैं कि बैतुल्लाह का तवाफ़ करके आएंगे। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया कि उस्मान मेरे बग़ैर तवाफ़ नहीं करेंगे। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु वापस आए तो सहाबा किराम ने पूछा कि क्या बैतुल्लाह का तवाफ़ भी किया? उन्होंने जवाब दिया कि अल्लाह की क़सम! मुझे

तवाफ़ करने के लिए क़ुरैश इसरार करते रहे अगर मैं वहाँ एक साल भी ठहरता तो नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के बग़ैर तवाफ़ न करता।

2. एक बार हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु जब नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम हज़रत अबूबक्र व हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के साथ अपने घर की तरफ़ चले तो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु सारे रास्ते नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के क़दम मुबारक की तरफ़ देखते रहे। सहाबा किराम ने जब यह बात नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम को बताई तो आपने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से इसकी वजह मालूम की। आपने अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के महबूब आज मेरे घर में इतनी मुक़द्दस हस्ती आई है कि मेरी ख़ुशी की हद नहीं। मैंने नीयत की थी कि आप जितने क़दम अपने घर से चलकर यहाँ आएंगे मैं उतने ग़ुलाम अल्लाह के रास्ते में आज़ाद करूंगा।

(जामे-उल-मौजिज़ात)(इश्क़े रसूल स० 72-73)

कुछ नहीं मांगता दुनिया से यह शैदा तेरा
इसको बस चाहिए नक़्शे कफ़ ओ पा तेरा

हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु की अक़ीदत व मुहब्बत बारगाहे रिसालत में

1. हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को अपने लड़कपन से ही सरवरे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ गहरा ताल्लुक़ था। इसीलिए आफ़ताबे रिसालत की किरनें जैसे ही उगीं उन्होंने लड़कों में से सबसे पहले ईमान लाने की सआदत हासिल की। छोटी उम्र में इन्सान में ख़ौफ़ और डर ज़्यादा होता है मगर इश्क़ का यह असर है कि इन्सान को नतीजे से बेपरवाह बना देता है। लिहाज़ा हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने ईमान क़ुबूल करने में देर नहीं

लगाई। जब नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने हिजरत का इरादा फ़रमाया तो उस वक़्त आपके पास लोगों की अमानतें मौजूद थीं। इस सादिक़ और अमीन ज़ात ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को चुना और हुक्म दिया कि अली! तुम मेरे बिस्तर पर लेट जाओ और सुबह को अमानतें लोगों के सुपुर्द कर देना। हज़रत अली की दिलेरी व बहादुरी पर क़ुर्बान जाएं कि वह बिला ख़ौफ़ व ख़तर चारपाई पर लेट गए। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के हुक्म पर जान की बाज़ी लगा देना उनका महबूब मश्ग़ला था।

2. हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम को आख़िरी ग़ुस्ल देते हुए जो तारीख़ी अल्फ़ाज़ कहे वे पूरी उम्मत के जज़्बात की तर्जुमानी करते हैं :

मेरे माँ-बाप आप पर क़ुर्बान, आपकी वफ़ात से वह चीज़ जाती रही जो किसी दूसरी की मौत से नहीं गई थी यानी 'वही आसमानी' का सिलसिला कट गया। आपकी जुदाई अज़ीम सदमा है अगर आपने सब्र का हुक्म न दिया होता और आह व ज़ारी से मना न किया होता तो हम आप पर आँसू बहाते जबकि दर्द का और ज़ख़्म का ईलाज फिर भी न होता। (इश्के रसूल स० 73-74)

अजब चीज़ है इश्के शाहे मदीना
यही तो है इश्के हक़ीक़ी का ज़ीना
है मामूर इस इश्क़ से जिसका सीना
उसी का है मरना उसी का है जीना

हज़रत असमा रज़ियल्लाहु अन्हा की मुहब्बत नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

हिजरत के मौक़े पर ग़ारे सौर में हज़रत असमा रज़ियल्लाहु अन्हा

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम को पहले दिन खाना पहुँचा आयीं। जब दूसरे दिन पहुँचाने के लिए गयीं तो रिवायत में आता है कि उनके माथे पर ज़ख़्म था और कुछ ग़मगीन सी थीं। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने देखा तो पूछा असमा! आज मुझे तुम परेशान और ग़मज़दा नज़र आती हो। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा तो उनकी आँखों से आँसू आ गए। पूछा असमा! क्या बात है?

अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के महबूब! कल जब मैं आपको खाना देकर वापस गई तो रास्ते में अबू जहल मिल गया। उसने मुझे पकड़ लिया और कहने लगा ऐ अबूबक्र की बेटी! तुझे पता होगा कि तेरे वालिद और तुम्हारे पैग़म्बर कहाँ हैं? मैंने जवाब में कह दिया कि हाँ मुझे पता है। वह कहने लगा मुझे बताओ। मैंने कहा मैं नहीं बताऊँगी। उसने मुझे धमकाया और डराया और कहने लगा कि अगर तुम नहीं बताओगी तो मैं तुम्हें बहुत मारूंगा, सख़्त सज़ा दूँगा। मैंने कहा मैं हर्गिज़ नहीं बताऊँगी। ऐ अल्लाह के महबूब उसने मुझे एकदम ज़ोर का थप्पड़ लगाया तो मैं नीचे गिरी, पत्थर पर मेरा माथा लगा, उससे ख़ून निकल आया और मेरी आँखों में से आँसू निकल आए। फिर उसने मुझे बालों से पकड़कर खड़ा किया और कहा कि बता दो वरना तुझे मारूंगा। ऐ अल्लाह के नबी मैंने उसे कहा ऐ अबू जहल! मेरी जान तो तेरे हवाले है मगर मैं मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तेरे हवाले नहीं करूंगी। यह मुसलमान औरतों की मुहब्बत व वफ़ा की मिसाल—

जान ही दे दी जिगर ने आज पाए यार पर
उम्र भर की बेक़रारी को क़रार आ ही गया

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 6/57, इश्क़े रसूल स० 61)

एक सहाबिया रज़ियल्लाहु अन्हा का इश्क़े नबवी

जंग ओहद के दौरान मदीना मुनव्वरा में ख़बर फैल गई कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शहीद हो गए। इस ख़बर के फैलते ही मदीने में कोहराम मच गया। औरतें रोती हुई घरों से बाहर निकल आयीं। एक अन्सारी औरत ने कहा जब तक इसकी खुद तसदीक़ न कर लूँ मैं इसे तसलीम नहीं करूंगी। लिहाज़ा वह एक सवारी पर बैठी और अपनी सवारी को उस पहाड़ की तरफ़ भगाया। काफ़ी क़रीब आयीं तो एक सहाबी आते हुए मिले। उनसे पूछती हैं, ﴿ما بال محمد صلى الله عليه وسلم﴾ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का क्या हाल है? उसने कहा मुझे हुज़ूर का हाल मालूम नहीं मगर हाँ तेरे बेटे की लाश फ़लाँ जगह पड़ी है। इस औरत को उसके जवान उम्र बेटे की शहादत की ख़बर मिली मगर वह टस से मस नहीं हुई। उस माँ के दिल में इश्क़े रसूल ने इतना असर डाला हुआ था कि बेटे की शहादत की ख़बर सुनी मगर कोई परवाह न की। सवारी आगे बढ़ाती हैं। एक और सहाबी मिले पूछती हैं, ﴿ما بال محمد صلى الله عليه وسلم﴾ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का क्या हाल है? उन्होंने जवाब दिया मुझे मालूम नहीं लेकिन हाँ तेरे शौहर की लाश फ़लाँ जगह पड़ी है। यह औरत फिर भी टस से मस नहीं हुई और आगे बढ़ी, किसी और से पूछा, ﴿ما بال محمد صلى الله عليه وسلم﴾ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का क्या हाल है? जवाब मिला मुझे मालूम नहीं लेकिन हाँ तेरे वालिद की लाश फ़लाँ जगह पड़ी है। इसी तरह भाई की लाश के बारे में बताया गया कि फ़लाँ जगह पड़ी है मगर यह औरत टस से मस नहीं हुई। आगे एक और सहाबी मिले। पूछती हैं, ﴿ما بال محمد صلى الله عليه﴾ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का क्या हाल है? उन्होंने कहा फ़लाँ जगह मौजूद हैं। चुनाँचे सवारी को

उधर बढ़ाती है। जब वहाँ पहुँची तो हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चादर का एक कोना पकड़कर कहा,

﴿كل مصيبة بعد محمد صلى الله عليه وسلم سهل.﴾

मेरे ऊपर तमाम मुसीबतें हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दीदार के बाद आसान हो गयीं। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 2/102)

आख़िरी हसरत आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत

गज़्व-ए-ओहद के मैदान में एक सहाबी ज़ख़्मी हुए। ख़ून बहुत निकल जाने की वजह से मरने के क़रीब हो गए थे। एकदम दूसरे सहाबी उनके क़रीब आए और पूछा आपको किसी चीज़ की तमन्ना है? अर्ज़ किया हाँ, उन्होंने कौन सा? जवाब मिला कि आख़िरी वक़्त में हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दीदार करना चाहता हूँ। उन्होंने ज़ख़्मी मुजाहिद को अपने कंधे पर उठाया और उनको लेकर तेज़ी से उस तरफ़ भागे जहाँ रसूले अकरम तशरीफ़ फ़रमा थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने जाकर उतारा और कहा कि आपके महबूब आपके सामने हैं। जब नाम सुना तो मजाहिद के दिल में बिजली की लहर दौड़ गई कि फ़ौरन ताक़त बहाल हो गई। अपने चेहरे को हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने किया दीदार करते ही उनकी हालत ग़ैर हो गई और उन्होंने अपनी जान अल्लाह के सुपुर्द कर दी।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 1/104, इश्क़े इलाही स० 74)

निकल जाए दम तेरे क़दमों के नीचे
यही दिल की हसरत यही आरज़ू है

तेरी मैराज के तू लौह ओ क़लम तक पहुँचा
मेरी मैराज के मैं तेरे क़दम तक पहुँचा

हज़रत हुज़ैफ़ा का जज़्ब व इश्क़

जंगे ख़न्दक़ के दौरान हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ज़रूरत महसूस की कि किसी तरह दुश्मनों का प्रोग्राम मालूम किया जाए। हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु क़रीब ही मौजूद थे मगर उनके पास कोई हथियार नहीं था और न ही सर्दी से बचने के लिए कोई चादर थी। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, जाएं और दुश्मनों के ख़ेमे से उनकी ख़बर लाएं। हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने आक़ा के हुक्म पर सर्दी की कोई परवाह न कि और तैयार हो गए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुआ देकर रवाना फ़रमाया। हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुआ से मेरा ख़ौफ़ और सर्दी बिल्कुल दूर हो गई। जी हाँ यह इश्क़ था जिसने दिल में रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ताबेदारी का ऐसा जज़्बा पैदा कर दिया। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक्कार 2/102)

महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फ़िराक़ में तना सिसकने लगा

खजूर के एक तने को आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत थी। आपने जब मस्जिदे नबवी बनाई तो उसमें मिम्बर नहीं था। मस्जिद के अंदर खजूर का एक तना था। उसी के साथ टेक लगाकर आप ख़ुत्बा दिया करते थे। कुछ अरसे के बाद एक सहाबी तमीमदारी ने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल! अगर इजाज़त दें तो एक मिम्बर बना लिया जाए। आपने इजाज़त दे दी। लिहाज़ा एक

मिम्बर बना लिया गया। अगली दफ़ा जब खुत्बा देने का वक़्त आया तो मिम्बर पर आ खड़े हो गए और खुत्बा देना शुरू कर दिया। थोड़ी देर के बाद खजूर के तने में से इस तरह रोने की आवाज़ आने लगी जैसे कोई बच्चा बिलक-बिलक कर रोता है। सब लोगों ने हैरान होकर उस तने को देखा। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नीचे उतरे और खजूर के तने के क़रीब गए। उसके ऊपर प्यार से हाथ रखा और उसको दिलासा दिलाया। हदीस की किताबों में लिखा है कि हुज़ूर ने उसको गले से लगाया तब वह तना इस तरह सिसकियाँ लेते हुए चुप हुआ जैसे कोई बच्चा अपनी माँ के सीने से लगकर चुप होता है। खजूर के तने को इतनी मुहब्बत थी। ऐ काश! हमें प्यारे पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ खजूर के तने जैसी मुहब्बत नसीब हो जाती। (खुत्बाते ज़ुलफ़ुक़्क़ार 2/105)

हज़रत उम्मे हबीबा का इश्क़े नबी

उम्मुल मुमिनीन सैय्यदा उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा अपने घर में मौजूद थीं कि आपके वालिद जो उस वक़्त तक मुसलमान नहीं हुए थे किसी काम के लिए मदीना तैय्यबा आए। सोचा कि चलो अपनी बेटी से मिलता हूँ। उनके घर आए। जब बैठने लगे तो चारपाई के ऊपर बिस्तर बिछा हुआ था। उम्मे हबीबा ने दौड़कर बिस्तर को जल्दी लपेट दिया। कहने लगीं आप मेरे वालिद हैं इसमें यक़ीनन कोई शक नहीं। आप जानते हैं कि यह बिस्तर अल्लाह के प्यारे पैग़म्बर का है इसलिए मैं किसी काफ़िर और मुशरिक का इस बिस्तर पर बैठना गवारा नहीं कर सकती। (खुत्बाते ज़ुलफ़ुक़्क़ार 2/98)

शायरे रसूल के इश्क़ भरे अश'आर

हज़रत हिस्सान बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु को शायरे रसूल

होने का ऐज़ाज़ हासिल है। वह आलमे इश्क़ व मस्ती में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखते तो आप की तारीफ़ में अश'आर लिखते थे। फ़रमाते हैं :

واحسن منك لم ترقط عينى　　واجمل منك لم تلد النساء

خلقت مبرا من كل عيب　　فكانك قد خلقت كما تشاء

ऐ रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! इतने हसीन व जमील हैं कि किसी आँख ने ऐसा देखा ही नहीं। ऐसा ख़ूबसूरत बेटा किसी माँ ने जना ही नहीं। आप तो ऐसे पैदा हुए हैं कि जैसे कि आपको आपकी मरज़ी के मुताबिक़ पैदा किया गया हो। (ख़ुत्बाते ज़ुलफ़ुक़्क़ार 2/101)

अब किसी को देखूँ गवारा नहीं

कुछ सहाबा किराम सुबह होते ही हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत करने आ जाते थे। उन्होंने क़स्में खा ली थीं, हम सुबह उठते ही आपकी ज़ियारत करेंगे। आपकी ज़ियारत से पहले किसी को चेहरा नहीं देखेंगे। चुनाँचे हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विसाल के बाद नाबीना होने की दुआ की और उसी वक़्त नाबीना हो गए।

(ख़ुत्बाते ज़ुलफ़ुक़्क़ार 2/205)

अज़ाने बिलाली पर मदनी परवानों का आह व फ़ुग़ां

एक बार हज़रत बिलाल रज़ियल्लहु को ख़्वाब में नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ज़ियारत नसीब हुई। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, बिलाल! यह कितनी बेताल्लुक़ी है कि तुम हमें मिलने ही नहीं आते।

यह सुनते है हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु की आँख खुल गई।

उन्होंने उसी वक़्त अपनी बीवी को जगाया और कहा कि मैं बस इसी वक़्त रात को ही सफ़र करना चाहता हूँ। लिहाज़ा अपनी ऊँटनी पर रवाना हुए, मदीने पहुँचे तो सबसे पहले नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर होकर सलाम पेश किया। उसके बाद मस्जिदे नबवी में नमाज़ पढ़ी। दिन हुआ तो सहाबा किराम के दिल में ख़्याल हुआ कि क्यों न आज हम हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु की अज़ान सुनें। लिहाज़ा कई सहाबा ने उनके सामने अपनी ख़्वाहिश का इज़्हार किया लेकिन उन्होंने इन्कार कर दिया कि मैं नहीं सुना सकता क्योंकि मैं बरदाश्त नहीं कर सकूँगा। मगर उनमें से कुछ लोगों ने हसन व हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा से कह दिया कि आप बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाईश करें। उनका अपना दिल भी चाहता था। चुनाँचे शहज़ादों ने फ़रमाईश की कि हमें अपने नाना के ज़माने की अज़ान सुननी है। अब यह फ़रमाईश ऐसी थी कि हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए इन्कार की गुंजाइश बिल्कुल नहीं थी। लिहाज़ा दूसरा मौक़ा था जब हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु अज़ान देने लगे। जब उन्होंने अज़ान देना शुरू किया और सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने वह अज़ान सुनी जो नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के दौर में सुना करते तो उनके दिल उनके क़ाबू में नहीं रहे। यहाँ तक कि घरों में जो औरतें थीं, जब उन्होंने वह आवाज़ सुनी तो वे भी रोती हुई अपने घरों से बाहर निकलीं और मस्जिदे नबवी के बाहर भीड़ लग गई। अजीब बात यह थी कि एक औरत ने बच्चे को उठाया हुआ था। वह छोटा सा बच्चा अपनी माँ से पूछने लगा, "अम्मा! बिलाल तो कुछ अरसे के बाद वापस आ गए, यह बताओ कि नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम कब वापस आएंगे?" इस बात सुनकर सहाबा किराम मछली की तरह तड़प उठे।

यह मुहब्बत थी। जब दिल में बिलाली मुहब्बत हो तो फिर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त रास्ते हमवार कर दिया करते हैं:

चमकता रहे तेरे रौज़े का मन्ज़र
सलामत रहे तेरे रौज़े की जाली
हमें भी अता हो वह ज़ज़्बाए अबूज़र
हमें भी अता हो वह रूहे बिलाली

(ख़ुत्बाते ज़ुलफ़क़ार स० 103, इश्क़े इलाही स० 64)

सहाबियात का इश्क़े रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

इश्क़े रसूल में सहाबियात रज़ियल्लाहु अन्नाहुम ने भी आला और नुमाया मिसालें पेश कीं। उनके सीने इश्क़े नबी से भरे हुए थे। उनके पाकीज़ा दिल इस नेमत के हासिल होने पर मसरूर थे। कुछ मिसालें नीचे लिखी हैं :

1. जंगे ओहद में यह ख़बर चारों तरफ़ फैल गई कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शहीद हो गए। मदीने में औरतें ग़म की शिद्दत में रोती हुई घरों से बाहर निकल आयीं। एक अन्सारिया सहाबिया कहने लगीं कि मैं इस बात को उस वक़्त तक तसलीम नहीं करूंगी जब तक कि ख़ुद उसकी तसदीक़ न कर लूँ। लिहाज़ा वह ऊँट पर सवार होकर ओहद की तरफ़ निकल पड़ीं। जब मैदान जंग के क़रीब पहुँचीं तो एक सहाबी सामने से आते हुए दिखाई दिए। उनसे पूछने लगीं, ﴿ما بال محمد صلى الله عليه وسلم﴾ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का क्या हाल है? उन्होंने कहा मालूम नहीं लेकिन तुम्हारे भाई की लाश फ़लाँ जगह पड़ी है। वह इस ख़बर को सुनकर ज़रा भी न घबरायीं और आगे बढ़कर दूसरे सहाबी से पूछा, ﴿ما بال محمد صلى الله عليه وسلم﴾ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का क्या हाल है? उन्होंने जवाब

दिया मालूम नहीं मगर तुम्हारे वालिद की लाश फ़लाँ जगह मैंने देखी है। यह ख़बर सुनकर भी परेशान नहीं हुई बल्कि आगे बढ़कर तीसरे सहाबी से पूछा, ﴿ما حال محمد صلى الله عليه وسلم﴾ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का क्या हाल है? उन्होंने बताया कि मैंने तुम्हारे शौहर की लाश फ़लाँ जगह पड़ी देखी है। यह ख़बर सुनकर भी वह टस से मस न हुई। फिर पूछा कि मुझे नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ख़ैरियत के बारे में बताओ। किसी ने कहा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़लाँ जगह ख़ैरियत से देखा है। यह सुनकर वह तेज़ी से उस तरफ़ को रवाना हुई। जब नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम को सामने ठीक-ठाक देखा तो आप के क़रीब पहुँचकर चादर का एक कोना पकड़कर ﴿كل مصيبة بعدك جلل﴾ हर मुसीबत नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के बाद आसान है। इससे पता चलता है कि सहाबियात के दिलों में जो मुहब्बत नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए थी वह बाप, भाई और शौहर की मुहब्बत से भी ज़्यादा थी। यही ईमाने कामिल की निशानी बताई गयी है। (सीरत इब्ने हिशाम)

2. एक बार नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने सहाबा किराम को हुक्म दिया कि वे जिहाद करें। मदीने के हर घर में जिहाद की तैयारियाँ ज़ोरों पर थीं। एक घर में एक सहाबिया अपने मासूम छोटे बच्चे को लेकर ज़ार व क़तार रो रही थीं। उसके शौहर पहले किसी जिहाद में शहीद हो गए थे। अब घर में कोई ऐसा मर्द नहीं था कि जिसको यह तैयार करके नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के साथ जिहाद में भेजतीं। जब बहुत देर तक रोती रहीं और तबियत भर आई तो अपने मासूम बच्चे को सीने से लगाया और मस्जिदे नबवी में नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के ख़िदमत में हाज़िर हुई। अपने बेटे को नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की गोद में डालकर कहा ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे बेटे को भी जिहाद के लिए क़ुबूल फ़रमाएं। नबी

अलेहिस्सलातु वस्सलाम ने हैरान होकर फ़रमाया यह मासूम बच्चा जिहाद में कैसे जा सकता है? वह रोकर कहने लगीं कि मेरे घर में कोई बड़ा मर्द नहीं कि जिसको भेज सकूँ। आप इसी को किसी मुजाहिद के हवाले कर दीजिए जिसके हाथ में ढाल न हो ताकि जब वह मुजाहिद कुफ़्फ़ार के समाने मुक़ाबले के लिए जाए और काफ़िर तीरों की बारिश बरसाएं तो वह मुजाहिद तीरों से बचने के लिए मेरे बेटे को आगे कर दें। मेरा बेटा तीरों को रोकने के काम आ सकता है। सुब्हानअल्लाह! तारीख़े इन्सानियत ऐसी मिसाल पेश नहीं कर सकती कि औरत और माँ जैसी शफ़ीक़ हस्ती फ़रमाने नबी को सुनकर उस पर अमल करने के लिए इतनी बेक़रार हुई कि मासूम बच्चे को शहादत के लिए पेश कर देती है।

3. सैय्यदा आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा की ख़िदमत में एक औरत हाज़िर हुई और अर्ज़ किया कि मुझे नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की क़ब्र मुबारक की ज़ियारत करा दें। हज़रत आएशा ने हुजूरा मुबारक खोला। वह सहाबिया इश्क़े नबी में ऐसी मग़लूब थीं कि ज़ियारत करके रोती रहीं और रोते रोते इन्तिक़ाल फरमा गयीं। (शिफ़ाए शरीफ़)

4. उम्मुल मुमिनीन उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा के वालिद अबू सुफ़ियान सुलह हुदैबिया के ज़माने में मदीना आए। अपनी बेटी से मिलने गए। क़रीब पड़े बिस्तर पर बैठने लगे तो उम्मे हबीबा ने जल्दी से बिस्तर उलट दिया। अबूसुफ़ियान ने पूछा बेटी मेहमान के आने पर बिस्तर बिछाते हैं, बिस्तर लपेटते तो नहीं। उम्मे हबीबा ने कहा अब्बा जान! यह बिस्तर अल्लाह के प्यारे और पाक महबूब का है और आप मुश्रिक होने की वजह से नापाक हैं। लिहाज़ा इस बिस्तर पर नहीं बैठ सकते। अबू सुफ़ियान को इसका बड़ा रंज हुआ मगर उम्मे हबीबा के दिल में जो मुहब्बत और अज़मत अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की थी उसके सामने जिस्मानी रिश्ते कोई हैसियत नहीं रखते

थे। क़ुर्बान जाएं उनके प्यारे अमल पर कि फ़ैसला कर लिया कि बाप छूटता है तो छूट जाए मगर महबूब का दामन हाथ से न छूटने पाए।

5. एक सहाबी रबिया असलमी बहुत ग़रीब नौजवान थे। एक बार तज़्किरा चला कि उन्हें कोई अपनी बेटी का रिश्ता देने के लिए तैयार नहीं है। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने अन्सार के एक क़बीले की निशानदेही की कि उनके पास जाकर रिश्ता मांगो। वह गए और बताया कि मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मशवरे से हाज़िर हुआ हूँ ताकि मेरा निकाह फ़लाँ लड़की से कर दिया जाए। बाप ने कहा बहुत अच्छा हम लड़की से मालूम कर लें। जब पूछा तो वह लड़की कहने लगी अब्बू जान! यह मत देखो कि आया कौन है यह देखो कि भेजने वाला कौन है लिहाज़ा फ़ौरन निकाह कर दिया गया।

6. फ़ातिमा बिन्त क़ैस एक हसीन व जमील सहाबिया थीं। उनके लिए अब्दुर्रहमान बिन औफ़ जैसे दौलतमंद सहाबी का रिश्ता आया। जब उन्होंने नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के मशवरा किया तो आपने फ़रमाया कि उसामा से निकाह कर लो। हज़रत फ़ातिमा ने आपको अपनी क़िस्मत का मालिक बना दिया और अर्ज़ किया ऐ रसूलुल्लाह! मेरा मामला आपके अख़्तियार में है जिससे चाहें निकाह कर दें यानी मेरे लिए यही ख़ुशी काफ़ी है कि आपके हाथों से मेरा निकाह होगा।

(निसाई शरीफ़, किताबुन्निकाह)

7. नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की सबसे बड़ी बेटी हज़रत ज़ैनब ऐलाने नबुव्वत से दस साल पहले पैदा हुई। जब जवानी की उम्र को पहुँची तो अपने ख़ालाज़ाद भाई अबुल आस बिन रबीअ से निकाह हुआ। हिजरत के वक़्त नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के साथ नहीं जा सकीं। उनके शौहर बदर की लड़ाई में काफ़िरों की तरफ़ शरीक से हुए और मुसलमानों के हाथ गिरफ़्तार हुए। मक्का वालों ने अपने

क़ैदियों के लिए फ़िदए भेजे तो हज़रत ज़ैनब ने भी अपने शौहर की रिहाई के लिए माल भेजा जिसमें वह हार भी था जो हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा ने उनको जहेज़ में दिया था। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने जब वह हार देखा तो हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की याद ताज़ा हो गई। सहाबा के मशवरे में यह तय पाया गया कि अबुल आस को बग़ैर फ़िदए छोड़ दिया जाए। इस शर्त पर कि वह वापस जाकर हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा को मदीना भेज दें। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने दो आदमी हज़रत ज़ैनब को लेने के लिए साथ कर दिए ताकि ये मक्का से बाहर ठहर जाएं और अबुलआस हज़रत ज़ैनब को उनके पास पहुँचा दें। हज़रत ज़ैनब जब अपने देवर कनाना के साथ बैठकर रवाना हुईं तो कुफ़्फ़ार आग बगूला हो गए। चुनाँचे उन्होंने हज़रत ज़ैनब को भाला मारा जिससे वह ज़ख़्मी होकर गिरीं। क्योंकि हमल से थीं इस वजह से हमल भी ज़ाए हो गया। कनाना ने नेज़ों से मुक़ाबला किया। अबूसुफ़ियान ने कहा मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की बेटी और इस तरह खुलेआम जाए यह हमें गवारा नहीं। इस वक़्त वापस चलो फिर चुपके से भेज देना। कुछ दिन के बाद हज़रत ज़ैनब को रवाना किया गया। ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा का ज़ख़्म कई साल तक रहा और आख़िरकार इस वजह से वफ़ात हुई। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया कि वह मेरी सबसे अच्छी बेटी थी जो मेरी मुहब्बत में सताई गई।

8. जंगे ओहद में उम्मे अम्मारा रज़ियल्लाहु अन्हा अपने शौहर हज़रत ज़ैद बिन आसिम और अपने दो बेटों अम्मार और अब्दुल्लाह के साथ जंग में शरीक हुईं। जब काफ़िरों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर हल्ला बोल दिया तो यह नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के क़रीब आकर हमला रोकने वाले सहाबा में शामिल हो गयीं। इब्ने

कमिया मलऊन ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर तलवार का वार करना चाहा तो इन्होंने उसको अपने कांधों पर रोका जिससे बहुत गहरा ज़ख़्म आया। उम्मे अम्मारा ने पलट कर इब्ने कमिया मलऊन पर भरपूर वार किया। क़रीब था कि वह दो टुकड़े हो जाता मगर उसने दो ज़िरहें पहन रखी थीं लिहाज़ा बच निकला। उम्मे अम्मारा के सर और जिस्म पर तेरह ज़ख़्म लगे। उनके बेटे अब्दुल्लाह को भी एक ऐसा ज़ख़्म लगा कि ख़ून बंद नहीं होता था। उम्मे अम्मारा रज़ियल्लाहु अन्हा अपना कपड़ा फाड़कर ज़ख़्म पर बाँधा और कहा बेटा उठो और अपने नबी की हिफ़ाज़त करो। इतने में वह काफ़िर जिसने ज़ख़्म लगाया था फिर क़रीब आया। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया कि तेरे बेटे को ज़ख़्मी करने वाला यही काफ़िर है। उम्मे अम्मारा ने झपटकर उसकी टांग पर तलवार का ऐसा वार किया वह गिर पड़ा और वह चल न सका और सर के बल घिसटता हुआ भागा। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने देखा तो मुस्कुराकर फ़रमाया उम्मे अम्मारा! तू अल्लाह का शुक्र अदा कर कि जिसने तुम्हें जिहाद की तौफ़ीक़ बख़्शी। उम्मे अम्मारा रज़ियल्लाहु अन्हा ने मौक़ा ग़नीमत समझते हुए दिल की हसरत ज़ाहिर की ऐ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आप दुआ फ़रमाएं कि हम लोगों को जन्नत में आपकी ख़िदमत गुज़ारी का मौक़ा मिल जाए। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इस वक़्त उनके लिए, उनके शौहर के लिए और उनके दोनों बेटों के लिए दुआ की,

﴿اللهم اجعلهم رفقائی فی الجنة.﴾

ऐ अल्लाह इन सबको जन्नत में मेरा रफ़ीक़ बना दे।

उम्मे अम्मारा रज़ियल्लाहु अन्हा ज़िन्दगी भर यह बात ऐलान के साथ करती थीं कि नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की दुआ के बाद

दुनिया की बड़ी से बड़ी मुसीबत भी कोई हैसियत नहीं रखती।

(मदारिज नबुव्वत)

9. हज़रत अनस की वालिदा उम्मे सुलैम घर के बच्चों को शीशी देकर भेजतीं कि जब नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम कैलूला फ़रमाएं और आपके जिस्म मुबारक से पसीना आए तो उसके क़तरे इस शीशी में जमा कर लें। लिहाज़ा वह इस पसीने को अपनी ख़ुशबू में शामिल करतीं और फिर अपने जिस्म और कपड़ों पर वह ख़ुशबू लगाती थीं।

(बुख़ारी किताबुलइस्तेज़ान)

10. ग़ज़वए ख़ैबर में नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने एक सहाबिया को अपने दस्ते मुबारक से हार पहनाया। वह इसकी इतनी क़द्र करती थीं कि उम्र भर उसको गले से जुदा न किया और जब इन्तिक़ाल कर गयीं तो वसीयत की कि वह हार उनके साथ दफ़न किया जाए।

11. हज़रत सलमी रज़ियल्लाहु अन्हा एक सहाबिया थीं। उन्होंने नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की इतनी ख़िदमत की कि ख़ादम-ए-रसूल का लक़ब हासिल हुआ। उनकी वालिदा के एक ग़ुलाम हज़रत सफ़ीना थे। उन्होंने उनको इस शर्त पर आज़ाद करना चाहा कि सारी ज़िन्दगी नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ख़िदमत करें। हज़रत सफ़ीना रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि आप यह शर्त न लगाएं तो भी मैं सारी ज़िन्दगी इस दर की चाकरी में गुज़ारता।(अबूदाऊद किताबुत्तिब)

12. उम्मे अतिया रज़ियल्लाहु अन्हा एक सहाबिया थीं। जब भी नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम का नामे नामी, इस्मे गिरामी उनकी ज़बान पर आता तो कहतीं, "मेरा बाप क़ुर्बान।" इससे अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि उनके दिल में इश्क़े नबवी की शिद्दत का आलम क्या होगा। (निसाई शरीफ़ किताबुल-महीज़)

13. एक दिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत जाबिर

रज़ियल्लाहु अन्हु के मकान पर तशरीफ़ लाए। उन्होंने बीवी से कहा कि देखो नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की दावत का ख़ूब एहतिमाम करो। आपको कोई तकलीफ़ न पहुँचे। उन्हें तुम्हारी सूरत भी नज़र न आए। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कैलूला फ़रमाया तो आपके लिए बकरी के बच्चे का भुना हुआ गोश्त तैयार था। जब आप खाना खाने लगे तो बनू सलमी के लोग दूर ही से आपके दीदार से मुशर्रफ़ होते रहे कि आपको तकलीफ़ न हो। जब नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम रुख़सत होने लगे तो हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु की बीवी ने पर्दे के पीछे से कहा या रसूलुल्लाह! मेरे लिए और मेरे शौहर के लिए रहमत के नाज़िल होने की दुआ करें। आपने रहमत की दुआ फ़रमाई तो हज़रत जाबिर की बीवी ख़ुशी से फूली न समायीं।

14. हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज्जतुल-विदा के लिए तशरीफ़ ले गए तो सब बीवियाँ साथ थीं। रास्ते में हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा का ऊँट थककर बैठ गया और चलता ही नहीं था। वह रोने लगीं। आपको ख़बर हुई तो आपने दस्ते मुबारक से उनके आँसू पोंछे। अजीब इत्तिफ़ाक़ कि जिस क़द्र दिलासा देते वह उतना और रोतीं। जब काफ़ी देर तक चुप नहीं हुईं तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे रुख़ फेर लिया। तमाम सहाबा को पड़ाव डालने का हुक्म दिया और ख़ुद भी अपना ख़ेमा लगवाया। हज़रत सफ़िया को एहसास हुआ कि शायद नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम मेरी वजह से ख़फ़ा हो गए। अब नबी को मनाने और राज़ी करने की तदबीर सोचने लगीं। इस ग़र्ज़ से हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास गईं और कहा कि तुमको मालूम है कि मैं अपनी बारी का दिन किसी चीज़ के बदले में नहीं दे सकती लेकिन अगर आप रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मुझसे राज़ी कर दें तो मैं अपनी बारी आपको देती हूँ। हज़रत आएशा ने अमादगी ज़ाहिर की और एक

दुपट्टा ओढ़ा जो ज़ाफ़रानी रंग का रंगा हुआ था। फिर उस पर पानी छिड़का ताकि ख़ुशबू फैले उसके बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास गयीं और ख़ेमे का पर्दा उठाया। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया, आएशा! यह तुम्हारा दिन नहीं है।

बोलीं ﴿ذالك فضل الله يؤتيه من يشاء﴾ यह अल्लाह का फ़ज़्ल है जिसको चाहता है देता है। (मुसनद इब्ने हंबल 6/338)

15. एक बार नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम मस्जिद से बाहर निकले रास्ते में मर्द व औरतें फ़रागत पर घर जा रहे थे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने औरतों को मुख़ातिब होकर फ़रमाया कि तुम पीछे रहो और एक तरफ़ रहो, बीच रास्ते से न गुज़रो। उसके बाद यह हाल हो गया कि औरतें इस क़द्र गली के किनारे चलती थीं कि उनके कपड़े दीवारों से उलझ जाया करते थे।

(अबूदाऊद किताबुलअदब)

16. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शौहर के अलावा दूसरे महरम मर्दों की वफ़ात पर तीन दिन सोग के लिए तय फ़रमाए हैं। सहाबियात इसकी बहुत शिद्दत से पाबन्दी करती थीं। सैय्यदा ज़ैनब बिन्ते जहश के भाई का इन्तिक़ाल हो गया तो चौथे रोज़ उन्होंने ख़ुशबू मंगाकर लगाई और फ़रमाया कि मुझे इसकी ज़रूरत न थी लेकिन नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम का फ़रमान सुना है कि शौहर के सिवा तीन दिन से ज़्यादा किसी का सोग जाएज़ नहीं। इसलिए इस हुक्म की तामील थी। (अबूदाऊद)।

17. एक बार नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने पानी या दूध पीकर हज़रत उम्मे हानी रज़ियल्लाहु अन्हा को इनायत फ़रमाया। उन्होंने अर्ज़ किया कि अगरचे मैं रोज़े से हूँ लेकिन आपका झूठा वापस करना पसंद नहीं करती। (मक़सद यह था कि मैं रोज़े की क़ज़ा फिर

कर लूँगी और पानी पी लिया।) (मुसनद अहमद बिन हबंल 6/343)

18. एक दिन हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु की वालिदा ने उनसे पूछा बेटा तुम मुझे अपने काम में मशग़ूल नज़र आते हो। तुमने नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ज़ियारत कब की थी? उन्होंने कहा इतने दिनों पहले। इस पर उनकी वालिदा ने उनको बुरा भला कहा। बोले मैं अभी जाकर मग़रिब की नमाज़ नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के साथ अदा करता हूँ और अपने लिए और आपके लिए मग़फ़िरत की दरख़्वास्त करता हूँ। (तिर्मिज़ी किताबुलमनाक़िब)

19. जब नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इस दारे फ़ानी से पर्दा फ़रमाया तो हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने इस अज़ीम हादसे पर अपने रंज व ग़म का इज़्हार करते हुए फ़रमाया, हाय अफ़्सोस वह प्यारे नबी जिसने फ़क़्र को ग़िना पर और मिस्कीनी को मालदारी पर तरजीह दी। अफ़्सोस वह काएनात को समझाने वाला जो गुनाहगार उम्मत की फ़िकर में पूरी रात आराम से न सो सके। हम से रुख़्सत हो गए। जिसने हमेशा सब्र व इस्तिक़ामत से अपने नफ़्स के साथ मुक़ाबला किया जिसने बुराईयों की तरफ़ कभी ध्यान न दिया और जिसने नेकी और एहसान के दरवाज़े ज़रूरतमंदों पर कभी बंद न किए, जिस रोशन ज़मीर के दामन पर दुश्मनों की ज़्यादतियों का गर्द व ग़ुबार कभी न बैठा।

20. सैय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के पर्दा फ़रमाने पर कहा, मेरे वालिद गरामी ने दावते हक़ को क़ुबूल फ़रमाया और फ़िरदौसे बरीं में नुज़ूल फ़रमाया। इलाही! रूहे फ़ातिमा को जल्दी रूहे मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से मिला दे। इलाही! मुझे दीदारे रसूल से मसरूर बना दे, इलाही! मुझे इस मुसीबत को झेलने के सवाब से महरूम न फ़रमाना और रोज़े महशर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शफ़ाअत नसीब करना।

21. हज़रत उम्मे ऐमन रज़ियल्लाहु अन्हा एक दिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को याद करके रोने लगीं। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया कि आप क्यों रोती हैं? कहा कि बताओ नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के लिए अल्लाह तआला के पास बेहतर नेमतें मौजूद नहीं हैं? उन्होंने कहा बिल्कुल हैं। फ़रमाया मैं इसलिए रो रही हूँ कि नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की जुदाई के बाद 'वही' का सिलसिला बंद हो गया। इस हज़रत अबूबक्र और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा भी रो पड़े। (इश्के रसूल स० 46-94)

يا ربی صلی وسلم دائما ابدا   علی حبیبك خیر الخلق كلهم

दौलते इश्क़ व मुहब्बत से बच्चे भी माला माल

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मक़बूलियत जिस तरह मर्दों और औरतों में यकसां थी उसी तरह बच्चों में भी बेपनाह थी। छोटे-बच्चे भी शमए रिसालत के परवाने थे और क़ुर्बानी देने में बड़ों से पीछे न रहे। कुछ वाक़िआत नीचे लिखे हैं:

1. हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु बदर के मैदान में खड़े थे। उनके दाएं और बाएं तरफ़ अन्सार के दो बच्चे थे। उन्हें ख़्याल हुआ अगर मैं क़वी और मज़बूत लोगों के दर्मियान होता तो ज़रूरत के वक़्त हम एक दूसरे की मदद कर सकते थे। इतने में एक बच्चा उनके पास आया और हाथ पकड़कर कहने लगा चचा जान आप अबूजहल को पहचानते हैं? उन्होंने कहा हाँ मगर तुम्हारा क्या मक़सद है? वह कहने लगा मुझे मालूम हुआ है कि वह नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शाने मुबारक में गालियाँ बकता है। उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है अगर मैं उसको देख लूँ तो उस वक़्त मैं उससे जुदा न हूँ यहाँ तक कि वह मर जाए या मैं

मर जाऊँ। हज़रत अब्दुर्रहमान बड़े हैरान हुए। इतने में दूसरे बच्चे ने भी आकर यही सवाल व जवाब दोहराए। इतने में अबू जहल नज़र आया तो उन्होंने बच्चों को निशानदेही की कि तुम्हारा मतलूब वह सामने है। दोनों बच्चे दौड़ते हुए गए। एक ने घोड़े की टांग पर वार किया। जिससे घोड़ा गिर गया और अबूजहल भी गिर पड़ा। दूसरे ने अबूजहल पर कारी चोट लगाई। बच्चे इतने छोटे थे कि तलवार बड़ी थी और उनका क़द छोटा था। चुनाँचे एक सहाबी ने आगे बढ़कर अबूजहल को उसके ठिकाने तक पहुँचा दिया यानी क़त्ल कर दिया। इस वाक़िए से बच्चों की इज़्ज़ते ईमान और इश्क़े नबवी का कितना साफ़ सबूत मिलता है। (बुख़ारी)

हज़रत ज़ैद बिन हारसा ईमान लाने से पहले अपनी वालिदा के साथ ननिहाल जा रहे थे। बनू क़ैस ने वह क़ाफ़िला लूटा जिसमें हज़रत ज़ैद भी थे और उनको मक्का में लाकर बेच दिया। हकीम बिन हज़्ज़ाम ने अपनी फूफी हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के लिए ख़रीद लिया। जब हज़रत ख़दीजा का निकाह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हुआ तो उन्होंने हज़रत ज़ैद को नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ख़िदमत में बतौर हदिया पेश किया। हज़रत ज़ैद के वालिद को उनकी जुदाई का बड़ा सदमा था। औलाद की मुहब्बत फ़ितरी चीज़ होती है। इसलिए वह हज़रत ज़ैद के फ़िराक़ में रोते और अश'आर पढ़ते फिरा करते थे।

कुछ शे'रों का तर्जुमा नीचे लिखा है:

i. मैं अपने ज़ैद की याद में रो रहा हूँ और यह भी नहीं जानता कि वह ज़िन्दा है जो इसकी उम्मीद रखूँ या मुर्दा है कि उससे मायूस हो जाऊँ। ऐ ज़ैद! अल्लाह की क़सम मुझे यह भी मालूम नहीं कि तुम्हें नरम ज़मीन ने हलाक किया या पहाड़ ने हलाक किया।

ii. काश मुझे मालूम हो जाता कि तू उम्र भर में कभी भी वापस आएगा या नहीं। सारी दुनिया में मेरी इन्तिहाई ग़र्ज़ तेरी वापसी है।

iii. जब सूरज निकलता है तो मुझे ज़ैद ही याद आता है और जब बारिश होने को आती है तो भी उसकी याद सताती है।

iv. और जब हवाएं चलती हैं तो भी उसकी याद को बढ़ाती हैं। हाय मेरा ग़म और मेरी फ़िक्र कितनी तवील हो गई।

v. मैं उसकी तलाश में तेज़ रफ़्तार ऊँट का काम में लाऊँगा और सारी दुनिया का चक्कर लगाने से बाज़ नहीं आऊँगा।

vi. चलने वाले उकताते हैं तो उकताएं मगर मैं नहीं उकताऊँगा। सारी ज़िंदगी इसी तरह गुज़ारूंगा।

vii. हाँ मेरी मौत आ गई तो वह और बात है कि वह हर चीज़ को फ़ना करने वाली है चाहे उनकी कितनी उम्मीदें लगाए।

viii. मैं अपने रिश्तेदारों को वसीयत कर जाऊँगा कि वह भी ज़ैद को ढूंढते रहें।

ग़र्ज़ यह अश'आर पढ़कर रोते रहे। इत्तिफ़ाक़ से उनकी क़ौम के कुछ लोगों का हज पर जाना हुआ तो उन्होंने ज़ैद को पहचाना, बाप की दास्तान सुनाई और शे'र सुनाए। हज़रत ज़ैद ने इसके जवाब में तीन शे'र लिख भेजे। जिनका मतलब यह था कि मैं मक्का में हूँ। उन लोगों ने जाकर हज़रत ज़ैद की बातें उनके वालिद को सुनायीं और अश'आर भी सुनाए, पता भी बताया। उनके वालिद और उनके चचा फ़िदये की रक़म लेकर उनको गुलामी से छुड़ाने के लिए मक्का मुकर्रमा पहुँचे। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ख़िदमत में अर्ज़ किया हाशिम की औलाद और अपनी क़ौम के सरदार आप लोग मस्जिदे हरम के रहने वाले हैं और अल्लाह के घर के पड़ोसी हैं, आप

क़ैदियों को रिहा कराते हैं, भूखों को खाना खिलाते हैं। हम अपने बेटे की तलब में आपके पास आए हैं। आप फ़िदया लेकर उसको रिहा करें आपका हम पर एहसान होगा। नबी अकरम ने फ़रमाया बस इतनी सी बात है? जी बस यही अर्ज़ है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, उसको बुला लो और पूछ लो अगर वह तुम्हारे साथ जाना चाहे तो बग़ैर फ़िदए के तुम्हारी नज़्र है और अगर वह न जाना चाहे तो मैं ऐसे शख़्स पर जबर नहीं करना चाहता जो ख़ुद न जाना चाहता हो। उन्होंने कहा आपने हक़ से ज़्यादा हम पर करम किया। यह बात बख़ुशी मंज़ूर है। हज़रत ज़ैद बुलाए गए। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया तुम इनको पहचानते हो? अर्ज़ किया जी हाँ यह मेरे वालिद हैं और यह मेरे चचा। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया कि मेरा हाल भी तुम्हें मालूम है। अब तुमको इख़्तियार है कि मेरे पास रहना चाहो तो रहो और इनके साथ जाना चाहो तो इजाज़त है। हज़रत ज़ैद ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! मैं आपके मुक़ाबले भला किसको पसन्द कर सकता हूँ। आप मेरे लिए बाप की जगह भी हैं चचा की जगह भी।

उन दोनों बाप व चचा ने समझाया कि ज़ैद आज़ादी पर ग़ुलामी को तरजीह दे रहे हो, बाप चचा और सब घरवालों के मुक़ाबले में ग़ुलाम रहने को पसन्द करते हो? हज़रत ज़ैद ने कहा हाँ मैंने आपमें ऐसी बात देखी है कि उसके मुक़ाबले में कोई चीज़ पसन्द नहीं कर सकता। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने जब यह जवाब सुना तो उनको अपनी गोद में ले लिया और फ़रमाया कि मैंने इसको अपना बेटा बना लिया। हज़रत ज़ैद के बाप और चचा यह मंज़र देखकर ख़ुश हुए और वापस चले गए। (तारीख़ ख़मीस)

3. हज़रत साएब बिन यज़ीद यह रिवायत करते हैं कि मैं अपने लड़कपन में बीमार पड़ा। मेरी ख़ाला मुझे आपकी ख़िदमत में ले

गयीं। आपने मेरे सर पर हाथ फेरा और बरकत की दुआ दी। उसके बाद आपने वुज़ू किया मैंने जब कुछ पानी बचा हुआ देखा तो उसे पी लिया। अजीब बात है कि बच्चों में भी बरकत हासिल करने का इतना शौक़ था।

4. एक बार नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम तशरीफ़ ले जा रहे थे कि आपने कुछ बच्चों को एक जगह जमा देखा। एक लड़का उनमें अज़ान देते हुए हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु की नक़ल उतार रहा था और दूसरे बच्चे हँस रहे थे। आपको देखकर बच्चे सहम गए। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने बड़े बच्चे अबू महज़ूरा को इशारे से अपनी तरफ़ बुलाया। जब वह क़रीब आया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसके माथे के बालों से पकड़ लिया और फ़रमाया कि मुझे वही अज़ान सुनाओ जो तुम दूसरों को सुना रहे थे। पहले तो अबू महज़ूरा ने उज़्र पेश करने की कोशिश की मगर जल्दी एहसास हो गया कि अज़ान सुनाकर जल्दी जान छूट जाएगी। जब सुनाते सुनाते *'अशहदु अन्ना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह'* पर पहुँचे दिल की हालत ही बदल गई। अज़ान ख़त्म होने पर नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया अच्छा जाओ। कहने लगे कहाँ जाऊँ, अब जहाँ आप जाएंगे अबू महज़ूरा भी वहीं जाएगा। उसके बाद अबू महज़ूरा ने अपने माथे के बाल कभी नहीं कटवाए। बरकत के तौर पर यादगार क़ायम रखा।

5. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद लड़कपन की उम्र में नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ख़िदमत में मामूर थे। जब नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम कहीं जाते तो वह आपको जूते पहनाते। फिर आगे आगे छड़ी लेकर चलते। आप मजलिस में बैठना चाहते तो आपके पाँव मुबारक से जूते निकालते। आप नहाते तो पर्दा करते, आप सोते तो बेदार करते, जब आप सफ़र पर जाते तो बिछौना, मिसवाक, जूता और वुज़ू का पानी इनके साथ होता। इसीलिए वह

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के मीर सामान कहलाते थे।

6. तीन लड़के नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ख़िदमत में पेश-पेश रहते और तीनों का नाम अब्दुल्लाह था। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम उनकी मुहब्बत और लगन को देखते तो उनके लिए तहज्जुद की नमाज़ के बाद नाम लेकर दुआएं करते। इसका नतीजा यह निकला कि तीनों बड़े होकर अपने अपने फ़न के इमाम बने। अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़ुक़हा के इमाम बने, अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु मुफ़स्सिरीन के इमाम बने और अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु मुहद्दिसीन के इमाम बने।

7. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु को उनकी वालिदा ने बचपन में ही नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ख़िदमत के लिए वक़्फ़ कर दिया था।

8. हज़रत उक़्बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु आपके मुस्तक़िल ख़िदमत गुज़ार थे। जब भी सफ़र करना होता तो वह नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ऊँटनी को हाँकते हुए चलते थे।

(अबूदाऊद किताबुस्सलात)

9. हज़रत रबिया असलमी रज़ियल्लहु अन्हु भी रात में नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ख़िदमत में मशग़ूल रहते थे। जब आप इशा की नमाज़ से फ़ारिग़ होकर रोज़ाना घर तशरीफ़ ले जाते तो रबिया दरवाज़े पर बैठ जाते कि कहीं आपको कोई ज़रूरत पेश आए तो ख़िदमत के लिए हाज़िर रहूँ। जब रबिया जवान हो गए तो नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने मशवरा दिया कि शादी कर लें। उन्होंने अर्ज़ किया कि फिर रात की ख़िदमत के लिए इतना वक़्त नहीं दे सकूंगा। कुछ अरसे अपनी शादी को टालते रहे। जब नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम प्यार से मशवरा देते रहे तो आख़िरकार नबी अलैहिस्सलातु

वस्सलाम तबियत और मर्ज़ी को देखते हुए शादी कर ली।

10. हज़रत ज़ोहरा बिन साद रज़ियल्लाहु अन्हु को उनकी वालिदा ने बचपन में ही नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ख़िदमत में लायीं और अर्ज़ किया कि इसे बैअत कर लीजिए। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया कि अभी तो बच्चा है। उनके सर पर हाथ फेरा और बरकत की दुआ दी। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर और हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुम को जब देखते तो मुहब्बत करते और दोस्ती का इज़्हार करते। वजह सिर्फ़ यह थी कि उनको नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने बरकत की दुआ दी थी।

(इश्क़े रसूल स० 95-99)

हज़रत शिबली रह० की हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत

हज़रत शिबली रह० एक बुज़ुर्ग गुज़रे हैं। उनकी वफ़ात का वक़्त जब क़रीब आया तो साथियों से फ़रमाया मुझे वुज़ू करवा दें। साथियों ने बड़ी मुश्किल से आपको वुज़ू कराया क्योंकि आप बीमारी की वजह से काफ़ी कमज़ोर हो चुके थे। वुज़ू के बाद ख़्याल आया कि मुझसे तो ख़िलाल रह गया वह है भी सुन्नत। बहुत परेशान हुए। फ़रमाया अब मुझे दोबारा वुज़ू कराएं तो साथियों ने कहा हज़रत! आप तो माज़ूर हैं, बीमार हैं, हरकत से तकलीफ़ होती है इसलिए रहने दीजिए। लेकिन हज़रत ने फ़रमाया मुझ पर मौत की तकलीफ़ तारी है, क़रीब ही मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मिलूँगा तो मैं यह नहीं चाहता कि ऐसे वुज़ू से चला जाऊँ जिसमें हुज़ूर की कोई सुन्नत छूटी हुई हो। यह होता है सच्चा इश्क़।

(ख़ुत्बाते ज़ुलफ़क्कार 2/106)

हज़रत मौलाना क़ासिम नानौतवी रह० का इश्क़े रसूल

हज़रत मौलाना क़ासिम नानौतवी रह० तो इल्म के आफ़ताब और माहताब थे। अल्लाह तआला ने उनको बेपनाह इश्क़े रसूल अता फ़रमाया था। एक बार अंग्रेज़ों ने उनकी गिरफ़्तारी का वारंट जारी कर दिया। हज़रत तीन दिन घर में रहे और तीन दिन बाद बाहर निकल आए कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ग़ार में तीन दिन तक छिपे रहे थे। लिहाज़ा तीन से ज़्यादा मैं अंदर रहना पसंद नहीं करता। ऐसा न हो कि क़ासिम नानौतवी से सुन्नत के ख़िलाफ़ काम हो जाए।

हुज़ूर अकरम की हदीस है कि तुम अपनी बेवाओं का निकाह कर दिया करो। क़ुरआन पाक में भी है। हज़रत मौलाना क़ासिम नानौतवी रह० की बहन नव्वे साल की उम्र में बेवा हो गयीं। आपको पता चला, उनके पास तशरीफ़ ले गए। कुछ दिन गुज़र गए तो दोबारा अपनी बहन के पास गए और कहा बहन! मैं तुम्हारे पास एक बात करने आया हूँ। बहन ने कहा बताओ भाई क्या बात है? हज़रत फ़रमाने लगे कि मेरे आक़ा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़रमान है कि तुम बेवाओं का निकाह कर दिया करो। आप मेरी इस बात को मान लीजिए और निकाह कर लीजिए। मैं जानता हूँ कि इस उम्र में इज़्दिवाजी ज़िन्दगी की ज़रूरत नहीं है। मगर क़ासिम नानौतवी को एक सुन्नत की तौफ़ीक़ हो जाएगी। बहन रोने लग गयीं। आपने अपनी पगड़ी को उतारा और बहन के क़दमों पर रख दिया और कहा कि तुम्हारी वजह से मुझे हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत पर अमल की तौफ़ीक़ हो जाएगी। लिहाज़ा नव्वे साल की उम्र में अपनी बहन का निकाह कर दिया। कैसा इश्क़ था।

हज़रत मौलाना क़ासिम नानौतवी रह० जब हज पर गए तो आप ने रास्ते में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में कुछ अशआर लिखे वह भी सुनाता चलूँ :

उम्मीदें लाखों हैं लेकिन बड़ी उम्मीद यह
के हो सुगाने मदीना में मेरा शुमार
जियूँ तो साथ सुगाने हरम के तेरे फिरूं
मरूं तो खाएं मुझको मदीने के मोरो मार

कि ऐ अल्लाह के नबी! निजात की उम्मीदें तो बहुत हैं मगर सबसे बड़ी उम्मीद यह है कि मदीने के कुत्तों के साथ मेरा शुमार हो जाए। अगर जियूँ तो मदीने के कुत्तों के साथ फिरता रहूँ और अगर मर जाऊँ तो मदीने के कीड़े मकौड़े मुझे खाएं। रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ऐसी शदीद मुहब्बत थी दिल में।

एक आदमी आपकी ख़िदमत में आया। उसने सब्ज़ रंग का जूता पेश कर दिया। हज़रत ने वह जूता ले तो लिया मगर उसको घर में रख दिया। किसी ने बाद में पूछा हज़रत! फ़लाँ ने बहुत अच्छा जूता दिया था। इलाक़े में अक्सर लोग पहनते हैं। ख़ूबसूरत भी बना हुआ था। फ़रमाया मैंने जूता ले तो लिया था कि उसकी दिलजोई हो जाए। मगर पहना इसलिए नहीं कि दिल में सोचा कि मेरे आक़ा के रौज़-ए-अक़्दस का रंग भी हरा है। अब मैं अपने पाँव इस रंग का जूता कैसे पहनूँ। आप हरम तशरीफ़ ले गए। आप बहुत नाज़ुक बदन थे। एक आदमी ने देखा कि आप नंगे पाँव मदीने की गलियों में चले जा रहे हैं और पाँव के अंदर से ख़ून रिसता चला जा रहा है। किसी ने पूछा हज़रत जूता पहन लेते। फ़रमाया, हाँ पहन तो लेता लेकिन जब मैंने सोचा कि इस जगह मेरे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चला करते थे तो मेरे दिल ने गवारा न किया कि क़ासिम उस पर

जूतों के साथ चलता फिरे। कैसे दीवाने और परवाने थे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के। (ख़ुत्बाते ज़ुल्फ़क़ार 2/193)

हज़रत गंगोही रह० का इश्क़े रसूल

हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही रह० फ़क़ीह-ए-वक़्त थे। एक आदमी हज से वापस आया और वहाँ से कुछ कपड़ा लाया। उसने वह कपड़ा हज़रत रह० की ख़िदमत में पेश किया। हज़रत ने जब उसे लिया तो उसे चूमा और अपने सर के ऊपर रख लिया जैसे बड़ी इज़्ज़त वाली कोई चीज़ हो। तलबा बैठे हुए थे। उन्होंने अर्ज़ किया हज़रत! यह तो फ़लाँ मुल्क का कपड़ा है, मदीने के लोग ख़रीदकर आगे बेचते हैं। फ़रमाया तसलीम करता हूँ कि यह मदीने का बना हुआ नहीं है मगर मैं तो इसलिए इसकी इज़्ज़त करता हूँ कि उसे मदीने की हवा लगी हुई है।

एक आदमी हज से वापस आया और उसने तीन खजूरें हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही रहमतुल्लाहि अलैहि की ख़िदमत में भेजीं। आपको जब मिलीं तो आपनी हथेली पर ये खजूरें ऐसे रखीं जैस दुनिया की दौलत आपकी हथेली में सिमट आई हो। आपने एक शागिर्द को बुलाया और फ़रमाया कि हमारे जो क़रीबी मिलने जुलने वाले हैं ज़रा उनकी फ़हरिस्त तैयार कर देना। उसने फ़हरिस्त बनाई तो पचास से ज़्यादा नाम हुए। फ़रमाया इन तीनों खजूरों के इन नामों के बराबर हिस्से कर दो. इसलिए उतने हिस्से किए गए। छोटे-छोटे हिस्से बने। फ़रमाया कि एक-एक हिस्सा मेरे एक-एक दोस्त को दे दो। ऐसा मालूम होता था कि जैसे कि हीरे और मोती आपके हाथ लग गए हैं जो अपने दोस्तों को पेश कर रहे हैं। एक शागिर्द ने कहा हज़रत! इतने छोटे हिस्से से क्या बनेगा? उसकी यह बात सुनकर हज़रत का रंग सुर्ख़ हो गया और फ़रमाया, मदीने की खजूर हो और

तू उसे हिस्से को छोटा कहे। लिहाज़ा कितने ही दिनों तक उससे बोलना छोड़ दिया। (ख़ुत्बात ज़ुल्फ़क़ार 2/108)

हज़रत मौलाना मदनी रह० का इश्क़े रसूल

हज़रत मौलाना हुसैन अहमद मदनी रह० दारुल उलूम देवबंद में पढ़ाते थे और तंख़्वाह इतनी थी कि मुश्किल से गुज़ारा होता था। जो कुछ मिलता था घर की ज़रूरियात पर लग जाता था। इसी वजह से हज भी न कर सके मगर दिल में तमन्ना बहुत थी। हत्ता कि किताबों में लिखा है कि जब हज के दिन शुरू होते थे तो आप को घर के अंदर चैन नहीं आता था। कभी इधर चले जाते और कभी उधर चले जाते। यहाँ तक कि दस्तरख़्वान पर खाना खाते हुए भी जब ख़्याल आ जाता तो कहते मालूम नहीं उश्शाक़ क्या कर रहे होंगे। हज पर जाने वालों को उश्शाक़ कहते थे। यह ख़्याल आते ही खाना छोड़ देते और आंहे भरने लगते और कहते काश कोई दिन आए कि हुसैन अहमद को भी उस जगह की ज़ियारत नसीब हो जाए।

एक दफ़ा सोए हुए थे और आँख खुल गई। उठ बैठे, परेशानी से नींद नहीं आई। इसी हालत में आसमान की तरफ़ निगाह उठाकर अर्ज़ किया ऐ अल्लाह! मालूम नहीं तेरे आशिक़ क्या कर रहे होंगे। काश हुसैन अहमद को भी उनमें शुमार फ़रमा लेते। ज़िलहिज्जा के दस दिन आपको यहाँ आराम नहीं आता था। दुआएं मांगते थे, कराहते थे हत्ता कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने आपकी इस मुहब्बत को क़ुबूल फ़रमा लिया और आप के लिए हरम के दरवाज़े खोले और अठ्ठारह साल तक हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास बैठकर हदीसे पाक का दर्स देते रहे। आशिक़ ही ऐसा कर सकता है कोई और तो नहीं कर सकता। आप हदीसे मुबारका का दर्स देते वक़्त इस अंदाज़ से बैठते थे कि मवाजा शरीफ़ बिल्कुल सामने होता था। हम

तो कहते हैं ﴿قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم﴾ "काला काला रसूलल्लाह सल्लल्लाहु वसल्लम" मगर आप जब हदीस पढ़ाते तो फ़रमाते ﴿قال هذا رسول الله صلى الله عليه وسلم﴾ "काला हाज़ा रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।" जब आप तालीम से फ़ारिग़ हो जाते तो अक्सर लोगों ने देखा कि रात के अंधेरे में इशा के बाद या तहज्जुद से पहले अपनी दाढ़ी मुबारक से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रौज़ा-ए-अक़्दस के क़रीब की जगह को साफ़ कर रहे होते थे। सुब्हानअल्लाह! अल्लाह हमें भी ऐसा इश्क़ और ऐसा अदब नसीब फ़रमाए। किसी ने क्या ख़ूब बात कही है :

नाज़ा है हुस्न जिस पर वह हुस्ने रसूल है
कहकशां तो आपके क़दमों की धूल है
ऐ कारवाने शौक़ यहाँ सर के बल चलो
तैबा के रास्ते का काँटा भी फूल है

(ख़ुत्बात ज़ुल्फ़िक़ार 2/109)

इश्क़े नबवी में चोर को माफ़ कर देना

एक बुज़ुर्ग हज के सफ़र पर गए। एक जगह से गुज़र रहे थे। उनके हाथ में एक थैला था। उसमें कुछ पैसे थे। चोर उनके हाथ से थैला छीनकर भाग गया। काफ़ी दूर निकलकर उसकी आँखों की रोशनी अचानक ख़त्म हो गई। उस चोर ने रोना शुरू कर दिया। लोगों ने पूछा भाई क्या हुआ? कहने लगा, मैंने एक आदमी का थैला छीना है। वह कोई बड़ा अल्लाह का क़रीबी बंदा लगता है। मेरी आँखों की रोशनी चली गई। ख़ुदा के लिए मुझे उसके पास पहुँचाओ ताकि मैं उससे माफ़ी मांग सकूँ। लोगों ने पूछा कि यह क़िस्सा कहाँ पेश आया? कहने लगा फ़लाँ नाई की दुकान के क़रीब पेश आया। लोग उसको उस दुकान पर ले गए और नाई से पूछा कि इस तरह

का आदमी यहाँ से गुज़रा है? आप उसे जानते हो? उसने कहा मुझे उसका घर तो पता नहीं हाँ नमाज़ों के लिए वह आते जाते हैं। अगली नमाज़ के लिए फिर आएंगे। ये लोग इन्तिज़ार में बैठ गए। वह बुज़ुर्ग अपने वक़्त पर तशरीफ़ लाए। लोग उस चोर को उनके पास ले गए तो उस चोर ने जाकर उनके हाथ पकड़ लिए, पाँव पकड़ लिए कि मुझसे ग़लती हुई, गुनाह हुआ, नादिम हूँ, शर्मिन्दा हूँ, मेरी आँखों की रोशनी छिन गई। आप अपने पैसे वापस ले लीजिए और मुझे माफ़ कर दीजिए ताकि अल्लाह तआला मेरी आँखें ठीक कर दे। वह बुज़ुर्ग कहते हैं कि मैंने तो तुझे पहले ही माफ़ कर दिया है। यह सुनकर चोर बड़ा हैरान हुआ। कहने लगा हज़रत मैं तो आपका थैला छीनकर भागा और आप कहते हैं कि माफ़ी मांगने से पहले ही माफ़ फ़रमा दिया। वह फ़रमाने लगे हाँ मेरे दिल में कोई बात आ गई थी। फ़रमाने लगे मैंने एक हदीस पढ़ी जिसमें नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन जब मेरी उम्मत का हिसाब पेश किया जाएगा तो मैं उस वक़्त तक मीज़ान के क़रीब रहूँगा। जब तक मेरे आख़िरी उम्मती का फ़ैसला नहीं हो जाता। मेरे दिल में यह बात आई कि अगर मैंने इस चोर को माफ़ नहीं किया तो क़यामत के दिन यह मुक़दमा पेश होगा और जितनी देर मेरे मुक़दमे का फ़ैसला होने में लगेगी अल्लाह के नबी अलैहिस्सलाम को उतनी देर जन्नत से बाहर रहना पड़ेगा। इसलिए मैंने माफ़ कर दिया कि न तो मुक़दमा पेश होगा न ही मेरे महबूब को जन्नत में जाने में देर लगेगी। वह जल्द जन्नत में तशरीफ़ ले जाएंगे।

(ख़ुत्बात ज़ुल्फ़िक़ार 2/110, 5/226)

इश्क़ व मुहब्बत, ख़ुलूस और अमानत का ज़ामिन

जामा मस्जिद देहली के दरवाज़े पर एक माज़ूर आदमी बैठा भीख मांग रहा था। एक अंग्रेज़ वहाँ मस्जिद को देखने के लिए आया।

हमने भी देखा कि जामा मस्जिद को अंग्रेज़ देखने के लिए आते जाते हैं। वह अंग्रेज़ बड़ा ओहदा रखता था। जब वह इस फ़क़ीर के पास से गुज़रा तो उसने सैल्यूट मारा ताकि कुछ दे जाए। उस अंग्रेज़ ने उसे कुछ पैसे दे दिए। अंग्रेज़ बाहर खड़े हो जाते हैं जूतों की जगह पर, अन्दर दाख़िल नहीं होते। मस्जिद के नक़्श व निगार और अज़्मत ऐसी होती है कि अल्लाह के घर के सामने ही उन्हें सकून मिल जाता है। वह अंग्रेज़ मस्जिद को देखकर चला गया। घर जाकर मालूम हुआ कि जिस बटवे से पैसे निकाल कर दिए थे वह बटवा जेब में नहीं है। पैसे भी काफ़ी थे और पता भी नहीं कि कहाँ गिरे होंगे। ख़ैर बात आई गई हो गई।

एक हफ़्ता बाद फिर उसे छुट्टी हुई। उसकी बीवी ने कहा तुम मस्जिद देख आए थे। मुझे भी दिखाओ। लिहाज़ा छुट्टी वाले दिन वह अपनी बीवी को लेकर फिर मस्जिद देखने के लिए आया। जब वह अंग्रेज़ इस माज़ूर फ़क़ीर के पास से गुज़रने लगा तो वह फ़क़ीर फ़ौरन खड़ा हो गया और उससे कहा कि आप पिछली दफ़ा आए थे, मुझे पैसे दिए थे। उसके बाद आप बटवा जेब में डालने लगे। थोड़ी दूर आगे जाकर बटवा गिर गया और मैंने उठाया। यह बटवा मेरे पास आपकी अमानत है। यह मैं आपके हवाले करता हूँ। अंग्रेज़ ने बटवे को खोलकर देखा तो पैसे बिल्कुल पूरे थे। हैरान होकर वह सोचने लगा कि बटवा तो दे देता मगर इसके अंदर की कुछ रक़म निकाल सकता था। मुझे उम्मीद तो यही थी। यह क्या हुआ कि सारे के सारे पैसे ज्यों के त्यों वापस कर दिए। उसने उस फ़क़ीर से पूछा कि आख़िर क्या बात है कि तुमने कुछ भी पैसे अपने पास नहीं रखे? वह माज़ूर फ़क़ीर कहने लगा कि क़यामत के दिन हर आदमी अपने नबी के पीछे होगा। जमातों की सूरत में अंबिया अलैहिमुस्सलाम के पीछे चल रहे होंगे। जब मैंने बटवा उठया तो मेरा जी चाहता था कि

मैं इसमें से कुछ ले लूँ मगर फिर मुझे ख़्याल आया कि हर काम अल्लाह के सामने पेश होना है। अगर मैं यह पैसे रख लूँगा तो क़यामत के दिन मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पीछे खड़ा हूँगा और आप हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के पीछे खड़े होंगे। उस वक़्त ऐसा न हो कि आपके नबी मेरे नबी को गिला दें कि आपके उम्मती ने मेरे उम्मती के पैसे ले लिए थे। यह सोचकर मैंने इसमें से कोई ख़्यानत नहीं की और आपके पैसे मैंने आपको लौटा दिए। काश! हमें देहली के इस माज़ूर फ़कीर जैसी मुहब्बत भी हुज़ूर से होती।

(ख़ुत्बात ज़ुल्फ़िक्कार 2/112)

क़ुव्वते इश्क़ से हर पस्त को बाला कर दे
दहर में इस्मे मुहम्मद से उजाला कर दे

जानवरों के लिए रहमत

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रहमत से जानवरों नें भी रहमत पाई। एक बार एक बाग़ में तशरीफ़ ले गए तो एक ऊँट बिलबिलाता हुआ आपके क़दमों में आया। आपने उसके मालिक को बुलाकर फ़रमाया यह बेज़बान जानवर है। तुम्हें चाहिए कि इसके साथ नरमी बरतो। यह शिकवा कर रहा है कि तुम इससे काम ज़्यादा लेते हो और इसे चारा थोड़ा देते हो। सुब्हानअल्लाह! जानवर भी आपकी ख़िदमत में आकर अपनी तकलीफ़ बयान करते थे।

हिरन के बच्चे पर निगाहे रहमत

हुज़ूर पाक अलैहिस्सलातु वस्सलाम एक दफ़ा मदीना तैय्यबा से बाहर तशरीफ़ ले जा रहे थे। एक यहूदी ने हिरनी पकड़ी हुई थी। आप जब क़रीब से गुज़रे तो उस हिरनी ने आपसे कहा, ऐ अल्लाह के नबी! मुझे इसने पकड़ लिया है। इस सामने वाले पहाड़ में मेरा

बच्चा है और उसके दूध का वक़्त हो गया है। मुझे देर हो रही है, मेरी ममता जोश मार रही है कि मैं उसे दूध पिला लूँ। आप मुझे थोड़ी देर के लिए आज़ाद करा दीजिए। रसुलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसकी बात सुनी तो यहूदी से कहा थोड़ी देर के लिए इसे आज़ाद कर दो। यह दूध पिलाकर वापस आ जाएगी। उसने कहा बड़ी मुश्किल से इसे पकड़ा है, क्या आप इसकी ज़िम्मेदारी लेते हैं? आपने फ़रमाया कि मैं इसकी ज़िम्मेदारी क़ुबूल करता हूँ। लिहाज़ा हिरनी को छोड़ा गया। वह उसी वक़्त छलांगे मारती हुई पहाड़ की तरफ़ गई। आप वहीं थे कि वह दोबारा भागती हुई वापस आ गई। यहूदी हिरनी की इस इताअत को देखकर हैरान रह गया। चुनाँचे उसने कलिमा पढ़ा और मुसलमान हो गया।

लतीफ़ा

एक मौलाना पढ़कर आए। उनको हदीसें भी बहुत याद थीं। जब वह बयान करते तो 'क़ाला क़ाला रसूलल्लाह' पढ़ते। एक देहाती था। उस बेचारे को अरबी तो आती नहीं थी। अब वह रोज़ बैठकर यह सुनता। कुछ दिन तो सब्र करता रहा। अब उसको 'क़ाला क़ाला रसूलल्लाह' के माइने ही मालूम न था। वह 'क़ाला रसूलल्लाह' का 'काला रसूलल्लाह' समझने लगा। कहने लगा यह मौलाना कैसा है जो रसूलल्लाह का काला कहता है। लिहाज़ा एक दिन जब उन्होंने दर्स दिया तो दर्स के बाद देहाती ने मौलाना का गिरेबान पकड़ा, कहने लगा ओ मौलवी साब! तू काला, तेरा बाप काला मेरा रसूल तो गोरा चिट्टा है। यह मुहब्बत की बात है। (तमन्नाए दिल स० 196)

हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु पर इनायत व बख़्शिश

हज़रत ज़ैद एक सहाबी हैं। बचपन में ही किसी ने इनको ग़ुलाम

बना लिया था। आख़िरकार वह नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ख़िदमत में पहुँच गए और वह वहीं रहने लगे। उनके वालिद उनके बारे में बहुत फ़िक्रमंद हुए। वह उनके ढूंढते और अशआर कहते थे। किसी ने बता दिया कि आपका बेटा फलाँ जगह पर मौजूद है। लिहाज़ा उनके वालिद और चचा उनको लेने के लिए वहाँ पहुँच गए। उन्होंने हज़रत ज़ैद से आकर मुलाक़ात की और उन्हें समझाया कि मैं भी तेरे लिए उदास हूँ। तुम्हारी वालिदा भी उदास है और दूसरे रिश्तेदार भी उदास हैं। हमने तेरी ख़ातिर बहुत सफ़र किए, बहुत ही मुशक़्क़तें उठायीं। अब आप क़िस्मत से मिल गए हैं। लिहाज़ा हमारे साथ चलें। क्योंकि उन्हें बग़ैर इजाज़त के नहीं ले जा सकते थे। इसलिए उन्हें समझाने के बाद वह नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। वह अल्लाह के महबूब की ख़िदमत में अर्ज़ करने लगे,

"ऐ क़ुरैश के सरदार! आप बून हाशिम की औलाद बड़े करीम लोग हैं। आप मेहमान नवाज़ हैं और लोगों के साथ भलाई करने वाले हैं। हमारे बच्चा आपके पास है। आप उसे हमारे साथ भेज दीजिए ताकि हम सुकून की ज़िन्दगी गुज़ार सकें।"

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया, "मैं यह इख़्तियार ज़ैद को देता हूँ अगर यह आपके साथ जाना चाहे तो इसे जाने की इजाज़त है और अगर यह मेरे पास रहना चाहे तो मैं ज़बरदस्ती भेजना नहीं चाहता।"

जब हज़रत ज़ैद के ज़िम्मे बात लगी तो उन्होंने एक नज़र अपने वालिद के चेहरे पर डाली और एक नज़र अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चेहरे पर डाली और उठकर नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की गोद मुबारक में आकर बैठ गए और एक बच्चा होने के बावजूद कहने लगे एक अल्लाह के नबी! मैं आपसे जुदा होना नहीं

चाहता। जब नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की गोद में बैठ गए तो अल्लाह के महबूब बहुत ख़ुश हुए और फ़रमाने लगे,

"आज से मैंने ज़ैद को अपना बेटा बना लिया।"

सुब्हानअल्लाह! हज़रत ज़ैद ने अपने बाप की गोद के बजाए नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की गोद को पसन्द किया। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की क़द्रदानी देखिए कि सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम उनको पूरी ज़िन्दगी 'ज़ैद बिन मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' के नाम से पुकारते थे।

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने अपनी एक रिश्तेदार औरत से इनकी शादी कर दी थी न सिर्फ़ यही बल्कि सहाबा में सिर्फ़ आपका नाम क़ुरआन मजीद में आया है। अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया,

﴿فلما قضى زيد منها وطرا زوجنكها. (سورة الاحزاب ٣٧)﴾

फिर जब ज़ैद तमाम कर चुका उस औरत से अपनी ग़र्ज़, हमने उसको तेरे निकाह में दे दिया। सहाबा किराम उनका बड़ा इकराम करते थे। (ख़ुत्बात ज़ुल्फ़ुक़्क़ार 12/33)

❋ ❋ ❋

بسم الله الرحمن الرحيم

قل ان كنتم تحبون الله فاتبعونى يحببكم الله
ويغفر لكم ذنوبكم والله غفور رحيم.

इत्तिबाए रसूल
सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

की जो मुहम्मद से वफ़ा तो हम तेरे हैं
यह जहाँ क्या चीज़ है लौहो क़लम तेरे हैं

इत्तिबाए रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु और इत्तिबाए रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

एक बार हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा हज के लिए सफ़र पर चले। रास्ते में उन्होंने अपने सवारी को एक जगह पर रोका। नीचे उतरे और वीराने में एक तरफ़ को इस तरह गए जैसे कोई आदमी क़ज़ाए हाजत के लिए जाता है। फिर एक जगह पर बैठ गए। लगता यूँ था कि फ़राग़त हासिल करने के लिए बैठे हैं मगर फ़ारिग़ नहीं हुए बल्कि ऐसे ही वापस आ गए और ऊँट पर बैठ कर चल पड़े। साथियों ने पूछा हज़रत आपके इस अमल की वजह से हमको रुकना पड़ा हालाँकि आपको फ़राग़त हासिल करने की ज़रूरत नहीं थी। वह फ़रमाने लगे कि मैं इसलिए नहीं रुका था कि मुझे ज़रूरत थी बल्कि असल में बात यह है कि मैंने एक बार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ इसी रास्ते से सफ़र किया था। इस जगह पर मेरे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रुके थे और आपने इस जगह पर क़ज़ाए हाजत से फ़राग़त हासिल की थी। मेरा जी चाहा कि मैं भी अपने महबूब के इस अमल के मुताबिक़ अपना अमल करूं। इससे अंदाज़ा लगाइए कि वह नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की अदाओं के कितने मुहाफ़िज़ थे। वह जो कुछ नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ज़बान से सुनते थे या उनको करते हुए देखते थे उसके मुताबिक़ अमल करते थे।(ख़ुत्बाते ज़ुल्फ़िक़ार 8/157)

फ़रमाने नबवी का लिहाज़

मस्जिदे नबवी का एक दरवाज़ा था। जहाँ से अक्सर औरतें आया करती थीं और जब औरतें नहीं होती थीं तो कभी-कभी मर्द भी उस दरवाज़े से आ जाया करते थे। एक बार नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया कितना अच्छा होता कि इस दरवाज़े को औरतों के लिए छोड़ दिया जाता। यह सुनकर मर्दों ने उस दरवाज़े से आना ही छोड़ दिया। हत्ताकि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर इन अल्फ़ाज़ को सुनने के बाद पूरी ज़िन्दगी में कभी भी उस दरवाज़े से मस्जिदे नबवी में दाख़िल नहीं हुए। सुब्हानअल्लाह! उनका एक-एक काम नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की अदाओं का मज़हर हुआ करता था। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उनको नबी का ऐसा आशिक़ अता फ़रमाया था कि उनको नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की हर-हर बात याद रहती थी। उन्होंने अपने दिमाग़ों में इस इल्म को याद रखा और अपने जिस्म के आज़ा पर भी इस इल्म पर अमल के ज़रिए से यादें ताज़ा रखीं।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 8/158)

दरबारे शाही में हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु का सुन्नत पर अमल

मशहूर रिवायत है कि हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ियल्लाहु अन्हु फ़ारस तशरीफ़ ले गए। दावत खाने के लिए बैठे। उनसे एक लुक़्मा नीचे गिर गया। उन्होंने उस लुक़्मे को उठाया और साफ़ करके खा लिया। कुछ लोगों ने कहा कि यहाँ के अमीर इस आदत को पसंद नहीं करते हैं। फ़रमाने लगे ﴿اترك سنة حبيبي لهؤلاء الحمقاء﴾ क्या मैं इन बेवक़ूफ़ों की ख़ातिर अपने आक़ा और महबूब की सुन्नत को छोड़ दूँ? सोचिए तो सही कि सहाबा किराम ने एक-एक सुन्नत पर कितनी

मुहब्बत से अमल किया। वे इल्म के भी वारिस बने, अमल के वारिस बने, अहवाल के भी वारिस बने, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ाहिरी अदाओं के भी वारिस बने। इस तरह यह अमल सहाबा किराम से उम्मत तक आगे पहुँचा जिस तरह मेरे आक़ा दुनिया में इसको दे गए थे। (ख़ुत्बात ज़ुल्फ़िक़ार 3/183)

मेरा सर मेरे आक़ाए मदनी के जैसा हो जाए

एक सहाबी हब्शा के रहने वाले थे। वह जब भी नहाकर निकलते तो उनका जी चाहता मैं भी अपने सर में बीच में इसी तरह मांग निकालूँ जिस तरह नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम निकाला करते हैं लेकिन हब्शी नसल होने की वजह से उनके बार घुंघरियाले, छोटे और सख़्त थे। इसलिए उनकी मांग नहीं निकल सकती थी। वह इस बात को सोचकर बड़े उदास रहते थे कि मेरे सर को मेरे महबूब के मुबारक सर की मुशाबिहत नहीं है। एक दिन चुल्हा जल रहा था। उन्होंने लोहे की सलाख़ लेकर उसको आग में गर्म की और अपने सर के दर्मियान सलाख़ को फेर लिया। गर्म सलाख़ के फिरने से उनके बाल भी जले और खाल भी जली। उससे ज़ख़्म हो गया। जब ज़ख़्म सही हो गया तो उनको अपने सर के बीच एक लकीर नज़र आती थी। लोगों ने कहा तुमने इतनी तकलीफ़ क्यों उठाई? वह फ़रमाने लगे कि मैं तकलीफ़ तो बरदाश्त कर ली लेकिन मुझे अब इस बात की बहुत ख़ुशी होती है कि सर को अब महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सर से मुशाबिहत नसीब हो गई। (ख़ुत्बात ज़ुल्फ़िक़ार 3/159)

रोज़ा रखिए मगर सुन्नत के मुवाफ़िक़

सन् 1973 ई० की बात है कि एक आदमी इस आजिज़ से मिलने आया। वह सोलह साल से लगातार रोज़े रख रहा था। मेरे

दोस्त बड़े हैरान हुए कि यह सोलह साल से लगातार रोज़े रख रहा है। मैंने कहा यह काम इतना मुश्किल नहीं है। वह कहने लगे कैसे मुश्किल नहीं है, सर्दी, गर्मी, सेहत, बीमारी, सफ़र, हज़र हर वक़्त रोज़े से रहना बहुत मुश्किल है। मैंने कहा अच्छा उससे पूछ लें। चुनाँचे उन्होंने उस आदमी से पूछा कि क्या आपको रोज़ा रखने में कोई दिक़्क़त पेश आती है? वह कहने लगे नहीं। फिर वह मुझे कहने लगे कि यह क्या मामला है? मैंने कहा यह इसकी आदत बन गई है। कुछ लोग दिन में तीन दफ़ा खाना खाते हैं और कुछ लोग सुबह व शाम दो दफ़ा खाते हैं। इसी तरह आप यूँ समझें कि यह भी दिन में दो दफ़ा खाते हैं। एक दफ़ा सहरी में के वक़्त और एक दफ़ा इफ़्तारी के वक़्त। लिहाज़ा इनकी यह आदत बन गई है। मैंने कहा कि उनसे कहें कि आप सौमे दाऊदी रखें यानी एक दिन रोज़ा रखें और दूसरे दिन नाग़ा करें। चुनाँचे उन्होंने उनसे पूछा कि क्या आप सौमे दाऊदी रख सकते हैं? तो उन्होंने कहा कि नहीं मैं ऐसा नहीं कर सकता। उन्होंने पूछा वह क्यों? वह कहने लगे इसलिए कि यह तो मेरी आदत बन गई है और दिन के वक़्त अब मेरा कुछ खाने को दिल ही नहीं करता। अगर मैं एक दिन खाऊँ और एक दिन रोज़ा रखूँ तो इसमें मेरे नफ़्स पर ज़्यादा बोझ होगा जो कि मेरे लिए बहुत मुश्किल है। मैंने कहा देखो यह जो अपनी मर्ज़ी से मुजाहिदा करते हैं वह काम आसान है लेकिन हदीस में जो तरीक़ा आया है उसके मुताबिक़ काम करना इसलिए बहुत मुश्किल है। (ख़ुत्बाते ज़ुल्फ़िक़ार 11/169)

हकीम ज़ियाउद्दीन रह० और सुन्नत का अदब

एक दफ़ा हकीम ज़ियाउद्दीन सुनामी रह० बीमार हो गए। हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन रह० को पता चला। आपने सोचा कि वक़्त के इतने बड़े आलिम हैं और सुन्नतों के पाबंद हैं इसलिए मुझे उनकी

अयादत के लिए जाना चाहिए। लिहाज़ा आप उनकी अयादत के लिए उनके दरवाज़े पर पहुँचे, दस्तक देकर अंदर पैग़ाम भेजा कि मैं आपकी अयादत के लिए आया हूँ। हकीम ज़ियाउद्दीन सुनामी ने जवाब भिजवाया कि मेरा आख़िरी वक़्त है। मालूम नहीं कि किस वक़्त जान निकल जाए। मैं अपने आख़िरी वक़्त में किसी बिदअती की शक्ल देखना भी पसंद नहीं करता। अब कैसा सख़्त जवाब था लेकिन ख़्वाजा निज़ामुद्दीन रह० ने समझ रहे थे कि सुन्नत की मुहब्बत में बात कर रहे हैं। इसलिए उन्होंने फ़ौरन जवाब भिजवाया कि हाँ बिदअती आपके दरवाज़े पर आया है मगर बिदअत से तौबा करने के लिए आया है। जब यह पैग़ाम हकीम ज़ियाउद्दीन रह० को मिला तो लेटे हुए थे फ़ौरन उठ बैठे और अपनी पगड़ी सर से उतारी, शागिर्द से कहा मेरे बिस्तर से लेकर मेरे दरवाज़े तक इस पगड़ी को बिछा दीजिए और हज़रत से कहिए कि अपने जूतों समेत पगड़ी पर चलते हुए तशरीफ़ लाइए।

हज़रत नानौतवी रह० और इत्तिबाए सुन्नत

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की इस मुहब्बत की वजह से एक एक सुन्नत पर उनका अमल था। एक बार हज़रत नानौतवी रह० की गिरफ़्तारी के वारन्ट जारी कर दिए गए। जब पता चला तो आप रुपोश हो गए। रुपोश होने के पूरे तीन दिन बाद आप बाहर निकल आए। किसी कहा हज़रत! अंग्रेज़ आपको ढूंढ रहा है और आपकी गिरफ़्तारी के वारन्ट जारी हैं। आपने फ़रमाया, मैंने अपने आक़ा की ज़िन्दगी पर ग़ौर किया, मुझे ग़ारे सौर में रुपोशी के तीन दिन नज़र आते हैं। लिहाज़ा मैं भी तीन दिन ग़ायब रहा, इसके बाद बाहर निकल आया हूँ। अंग्रेज़ अगर पकड़ लेंगे तो मैं अपनी जान का नज़राना अल्लाह के सुपुर्द कर जाऊँगा। सुन्नत का इतना लिहाज़ और ख़्याल रखा करते थे।

(ख़ुत्बाते ज़ुलफ़क़ार 6/103)

हज़रत मदनी रह० का हर हाल में सुन्नत पर अमल

हज़रत मौलाना हुसैन अहमद मदनी रह० के सुन्नत पर अमल के वाक़िआत बेशुमार हैं। ख़ासतौर उनकी आख़िरी रात में तहज्जुद की कैफ़ियत बहुत अजीब होती थी। तजज्जुद में आमतौर पर दो पारे तिलावत करते थे और पढ़ने के दौरान इस क़द्र ख़ुशू और इतना गिरया तारी होता कि सीने से खौलते साँसों की आवाज़ें सुनाई देती थीं। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में हदीस में यही लिखा है कि आप नमाज़ ऐसी पढ़ते थे कि अंदर से रोने की वजह से हांडी के जोश मारने की आवाज़ सुनाई देती थी। लिहाज़ा आपकी नमाज़ में उसी सुन्नत की इत्तिबा मिलती है। नमाज़ के बाद आप इस्तिग़फ़ार पढ़ते और दुआ मांगते तो रोते और इस तरह सिसकियाँ और हिचकियाँ लेते कि कोई बच्चा पिट रहा हो।

हज़रत मौलाना ख़लील अहमद सहारनपूरी रह० के हालाते ज़िन्दगी के बारे में लिखा कि है कि एक बार आप हज के लिए तशरीफ़ ले गए। उस ज़माने में अरब में सफ़र आमतौर से ऊँटों पर होता था। सफ़र की रहनुमाई और इन्तिज़ाम के सिलसिले में जैसे आजकल मुअल्लिम होते हैं उस ज़माने में उनको मुतव्वफ़ कहते थे। आपने अपने मुतव्वफ़ से पहले ही तय कर लिया कि हमने हज को सुन्नत के मुताबिक़ अदा करना है। लिहाज़ा तुम कोई ऐसी तर्तीब बनाना जो सुन्नत के मुताबिक़ न हो।

मिना में क़याम के दौरान सुबह सादिक़ से पहले ही मुतव्वफ़ आया और शोर मचा दिया कि तैयार हो जाओ, अरफ़ात के लिए अभी निकलना है। ऊँट वालों ने भी जल्दी जल्दी की रट शुरू कर दी। हज़रत सहारनपूरी रह० दो ख़ेमों के बीच तहज्जुद की नमाज़ में मसरूफ़ क़ुरान पाक पढ़ने में मशग़ूल थे। क्या मजाल है कि उनकी

मामूल में ज़र्रा बराबर भी कोई फ़र्क़ पड़ा हो। तवील क़याम और तादील अरकान के साथ तसल्ली से अपनी नमाज़ पूरी की। सलाम फेरने के बाद मुतव्वफ़ की तरफ़ मुतवज्जेह हुए और गुस्से से फ़रमाया कि तुमने वादा कर रखा था कि सुन्नत के ख़िलाफ़ किसी काम के लिए न कहोगे फिर सूरज निकलने से पहले चलने के लिए कहने का तुम्हें कोई हक़ नहीं। कहने लगा कि क्या करूं ऊँट वाले नहीं मानते और ये ऊँट लेकर चल दिए तो हज फ़ौत हो जाएगा। लिहाज़ा सुन्नत की ख़ातिर फ़र्ज़ को ख़तरे में डालना तो कोई अच्छी बात नहीं है। इस पर हज़रत का गुस्सा और तेज़ हो गया। फ़रमाया हमने तुम्हें मुतव्वफ़ माना है कोई उस्ताद और पीर तो नहीं बना लिया। जाओ अपना काम करो हम तो सूरज निकलने से एक मिनट पहले नहीं उठेंगे। हम अपना माल और वक़्त ख़र्च करके इतनी मुश्किलों भरा सफ़र करके आते हैं ताकि सुन्नत के मुताबिक़ हज अदा करें तुम्हारे जमालों (ऊँट वालों) के ग़ुलाम बनने नहीं आते। ऊँट वालें को अपने ऊँटों पर इख़्तियार है। वे उनको ले जाएं, हमारे ऊपर उनको कोई इख़्तियार नहीं कि उठने पर मजबूर करें। तुमने बेवक़्त शोर मचाकर हमें परेशान किया और नमाज़ भी सही तरीक़े से पढ़ने नहीं दी। लिहाज़ा हम तुम्हें भी आज़ाद करते हैं तुम अपने दूसरे हाजियों को ले जाओ और हमें हमारे हाल पर छोड़ दो हम कोई लूले लुन्जे नहीं। अरफ़ात कोई इतनी दूर नहीं है। हम पैदल ही इन्शाअल्लाह सफ़र कर लेंगे लेकिन सुन्नत को नहीं छोड़ेंगे। (ख़ुत्बाते ज़ुलफ़क़ार 8/111-113)

इत्तिबाए नबवी में परेशानी का हल

एक बार फ़ैसलाबाद से एक औरत आई। मेरी बीवी ने मुझे कहा कि इसकी बात ज़रूर सुनें, बड़ी परेशान है और जब से आई है रो

रही है, उसको टाइम दिया। पर्दे में बैठकर बात करने लगी कि मेरा शौहर बड़ी मील का मालिक है, अमीर आदमी है, खुला पैसा है, शादी के साथ आठ सालों में कोई औलाद नहीं है मगर यह कोई परेशानी की बात नहीं है क्योंकि शौहर मेरे साथ खुशी की ज़िन्दगी गुज़ार रहा है। हम दोनों को इसकी वजह से कोई परेशानी नहीं है, क़िस्मत में हुई तो हो जाएगी नहीं तो जो अल्लाह को मन्ज़ूर, ख़ाविन्द मुझे बहुत चाहता है। मुहब्बतों वाली ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं। घर का सारा ख़र्च शौहर ने अपने ज़िम्मे लिया हुआ है, नौकरों का ख़र्चा, बावर्ची का ख़र्चा, गार्ड का ख़र्चा, माली का खर्चा ये तमाम खर्चे सब मेरा शौहर अदा करता है, गाड़ियाँ हैं, ड्राइवर हैं, कारें हैं, बहारें हैं, रोटी हैं, बोटी है। अल्लाह ने यूँ तो ज़िन्दगी में हर सहूलत दी है। मेरी परेशानी यह है कि मेरा शौहर मेरे ज़ाती ख़र्च के लिए हर महीने सिर्फ़ पचास हज़ार रुपए देता है। जिससे मेरे ख़र्चे पूरे नहीं होते। यह कहकर वह औरत रोने लग गई कि शायद मेरा जैसा परेशान दुनिया में कोई नहीं होगा। वह ऐसे ज़ार व क़तार रो रही थी जैसे किसी की वफ़ात पर कोई रोया करता है।

इस औरत को इस आजिज़ ने यह बात समझाई कि आपकी परेशानी ख़त्म होने वाली नज़र नहीं आती। आपका शौहर आपको पचास हज़ार रुपए के बजाए एक लाख रुपया माहाना भी देना शुरू कर दे फिर भी आपकी परेशानी ख़त्म नहीं होगी, दो लाख भी दे दे फिर भी ख़त्म नहीं होगी। पाँच लाख भी हर महीने दे दे फिर भी परेशानियाँ ख़त्म नहीं होंगी। वह बड़ी हैरान होकर कहने लगी कि पीर साहब! आप मुझे बात समझाएं क्योंकि मुझे तो कुछ समझ में नहीं आ रही कि आप क्या कह रहे हैं। आजिज़ ने कहा बीबी! जिस रास्ते से आप परेशानियों का हल ढूंढना चाहता उस रास्ते से परेशानियों का हल होता ही नहीं। कहने लगी चाहती तो हूँ कि परेशानियाँ ख़त्म हों।

आजिज़ ने कहा कि अगर आप चाहती हो तो अपनी ज़िन्दगी को शरिअत के मुताबिक़ ढालें, गुनाहों से ख़ाली ज़िन्दगी इख़्तियार करें, आपने गुनाहों से भरी ज़िन्दगी से अल्लाह तआला को नाराज़ कर लिया है। आइन्दा आप सुन्नत वाली ज़िन्दगी को अपना कर अपने ख़ालिक़ हक़ीक़ी को राज़ी कर लें। आप के माल में बरकत आएगी तो आपकी परेशानियाँ अपने आप दूर हो जाएंगी। आप कसरत मांग रही हैं कि वह पचास हज़ार देता है तो एक लाख देना शुरू कर दे लेकिन याद रखना कि फिर भी परेशानियाँ रहेंगी। ख़ैर आजिज़ ने यह बात कही तो अल्लाह तआला ने बात में बरकत रख दी। लिहाज़ा कहने लगी कि मैं सच्ची तौबा करना चाहती हूँ। आजिज़ ने उसको तौबा के कलिमात पढ़ाकर रुख़्सत किया। अल्हम्दुलिल्लाह तीन चार महीनों के बाद उसने फ़ोन के ज़रिए कहा कि अब तो मैं नमाज़ की पाबन्द हो गई हूँ, बुर्क़ा मैंने कर लिया है, टीवी छोड़ दिया है। वह औरत कहने लगी कि अब तो मैं अच्छी ख़ासी मौलवी बन गई हूँ लेकिन एक बात बड़ी अजीब है कि अब मेरे महीने के ख़र्चे पंद्रह हज़ार रुपए में पूरे हो जाते हैं और मेरी बाक़ी रक़म यतीमों और बेवाओं के ऊपर ख़र्च होती है।

छुरी से काटकर खाने वाले

मेरी एक दफ़ा मीटिंग थी जिसमें अमरीकन कम्पनी के तीन डायरेक्टर और जर्नल मैनेजर वग़ैरह थे। हम एक मेज़ पर बैठे खाना खा रहे थे। फ़क़ीर ने देखा कि वे अमरीकन लोग भी हाथ से खाना खा रहे हैं हालाँकि छुरी-काँटे एक तरफ़ रखे हुए थे। फ़क़ीर बहुत हैरान हुआ और पूछा कि आपने यह छुरी-काँटे इस्तेमाल नहीं किए? तो उन्होंने कहा हमें हाथों से खाना खाना पसन्द है। आज पहली बार चिट्टी चमड़ी वालों को देखा कि यह छुरी काँटे को छोड़कर इस तरह उंगलियों से खा रहे हैं। जब हम खाना खा चुके तो उन्होंने बाक़ायदा

सारी उंगलियो को बारी-बारी मुँह में लेकर साफ़ किया। फ़क़ीर ने उनसे सवाल किया कि आपने यह क्यों किया? तो वे कहने लगे कि यह नई तहक़ीक़ है कि जब इंसान उंगलियों से खाना खाता है तो उनके मसाम (खाल के सुराख़) से प्लाज़्मा निकलता है जिसको माइक्रो स्कोप की आँख से देखा जा सकता है और यह प्लाज़्मा खाने के साथ इंसान के मुँह में जाता है और हाज़मे में काम आता है। कहने लगे कि अब हम छुरी कांटों के बजाए उंगलियों से खाना पसन्द करते हैं। (ख़ुत्बाते ज़ुलफ़कार 1/202)

एक औरत का इस्लाम क़ुबूल करना

एक बार हम अमरीका में नमाज़ पढ़कर मस्जिद से बाहर निकले। सामने मेन रोड था। हम दो आदमी आपस में बातचीत कर रहे थे। सामने सड़क पर एक औरत तेज़ी के साथ कार चलाती हुई गुज़री लेकिन चंद मीटर जाकर उसने ब्रेक लगा दी। उसने गाड़ी मोड़ी और एक दो मिनट में उसने हमारे क़रीब आकर गाड़ी खड़ी कर दी। वहाँ पर आमतौर पर ऐसा होता है कि आदमी जिस मंज़िल पर जा रहा हो और उसके पास पूरा पता न हो तो उसे पूछने की ज़रूरत पेश आती है। चुनाँचे हमने सोचा कि मुमकिन है कि अमरीकन औरत रास्ता भूल गई हो और हम से कोई पता मालूम करना चाहती है।

इस आजिज़ ने अपने साथ वाले दोस्त से कहा कि आप जाएं और पूछें कि क्या आपको डायरेक्शन की ज़रूरत है?

जब उसने जाकर पूछा तो वह कहने लगी नहीं मैं तो अपने घर जा रही हूँ और घर की डायरेक्शन तो हर एक को आती है। हमें क्या पता कि अल्लाह तआला उसको दुनिया के घर के बजाए असली घर का रास्ता दिखाना चाहते हैं। उसने कहा मैं घर जा रही हूँ तो हमारे दोस्त ने पूछा कि फिर आपने यहाँ क्यों गाड़ी ब्रेक लगाई?

उसके जवाब में कहने लगी यह बंदा कौन है?

उसने कहा यह बंदा मुसलमान है।

वह कहने लगी कि इससे पूछो कि क्या यह मुझे मुसलमान बना सकते हैं? न नाम का पता न पते का पता सिर्फ़ नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की सुन्नतों को देखा और अल्लाह तआला ने उसके दिल में ऐसा असर डाल दिया कि वहीं गाड़ी में बैठे बैठे उसने कलिमा पढ़ लिया।

इस आजिज़ ने अपना रुमाल दे दिया जिसको उसने अपना दुपट्टा बना लिया और फिर अपने घर को रवाना हो गई, सुब्हानअल्लाह।

(ख़ुत्बाते ज़ुलफ़्क़ार 7/115)

بسم الله الرحمن الرحيم

﴿يايها الذين آمنوا اتقوا الله و كونوا مع الصادقين.﴾

सोहबते शेख़

निगाहे वली में वह तासीर देखी
बदलती हज़ारों की तक़दीर देखी

قال را بگذار مرد حال شو	پیش مرد کامل پامال شو
صد کتاب و صد ورق در نار کن	جان و دل را جانب دلدار کن

सोहबते शेख़

सोहबते नबवी की फ़ज़ीलत

इमाम शाफ़ई रह० से किसी ने सवाल पूछा कि हज़रत! सैय्यदना अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु का दर्जा बड़ा है या उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० का। उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० बाद के दौर के थे, आदिल ख़लीफ़ा थे जबकि हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में बड़ी लड़ाइयाँ रहीं और इन्हीं जंगों की वजह से हालात पुरअमन न थे। इसलिए उस आदमी ने इन दो शख़्सियतों के बारे में सवाल किया। इमाम शाफ़ई रह० ने ऐसा जवाब दिया जो सोने की रोशनाई से लिखने के क़ाबिल है। फ़रमाया, जब हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हमराह जिहाद के लिए निकले और उनके घोड़े के नथनों में जो गर्द व मिट्टी जा पड़ी, उमर अब्दुल अज़ीज़ रह० से उस मिट्टी का रुत्बा भी बड़ा है। (ख़ुत्बाते ज़ुलफ़क़ार 3/208)

हज़रत गंगोही रह० हज़रत हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की रह० की सोहबत में

हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही रह० हज़रत इमादुल्लाह मुहाजिर मक्की रह० की ख़िदमत में पहुँचे और कहने लगे कि हज़रत अवराद व अशग़ाल का काम तो हम से होता नहीं। हज़रत रह० ने फ़रमाया कि अच्छा न करना मगर हम यह कहते है कि तीन दिन और तीन रातें यहाँ ठहर जाओ। कहने लगे हज़रत ठीक है। तीन रातें ठहरूँगा मगर तहज्जुद में मुझ से उठा नहीं जाएगा, जी करेगा तो

उठूंगा वरना नहीं। हज़रत हाजी साहब रह० ने फ़रमाया यह भी ठीक है। शागिर्द को फ़रमाया कि रशीद अहमद की चारपाई मेरी चारपाई के क़रीब डाल देना।

रात को हाजी साहब रह० उठे *"ला इलाहा इल्लल्लाह"* का विर्द करना शुरू कर दिया। हज़रत गंगोही रह० फ़रमाते हैं कि मेरी आँख खुली। मुझे इतना मज़ा आया कि मैंने भी उठकर तहज्जुद पढ़ी और पास बैठकर *"ला इलाहा इल्लल्लाह"* की ज़र्ब लगानी शुरू कर दी। तीन दिन के लिए रुके थे, तीस दिन तक ठहरे रहे। जब वहाँ से रुख़्सत होने लगे तो हज़रत हाजी साहब रह० ने उनको इजाज़त व ख़िलाफ़त अता फ़रमा दीं यह है सोहबत व ज़िक्र का असर और फ़ायदा कि चंद दिनों में खिलअते ख़िलाफ़त से सरफ़राज़ हो गए।

जिगर मुरादाबादी हज़रत थानवी रह० की सोहबत में

शायरों में जिगर मुरादाबादी एक अज़ीम शायर थे। उनकी इब्तिदाई ज़िन्दगी बड़ी ग़फ़लत वाली थी। ख़ूब पीते थे। वह मयनोश न थे बिलानोश थे। मुशायरों में कहीं हज़रत ख़्वाजा अज़ीज़ुल हसन मज्ज़ूब के साथ मिलना हुआ जो हज़रत थानवी रह० के ख़लीफ़ा मजाज़ थे। उस वक़्त हज़रत मज्ज़ूब तालीम के महकमे कलक्टर के तौर पर काम कर रहे थे इतनी अच्छी दुनियावी तालीम थी मगर क्योंकि घुंडी खुल चुकी थी लिहाज़ा दरवेशी ग़ालिब थी। ऐसे ऐसे अश्आर कहे जैसे मोतियों को उन्होंने माला में पिरो दिया हो।

उस्ताद जिगर उनकी फ़क़ीराना ज़िन्दगी से बड़े मुतास्सिर हुए। एक दफ़ा जिगर साहब कहने लगे जनाब! आप से मिस्टर की 'टर' कैसे 'मिस' हुई? उन्होंने कहा थानाभवन जाकर। (जिगर साहब ने कहा) कभी मैं भी जाऊँगा? हज़रत ने फ़रमाया बहुत अच्छा। अब

हज़रत ख़्वाजा अज़ीज़ुल हसन मज्ज़ूब रह० ने मेहनत करना शुरू कर दी। सादिक़ीन की सोहबत के बारे में तफ़सीलात बताना शुरू कर दीं। एक दफ़ा उन्होंने पूछा। सुनाइए हज़रत! क्या हाल है? हज़रत ख़्वाजा साहब रह० ने अजीब अश्आर सुना दिए फ़रमायाः

पेंशन हो गई है क्या बात है अपनी
अब दिन भी अपना और रात भी अपनी

अब और ही कुछ मेरे दिन रात का आलम
हर वक़्त ही रहता है मुलाक़ात का आलम

जब उन्होंने यह अश्आर सुने तो दिल में सोचने लगे कि उनके दिल में मुहब्बते इलाही इतनी भरी हुई है तो इनके शेख़ के दिल का आलम क्या होगा। लिहाज़ा कहने लगे थाना भवन जो जाऊँगा लेकिन मेरी एक शर्त है। फ़रमाया वह कौन सी? कहने लगे कि वहाँ जाकर भी पियूँगा। यह मेरी आदत है इसे छोड़ नहीं सकता। हज़रत मज्ज़ूब रह० ने फ़रमाया, मैं हज़रत से पूछूँगा। पीर व मुर्शिद की ख़िदमत में हाज़िर होकर पूछा कि हज़रत! एक बंदा बड़े काम का है, आना भी चाहता है मगर शर्त लगाता है कि यहाँ आकर भी पियूँगा। हज़रत ने फ़रमाया कि भाई! ख़ानक़ाह अवामी जगह है यहाँ पर तो इस बात की इजाज़त नहीं दी जा सकती क्योंकि शराब तो गुनाह की चीज़ है। अलबत्ता मैं उसे अपने घर में मेहमान की हैसियत से ठहरा लूँगा क्योंकि मेहमान को अपनी हर आदत पूरी करने की इजाज़त है, काफ़िर को भी मेहमान बना सकते हैं। लिहाज़ा जिगर साहब वहाँ तैयार होकर पहुँच गए। वहाँ जाकर पीना तो क्या हज़रत के चेहरे को देखते ही बात दिल में उतर गई। कहने लगे हज़रत तीन दुआएं करवाने आया हूँ। हज़रत रह० ने पूछा कि वह कौन सी? कहने लगे पहले यह दुआ कीजिए कि मैं पीना छोड़ दूँ। हज़रत ने दुआ फ़रमा

दी, दूसरी यह दुआ कीजिए की मैं दाढ़ी रख लूँ, हज़रत ने यह भी दुआ फ़रमा दी। तीसरी दुआ कीजिए कि मेरा ख़ात्मा ईमान पर हो जाए। हज़रत ने यह दुआ भी फ़रमा दी, सुब्हानअल्लाह।

सोहबत और शेख़ की तवज्जोह रंग लाती रही। चुनाँचे इसी मुहब्बत व अक़ीदत के साथ हज़रत रह० से बैअत का ताल्लुक़ क़ायम कर लिया। जब वापस हुए तो ज़िन्दगी बदलना शुरू हो गई।

मैख़ाने से ख़ान-ए-ख़ुदा तक

एक बार बैठे हुए थे कि दिल में ख़्याल आया कि न पियूँगा तो क्या होगा? अगर मैंने अल्लाह को नाराज़ कर दिया और नफ़्स को ख़ुश कर लिया तो क्या फ़ायदा होगा। चुनाँचे ऐसे ही बैठे बैठे पीने से तौबा कर ली चूँकि बहुत अरसे से पी रहे थे। इसलिए बीमार हो गए। हस्पताल गए। डॉक्टरों ने कहा कि एकदम तो छोड़ना ठीक नहीं, थोड़ी सी पी लें वरना मौत आ जाएगी। पूछने लगे थोड़ी सी पी लूँ तो कितनी लम्बी हो जाएगी? उन्होंने कहा दस पंद्रह साल। कहने लगे दस पंद्रह साल के बाद भी तो मरना है। बेहतर है कि अभी मर जाऊँ ताकि मुझे तौबा का सवाल मिल जाएगा। लिहाज़ा पीने से इन्कार कर दिया। इसी दौरान एक बार अब्दुर्रब नश्तर से मिलने गए माशाअल्लाह वह उस वक़्त वज़ीर थे। उनका तो बड़ा प्रोटोकाल था। यह उनसे मिलने गए तो चौकीदार ने समझा कि कोई मांगने वाला फ़रियाद लेकर आया होगा चुनाँचे उसने कहा मियाँ! जाओ वह मसरूफ़ हैं। उन्होंने कहा अच्छा, अपने पास से काग़ज़ का एक छोटा सा टुकड़ा निकाला और उस पर एक मिसरा लिखकर अब्दुर्रब नश्तर को भेजा क्योंकि वह भी साहिबे ज़ौक़ थे अजीब मिसरा लिखा :

नश्तर से मिलने आया हूँ मेरा जिगर तो देख

कहना यह देखिए क्या ही उस्तादाना बात कही। जब वह काग़ज़ का पुर्ज़ा वहाँ गया तो अब्दुर्रब नश्तर उस पुर्ज़े को लेकर बाहर निकल आए। कहा, जनाब! आप तशरीफ़ लाए हैं और अन्दर ले गए। बिठाया और हाल पूछा चुनाँचे बताया कि ज़िन्दगी का रुख़ बदल लिया है। थोड़े अरसे के बाद चेहरे पर सुन्नत सजा ली। लोग उन्हें देखने के लिए आए तो उन्होंने इस हालत पर भी शे'र लिख दिया। अब क्योंकि तबियत से तकल्लुफ़ात ख़त्म हो गए थे, सादगी थी। इसलिए सीधी-सीधी बात लिख दी, फ़रमाया :

चलो देख आएं तमाशा जिगर का
सुना है वह काफ़िर मुसलमान हुआ है

शेख़े कामिल की सोहबत से जिगर पर फिर ऐसी वारदात होती थीं कि आरिफ़ाना शे'र कहना शुरू कर दिए। चुनाँचे एक वह वक़्त भी आया कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उनको बातिनी बसीरत अता फ़रमा दी। एक ऐसा शे'र लिखा जो लाख रुपए से भी ज़्यादा क़ीमती है। इस सारी तफ़सील सुनाने का मक़सद भी यही शे'र सुनाना है जो इस आजिज़ को भी पसंद है। यह शे'र याद करने के क़ाबिल है:

मेरा कमाल इश्क़ में इतना है बस जिगर
वह मुझ पे छा गए मैं ज़माने पे छा गया

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़क़ार 3/59)

हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद हसन रह० हकीमुलउम्मत रह० की सोहबत में

जामिया अशरफ़िया लाहौर के बानी हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद हसन साहब अमृतसरी रह० हज़रत थानवी रह० के बड़े ख़लीफ़ाओं में थे। उन्होंने जब दारुलउलूम से पढ़ा तो वहीं पढ़ाने भी लग गए। हत्ताकि

हदीस के सबक़ भी मिल गए। अब जो उस्ताद दारुलउलूम में हदीस का उस्ताद हो उनका इल्मी मक़ाम क्या होगा। उनके दिल में बड़ी चाहत थी कि मैं हज़रत थानवी रह० से बैअत हो जाऊँ। इस बारे में कई बार ख़त लिखे। हज़रत हमेशा यही जवाब में फ़रमाते कि मुफ़्ती साहब! बैअत में असल मक़सद तो मुहब्बत व अक़ीदत है, वह आपको पहले से ही हासिल है तो बैअत करना कोई ज़रूरी नहीं है। चुनाँचे टाल देते। फिर ख़त लिखते फिर टाल देते, इधर से इसरार उधर से इंकार। मुफ़्ती साहब के दिल में फिर वलवला उठता कि मैं बैअत की निस्बत हासिल करूं। अगर कभी इज़्हार करते तो हज़रत यही जवाब इर्शाद फ़रमाते। मुफ़्ती साहब फ़रमाते हैं कि एक दफ़ा थाना भवन हाज़िर हुआ कि मैंने हज़रत रह० से बैअत हुए बग़ैर वापस नहीं आना। मैं तो उनका ग़ुलाम बनना चाहता था। मैं चाहता था कि रोज़े क़ियामत हज़रत के ख़ादिमों और ग़ुलामों की फ़हरिस्त में मेरा नाम शामिल कर लिया जाए। यह सोचकर मैं वहाँ पहुँचा और हज़रत की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि हज़रत! आप मुझे बैअत फ़रमा लें। हज़रत ने वही पुराना जवाब दिया कि मुफ़्ती साहब! बैअत तो कोई ज़रूरी तो नहीं। फ़रमाते हैं कि मैंने फिर अर्ज़ किया। हज़रत अक़्दस थानवी रह० ने भी देखा कि मुफ़्ती साहब तो डट गए हैं तो हज़रत फ़रमाने लगे मुफ़्ती साहब! तीन शर्त हैं बैअत होने के लिए, आपको वे तीन शर्तें पूरी करना पड़ेंगी।

आज के दौर में अगर किसी से कहा जाए कि बैअत होने के लिए ये शर्तें हैं तो वह मुरीद कहेगा कि जी यह तो बड़े घमंडी पीर हैं, बैअत ही नहीं करते, देखा जी हम घर से बैअत होने के लिए चलकर आए हैं और पीर साहब ने आगे बैअत ही न किया। यह कभी नहीं सोचेंगे कि हमारी तंबीह होगी, हमारा इलाज होगा, हमारे नफ़्स को दवा पिलाई जाएगी, नहीं बल्कि आज अव्वल तो पीरों के पास आते

ही नहीं और जब कभी आते हैं तो पहले आकर हालात बताते हैं और फिर उनके जवाबों का मशवरा भी देते हैं कि गोया यूँ कह रहे हैं कि हज़रत मैं आपको यह मशवरा देता हूँ कि हमें यह मशवरा न दें। आजकल के मुरीदों का यह हाल है। हज़रत ने फ़रमाया, मुफ़्ती साहब! आपको तीन शर्तें पूरी करना पड़ेंगी। उन्होंने कहा हज़रत! मैं पूरी करने के लिए तैयार हूँ। फ़रमाया पहली शर्त तो यह है कि आप पंजाबी ज़बान बोलते हैं। आमतौर से इस ज़बान के बालने से हरुफ़ के मख़ारिज बिगड़ जाते हैं जब तक सीखे न जाएं। लिहाज़ा आप किसी अच्छे क़ारी से तजवीद व क़िरात का फ़न सीखें हत्ताकि मसनून क़िरात के साथ आप पाँचों नमाज़ें पढ़ा सकें। अर्ज़ किया हज़रत मैं हाज़िर हूँ।

दूसरी शर्त की तफ़सील बताते हुए फ़रमाया कि मुफ़्ती साहब! आपने फ़लाँ फ़लाँ किताबें एक ग़ैर-मुक़ल्लिद आलिम से पढ़ी हैं और ग़ैर-मुक़ल्लिदयत के जरासीम आसानी से ज़हन से नहीं निकलते, आप ये किताबे दारुल उलूम में तलबा के साथ बैठकर उस्तादों से पढ़ें। शर्त देखा क्या लगाई। यह भी तो कह सकते थे कि आप तन्हाई में किसी से पढ़ लें मगर नहीं बल्कि फ़रमाया जिस दारुलउलूम में आप उस्ताद हदीस हैं उसी दारुलउलूम के तलबा के हमराह जमात में बैठकर उस्ताद से उसी तरह पढ़ें जिस तरह तलबा पढ़ते हैं ताकि सही अक़ीदा रखने वाले उस्तादों से पढ़ने की वजह से ग़ैर-मुक़ल्लिदयत के असरात निकल जाएं। मैंने कहा हज़रत मुझे यह मंज़ूर है। तीसरी शर्त यह है कि मुझे इजाज़त दें कि मैं पर्दे में आपकी बीवी का क़सम देकर आपकी निजी ज़िन्दगी के बारे में कुछ बातें पूछ सकूँ। मैंने अर्ज़ किया हज़रत मुझे यह भी मंज़ूर है।

जब यह बात नक़ल की तो हज़रत फ़रमाने लगे कि हज़रत रह०

ने तो तीन शर्तें लगायी थीं अगर चौथी शर्त यह भी लगा देते कि रोज़ाना दोपहर तक तुमने बैतुलख़ला की बदबूदार और गंदगी की जगह पर बैठना है तो मैं इस शर्त को भी क़ुबूल कर लेता क्योंकि मैं अपने अंदर की बदबू से छुटकारा पाना चाहता था। जब सारी शर्तें पूरी करके दिखा दीं तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उनके लिए निस्बत के रास्ते हमवार फ़रमा दिए, अल्लाहु अकबर।

सोहबते शेख़ में नमाज़ की कैफ़ियत ही कुछ और

शाह इस्माईल शहीद रह० ने कए बार सौ रक्अतें सिर्फ़ इसलिए पढ़ीं ताकि अल्लाह के ग़ैर के ख़्याल से अल्लाह की नमाज़ अदा कर सकें मगर उन्हें हर दफ़ा कोई न कोई ख़्याल आ जाता। सौ रक्अतें अदा करने के बाद बहुत फ़िक्रमंद हुए कि मैंने सौ नफ़्लें भी पढ़ीं मगर दो रक्अत भी ऐसी न पढ़ सका जिसमें बाहर का कोई ख़्याल न आया हो। लिहाज़ा सैय्यद अहमद शहीद रह० की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, हज़रत! मैंने सौ रक्अतें इस नीयत से पढ़ीं कि मुझे कम से कम दो रक्अत ऐसी नसीब हो जाएं जिसमें किसी ग़ैर के बारे में कोई ख़्याल न आए मगर मुझे हर दफ़ा कोई न कोई ख़्याल आता रहा। अब मैं परेशान हूं कि मेरी नमाज़ कैसे बनेगी। शाह साहब ने फ़रमाया कि अच्छा तुम तहज्जुद हमारे साथ खड़े होकर नमाज़ पढ़ लेना। लिहाज़ा शाह इस्माईल शहीद रह० ने सैय्यद अहमद शहीद रह० के मुसल्ले के क़रीब आकर तहज्जुद की नीयत बाँध ली। उनकी सोहबत का यह असर था कि अभी पहली रक्अत का सज्दा अदा नहीं किया था कि उनकी तबियत में रिक़्क़त तारी हो गई। फिर वह इतना रोए कि उनके लिए नमाज़ का सलाम फेरना भारी हो गया। सौ रक्अतें अपने तौर पढ़ीं तो कुछ न बना और शेख़ के पास आकर दो रक्अत की नीयत बाँधी तो ऐसा गिरया तारी हुआ कि

सलाम फेरना मुश्किल हो गया तो यह हज़रात ज़िन्दगी के आमाल को बनाना सिखाते हैं।

सोहबत से फ़ैज़ और गुनाह से नफ़रत

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ख़िदमत में एक नौजवान आया। उसने बिला वास्ता आकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी मुझे ज़िना की इजाज़त दीजिए। इसके जवाब का तरीक़ा तो यह था कि अल्लाह के नबी गुस्से में आ जाते कि तुम हराम को हलाल करवाने आ गए। तुम्हें शर्म नहीं आती लेकिन नहीं बल्कि अल्लाह के महबूब ने इर्शाद फ़रमाया, क्या तुम चाहते हो कि कोई तुम्हारी वालिदा से यह हरकत करे? कहने लगा नहीं। पूछा बीवी से करे? कहने लगा नहीं, बहन से करे? कहने लगा नहीं। बेटी से करे? कहने लगा नहीं। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि तुम जिससे ज़िना करोगे वह या तो किसी की माँ होगी या किसी की बीवी होगी या किसी की बहन होगी या किसी बेटी होगी। अगर तुम यह पसंद नहीं करते तो दूसरे लोग भी तो इसे पसंद नहीं करते। जब इतना समझाया तो उसके ज़हन में बात आ गई। लेकिन सिर्फ़ समझाने से बात समझ में नहीं आती क्योंकि दिल के अंदर जज़्बात का तूफ़ान होता है। अक़्ल समझ भी ले तो क्या फ़ायदा जब तक जज़्बात क़ाबू में न आएं। इसके लिए अल्लाह के नबी ने फिर नुस्ख़ा आज़माया। नुस्ख़ा यह था कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस नौजवान के सीने पर हाथ रखा और फ़रमाया ऐ अल्लाह इस नौजवान के दिल को पाक फ़रमा दीजिए। वह फ़रमाते हैं कि मेरे सीने पर हाथ रखने से और इस दुआ की बरकत से मेरे दिल पर ऐसा असर हुआ कि उसके बाप मुझे जितनी नफ़रत ज़िना से थी उनती नफ़रत मुझे दुनिया में किसी गुनाह से नहीं थी। यह क्या था? यह फ़ैज़ था जो नबी अलैहिस्सलातु

वस्सलाम से उस सहाबी के सीने में मुन्तक़िल हुआ। अल्लाह वाले जो सीने से लगाते हैं यह भी एक सीने से दूसरे सीने में मुन्तक़िल होने का ज़रिया है। (ख़ुत्बाते ज़ुलफ़्क़ार 10/221)

हर मकान में दो ऐब तो फिर हम में

एक बादशाह ने बड़ी चाहत से एक महल बनवाया। तामीरी काम के लिए अपने ख़ज़ाने के दरवाज़े खोल दिए। जो चीज़ उसे महसूस हुई कि अच्छी नहीं बनी तो उसे दोबारा अच्छा बनवाया। हत्ताकि बादशाह की नज़र में महल इतना ख़ूबसूरत था कि उसमें कोई भी कमी न बची थी। बादशाह ने अपनी रिआया में ऐलान आम करवा दिया कि जो कोई इस महल में कमी निकालेगा मैं उसका ईनाम दूँगा। लोग आते, महल को देखते, उन्हें महल में कोई नज़र नहीं आता। लिहाज़ा कई दिन इस तरह गुज़र गए। लोग आकर देखते रहे और वापस जाते रहे। किसी की हिम्मत न थी कि बादशाह के बनाए हुए महल में कोई नुक़्स निकालता। एक अल्लाह वाले का इधर से गुज़र हुआ। उन्होंने बादशाह की यह बात सुनी। वह भी महल देखने के लिए आए। महल देखने के बाद बादशाह के सामने पेश हुए और कहने लगे बादशाह सलामत इसमें दो ऐब हैं। एक यह कि यह महल हमेशा नहीं रहेगा, एक न एक दिन ख़त्म हो जाएगा दूसरा ऐब यह है कि तू भी इसमें हमेशा नहीं रहेगा। एक न एक दिन तुझे भी महल तुझे भी महल छोड़ना पड़ेगा। जिस तरह लोगों को यह ऐब नज़र न आया बल्कि अल्लाह वाले को नज़र आया उसी तरह अंदर के ऐब भी ख़ुद नज़र नहीं आता, शेख़ और वली की पहचानने परखने वाली निगाह से ऐब मालूम हो जाता है और वह उसकी इस्लाह कर देते हैं।

(ख़ुत्बाते ज़ुलफ़्क़ार 1/142)

शेख़ की सोहबत में तेल-बत्ती ठीक करके जाओ

शेख़ शहाबुद्दीन सहरवर्दी रह० के पास एक आदमी आया। हज़रत रह० ने उसे एक दिन अपने पास रखा। तवज्जेहात दीं और दूसरे दिन उसको इजाज़त व ख़िलाफ़त दे दी। जो लोग सालों से रह रहे थे वह कहने लगे हज़रत! हम तो आपकी ख़िदमत में कई-कई साल से मौजूद हैं लेकिन आपकी मेहरबानी इस पर हो गई। हज़रत रह० ने फ़रमाया, हाँ वह अपने तेल और बत्ती को ठीक करके आया था। मैंने तो सिर्फ़ उसके चिराग़ को रोशन किया है। आजकल के सालिक तो ऐसे हैं कि ये कहते हैं कि तेल भी पीर डाले और बत्ती भी पीर लाए। हमारा यह एहसान काफ़ी है कि हमने बैअत कर ली।

अब्दुल क़ुद्दूस गंगोही रह० की बातचीत का असर

हज़रत अब्दुल क़ुद्दूस गंगोही रह० के बेटे इल्म हासिल करके फ़ारिग़ होकर घर आए तो एक महफ़िल में हज़रत ने फ़रमाया कि बेटा यह सालिकीन की जमाअत तुम्हारे साथ बैठी है। इन्हें कुछ नसीहत करो। बेटे ने उलूम व माआरिफ़ से भरपूर वाअज़ किया मगर लोग टस से मस न हुए। आख़िरकार हज़रत ने फ़रमाया फ़क़ीरो! कल हमने दूध रखा था कि सहरी करेंगे मगर बिल्ली आई और उसे पी गई। बस यह बात सुनते ही सब लोग दहाड़े मार मारकर रोने लग गए। महफ़िल के ख़त्म पर घर पहुँचे तो हज़रत ने बेटे से फ़रमाया कि बेटा तुमने इतना अच्छा बयान किया मगर किसी के कान पर जूँ तक न रेंगी। मैंने आम बात कही तो लोगों पर गिरया तारी हो गया। बेटे ने कहा अब्बा जान! यह तो आप ही समझ सकते हैं। हज़रत ने फ़रमाया कि जब दिल सोज़े इश्क़ से भरा हो तो ज़बान से निकली हुई हर बात में असर होता है। (ख़ुत्बाते ज़ुल्फ़ुक़ार 9/74)

इश्क़ ने आबाद कर डाले हैं दश्त व कोहसार

हज़रत शाह अब्दुल क़ादिर रह० की निगाह में तासीर

अल्लाह वालों की निगाह जिस पर पड़ जाती है उस चीज़ पर भी असर हो जाया करता है। हज़रत शैख़ुल हदीस रह० ने एक अजीब वाक़िआ लिखा है, फ़रमाते हैं कि शाह अब्दुल क़ादिर रह० ने एक बार मस्जिद फ़तेहपूरी देहली में चालीस दिन का ऐतिकाफ़ किया। जब बाहर दरवाज़े पर आए तो एक कुत्ते पर नज़र पड़ गई। ज़रा ग़ौर से देखा तो उस कुत्ते में ऐसा असर हुआ कि दूसरे कुत्ते उसके पीछे पीछे चलते। जहाँ जाकर बैठा दूसरे कुत्ते उसके साथ जाकर बैठे। हज़रत अक़्दस थानवी रह० ने जब यह वाक़िआ सुना तो हँसकर फ़रमाया कि वह ज़ालिम कुत्ता भी कुत्तों का पीर बन गया। देखा एक वली कामिल की नज़र एक जानवर पर पड़ी तो उसके अंदर यह कैफ़ियत पैदा हो गई अगर इंसान पर नज़र पड़ेगी तो उस इंसान के अंदर वह कैफ़ियत पैदा क्यों नहीं होगी। (ख़ुत्बाते ज़ुलफ़क़ार 3/75)

सोहबत के अनमोल मोती

इमाम ज़ैनुल आबिदीन रह० ने अपने बेटे बाक़र रह० को नसीहत करते हुए फ़रमाया, बेटा! चार आदमियों के पास न रहना, रास्ता चलते हुए उनके साथ थोड़ी देर के लिए भी न चलना। कहने लगे कि मैं बड़ा हैरान हुआ कि वह इतने ख़तरनाक हैं। पूछा कि वे कौन से आदमी हैं?

फ़रमाया, एक बख़ील कि उससे कभी दोस्ती न करना इसलिए कि वह तुझे ऐसे वक़्त धोका देगा जब तुझे उसकी बहुत ज़रूरत होगी। दूसरे झूठा आदमी कि वह दूर को क़रीब ज़ाहिर करेगा और क़रीब को दूर ज़ाहिर करेगा, तीसरा फ़ासिक़ आदमी क्योंकि वह तुझे एक लुक़्मे के बदले या एक लुक़्मे से भी कम में बेच देगा। कहते हैं

कि मैंने पूछा एक लुक़्मे में बेचना तो समझ में आता है एक लुक़्मे से भी कम में बेचने का क्या मतलब है? फ़रमाया कि वह तुम्हें एक लुक़्मे की उम्मीद पर बेच देगा और चौथा क़ता रहमी करने (रिश्ते तोड़ने) वाला कि मैंने क़ुरआन में कई जगह उस लानत देखी है। यह बाप की सोहबत के अनमोल मोती थे जो बेटे को मिल रहे थे। एक वक़्त वह था कि बाप अपने बेटों को नसीहत किया करते थे।

बुरी सोहबत का असर मौत के वक़्त

इमाम रब्बानी मुजद्दिद अलफ़ेसानी रह० फ़रमाते हैं कि एक आदमी मेरे पास आया जो किसी मेरे ताल्लुक़ वाले का क़रीबी अज़ीज़ था। वह बीमार हो गया, क़रीब था कि उसकी मौत आ जाए। वह ताल्लुक़ वाला बंदा मेरे पास आया और उसने बड़ी मिन्नत समाजत की कि हज़रत! आख़िरी वक़्त है तशरीफ़ लाएं और कुछ तवज्जेह की निगाह फ़रमाए। उसकी आख़िरत अच्छी बन जाएगी। फ़रमाते हैं कि मैं वहाँ गया, मैंने बहुत देर तक तवज्जेह दी मगर मैंने देखा कि उसके दिल की ज़ुलमत पर कोई फ़र्क़ न पड़ा। मैं बड़ा हैरान हुआ कि ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था। पहले तो जब अल्लाह तआला की मदद से मुतवज्जेह हुआ रब की रहमत ने मदद फ़रमाई और सालिकीन के दिलों के अंधेरों को दूर कर दिया। यह अजीब मामला था कि इतनी तवज्जेह भी की मगर उसके दिल पर ज़र्रा बराबर भी असर न हुआ। बे इख़्तियार अल्लाह तआला की तरफ़ मुतवज्जेह हुआ तो दिल में डाला गया कि आपकी तवज्जेह से यह ज़ुलमत दूर नहीं होगी इसलिए कि इस आदमी के काफ़िरों के साथ मुहब्बत के ताल्लुक़ात हैं काफ़िरों से मुहब्बत रखने की वजह से दिल पर ऐसी ज़ुलमत आई जो वक़्त के मुजद्दिद की तवज्जेहात से भी दूर न हो सकी।

(ख़ुत्बाते ज़ुलफ़ुक़ार 4/74)

ख़्वाहिशे नफ़्स की कोई हद नहीं

एक बादशाह के यहाँ बेटा नहीं था। उन्होंने अपने वज़ीर से कहा भाई! अपने बेटे को ले आना। अगले रोज़ वज़ीर अपने बेटे को लेकर आया। बादशाह ने उसे देखा और प्यार करने लगा। बादशाह ने कहा अच्छा बच्चे को आज के बाद रोने मत देना। (वज़ीर ने कहा) बादशाह सलामत! बच्चे की हर बात कैसे पूरी की जाएगी? बादशाह ने कहा इसमें कौन सी बात है? मैं सब को कह देता हूँ कि बच्चे को जिस जिस चीज़ की ज़रूरत हो उसे पूरा कर दिया जाए और इसे रोने न दिया जाए। वज़ीर ने कहा ठीक है जी, आप इस बच्चे से पूछें कि यह क्या चाहता है? चुनाँचे उसने कहा हाथी चाहिए। बादशाह ने एक आदमी को हुक्म दिया कि एक हाथी लाकर बच्चे को दिखाओ। वह हाथी लेकर आया। बच्चा थोड़ी देर तो खेलता रहा लेकिन बाद में फिर रोना शुरू कर दिया। बादशाह ने कहा अब क्यों रो रहे हो? उसने कहा एक सूई चाहिए। बादशाह ने कहा यह तो कोई ऐसी बात नहीं है लिहाज़ा एक सूई मंगावाई गई। उसने सूई के साथ खेलना शुरू कर दिया। थोड़ी देर के बाद उस बच्चे ने फिर रोना शुरू कर दिया। बादशाह ने कहा अरे अब क्यों रो रहा है? वह कहने लगा जी इस हाथी को सूई के सुराख़ में गुज़ारें। जिस तरह बच्चे की हर ख़्वाहिश पूरी नहीं की जा सकती इसी तरह नफ़्स की भी हर ख़्वाहिश पूरी नहीं की जा सकती। लिहाज़ा सवाल पैदा होता है कि इसका कोई ईलाज होना चाहिए। इसका ईलाज यह है कि इसकी इस्लाह हो जाए और इस्लाह का बेहतरीन व आज़माया हुआ तरीक़ा सोहबते शेख़ है। (ख़ुत्बाते ज़ुलफ़क़ार 9/206)

नफ़्सकशी के बग़ैर इस्लाह मुमकिन नहीं

एक शेख़ ने अपने किसी नौकर से कहा कि फ़लाँ आदमी के

पास से गुज़रे और कोई गंदगी लेकर उसके क़रीब से गुज़रना और देखना कि उसकी क्या हालत होती है? जब वह आदमी क़रीब से गुज़रा तो वह सूफ़ी साहब नाक मुँह चढ़ाकर कहने लगा तुम्हें नज़र नहीं आता कि मैं भी बैठा हुआ हूँ। शेख़ को पता चला तो फ़रमाया कि अभी काम बाक़ी है। कुछ अरसे के बाद फिर वह गंदगी लेकर क़रीब से गुज़रा तो अब यह ख़ामोशी के साथ बैठे रहे। उसने आकर कैफ़ियत बताई। हज़रत ने फ़रमाया, पहले से कुछ बेहतरी हो गई है मगर अब यूँ करना कि जब उसके क़रीब से गुज़रो तो कुछ गंदगी उसके ऊपर गिरा देना और फिर देखना कि क्या कहता है? उन्होंने क़रीब से गुज़रते हुए गंदगी ऊपर गिरा दी। सूफ़ी साहब ने ग़ुस्से की नज़र से देखा और कहा तुझे नज़र नहीं आता कि कोई बैठा हुआ भी है या नहीं। उसने जा बता दिया। हज़रत ने फ़रमाया कि हाँ अभी नफ़्स का साँप मरा नहीं। लिहाज़ा कुछ अरसे और मेहनत करवाई। फिर फ़रमाया कि आइन्दा सारी गंदगी उसके ऊपर डालकर देखना। लिहाज़ा उसने क़रीब से गुज़रते हुए इस तरह गंदगी गिराई कि सूफ़ी साहब पर गिरी। वह सूफ़ी साहब खड़े होकर उसके कपड़ों की गंदगी साफ़ करने लगे और कहने लगे आपको चोट तो नहीं लगी। उसने जाकर यही बात बता दी। शेख़ ने कहा अल्हम्दुलिल्लाह अब नफ़्स का साँप मर गया है, 'मैं' मिट चुकी है, अब अल्लाह तआला ने उनके अंदर आजिज़ी और इन्किसारी पैदा फ़रमा दी। लिहाज़ा उनको इजाज़त व ख़िलाफ़त अता फ़रमा दी। ऐसी मेहनत जिसको करवाने बाद शेख़ किसी से इम्तिहान ले और इम्तिहान में वह पूरा उतरे, इसको सुन्नत इस्लाह कहते हैं। (ख़ुत्बाते ज़ुलफ़क़ार 4/91)

एक सालिक की इस्लाह का निराला अंदाज़

हज़रत अक़्दस थानवी रह० ने वाक़िआ लिखा है कि एक सालिक

साहब अपने शेख़ के पास ज़िक्र सीखने के लिए आए। अल्लाह की शान कि वह औरत जो सफ़ाई करने के लिए आया करती थी वह अच्छी शक्ल की थी और वह सालेक साहब उसको देखा करते थे। उस औरत ने शेख़ को बता दिया कि जी यह जो आपका नया मेहमान है उसकी निगाहें बदली बदली हैं। जब उसने शेख़ को यह बात की तो क़ुदरतन उसको दस्तों की शिकायत हो गई और उसे उस दिन कई दफ़ा बैतुलख़ला मे जाना पड़ा।

अगले दिन उसकी बड़ी बुरी हालत थी लेकिन क्योंकि उसको काम पर जाना था इसलिए वह फिर आ गई। जब उसकी नज़र उस पर पड़ी तो देखा कि उसकी हड्डियाँ निकली हुई थीं और पहले वाली चमक नहीं थी। लिहाज़ा उसने देखते ही अपना चेहरा दूसरी तरफ़ कर लिया और उससे कहा ज़ल्दी से यहाँ से तू चली जा। उसने जाकर शेख़ से यह भी बता दिया। उन्होंने कहा बहुत अच्छा, अब तू चली जा। वह चली गई। अब उन्होंने उस (सालिक) को बुलवाया। जब वह आया तो शेख़ उससे फ़रमाने लगे कि मैंने तुझे इसलिए बुलवाया है कि आप अपने महबूब को जाकर देखा लीजिए। उसने कहा, हज़रत कहाँ? फ़रमाया बैतुलख़ला में। जब वह वहाँ गया तो देखा वहाँ गंदगी ही गंदगी है। वह कहने लगा हज़रत! बदबू आ रही है। फ़रमाने लगे कल वही औरत थी तो इसे ललचाई नज़रों से देख रहे थे और आज वही औरत है मगर वह लालच नहीं है। इसका मतलब यह है कि जिस चीज़ का तुझे लालच था वह उससे जुदा हो गई और वह यही गंदगी है। लिहाज़ा मालूम हुआ कि तुझे इस चीज़ से इश्क़ था। इसलिए हमने चाहा कि आपको अपने महबूब के साथ मिलवा दिया जाए।

(खुत्बाते जुलफ़्क़ार स० 183)

हज़रत हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की रह० का मक़ाम

हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह० से किसी ने एक बार कह दिया हज़रत! हाजी साहब को अल्लाह तआला ने इसलिए बड़ी शान अता फ़रमाई कि आप जैसे बड़े-बड़े उलमा उनसे बैअत हैं। हज़रत थानवी रह० यह सुनकर सख़्त नाराज़ हुए और फ़रमाया कि तुम्हारी अक़्ल उलटी है और तुमने उलटी बात कह दी। अरे हाजी साहब की शान हमारी वजह से नहीं बढ़ी बल्कि हाजी साहब की वजह से अल्लाह तआला ने हम लोगों की शान बढ़ा दी वरना (मौलाना) क़ासिम (साहब) को कौन पूछता और (मौलाना) रशीद अहमद गंगोही (साहब) को कौन पूछता। यह हाजी साहब की निस्बत की वजह से अल्लाह तआला ने उनको शान अता फ़रमा दी।

﴿الا بذكر الله تطمئن القلوب.﴾

ज़िक्रे-इलाही

ज़र्बें लगा के कलिमा तैय्यबा की बार बार
दिल पे लगा जो ज़ंग है उसको मिटाइए
मशग़ूल उस ज़ात में हों इस तरह
उसके सिवा हर एक को बस भूल जाइए

ज़िक्रे इलाही

कसरते ज़िक्र के आदी बनिए

अल्लाह के ज़िक्र की इतनी अहमियत है कि हज़रत इमामे आज़म रह० ने जब इमाम अबू यूसुफ़ को जस्टिस बनाकर भेजा तो उन्हें नसीहतें फ़रमायीं। उलमा जानते हैं कि "वसाया इमामे आज़म" के नाम से एक किताब भी मिलती है। देखें कि एक आदमी को चीफ़ जस्टिस का ओहदा मिल रहा है और उसका उस्ताद उसको नसीहतें कर रहा है। हिदायत देते हुए चाहिए तो यह था कि वह फ़रमाते उसूले फ़िक़्ह को सामने रखना, क़ुरआन व हदीस और इज्मा व क़यास पर नज़र रहे लेकिन इमामे आज़म रह० ने इमाम अबू यूसुफ़ रह० को फ़रमाया, "ऐ याक़ूब! तुम लोगों में बैठकर कसरत से ज़िक्र करना ताकि लोग तुमसे सीखकर ज़िक्र करें।"

हम याद करेंगे वह हमें याद करेंगे
यूँ ही दिल बर्बाद को आबाद करेंगे

उजड़े हुए दिल को मेरे आबाद करेंगे
बर्बादे मुहब्बत को न बर्बाद करेंगे

अल्लाह वालों के दिलों की क़द्र व क़ीमत क्यों

एक बार शाह वलिउल्लाह देहलवी रह० ने देहली की जामा मस्जिद में मिंबर पर खड़े होकर कहा था, ओ मुग़ल बादशाहो! तुम्हारे ख़ज़ाने हीरे और मोतियों से भरे हुए हैं लेकिन वलिउल्लाह के सीने में ऐसा दिल है कि तुम्हारे सारे ख़ज़ाने मिलकर भी इस दिल की क़ीमत नहीं बन सकते। इसलिए कि उसके दिल में अल्लाह समाया हुआ है,

उसके दिल में अल्लाह आया हुआ है बल्कि उसके दिल में अल्लाह छाया हुआ है, सुब्हानअल्लाह।

दो आदमियों की दिली कैफ़ियत

शेख़ शहाबुद्दीन सहरवर्दी रह० ने लिखा है कि मैं हज पर गया। मैंने वहाँ देखा कि एक आदमी ग़िलाफ़े काबा को पकड़कर दुआएं मांग रहा था। जब मैं उसकी तरफ़ मुतवज्जेह हुआ तो उसका दिल अल्लाह से ग़ाफ़िल था। वह इसलिए कि उसके साथ कुछ और लोग भी हज के लिए आए हुए थे। दुआ मांगते हुए उसके दिल में कैफ़ियत पैदा हो रही थी कि काश मेरे दोस्त मुझे देखते कि मैं कैसे रो रोकर दुआएं मांग रहा हूँ। वह आदमी यह अमल अल्लाह के लिए नहीं कर रहा था बल्कि दिखाने के तौर पर कर रहा था। फिर फ़रमाते हैं कि जब मैं मिना में आया और मैंने देखा कि एक नौजवान अपना माल बेच रहा था। फिर फ़रमाते हैं कि जब मैं उसके दिल की तरफ़ मुतवज्जेह हुआ तो मैंने उसका दिल एक लम्हे के लिए भी अल्लाह तआला की तरफ़ से ग़ाफ़िल नहीं पाया। यही मक़सूदे ज़िन्दगी है कि हम अपने कारोबार में हों या जहाँ कहीं भी हों, हमारा दिल हर वक़्त अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की याद में लगा हुआ हो यानी दस्त बकार दिल बयार। अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया,

رجال لا تلهيهم تجارة ولا بيع عن ذكر الله واقامة الصلوٰة وايتاء

الزكوٰة۔ يخافون يوم تتقلب فيه القلوب الابصار.

वह मर्द कि नहीं ग़ाफ़िल हुए सौदा करने में और न बेचने में अल्लाह की याद से और नमाज़ क़ायम रखने से और ज़कात देने से, डरते रहे उस दिन से जिस दिन उलट जाएंगे दिल और आँखें।

(ख़ुत्बाते ज़ुलफ़क़ार 9/52)

मुर्दा दिल की पहचान

एक आदमी हसन बसरी रह० के पास आया और कहने लगा हज़रत! पता नहीं हमें क्या हो गया है, हमारे दिल तो शायद सो गए हैं? हज़रत ने पूछा वह कैसे? कहा आप वाअज़ फ़रमाते हैं, क़ुरआन व हदीस बयान करते हैं मगर हमारे दिलों पर कोई असर नहीं होता। यूँ लगता है कि हमारे दिल सो गए हैं। हज़रत रह० ने फ़रमाया, भाई! अगर यह हाल है तो फिर यह न कहो कि दिल सो गए हैं बल्कि यूँ कहो कि दिल मर गए हैं। उसने कहा हज़रत दिल कैसे मर गए? फ़रमाया, भाई जो सोया हुआ हो अगर उसे झंझोड़ा जाए तो वह जाग उठता है और जो झंझोड़ने से भी न जागे वह सोया हुआ नहीं वह तो मोया होता है। क़ुरआन व हदीस जिसे सुनाई जाए और वह अगर फिर भी न जागे तो वह सोया हुआ नहीं बल्कि मरा हुआ होता है।

(ख़ुत्बाते ज़ुलफ़ुक़्क़ार 9/52)

दस्त बकार दिल बयार

अगर कोई साहब यह पूछें कि अल्लाह वाले अल्लाह तआला की याद से एक लम्हें के लिए भी ग़ाफ़िल नहीं होते। इसकी वज़ाहत करें तो उसके जवाब के लिए एक मिसाल अर्ज़ कर देता हूँ।

मान लो कि आपके भाई को गार्ड की ख़ाली असामी के लिए इंटरव्यू के लिए बुलाया गया जाए तो जैसे ही पता चलेगा सब घर वाले बैठकर मशवरा करते हैं और कहते हैं कि जब आपसे यह पूछें तो यह जवाब देना, जब यह पूछें तो यह कहना। जब इंटरव्यू देने के लिए जा रहा होगा तो आप उसे समझाएंगे कि ज़रा ख़्याल रखना, वक़्त पर पहुँचना। अब वह तो इंटरव्यू देने के लिए चला जाएगा लेकिन आप अपने दफ़्तर भी जा रहे होंगे और अपने भाई के लिए

दुआ भी कर रहे होंगे कि मेरा भाई ठीक-ठीक जवाब दे। यूँ आपका दिल गार्ड के दफ़्तर में अटका हुआ होगा। आप दफ़्तर में पहुँच जाएंगे मगर दिल में यही ख़्याल छाया रहेगा। आख़िर आप तो सोचेंगे कि अब तो टाईम हो गया होगा, मेरा भाई घर पहुँच गया होगा। फिर आप फ़ोन करेंगे, आप अपनी अम्मी से सब से पहले यही पूछेंगे कि भाई का क्या बना है? अगर आप आठ घंटे अपने भाई के सोच में गुज़ार सकते हैं तो अल्लाह वालों के दिल भी हर वक़्त अल्लाह की याद में रह सकते हैं। ये दुनिया के काम-काज भी करते हैं, खाते पीते भी हैं, सोते जागते भी हैं, चलते फिरते भी हैं मगर उनका दिल अल्लाह की याद से एक लम्हे के लिए भी ग़ाफ़िल नही रहता।

ज़िक्र में नक़्ल भी कुछ कम नहीं

अबू महज़ूरा रज़ियल्लाहु अन्हु एक सहाबी हैं। लड़कपन की उम्र है, इस्लाम क़ुबूल नहीं किया। कुछ और बच्चों के साथ बैठे हँसी मज़ाक़ कर रहे हैं और हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु जिस तरह अज़ान देते थे उनकी नक़्ल उतार रहे हैं। इधर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम गुज़रे। आपने भी देख लिया, सुन लिया, फ़रमाया, अबू महज़ूरा! बात सुनो। वह क़रीब आए, घबरा गए, पसीना पसीना हो गए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया डर नहीं, जैसे अज़ान दे रहा था वैसे ही अज़ान दे। लिहाज़ा उसने वैसे ही अज़ान देना शुरू कर दी। नक़्ल उतारना शुरू कर दी। पढ़ते पढ़ते "*अश्हदु अन्ना मुहम्मदुर्रसूलल्लाह*" अज़ान दी। अज़ान के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जाओ। कहने लगे अब अबू महज़ूरा कहा जाएगा, जहाँ आप जाएंगे, अबू महज़ूरा भी वहीं जाएगा। नक़्ल उतार रहे थे। मेरे आक़ा ने अज़ान सुन ली तो अल्लाह तआला ने नक़्ल को असल बना दिया। इन्हीं अबू महज़ूरा को अल्लाह के महबूब ने

हरम शरीफ़ की कुंजी देकर मौज़्ज़िन बना दिया। साठ साल तक हरम शरीफ़ में अज़ान देते रहे। अल्लाह तआला हमारी नक़ल को असल बना दे और हमारी सूरत को हक़ीक़त में तब्दील कर दे। (आमीन)

हर क़तरे से अल्लाह! अल्लाह!!

हज़रत शिबली रह० अल्लाह तआला की मुहब्बत में फ़ना हो चुके थे। किताबों में लिखा है कि एक मर्तबा उनको मजनूँ समझकर किसी ने पत्थर मारा जिसकी वजह से ख़ून निकल आया। एक आदमी देख रहा था। उसने जब ख़ून निकलता देखा तो कहा चलो में पट्टी बाँध देता हूँ। लिहाज़ा उसने बच्चों को डराया धमकाया और उनके क़रीब हुआ। वह देखकर हैरान हुआ कि जो क़तरा भी ख़ून का निकलता है वह ज़मीन पर गिरते ही अल्लाह का लफ़्ज़ बन जाता है। वह हैरान हुआ कि इस बंदे के रग व रेशे में अल्लाह तआला की कितनी मुहब्बत समाई होगी कि ख़ून का जो क़तरा भी गिरता है वह अल्लाह का लफ़्ज़ बन जाता है। इसके बाद उसने ज़ख़्म पर पट्टी बाँधी। कसरते ज़िक्र का असर रग व रेशे में समा जाता है और अंग अंग ज़ाकिर बन जाता है। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 7/127)

दिल की तवज्जेह के साथ ज़िक्रे ख़ुदा की बरकत

हमारे इलाक़े में हज़रत ख़्वाजा गुलमा हसन सवाग रह० नाम के एक मशहूर बुज़ुर्ग गुज़रे हैं। उनका एक बड़ा मशहूर वाक़िआ है। उस वाक़िए के सैकड़ों चश्मदीद गवाह मौजूद थे। एक जगह हिंदू और मुसलमान इकठ्ठे रहते थे। एक अमीर हिंदू हज़रत की तवज्जेह की बरकत से मुसलमान हो गया। हिंदुओं ने ख़्वाजा साहब के ख़िलाफ़ मुक़दमा दर्ज करा दिया कि ख़्वाजा साहब हिंदुओं पर जादू करके मुसलमान बना देते हैं। जज भी हिन्दू था हज़रत को जो पुलिस

गिरफ़्तार करके लाई वे भी सब हिन्दू थे। हज़रत जब जज के सामने पेश हुए, पुलिस और थानेदार नें हज़रत के गिर्द घेरा डाला हुआ था। जज ने हज़रत से पूछा कि तूने इस हिंदू को क्यों मुसलमान किया है? हज़रत ने फ़रमाया कि नहीं मैंने तो मुसलमान नहीं किया यह तो ख़ुद मुसलमान हुआ है। जज साहब ने इसरार किया कि नहीं तूने मुसलमान किया है। आख़िर हज़रत ने हिन्दू थानेदार की तरफ़ उंगली का इशारा करके फ़रमाया क्या इसको भी मैंने मुसलमान किया है, साथ ही लफ़्ज़े 'अल्लाह' के साथ क़ल्बी तवज्जेह दी तो वह फ़ौरन कलिमा पढ़ने लगा। अब दूसरे की तरफ़ इशारा किया तो वह भी कलिमा पढ़ने लगा। फिर इस तरह आप जिस हिंदू की तरफ़ भी इशारा करते वह मुसलमान हो जाता। यूँ वहाँ खड़े-खड़े पाँच हिंदुओं ने कलिमा पढ़ लिया। यह सूरते हाल देखकर जज दूसरे कमरे में चला गया कि कहीं मेरी तरफ़ भी उंगली का इशारा न हो जाए और वहीं हुक्म सुनाया कि ख़्वाजा साहब को बइज़्ज़त बरी किया जाता है। यह अब यहाँ से चले जाएं। सुब्हानअल्लाह! अल्लाह के नाम में बड़ी बरकत है मगर अफ़सोस कि हमें यह नाम लेना नहीं आता। सच्ची बात अर्ज़ करूं कि यह तो एक ख़ाली चैक है जो इस पर लिख सकते हो लिख दो। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 11/34)

कराटे कलब में अल्लाह! अल्लाह!!

मुलतान शहर में कोई कराटे का खिलाड़ी था बलैक बेल्ट। वह बैअत हुआ। वह भी कोई अजीब चीज़ थी। कहने लगा हज़रत मैंने बहुत मेहनत की है। हमने कहा वह कैसे? कहने लगा जी मैं आपको दिखाता हूँ। वह लेट गया और उसके पेट पर एक दो मन के बंदे ने दस बार छलांगें लगायी और आराम से नीचे पड़ा रहा और ऊपर दो मन का बंदा उछलकर छलांग लगा रहा है और वह आराम से पड़ा

हुआ है। फिर कहने लगा कि जी मैं यह भी कर सकता हूं और यह भी कर सकता हूं। कुछ अरसे के बाद मुलाक़ात हुई। पूछा कि भाई क्या हाल है? कहने लगा हज़रत मेरा कलब पूरे शहर के अंदर कराटे में सबसे बड़ा है और मैंने कालेज की लड़कियों को कराटे सिखाने के लिए एक ब्रांच खोली हुई थी। बैअत होने के बाद गया तो उस ब्रांच को तो मैंने बिल्कुल बंद कर दिया। यह पहली बात हुई। दूसरी बात यह कि मैंने अपने बच्चों का समझाया कि भाई हम एक दूसरे पर अटैक करते हैं और ज़बान से एक बेमानी से लफ़्ज़ निकालते हैं तो इसके बजाए हम अल्लाह का लफ़्ज़ क्यों न निकालें। उन्होंने कहा ठीक है। मैंने कहा कि तुम्हें अब फ़ाइट करनी है या अटैक करना है तो अल्लाह के लफ़्ज़ से अटैक करना। कहने लगा जब हमने 'अल्लाह' 'अल्लाह' से अटैक करना शुरू किया तो बाहर से गुज़रने वाले लोग समझने लगे कि अंदर कोई महफ़िले ज़िक्र हो रही है। लोग दरवाज़े पर जमा होकर कहने लगे कि हम भी महफ़िले ज़िक्र में आना चाहते हैं। उनको पता चला कि जनाब यहाँ तो कराटे सिखाए जाते हैं। बीवी तो बहुत परेशान थी कि लड़कियों की क्लास बंद हो गई, अब आमदनी कम हो जाएगी लेकिन जब नेक लोगों ने देखा कि यह नेक आदमी है हमारे बच्चे भी इससे सीख सकते हैं तो उन्होंने अपने बच्चे भी भेजने शुरू कर दिए। इस तरह लड़कियों की क्लास की तलाफ़ी हो गई। तो हमारे लड़कों की तादाद पहले से तीन गुनी हो गई। अल्लाह तआला ने रिज़्क़ में भी इज़ाफ़ा कर दिया। अब देखिए कि दिल में मुहब्बत इलाही आई तो फिर एक दूसरे के साथ खेलकूद में भी अल्लाह याद आएगा। यह मुहब्बत चीज़ ही ऐसी है। (तमन्नाए दिल स० 117)

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की ख़रीदार एक बुढ़िया भी

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की ख़रीदारी के लिए एक बूढ़ी औरत

"धागे की आटी" लेकर चल पड़ी थी। किसी ने पूछा कि अम्मा तुम कहाँ जा रही हो? कहने लगी, यूसुफ़ को ख़रीदने जा रही हूँ। उसने कहा अम्मा! उनके ख़रीदने के लिए बड़े बड़े अमीर आए हुए हैं, वक़्त के बड़े बड़े नवाब आए हुए हैं, उमरा आए हुए हैं, तू यूसुफ़ को कैसे ख़रीद सकेगी। कहने लगी मेरा दिल भी जानता है कि यूसुफ़ को मैं ख़रीद नहीं सकूँगी लेकिन मेरे दिल में एक बात है। वह कहने लगा कौन सी बात है? कहने लगी कल क़यामत के दिन जब अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त कहेंगे कि मेरे यूसुफ़ को ख़रीदने वाले कहाँ हैं तो मैं भी यूसुफ़ के ख़रीदारों में शामिल हो सकूँगी। इसी तरह मेरे दोस्तो! जब अल्लाह तआला हमारे असलाफ़ सालिहीन अपनी ज़िन्दगी की इतनी इतनी इबादतें पेश करेंगे तो हम भी ज़िन्दगी का थोड़ा सा क़ीमती वक़्त ही पेश कर दें कि या अल्लाह और कुछ न कर सके अलबत्ता रात की तन्हाई में कुछ घड़ी ज़िक्र कर लिया करता था और चन्द लम्हें आपके वली की सोहबत में बैठ जाया करता था।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 11/47)

हज़रत जरजानी रह० की वक़्त की हिफ़ाज़त करना

एक दफ़ा सिर्री सक़्ती रह० ने जरजानी रह० को सत्तू फांकते हुए देखा। उन्होंने पूछा अकेले सत्तू फांक रहे हैं रोटी ही पका लेते। उन्होंने कहा मैंने रोटी चबाने और सत्तू फांकने का हिसाब लगाया है तो रोटी चबाने में इतना वक़्त ज़्यादा ख़र्च होता है कि आदमी सत्तर बार सुब्हानअल्लाह कह सकता है। इसलिए पिछले चालीस साल से रोटी खाना छोड़ दी और सिर्फ़ सत्तू फांककर गुज़ारा करता हूँ। गोया सलफ़ सालिहीन अपनी ज़रूरतों के वक़्त को भी कम करके इबादतों में लगाया करते थे।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० की हसरत

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० अपनी जवानी पर एक ख़ूबसूरत औरत पर आशिक़ थे। एक रात उसने कहा कि मेरे घर के बाहर इन्तिज़ार करना मैं मुलाक़ात के लिए आऊँगी। आप सर्दी की लम्बी रात में जागते रहे और ठिठुरते रहे और इन्तिज़ार करते रहे। वह औरत वादे के मुताबिक़ मिलने के लिए नहीं आई। जब सुबह की अज़ान हुई तो आपके दिल पर चोट पड़ी। आपने सोचा कि मैं एक हसीना की ख़ातिर सारी रात जागता रहा और मुझे हसरत और अफ़सोस के सिवा कुछ न मिला। काश! मैं अल्लाह की याद में सारी रात जागता मुझे रहमत में से ज़रूर हिस्सा नसीब होता। बस आपने सच्ची तौबा की। इल्म हासिल करके ज़िक्रे सोहबत के साथ और तसफ़िया-ए-क़ल्ब (दिल की सफ़ाई) के मरहले से गुज़रे और आख़िरकार अमीरुल मुमिनीन फ़िल हदीस बने।

तासीरे ज़िक्र पर बू अली सीना का एतिराज़

ख़्वाजा अबुल हसन ख़रक़ानी रह० हमारे सिलसिले आलिया नक़्शबंदिया के बुज़ुर्ग थे। एक मर्तबा वह इस्मे आज़म के फ़ज़ाइल सुना रहे थे। उस वक़्त का मशहूर फ़लसफ़ी और हकीम बू अली सीना भी वहाँ पहुँच गया। आप फ़रमा रहे थे कि इस्मे ज़ात से इंसान की सेहत में बरकत, इंसान के अमल में बरकत, इंसान के रिज़्क़ में बरकत और इंसान की इज़्ज़त में बरकत होती है, अक़्ली बंदे तो अक़्ली होते हैं। लिहाज़ा उस बेचारे की अक़्ल भी फँस रही थी। उसने महफ़िल के ख़त्म पर हज़रत से पूछा कि जी इस एक लफ़्ज़ का ज़िक्र करने से इतनी तब्दीलियाँ आ जाती हैं। आपने फ़रमाया, "ऐ ख़र! तू चे दानी" यानी ऐ गधे तुझे क्या पता। अब जब मशहूर आदमी को मजमे के सामने गधा कहा तो उसके पसीने छूट गए!

हज़रत भी परखने वाले थे। लिहाज़ा उन्होंने उसके चेहरे से पसीना उतरते हुए देखा तो पूछा, हकीम साहब पसीना आ रहा है। कहने लगा हज़रत! क्या करूं, आपने भरे मजमे में लफ़्ज़ ही ऐसा कह दिया है। हज़रत ने फ़रमाया, हकीम साहब! मैंने भरे मजमे में एक लफ़्ज़ गधा कहा और उसकी वजह से तुम्हारे तन बदन में तब्दीलियाँ आ गयीं। क्या अल्लाह के लफ़्ज़ में इतनी तासीर नहीं कि वह बन्दे के दिल में तब्दीली पैदा कर दे।

ज़िक्र नाजाएज़ मुहब्बत को खुरच देता है

एक साहब शहज़ादी की मुहब्बत में गिरफ़्तार हुए। खुद भी हसीन व जमील थे और बादशाह के महल में काम करते थे। किसी न किसी ज़रिए से उसे शहज़ादी तक अपना पैग़ाम पहुँचा दिया। शहज़ादी ने भी उसके हुस्न व जमाल के तज़किरे सुन रखे थे। वह भी दिल दे बेठी। दोनों किसी वास्ते से एक दूसरे को पैग़ाम भेजते थे मगर महल में मुलाक़ात की कोई सूरत नज़र ही न आती थी। आख़िर शहज़ादी को एक तर्कीब सूझी। उसने अपने आशिक़ नामुराद को एक पैग़ाम भेजा कि बादशाह सलामत को नेक लोगों से बड़ी अक़ीदत है। अगर आप नौकरी छोड़कर शहर से बाहर एक डेरा लगाएं और कुछ अरसे नेकी और इबादत में मशग़ूल रहें हत्ताकि आपकी शोहरत हो जाए तो फिर मैं आपसे मिलने आ जाया करूंगी, किसी क़िस्म की रुकावट नहीं होगी। आशिक़े नामुराद ने महल की नौकरी को अलविदा कहा और शहर के बाहर एक जगह डेरा लगाया। शक्ल व सूरत सुन्नत के मुताबिक़ इख़्तियार कर ली। दिन रात ज़िक्र व शग़ल में मशग़ूल हो गया। कुछ अरसे के बाद लोगों में उसकी नेकी का ख़ूब चर्चा हुआ। शहज़ादी तो मौक़े की तलाश में थी। उसने बादशाह से इजाज़त ली, और दुआएं लेने के बहाने उस आशिक़े नामुराद से मिलने आई। डेरे

में पहुँचकर उसने सब लोगों को बाहर खड़ा कर दिया और खुद अकेली अंदर आ गई। आशिक़े नामुराद ने उसे देखा तो कहा ऐ बीबी बाहर चली जाओ। आप बग़ैर इजाज़त कैसे यहाँ आ गयीं। शहज़ादी ने याद दिलाया कि मैं वही हूँ जिसके हुस्न व जमाल पर आप लट्टू थे, तन्हाइयों में बैठकर आहें भरते थे, मुलाक़ात की ख़ातिर तड़पते थे। आज मैं आप से मिलने आई हूँ। मौक़ा ग़नीमत समझो। उसने मुँह फेरकर कहा बीबी वह वक़्त चला गया। मैंने तुम्हारी मुलाक़ात के लिए नेकी की रविश को इख़्तियार किया था मगर मेरा दिल अब शहंशाहे हक़ीक़ी की मुहब्बत से लबरेज़ हो चुका है मुझे तुम्हारी तरफ़ देखना भी गवारा नहीं। (इश्के इलाही स० 61)

अल्लाह! अल्लाह! की ज़र्ब से दिल की दुनिया ही बदल गई

हज़रत जुनैद बग़दादी रह० के ज़माने में एक बड़ा घमंडी आदमी था। उसके पास बहुत ज़्यादा माल व दौलत भी थी और ख़ूबसूरत बाँदिया भी थीं उसे अपने शबाब और शराब के कामों से फ़ुर्सत ही नहीं मिला करती थी। किसी ने उसके सामने हज़रत जुनैद बग़दादी रह० की नेकी का तज़्किरा कर दिया। वह कहने लगा अच्छा मैं उसकी आज़ामइश करता हूँ। चुनाँचे उसने अपनी बाँदियों में से जो सबसे ज़्यादा ख़ूबसूरत रश्के क़मर बाँदी थी। उसे बुलाया कि बन संवरकर उनके पास जाना और उनसे एक मस्अला पूछते हुए एकदम अपने चेहरे से नक़ाब हटा देना। मैं देखता हूँ कि वह तुम्हारी ख़ूबसूरती को देखकर भी गुनाह से बचता है या नहीं।

बाँदी बन-ठन कर हज़रत जुनैद बग़दादी रह० के पास पहुँची। वह उनके पास बैठकर मस्अला पूछने लगी और उसने अपने चेहरे से

नक़ाब हटा दिया और ख़ूबसूरत चेहरे और सरापा के साथ उनके सामने आई और मुस्करा दी। जुनैद बग़दादी रह० की नज़र अचानक उस पर पड़ गई। और आपकी ज़बान से फ़ौरन "अल्लाह" का लफ़्ज़ निकलला। यह 'अल्लाह' का लफ़्ज़ ऐसी तासीर रखता है कि उस बाँदी के दिल में पेवस्त हो गया। अब उसने शर्म की वजह से दोबारा नक़ाब ले लिया। जब वापस गई तो उसके दिल की दुनिया बदल चुकी थी। वह मालिक से जाकर कहने लगी, अब आपके साथ मेरा गुज़ारा नहीं हो सकता। मैंने 'अल्लाह' का लफ़्ज़ सुना है। इस लफ़्ज़ की वजह से मेरे दिल में अल्लाह की मुहब्बत मेरे दिल में ऐसी आई है कि अब मैं उसी की इबादत में ज़िंदगी गुज़ारूंगी। चुनाँचे वह दिन को रोज़ा रखती और रात को इबादत करती। और वह घमंडी आदमी अपने दोस्तों में बैठकर कहता था कि मैंने जुनैद बग़दादी रह० को क्या बिगाड़ा था कि उसने मेरी ख़ूबसूरत बाँदी को कुछ कर दिया कि अब वह मेरे काम की नहीं रही।

ज़र्बे इलाही की ताब हथकड़ी न ला सकी

दरबंद एक शहर का नाम है। एक तातारी शहज़ादा अपने गिरोह को लेकर पहुँचा और मुसलमानों वह शहर ख़ाली कर दिया। वह मुस्कराकर कहने लगा कि हमारी बहादुरी देखकर मुसलमान हमारा नाम सुनते ही शहर ख़ाली कर देते हैं और ख़ाली करके भाग जाते हैं। पुलिस ने उसे ख़बर दी जनाब शहर में अभी तक दो बंदे मौजूद हैं। एक सफ़ेद बालों वाले बूढ़े और एक उनका ख़ादिम लगता है और वे दोनों मस्जिद में बैठे हैं। उसने चौंककर कहा, वह अभी तक नहीं निकले हैं? बताया गया कि अभी नहीं निकले। कहने लगा उन्हें ज़ंजीरों में जकड़कर मेरे सामने पेश करो। पुलिस गई और उन्हें हथकड़ियाँ डालकर ले आई और शहज़ादे के सामने लाकर खड़ा कर

दिया। उनका नाम शेख़ अहमद दरबंदी रह० था और यह नक़्शबंदी सिलसिले के बुज़ुर्ग थे। शहज़ादे ने कहा तुम्हें पता नहीं था कि मैं इस शहर में आ रहा हूँ? फ़रमाया पता था। कहने लगा फिर शहर से निकले क्यों नहीं? उन्होंने कहा हम क्यों निकलते, हम तो अल्लाह के घर में बैठे थे। वह तैश में आकर कहने लगा, अब तुम्हें मेरी सज़ा से कौन बचाएगा? जब उसने यह कहा तो हज़रत दरबंदी रह० ने जोश में आकर कहा, "अल्लाह", जैसे उन्होंने "अल्लाह" का लफ़्ज़ कहा उनके हाथ की हथकड़ियाँ टूटकर नीचे गिर पड़ीं। जब शहज़ादे ने यह मंज़र देखा तो सहम गया और कहने लगा यह कोई आम आदमी नहीं है चुनाँचे वह कहने लगा कि मैं तुम्हें इस शहर में रहने की इजाज़त देता हूँ। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 11/33)

ज़िक्र से शैतान हड्डियों का ढांचा बन गया

शैख़ुल हदीस हज़रत मौलाना ज़क्रिया ने फ़ज़ाइले ज़िक्र में लिखा कि एक आदमी ने शैतान को देखा कि वह हड्डियों का ढांचा बना हुआ था और उसका बुरा हाल था। उसने पूछा यह क्या हुआ? कहने लगा, क्या बताऊँ, कुछ लोग ऐसे हैं जिन्होंने मेरे जिगर के कबाब बना दिए और उन्होंने मुझे हड्डियों का ढांचा बना दिया है। उसने कहा, वे कौन लोग हैं? कहने लगा, वे जो शूनीज़ा की मस्जिद में बैठे हुए हैं। वह आदमी फ़ौरन शूनीज़ा की मस्जिद में गया। जब वह मस्जिद में दाख़िल हुआ तो उसने देखा कि वहाँ कुछ मुत्तक़ी, परहेज़गार और बाख़ुदा लोग बैठे अल्लाह को याद कर रहे थे। अल्लाह तआला ने उनके दिलों में भी यह बात डाल दी। चुनाँचे वह आदमी जैसे ही मस्जिद में दाख़िल हुआ तो उन्होंने मुस्कराकर मेरी तरफ़ देखा और फ़रमाया कि उस मरदूद की बातों पर भरोसा न करना।

ज़िक्रे इलाही से फ़ैज़ान बारी का उतरना

हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि अपने ज़माने का वाक़िआ लिखते हैं। फ़रमाते हैं कि मैं शैख़ुल हिंद रह० के पास जलालैन पढ़ा करता था। एक रात को तकरार करने बैठा। (तकरार तलबा के लिए ज़रूरी है) ﴿لكل شئ باب وباب العلم التكرار﴾ फ़रमाते हैं कि एक ऐसी मुश्किल आई कि वह हल नहीं होती थी। बड़ी कोशिश की हत्ताकि हाशिया भी देखा फिर भी समझ में नहीं आया, औरों से भी पूछा फिर भी समझ में नहीं आया। अब चूँकि मैं तकरार कराया करता था। इसलिए तलबा ने कहा कि मियाँ कल को दर्स शुरू होने से पहले हज़रत शैख़ुल हिंद रह० से पूछ लेना ताकि पिछला सबक़ साफ़ हो जाए फिर अगले सबक़ में दुश्वारी न हो। मैंने ज़िम्मेदारी क़ुबूल कर ली। कहते हैं 'के सुबह फ़ज्र का वक़्त हुआ। मैं अपनी किताब लेकर मस्जिद में गया, फ़ज्र की नमाज़ पढ़ी और सलाम फेरकर मैं जल्दी से उठा मगर शैख़ुल हिंद रह० उठकर अपने कमरे में चले गए। जहाँ वह फ़ज्र के बाद से लेकर इशराक़ तक अकेले में वक़्त गुज़ारते थे। जब मैं दरवाज़े पर पहुँचा तो कुंडी बंद पाई। मुझे बड़ा अफ़सोस हुआ। मैंने अपने नफ़्स को बहुत ही बुरा भला कहा कि तूने सुस्ती की हज़रत अंदर चले गए अब वह इशराक़ पढ़कर बाहर निकलेंगे और बाद में सबक़ पूछने का वक़्त भी बाक़ी नहीं रहेगा। मैंने सोचा कि नफ़्स को सज़ा देनी चाहिए। वह सख़्त ठंडी का मौसम था। मैंने कहा यहीं बाहर खड़े होकर इंतिज़ार करो ताकि जब हज़रत बाहर निकलें तो फिर फ़ौरन पूछ लिया जाए और सबक़ से पहले पूछने का काम पूरा हो जाए। फ़रमाते हैं कि मैं बाहर खड़ा हो गया और हालत मेरी यह थी कि मैं ठंड में ठिठुर रहा था। मैंने सुना कि अंदर से "ला इलाहा इल्लल्लाह" के ज़र्ब लगाने की आवाज़ आ रही थी। हज़रत ज़िक्र कर रहे थे और मज़ा मुझे आ रहा

था, ऐसा ज़िक्र था। यहाँ तक कि ज़िक्र की लज़्ज़त मुझे सर्दी का एहसास भी न रहा लेकिन जब हज़रत ने दरवाज़ा खोला तो मेरी हैरत की हद न रही कि इस मौसम में हज़रत ने इस ज़ोर के साथ ज़िक्र किया था कि हज़रत के माथे पर पसीने के क़तरे क़तरे नज़र आ रहे थे। कह्ते हैं कि हज़रत ने मुझे देखा तो फ़रमाया कि अशरफ़ अली तुम यहाँ कैसे? अर्ज़ किया हज़रत एक इश्काल वारिद हुआ है उसका जवाब आपसे पूछना है। हज़रत ने फ़रमाया कौन सी जगह है? तो मैंने किताब खोली। हज़रत ने वहीं खड़े खड़े तक़रीर फ़रमानी शुरू कर दी। जब हज़रत ने तक़रीर शुरू की तो मैं हैरान रह गया कि न अलफ़ाज़ जाने पहचाने थे और न मानी समझ में आ रहे थे। ऐसा कलाम फ़रमा रहे थे कि कुछ समझ में नहीं आया। बात ख़त्म फ़रमाने पर फ़रमाया, अशरफ़ अली कुछ समझ में आया? अब मैंने दिल में सोचा कि हज़रत थोड़ा हल्के अंदाज़ में बात करें ताकि हमें भी कोई बात समझ में आए। मैंने कहा हज़रत बात समझ में नहीं आई। जब हज़रत ने यह सुना तो वहीं दोबारा खड़े खड़े तक़रीर शुरू कर दी। कहने लगे कि अब की बार की तक़रीर के अलफ़ाज़ कुछ जाने पहचाने से लगें लेकिन माने अब भी पल्ले नहीं पड़ रहे थे। दूसरी बार हज़रत ने फिर पूछा कि समझे? मैंने फिर अर्ज़ किया हज़रत मैं तो नहीं समझ सका। फ़रमाने लगे अच्छा अशरफ़ अली! मेरे इस वक़्त की बातें तुम्हारी समझ से ऊपर हैं किसी और वक़्त में मुझसे पूछ लेना। यह कहकर हज़रत चले गए। फ़रमाते हैं कि हमारे मशाइख़ इतना ज़िक्र की पाबंदी करते थे और उस वक़्त मआरिफ़ इतने उतरते थे कि एक बोल को कई रंग से बाँध देते थे जो पढ़ने वालों की समझ से बाहर हुआ करता था। (दवाए दिल स० 121)

❋ ❋ ❋

بسم الله الرحمن الرحيم

﴿وهو معكم اينما كنتم﴾

मआरिफ़त

व

मइय्यत

यानी अल्लाह की पहचान और ध्यान

मआरिफ़त व मअइय्यत

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर मआरिफ़त व तजल्ली का नूर

जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम कोहे तूर पर गए तो वहाँ पर चालीस दिन ठहरे और उन्हें अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का दीदार नसीब हुआ। उस वक़्त अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने सत्तर हज़ार पर्दों में से तजल्ली डाली। उसके बावजूद कोहे तूर जलकर सुर्मे की तरह हो गया और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम बेहोश होकर गिर पड़े। उनको न आग लगी और न ही मौत आई क्योंकि इस्तेदाद में फ़र्क़ था। आपके दिल के अंदर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मुहब्बत की और तजल्लियात को क़ुबूल करने की सहार थी और उस पहाड़ के अंदर सहार नहीं थी। इसलिए वह जल गया और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर सिर्फ़ बेहोशी की सी कैफ़ियत हुई। तफ़्सीर दुर्रे मंसूर में लिखा है,

لما كلم موسىٰ ربه عزوجل مكث اربعين يوما لا يراه احد الامات من نور الله.

जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अपने रब से कलाम किया तो चालीस दिन तक ठहरे रहे (उसके बाद) कोई भी उनके (चेहरे) को नहीं देख सकता था अगर कोई देखता तो देखते ही उस आदमी को मौत आ जाती थी।

इसलिए हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अपने चेहरे को छुपाए रखते थे हत्ताकि उनकी बीवी भी उनके चेहरे को देखने के लिए तरसती थी और वह उन्हें देखने नहीं देते थे। इसलिए उनकी आँखों में वह हुस्न और नूर आ गया था कि उस तजल्ली को देखने के बाद देखने वाला

उन के हुस्न की ताब न लाकर अपनी जान से हाथ धो बैठता था। सुब्हानअल्लाह! जिसने परवरदिगार के हुस्न व जमाल को सत्तर हज़ार पर्दों में देखा उसके चेहरे का हुस्न इतना बढ़ गया कि मख़्लूक़ उसका भी दीदार करने की सहार नहीं रखती थी।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 10/28)

अज़मते इलाही पर मिली मआरिफ़त बारी तआला

ज़ुन्नून मिस्री रह० मिस्र के बड़े बुज़ुर्ग गुज़रे हैं। उनको जो विलायत मिली उसका वाक़िआ बड़ा अजीब है। दोस्तों के साथ जा रहे थे। एक जगह बैठे किसी दोस्त ने वहाँ मौजूद एक पत्थर हटाया। जैसे ही पत्थर हटाया तो महसूस किया कि उसके नीचे कोई चीज़ है। जब जगह खोदी गई तो ख़ज़ाना मिला, सोना चाँदी, जवाहर, बड़ी क़ीमती चीज़ें थीं। उसके अंदर बड़ा ख़ूबसूरत अल्लाह तआला का नाम भी लिखा हुआ था। जब उन्होंने कहा कि कैसे तक़्सीम करें। इन्होंने कहा कि मियाँ सोना-चाँदी सब तुम बांट लो और यह जो अल्लाह का ख़ूबसूरत नाम है यह मुझे दे दो। लिहाज़ा उन्होंने अल्लाह तआला के ख़ूबसूरत नाम को ख़ुद पसन्द कर लिया। उनको ख़्वाब में किसी बुज़ुर्ग की ज़ियारत हुई और उस बुज़ुर्ग ने कहा कि क्योंकि तुमने सोना-चाँदी को क़ुर्बान कर दिया और अल्लाह के नाम को पसन्द कर लिया। लिहाज़ा अल्लाह तआला ने तुम्हें अपनी ज़ात के लिए पसन्द कर लिया। उठे तो उनके दिल में अल्लाह की मुहब्बत इतनी भर चुकी थी कि उनको अल्लाह की मआरिफ़त नसीब हो गई। अल्लाह का नाम पसन्द करने पर अल्लाह की मआरिफ़त मिल गई।

(तमन्नाए दिल स० 48)

मुक़द्दर से मिली जिसको मुहब्बत की फ़रावानी
उसके हाथ से होती है रोशन शमए ईमानी

ख़्वाजा अज़ीज़ुलहसन मज्ज़ूब रह० और मअइय्यते इलाही

हज़रत मौलाना मुहम्मद शफ़ी साहब रह० फ़रमाते हैं कि एक बार हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह० के बड़े ख़लीफ़ा ख़्वाजा अज़ीज़ुल हसन मज्ज़ूब रह० और हम कुछ दूसरे ख़लीफ़ा इकठ्ठे बैठे हुए थे। इस दौरान में ख़्वाजा अज़ीज़ुल हसन मज्ज़ूब रह० ने उन्हें कुछ मज़ाक की बातें सुनाना शुरू कर दीं यानी खुश तबई की ऐसी बातें सुनाना शुरू कर दीं कि लोगों ने हँसना शुरू कर दिया। सच्ची बातें भी खुश तबई वाली हो सकती हैं।

कभी-कभी नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम भी सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम से खुश मिज़ाजी की बातें फ़रमा लेते थे और सहाबा किराम एक दूसरे से हँसी मज़ाक फ़रमा लेते थे। ज़रूरी नहीं कि झूठा लतीफ़ा सुनाकर ही खुश करना होता है। अल्लाह वालों के पास ऐसे इल्मी लतीफ़े होते हैं कि बात भी सच्ची करते हैं और दूसरे हँस भी रहे होते हैं।

हज़रत मुफ़्ती साहब फ़रमाते हैं कि उन्होंने कुछ देर हमें ऐसी बातें सुनायीं कि हम हँस-हँस कर लोट-पोट हो गए। हमने उनसे कहा अब तो पेट में बल पड़ने लगे अब आप यह बातें न सुनाएं। इस बात के जवाब में उन्होंने फ़रमाया कि तुम में से कौन है जो इस तमाम हँसी के दौरान एक लम्हा भी अल्लाह से ग़ाफ़िल नहीं हुआ। फ़रमाते हैं कि एक अजीब सा सवाल था कि हम हैरान रह गए। फिर फ़रमाने लगे कि मैं तुम्हें इतनी देर हँसाता रहा मगर इस दौरान में एक लम्हा भी अल्लाह से ग़ाफ़िल नहीं हुआ। जिस इंसान को मईयते इलाही की कैफ़ियत हासिल हो चुकी होती है वह ऐसी बातें सुनकर हँस भी रहा होता है मगर उसका अंदरून अल्लाह तआला के साथ जुड़ा हुआ होता है।

(खुत्बात ज़ुलफ़ुक्कार 6/37)

इमाम ग़ज़ाली रह० की वालिदा का मआरिफ़त

इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली और अहमद ग़ज़ाली रह० दो भाई थे। यह अपने लड़कपन के ज़माने में यतीम हो गए थे। दोनों की तर्बियत उनकी वालिदा ने की। उनके बारे में एक अजीब बात लिखी है कि माँ उनकी इतनी अच्छी तर्बियत करने वाली थी कि वह उनको नेकी पर लायीं यहाँ तक कि आलिम बन गए। मगर दोनों भाईयों की तबियतों में फ़र्क़ था। इमाम ग़ज़ाली रह० अपने वक़्त के बड़े वाइज़ और ख़तीब थे और मस्जिद में नमाज़ पढ़ाते थे। उनके भाई आलिम भी थे और नेक भी थे लेकिन वह मस्जिद में नमाज़ पढ़ने के बजाए अपनी अलग नमाज़ पढ़ लिया करते थे। एक दफ़ा इमाम ग़ज़ाली रह० ने अपनी वालिदा से कहा अम्मी! लोग मुझ पर ऐतिराज़ करते हैं कि तू इतना बड़ा ख़तीब और वाइज़ भी है और मस्जिद का इमाम भी है मगर तेरा भाई तेरे पीछे नमाज़ नहीं पढ़ता। अम्मी! आप भाई से कहिए कि वह मेरे पीछे नमाज़ पढ़ा करें। माँ ने बुलाकर नसीहत की। अगली नमाज़ का वक़्त आया। इमाम ग़ज़ाली रह० नमाज़ पढ़ाने लगे और उनके भाई ने पीछे नीयत बाँध ली। लेकिन अजीब बात यह है कि जब एक रक्अत पढ़ने के बाद दूसरी रक्अत शुरू हुई तो उनके भाई ने नमाज़ की नीयत तोड़ दी और जमाअत से बाहर निकल आए।

अब इमाम ग़ज़ाली रह० ने नमाज़ पूरी की तो उनको बड़ी सुबकी महसूस हुई। वह बहुत परेशान हुए। लिहाज़ा ग़मज़दा दिल के साथ घर वापस लौटे। माँ ने पूछा बेटा! बड़े परेशान नज़र आ रहे हो। कहने लगे अम्मी भाई अगर न जाता तो बेहतर होता। यह गया और एक रक्अत पढ़ने के बाद दूसरी रक्अत में वापस आ गया और इसने आकर अलग नमाज़ पढ़ी तो माँ ने उन्हें बुलाया और कहा बेटा

तुमने ऐसा क्यों किया? छोटा भाई कहने लगा अम्मी मैं इनके पीछे नमाज़ पढ़ने लगा। पहली रक्अत तो इन्होंने ठीक पढ़ाई मगर दूसरी रक्अत अल्लाह की तरफ ध्यान के बजाए इनका ध्यान किसी और जगह था। इसलिए मैंने इनके पीछे नमाज़ छोड़ दी और आकर अलग नमाज़ पढ़ ली। माँ ने इमाम ग़ज़ाली रह० से पूछा यह क्या बात है? कहने लगे अम्मी बिल्कुल ठीक बात है। मैं नमाज़ में फ़िक्ह की एक किताब पढ़ रहा था और निफ़ास के कुछ मसाइल थे जिन पर ग़ौर व ख़ौस कर रहा था। जब नमाज़ शुरू हुई तो पहली रक्अत मेरी अल्लाह की तरफ़ तवज्जेह में गुज़री लेकिन दूसरी रक्अत में वही निफ़ास के मसाइल मेरे ज़ेहन में आने लग गए। उनमें थोड़ी देर के लिए ज़ेहन लग गया। इसलिए मुझसे यह ग़ल्ती हुई तो माँ ने उस वक़्त ठंडी साँस ली और कहा अफ़सोस कि तुम दोनों में कोई भी मेरे काम का न बना। इस जवाब को जब दोनों ने सुना तो दोनों भाई परेशान हुए। इमाम ग़ज़ाली ने तो माफ़ी मांग ली, अम्मी मुझ से ग़ल्ती हुई मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था मगर दूसरा भाई पूछने लगा कि मुझे तो अम्मी कश्फ़ हुआ था। उस कश्फ़ की वजह से मैंने नमाज़ तोड़ी तो मैं आपके काम का क्यों नहीं बना? तो माँ ने जवाब दिया कि "तुम में से एक निफ़ास के मसाइल को सोच रहा था और दूसरा उसके पीछे खड़ा उसके दिल को देख रहा था। तुम दोनों में अल्लाह की तरफ़ तो एक भी मुतवज्जेह न था। लिहाज़ा तुम दोनों मेरे काम के न बने।"

(दवाए दिल स० 211)

तकबीरे तहरीमा से पहले बैतुल्लाह की ज़ियारत

ख़्वाजा अब्दुल मलिक सिद्दीक़ी रह० एक बार अकोड़ा ख़टक के मदरसे में ठहरे हुए थे। वहाँ उलमा का पंद्रह रोज़ा तर्बियती कैम्प लगा हुआ था। एक आलिम ने उनसे सवाल किया कि हज़रत! मैंने

यह नोट किया है कि आप जब भी नमाज़ पढ़ाने के लिए खड़े होते हैं, इक़ामत हो जाती है मगर आप जल्दी नीयत नहीं बाँधते। थोड़ा सा ठहर कर नीयत बाँधते हैं। इसमें क्या हिक्मत है?

हज़रत रह० यह बात सुनकर मुस्कराए और फ़रमाया कि आप लोग तो उलमा हैं आपकी अल्लाह की तरफ़ तवज्जेह हर वक़्त बनी रहती है मगर मैं तो फ़क़ीर आदमी हूँ, नमाज़ पढ़ाने के लिए मुसल्ले पर खड़ा होता हूँ तो जब तक मुझे सामने बैतुल्लाह नज़र नहीं आता मैं उस वक़्त तक नमाज़ की नीयत नहीं बाँधा करता। जिनकी निस्बत व मअइय्यत इलाही का नूर नसीब हो जाता है तो फिर वह ऐसी नमाज़ें पढ़ा करते हैं। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 6/45)

ख़्वाजा बहाउद्दीन रह० और मअइय्यते इलाही का ग़लबा

शेख़ शहाबुद्दीन सहरवर्दी रह० के पास हज़रत बहाउद्दीन ज़क्रिया मुलतानी रह० गए, बैअत होने और उन्होंने तीसरे दिन उन्हें ख़िलाफ़त दे दी। जब उनको तीसरे दिन ख़िलाफ़त मिली तो वहाँ के जो मुक़ामी लोग थे वे कहने लगे हज़रत! यह दूर से आया और तीन दिनों में उसको यह नेमत मिल गई। हम लोग भी मुद्दतों से आपकी ख़िदमत में पड़े हैं। हम पर भी नज़रे करम फ़रमा दें। शेख़ शहाबुद्दीन सहरवर्दी रह० ने फ़रमाया, अच्छा आपको समझाएंगे।

दूसरे दिन उन्होंने बहुत सी मुर्ग़ियाँ मंगवायीं और उन तमाम लोगों को दीं जिन्होंने एतिराज़ किया था और बहाउद्दीन ज़क्रिया मुलतानी रह० को भी दी। और सब से फ़रमाया कि इस मुर्ग़ी को ऐसी जगह ज़िब्ह करके लाओ जहाँ कोई न देखता हो। चुनाँचे कोई पेड़ की ओट में ज़िब्ह करके लाया और कोई दीवार के पीछे ज़िब्ह करके लाया। सबने ज़िब्ह करके ला दीं और हज़रत को दिखायीं मगर हज़रत बहाउद्दीन रह० थोड़ी देर बाद और रोना शुरू कर दिया। हज़रत ने

पूछा भाई तुम क्यों रो रहे हो? कहने लगे हज़रत! आपने फ़रमाया था कि किसी ऐसी जगह ज़िब्ह करना जहाँ कोई न देख रहा हो। मगर मैं जहाँ भी गया मेरा परवरदिगार मुझे देख रहा था जिसकी वजह से मैं ज़िब्ह न कर सका और यूँ आपके हुक्म पर अमल न हो सका।

(खुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 6/34)

हज़रत शाह हुसैन अहमद रह० की ध्यान की कैफ़ियत

शाह हुसैन रह० पर अल्लाह तआला ने फ़नाइयत का ऐसा परछावा डाला था कि हर वक़्त अल्लाह के ज़िक्र में मशग़ूल रहते थे। उनके एक दामाद का नाम अल्लाह बंदा था। दो साल तक वह उनके पास रहा। जब सामने से गुज़रता तो हज़रत शाह हुसैन अहमद पूछते अरे मियाँ! तुम कौन? हज़रत! मैं आपका दामाद अल्लाह बंदा हूँ। फ़रमाते अरे मियाँ सभी तो अल्लाह के बंदे हैं। दो साल तक दामाद का नाम याद न हुआ। ज़िक्र की फ़नाइयत ऐसी थी कि दिल में एक अल्लाह का नाम बस चुका था। ऐसी ज़बरदस्त शख़्सियत ने दारुल उलूम देवबंद की पहली ईंट रखी थी:

الا حدیث یار کہ تکرار می کنم   ملعو چہ خواندہ ایم فراموش کردہ ایم

मआरिफ़त के बाद एहसासे दिल

हमारे एक दोस्त ने किस्सा सुनाया कि एक आदमी इंडिया से हिजरत करके पाकिस्तान आया। उसके कई रिश्तेदार थे मगर सब इधर उधर बिखर गए। उसका माभू भी आया था। वह भी परेशानी के आलम में कहीं गुम हो गया। एक दूसरे को मिल न सके। उस आदमी ने मेहनत की, अल्लाह तआला ने उसे ख़ूब माल पैसे वाला बना दिया। कई साल गुज़र गए उसने सोचा कि मैं अपनी कोठी इन

हूँ। अपनी कोठी बनाने लग गया। इस दौरान एक बूढ़ा आदमी उसके पास आया। कहने लगा बेटा मैं क़िस्मत का मारा हूँ। कोई मेरा रिश्तेदार अज़ीज़ नहीं है। तेरे यहाँ चौकीदारी करूंगा। तू मुझे कुछ खाने के लिए दे देना, ग़रीब परवरी भी होगी। उसने सोचा चलो ठीक है, दिन रात यहीं पड़ा रहेगा, मेरा फ़ायदा है। उसने कहा बूढ़े मियाँ आप इधर बैठ जाया करो। मैं आपको इतने पैसे दे दूँगा। वह बूढ़ा आदमी काम करने लग गया। अब वह बूढ़ा आदमी कभी सेहत कभी बीमारी, कभी थकावट, कभी कुछ, कभी कुछ। जब उसे काम में देर हो जाए तो नौजवान उस पर बरस जाए, कोसने लग जाए कि ऐसा है तू वैसा है। वह बूढ़ा बेचारा रो पड़े। यह आदमी फिर किसी ग़लती पर डाँट दे तो वह बूढ़ा आदमी फिर रो पड़े। एक दिन उस नौजवान ने इतनी गालियाँ दीं कि वह बूढ़ा आदमी कहने लगा बेटा रिज़्क़ देने वाला तो अल्लाह है, तेरा दिल अगर खुश नहीं तो मैं कहीं और चला जाता हूँ। क़िस्मत ने मुझे ऐसा ही बना दिया, वरना पीछे से तो मैं अपने रिश्तेदारों के साथ आया था, मालूम नहीं वे कहाँ चले गए। जब उसने यह बात कही तो उस नौजवान ने पूछा बाबा आपके कोई रिश्तेदार थे? बूढ़े ने कहानी सुना दी। उस कहानी को सुनने के बाद इस नौजवान को पता चला कि यह वही मेरा वह गुमशुदा मामू है जिनकी याद में अम्मी तड़प रही है। अब पाँव पकड़ लिए और कहने लगा की माफ़ कर देना मामू, मुझे माफ़ कर देना। मुझसे ग़लती हुई, मुझ से कोताही हुई। यह सारी कोठी आपकी है जहाँ चाहें तशरीफ़ ले जाएं। उसने कहा ना, ना बेटा मुझे अपनी अवक़ात का पता चल गया। नौजवान को एक दूसरे जानकारी नहीं थी, बर्ताव कुछ और था जब एहसास हो गया, अब बर्ताव कुछ और है। क़दमों में पड़ा रहा। पहले ठोकरें लगा रहा था अब उसके क़दमों में पड़ रहा है। यही इंसान का हाल है कि जब तक उसे अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मआरिफ़त नसीब

नहीं होती जानवरों की सी ज़िन्दगी गुज़ारता है और जब किसी अल्लाह वाले का हाथ लग जाता है और दिल धुल जाता है फिर एहसास होता हे फिर आँख खुलती है कि अब तक कैसी ज़िन्दगी बसर करता रहा। (खुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 1/166)

आँख और दिल के नूर में फ़र्क़

आँख का नूर और चीज़ है और दिल का नूर और चीज़ है। हकीम अन्सारी देहली के बड़े मशहूर हकीम थे। अल्लाह तआला ने फ़हम व फ़िरासत अता फ़रमाई थी। अंधे थे लेकिन हिकमत का काम किया करते थे। हाथ देखते थे और मरीज़ के मर्ज़ को पहचान लिया करते थे। बड़े मशहूर हकीम थे। अगर दूसरे हकीमों से मर्ज़ क़ाबू में नहीं आता तो मरीज़ उनके पास जाया करते थे। हमारे सिलसिले के एक बुज़ुर्ग ख़्वाजा मुहम्मद अब्दुल मालिक सिद्दीक़ी रह० फ़रमाते थे कि मुझे शौक़ हुआ कि मैं भी ज़रा हकीम साहब को देखूँ। लिहाज़ा उनकी दुकान पर गया। उनसे कोई बात नहीं की ताकि मेरे आने का उनको पता न चले और वहाँ बैठकर मैंने उनके दिल पर तवज्जेह डालनी शुरू कर दी। कुछ देर गुज़री तो मैंने कहा अच्छा दिल के बजाए रूह पर तवज्जेह डालता हूँ। जब मैंने उस पर तवज्जेह डालनी चाही तो वह फ़ौरन बोल उठे ना ना हज़रत आप मेरे दिल पर ही तवज्जेह करते रहें अगर यही बन गया तो सब कुछ बन गया। फ़रमाते हैं मैं हैरान हो गया कि इस आदमी को अंधा कौन कहे। जिसे बताया भी नहीं गया मगर इसका दिल साफ़ है कि वह आने वाले के अनवारात को महसूस कर रहा है, अल्लाहु अकबर।

(खुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 1/87)

दिल बीना भी कर ख़ुदा से तलब
आँख का नूर दिल का नूर नहीं है

मअइय्यते इलाही

एक बुज़ुर्ग ने किसी को ख़िलाफ़त देने से पहले कहा कि जाओ इस मुर्ग़ी को किसी ऐसी जगह ज़िब्ह करके लाओ जहाँ कोई न देख रहा हो। कई और मुरीदों से भी कहा। सब लोग मुर्ग़ियाँ ज़िब्ह करने चले गए। किसी ने पेड़ की ओट में ज़िब्ह की, किसी ने दीवार की ओट में ज़िब्ह की, सब ज़िब्ह करके ले आए। लेकिन जिनको ख़िलाफ़त देना थी वह जब वापस आए तो रो रहे थे। हज़रत ने पूछा रोते क्यों हो? आपके हाथ में मुर्ग़ी वैसे ही है? कहने लगे हज़रत! आपने हुक्म दिया था मगर मैं उस पर अमल न कर सका। पूछा क्यों अमल नहीं किया? कहने लगे हज़रत! आपने हुक्म दिया था कि इसको ऐसी जगह ज़िब्ह करो जहाँ कोई न देखता हो लेकिन मैं जहाँ भी गया मेरा रब मुझे देखता था। इसलिए इसको कैसे ज़िब्ह कर सकता था। फ़रमाया अलहम्दुलिल्लाह! इसी मईयत की कैफ़ियत का तो इम्तिहान लेना था, उसके बाद उनको निस्बत अता फ़रमा दी।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 4/92)

❋ ❋ ❋

अक़ीदत, मुहब्बत

और

अदब

अक़ीदत, मुहब्बत और अदब

शेख़ से जितना लगाव उतना फ़ायदा

सैय्यदना उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक बार ख़्वाब में देखा कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर बारिश हो रही है। आपके जहाँ क़दम मुबारक हैं वहाँ अबूबक्र सिद्दीक़ का सर है। बारिश का जो पानी नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर आ रहा है वह सारे का सारा अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु पर आ रहा है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी अपने आपको करीब खड़े देखा। उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु से छींटे उड़कर मेरे ऊपर पड़ रहे हैं और मैं भी भीगा चला जा रहा हूँ। सुबह उठे और नबी अकरम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के महबूब! मैंने रात में ख़्वाब में ये चीज़ें देखी हैं। आपने फ़रमाया, उमर! यह उलूमे नबुव्वत थे जो बारिश की तरह मेरे ऊपर बरस रहे थे, सिद्दीक़ को क्योंकि मेरे साथ कमाले मुनासिबत नसीब है इसलिए वह मुझसे सबसे ज़्यादा कमालात पा रहा है और उस के साथ मुनासिबत की वजह से तुम भी उन उलूम को हासिल कर रहे हो। कमालाते नबुव्वत सबसे ज़्यादा हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने हासिल किए और उलूमे विलायत को हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु सबसे ज़्यादा हासिल किया। यह कमालात नबुव्वत निस्बत इत्तिहादी की तीसरी दलील है। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक्कार 4/94)

मिटा दो हाँ मिटा दो अपनी हस्ती तुम मुहब्बत में
यही कहते हैं बुस्तामी, गज़ाली और जीलानी

शेख़े तरीक़त की इज़्ज़त बाइसे मआरिफ़त

इमाम अहमद बिन हंबल रह० के पास एक बुज़ुर्ग आते थे उनका नाम था अबूहाशिम। इमाम अहमद बिन हंबल रह० उनको अबू हाशिम सूफ़ी कहा करते थे। यह सूफ़ी का लफ़्ज़ इमाम अहमद बिन हंबल रह० फ़क़ीह की ज़बान से निकला है। जब वह आते तो इमाम अहमद बिन हंबल रह० कई दफ़ा अपना दर्स बंद करके खड़े हो जाते थे और उनको पास बिठाते थे। अब पढ़ने वालों के दिल में इश्काल पैदा होता था कि इमाम साहब इतने बड़े आलिम, जिबालुल-इल्म (इल्म का पहाड़) और यह तो एक ज़ाकिर शाग़िल बुज़ुर्ग हैं, इनके लिए खड़े होते हैं और दर्स भी कई दफ़ा छोड़ देते हैं। इनकी बातें सुनते हैं, तो एक शागिर्द ने पूछ लिया कि हज़रत हमें समझ में नहीं आता कि आप इनका इतना इकराम क्यों करते हैं? इमाम अहमद बिन हंबल रह० ने अजीब आलिमाना जवाब दिया। फ़रमाया, देखो मैं अल्लाह की किताब का आलिम हूँ और अबूहाशिम अल्लाह के आलिम हैं और अल्लाह के आलिम को अल्लाह की किताब के आलिम पर फ़ज़ीलत हासिल है। इमाम साहब उनकी सोहबत इख़्तियार फ़रमाया करते थे और फ़रमाते थे कि अगर अबूहाशिम सूफ़ी न होते तो रिया की बारीक बातों से मैं कभी वाक़िफ़ नहीं हो सकता।

(दवाए दिल स० 249)

मज्ज़ूब दर से जाता है दामन भरे हुए
सद शुक्र हक़ ने आपका साइल बना दिया

शेख़ के पास अक़ीदत और बुलंद इरादे से जाइए

तीन आदमी एक ही रास्ते पर जा रहे थे। उनका आपस में ताअर्रुफ़ हुआ फिर एक दूसरे से पूछने लगे कि कहाँ जा रहे हैं? उनमें से एक ने कहा मैं हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रह० के पास

जा रहा हूँ, सुना है कि वह बड़े वली हैं। इसलिए मैं उसे आज़माने जा रहा हूँ कि वह वली भी हैं या नहीं। दूसरे से पूछा भाई आप किस लिए जा रहे हैं? वह कहने लगा मैं बहुत ज़्यादा मुसीबतों में फंसा हुआ हूँ इसलिए शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रह० से दुआ करवाने के लिए जा रहा हूँ ताकि अल्लाह तआला उनकी दुआ से मेरी मुसीबतें दूर फ़रमा दें। तीसरे से पूछने पर जवाब दिया कि मैंने सुना है कि शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रह० बड़े कामिल वली हैं। इसलिए मैं उनको वली समझकर उनके जूतों में कुछ दिन गुज़ारने जा रहा हूँ। ये तीन आदमी शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रह० की ख़िदमत में पहुँचे और सलाम करके बैठ गए। उनमें से जो आदमी कहता था कि मैं तो आज़माने जा रहा हूँ। हज़रत ने उससे हालचाल पूछे और उसे वापस भेज दिया। कहते हैं कि वह बंदा अपनी ज़िन्दगी में इस्लाम से फिर गया और आख़िरकार कुफ़्र की हालत में उसकी मौत आई क्योंकि उसके दिल में औलिया अल्लाह का हलकापन था और उनके बारे में इधर-उधर की बातें किया करता फिरता था। उनमें से जिसने कहा था कि मुसीबतों में घिरा हुआ हूँ और दुआ करवाने जा रहा हूँ। हज़रत ने उसके लिए दुआ फ़रमा दी और उसको वापस भेज दिया अल्लाह तआला ने उसकी मुसीबतें दूर कर दीं और तीसरा बंदा जिसने कहा था कि मैं उनके क़दमों में कुछ वक़्त गुज़ारने जा रहा हूँ, वह उनके पास रहा। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 7/143)

शेख़ से जैसा गुमान उधर से वैसा ही फ़ैज़ान

इमाम रब्बानी मुजद्दिद अलफ़सानी रह० फ़रमाते हैं कि हम तीन पीर भाई थे। हम तीनों का अपने पीर हज़रत ख़्वाजा बाक़ी बिल्लाह रह० के बारे में अलग-अलग गुमान था। फ़रमाते हैं कि ख़्वाजा बाक़ी बिल्लाह रह० ख़ामोश तबियत थे। लिहाज़ा कम बात करने की वजह से हमारे एक पीर भाई समझते थे कि मेरे शेख़ कामिल तो हैं मगर

साहिबे इर्शाद नहीं। दावत व इर्शाद में अल्लाह तआला कुछ लोगों को कुतबे इर्शाद बना देते हैं और उनके बयान कलिमात से अल्लाह तआला हज़ारों लोगों के दिलों की दुनिया बदलकर रख देते हैं।

उनमें से दूसरे का गुमान यह था कि ख़ुद तो कामिल हैं मगर वह दूसरों को कामिल नहीं बना पाते क्योंकि कम बोलते थे। किसी ने उनसे एक दफ़ा कहा हज़रत! आप बात किया करें ताकि लोगों को फ़ायदा हो। हज़रत ने अजीब बात कही, फ़रमाया, जिसने हमारी ख़ामोशी से कुछ नहीं पाया वह हमारी बातों से भी कुछ नहीं पाएगाः

कह रहा है शोरे दरिया से समंदर का सकूत
जिसका जितना ज़र्फ़ है उतना ही ख़ामोश है

अल्लाह तआला अपने बाज़ औलिया की ऐसी हालत बना दिया करते हैं कि ﴿من عرف ربه طال لسانه.﴾ का मिस्दाक़ बन जाते हैं। और एक हदीस में आया है ﴿من عرف ربه قل لسانه.﴾ कुछ लोग ऐसे होते हैं कि जब उनको अल्लाह तआला मआरिफ़त मिलती है तो अल्लाह तआला के दीदार में ऐसे मस्त हो जाते हैं कि उनकी मख़्लूक़ के साथ कलाम करने की कैफ़ियत कम होती है और परवरदिगारे आलम की तरफ़ उनके रुझान की निस्बत ज़्यादा रहती है और वे अल्लाह तआला के दीदार में ही मस्त रहते हैं और फ़रमाते हैं कि मैं तीसरा था और मेरा अपने शेख़ के बारे में गुमान यह था कि मेरे शेख़ इतने कामिल हैं कि इससे पहले अगर इस उम्मत में किसी को कोई शेख़ मिला है तो वह सैय्यदना अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम मिल हैं और सिद्दीक़े अकबर के बाद अगर किसी कोई कामिल शेख़ मिला है तो फिर मुझे मेरे शेख़ मिले हैं। फ़रमाते हैं कि मेरे साथी तो पता नहीं किधर गए मगर मेरे इस गुमान की वजह से अल्लाह तआला ने मुझे मुजद्दिद अलफ़ेसानी बना दिया यानी मुझे

दूसरे हज़ार साल का मुजद्दिद बना दिया।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 7/141)

अक़ीदत व मुहब्बत से फ़ायदा ही फ़ायदा

हज़रत अक़्दस थानवी रह० ने लिखा है कि एक आदमी तालिब सादिक़ था। किसी शेख़ से बैअत था। उस शेख़ की नज़र उसके माल पर थी। उस आदमी ने ख़्वाब में देखा और आकर पीर साहब से बयान किया। कहने लगा हज़रत मैंने ख़्वाब में देखा है कि आपके हाथ पर शहद लगा हुआ है और मेरे हाथ पर गंदगी लगी हुई है। बस पीर साहब ने सुना तो फ़ौरन कह उठे कि यह बिल्कुल सच्चा ख़्वाब है क्योंकि हम दीनदार लोग हैं हमारे हाथ पर शहद लगा हुआ है और तुम दुनियादार लोग हो और तुम्हारे हाथ पर निजासत लगी हुई है। वह कहने लगा हज़रत! अभी पूरा ख़्वाब तो सुनें कि पूरा ख़्वाब क्या है? कहने लगा कि आपने अपना हाथ मेरे मुँह में दिया हुआ है और मैंने अपना हाथ आपके मुँह में दिया हुआ है। मुरीद को अक़ीदत की वजह से शेख़ से फिर भी फ़ायदा हो रहा था मगर शेख़ की नज़र क्योंकि मुरीद की जेब पर थी इसलिए उसको नुक़सान हो रहा था।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 3/208)

हज़रत शेख़ अब्दुलक़ुद्दूस रह० के पोते की अक़ीदत व तलब

ख़्वाजा अब्दुल क़ुद्दूस गंगोही रह० के कई ख़लीफ़ा थे। इनका एक पोता जवान हुआ तो दादी अम्मा हयात थीं। उन्होंने कहा बेटा! एक नेमत तेरे दादा के पास थी अगर तू चाहता है कि वह नेमत तुझे मिले तो उनके सोहबयाफ़्ता ख़लीफ़ाओं की ख़िदमत में जा। चुनाँचे दादी अम्मा ने एक ख़लीफ़ा की ख़िदमत में रवाना कर दिया। जब ख़लीफ़ा का पता चला कि मेरे शेख़ के पोते आ रहे हैं तो वह एक

जमाअत लेकर शहर के बाहर इस्तिक़बाल के लिए आए, बड़ी धूमधाम के साथ इस्तिक़बाल किया। तीन दिन मेहमान नवाज़ी फ़रमाई। उसके बाद पूछा कि जी! कैसे तशरीफ़ लाए हैं? अर्ज़ किया कि आपके पास एक नेमत है उसको हासिल करने के लिए हाज़िर हुआ हूँ। फ़रमाया फिर तो तक़ाज़े कुछ और हैं, पीर बनकर तो वह नेमत नहीं मिलेगी वह तो मुरीद बनकर मिलेगी। लिहाज़ा वह गद्दियाँ भी गयीं, वह बिस्तर भी गए। फ़रमाया कि चटाई पर रहना पड़ेगा और यह काम करने पड़ेंगे। अर्ज़ किया बहुत अच्छा। हज़रत ने उनके ज़िम्मे कई काम लगा दिए, उनको मुजाहिदों और रियाज़त की लाइन पर लगा दिया। वह नौजवान लगा रहा। एक ऐसा वक़्त आया कि जब शेख़ ने देखा कि कुछ बेहतर हो रहा है तो सोचा कि चलो आज़माते हैं कि तलब कितनी पकी है। कुछ लोग शिकार के लिए जाने लगे तो शेख़ ने ख़ुद भी प्रोग्राम बना लिया कि हम भी शिकार के लिए जाएंगे। उस दौर में शिकार कुत्तों के ज़रिए पकड़ा जाता था। सधाए हुए कुत्तों का शिकार शरिअत ने हलाल किया है।

हज़रत ने पले हुए बड़े-बड़े कुत्ते साथ लिए और नौजवान से फ़रमाया कि आपको कुत्तों को संभालना है। उसने कहा बहुत अच्छा। यह मुजाहिदे की वजह से सूखकर हड्डियों का ढांचा बन चुका था। जब आज़माइश के लिए कुत्ते पकड़ने की ड्युटी लगा दी गई। बाज़ दफ़ा शेख़ आज़माते हैं, तकलीफ़ देकर भी आज़माते हैं। शेख़ को पता चल जाता है कि हक़ीक़त क्या है? लेकिन मुरीद को पता नहीं चलता। चुनाँचे नौजवान ने रस्सी को अपने कमर से बाँध लिया और अपने हाथों से भी मज़बूती से पकड़ लिया। जब शिकार सामने आया और कुत्तों ने शिकार को देखा तो वह भागे चूँकि पले हुए कुत्ते थे और यह अकेले और कमज़ोर थे। इसलिए रस्सी को अपनी हिम्मत से पकड़ा तो सही मगर साथ खिंचते चले गए, कुत्ते तेज़ भागे और यह

ख़िंचते-ख़िंचते गिर गए। अब साथ घिसटते चले जा रहे हैं जिस्म ज़ख़्मों से चूर चूर हो रहा है मगर रस्सी को न छोड़ा क्योंकि शेख़ ने वह रस्सी पकड़ाई थी। अब जान तो जा सकती है मगर हाथों से नहीं छूट सकती। यह है सच्ची तलब, जब उनको जिस्म पर ज़ख़्म लगे तो शेख़ भी साथ थे। शेख़ को उस वक़्त कश्फ़ में हज़रत ख़्वाजा अब्दुल क़ुद्दूस रह० की ज़ियारत हुई और ख़्वाजा साहब ने फ़रमाया, ख़लीफ़ा साहब हमने तो आपसे इतनी मेहनत नहीं करवाई थी। चुनाँचे उसी वक़्त शेख़ ने नौजवान को सीने से लगाया और वह नेमत उनके सीने में डाल दी। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 2/126)

मैंने तो शेख़ को आज़मा लिया है

एक आदमी ने किसी बुज़ुर्ग को बताया कि मेरे शेख़ तो बड़े कामिल बुज़ुर्ग हैं। उन्होंने कहा पूछा कि वह कैसे? वह कहने लगा कि मैंने उनको आज़्मा लिया है। वह वाक़ई अल्लाह वाले हैं। उन्होंने पूछा कि तुमने कैसे आज़माया है? वह कहने लगा कि एक बार मेरी बीवी रूठकर माइके चली गई। मैंने अपने ससुराल वालों की बड़ी मिन्नत समाजत की लेकिन वह अपनी बेटी को मेरे साथ भेजने से इंकार ही करते रहे। आख़िरकार मैंने अपने शेख़ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और सारा मामला अर्ज़ कर दिया। उन्होंने मुझे एक ऐसा अमल बताया कि मैंने जैसे ही वह अमल किया और बीवी को लेने गया तो उन्होंने बग़ैर किसी रुकावट और हुज्जत के उसको मेरे साथ कर दिया। यह बात सुनकर वह बुज़ुर्ग अफ़सोस करने लगे और कहने लगे कि तूने अपने शेख़ की क़द्र नहीं की। वह कहने लगा हज़रत! मेरे दिल में मेरे शेख़ की क़द्र है इसीलिए तो कह रहा हूँ कि वह बड़े कामिल बुज़ुर्ग हैं। हज़रत ने फ़रमाया कि तुम्हें तो अपने शेख़ से अल्लाह के क़ुर्ब का सवाल करना चाहिए था लेकिन अफ़सोस कि तुमने बीवी का क़ुर्ब मांगा। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 7/27)

बुज़ुर्गों से मुहब्बत बाइसे मग़फ़िरत

किताबों में लिखा है कि एक आदमी मर गया। अल्लाह तआला ने उसकी बख़्शिश फ़रमा दी। उसने पूछा, ऐ परवरदिगारे आलम! आपने मुझे किस अमल पर बख़्शा? अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया, मेरे बंदे! तेरा एक अमल तेरे आमालनामे में ऐसा है कि जिसकी वजह से मैंने बख़्श दिया। उसने कहा ऐ अल्लाह! मेरे तो सारे अमल ख़राब हैं, मैं ग़ाफ़िल व बदकार था, आपको मेरा कौन सा अमल पसंद आया? अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया, तेरे नामे आमाल में में लिखा है कि एक बार एक वली बयज़ीद बुस्तामी रास्ते में जा रहे थे। तुम्हें मालूम नहीं था कि कौन हैं? तुमने किसी से पूछा। उसने कहा यह बजयज़ीद बुस्तामी हैं। तुमने पहले सुन रखा था कि वह अल्लाह के दोस्तों में शुमार होते हैं लिहाज़ा तुमने मुहब्बत से मेरे वली पर नज़र डाली थी। मैंने उसी एक नज़र डालने की बरकत से तुम्हारे गुनाहों की बख़्शिश फ़रमा दी, सुब्हानअल्लाह।

अल्लाह वालों को मुहब्बत से देखने पर मग़फ़िरत

हज़रत बजयज़ीद बुस्तामी रह० के दौर में एक आदमी फ़ौत हुआ। किसी को ख़्वाब में नज़र आया। उसने पूछा सुनाइए क्या मामला बना? कहा कि अल्लाह तआला ने मेरी बख़्शिश कर दी। उसने पूछा नेकियाँ क़ुबूल हो गयीं? कहने लगा कि नहीं, एक छोटा सा अमल क़ुबूल हो गया। उसने कहा बताओ तो सही वह कौनसा अहम है। कहने लगा, एक बार हज़रत बजयज़ीद बुस्तामी रह० जा रहे थे। मैं उनको पहचानता नहीं था। किसी ने मुझे कहा कि देखो अल्लाह का वली जा रहा है। मैंने उनको अल्लाह का वली समझकर देखा था। रब्बे करीम ने फ़रमाया कि तुमने मेरे एक प्यारे को मेरा प्यारा समझकर देखा था, उस निगाह के बदले हमने तुम पर जहन्नम की आग हराम कर दी।

लफ़्ज़ 'अल्लाह' के अदब पर ज़ुबैदा रह० की मग़फ़िरत

ज़ुबैदा ख़ातून ने नहर ज़ुबैदा बनवाकर बग़दाद से अरबिस्तान तक पानी को पहुँचाया। वह औरत अपने बचपन में अपनी हम जोलियों के साथ झूला झूल रही थी और अपनी सहेलियों के साथ ख़ुश गप्पों में मसरूफ़ थी। झूला झूलने के दौरान उसका दुपट्टा सर से सरक गया। दुपट्टा अभी उतरा ही था कि अज़ान की आवाज़ आई। उस नेक औरत ने फ़ौरन झूला और अपना सर दुपट्टे से ढांपा। उसके बाद ज़िन्दगी गुज़ारकर वफ़ात पा गई। एक रिश्तेदार ने ख़्वाब में देखा और पूछा, ज़ुबैदा! क्या बना तेरा? कहने लगी, अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने मेरे साथ आसानी का मामला फ़रमाया। फिर उस शख़्स ने ख़्वाब में ही कहा, आपने लम्बी नहर बनवाई थी। वही काम आ गई होगी तो ज़ुबैदा ने कहा, नहर तो बनवाई थी लेकिन वह मेरी मग़फ़िरत का सबब न बन सकी। फिर उस सवाल करने वाले ने पूछा, फिर आपकी मग़फ़िरत कैसे हुई? उसने बताया कि एक दिन मैं झूला झूल रही थी उस वक़्त मेरे सर पर दुपट्टा नहीं था। अज़ान होने लगी लफ़्ज़ 'अल्लाह' सुनते ही दुपट्टा मैंने रख लिया तो वह दुपट्टा जो मैंने अल्लाह की अज़्मत को सामने रखते हुए अपने सर पर रखा। मेरे इस अमल को अल्लाह तआला की तरफ़ से ऐसी क़ुबूलियत हुई कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने फ़रमाया, तूने मेरे नाम की ऐसी ताज़ीम की, जा आज हम तुम्हें जन्नत में दाख़िल करते हैं, नहर और दूसरे आमाल का तो पूछना ही नहीं। यह अल्लाह तआला की ख़ुफ़िया तदबीर होती है। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 11/231)

हज़रत निज़ामुद्दीन रह० और अमीर ख़ुसरो रह० की बेमिसाल मुहब्बत

हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया रह० पीर थे और अमीर

ख़ुसरो उनके मुरीद थे। उन दोनों में इतनी मुहब्बत थी कि ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया रह० यूँ फ़रमाते थे शरह शरीफ़ की इजाज़त होती तो मैं यह वसीयत कर जाता कि मुझे और ख़ुसरो को एक ही क़ब्र में दफ़न किया जाए।

दूसरी तरफ़ अमीर ख़ुसरो का यह हाल था कि एक दफ़ा ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया रह० की ख़िदमत में एक सवाली आया। उसने सवाल किया, उस वक़्त हज़रत के पास कुछ नहीं था। लिहाज़ा हज़रत ने अपने जूते उसे दे दिए कि यह जूते ही ले जाओ। हाँ जो सख़ी होते हैं वह अपने देर से किसी को ख़ाली नहीं जाने दिया करती। वह आदमी हज़रत के जूते लेकर जा रहा रास्तो से जा रहा था, अमीर ख़ुसरो रह० उसी रास्ते से ख़्वाजा ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया रह० के पास आ रहे थे वह जूते उस सवाली के पास देखकर पहचान गए कि आज इस सवाली को हज़रत के दरबार से नियाज़ मिली है चुनाँचे कहने लगे भाई! क्या तुम मेरे साथ यह सौदा करने के लिए तैयार हो कि यह जूते मुझे दे दो और मैं कुछ पैसे तुझे दे देता हूँ। वह समझ गया चुनाँचे कहने लगा कि नहीं बल्कि मैं इसके बदले आपसे इतनी ज़्यादा क़ीमत लूँगा, अमीर ख़ुसरो रह० ने उसकी मन मर्ज़ी की क़ीमत उसको दे दी और अपने शेख़ के जूते लेकर सर पर रखे और हज़रत निज़ामुद्दीन रह० की ख़िदमत में हाज़िर हुए। अमीर ख़ुसरो अपने शेख़ की ख़िदमत की मुहब्बत में कहते हैं किः

من تو شدم تو من شدی من تن شدی تو جان شدی

تا کس نہ گوید بعد ازیں من دیگرم تو دیگری

कि मैं तो हो जाऊँ और तू मैं हो जाए और मैं तन बन जाऊँ और तू रूह बन जाए ताकि बाद में कोई यह न कह सके कि तू और है और मैं और हूँ।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 8/214)

ख़ानक़ाह की मिट्टी मलने पर महमूद की मग़फ़िरत

सुलतान महमूद ग़ज़नवी रह० को वफ़ात के बाद किसी ने ख़्वाब में देखा वह जन्नत की सैर कर रहे थे। उसने कहा आप तो दुनिया के बादशाह थे और आख़िरत में बादशाहों का बड़ा बुरा हाल होता है। उनका तो लम्बा चौड़ा हिसाब व किताब होता है और आपको मैं जन्नत में देख रहा हूँ। उसने जवाब में कहा, हाँ मेरा एक छोटा सा अमल था लेकिन परवरदिगारे आलम को वही एक अमल पसंद आ गया। जिसकी वजह से मेरी मग़फ़िरत कर दी गई। उसने पूछा वह कौन सा अमल है? कहने लगा कि मैं एक दफ़ा अबूल हसन ख़रक़ानी रह० की ख़ानक़ाह पर गया था। वहाँ लोग झाड़ू दे रहे थे। जिसकी वजह से मिट्टी उड़ रही थी। मैंने उस मिट्टी में से गुज़रते हुए उस मिट्टी को इस नीयत से चेहरे पर मल लिया था कि अल्लाह वालों के कपड़े और बिस्तरों की मिट्टी है। इसलिए अल्लाह तआला ने मुझे फ़रमाया कि तूने रास्ते में निकलने वाले दरवेशों की मिट्टी की क़द्र की इसीलिए इसकी बरकत से तेरे चेहरे को जहन्नम की आग से बरी फ़रमा देते हैं, सुब्हानअल्लाह।

जादूगरों के अदब पर हिदायत का फ़ैसले

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के मुक़ाबले में सत्तर हज़ार जादूगर थे। अल्लाह तआला ने उनको ईमान लाने की तौफ़ीक़ अता कर दी। कुछ लम्हे पहले काफ़िर थे और कुछ लम्हे बाद सज्दे में गिर गए और मोमिन बन गए, क्या वजह थी? उसकी वजह यह थी कि उनके अंदर अदब था। एक तो वक़्त के नबी साथ मुशाबहत थी और दूसरी वजह किताबों में लिखी है कि मुक़ाबले से पहले उन्होंने आपस में मशवरा किया था कि क्या करें? उनमें से एक अंधा जादूगर था। उसने कहा

भाई देखो दो सूरतें हैं या तो हमारे मुकाबले पर जो है वह वाकई सच्चा है और अल्लाह का नबी है या फिर हमारी तरह जादूगर है। लिहाज़ा मैं तुम्हें मशवरा देता हूँ कि तुम इसका अदब करो। अगर अदब करेंगे और वह जादूगर हुआ और हम जीत गए तो हमें नुकसान कोई नहीं और अगर वह हम पर ग़ालिब आ गया तो हमने क्योंकि उसका अदब किया होगा इसलिए उसका अदब हमारे लिए फ़ायदे और नफ़े का सबब बन जाएगा। उन्होंने पूछा कि हम इसका अदब क्या करें? उस अंधे ने मशवरा दिया (उसके बातिन में अल्लाह तआला ने रोशनी दी होगी) और कहा कि तुम मुक़ाबला करने से पहले पूछ लेना कि जनाब आप पहले डालना चाहते हैं अपनी किसी चीज़ को या हम डालकर दिखाएं। यह जो हम पूछेंगे यह हमारा पूछना इज़्ज़त और अदब बन जाएगा और इस अदब की वजह से हमें यह नफ़ा मिलेगा और वाक़ई जब उन्होंने ﴿القوا ما انتم ملقون﴾ कहा वाक़ई अल्लाह तआला ने मेहरबानी फ़रमा दी कि अल्लाह तआला ने इस अदब की वजह से ईमान की दौलत नसीब फ़रमा दी।

सैय्यद के अदब पर जुनैद बग़दादी रह० को मक़ामे विलायत

हज़रत जुनैद बग़दादी रह० अपने वक़्त के शाही पहलवान थे। बादशाहे वक़्त ने ऐलान करवा रखा था कि जो आदमी हमारे पहलवाने को गिराएगा उसको बहुत ज़्यादा ईमान दिया जाएगा। सादात के घराने का एक आदमी बहुत कमज़ोर और ग़रीब था, रोज़ाना के ख़र्च को तरसता था। उसने सुना कि वक़्त के बादशाह के तरफ़ से ऐलान हो रहा है कि जो हमारे पहलवान को गिराएगा हम उसे इतना ज़्यादा ईनाम देंगे। उसने सोचा कि जुनैद को रुस्तमे ज़मा कहा जाता है मैं उसे गिरा तो नहीं सकता मगर मेरे घर बहुत ज़्यादा है, मुझे परेशानी भी बहुत है और सादात में से हूँ इसलिए किसी के

आगे जाकर अपना हाल भी नहीं खोल सकता। चलो मैं मुक़ाबले की कोशिश करता हूँ। उसने जुनैद रह० से कुश्ती लड़ने का ऐलान कर दिया। वक़्त का बादशाह बहुत हैरान हुआ कि इतने बड़े पहलवान के मुक़ाबले में एक कमज़ोर से आदमी। बादशाह ने उस आदमी से तो हार जाएगा। उसने कहा कि नहीं मैं कामयाब हो जाऊँगा। मुक़ाबले के दिन तय कर दिए गए। बादशाहे वक़्त भी कुश्ती देखने के लिए आया। जब दोनों पहलवानों ने पंजा आज़माई की तो सैय्यद साहब कहते हैं कि ऐ जुनैद! तो रुस्तमे ज़मां है, तेरी बड़ी इज़्ज़त है, तुझे बादशाह से रोज़ीना मिलता है लेकिन देख ले मैं सादात में से हूँ, मेरे घर में इस वक़्त परेशान और तंगी है। आज अगर तू गिर जाएगा तो तेरी इज़्ज़त पर वक़्ती तौर पर आँच आएगी लेकिन मेरी परेशानी दूर हो जाएगी। इसके बाद उसने कुश्ती लड़ना शुरू कर दी। जुनैद हैरान थे अगर चाहते तो बाएं हाथ के साथ उसको नीचे पटख़ सकते थे मगर उसने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिश्तेदारी का वास्ता दिया था। यह महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल की निस्बत थी जिससे जुनैद का दिल पसीज गया। दिल ने फ़ैसला किया कि जुनैद! इस वक़्त इज़्ज़त का ख़्याल न करना, तुझे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के यहाँ इज़्ज़त मिल जाएगी तो तेरे लिए यही काफ़ी है। लिहाज़ा थोड़ी देर पंजा आज़माई की और उसके बाद जुनैद ख़ुद ही चित हो गए और वह कमज़ोर आदमी उनके सीने पर चढ़कर बैठ गया और कहने लगा मैंने इसको गिरा लिया। बादशाह ने कहा नहीं कोई वजह बन गई होगी। लिहाज़ा दूसरी बार कुश्ती कराई जाए। तो दोबारा कुश्ती हुई। जुनैद ख़ुद ही गिर गए और उसे अपने सीने पर बिठा लिया। बादशाह बहुत नाराज़ हुआ। उसने जुनैद को बहुत लान-तान की, यहाँ तक कि उसने कहा कि जी चाहता है कि जूतों का हार तेरे गले में डालकर पूरे शहर में फिर दूँ, तू इतने कमज़ोर आदमी से हार गया। आपने वक़्ती ज़िल्लत को बरदाश्त कर लिया।

घर आकर बताया तो बीवी भी परेशान हुई और बाक़ी घर वाले भी परेशान हुए तूने अपनी इज़्ज़त को ख़ाक में मिला दिया मगर जुनैद का दिल मुतमइन था। रात को सोए तो ख़्वाब में अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत नसीब हुई। आपने फ़रमाया, जुनैद! तूने हमारी ख़ातिर यह ज़िल्लत बरदाश्त की है। याद रखना कि हम तेरी ज़िल्लत को इज़्ज़त से बदलकर डंके दुनिया में बजा दें।। लिहाज़ा जुनैद बग़दादी जो ज़ाहिरी पहलवान था अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उसे रूहानी पहलवान बना दिया। आज भी जहाँ तसव्वुफ़ की बात की जाएगी, जुनैद बग़दादी रह० का तज़्किरा ज़रूर किया जाएगा।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 4/85)

बशरे हाफ़ी रह० को अदब से क्या मक़ाम मिला

बशरे हाफ़ी रह० का मशहूर वाक़िआ है। "हाफ़ी" कहते हैं नंगे पाँव चलने वाला, यह शराब पीते थे, पुलिसमैन थे, जा रहे थे कि एक काग़ज़ पर अल्लाह तआला का नाम देखा। दिल में ख़्याल आया अल्लाह का नाम काग़ज़ पर लिखा ज़मीन पर पड़ा है? उसी वक़्त अल्लाह का नाम उठाया और ऊँची जगह पर रख दिया। उसी वक़्त अल्लाह तआला ने इल्हाम फ़रमाया, ऐ मेरे प्यारे तूने मेरे नाम को अपने पाँव से उठाकर सर पर पहुँचाया, मैं तुम्हारे नाम को फ़र्श से उठाकर अर्श तक पहुचाऊँगा। लिहाज़ा अल्लाह तआला ने उनको सिर्फ़ अपने नाम के अदब की वजह से अपनी मुहब्बत अता फ़रमा दी। जब महबूब से मुहब्बत होती है तो उसका नाम भी प्यारा लगता है और उसका काम भी प्यारा लगता है, उसकी याद में बैठने को दिल करता है। यह सब चीज़ें उस मुहब्बत के असरात हैं ان المحب لمن يحب مطيع महबूब की मुलाक़ात से दिल नहीं भरता चाहे जितनी मर्तबा हो।

(तमन्नाए दिल स० 48)

इमामे रब्बानी मुजद्दिद अलफ़सानी रह० के अदब की हद

इमामे रब्बानी मुजद्दिद अलफ़सानी रह० कि मैं बैठा हुआ था हदीस लिख रहा था। क़लम नहीं चल रहा था तो मैंने अपने हाथ के अंगूठे से क़लम को ज़रा सही किया तो स्याही लग गई। इसी हाल में मुझे तक़ाज़ा महसूस हुआ बैतुलख़ला जाने का। जब मैं वहाँ बैठने लगा तो बैठते ही मेरी नज़र अंगूठे पर पड़ी तो मैंने स्याही देखी, दिल में ख़्याल आया कि अगर तक़ाज़े से फ़ारिग़ हुआ तो हाथ धोएंगे और पानी की वजह से यह स्याही जो मैं लिखने में इस्तेमाल करता हूँ इस गंदे पानी में शामिल होगी जो अदब के ख़िलाफ़ है। मैंने तक़ाज़े को दबाया और बैतुलख़ला से बाहर आया और आकर मैंने स्याही को साफ़ जगह पर धोया। जैसे ही मैंने धोया उसी वक़्त इल्हाम हुआ कि अहमद सरहंदी! हमने जहन्नम की आग को तेरे ऊपर हराम कर दिया है। तो इल्म भी हुआ और अदब भी हो तो सोने पर सुहागा हुआ करता है। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 5/112)

रमज़ान के अदब पर ईमान व जन्नत नसीब

'नुज़हतुल मजालिस' किताब में एक वाक़िआ लिखा है कि एक मजूसी था। यह वह वक़्त था जब मुसलमान ग़ालिब थे मगर कुफ़्फ़ार उनके दर्मियान रहते थे। एक बार मजूसी के बेटे ने रमज़ानुल मुबारक के दिनों में खाना खाया। जब उसने खुलेआम खाना खाया तो उस मजूसी को बहुत गुस्सा आया, उसने बेटे को डाँट-डपट की कि तुझे हया नहीं आती कि मुसलमानों का मुक़द्दस महीना है, वे दिन में रोज़ा रखते हैं और तू दिन में इस तरह खुलेआम खा रहा है। ख़ैर बात आई गई हो गई। उस मजूसी के पड़ौस में एक बुज़ुर्ग रहते थे। जब उस मजूसी का इंतिक़ाल हो गया तो उन बुज़ुर्ग ने उसको ख़्वाब में

देखा कि वह मजूसी जन्नत की बहारों में है। वह बड़े हैरान हुए। उससे पूछने लगे कि आप तो मजूसी थे और मैं आपको जन्नत में देख रहा हूँ। वह जवाब में कहने लगा कि एक बार मेरे बेटे ने रमज़ानुल मुबारक में खुलेआम खाना खाया था और मैंने रमज़ानुल मुबारक के अदब की वजह से उसको डाँटा था। अल्लाह तआला को मेरा यह अमल इतना पसंद आया कि मौत के वक़्त मुझे कलिमा नसीब फ़रमाया दिया। इस तरह मुझे इस्लाम पर मौत आई और अब मैं जन्नत के मज़े ले रहा हूँ। (खुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 9/269)

उस्तादों के एहतिराम की अनोखी मिसाल

हज़रत शैख़ुल हिंद रह० ने तहरीक रेशमी रुमाल के दौरान इरादा फ़रमा लिया कि अब मैं हरमैन शरीफ़ैन (मक्का व मदीना शरीफ़) जाता हूँ। एक दिन आप दारुल उलूम देवबंद में चारपाई पर बैठ धूप में ज़मीन पर पाँव रखे किताब का मुताला कर रहे थे। उन दिनों मौलाना अनवर शाह कश्मीरी रह० हज़रत की ग़ैर मौजूदगी में बुख़ारी शरीफ़ पढ़ाते थे। इस दौरान उनकी नज़र हज़रत पर पड़ी। जब दर्स देकर थक गए तो तलबा से फ़रमाया कि आप थोड़ी देर बैठें, मैं अभी आता हूँ। उन्होंने दर्स रोका और दारुल हदीस से बाहर निकलकर सीधे हज़रत के पास आकर उनके क़दमों में बैठ गए। उसके बाद हज़रत से अर्ज़ करने लगे हज़रत! पहले आप यहाँ थे, जब हमें ज़रूरत पड़ती थी तो हम आपकी तरफ़ रुजू करते थे। आपने यहाँ से हिजरत का इरादा फ़रमा लिया है। इस तरह तो हम बेसाया हो जाएंगे। अल्लामा अनवर शाह कश्मीरी रह० ने यह अलफ़ाज़ कहे और रोना शुरू कर दिया यहाँ तक कि उन्होंने बच्चों की तरह बिलकना शुरू कर दिया। हज़रत शैख़ुल हिंद रह० ने भी उन्हें रोने दिया। जब उनके दिल की भड़ास निकल गई तो उस वक़्त हज़रत

शैखुल हिंद रह० ने उनको तसल्ली की बात कही और फ़रमाया, अनवर शाह! हम थे तो आप हमारी तरफ़ रुजु करते थे और जब हम चले जाएंगे तो फिर लोग इल्म हासिल करने के लिए तुम्हारी तरफ़ रुजू किया करेंगे। चुनाँचे शाह साहब को इस तरह तसल्ली की बातें करके वापस भेज दिया। जब शाह साहब चले गए तो हज़रत शैखुल हिंदं रह० के अपने दिल में ख़्याल आया कि इनको तो अपने उस्ताद की दुआओं की इतनी क़द्र है और आज मैं इतने बड़े काम के लिए जा रहा हूँ लेकिन आज मेरे सर पर तो उस्ताद का साया नहीं है जिनकी दुआ लेकर चलता। चुनाँचे यह सोचते ही उनको हज़रत नानौतवी रह० का ख़्याल आया और तबियत में रिक्क़त तारी हो गई। लिहाज़ा वहाँ से उठे और सीधे हज़रत नानौतवी रह० के घर गए, दरवाज़े पर दस्तक दी और डेयाढ़ी में खड़े होकर आवाज़ दी, अम्मा जी! मैं महमूद हसन हूँ अगर हज़रत नानौतवी रह० के जूते घर में पड़े हों तो वह भिजवा दें चुनाँचे अम्मा जी ने उनके जूते उनके पास भेज दिए। हज़रत शैखुल हिंद रह० ने अपने उस्ताद के जूते अपने सर पर रखे और अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से दुआ की, ऐ अल्लाह! आज मेरे उस्ताद मेरे सर पर नहीं हैं। मैं उनके जूते सर पर रखकर बैठा हूँ, ऐ अल्लाह इस निस्बत की वजह से तू मेरी हिफ़ाज़त फ़रमा लेना और मुझे अपने मक़सद में कामयाब फ़रमा देना तो उस्तादों की क़द्र उस वक़्त आती है जब देखने के लिए सिर्फ़ उनके जूते बाक़ी रह जाते हैं।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक्क़ार 8/106)

अल्लामा अनवर शाह कश्मीरी रह० और किताब का अदब

मुफ़्ती-ए-हिंद हज़रत मौलाना मुफ़्ती किफ़ायतुल्लाह रह० ने एक बार पढ़ने वालों से पूछा कि बताओ अनवर शाह, 'अल्लामा अनवर

शाह कश्मीरी रह०' कैसे बने। अब जिसको तफ्सीर के साथ ज़्यादा लगाव था उसने कहा कि बड़े मुफ़स्सिर थे, जिसको हदीस पाक के साथ ज़्यादा लगाव था उसने कहा मुहद्दिस थे, जिनको अश्आर के साथ ज़्यादा दिलचस्पी थी उसने कहा कि उनका कलाम बड़ा आला था। हज़रत ख़ामोश रहे। तलबा ने कहा हज़रत! आप ही बता दीजिए। उन्होंने फ़रमाया, मैं क्या बताऊँ, यह सवाल खुद उनसे पूछा गया कि हज़रत! आप अनवर शाह कश्मीरी रह० कैसे बने? तो उन्होंने जवाब दिया कि अल्लाह तआला ने मुझे इल्म के और किताब के अदब की वजह से अल्लामा अनवर शाह कश्मीरी बना दिया और अदब कितना फ़रमाते थे कि अगर हदीस पाक की किताब पड़ी है और पढ़ रहे हैं और हाशिया पढ़ रहे तो हाशिए का रुख़ बदल कर और खुद बैठकर हाशिए को नहीं बदलते थे बल्कि उठकर दूसरी तरफ़ आते और फिर हाशिये का मुताला किया करते थे और फ़रमाते थे कि मैंने कभी किसी किताब को बे वुज़ू हाथ भी नहीं लगाया। हदीस की किताब को भी बे वुज़ू हाथ नहीं लगाते थे और फ़रमाते थे कि मैं किताबों के रखने में भी ख़्याल करता था। कभी मैंने क़ुरआन पाक के ऊपर तफ़सीर नहीं रखी, तफ़सीर के ऊपर हदीस की किताब नहीं रखी, हदीस की किताब के ऊपर फ़िक़्ह की किताब को नहीं रखा, फ़िक़्ह की किताब के ऊपर तारीख़ की किताब नहीं रखी। मैं किताबों के रखने में भी उनके दर्जात का ख़्याल रखता था। इस अदब की वजह से परवरदिगार ने क़ुबूलियत अता फ़रमाई।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 5/213)

चार नेमतों का ख़ास अदब कीजिए

हमारे बड़े बुज़ुर्ग इल्म के साथ अदब का भी बहुत एहतिमाम

फ़रमाया करते थे। हज़रत थानवी रह० फ़रमाते थे कि मैंने हमेशा चार बातों की पाबंदी की:

एक तो यह कि मेरी लाठी का जो सिरा ज़मीन पर लगता था उसको कभी काबे की तरफ़ करके नहीं रखा। मैंने बैतुल्लाह शरीफ़ का इतना एहतिराम किया।

दूसरी बात यह कि मैं अपने रिज़्क़ का इतना एहतिराम करता था कि खुद हमेशा पाएंती की तरफ़ बैठता और खाने को सिरहाने की तरफ़ रखता, इस तरह बैठकर खाना खाता था।

तीसरे जिस हाथ से तहारत करता था मैं उस हाथ से पैसे नहीं पकड़ता था क्योंकि यह अल्लाह का दिया हुआ रिज़्क़ है।

चौथी बात यह कि जहाँ मेरी किताबें रखी होती हैं मैं अपने इस्तेमाल शुदा कपड़ों को उन दीनी किताबों के ऊपर कभी नहीं लटकाया करता था। (खुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 2/199)

मगस (मक्खी) के अदब पर मग़फ़िरत

एक किताब में इस आजिज़ ने एक अजीब वाक़िआ पढ़ा। एक ख़तीब खुशनवीस कातिब थे जो क़ुरआन पाक लिखा करते थे। उन्होंने अपना मुशाहिदा बयान किया है कि जब मैं क़ुरआन पाक लिखा करता था तो हर दफ़ा लिखने के लिए जब मैं क़लम उठाता तो कोई न कोई मक्खी क़लम के साथ आकर स्याही चूसने के लिए बैठती। वह कहते हैं कि मैंने साठ क़ुरआन पाक शुरू से लेकर आख़िर तक लिखे हैं लेकिन एक बात मेरे मुशाहिदे में आई कि क़ुरआन पाक की हर आयत पर स्याही में से मक्खी ने हिस्सा लिया लेकिन जब मैं यह आयत लिखता था:

﴿ولا تقربوا مال اليتيم﴾

कि यतीम के माल के क़रीब भी न जाओ।

जब मैं इसके लिए स्याही लेता था तो साठ क़ुरआन पाक लिखते हुए कभी मक्खी ने उसमें से हिस्सा न लिया। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के इस हुक्म का एक मक्खी जैसे जानदार में भी इतना अदब हालाँकि यह हुक्म इंसान को हो रहा है लेकिन इसको लिखने के लिए जो स्याही ली जा रही है, मक्खी भी उस स्याही को चूसना पसंद नहीं करती। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 5/216)

क़िब्ला रुख़ बैठने की फ़ज़ीलत

मैंने एक किताब में वाक़िआ पढ़ा है कि एक दोस्त फ़रमाते थे कि मेरे दो तालिबे इल्म थे और दोनों क़ुरआन पाक याद करने वाले थे। एक की बैठक ऐसी थी कि जिसका रुख़ क़िबले की तरफ़ था और दूसरे की पीठ क़िबले की तरफ़ थी। वह फ़रमाते हैं कि जिसका रुख़ क़िबले की तरफ़ था वह दूसरे से एक साल पहले क़ुरआन पाक का हाफ़िज़ बन गया। इसलिए हमारे बड़े भी अपने रुख़ को क़िबले की तरफ़ रखने की पाबंदी फ़रमाया करते थे। हर जगह मुमकिन नहीं होता लेकिन जहाँ मुमकिन हो इंसान कोशिश करे।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 5/212)

निस्बत, बरकत

और

क़यामत

निस्बत और बरकत व क़यामत

निस्बत की लाज रखिए

जिसको किसी से निस्बत हो जाती है, वह उस निस्बत की लाज रखता है। एक बार हज़रत यूसुफ़ के पास कहत के ज़माने में एक लड़का ग़ल्ला लेने आया। आपने उसे ग़ल्ला दे दिया उसके बाद उसने आपको कोई बात बताई तो आप इतने ख़ुश हुए कि उसको और ज़्यादा ग़ल्ला दिया और ईनाम व इज़्ज़त के साथ रुख़्सत किया। अल्लाह तआला ने वही नाज़िल फ़रमाई ऐ मेरे प्यारे पैग़म्बर! आपने इस लड़के का इतना ज़्यादा इकराम क्यों किया? अर्ज़ किया, रब्बे करीम! मैंने शुरू में वह हिस्सा दिया जो बनता था लेकिन उसने मुझे बताया कि मैं वह लड़का हूँ जिसने बचपन में आपकी पाकदामनी की गवाही दी थी। इस बात को सुनकर मेरे दिल में मुहब्बत की तड़प उठी कि यह लड़का वह है जिसने बचपन में मेरी गवाही दी थी, आज यह बेहाल होकर मेरे पास कुछ लेने के लिए आया है मैं क्यों न इसकी गवाही की वजह से इसका इकराम करूं। इसलिए अल्लाह तआला! मैंने इसका इकराम किया। मैंने उसे वह कुछ दिया जो मेरे इख़्तियार में था। रब्बे करीम ने 'वही' नाज़िल फ़रमाई ऐ मेरे पैग़म्बर! जिसने आपकी पाकदामनी की गवाही दी आपने उसको उतना कुछ दिया जो आप दे सकते थे। आपने वह कुछ किया जो आपकी शान के मुताबिक़ था। याद रखिए जो बंदा दुनिया मेरी ख़ुदाई की गवाही देगा, मेरी रबूबियत की गवाही देगा जब वह मेरा बंदा क़यामत के दिन मेरे सामने आएगा तो मैं परवरदिगार भी वह कुछ दूँगा जो मेरी शान के मुताबिक़ होगा। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 1/75)

नबी की निस्बत पर घोड़ा भी ताज़ा दम

शाम की फतेह में एक सहाबी हज़रत ज़रार बिन अज़्रू के बड़े अजीब व ग़रीब वाकिआत हैं। मेरे ख़्याल से वह इस किताब के हीरो हैं। इनके बारे में लिखा है कि एक बार उन्हें लगातार आठ घंटे जिहाद करना पड़ा। आख़िरकार कफ़िरों के घेरे में आ गए। लगातार आठ घंटे जिहाद करने की वजह से उनका घोड़ा भी थक चुका था। वह घोड़े को आगे बढ़ाने की कोशिश करते थे मगर वह आगे नहीं जाता था। जब उन्होंने महसूस किया कि मेरा घोड़ा थक चुका है तो उन्होंने सोचा कि अब तो मैं गिरफ़्तार हो जाऊँगा। किताब में लिखा है कि वह उस घोड़े पर झुके और उसकी पेशानी पर मुहब्बत से हाथ फेरकर घोड़े से कहा, ऐ घोड़े! तू थोड़ी देर के लिए मेरा साथ दे दे वरना नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रौज़े पर जाकर तेरी शिकायत करूंगा। जब उन्होंने यह अलफ़ाज़ कहे तो घोड़ा हिनहिनाया और ऐसे दौड़ा जैसे कोई ताज़ा दम घोड़ा दौड़ता है। इस तरह वह घोड़ा उनको कुफ़्फ़ार के नरग़े से निकालकर बाहर ले आया, सुब्हानअल्लाह। कुछ वक़्त के बाद वह गिरफ़्तार हो गए। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु ने देखा कि हज़रत ज़रार रज़ियल्लाहु अन्हु गिरफ़्तार हो चुके हैं तो वह बड़े हैरान हुए। इतने में कुछ सवार उनके पास आकर कहने लगे कि हमें ज़रार के पीछे जाना चाहिए ताकि हम उनको आज़ाद करवा लाएं। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 8/197)

अहदे नबुव्वत से क़ुर्बत की निस्बत जो पा गया

हकीम तिर्मिज़ी रह० को अल्लाह तआला ने दीन का हकीम बनाया था और दुनिया की भी हिकमत दी थी। तिर्मिज़ के रहने वाले थे। इस वक़्त दरिया आमू के बिल्कुल किनारे पर उनका मज़ार है। इस आजिज़ को उनके मज़ार पर हाज़िरी का शर्फ़ हासिल हो चुका

है। आप वक़्त के एक बहुत बड़े मुहद्दिस भी थे और तबीब भी थे। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उनके अपने इलाक़े में आम क़ुबूलियत दी अता फ़रमा रखी थी। आप ऐन जवानी के वक़्त एक दिन अपने मतब में बैठे थे कि एक औरत आई और उसने अपना चेहरा खोल दिया। वह बड़ी हसीना जमीला थी। कहने लगी कि मैं आप पर आशिक़ हूँ, बड़ी मुद्दत से मौक़े की तलाश में थी, आज तन्हाई मिली है, आप मेरी ख़्वाहिश पूरी करें। आपके दिल पर ख़ौफ़े ख़ुदा ग़ालिब हुआ तो रो पड़े। आप इस अंदाज़ से रोए कि वह औरत नादिम होकर वापस चली गई। वक़्त गुज़र गया और आप इस बात को भूल भी गए। जब आपके बाल सफ़ेद हो गए और काम भी छोड़ दिया तो एक बार आप मुसल्ले पर बैठे थे ऐसी ही आपके दिल में ख़्याल आया कि फ़लाँ वक़्त जवानी में एक औरत ने अपनी ख़्वाहिश का इज़्हार किया था। उस वक़्त अगर मैं गुनाह कर लेता तो आज मैं तौबा कर लेता लेकिन जैसे ही दिल में यह ख़्याल गुज़रा तो रोने बैठ गए। कहने लगे ऐ रब्बे करीम! जवानी में तो यह हालत थी कि मैं गुनाह का नाम सुनकर इतना रोया कि मेरे रोने से वह औरत नादिम होकर चली गई। अब मेरे बाल सफ़ेद हो गए तो क्या मेरा दिल स्याह हो गया। ऐ अल्लाह मैं तेरे सामने कैसे पेश हूँगा। इस बुढ़ापे के अंदर जब मेरे जिस्म में क़ुव्वत ही नहीं रही तो आज मेरे दिल में गुनाहों को ख़्याल क्यों पैदा हुआ?

रोते हुए इसी हाल में सो गए। ख़्वाब में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत नसीब हुई। पूछा हकीम तिर्मिज़ी! तू क्यों रोता है? अर्ज़ किया मेरे महबूब! जब मेरी जवानी का वक़्त था, जब शहवतों का दौर था, जो क़ुव्वत का ज़माना था, जब अंधेपन का वक़्त था, उस वक़्त तो अल्लाह के डर का यह आलम था कि गुनाह की बात सुनकर इतना रोया कि वह औरत नादिम होकर चली गई लेकिन अब जब बुढ़ापा आया है तो ऐ अल्लाह के महबूब! मेरे बाल सफ़ेद

हो गए। लगता है कि मेरा दिल इस क़द्र स्याह हो गया है कि मैं सोच रहा था कि मैं उस औरत की ख़्वाहिश पूरी कर देता और बाद में तौबा कर लेता। मैं आज इसलिए बहुत परेशान हूँ। रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तसल्ली देते हुए फ़रमाया, यह तेरी कमी और क़ुसूर की बात नहीं, जब तू जवान था तो उस ज़माने को मेरे ज़माने से क़ुर्ब का ताअल्लुक़ था। उन बरकतों की वजह से तेरी कैफ़ियत इतनी अच्छी थी कि गुनाह की तरफ़ ख़्याल ही न गया। अब तेरा बुढ़ापा आ गया है, तो मेरे ज़माने से दूरी हो गई है। इसलिए अब दिल में गुनाह का वसवसा पैदा हो गया। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 4/80)

निस्बते बैअत की बरकत मौत के वक़्त भी

क़ारी मुहम्मद तैय्यब साहब रह० के वाअज़ में यह बात लिखी है कि एक औरत उनसे बैअत हुई। उसके बाद उसका हज़रत से राब्ता भी न रहा। अलबत्ता वह उनके बताए हुए मामूलात पर अपनी ताक़त भर अमल करती रही। बीस साल के बाद उस पर मौत की कैफ़ियत तारी हुई तो वह अचानक कहने लगी वह देखो हज़रत आ रहे हैं, फिर वह कहने लगी वह देखो हज़रत मेरे पास आ गए, फिर कहने लगी हज़रत मुझे कुछ पढ़ा रहे हैं। उसने ख़ुद ही पूछा हज़रत! आप मुझे क्या पढ़ा रहे हैं? फिर ख़ुद कहने लगी कि अच्छा मैं पढ़ती हूँ चुनाँचे उसने पढ़ा, ﴿لا الٰه الا اللّٰه محمد رسول اللّٰه﴾ ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूल्लाह और जान अल्लाह के सुपुर्द के हवाले कर दी।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 7/135)

जिस क़ब्रिस्तान को अल्लाह वालों से निस्बत हो गई

हज़रत मौलाना अहमद अली लाहौरी रह० के हालाते ज़िन्दगी में लिखा है कि जब उनकी वफ़ात हुई तो जहाँ उनको दफ़न किया गया। वहाँ से ख़ुशबू आती रही है, जैसे हज़रत इमाम बुख़ारी रह० को दफ़न

किया गया तो खुशबू आती थी। अब लोग हैरान होते हैं कि क़ब्र से खुशबू कैसे आई। ओ खुदा के बंदे! इसमें ताज्जुब की कौन सी बात है अगर फूल ज़मीन पर पड़ा हो तो मिट्टी के अंदर खुशबू आ जाती है। हम भी यही कहते हैं कि यह हज़रात भी फूल की मानिन्द थे।

بگفتا من گلے ناچیز بودم ولیکن مدت باگل نشستم
جمال ہمنشیں در من اثر کرد وگرنہ من ہماں خاکم کہ ہستم

वे फूल थे। उस फूल की खुशबू मिट्टी में समा गई थी और फिर मिट्टी से इंसानों को महसूस होने लग गई थी।

काफ़ी अरसे के बाद हज़रत मौलाना अहमद लाहौरी रह० अपने ख़लीफ़ाओं में से किसी को ख़्वाब में नज़र आए। उसने पूछा हज़रत! आगे क्या मामला बना? हज़रत ने फ़रमाया, अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुज़ूर में मेरी पेशी हुई। (हज़रत बहुत ज़्यादा रोने वाले थे। उनकी तबियत ग़मज़दा रहती थी) हज़रत ने ख़्वाब में बताया कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया, अहमद अली! तुम मुझसे इतना क्यों डरता था? यह सुनकर मैं और ज़्यादा डर गया कि मुझसे पूछा जा रहा है। जब मैं और ज़्यादा डर गया तो मुझे फ़रमाया, अहमद अली! तुम और डर गए, आज तुम्हारे डरने का दिन नहीं बल्कि ईनाम पाने का दिन है। हमें तुम्हारा इकराम करना है लिहाज़ा हमने तुम्हारी मग़फ़िरत कर दी और जिस क़ब्रिस्तान में तुम्हें दफ़न किया गया हमने वहाँ के भी तमाम मुर्दों की मग़फ़िरत कर दी। सुब्हानअल्लाह निस्बत भी अजीब चीज़ है।

निस्बते बैअत से दिल की काया पलट गई

हज़रत मुर्शिदे आलम रह० के बड़े ख़लीफ़ा हज़रत मौलाना मुहम्मद इस्माईल वाडी दामत बरकतुहुम इंगलैंड में हैं। उन्होंने खुद

एक वाक़िआ सुनाया। चूँकि उन्होंने यह वाक़िआ खुद सुनाया इसलिए यह आजिज़ भी आपको सुनाने की हिम्मत कर रहा है। यह वाक़िआ सुनते हुए निस्बत की बरकत का ख़्याल रखिएगा।

फ़रमाने लगे कि मेरा एक बेटा मुहम्मद क़ासिम (इस आजिज़ की उनसे भी मुलाक़ात हुई) कहने लगे कि वह अंग्रेज़ी पढ़कर युनीवर्सिटी में प्रोफ़सर बन गया। प्रोफ़ेसर बनने के बाद उसके ख़्यालात दहरियत की तरफ़ चले गए। जब यहाँ तक नौबत पहुँच जाए तो फिर नमाज़ रोज़ा तो दूर की बात होती है। जिसको वजूदे बारी तआला में ही शक पड़ जाए, दीन में ही शक पड़ जाए तो फिर आमाल करना तो दूर की बात रह जाती है। घर के सारे बच्चे हाफ़िज़, क़ारी और आलिम और बेटियाँ भी हाफ़िज़ा, आलिमा, फ़ाज़िला मगर उनका यह बेटा दूसरों से ज़रा अनोखा बना क्योंकि युनीवर्सिटी के माहौल में तालीम हासिल की थी। वह ड्राविन थ्योरी के पीछे लग गए जिससे उन्हें वजूदे बारी तआला के बारे में शक पड़ गया और ज़िन्दगी में ग़फ़लत आ गई।

फ़रमाने लगे मैंने एक दिन हज़रत मुर्शिदे आलम रह० की ख़िदमत में अर्ज़ किया, हज़रत! सारा घराना उलमा का है, बच्चियाँ भी आलिमा, फ़ाज़िला हैं मगर यह बच्चा घर में ऐसा बन गया कि इसका अजीब हाल है। हमारे दिल में हर वक़्त दुख और ग़म है, इसकी वालिदा भी रोती है और मैं भी रोता हूँ। मेहरबानी फ़रमाकर कोई ऐसी दुआ फ़रमा दें कि अल्लाह तआला उसके दिल को बदल दे। हज़रत मुर्शिदे आलम रह० ने फ़रमाया कि उससे कहो कि वह मुझसे बैअत कर ले। अब उसकी वालिदा ने समझाया, बेटा! तुम बैअत कर लो। उसने जवाब दिया जब मैंने नमाज़ ही नहीं पढ़नी तो मुझे बैअत होने का क्या फ़ायदा? मौलाना ने हज़रत की ख़िदमत में फिर अर्ज़ किया कि हज़रत! मेरा बेटा कहता है कि जब न नमाज़ पढ़नी है और न क़ुरआन पढ़ना है तो फिर बैअत का क्या फ़ायदा?

हज़रत ने फ़रमाया कि क्या मैंने उसे कहा है कि वह नमाज़ पढ़े और क़ुरआन पढ़े, मैंने तो सिर्फ़ यह कहा है कि बैअत कर ले। यह अजीब बात है जो आम आदमी को समझ में नहीं आती।

अगले दिन उसकी वालिद ने फिर कहा, बेटा! यह बुज़ुर्ग हमारे यहाँ तश्रीफ़ लाते हैं, तुम्हारी सब बहनें और भाई उनसे बैअत हैं, मैं भी बैअत हूँ, तुम भी बैअत हो जाओ। इस तरह घर के सारे अफ़राद बैअत हो जाएंगे। उसने कहा अब्बू! मैंने करना तो कुछ नहीं है। बाप ने कहा बेटा! तुम कुछ न करना, सिर्फ़ बैअत हो जाओ। उसने दिल में सोचा चलो अब्बू राज़ी हो जाएंगे इसलिए बैअत ही हो जाता हूँ। अब उस नौजवान को क्या पता था कि किसी अल्लाह वाले के हाथ में हाथ देकर जो कुछ कलिमात पढ़ लिए जाते हैं वह बंदे के दिल की दुनिया बदलकर रख दिया करते हैं। वह इस राज़ से वाक़िफ़ नहीं था। इसलिए कहने लगा अच्छा जी मैं बैअत हो जाता हूँ। उसने अगले दिन हज़रत के हाथ पर बैअत कर ली।

बैअत होने के बाद उसके दिल की सोच बदलना शुरू हो गई। उस ने हज़रत की सोहबत में बैठना शुरू कर दिया। नमाज़ें भी शुरू हो गयीं, तिलावत भी शुरू हो गई, ज़िन्दगी के दिन व रात बदलने शुरू हो गए यहाँ तक कि उसने इल्म पढ़ना शुरू कर दिया, तहज्जुद गुज़ार हो गया, इतना ज़ाकिर शाग़िल बना कि उसको कुछ सालों के बाद हज़रत ने ख़िलाफ़त अता फ़रमा दी। वह नौजवान जो दहरिया था, ख़ुदा बेज़ार ज़हनियत का मालिक था उस पर सिर्फ़ बैअत के कुछ कलिमात पढ़ने का इतना असर हुआ कि उसके दिल में इश्क़े इलाही का ऐसा शोला पैदा हुआ कि आख़िरकार हमारे हज़रत रह० ने उसको इजाज़त व ख़िलाफ़त अता फ़रमा दी। इस आजिज़ की उनसे मुलाक़ात हुई। और वहाँ रियूनियन लोगों ने बताया कि उनकी वजह से सैकड़ों नौजवान कुफ़्र से तौबा करके इस्लाम के अंदर दाख़िल हो चुके हैं।

मेरे दोस्तो! जो लोग कलिमा भी नहीं पढ़े होते उनके दिलों पर इन कलिमात का इतना असर होता है तो जो कलिमा गो हों और दिल में तलब व तड़प रखने वाले हों, घरों से चलकर आए हों, अगर वे यह कलिमात पढ़ेंगे और वह निस्बत का ताल्लुक़ हासिल करेंगे तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उनके दिल की दुनिया को कैसे बदलेंगे।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 6/72)

बासी रोटी को भी निस्बते क़ुर्ब मिल गई

एक बुज़ुर्ग के सामने जब भी दस्तरख़्वान पर रोटियाँ रखी जाती हैं तो वह ठंडी रोटी पहले खाते और गर्म रोटी बाद में। किसी ने कहा हज़रत! जब ठंडी और गर्म दोनों क़िस्म की रोटियाँ मौजूद हों तो जी तो चाहता है कि गर्म रोटियाँ पहले खाएं क्योंकि ठंडी रोटी तो ठंडी हो चुकी है। इसलिए वह बाद में खानी चाहिए। मगर अल्लाह वालों की निगाह कहीं और होती हैं। उन्होंने फ़रमाया, नहीं यह ठंडी और गर्म दोनों मेरे सामने होती हैं, मैं इनमें नज़र दौड़ाता हूँ और अपने दिल से पूछता हूँ कि ऐ दिल! तेरा जी चाहता है कि गर्म रोटी खाकर लुत्फ़ उठाए मगर सोच तो सही कि ठंडी रोटी पहले पक्की इसलिए उसको क़ुर्ब की निस्बत ज़्यादा हासिल है और गर्म रोटी बाद में पक्की है इसलिए उसको दूर की निस्बत है। लिहाज़ा क़ुर्ब की निस्बत वाली रोटी पहले खाता हूँ और बोअद (दूरी वाली) रोटी को बाद में खाता हूँ। अंदाज़ा लगाइए कि दस्तरख़्वान पर बैठे हुए इन छोटी-छोटी बातों में भी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के महबूब से जो निस्बत होती थी अल्लाह वाले उस निस्बत का भी ख़्याल करते हैं।(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 4/82)

निस्बते इत्तिहादी के पैकर (सूरत) कौन हैं?

एक बार चौदह सौ सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम हुज़ूरे

अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हमराह उमरे की नीयत से मदीने तैय्यबा चले और मक्का मुकर्रमा के करीब पहुँचकर नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने कुफ़्फ़ार से सुलह के लिए बात तय कर दी और सहाबा किराम से फ़रमा दिया कि एहराम खोल दो, हदी (क़ुर्बानी) के जानवरों को ज़िब्ह कर दो और तुम वापस चलो। सहाबा किराम हैरान हुए कि हम तो दिल में उमरा करने की तमन्ना लेकर चले थे, हम कैसे वापस जाएं। सहाबा किराम को हैरानी इस बात पर हुई कि एक तरफ़ तो ज़ाहिर में अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इतना दबकर सुलह कर रहे हैं और दूसरी तरफ़ आयते उतर रही हैं कि यह फ़तेह मुबीन है। उस वक़्त उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास पहुँचे और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के महबूब! हमने इन काफ़िरों की सारी शर्तें मान लीं और अपनी सब शर्तें छोड़ दी हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, उमर! अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने हमें फ़तेह मुबीन अता फ़रमा दी है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ख़ामोशी से वापस चले आए, वापस आकर हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा, अबू बक्र! क्या ऐसा नहीं है कि हमने उनकी सारी शर्तें मान लीं हालाँकि अल्लाह ने इस्लाम को इज़्ज़त दी है मगर हम तो दबकर सुलह कर रहे हैं। हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी वही अलफ़ाज़ अदा किए, फ़रमाया, उमर! तुम्हारी आँख देख रही है कि हम ने दबकर सुलह की है मगर मेरे मालिक का फ़रमान है कि यह फ़तेह मुबीन है। सुब्हानअल्लाह! सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम में से हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़ात ही ऐसी थी जिसने इसको उस वक़्त फ़तेह मुबीन समझ लिया था। जब सब सहाबा किराम के यह बात थोड़ी देर के लिए समझ में न आई थी। जब नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जानवर ज़िब्ह किया और

अपना ऐहराम उतारा तो बाक़ी सहाबा को भी शरह सदर हो गया मगर सैय्यदना हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को शरह सदर महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़ौल मुबारक से ही हो गया। इससे साबित हुआ कि उनकी निस्बत इत्तिहादी नसीब थी।

दस्ते नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बरकत देखी आपने?

सैय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने रोटियाँ लगायीं। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने भी एक दो बना कर दीं। काफ़ी देर के बाद सब पक गयीं तो हैरान हुई कि इसमें से एक दो पक ही नहीं रहीं। इस तरह आटे का आटा मौजूद है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा बेटा! क्या हुआ? अर्ज़ किया, हुज़ूर दो तीन रोटियाँ ऐसी हैं जो पक नहीं रहीं। फ़रमाया, यह वही रोटियाँ होंगी जिन पर तेरे वालिद के हाथ लग गए। अब आग इस आटे पर असर नहीं कर सकती। तो नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम जिस चीज़ को छू लेते थे उस पर यूँ असरात हो जाते थे। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 92)

हुज़ूर के छूने की बरकत सुनी आप ने?

एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैं हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु के घर गया। मैं खाना खा रहा था। उन्होंने अपनी बाँदी से कहा कि तौलिया लाओ। जब वह तौलिया लायीं तो देखा कि मैला कुचैला था। हज़रत अनस ने उसको गुस्से की नज़र से देखा और कहा कि जाओ उसे साफ़ करके लाओ। फ़रमाते हैं कि भाग कर गई और जलते हुए तन्दूर के अंदर तौलिये को फेंक दिया। थोड़ी देर के बाद उसने वह तौलिया बाहर निकला तो बिल्कुल साफ़ सुथरा था,

वह गर्म-गर्म तौलिया मेरे पास लाई। मैंने हाथ तो साफ़ कर लिए मगर हज़रत अनस की तरफ़ सवालिया नज़रों से देखा। वह मुस्कराए और कहने लगे कि एक बार नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरे घर दावत पर तशरीफ़ लाए थे, मैंने यह तौलिया महबूब को हाथ मुबारक साफ़ करने के लिए दिया था। जब से महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हाथ साफ़ किए आग ने इस तौलिये को जलाना छोड़ दिया है। जब यह तौलिया मैला हो जाता है तो हम इसे तन्दूर में डाल देते हैं। आग मैल कुचैल को खा लेती है और हम साफ़ तौलिया बाहर निकाल लेते हैं, सुब्हानअल्लाह।

(खुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 7/120)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के रुमाल की तासीर अजीब

सैय्यदना हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के दौरे ख़िलाफ़त में मदीना तैय्यबा में एक बार आग निकली। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत तमीम दारी रज़ियल्लाहु अन्हु को भेज दिया। उन्होंने अपने रुमाल को चाबुक की तरह बना लिया और उस रुमाल को आग पर मारना शुरू कर दिया। आग इस तरह पीछे हटने लगी जैसे चाबुक के लगने से जानवर भाग रहा होता है क्योंकि महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुआएं थीं। इसलिए अल्लाह तआला ने उस कपड़े में ऐसी तासीर रख दी कि उसकी बरकत से आग हटती हटती जहाँ से आई थी आख़िरकार वहीं पहुँच गई।

(खुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 7/120)

हज़रत जाबिर के खाने में बरकतों का ज़ाहिर होना

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु एक सहाबी हैं।

उनकी बीवी के पास बकरी का एक छोटा सा बच्चा था। ख़न्दक खोदी जा रही थी। उनके दिल में ख़्याल आया कि नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम कई दिनों से ख़न्दक़ खोद रहे हैं, पता नहीं कि खाना भी मिला है या नहीं। लिहाज़ा मैं अपने घर खाना बना देती हूँ। अल्लाह के महबूब तशरीफ़ ले आएं और मेरे घर में खाना खा लें और आराम फ़रमा लें। इसलिए उसने अपने शौहर को भेजा कि जाएं और अल्लाह के महबूब को दावत दें कि हज़रत! आप खुद तशरीफ़ लाएं और अपने साथ दो तीन हज़रात को भी ले आएं! हमारे पास तीन चार बंदों का खाना है। हम चाहते हैं कि आप तशरीफ़ लाएं और खाना खा लें। हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु ने आकर नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम को दावत दी। दावत का पैग़ाम सुनकर नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने पूरी फ़ौज में ऐलान करवा दिया कि जी आज जाबिर बिन अब्दुल्लाह के घर में दावत है और सब मुजाहिदीन खाना खाने के लिए उनके घर चलें। जब हज़रत जाबिर ने यह सुना तो तेज़ी से घर की तरफ़ चले ताकि जाकर बताऊँ कि यह मस्अला बन गया है। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इर्शाद फ़रमायाः

जाबिर! हमारे आने का इंतिज़ार करना। हंडिया चूल्हे पर रहे और रोटियाँ चादर के अंदर छुपी रहें। मैं खुद आकर शुरू कराऊँगा। उन्होंने घर जाकर बीवी से कहा अब नौ सौ आदमी आ रहे हैं। उनकी बीवी बड़ी समझदार थी। उसने कहा अच्छा मुझे एक बात बताओ कि उन नौ सौ आदमियों को दावत आपने दी या नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने ऐलान करवाया है। वह कहने लगे कि मैंने तो सिर्फ़ नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम को दावत दी थी। आगे नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने ऐलान करवाया है। यह सुनकर कहने लगी, अब फ़िक्र की कोई बात नहीं है। जब खाना तैयार हुआ तो नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम तशरीफ़ ले गए। सहाबा किराम भी पहुँच

गए। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम खुद तक़्सीम करने बैठ गए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रोटियाँ निकाल निकालकर देते रहे और सालन भर भरकर देते रहे यहाँ तक कि नौ सौ आदमियों ने पेट भरकर खाना खाया और पूरा लश्कर पेट भरकर वापस आ गया। बाद में जब हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु ने देखा तो सालन भी उतना ही था और रोटियाँ भी उतनी ही थीं। सुब्हानअल्लाह।

(खुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 180)

इधर दूध का एक प्याला और उधर अस्हाबे सुफ़्फ़ा रज़ियल्लाहु अन्हुम

हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाह अन्हु कई कई दिनों तक भूखे रहते थे। वह फ़रमाते हैं कि एक दिन मुझे भूख लगी हुई थी। मैं भूख की वजह से इतना तंग था। मैंने सोचा कि नमाज़े इशा पढ़कर मस्जिदे नबवी में बैठ जाऊँगा और कोई भी अपने घर ले जाकर खाना खिला देगा। इन हज़रात को मेहमान नवाज़ी की आदत थी। कहने लगे मैं बैठा था हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु तशरीफ़ लाए। उन्होंने सलाम तो किया लेकिन खाने की दावत नहीं दी हालाँकि उनकी आदत ऐसी नहीं थी। मैं समझ गया कि आज उनके घर भी कुछ नहीं है वरना मुझे दावत ज़रूर देते, फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु आए। उन्होंने भी सलाम किया और चले गए। मैं समझ गया कि आज उनके घर में भी फ़ाक़ा है। उनके बाद नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम तशरीफ़ लाए। मुझे देखकर पहचान गए और मुस्कराकर फ़रमाया अबू हुरैरह! आओ। तुझे कुछ खिलाते हैं। मैं कई दिनों से भूखा था लिहाज़ा खुशी खुशी अल्लाह के महबूब के साथ चलने लगा। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने घर में पैग़ाम भिजवाया कि घर में कुछ

खाने को है तो दो। उम्मुल मुमिनीन रज़ियल्लाहु अन्हा ने जवाब दिया कि खाने को तो कुछ नहीं हाँ पीने के लिए दूध का प्याला पड़ा है। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया, चलो वही दे दो। अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब मैंने सुना कि खाने को कुछ नहीं सिर्फ़ दूध का प्याला है तो मुझे महसूस हुआ कि इधर भी फ़ाक़ा है। फिर मैंने सोचा कि चलो दूध का प्याला तो पीते हैं। अल्लाह की शान कि जब वह दूध का प्याला नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के हाथों में आया तो अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, अबूहुरैरह जाओ, अस्हाबे सुफ़्फ़ा को बुला लाओ। अस्हाबे सुफ़्फ़ा सत्तर आदमी थे। फ़रमाते हैं कि मैं सोच में पड़ गया अगर मैं उन सत्तर बंदों को बुलाकर लाऊँगा तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इर्शाद फ़रमाएंगे कि अब तुम इनको दूध पिलाओ। इसका मतलब यह है कि मेरा नम्बर आख़िर पर आएगा पता नहीं आज मेरे लिए बचेगा या नहीं बचेगा। बहरहाल मैं गया और अस्हाबे सुफ़्फ़ा को बुला लाया।

जब सत्तर अस्हाबे सुफ़्फ़ा रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन आ गए तो नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने मुझे इर्शाद फ़रमाया, अबूहुरैरह! इन सबको पिला दूध पिलाओ। कहते हैं कि मैंने प्याला लिया और एक सहाबी को पीने के लिए दे दिया और देखने लगा कि कुछ बचता है या नहीं। जब उसका पेट भर गया तो उसने प्याला वापस दे दिया। मैंने देखा कि कोई ख़ास कमी नहीं आई थी। फिर मैंने दूसरे सहाबी को दिया, यहाँ तक मैंने सत्तर बंदों को दूध का वह प्याला पिलाया लेकिन अभी भी दूध मौजूद था। उसके बाद वह प्याला मेरे हाथों में आया तो नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम मुझे फ़रमाने लगे, अबूहुरैरह! अब तू पी ले। तो हमने ख़ूब सैर होकर पिया। जब मेरा पेट भर गया और मैंने बस कर दी और नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इर्शाद

फ़रमाया, अबूहुरैरह और पी तो मैंने और पिया यहाँ तक कि ख़ूब पेट भर गया। अब जब हमने प्याला हटाया तो अल्लाह के महबूब देखकर मुस्कराए और फ़रमाए और फ़रमाया, अबू हुरैरह! और पी ले। मैंने फिर प्याला मुँह से लगाया और इतना पी लिया कि मुझे महसूस हुआ कि अब तो यह बाहर आ जाएगा। मैंने कहा ऐ अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! अब मेरा पेट भर गया है। नबी अलैहिस्सलाम मुस्कराए और आप ने वह दूध का प्याला लेकर ख़ुद नोश फ़रमाया और वह दूध ख़त्म हो गया।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 11/182)

सेहत हज़ार नेमत भी और बाइसे बरकत भी

हम लोग एक बार क़ज़ाकिस्तान गए तो हमारे साथ अमरीका के भी कुछ दोस्त थे। एक जगह मेज़बान ने उलमा को दावत दी। उसने एक बकरा ज़िब्ह करके गोश्त भूनकर सब के सामने रखा। अब भुना हुआ गोश्त अच्छा तो बड़ा लगता है मगर चर्बी साथ थी। चर्बी से तो आजकल नौजवान भी घबराते हैं और डाक्टर भी मना करते हैं। हम तो चुन चुन के वह बोटियाँ ढूंढते जिनके साथ चर्बी बिल्कुल न होती। हमारे साथ एक आलिम आकर बैठ गए जिनकी उम्र कहीं माशाअल्लाह पिच्चानवे साल थी और वह सिर्फ़ चर्बी खा रहे थे। हम लोग जो चर्बी उतारकर रखते वह उसको उठाकर खा लेते। हमारे लिए यह इस बात बरदाश्त करना मुश्किल हो गया कि इतनी चर्बी? जब हम परेशान हो गए तो उन्होंने चम्मच उठाई और जो चर्बी नीचे शोरबे में थी वह भर भर कर पीना शुरू कर दी। चर्बी की बोटी खाते और ऊपर से चर्बी की चम्मच भी पी लेते। या अल्लाह अब तो हमारे सब्र का दामन हाथ से छूट गया। इस आजिज़ ने पहले उनसे सलाम दुआ तो किया ही था। अब ज़रा थोड़ी सी बात भी बढ़ाई और उनसे

पूछा कि आपकी उम्र कितनी होगी? कहने लगे पिच्चानवे साल। आप ने कहा आपकी सेहत ठीक रहती है? फ़रमाने लगे पिच्चानवे साल की उम्र में आज तक मैंने अपने हाथों से एक गोली भी अपने मुँह में नहीं डाली। मैंने आज तक किसी डाक्टर को अपना हाथ नहीं दिखाया। हम लोग उनका मुँह तकते रह गए। यह उम्र में बरकत हैं।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 6/170)

बैअत की निस्बत को रिवाज देने का हुक्म

हज़रत ख़्वाजा मुहम्मद अब्दुल मलिक रह० चौक क़ुरैशीवाले अपने आपको बकड़वाल कहा करते थे। बहुत बड़े शेख़ थे उन्होंने यह वाक़िआ मस्जिद में बैठकर बा-वुज़ू सुनाया और इस आजिज़ ने मस्जिद में बैठकर बा वुज़ू सुना। अब मस्जिद में बा वुज़ू आपको सुना रहा हूँ। पूरी ज़िम्मेदारी के साथ, अलफ़ाज़ में तब्दीली हो सकती है, ख़ुलासे में तब्दीली नहीं हो सकती। समझ गए तो यह रिवायत बिलमानी है कि ख़ुलासा बिल्कुल वही होगा और अलफ़ाज़ अपने होंगे।

फ़रमाने लगे कि मैं अल्लाह! अल्लाह! किया करता था और अपने शेख़ की बकरियाँ चराया करता था। बकरियाँ ख़ुद भी खाती और मैं भी उनको घास तोड़ तोड़ कर उनको खिलाता। जब बकरियाँ वापस आतीं तो मैं शाम को घास की एक गठरी भी सर पर ले आता कि रात को भी बकरियाँ घास खाएं। मेरे दोस्त अहबाब तो हज़रत रह० की सोहबत में बैठते और मैं हज़रत रह० की बकरियाँ चराया करता था।

एक दफ़ा ख़्वाजा फ़ज़ल अली क़ुरैशी रह० को अल्लाह तआला की तरफ़ से इशारा हुआ कि अब्दुल मलिक को ख़िलाफ़त दे दो। फ़रमाते हैं कि जब ख़िलाफ़त मिली तो मैं बहुत हैरान हुआ कि मैं तो

इस क़ाबिल नहीं था। एक दो घंटे तो रोता ही रहा, दूसरे ख़लीफ़ाओं ने तसल्ली दी कि जब अल्लाह तआला ने एक बोझ सर पर रखा है तो उठाने की तौफ़ीक़ भी देंगे। कहने लगे कि मैंने दिल अपने दिल में नीयत कर ली कि मैं तो कुछ भी नहीं हूं। अगरचे हज़रत रह० ने यह अमानत दे दी है मगर मैं यह आगे किसी को देने का अहल नहीं। इसलिए मैं किसी आदमी को बैअत नहीं करूंगा। इस तरह हज़ूरत की ख़िदमत में एक साल गुज़र गया।

एक दफ़ा सर्दियों के मौसम में आग सेंक रहे थे कि मेरी तरफ़ गुस्से से देखा। मेरे तो पाँव के नीचे से ज़मीन निकल गई। मैंने पूछा हज़रत! ख़ैरियत तो है? फ़रमाने लगे अभी अभी मुझे कश्फ़ में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दीदार नसीब हुआ है। महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अब्दुल मालिक से कहो कि इस नेमत को तक़सीम करे वरना हम इस नेमत को वापस ले लेंगे और क्योंकि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ से यह हुक्म हुआ है इसलिए अपना बिस्तर उठाओ और जैसे ही अंधेरा ख़त्म हो अपने घर जाओ। वहाँ जाकर लोगों को अल्लाह अल्लाह सिखाओ। मैं तो रोता रह गया और हज़रत ने मेरा सामान मेरे सर पर रखा और ख़ानक़ाह से रुख़्सत कर दिया। फ़रमाने लगे मैंने निकलते निकलते कहा हज़रत! मैं अब कोई काम करने के क़ाबिल नहीं हूँ क्योंकि इतने साल ज़िक्र करने में गुज़ार दिए इसलिए मेरे लिए रिज़्क़ की दुआ फ़रमा दें। फ़रमाया कि ﴿ان اللّٰه مع الصابرين﴾ अल्लाह सब्र वालों के साथ है। मेरे क़रीबी ताअल्लुक़ दारों और रिश्तेदारों में कोई एक रिश्ता घर वालों ने पहले ही तय किया हुआ था। लिहाज़ा घर आते ही माँ-बाप ने मेरी शादी कर दी। शादी भी अजीब कि उसके बाद हमारे पास खाने के लिए कुछ होता ही नहीं था। बीवी मुझे ऐसी साबिरा मिली कि वह मुझे कहती कि आप पेड़ के पत्ते ही ले आएं।

में पेड़ के पत्ते लाता वह भी खा लेती मैं भी खा लेता और एक वक़्त का गुज़ारा कर लेते।

एक दिन मेरा एक पीर भाई मेरे घर आया। वह हज़रत रह० के पास गया हुआ था। जब वह आने लगा तो हज़रत रह० ने उसे एक छोटी सी दस किलो गेहूँ की बोरी दी और एक पर्ची दी और फ़रमाया कि यह अब्दुल मालिक को दे देना।

वह दोपहर को मेरे घर पहुँचा और दरवाज़ा खटखटाया, पसीने में तर, बोरी सर पर उठाई हुई थी। मैंने पूछा सुनाओ भाई कहाँ से ज़ा रहे हो? उसने कहा ख़ानक़ाह शरीफ़। वह यह समझा कि पूछ रहे हैं कि कहाँ से आ रहे हो? अब मैं कुछ पूछ रहा था वह कुछ बता रहा था। मैंने उसे बिठाया कि यह ख़ानक़ाह शरीफ़ जा रहा है और लंगर के लिए गेहूँ लेकर जा रहा है। घर आकर बीवी से कहा कि मेहमान के लिए खाना दो। उसने कहा घर में तो कुछ नहीं है। मगर बीवी समझदार थी। उसने मुझे कहा कि अगर वह हज़रत की ख़ानक़ाह के लिए गेहूँ ले जा रहा है तू उससे जाकर इजाज़त मांग लो कि हम इस गेहूँ में से थोड़ी सी पीस लें, फिर उस आटे की रोटी पकाकर उसको खिला देते हैं। कहने लगे भला इसमें कौन सी शर्म की बात है। मैंने उसे कहा कि अगर इजाज़त हो तो इसी गेहूँ में से थोड़ी सी रोटी बना दी जाए। वह फ़रमाने लगे कि मैं यह समझा कि गेहूँ तो घर में भी पड़ी है लेकिन क्योंकि आप मेरे हज़रत से लाए हैं तो बरकत के लिए हम इस में से रोटी पका देते हैं। कहने लगे हाँ इसी में से पका दें। मैंने उसमें से थोड़े से गेहूँ लिए, बीवी को दी, उसने चक्की में डाली और आटा निकालकर औ चक्की के पाटों को अच्छी तरह साफ़ करके पूरे आटे की रोटी पकाकर सामने रख दी।

जब मेहमान ने रोटी खा ली तो हम ने उसे लस्सी पिलाकर सुला दिया। सोने के बाद जब वह उठा तो उसने एक पर्ची दी। मैंने पूछा

यह क्या है? उसने कहा यह भी हज़रत ने दी है। तब बात समझ में आई कि हज़रत रह० ने वह गेहूँ की छोटी सी बोरी इस आजिज़ की ख़ानक़ाह के लिए दी थी। कहने लगे मैं ख़ानक़ाह का लफ़्ज़ सुनकर हैरान हुआ। ख़ुद खाने को मिलता नहीं और लंगर के लिए बोरी आई है। मैंने बीवी को जाकर बताया, कहने लगी पढ़ो तो सही क्या लिखा है। मैंने पढ़ा तो लिखा हुआ था कि अब्दुल मालिक! तुम अल्लाह अल्लाह करो और करवाओ और इस गेहूँ को किसी बंद जगह में डाल दो और इस पर्ची को भी उसी में डाल देना और एक सुराख़ बना लेना और उसमें से तुम गेहूँ निकाल कर इस्तेमाल करते रहना। यह तुम्हारे लंगर के लिए है। नीचे लिखा था,

﴿ان اللہ مع الصابرین﴾

अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है।

मेरी बीवी ने एक बंद जगह में गेहूँ डाल दी और ऊपर से ढक्ना अच्छी तरह से बंद कर दिया। मेरी बीवी ने उसके नीचे गेहूँ निकालने के लिए सुराख़ बना दिया। वक़्त-वक़्त पर उसमें से कुछ गेहूँ निकालती और इस्तेमाल करती। अल्लाह का शुक्र है आज उस गेहूँ को इस्तेमाल करते हुए हमें चालीस साल गुज़र गए हैं। आज भी मेरी ख़ानक़ाह में दो तीन सौ सालिकीन तक का रोज़ाना मजमा रहता है और साल के आख़िर पर हज़ार से ज़्यादा लोग इज्तिमा में शरीक होते हैं। चालीस साल से हम लोग उसी गेहूँ को इस्तेमाल कर रहे हैं।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 6/179-182)

निस्बत के एहतिराम पर गुनाहों की बख़्शिश

हज़रत काब अहबार रज़ियल्लाहु अन्हु वह सहाबी थे तो उलमा बनी इस्राईल में से थे। उन्होंने बाद में इस्लाम क़ुबूल कर लिया। उन्हें

दो पैग़म्बरों पर ईमान लाने की सआदत नसीब हुई। दुनिया में भी सआदत मिली और क़यामत के दिन भी उनको दोहरा अज्र मिलेगा।

वहब मिन मुनब्बा रह० उनका अमल नक़्ल करते हैं कि जब नमाज़ का वक़्त होता तो उनकी कोशिश होती थी कि वह आख़िरी सफ़ में नमाज़ पढ़ें। जब कि दूसरे लोग दौड़-दौड़ कर पहली सफ़ में जाते क्योंकि पहली सफ़ के बारे में अज्र व फ़ज़ीलत हदीस में आई है। उनके शार्गिदों ने जब उनका यह अमल देखा तो पूछा हज़रत! दूसरे लोग तो पहली सफ़ के लिए कोशिश करते हैं और आप पहली सफ़ की कोशिश नहीं करते। पिछली सफ़ में ही खड़े होकर नमाज़ पढ़ लेते हैं। इसकी क्या वजह है? हज़रत काब रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि मैंने तौरात और उसके अलावा बाक़ी आसमानी किताबों में पढ़ा है कि उम्मे मुहम्मदिया अलैहिस्सलातु वस्सलाम में से कुछ ऐसे बंदे होंगे जो अपने परवरदिगार को इतने मक़बूल होंगे कि जहाँ वे लोग खड़े होंगे उनके पीछे इक़्तिदा करने वाले जितने होंगे अल्लाह तआला उन सबके गुनाहों को माफ़ फ़रमा देंगे। इसलिए मैं चाहता हूँ कि मेरे नेक भाई आगे हों मुमकिन है कि किसी की बरकत से अल्लाह तआला हम सबके गुनाहों को माफ़ फ़रमा दें।

अबू मुस्लिम ख़ौलानी रह० के लिए आग गुलज़ार बन गई

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के दौरे ख़िलाफ़त में मुसैलमा कज़्ज़ाब ने नबुव्वत का दावा कर दिया। उस कज़्ज़ाब ने मशहूर ताबई हज़रत अबू मुस्लिम ख़ौलानी रह० को किसी तरह गिरफ़्तार कर लिया और कहा कि तुम मेरी नबुव्वत का इक़रार कर लो। वह कहने लगे हर्गिज़ नहीं। वह कहने लगा मैं तुझे आग में

डालूँगा। फ़रमाने लगे, ﴿فاقض ما انت قاض﴾ तू कर सकता है कर ले। क्योंकि पहले ऐसा ही होता आया है। चुनाँचे उसने आग जलवाई और अबू मुस्लिम ख़ौलानी रह० को आग में डाल दिया। उन्होंने अल्लाहु अकबर और बिस्मिल्लाह के अलफ़ाज़ पढ़े और आग में छलांग लगा दी मगर आग ने उन पर कोई असर न किया।

जब मुसैलमा कज़्ज़ाब ने देखा कि आग ने अबूमुस्लिम ख़ौलानी रह० पर कोई असर नहीं किया तो वह परेशान हो गया और डर गया कि कहीं इस बंदे की वजह से मेरी पकड़ न आ जाए। कहने लगा अच्छा मैं तुझे आज़ाद करता हूँ। लिहाज़ा उन्हें आज़ाद कर दिया गया। यह वाक़िआ यमामा में पेश आया। और यह ख़बर फैलते फैलते हज़रत अबूबक्र और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा तक पहुँच गई। अबूमुस्लिम ख़ौलानी रह० के दिल में अल्लाह तआला ने यह बात डाली कि मुझे नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम का दीदार करने के लिए जाना चाहिए। झूठे नबी ने मुझे जलाना चाहा मगर मेरे मालिक ने मुझे महफ़ूज़ फ़रमाया। अब क्यों न मैं सच्चे नबी के क़दमों में हाज़िरी दे आऊँ। चुनाँचे यमामा से मदीना हाज़िर हुए। मस्जिदे नबवी में दो रक्अत पढ़कर खड़े ही थे कि हज़रत उमर क़रीब आ गए। उन्होंने अजनबी आदमी को देखकर पूछा आप कौन हैं? कहने लगे मैं अबू मुस्लिम ख़ौलानी हूँ। पूछा कहाँ से आए हो? कहने लगे मैं यमामा से आया हूँ। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि हमने सुना है कि यमामा में एक आदमी मुसैलमा कज़्ज़ाब ने आग में डाल दिया मगर आग ने उस पर कोई असर नहीं किया। क्या तुमने भी उसके बारे में सुना है? फ़रमाने लगे जी हाँ, वह आदमी तो मैं ही हूँ जिसके साथ वाक़िआ पेश आया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु बड़े ख़ुश हुए। फ़रमाने लगे चलो मैं ख़लीफ़ाए रसूल के पास लेकर जाऊँगा। सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास लेकर आए और कहने लगे,

अमीरुल मुमिनीन! आज अल्लाह तआला ने इस उम्मत में ऐसे आदमी को खड़ा कर दिया है कि जिसने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के ईमान की याद ताज़ा कर दी। सुब्हानअल्लाह! अल्लाह तआला ने ईमान की निस्बत से उनको दुनिया की आग में जलने से महफ़ूज़ फ़रमा दिया। बिल्कुल इसी तरह जब ईमान वालों को क़यामत के दिन जहन्नम के ऊपर से गुज़ारा जाएगा तो जहन्नम की आग कहेगी, ﴿اسرع يا مؤمن ان نورك اطفا ناري.﴾ ऐ मोमिन जल्दी चल कि तेरे नूर ने तो मेरी आग को बुझा डाला है। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 121)

वह जुब्बा कैसा बरकत वाला था

किताबों में लिखा है कि इमाम शाफ़ई रह० ने ख़्वाब देखा कि इमाम अहमद बिन हंबल रह० पर ख़ल्क़ क़ुरआन के मस्अले के बारे में कुछ आज़माइशें आएंगी लेकिन अल्लाह तआला उनको कामयाब फ़रमा देंगे। इमाम अहमद बिन हंबल रह०, इमाम शाफ़ई रह० के शागिर्द भी थे। इमाम शाफ़ई रह० ने अपने एक शागिर्द को भेजा कि जाओ और इमाम अहमद बिन हंबल को यह ख़्वाब सुना दो। चुनाँचे उस शागिर्द ने जाकर ख़्वाब सुना दिया कि ख़ल्क़ क़ुरआन के बारे में अल्लाह तआला की तरफ़ से आज़ामइशें आएंगी ओर अल्लाह तआला उस आज़ामईश में आपको कामयाब फ़रमा देंगे। अब ज़ाहिर में तो तकलीफ़ पहुँचने वाली बात थी मगर अल्लाह वाले तो देखते हैं कि इस आज़माइश में हम कामयाब होते हैं या नहीं। इस ख़्वाब में तो बशारत भी थी कि कामयाब होंगे।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह सुन्नत भी है कि अगर कोई ख़ुशख़बरी लाए तो ख़ुशख़बरी लाने वाले को कुछ हदिया पेश कर दिया जाए। चुनाँचे इमाम अहमद बिन हंबल रह० के पास एक जुब्बा पड़ा हुआ था। उन्होंने वह जुब्बा इस आने वाले को हदिए

के तौर पर पेश कर दिया। जब शागिर्द ने वापस जाकर इमाम शाफ़ई रह० को कारगुज़ारी सुनाई तो इमाम शाफ़ई रह० ने वह जुब्बा हासिल करने की ख़्वाहिश ज़ाहिर फ़रमाई तो शर्गिद ने इमाम शाफ़ई रह० के हवाले कर दिया। इमाम शाफ़ई रह० उस जुब्बे को पानी में डुबोकर रखते थे और वह पानी बीमार को पिला देते तो अल्लाह तआला बीमार को शिफ़ा अता फ़रमा देते थे। अल्लाह तआला ने इमाम अहमद बिन हंबल रह० के जुब्बे में ऐसी बरकत रखी थी कि इमाम शाफ़ई रह० जैसी अज़ीम शख़्सियत उस जुब्बे से बरकत हासिल करती थी। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 7/118)

अल्लाह वालों के हदिए की बरकत न पूछिए

हज़रत जुनैद बग़दादी रह० का एक मुरीद बड़ा परेशान होकर कहने लगा हज़रत! हज का इरादा है लेकिन कुछ पास नहीं है। फ़रमाया, हज पर जाओ और मेरी तरफ़ से ये दीनार लेकर जाओ। उसने कहा बहुत अच्छा। वह हज़रत से दीनार लेकर बाहर निकला अभी बस्ती के किनारे पर पहुँचा ही था तो देखा कि एक क़ाफ़िला जा रहा है। उसने क़ाफ़िले वालों को सलाम किया। उन्होंने जवाब दिया। पूछा भाई बताओ कहाँ का इरादा है? उन्होंने कहा हज पर जा रहे हैं। मैंने कहा मैं भी हज पर जा रहा हूँ मगर मैं तो पैदल चलूँगा। वह कहने लगा एक आदमी ने हमारे साथ जाना था वह बीमार हो गया। जिसकी वजह से वह पीछे रह गया है। उसका ऊँट ख़ाली है, आप उस पर सवार हो जाइए। यह आदमी ऊँट पर बैठ गया। अब जहाँ क़ाफ़िले वाले रुकते और खाना पकाते, उसको मेहमान समझ कर साथ खिलाते। पूरा हज का सफ़र इसी तरह तय किया। आख़िर कार उनके साथ हज करके वापस आया और बस्ती के किनारे पर उन्होंने वापस उतार दिया। उसको कहीं भी ख़र्च करने की नौबत पेश

नहीं आई। शेख़ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ कहने लगा हज़रत! अजबी हज किया, मैं तो मेहमान ही बनकर फिरता रहा और अब यहाँ पहुँच गया हूँ। हज़रत ने फ़रमाया कि तुम्हारा कुछ ख़र्च हुआ? अर्ज़ किया कुछ भी नहीं ख़र्च नहीं हुआ। फ़रमाने लगे मेरा दीनार वापस कर दो। अल्लाह तआला इस दीनार को ख़र्च ही नहीं होने देते। यह माल में बरकत थी जो अल्लाह तआला ने अता फ़रमा दी थी। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 6/178)

साहिबे विलायत की बरकत

एक बार ख़्वाजा फ़ज़ल अली क़ुरैशी रह० के खेत से गेहूँ निकाली गई। वही गेहूँ पकता था और ख़ानक़ाह के लोग खाते थे। अलहम्दुलिल्लाह अल्लाह तआला ने हमारे यहाँ ऐसा ही सिलसिला बना दिया है। हमारी अपनी ज़मीन का गेहूँ निकलता है और सारा साल उलमा और तलबा वही गेहूँ खाते हैं। उन्होंने वह गेहूँ मस्जिद के सहन में लाकर ढेर कर दी। उस वक़्त मिट्टी के भड़ौले बनाकर गेहूँ को महफ़ूज़ किया जाता था। मुरीदों ने वह गेहूँ उठाकर भड़ौलों में डालनी शुरू कर दी। वे गेहूँ उठा रहे थे मगर ढेर ख़त्म होने को नज़र नहीं आ रहा था। वह जितना गेहूँ ले जाते थे उतना ही पीछे पड़ी होती थी। वह देहाती लोग थे उन बेचारों की गर्दनें बोझ उठा उठाकर थक गयीं।

ख़्वाजा अब्दुल मलिक सिद्दीक़ी बड़े अक़्लमंद थे। वह भी असल हक़ीक़त समझ गए चुनाँचे वह हज़रत क़ुरैशी रह० की ख़िदमत में गए और जाकर अर्ज़ करने लगे कि हज़रत जो बरकत यहाँ ज़ाहिर हो रही है वह अंदर जाकर ज़ाहिर नहीं हो सकती? हज़रत ने फ़रमाया भाई मस्अला क्या है? अर्ज़ किया हज़रत गेहूँ उठाते-उठाते गर्दनें थक गयीं हैं, अब तो सिर्फ़ टूटनी रह गयीं हैं। लिहाज़ा मेहरबानी फ़रमा कर तवज्जेह फ़रमा दें। हज़रत ने फ़रमाया, चलो उठाते हैं। चुनाँचे हज़रत

क़ुरैशी रह० साथ आए और सब ने मिलकर गेहूँ उठाई और हज़रत ने भी थोड़ी सी उठाई और एक बार में सारी गेहूँ अंदर चली गई।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 11/183)

हज़रत पीर मेहर अली शाह रह० और निस्बत की बरकत

हज़रत पीर मेहर अली शाह रह० के बारे में मशहूर वाकिआ है। वह एक बार हज पर तशरीफ़ ले गए। वह थके हुए थे। हज़रत ने इशा की नमाज़ के सिर्फ़ फ़र्ज़ पढ़े और सो गए। ख़्वाब में नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम का दीदार नसीब हुआ। आपने फ़रमाया, मेहर अली! तूने फ़र्ज़ पढ़ लिए और सुन्नतें न पढ़ीं। जब आप हमारी सुन्नतें छोड़ देंगे और न पढ़ेंगे तो बाक़ी लोगों का क्या हाल होगा? जागे हज़रत पर गिरया तारी हो गया। उसके बाद इशा की नमाज़ पूरी की और फिर बाद में मशहूर लुग़त लिखी जो उन्होंने अपनी ज़बान में लिखी है। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 7/120)

खा-खा कर थक गए मगर फिर भी खाना

हज़रत ख़्वाजा सिराजुद्दीन रह० के पास एक मौलाना साहब तशरीफ़ लाए जो एक वक़्त में सिर्फ़ एक बकरा और उसके साथ रोटियों के दो तीन बंडल खाया करते थे। जब वह आए तो उन्होंने हज़रत रह० से कह दिया कि हज़रत! मैं आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ हूँ और मेरे खाने का मामूल यह है। उनके कहने का मक़सद यह था कि यहाँ कहीं भूखा ही न रहूँ। लेकिन इतना खाने के बाद एक पक्के सालिक थे। वह हाफ़िज़े क़ुरआन थे और एक बकरा और रोटियों के दो तीन बंडल खाकर नफ़्लों की नीयत बाँध लेते थे और

पूरी रात नफ़्लों में गुज़ार देते थे। वह वाक़ई अल्लाह वाले बंदे थे लेकिन उनकी ज़्यादा खाने की आदत बनी हुई थी।

जब खाना खाने का वक़्त आया तो सब मेहमानों के लिए एक देग से कम खाना था। उन मौलाना साहब को परेशानी महसूस हुई कि अब मेरा क्या बनेगा। हज़रत ने लंगर वाले ख़ादिम को बुलाकर फ़रमाया कि इनको भी दो चपातियाँ और शोरबे में एक बोटी डालकर देना। मौलाना साहब हैरान व परेशान थे कि मेरा क्या बनेगा लेकिन अल्लाह तआला की शान देखिए कि वह मौलाना साहब दस्तरख़्वान पर रोटी और सालन खाते रहे यहाँ तक कि पेट भर गया लेकिन उनसे वे रोटियाँ और सालन ख़त्म न हुआ। यह हज़रत का करामत थी। अल्लाह तआला ने उस खाने में इतनी बरकत दी कि मौलाना साहब खा खा कर थक गए लेकिन खाना ख़त्म न हुआ।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 4/190)

जुब्बे की बरकत से इलाक़ा फ़तेहयाब

एक दफ़ा मुलाक़ात के दर्मियान महमूद बादशाह ने हज़रत अबुल हसन ख़रक़ानी रह० से कहा कि हज़रत! मैंने सोमनाथ पर हमले का इरादा किया है कि दुश्मन की तादाद बहुत ज़्यादा है। इसलिए मुक़ाबला सख़्त है, मेहरबानी फ़रमाकर दुआ फ़रमा दें कि अल्लाह तआला हमें कामयाबी अता फ़रमाए। जब सुलतान महमूद दे दुआ के लिए अर्ज़ किया तो हज़रत के पास एक जुब्बा पड़ा हुआ था वह उन्होंने उठाकर बादशाह को दे दिया और फ़रमाया कि इसे अपने साथ ले जाएं और जब आप ज़रूरत महसूस करें तो आप इस जुब्बे को सामने रखकर दुआ मांगना कि अल्लाह! अगर इस जुब्बे वाले का तेरे यहाँ कोई मक़ाम है तो उसकी बरकत से मेरे इस मामले को हल फ़रमा दे। उसने कहा बहुत अच्छा। वह जुब्बा लेकर चला गया।

वापसी पर सुलतान महमूद ने ग़जनवी रह० ने तैयारी करके सोमनाथ पर हमला किया। उस वक़्त हिंदू और दूसरे मज़हब के लोग सब मिलकर मुसलमानों के ख़िलाफ़ लड़े थे। इसलिए काफ़िरों की तादाद बहुत ज़्यादा थी। जब उसने देखा कि मुसलमानों के लश्कर में कमज़ोरी आ रही है तो उसे याद आया कि हज़रत ने तो मुझे एक जुब्बा दिया था। लिहाज़ा उसने इस आड़े वक़्त में उस जुब्बे को सामने रखा और अल्लाह तआला से दुआ मांगने बैठ गया कि ऐ मालिक! अगर इस जुब्बे वाले का तेरे हाँ कुछ मक़ाम है और वह तेरे दोस्तों में है तो उसकी बरकत से तू मुझे सोमनाथ का फ़ातेह बना दे। चुनाँचे जंग का पांसा पलटा और अल्लाह तआला ने उसे सोमनाथ का फ़ातेह बना दिया।

सोमनाथ की फ़तेह के काफ़ी अरसे के बाद सुल्तान ग़ज़नवी ने सोचा कि मैं हज़रत के पास जाकर उनका शुक्रिया अदा करूं और उनको ख़ुशख़बरी भी सुनाऊँ। लिहाज़ा वह मिलने आया। उसने हज़रत को सारा क़िस्सा सुनाया। हज़नत ने पूछा कि आपने जुब्बे को सामने रखकर क्या दुआ मांगी थी? बादशाह ने कहा हज़रत! यह दुआ मांगी थी कि ऐ अल्लाह इस जुब्बे वाले का तेरे यहाँ कोई मक़ाम हो और वह तेरे दोस्तों में से है तो सोमनाथ का फ़ातेह बना दे। हज़रत ने सुनकर फ़रमाया तूने बहुत सस्ता सौदा कर लिया अगर तू यह दुआ मांगता कि ऐ अल्लाह! इसकी बरकत से मुझे पूरी दुनिया का फ़ातेह बना दे तो तुझे अल्लाह तआला पूरी दुनिया का फ़ातेह बना देता क्योंकि अल्लाह वाले की ज़बान से निकले हुए बोल की लाज रख लिया करता है। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 9/57)

निस्बते नक़्शबंदिया की बरकत मौत के वक़्त

अब आपको राज़ की बात बताता हूँ। वैसे मेरी आदत ऐसी बातें

करने की नहीं है। इस वक़्त वह बात क़ुदरतन याद आ गई, बता देता हूँ शायद किसी का फ़ायदा हो जाए। हमारे एक पुराने दोस्त हैं वह मेरे हम-उम्र हैं और क्लास के साथी भी। उनके वालिद साहब नक्शबंदी सिलसिले में बैअत थे। जब वह फ़ौत हुए तो यह आजिज़ बैरूने मुल्क था। वापसी पर उस दोस्त ने यह वाक़िआ मस्जिद में बावुज़ू खड़े होकर ख़ुद सुनाया। वह कहने लगे मेरे वालिद पर मौत के आसार ज़ाहिर होना शुरू हो गए। हम सब भाई, बहन क़रीब बैठ गए। किसी सूरः यासीन पढ़ना शुरू कर दी किसी ने कलिमा पढ़ना शुरू कर दिया, कहने लगे कि मैंने अपने वालिद के चेहरे के बिल्कुल क़रीब होकर बैठ गया और ऊँची आवाज़ में "ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलल्लाह" कहना शुरू कर दिया। मैं पंद्रह मिनट उनके चेहरे पर टकटकी बाँधकर देखता रहा और कलिमा पढ़ता रहा मगर मेरे वालिद के होंठ गोया सिले हुए थे और कुछ हरकत न की। इतने में बहन ने इशारा किया कि अब्बू के पाँव पहले खड़े थे, अब वह ढीले पड़ गए हैं। इससे हमें महसूस हुआ कि पाँव की तरफ़ से रूह निकलनी शुरू हो गई है। थोड़ी देर के बाद मैंने देखा कि वालिद साहब के घुटने जो पहले खड़े थे वे भी ढीले पड़ गए। अभी तक साँस तेज़ होकर उखड़ी नहीं थी लेकिन अब पहले के मुक़ाबले यह साँस तेज़ होना शुरू हो गई। हमें साफ़ पता चल रहा था कि अब कुछ मिनटों की बात है। कहने लगे जब मैंने घुटनों को ढलते हुए देखा तो उस वक़्त मेरे दिल में बात आई कि मैं पंद्रह मिनट से अब्बू के चेहरे की तरफ़ देख रहा हूँ। मैंने उनके होंठ हिलते नहीं देखे क्या मेरे वालिद दुनिया से बग़ैर कलिमा पढ़े रुख़सत हो जाएंगे।

यह सोचकर मैं ज़ार व क़तार रोने लगा और दुआएं मांगने लगा। कहने लगे कि अचानक मेरे दिल में एक ख़्याल आया और दुआ मांगते हुए मैंने यह दुआ मांगी, "ऐ अल्लाह! मेरे वालिद का ताल्लुक़

शेख़ ज़ुलफ़क़ार अहमद दामत बरकातुहुम के साथ है और उनका तअल्लुक़ अपने शेख़ के साथ है और ऊपर चलते चलते यह रूहानी तअल्लुक़ नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक पहुँचता है। ऐ अल्लाह! अगर इस निस्बत का तेरे यहाँ कोई मक़ाम है तो उसकी बरकत से मेरे वालिद को को कलिमा पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दे।" कहने लगे मैंने पलक झपकने की दे में दुआ मांगी और मेरे वालिद ने होंठ खोलकर पाँच बार कलिमा पढ़ा और अल्लाह को प्यारे हो गए। सुब्हानअल्लाह! अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के यहाँ निस्बत का बड़ा मक़ाम है। हमारे असलाफ़ की ज़िन्दगियाँ तक़्वे से भरी होती हैं। हम तो मुफ़्तख़ोर हैं। हमारी अपनी मेहनत तो है ही नहीं लेकिन हमारे बड़े वाक़ई अल्लाह के मक़बूल बंदे थे। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 9/120)

एक बुज़ुर्ग के हाथ की बरकत कि मजूसी का हाथ न जला

एक बुज़ुर्ग कहीं जा रहे थे। रास्ते में उनको एक आदमी मिला। उन्होंने पूछा तुम कौन हो? कहने लगा कि मैं आग को पूजने वाला हूँ। दोनों ने मिलकर सफ़र शुरू कर दिया। रास्ते में वे आपस में बातचीत करने लगे। इस बुज़ुर्ग ने उसको समझाया कि आप बेकार में आग की पूजा करते हैं। आग तो ख़ुदा नहीं, ख़ुदा तो वह जिसने आग को पैदा किया है। वह न माना। आख़िरकार उस बुज़ुर्ग को भी जलाल आ गया। उन्होंने कहा अच्छा अब ऐसा करते हैं कि आग जलाते हैं और दोनों अपने अपने हाथ आग में डालते हैं, जो सच्चा होगा आग का उस पर कोई असर नहीं होगा और जो झूठा होगा आग उसके हाथ को जला देगी। वह भी तैयार हो गया।

उन्होंने जंगल में आग जलाई। आग जलाने के बाद मजूसी

घबराने लगा। जब उस बुज़ुर्ग ने देखा कि अब पीछे हट रहा है तो उन्होंने उसका बाज़ू पकड़ लिया और अपने हाथ में उसका हाथ थामकर आग में डाल दिया। बुज़ुर्ग के दिल में तो पक्का यक़ीन था कि मैं मुसलमान हूँ और अल्लाह तआला मेरी सच्चाई को ज़रूर ज़ाहिर फ़रमाएंगे जिससे दीने इस्लाम की शान व शौकत भी ज़ाहिर हो जाएगी लेकिन अल्लाह की शान कि न उस बुज़ुर्ग का हाथ जला और न उस आग को पूजने वाले का। वह आतिश परस्त बड़ा ख़ुश हुआ और यह बुज़ुर्ग दिल ही दिल में बड़े रंजीदा हुए कि यह क्या मामला हुआ। लिहाज़ा वह अल्लाह तआला की तरफ़ मुतवज्जेह हुए और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह! मैं सच्चे दीन पर था, आपने मुझ पर तो रहमत फ़रमा दी कि मेरे हाथ का महफ़ूज़ फ़रमा लिया, यह आतिश परस्त तो झूठा था, आग इसके हाथ को जला देती। जब उन्होंने यह बात कही तो अल्लाह तआला ने उनके दिल में बात डाली कि मेरे प्यारे! हम इसके हाथ को कैसे जलाते जब कि इसके हाथ को आपने पकड़ा हुआ था। सुब्हानअल्लाह! अल्लाह तआला निस्बत की यूँ लाज रख लेते हैं। मजूसी तो पक्का काफ़िर था। उसके हाथ को वक़्ती तौर पर एक अल्लाह वाले के हाथ के साथ संगत नसीब हुई तो अल्लाह तआला ने उसे भी आग से महफ़ूज़ फ़रमा दिया।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 7/137)

तीन घंटों की नींद तीन मिनट में

हमारे हज़रत मुर्शिदे आलम रह० फ़रमाने लगे कि एक दफ़ा मैं बहुत ही थका हुआ था। कई दिन से लगातार काम कर रहा था। मग़रिब की नमाज़ का वक़्त क़रीब था, थकावट इतनी ग़ालिब थी कि मैं आजिज़ आ गया और मैंने अपने दोस्तों से कहा कि बस अब सब लोग यहाँ से चले जाएं। वह कहने लगे हज़रत! नमाज़ में सिर्फ़ दस

मिनट बाक़ी हैं। आप बाद में सो जाना। मैंने कहा कि बस आप जाएं। मैंने उन सबको कमरे से बाहर निकाल दिया। फ़रमाते हैं कि मैंने कुंडी लगा दी और आकर बिस्तर पर सो गया। मैं सोता रहा यहाँ तक कि मेरी नींद पूरी हो गई। मैंने ख़्वाब में देखा कि कोई कह रहा है, 'हम ही सुलाते हैं और हम ही जगाते हैं।' इस बात को सुनकर मेरी आँख खुल गई। फ़रमाते हैं कि मेरी तबियत ताज़ा दम थी। मैंने कहा अच्छा उठकर वुज़ू करता हूँ और नमाज़ पढ़ता हूँ। जब मैं उठा और कुंडी खोली तो देखा कि जिन लोगों को बाहर निकाला था वह दरवाज़े पर ही खड़े थे। दरवाज़ा खोला, बाहर निकला तो वे कहने लगे हज़रत! आपने सोने का इरादा छोड़ दिया? मैंने कहा नहीं, मेरी तो नींद पूरी हो गई। इस पर उन्होंने घड़ी देखी और कहने लगे कि अभी हमें कमरे से बाहर निकले हुए सिर्फ़ तीन मिनट ही गुज़रे हैं। अल्लाह तआला अपने प्यारों को तीन मिनट में इतना सकून दे देता है कि जैसे उनको तीन घंटे की नींद नसीब हो गई और हम सारी रात सोकर ताज़ा दम नहीं होते।

इंतिज़ामी कामों पर तैनात दो मज्ज़ूब

कुछ मज्ज़ूब ऐसे भी होते हैं जो इंतिज़ामी कामों पर तैनात होते हैं। हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब रह० के पास एक आदमी आया। उसने कहा हज़रत! आजकल तो हालात बहुत ही ढीले हो गए हैं, कोई निज़ाम और क़ानून नहीं है, सब लोग मन-मर्ज़ी करते फिरते हैं। हज़रत रह० ने फ़रमाया, हाँ भाई जो बंदा इंतिज़ामी कामों पर तैनात है वह तबियत के लिहाज़ से बहुत ही ढीला है। उसने पूछा हज़रत वह कौन है? हज़रत रह० ने फ़रमाया, वह जामा मस्जिद के सामने ख़रबूज़े बेच रहा है। यह आदमी गया तो देखा कि एक सादा सा आदमी बैठा हुआ ख़रबूज़े बेच रहा है। इसने कहा कि मुझे ख़रबूज़े

ख़रीदने हैं। वह कहने लगा ख़रीद लें। उस आदमी ने कहा चखने के बाद ख़रीदूँगा। वह कहने लगा चख लो। अब उसने एक ख़रबूज़ा काटा, चखा और कहने लगा कि यह तो मुझे पसंद नहीं है, दूसरा काटा, कहा पसंद नहीं है। यहाँ तक कि सारे ख़रबूज़े काटकर चखे और कहा मुझे तो कोई भी ख़रबूज़ा पसंद नहीं आया। उसने कहा अच्छा अगर कोई पसंद नहीं आया तो चले जाओ। वह कहने लगा बिल्कुल ठीक, निज़ाम भी ऐसा ही है। कुछ दिन गुज़रे तो निज़ाम ऐसा ठीक हुआ कि हाकिम सख़्त हो गए। वह फिर कहने लगा निज़ाम बहुत सख़्त हो चुका है। हज़रत ने फ़रमाया, मियाँ आजकल बड़ा सख़्त बंदा आया हुआ है। उसने पूछा हज़रत! वह कौन है? हाँ वह जो फ़लाँ जगह मशक से पानी पिलाता है। इसने कहा अच्छा जाकर देखता हूँ। गर्मी का मौसम था। वह आदमी गया तो देखा कि आदमी दोपहर के वक़्त पानी पिलाने के लिए खड़ा है। उसने कहा जी पानी पिला दें। उसने पियाला भरकर पानी दे दिया। अब इस आदमी ने पियाले में पानी को देखा तो कहने लगा कि यह पानी ठीक नहीं है और यह कहकर उसने पानी उंडेल दिया और कहा कि पियाले में और पानी डाल दो। कहने लगा पहले इस पानी के पैसे अदा करो जो फेंका है फिर दूसरे की बात करना। वह दिल ही दिल में कहने लगा वाक़ई बात ठीक है कि आजकल निज़ाम ऐसा ही है।

हवा और पानी हुए मुसख़्ख़र (क़ाबू में)

सैय्यदना उमर रज़ियल्लाहु अन्हु मिंबर पर होकर फ़रमाते हैं कि ﴿يا سارية الجبل﴾ हवा इस पैग़ाम को सैकड़ों मील दूर तक पहुँचा रही है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु दरियाए नील को एक पर्ची लिखी तो उसके पानी ने चलना शुरू कर दिया। आज भी दरियाए नील चल रहा है और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की अज़मतों की गवाही दे

रहा है। एक बार मदीना मुनव्वरा में ज़लज़ला आता है तो आप पाँव को ठोकर मारकर ज़मीन को फ़रमाते हैं कि ऐ ज़मीन! तू क्यों हिलती है? क्या उमर ने तेरे ऊपर अदल व इंसाफ़ नहीं किया। उसी वक़्त ज़मीन का ज़लज़ला रुक जाता है। मदीना मुनव्वरा के क़रीब पहाड़ से एक आग निकलती है जो मदीना मुनव्वरा की तरफ़ बढ़ती है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत तमीम दारी रज़ियल्लाहु अन्हु को भेजते हैं कि जाकर उसे बुझाइए। उन्होंने दो रक्अत नफ़्ल पढ़ी और फिर अपने कपड़े को ऐसे बनाया जैसे किसी जानवर को मारने के लिए चाबुक होता है। उसके साथ आग को मारते रहे। आग पीछे हटती रही यहाँ तक कि जिस ग़ार से निकली थी वह उसी ग़ार में वापस चली गई। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 5/156)

दरिन्दों ने जंगल ख़ाली कर दिया

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम जब अफ़्रीक़ा के जंगलों में पहुँचे तो बरबर क़ौम कहने लगी कि यहाँ पर तो ख़तरनाक दरिन्दे हैं। वे रात के अंधेरे में तुम्हारी तिक्का बोटी कर देंगे। एक सहाबी ने खड़े होकर ऐलान किया, ऐ जंगल के दरिन्दो! आज यहाँ नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के ग़ुलामों का बसेरा है इसलिए जंगल ख़ाली करो। यह ऐलान होना था कि सहाबा किराम ने देखा कि शेरनी बच्चों के लेकर जा रही है और हाथियों के झुंड जा रहे हैं और सारे दरिन्दे जंगल ख़ाली करके जा रहे हैं। मुक़ामी लोगों ने पूछा कि तुमने यह काम कैसे सीखा? उन्होंने बताया कि हमारे प्यारे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें ऐसी ज़िन्दगी के तरीक़े सिखाए। वह कहने लगे फिर हमें भी अपने जैसा बना लीजिए। लिहाज़ा वह अफ़्रीकन क़ौम जंगल के दरिन्दों की इताअत को देखकर बग़ैर किसी लड़ाई के मुसलमान हो गई। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 6/132)

निज़ामुद्दीन रह० के ख़ेमे की रस्सी कट गई मगर फिर भी...

ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया रह० जब इश्क़ के शे'र सुनते तो उन पर जज़्ब की कैफ़ियत तारी हो जाती। उस दौर में हकीम ज़ियाउद्दीन सुनामी रह० एक बुज़ुर्ग थे जिनके वक़्त के बादशाह ने मोहतसिबे आला बनाया था। उनका काम यह था कि जहाँ शरिअत के ख़िलाफ़ कोई काम देखें, उस तन्क़ीद करें और उसको रोक दें। उनको क़ाज़ी कहा करते थे। वह हर वक़्त ताक में रहते थे कि कोई ऐसी बात जो दीन के ख़िलाफ़ हो तो उसको किस तरह ख़त्म कर दिया जाए।

एक दफ़ा उनको पता चला कि जनाब ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया रह० शहर से बाहर एक जगह महफ़िल लगाए बैठे हैं। जब यह अमले को लेकर वहाँ पहुँचे तो देखा अशुआर पढ़े जा रहे हैं और लोग जज़्ब में हाल से बेहाल हो रहे हैं। उनको कुछ पता नहीं, बड़े उछल कूद रहे हैं। थोड़ी देर तो उन्होंने बरदाश्त किया मगर उन्होंने कहा कि इसको रोकना चाहिए। कहीं बात इससे आगे न बढ़ जाए। लिहाज़ा उन्होंने उस ख़ेमे की रस्सियाँ कटवा दीं मगर देखा ख़ेमे उसी तरह खड़े हैं, नीचे नहीं गिरे। हकीम ज़ियाउद्दीन सुनामी रह० ने कहा कि ये सच्चे हाल में हैं जो इश्क़ व मुहब्बत के साथ ऐसा कर रहे हैं। लिहाज़ा ख़ामोशी से वापस आ गए। लेकिन वह कहते थे कि मैं इसे बिदअत समझता हूँ। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 4/137)

सैय्यदना अहमद दरबंदी रह० की करामत

तातारी फ़ौज एक शहर 'दरबंद' में पहुँची। वहाँ एक बुज़ुर्ग सैय्यद अहमद दरबंदी रह० रहते थे। तातारियों की ख़बर सुनते ही मुसलमानों ने सारे शहर को ख़ाली कर दिया सिर्फ़ सैय्यद अहमद दरबंदी रह० और उनके एक ख़लीफ़ा मस्जिद के अन्दर मौजूद रहे।

तातारी शहज़ादे ने कहा जाओ पता करो कि कोई इन्सान इस शहर के अन्दर मौजूद है या नहीं। बताया गया कि दो बन्दे मस्जिद के अन्दर बैठे हुए हैं। उसने कहा गिरफ़्तार करके और बेड़ियाँ पहनाकर मेरे सामने पेश करो। हुक्म के मुताबिक़ उनको गिरफ़्तार करके उस शहज़ादे के सामने पेश किया गया। तातारी शहज़ादे ने कहा क्या तुम्हें मालूम नहीं कि मैं आ रहा हूँ? उन्होंने कहा पता था। शहज़ादे ने कहा जब सारे मुसलमान चले गए थे तो फिर तुम क्यों नहीं गए? उन्होंने कि हम अपने परवरदिगार के घर में बैठे थे और उस घर में से हमें कोई नहीं निकाल सकता। शहज़ादे ने कहा कि तुम कैसी बातें करते हो? हमने तुम्हें निकाला है, हमने तुम्हें बेड़ियाँ पहनायीं और हमने तुम्हें मुजरिमों की तरह सामने खड़ा कर दिया है। शेख़ सैय्यद अहमद दरबंदी रह० कहने लगे कि ये बेड़ियाँ क्या चीज़ हैं। सैय्यद अहमद दरबंदी रह० ने उस वक़्त ज़ोर से कहा 'अल्लाह', उनका यह कहना था कि ज़ंजीरे टूट कर नीचे गिर गयीं।

तातारी शहज़ादे का क़ुबूले इस्लाम

यह देखकर तातारी शहज़ादे के दिल पर हैबत बैठ गई। कहने लगा कि मैं आपको इस शहर में रहने की इजाज़त देता हूँ। लिहाज़ा शेख़ सैय्यद अहमद दरबंदी रह० ने वहाँ रहना शुरू कर दिया। तातारी शहज़ादा भी कभी कभी उनसे ख़ुफ़िया मुलाक़ात करने के लिए आता। अल्लाह तआला ने नूरे फ़िरासत से शेख़ सैय्यद अहमद दरबंदी रह० को बता दिया कि एक ऐसा वक़्त आएगा कि यह शहज़ादा पूरे मुल्क का हुक्मरान बनेगा। शेख़ ने शहज़ादे से कहा कि तुम मुसलमान हो जाओ। उसने कहा अगर मैं मुसलमान हो भी जाऊँ तो अपने ईमान का इज़्हार नहीं कर सकता अगर करूंगा तो मुझे क़त्ल कर दिया जाएगा। शेख़ सैय्यद अहमद दरबंदी रह० ने फ़रमाया कि

तुम अपने ईमान का उस वक़्त इज़्हार कर देना जब अल्लाह तआला तुम्हें हुक्मरान बना देंगे। शहज़ादे ने हैरान होकर पूछा कि क्या मुझे हुकूमत भी मिलेगी? फ़रमाया हाँ मेरे बातिन का नूर बताता है कि तुम्हें हुकूमत मिलेगी। लिहाज़ा शहज़ादे ने वादा कर लिया कि जिस वक़्त मुझे हुकूमत मिलेगी मैं अपने इस्लाम लाने का ऐलान कर दूँगा। अल्लाह तआला की शान देखिए कि तीस के बाद उस शहज़ादे को हुकूमत मिली तो उसने इस्लाम क़ुबूल करने का ऐलान किया। इस तरह पूरी दुनिया में ख़िलाफ़त और हुकूमत मुसलमानों के हाथ में आ गई। इसी पर अल्लामा इक़बाल रह० ने कहा:

है अयां शोरिश तातार के अफ़साने से
पासबां मिल गए काबे को सनम ख़ाने से

सबसे बड़ी करामत, करामते मानवी

एक आदमी हज़रत जुनैद बग़दादी रह० के पास नौ साल तक रहा। एक दिन वह कहने लगा कि हज़रत मुझे इजाज़त दें, मैं किसी और शेख़ के पास जाता हूँ। उन्होंने पूछा ख़ैरियत तो है? वह कहने लगा कि हज़रत मैं नौ साल तक आपकी ख़िदमत में रहा और मैंने आपकी कोई करामत नहीं देखी। हज़रत ने फ़रमाया कि आप बताएं कि नौ साल में मुझे कोई काम सुन्नत के ख़िलाफ करते देखा है? वह कहने लगा नहीं। फ़रमाने लगे इससे बड़ी और क्या करामत हो सकती है कि नौ साल में एक काम भी नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की सुन्नत के ख़िलाफ़ नहीं किया। गोया यह सब करामतों से बड़ी करामत है। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 11/170)

धड़ बग़ैर सर के भागता रहा

तारीख़ में एक अजीब वाक़िआ लिखा है कि जब शाह इस्माईल

शहीद रह० चारों तरफ़ से घेर लिए गए तो एक सिख ने नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की शान में गुस्ताख़ी के अलफ़ाज़ कहे और दूसरे ने उन पर तलवार तान ली। शाह इस्माईल रह० के दिल में इश्क़े रिसालत की ऐसी कैफ़ियत थी कि आप ग़लत अलफ़ाज़ सुनकर तड़प उठे और आपने क़सम खाई कि मैं उस वक़्त नहीं मरूंगा जब तक तेरा काम तमाम नहीं कर लूँगा। यह कहकर आपने उसके ऊपर ख़ंजर लहराया मगर दूसरे सिख ने आप पर तलवार का वार किया। आप का सर तन से जुदा हो गया और जुदा होकर गिर गया। अजीब बात है क्योंकि बदन क्योंकि हरकत में आ चुका था और हाथ में ख़ंजर था। लिहाज़ा बदन बग़ैर सर के उसके पीछे भागता रहा। जब सिख ने देखा कि बग़ैर सर के यह बदन मेरी तरफ़ भाग रहा है तो वह डर के मारे पीछे गिरा। आप उस के ऊपर गिरे और आपका ख़ंजर उसके सीने में पेवस्त हो गया। इस तरह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने आपकी क़सम पूरी फ़रमा दी। हदीसे पाक में आता है कि अल्लाह के कुछ बंदे ऐसे होते हैं कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हाँ उनका वह मुक़ाम होता है कि जब वह क़सम खा लिया करते हैं तो ﴿لو قسم الله لابره﴾ अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उनकी क़सम को पूरा कर दिया करता है।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 6/90)

महबूबे ख़ुदा को सताने का अंजाम

एक बुज़ुर्ग अल्लाह वाले जा रहे थे। सर्दी का मौसम था, बारिश भी थी। सामने से मियाँ-बीवी आ रहे थे। उन बुज़ुर्ग के जूते से एक दो छींटे उड़ीं और औरत के कपड़ों पर जाकर गिरीं। मियाँ ने जब देखा तो उसे बड़ा ग़ुस्सा आया। कहने लगा तू अंधा है, तुझे नज़र नहीं आता, तूने मेरी बीवी के कपड़े ख़राब कर डाले। ग़ुस्से में आकर उसने उस अल्लाह वाले को एक थप्पड़ लगा दिया। बीवी बड़ी ख़ुश

हुई कि तुमने मेरी तरफ़ से ख़ूब बदला लिया। फिर ख़ुशी-ख़ुशी दोनों घर चले गए। थोड़ी दूर आगे गए तो क्या देखते हैं कि एक हलवाई की दुकान है, हलवाई ने सोचा था कि आज सर्दी है लिहाज़ा आज मुझे अल्लाह का जो भी बंदा सबसे पहले नज़र आएगा मैं उसको अल्लाह के लिए गर्म दूध का एक प्याला ज़रूर पिलाऊँगा। अब वह इंतिज़ार में था। यह बुज़ुर्ग जब उसके क़रीब से गुज़रे तो उसने बुलाया, बिठाया और गर्म गर्म दूध का प्याला पेश किया, सर्दी तो थी सही उन्होंने वह गर्म दूध का पियाला पिया और अल्लाह का शुक्र अदा किया। दुकान से बहार निकलकर आसमान की तरफ़ देखा और कहा वाह अल्लाह! तेरी शान भी कितनी अजीब है, कहीं तो मुझे थप्पड़ लगवाता है और कहीं मुझे गर्म दूध के पियाले पिलवाता है। इतने में वह मियाँ बीवी घर के क़रीब पहुँच चुके थे। मियाँ सीढ़ियों पर चढ़ रहा था कि उसका पाँव अटका वह गर्दन के बल गिरा और वहीं उसकी मौत हो गई। बीवी ने कहा कि थोड़ी देर पहले एक वाक़िआ पेश आया था। उस बूढ़े ने कहीं इसके लिए बद्दुआ तो नहीं कर दी। लोग उनके पास आए और कहने लगे। उसने एक थप्पड़ मारा था आप माफ़ कर देते। आपने उसके लिए बद्दुआ कर दी। उन्होंने कहा नहीं मैंने कोई बद्दुआ नहीं की। बात असल में यह है कि उसको बीवी से मुहब्बत थी जब बीवी को तकलीफ़ पहुँची तो उसने बदला लिया। मुझसे मेरे परवरदिगार को मुहब्बत थी जब मुझे तकलीफ़ पहुँची तो मेरे परवरदिगार ने बदला ले लिया तो जब इंसान अपना मामला अल्लाह के सुपुर्द करता है तो अल्लाह तआला बदला ले लिया करता है। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक्क़ार 5/59)

औलाद व रिज़्क़ में भी बरकत

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि नबी अलैहिस्सलातु

वस्सलाम ने मुझे दुआ दी कि अल्लाह उसके रिज़्क़ और औलाद में बरकत अता फ़रमा। महबूब की दुआ ऐसी क़ुबूल हुई कि मेरे पास इतना माल था कि सोने की ईंटों को मैं लकड़ी काटने वाले कुल्हाड़े से तोड़ा करता था, माशाअल्लाह। फ़रमाते थे कि मेरे घर में दिरहम व दिनार का इतना ढेर लग जाया करता था कि उसके पीछे बंदा छुप जाया करता था। अल्लाह तआला तेरी शान, औलाद इतनी कि मैंने अपनी ज़िन्दगी में एक सौ से ज़्यादा पोते, पोतियाँ, नवासे, नवासियाँ आँखों से देंखी, सुब्हानअल्लाह।

महबूब दो जहाँ के ग़म की इन्तिहा

एक रिवायत में आया है कि एक बार हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो अल्लाह के महबूब ने महसूस किया कि जिब्रील अलैहिस्सलातु वस्सलाम कुछ ग़मज़दा हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा कि जिब्रील क्या मामला है कि आज मैं आपको ग़मज़दा देखता हूँ। हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया कि ऐ महबूबे कुल जहाँ मैं अल्लाह के हुक्म से आज जहन्नम का नज़ारा करके आया हूँ। उसके देखने की वजह से ऊपर ग़म के असरात हैं। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने पूछा कि जिब्रील बताओ कि जहन्नम के क्या हालात हैं? अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी जहन्नम के सात दर्जे होंगे। इनमें से जो सबसे नीचे होगा, उसके अन्दर अल्लाह तआला मुनाफ़िक़ों को रखेंगे जैसा कि क़ुरआने पाक में फ़रमाया गया है,

﴿ان المنافقين في الدرك الاسفل من النار.﴾

उसके ऊपर वाले (छठे) दर्जे में अल्लाह तआला मुशरिक लोगों को डालेंगे, उससे ऊपर पाँचवे दर्जे में अल्लाह तआला सूरज और चाँद की पूजा करने वालों को डालेंगे, चौथे दर्जे में अल्लाह तआला आग

को पूजने वालों को डालेंगे, उसके ऊपर तीसरे दर्जे में यहूदियों को डालेंगे, दूसरे दर्जे में ईसाइयों को डालेंगे। यह कहकर हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ख़ामोश हो गए। महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा जिब्रील! ख़ामोश क्यों हो गए हैं, बताओ के पहले दर्जे में कौन होंगे? अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! सबसे ऊपर वाले यानी पहले दर्जे में अल्लाह तआला आपकी उम्मत के गुनाहगारों को डालेंगे।

जब आपने ये सुना कि मेरी उम्मत के गुनाहगारों को भी जहन्नम में डाला जाएगा तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बहुत ग़मगीन हो गए और आपने अल्लाह के हुज़ूर दुआएं मांगनी शुरू कर दीं। किताबों में लिखा है कि तीन दिन ऐसे गुज़रे कि अल्लाह के महबूब मस्जिद में नमाज़ पढ़ने के लिए तशरीफ़ लाते, नमाज़ पढ़कर हुजरे मे तशरीफ़ ले जाते और हुजरा बंद कर लेते, हुजरे अंदर परवरदिगार के सामने आह व ज़ारी में मशग़ूल हो जाते। सहाबा किराम हैरान होते कि नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम पर क्या ख़ास कैफ़ियत है कि किसी से बातचीत भी नहीं करते और नमाज़ पढ़ने के बाद हुजरे की तन्हाई इख़्तियार फ़रमा लेते हैं। घर में भी तशरीफ़ नहीं ले जा रहे हैं, यह क्या मामला बना?

जब तीसरा दिन हुआ तो सैय्यदना अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु से बरदाश्त न हो सका। वह आपके हुजरे मुबारक पर तशरीफ़ लाए और दस्तक दी और 'अस्सलामु अलैकुम लब्बैक या रसूलुल्लाह' यानी अल्लाह के महबूब मैं हाज़िर हूँ लेकिन अन्दर से कोई जवाब न मिला तो हज़रत सिद्दीके अकबर वापस चले गए और उन्होंने रोते हुए जा कर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा, उमर! नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इस वक़्त मेरे सलाम का जवाब अता नहीं फ़रमाया। लिहाज़ा आप जावें शायद जवाब मिल जाए। लिहाज़ा हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हुजरे मुबारक के दरवाज़े पर आए। उन्होंने भी ऊँची

आवाज़ से तीन बार सलाम किया मगर नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की तरफ़ से कोई जवाब की आवाज़ नहीं आई तो वह भी यही समझे कि अभी दरवाज़ा खोलने की इजाज़त नहीं है। लिहाज़ा वह भी वापस तशरीफ़ ले गए। वापसी पर उनकी मुलाक़ात हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु से हुई। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनसे कहा, सलमान! आपके बारे में नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया, ﴿سلمان منا اهل البيت﴾ "सलमान तो मेरे अह्ले बैत में हैं" इसलिए आप जाएं हो सकता है कि आपकी वजह से अल्लाह तआला दरवाज़ा खुलने का सबब बना दे तो उन्होंने भी आकर सलाम किया लेकिन नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की तरफ़ से कोई जवाब न मिला। उसके बाद हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा गया। जब उनसे कहा गया तो उन्होंने सोचा कि मैं इस बारे में कोई और हल क्यों न करूँ। इसलिए वह खुद दरवाज़े पर जाने के बजाए अपने घर तशरीफ़ ले गए और अपनी मोहतरम बीवी हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमाया कि नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम पर तीन दिन से ऐसी कैफ़ियत है कि आप हुजूरे की तन्हाई में हैं। जब मस्जिद में तशरीफ़ लाते हैं तो चेहरा-ए-अनवर पर ग़म के आसार होते हैं, आँखे आबदीदा महसूस होती हैं और नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम किसी से कुछ बात भी नहीं फ़रमाते। लिहाज़ा आप जाएं और दरवाज़ा खटखटाएं। हो सकता है कि आपकी वजह से दरवाज़ा खोल दिया जाए तो सैय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा तशरीफ़ लायीं और उन्होंने भी आकर नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम को सलाम किया। आख़िरकार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनकी आवाज़ पर दरवाज़ा खोला और अपनी बेटी को अंदर बुला लिया। फ़ातिमा ने पूछा ऐ अल्लाह के महबूब! आप पर क्या कैफ़ियत है कि तीन दिन से आप मजलिस में भी तशरीफ़ फ़रमा नहीं होते, हुजूरे की तन्हाई को इख़्तियार किया हुआ है और

चेहरा-ए-अनवर पर भी ग़म के आसार हैं। उस वक़्त नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने यह पूरी बात बताई कि मुझे जिब्रील अलैहिस्सलाम ने आकर बताया कि मेरी उम्मत के कुछ गुनाहगार लोग जहन्नम में जाएंगे, फ़ातिमा! मुझे अपनी उम्मत के उन गुनाहगारों का ग़म है और मैं अपने मालिक से फ़रियाद कर रहा हूँ कि वह उनको जहन्नम की आग से बरी फ़रमा दे। यह कहकर नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फिर लम्बा सज्दा किया, यहाँ तक कि उस सज्दे में भी रोते रहे। आख़िरकार अल्लाह तआला की तरफ़ से वादा आ गया कि ऐ महबूब, ﴿ولسوف يعطيك ربك فترضى﴾ कि अल्लाह तआला आपको इतना अता कर देगा कि आप राज़ी हो जाएंगे। इसलिए नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने मुझसे वादा कर लिया है! लिहाज़ा वह क़यामत के दिन मुझे राज़ी करेगा और मैं उस वक़्त तक राज़ी नहीं हूँगा जब तक मेरा आख़िरी उम्मती भी जन्नत में नहीं चला जाएगा, सुब्हानअल्लाह। इसके बाद नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम बाहर तश्रीफ़ लाए।

अंधा भी चिराग़ लेकर निकला

एक अंधा था। अपने सर के ऊपर पानी का घड़ा रखकर जा रहा था। रात का वक़्त था लेकिन हैरान करने वाली बात यह है कि रात के अंधेरे में वह अंधा अपने हाथ में एक चिराग़ भी लिए जा रहा था। किसी ने दूसरे आदमी ने उसे देखा तो वह बड़ा हैरान हुआ। वह कहने लगा कि आपको तो क़दमों के हिसाब से रास्तों का वैसे ही पता है। आपको इस रोशनी की ज़रूरत नहीं है तो आप हाथ में चिराग़ लिए क्यों जा रहे हैं? वह अंधा कहने लगा कि आपने सच कहा, मुझे वाक़ई चिराग़ की ज़रूरत नहीं है क्योंकि मैंने रास्ता अपने क़दमों से इतना नापा हुआ है कि मैं क़दमों से पहचान कर सीधा

मंज़िल पर पहुँच जाऊँगा, अलबत्ता मैं जो चिराग़ लिए फिरता हूँ यह आँख वालों के लिए है। ऐसा न हो कि कोई आँख वाला अंधेरे में चल रहा हो, उसे नज़र न आए और वह मुझसे टकरा जाए और मेरा घड़ा टूट जाए। इसलिए मैं अपने घड़े की हिफ़ाज़त की ख़ातिर आँख वालों को चिराग़ दिखाता फिर रहा हूँ तो हमें भी चाहिए कि कि हम अपनी क़ीमती दौलत 'ईमान' की हिफ़ाज़त करें। चिराग़े मआरिफ़त हासिल करें ताकि नफ़्स व शैतान और गुनाह हम से न टकराएं और हम महफ़ूज़ रहें।

शाह अब्दुल अज़ीज़ रह० का तर्ज़ेअमल

शाह अब्दुल अज़ीज़ रह०, शाह वलीउल्लाह साहब रह० के बेटे और जानशीन थे। वह ख़ुद भी बहुत बड़े मुहद्दिस थे और उनके शागिर्द भी वक़्त के अकाबिरीन में से बने। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उनसे दीन का बहुत ज़्यादा काम लिया। एक वक़्त था जब पाक व हिंद में उनका फ़त्वा चला करता था। देहली की जामा मस्जिद से कुछ ही किलोमीटर की दूरी पर उनका मदरसा और घर था। उन्होंने अपने घर में एक मस्जिद बनाई हुई थी जिसे 'मस्जिदे बैत' कहते थे। पढ़ने पढ़ाने की मसरूफ़ियत की वजह से वह अक्सर नमाज़ें वहीं पढ़ा करते थे मगर जुमा मुबारक की नमाज़ जामा मस्जिद में जाकर पढ़ते थे। उनके मुरीदीन उनकी ज़ियारत के लिए तड़पते थे। अल्लाह तआला ने उनको बहुत ज़्यादा हुस्न व जमाल अता फ़रमाया था। उनका चेहरा ऐसा मुनव्वर था कि लोग देखने के लिए आते थे। अलबत्ता जब जुमा की नमाज़ पढ़ने के लिए आते थे उस वक़्त लोग उनका दीदार करते थे। उनके एक ख़ादिम का नाम फ़सीहुद्दीन था। वह हज़रत को जुमा पढ़ाने के लिए जाया करता था।

फिर एक वक़्त ऐसा आया कि जब हज़रत शाह साहब रह० जुमा

पढ़ने बाज़ार जाते तो बाज़ार से गुज़रते हुए अपने चेहरे पर घूंघट की तरह रुमाल डाल लेते थे। अब देखने वालों को चेहरा भी नज़र नहीं आता था। लोग उनके ख़ादिम को कहते कि जी हम तो दीदार से भी महरूम हो जाते हैं। ख़ादिम अगर पुराने हों तो फिर कभी-कभी बेतकल्लुफ़ी भी हो जाती है। लिहाज़ा एक दिन फ़सीहुद्दीन ने मौक़ा पाकर अर्ज़ किया, हज़रत! सारा हफ़्ता लोग वैसे ही इंतिज़ार में रहते हैं और जब आप जुमा के लिए जाते हैं तो चेहरे पर रुमाल डालकर उनको दीदार से महरूम कर देते हैं। हज़रत भी चल रहे थे और वह भी साथ-साथ चल रहे थे जब उसने बात की तो हज़रत शाह साहब ने अपना रुमाल उतारकर फ़सीहुद्दीन के सर पर रख दिया। वह थोड़ी सी देर बाद चक्कर खाकर गिर गया। लोगों ने उसे ज़मीन से उठाया और जब होश आया तो पूछने वाले ने पूछा कि जी आपके साथ क्या हुआ? वह कहने लगा जैसे ही शाह साहब ने अपना रुमाल मेरे सर पर डाला तो मुझे भरे बाज़ार के अंदर इंसान तो कम नज़र आए लेकिन कुत्ते, बिल्ली और ख़िन्ज़ीर ज़्यादा चलते नज़र आए। उनके अंदर की शक्लें उसको कश्फ़ की सूरत में नज़र आ गयीं। यह तो अल्लाह रब्बुइलज़्ज़त का करम और एहसान है कि उस परवरदिगार ने गुनाहों में बदबू नहीं बनाई जिसकी वजह से आज हम आराम से महफ़िलों में बैठकर ज़िन्दगी गुज़ारते हैं।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक्क़ार 12/126)

पुरसुकून ज़िन्दगी का राज़

अमरीका में मुझे एक कंपनी डायरेक्टर मिला। वह पीएचडी था। कहने लगा मैं पाकिस्तान गया हूँ और मैंने वहाँ एक अजीब बात देखी। मैंने कहा बताओ वह कौनसी बात है? कहने लगा कि पाकिस्तान एक ऐसा मुल्क है जहाँ कार और ऊँट एक ही सड़क पर

चलते हैं। मैंने कहा वाक़ई आप ठीक बात कह रहे हैं। वह कहने लगा मैं एक दूसरी बात भी करता हूँ। मैंने कहा वह क्या है? कहने लगा, मैंने वहाँ ग़रीब लोगों को देखा कि उनके कपड़े फटे पुराने होते हैं, उनके चेहरों से अंदाज़ा होता है कि उन्हें खाना भी ठीक नहीं मिलता, उनके पास नहाने के लिए चीज़ें भी पूरी तरह नहीं, उनके घर का मैयार भी इतना अच्छा नहीं लेकिन मैं यह देखकर हैरान होता था कि उनके चेहरों पर सुकून होता था। वह सब रात को मीठी नींद सोते थे। कहने लगा मुझे यह बताएं कि इसकी क्या वजह है? मैंने कहा यह इस्लाम की बरकत है। (खुत्बात ज़ुलफ़ुक़्कार 5/100)

डाक्टर अब्दाल कैसे बन गए

हज़रत शाह ज़्ज़वार हुसैन शाह रह० से इस आजिज़ ने एक वाक़िआ खुद सुना। उनके दौर में एक एमबीबीएस डाक्टर साहब का एक मज्ज़ूब के पास उठना बैठना था। वह मज्ज़ूब फ़ौत होने लगा तो उनको कोई चीज़ खाने को दे गया। उन्होंने वह चीज़ खाई तो वह भी मज्ज़ूब बन गए। अब वह एमबीबीएस डाक्टर बग़ैर अज़ारबंद के सिर्फ़ एक पाजामा पहनने लग गए। हालत यह थी कि पाजामा हाथ में लेकर चलते फिरते थे। वह डाक्टर साहब एक हकीम साहब के पास आते जाते थे।

हज़रत ने फ़रमाया कि एक बार हम भी हकीम साहब से मिलने गए तो ऊपर डाक्टर साहब भी आ गए। हकीम साहब ने डाक्टर साहब को देखकर फ़रमाया कि ज़रा मसरूफ़ हूँ, मिलने वाले बैठे हैं इसलिए थोड़ी देर तश्रीफ़ रखें। उन्होंने इशारा किया ठीक है। उसके बाद वह हमारे पास ही बैठ गए। मैं हैरान था कि जब मैं उनकी तरफ़ देखता तो इधर उधर देखने लगते और जब मैं इधर उधर देखता तो फ़ौरन मेरा चेहरा देखना शुरू कर देते। थोड़ी देर के बाद

उन्होंने हकीम साहब के कागज़ों में से एक कागज़ उठाया और कलम लेकर कुछ गुनगुनाने भी लगे और लिखने भी लगे। जब मैंने उनकी गुनगुनाहट पर थोड़ी सी तवज्जेह दी तो मुझे महसूस हुआ कि वह अरबी के बहुत ही अजीब अश्आर पढ़ रहे हैं। समझ में नहीं आती थी मगर उसकी सुर ऐसी थी कि उससे मैंने पहचान लिया कि मुहब्बते इलाही के अश्आर गुनगुना रहे हैं हालाँकि एमबीबीएस डाक्टर को अरबी से क्या वास्ता? यह बेचारा तो टिट मिट पढ़ते हैं।

थोड़ी देर के बाद वह डाक्टर साहब उठे और इशारा किया कि अब मैं जाता हूँ। हकीम साहब ने कहा डाक्टर साहब क्या बात है आप इतने दिन से हमारे पास नहीं आए? डाक्टर साहब कहने लगे, "अब हम दाल हो गए हैं।" यह कहकर डाक्टर साहब चले गए, बाद में हकीम साहब ने सैय्यद ज़वार हुसनैन शाह रह० से अर्ज़ किया, क्या आपको पता चला कि यह क्या कह गए हैं? हज़रत ने फ़रमाया कि मैं तो नहीं समझ सका। हकीम साहब कहने लगे कि यह कह गए हैं "अब हम दाल हो गए हैं।" मतलब यह है कि अब मैं अब्दाल बन गया हूँ। सही बताने के बजाए कि हम अब्दाल हो गए हैं, उसने अब को पहले कहा और दाल को बाद में। हज़रत रह० फ़रमाते हैं कि मुझे भी हैरानी हुई कि वाकई बात तो ऐसी ही कर गया है लेकिन हकीम साहब ने इशारा समझ लिया।

फिर उसके बाद उन्होंने एक लैंस मंगवाया जो हरूफ़ को बड़ा करके दिखाता है। उसकी मदद से देखा कि तो मैं हैरान रह गया कि ज़ाहिरन तो नज़र आता था कि उन्होंने ऐसे ही निशान से बना दिए हैं लेकिन जब उसे बड़ा करके देखा तो पता चला कि कि अरबी का शेर इतना खूबसूरत लिखा हुआ था कि ऐसा तो कोई कातिब भी नहीं लिख सकता था। (खुत्बात ज़ुलफ़ुक्कार 5/150)

ख़्वाजा निज़ामुद्दीन रह० की मुलाक़ात

ख़्वाजा निज़ामुद्दीन रह० को जब ख़िलाफ़त मिली तो उन्होंने हज़रत ख़्वाजा रसन रह० के मज़ार पर चालीस दिन तक ऐतिकाफ़ किया। इस दौरान उन्होंने फूलों की एक बेल देखी जो ताज़ा-ताज़ा लगाई गई थी। वह बेल कुछ दिनों में बड़ी हो गई। एक दिन जब देखा कि फूल भी लग चुके हैं तो दुआ मांगी, रब्बे करीम! इतने दिनों में तो एक बेल पर भी फूल लग गए, मैं तेरी इबादत में यहाँ बैठा हूँ, ऐ अल्लाह! मेरे अंदर भी तक़्वे के फूल लगा दे। उनकी दुआ ऐसी क़ुबूल हुई कि चालीस दिन पूरे करके जब निकले तो रास्ते में एक मज्ज़ूब से मुलाक़ात हुई। उसने तवज्जेह दी और आपका मामल कुछ और ही बन गया। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 5/153)

एक मज्ज़ूबा तन्दूर में कूद पड़ी

ख़्वाजा अब्दुल ख़ालिक़ ग़जदवानी रह० इमाम मालिक रह० की औलाद में से थे और हमारे सिलसिल-ए-आलिया नक़्शबंदिया के बड़े बुज़ुर्ग थे। उनका घर बुख़ारा से अठ्ठारह किलोमीटर के फ़ासले पर गुजदावान में था। एक बार कहीं जा रहे थे कि एक मज्ज़ूबा ने देख लिया। उसके जिस्म पर पूरे कपड़े भी नहीं थे। जैसे ही उन्हें देखा उसी वक़्त उसने एक तन्दूर में छलांग लगा दी हालाँकि जलने के बाद उसमें अंगारे मौजूद थे। जब ख़्वाजा अब्दुल ख़ालिक ग़जदवानी रह० चले तो गए तो वह तन्दूर से बाहर निकली। लोगों ने पूछा कि तो वैसे तो नंगी फिरती है और उनको देखकर तूने तन्दूर में छलांग लगा दी। वह कहने लगी हाँ बड़ी मुद्दत के बाद एक मर्द नज़र आया। मर्द से पर्दा करने का हुक्म है डंगरों और जानवरों से तो पर्दा करने का हुक्म नहीं दिया गया। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 5/155)

❋ ❋ ❋

بسم الله الرحمن الرحيم

﴿لا اله الا الله محمد رسول الله﴾

ईमान व यक़ीन

और

इस्तिक़ामत

ईमान व यक़ीन व इस्तिक़ामत

कलिमे के बग़ैर नेकियाँ बर्बाद क्यों?

बाहर के मुल्क में एक आदमी कहने लगा कि अगर कोई सिर्फ़ कलिमा पढ़ ले तो क्या वह जन्नत में जाएगा? फ़क़ीर ने कहा हाँ इन्शाअल्लाह जन्नत में जाएगा, गुनाहगार होगा तो उसको सज़ा मिलेगी, फिर भी आख़िर में जन्नत में जाएगा। उसने कहा अगर एक आदमी कलिमा न पढ़े? फ़क़ीर ने कहा कि वह जन्नत में नहीं जाएगा। कहने लगा अगर कलिमा न पढ़े और बड़ा नेक हो मसलन उसने रोशनी ईजाद की, बल्ब का ईजाद करने वाला बना, मेहमान-ख़ाने बनवाए, अच्छे काम किए फिर भी वह इंसान जन्नत में नहीं जाएगा। फ़क़ीर ने कि फिर भी नहीं जाएगा। उसने कहा देखिए यह कितनी ना इंसाफ़ी है, क्या इस्लाम में अदल नहीं? फ़क़ीर ने कहा क्यों? कहने लगा एक आदमी गुनाहगार है, कलिमा पढ़ लेता है। उसको जन्नत में भेज रहे हैं लेकिन एक आदमी सारे अच्छे काम करता है सिर्फ़ कलिमा नहीं पढ़ता तो उसे जहन्नम में भेज रहे हैं। फ़क़ीर ने कहा भाई उसूल तो यही है। कहने लगा यह उसूले फ़ितरत के ख़िलाफ़ है। फ़क़ीर ने कहा देखो भाई हम जो आज हिसाब किताब पढ़ते हैं जिस पर हमारे साइंस की बुनियाद है। जिस पर हम कहते हैं कि फ़ितरत के क़ानून लागू हैं, उसकी मिसाल दी जाती है, मान लो कौई आदमी अगर एक का अदद लिख देता है और फिर उसके दाईं तरफ़ ज़ीरो, ज़ीरो, ज़ीरो लिखता चला जाता है तो हर ज़ीरो जो लगती चली जाएगी तो वह उसकी क़ीमत को बढ़ाती चली जाएगी, जितने ज़ीरो लगाते जाएंगे क़ीमत बढ़ती चली जाएगी। अगर

यह आदमी एक लगाना भूल गया या नहीं लगाता तो और सिर्फ़ ज़ीरो ज़ीरो लगाता चला जाता है और कहता है देखो जी मैंने तो दस अरब ज़ीरो लिख दी है तो इसकी क़ीमत तो ज़ीरो ही है। कहा जाएगा कि इन तमाम ज़ीरो की क़ीमत तो इस एक की वजह से होनी चाहिए थी। जब आपने एक ही न लिखा तो अब चाहे जितनी मर्ज़ी ज़ीरो लिखते रहे उसकी कोई क़ीमत नहीं। इसी तरह जो एक अल्लाह को नहीं मानता तो उसके कामों की क़ीमत भी ज़ीरो होती है। जब तक एक अल्लाह वाहदहु ला शरीक को न माने। वह कहने लगा बात तो आपने ठीक की, मुझे बात समझ में आ गई। फ़क़ीर ने कहा अच्छा अब एक दूसरी मिसाल समझें कि जो इंसान कलिमा पढ़ लेता है तो वह गोया अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के ख़ालिके काएनात, मालिके काएनात और वाहदहु ला शरीक होने का इक़रार कर रहा होता है। यह ऐसा ही है जैसा कि किसी मुल्क के अंदर रहे और बादशाह की बादशाहत को तसलीम कर ले मगर गुनाहगार हो तो बादशाह थोड़ी बहुत सज़ाएं देता रहता है या उसको तंबीह करता रहता है मगर उसको अपना शहरी बनने का मौक़ा देता है। एक आदमी बादशाह का ग़द्दार हो और कहे कि बादशाह को तसलीम ही नहीं करता। वह तो उसे फिर कभी भी अपने मुल्क में रहने की इजाज़त नहीं देगा। कहेगा कि इस आदमी का फ़ौरन सर काट देना चाहिए। बात ऐसी ही है कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने हम लोगों को कलिमे की नेमत अता की है। अल्लाह का तसव्वुर बड़ी नेमत है। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 1/191)

हज़रत मूसा कलीमुल्लाह अलैहिस्सलाम के ईमानी वाक़िआत के कुछ क़िस्से

1. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम जादूगरों में घिरे खड़े हैं। जादूगरों ने

अपनी रस्सियाँ डालीं जो साँप बन गयीं और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की तरफ़ लपकने लगीं। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के हाथ में असा (छड़ी) है। अब ऐसे हाल में अक़्ल से पूछें कि एक आदमी के पास छड़ी है और वह साँपों में घिर खड़ा है, क्या करना चाहिए? अक़्ल कहेगी कि उस छड़ी को मज़बूती से अपने हाथ में पकड़ लेना चाहिए फिर जो साँप उसके क़रीब आए उसके सर पर मारना चाहिए। यही तरीक़ा है कामयाबी का और अगर अल्लाह तआला से पूछें कि क्या करना चाहिए? तो फ़रमाया कि ऐ मेरे प्यारे मूसा! आप अपनी छड़ी को ज़मीन पर डाल दें। इस मौक़े पर अक़्ल कहेगी कि क्या कर रहे हो? यह तो अपनी मौत को दावत देने जैसा है। यही उम्मीद की आख़िरी किरन थी और उसे भी छोड़ रहे हो लेकिन हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला की रबूबियत पर यक़ीन रखते हुए ख़बर के रास्ते पर क़दम उठाया, नज़र के रास्ते पर नहीं उठाया। अपनी छड़ी को ज़मीन पर डाल दिया। वही छड़ी एक बड़ा साँप बन गया और उन सब साँपों को खा गया। अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को कामयाबी अता फ़रमा दी।

2. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अपनी क़ौम को लेकर दरियाए नील के किनारे पहुँचे। पीछे से फ़िरऔन अपनी फ़ौजें लेकर आ गया। आगे दरिया बह रहा है और पीछे फ़िरऔन की फ़ौजें हैं।

﴿قال اصحاب موسیٰ انا لمدرکون﴾

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के साथियों ने कहा, अब पकड़े गए। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा ﴿كلا﴾ हर्गिज़ नहीं ﴿ان معی ربی﴾ मेरा रब मेरी परवरिश करने वाला, मेरा परवरदिगार, मेरी ज़रूरतों को पूरा करने वाला मेरे साथ है। ﴿سيهدين﴾ वह मुझे सीधा रास्ता दिखाएगा, वह ज़रूर मेरी मदद फ़रमाएगा। ऐसी सूरत में अक़्ल की तरफ़ रुजू

करें, अक़्ल से पूछें कि क्या करना चाहिए? अक़्ल जवाब देगी कि अगर आदमी के सामने दरिया हो, किश्ती भी पास न हो और आदमी के पीछे दुश्मन की फ़ौज भी हो तो ऐसी सूरत में डंडे को मज़बूती पकड़ना चाहिए और जब फ़ौज क़रीब आए तो उसके सिपाहसालार के सर पर डंडा मारना चाहिए। हो सकता है उसके सर पर लग जाए और वह मर जाए और अगर ख़बर से पूछें कि क्या करना चाहिए ﴿ان اضرب بعصاك البحر﴾ ऐ मेरे नबी अलैहिस्सलाम! आप छड़ी को पानी पर मारिए। अक़्ल यह सुनती तो चिल्लाती है, चीख़ती है कि पानी में मारने से क्या बनेगा! मारना है तो फ़िरऔन के सर पर मारो लेकिन हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने नज़र के रास्ते पर क़दम नहीं उठाया बल्कि ख़बर के रास्ते पर क़दम उठाया। जैसे ही पानी के ऊपर छड़ी को मारा तो उसमें बारह रास्ते बन गए। अब उनकी क़ौम उसे पार कर गई। सैकड़ों सालों के तजुर्बे वहाँ धरे के धरे रह गए। सारी दुनिया जानती है कि पानी सतह बराबर रखता है मगर जब अल्लाह तआला का हुक्म आया तो पानी ने बराबर रखने वाली सिफ़त ही छोड़ दी।

3. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम क़ौम को लेकर एक वादी में पहुँचते हैं। वहाँ पीने के लिए पानी नहीं था। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की क़ौम ने कहा ऐ अल्लाह के नबी! हमारे पास तो पीने के लिए पानी नहीं हम क्या करें? ऐसी सूरतेहाल में अक़्ल से पूछें क्या करना चाहिए? अक़्ल कहेगी कि डंडा है तो चलो उसी का बेलचा बना लो और उस से ज़मीन खोदना शुरू कर दो। ज़मीन खोदते खोदते कुँआ बन जाएगा मगर ख़्याल रखना कि ज़ोर से बेलचा न मारना कि डंडा टूट ही जाए। इसलिए रेगिस्तान में कोई और चीज़ नहीं मिलेगी। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने जब ख़बर के रास्ते को मालूम किया तो हुक्म मिला ﴿اضرب بعصاك الحجر﴾ अपनी छड़ी से पत्थर पर चोट मारिए। अक़्ल से

पूछें तो अक्ल चीख़ेगी और चिल्लाएगी कि छड़ी को पत्थर पर मारने से क्या फ़ायदा? ज़मीन ही खोद लेते तो बेहतर था कि उससे पानी निकलने की उम्मीद थी मगर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी छड़ी को पत्थर पर मारा और अल्लाह तआला ने उससे चश्मे जारी फ़रमा दिए। अक्ल खड़ी की खड़ी देखती रह गई।

4. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम जा रहे हैं। एक इस्राईली और फ़िरऔनी लड़ रहे हैं। फ़िरऔनी ना हक़ इस्राईली पर ज़ुल्म कर रहा है। उन्होंने इस्राइली को छुड़ाने के लिए फ़िरऔनी को घूँसा मारा। नबी की ताक़त चालीस मर्दों के बराबर होती है, ﴿فوكزه موسى فقضى عليه﴾ मुक्का लगते ही फ़िरऔनी मर गया और दूसरा भाग गया। उनकी क़ौम का वही बंदा अगले दिन किसी और से लड़ रहा था। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि कल तू उससे लड़ता था आज इससे लड़ता है, लगता है तू ही शरारती है। वह तो कल का मंज़र देख चुका था कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के मुक्के ने हमेशा की नींद सुला दिया था। कहने लगा, मुझको भी क़त्ल करना चाहता है इस तरह क़ौम क़िब्ती के क़त्ल का पता चल गया। फ़िरऔन को भी ख़बर मिल गई कि उस आदमी को मूसा अलैहिस्सलाम ने क़त्ल किया हैं। लिहाज़ा फ़िरऔन ने अपनी एसेम्बली की बैठक बुलाई और एसेम्बली के मिम्बरों से मशवरा करने लगा कि अब क्या करना चाहिए। सबने कहा उसको क़त्ल कर दो। उनमें से एक बंदा हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के हक़ में मुख़्लिस था। वह जल्दी के रास्ते से भागता हुआ आया और कहा अमीरों ने तय कर लिया है कि आपको क़त्ल कर दिया जाए। आप यहाँ से किसी और जगह तशरीफ़ ले जाएं। ﴿فخرج منها خائفا يترقب.﴾ हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम वहाँ से निकल खड़े हुए, ख़ौफ़ था दिल में। तबई ख़ौफ़ का होना नबी के शान के ख़िलाफ़ नहीं होता। पीछे मुड़कर देखते हैं कि कहीं फ़िरऔन

की फ़ौज न आ जाए। दिल में कह रहे थे ﴿رب نجنی من القوم الظالمين﴾ ऐ मेरे परवरदिगार! मुझे ज़ालिमों की क़ौम से निजात अता फ़रमा दे। इस ख़ौफ़ में किसको पुकारा? कि ऐ अल्लाह मेरी ज़रूरतों को पूरा करने वाले, मेरे ऊपर ख़ौफ़ है तू उसको अमन में बदल दे।

5. इसके बाद मदयन की तरफ़ चले जाते हैं। वहाँ एक बड़ा कुँआ था। उस पर भारी पत्थर रखा जाता था। जब वहाँ पहुँचे तो देखा कि लोग बकरियों को पानी पिला रहे हैं। दो लड़कियाँ दूर खड़ी हैं। उनसे पूछा कि तुम अपनी बकरियों को पानी क्यों नहीं पिलातीं। कहने लगीं हम नहीं पिला सकती जब तक ये पिलाकर न चले जाएं। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम समझ गए इधर भी ऊँच-नीच है, अद्ल व इंसाफ़ की ज़िन्दगी यहाँ भी नहीं है। जब वे पत्थर रखकर चले गए तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम आए और इतने भारी पत्थर को एक तरफ़ उलट दिया। उनकी सारी बकरियों को पानी पिला दिया और उसके बाद दोनों लड़कियाँ अपने घर चली गयीं।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अकेले खड़े हैं। न घर न दर, पेड़ के नीचे आते हैं और कहते हैं,

﴿رَبِّ إِنِّي لِمَا أَنزَلْتَ إِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيرٌ﴾

ऐ मेरे परवरदिगार! तू जो कुछ ख़ैर नाज़िल करे मैं उसका मुहताज हूँ।

किस लफ़्ज़ से दुआ मांगी? रब के लफ़्ज़ से। अल्लाह तआला ने दुआ क़ुबूल फ़रमा ली। अब घर का इंतिज़ाम भी हो रहा है, बीवी का इंतिज़ाम भी हो रहा है। जब ये घर गयीं तो हज़रत शुएब अलैहिस्सलाम ने देखा कि बकरियाँ ख़ूब छककर आई हैं तो वजह पूछी। बच्चियों ने बताया कि हमने एक आदमी देखा ﴿قوی امین﴾ बड़ा ताक़त वाला है और बड़ा अमानत वाला है। फ़रमाया कि उसे मेरे

पास ले आओ। लड़की वापस आई कि मेरे अब्बा जान आपको बुला रहे हैं। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम उस लड़की के साथ जाते हैं। तफ़्सीर में लिखा है कि मूसा अलैहिस्सलाम ने लड़की से कहा, मैं रास्ता नहीं जानता लेकिन तू अगर मेरे आगे चलेगी तो मुमकिन है कि तेरे क़दमों पर मेरी नज़र पड़ जाए। मैं यह भी पसन्द नहीं करता तू मेरे पीछे चल और मैं तेरे आगे चलूँगा अगर मैं ग़लत रास्ते पर जाने लगूँ तो तू मुझे पीछे से बता देना। अल्लाह के नबी का अमल देखें यह है नबी की असमत, सुब्हानअल्लाह। जब हज़रत शुएब अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात हुई तो उन्होंने अपनी बेटी के साथ निकाह कर दिया। अल्लाह ने घर भी दे दिया और घर वाली भी दे दी।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 2/75-79)

सैय्यदना मूसा अलैहिस्सलाम की माँ का ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ

आपको एक ईमान बढ़ाने वाला वाक़िआ सुनाता हूँ। उसे ध्यान से सुनिएगा। अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं :

واوحينا الى موسى ان ارضعيه فاذا خفت عليه فالقيه فى اليم ولا تخافى ولا تحزنى انا رادوه اليك وجاعلوه من المرسلين. (سورة القصص)

और हमने 'वही' की मूसा अलैहिस्सलाम की माँ को कि तुम अपने बच्चे को दूध पिलाओ और अगर तुम्हें इसके बारे में डर लगा कि फ़िरऔन के फ़ौजी इसको क़त्ल कर दें तो तुम इसे पानी में डाल देना और फिर आगे फ़रमाया कि इसको जो पकड़ेगा वह मेरा भी दुश्मन होगा और इसका भी दुश्मन होगा और साथी तसल्ली भी देते हैं कि डरना भी नहीं है और ग़मज़दा भी नहीं होना। हम इसे तेरे पास लौटाएंगे और हमें तो इसे रसूलों में से बनाना है।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की माँ एक औरत थीं। वह ज़हन में सोच सकती थीं कि ऐ अल्लाह! अगर आपने इसको रसूलों में से बनाया है तो फ़िरऔन का कोई फ़ौजी इधर आ ही न सके या ऐ अल्लाह! मैं इसे किसी गुफा में रख आती हूँ और उधर कोई जा ही न सके या मैं इसे घर की छत पर रख देती हूँ ताकि बच्चा महफ़ूज़ रह सके। मगर अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि बच्चे को पानी में डालना। अक़्ल कहती है कि पानी में बच्चा डूब जाएगा। अच्छा उसको संदूक़ में डालती हूँ। संदूक़ में डालेगी तो उसके अंदर पानी भर जाएगा। अगर सारे सुराख़ बंद करें तो हवा के अंदर न जाने की वजह से आक्सीजन नहीं मिल सकेगा जिसकी वजह से बच्चा मर जाएगा। अक़्ल कहती है कि या तो यह पानी की वजह से मरेगा या हवा न होने की वजह से मरेगा। तेरा बच्चा बाक़ी नहीं बचेगा। लेकिन उस औरत ने अल्लाह तआला के वादे पर भरोसा किया और अपने जिगर के टुकड़े को दरिया के अंदर डाल दिया और वापस आ गई। अल्लाह तआला की शान देखिए कि फ़िरऔन अपनी बीवी के साथ दरिया के किनारे टहल रहा था। चार सौ ग़ुलाम उसके आगे पीछे और इर्द-गिर्द थे। उन्होंने जब संदूक़ को देखा तो उठा लिया और फ़िरऔन के सामने पेश कर दिया। जब संदूक़ खोला गया तो उसमें बच्चे को पाया। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं ﴿القيت عليك محبة منى﴾ ऐ प्यारे मूसा! हमने आपके चेहरे पर तजल्ली डाल दी थी। गोया अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के चेहराए अक़्दस को ज़ेबाई अता करके ऐसा दिलकश बना दिया था कि जो भी देखता वह दिल दे बैठता। लिहाज़ा जैसे ही फ़िरऔन की बीवी ने देखा तो कहने लगी ﴿لا تقتلوه﴾ तुम्हें इसे क़त्ल नहीं करना। ﴿ان ينفعنا او نتخذه ولدا﴾ या यह हमें नफ़ा पहुँचाए या हम इसे बेटा बना लें।

बीवी की बात सुनकर फ़िरऔन ने सोचा कि जब हम इसे बेटे की तरह पालेंगे तो फिर यह तो हमारी हुकूमत हमसे नहीं छीनेगा क्योंकि हमारे एहसानों में दबा हुआ होगा। उसने कहा, ठीक है इसको क़त्ल नहीं करते। उसकी अक़्ल ने उसे धोका दे दिया। हज़ारों बच्चों को क़त्ल करने वाला कितने आराम से धोका खा रहा है।

किताबों में लिखा है कि फ़िरऔन की बीवी ने जब यह सुना तो यह खुश हो गई और कहने लगी ﴿قرة عين لي ولك﴾ कि यह मेरी और तेरी आँखों की ठंडक है। फ़िरऔन ने उसके जवाब में कहा ﴿قرة عين لك﴾ यह तेरी आँखों की तो ठंडक है ﴿لا حاجة لي﴾ लेकिन मुझे इस की ज़रूरत नहीं। "रुहुलमानी" में लिखा है कि जब फ़िरऔन की बीवी ने ﴿قرة عين لي ولك﴾ कहा था, उस वक़्त अगर फ़िरऔन बदबख़्त सिर्फ़ हाँ कह देता तो उस हाँ की बरकत से अल्लाह तआला उसको भी ईमान लाने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमा देता।

फ़िरऔन की बीवी (आसिया रज़ियल्लाहु अन्हा) क्योंकि खुश हुई थीं इसलिए फ़िरऔन ने उनकी खुशी की वजह से वहाँ पर मौजूद चार सौ गुलामों को आज़ाद कर दिया था। तफ़्सीर में एक अजीब नुक्ता लिखा है कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अभी बचपन में थे मगर जब वहाँ पहुँचे तो चार सौ गुलामों की आज़ादी का सबब बन गए। इस तरह अल्लाह वाले जिस आबादी में चले जाते हैं उस आबादी के लिए नफ़्स और शैतान की गुलामी से आज़ादी पाने का सबब बन जाया करते हैं। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को महल में ले जाया गया तो उन्हें दूध पिलाने के बारे में फ़िक्र होने लगी। औरतों ने उन्हें दूध पिलाना चाहा मगर उन्होंने दूध न पिया। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं ﴿وحرمنا عليه المراضع من قبل﴾ और हमने उन पर दूसरी औरतों का दूध हराम फ़रमा दिया था। फ़िरऔन बड़ा परेशान हुआ कि बच्चा दूध नहीं पीता। उसने कहा, कुछ और औरतों को बुलाओ। लिहाज़ा कई

औरतों को बुलाया गया लेकिन बच्चे ने किसी का भी दूध न पिया। फ़िरऔन और ज़्यादा परेशान हुआ। इसी हालत में रात गुज़र गई।

इधर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की माँ बहुत ही ज़्यादा परेशान हाल थीं। दुखः और ग़म के साथ सुबह की। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं ﴿ان كادت لتبدى به لو لا ان ربطنا على قلبها﴾ अगर हम उसके दिल पर गिरह न दे देते, उसके दिल को सकून न दे देते तो वह अपना राज़ खोल ही बैठती यानी वह रो पड़ती और लोगों को पता चल जाता। गोया अल्लाह तआला ने उनको रब्ते क़ुलूब अता फ़रमा दिया। उन्होंने अपनी बेटी से कहा कि जाओ और अपने भाई का पता करके आओ। लिहाज़ा हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की बहन भागी गई। उन्होंने फ़िरऔन के महल में जाकर देखा कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम गोद में लेटे हुए हैं। औरतें उनको दूध पिलाने की कोशिश कर रही हैं और वह दूध नहीं पी रहे और फ़िरऔन बहुत परेशान है।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की बहन ने फ़िरऔन से कहा,

﴿هل ادلكم على اهل بيت يكفلونه لكم وهم له ناصحون.﴾

क्या मैं तुम्हें ऐसे घरवालों के बारे में न बताऊँ कि जो इस बच्चे को दूध पिलाएंगे, वे इसके परवरिश करेंगे और इसके बड़े ख़ैरख़्वाह होंगे।

जब उसने यह कहा कि वे इसके बड़े ख़ैरख़्वाह होंगे तो फ़िरऔन को बात खटक गई। वह कहने लगा, अच्छा! क्यों ख़ैरख़्वाह होंगे? वह भी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की बहन थीं। इसलिए निहायत समझदारी दिखाते हुए कहने लगीं कि हम आपकी रिआया हैं। अगर हम ख़ैरख़्वाही नहीं करेंगे तो फिर आपकी ख़ैरख़्वाही कौन करेगा? फ़िरऔन कहने लगा, बात तो ठीक है, अच्छा जाओ जिसको चाहो बुलाकर लाओ।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की बहन दौड़ती हुई घर आई और कहने लगी, अम्मी! चलें भाई दूध नहीं पी रहा है। लिहाज़ा आपकी वालिदा आयीं, उन्होंने दूध पिलाना शुरू कर दिया और बच्चे ने दूध पीना शुरू कर दिया। फ़िरऔन बहुत ख़ुश हुआ कि चलो परेशानी ख़त्म हो गई। दो तीन दिन उन्होंने महल ही में दूध पिलाया। उसके बाद हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की वालिदा ने कहा कि मैं तो अपने घर में जाकर रहूँगी। मुझसे महल में नहीं रहा जाता। फ़िरऔन कहने लगा, अच्छा तो फिर तुम इस बच्चे को भी अपने साथ ले जाओ। अपने घर जाकर इसको दूध पिलाती रहना। मैंने ख़ज़ाने से तुम्हारी तंख़्वाह तय कर दी है। लिहाज़ा हर महीने तुम्हारी तंख़्वाह भेज दिया करूंगा। अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं ﴿فرددنه الى امه﴾ हमने उसे लौटा दिया उसकी माँ के पास ﴿كى تقر عينها﴾ ताकि उसकी आँखें ठंडी हों ﴿ولا تحزن﴾ और ग़मज़दा न हो ﴿ولتعلم﴾ और यह जान ले ﴿ان وعد الله حق﴾ कि अल्लाह वादे के सच्चे हैं ﴿ولكن اكثرهم لا يعلمون﴾ लेकिन अक्सर लोग इस बात को नहीं जानते।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जो आदमी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की वालिदा की तरह अल्लाह के वादे पर भरोसा करेगा अल्लाह तआला उसे दुगना इनाम देंगे। सहाबा किराम ने पूछा, ऐ अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! दुगना इनाम कैसा? फ़रमाया, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की माँ को देखो कि वह अपने ही बेटे को दूध पिलाती थीं और ख़ज़ाने से तंख़्वाह भी मिला करती थी। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 8/136)

ख़ुदाया! ईमान सलामत रखना

इस आजिज़ को सन् 1994 ई० में समरक़ंद जाने का मौक़ा मिला तो जामा मस्जिद कलाँ समरक़ंद में ख़ुत्बा जुमा दिया। नमाज़े जुमा के

बाद कुछ नौजवान इस आजिज़ के पास आए और कहने लगे, हज़रत! आप हमारे घर तशरीफ ले चलें, हमारी वालिदा आपसे मिलना चाहती हैं। इस आजिज़ ने माज़रत कर दी कि इतने लोग यहाँ मौजूद हैं, मैं इनको छोड़कर वहाँ कैसे जाऊँ? मुफ़्ती आज़म समरक़ंद इस आजिज़ के साथ ही खड़े थे। वह कहने लगे, हज़रत! आप इनको इंकार न करें, मैं भी आपके साथ चलूँगा। इनके हाँ जाना ज़रूरी है। मैंने कहा बहुत अच्छा। लिहाज़ा हम दोस्तों से मुलाक़ात करके चल पड़े।

रास्ते में मुफ़्ती आज़म बताने लगे कि इन नौजवानों की माँ एक मुजाहिद और पक्की मोमिना है। जब कम्युनिज़्म का इंक़लाब आया तो उस वक़्त वह बीस साल की नौजवान लड़की थी। उसके बाद सत्तर साल गुज़र चुके हैं। इस तरह उसकी उम्र नव्वे साल हो चुकी है। अल्लाह तआला ने कम्युनिज़्म के दौर में इतना मज़बूत ईमान दिया था कि इधर दहरियत का सैलाब आया और उधर यह नौजवान लड़कियों को दीन पर जमे रहने की तबलीग़ करती थी। उनसे घंटों बहस करती और उनको कलिमा पढ़ाकर ईमान पर ले आती। हम परेशान होते कि इस नौजवान लड़की की जान भी ख़तरे में है और यह दहरिए क़िस्म के फ़ौजी इसकी इज़्ज़त ख़राब करेंगे और इसे सूली पर लटका देंगे। लिहाज़ा हम इसे समझाते, बेटी! तू जवान उम्र है, तेरी इज़्ज़त आबरु और जान का मामला है, इतना खुलकर लोगों को इस्लाम की तबलीग़ न किया कर। मगर वह कहती कि मेरी इज़्ज़त व आबरु और जान इस्लाम से ज़्यादा क़ीमती नहीं है। मेरी जान अल्लाह के रास्ते में क़ुबूल हो गई तो क्या फ़र्क़ पड़ जाएगा। लिहाज़ा यह औरतों को खुलेआम तबलीग़ करती रही यहाँ तक कि सैकड़ों की तादाद में औरतें दहरियत से तोबा करके दोबारा मुसलमान हो गयीं। हमें इसका हर वक़्त ख़तरा रहता था। सब उलमा परेशान थे कि पता नहीं इस लड़की का क्या बनेगा? पता नहीं कौन सा दिन होगा जब

इसे सूली पर लटका दिया जाएगा और इसको सब लोगों के सामने बेलिबास करके ज़लील और रुसवा कर दिया जाएगा। मगर यह न घबराती, यह उनको दीन की तबलीग़ करती रहती यहाँ तक उसने सत्तर साल दीन की तबलीग़ की और हज़ारों औरतों के ईमान का सबब बन गई। अब वह बीमार है, बूढ़ी है और चारपाई पर लेटी हुई है। इस औरत को किसी ने आपके बारे में किसी ने बताया कि पाकिस्तान से एक आलिम आए हैं, उसका जी चाहा कि वह आपसे बातचीत करे। इसलिए मैंने कहा कि आप इंकार न करें। इस आजिज़ ने जब यह सुना तो दिल बहुत खुश हुआ और कहा कि जब वह ऐसी अल्लाह की नेक बंदी है तो हम भी उनसे दुआ करवाएं।

जब हम उनके घर पहुँचे तो देखा कि सहन में उनकी चारपाई पड़ी हुई थी और वह उस पर लेटी हुई थी। लड़कों ने उसके ऊपर एक पतली सी चादर डाल दी। हम चारपाई से तक़रीनबन एक मीटर दूर जाकर खड़े हो गए। इस आजिज़ ने जाते ही सलाम किया, सलाम करने बाद आजिज़ ने अर्ज़ किया, अम्मा! हमारे लिए दुआ मांगिए, हम आपकी दुआएं लेने के लिए आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुए हैं। जब इस आजिज़ ने अर्ज़ किया तो उसने चादर के अंदर ही अपने हाथ उठाए और बूढ़ी आवाज़ में सबसे पहले यह दुआ मांगी, "ख़ुदाया! ईमान सलामत रखना।" यक़ीन कीजिए कि हमारी आँखों से आँसू आ गए। उस दिन एहसास हुआ कि ईमान कितनी बड़ी नेमत है कि सत्तर साल तक ईमान पर मेहनत करने वाली औरत अब भी जब दुआ मांगती है तो पहली बात कहती है, "ख़ुदाया ईमान सलामत रखना।" (वाक़िआत फ़क़ीर 1/322)

एक अंग्रेज़ का इस्लाम क़ुबूल करना

फ़क़ीर को एक नौजवान मिला और कहने लगा, मैं कल अपने

एक दोस्त को लाऊँगा। वह काफ़िर माँ-बाप का बेटा है, मैं कई दिन से उससे इस्लाम के बारे में बात कर रहा था। अब उसने कलिमा पढ़ना है। आप मुझे बता दीजिए कि आप कब वक़्त देंगे ताकि वह आकर आपके हाथ पर मुसलमान हो सके। फ़क़ीर की आँखों से आँसू निकल आए। फ़क़ीर ने कहा, बच्चा! वह दिन में आए या रात में आए, कलिमा पढ़ना चाहता है तो फ़क़ीर उसके लिए हर वक़्त क़ुर्बानी देने के लिए तैयार है। मुझे ख़ुशी हुई कि वहाँ के बच्चे आज दीन के नुमाइन्दे बनकर ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं। फ़क़ीर के नज़दीक वहाँ मस्जिदें बनाने से ज़्यादा उन स्कूलों, कालिजों और युनीवर्सिटियों का क़ायम करना ज़्यादा ज़रूरी है। इसलिए कि नमाज़ तो स्कूल और कालेज के किसी भी कमरे में पढ़ी जा सकती है। ये मस्जिद का भी रुख़ नहीं करेंगे अगर इनको वहाँ के मुक़ामी स्कूलों और कॉलेजों में जाना है। आप जो कुछ मस्जिद में बताएंगे स्कूल और कॉलेज वाले उस पर पानी फेर देंगे। अल्लाह का शुक्र है कि वहाँ की सूरतेहाल के मुताबिक़ ज़रूरत पूरी हो गई है। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 5/105)

एक नौजवान दामने इस्लाम में

फ़क़ीर के एक दोस्त मेडिकल डाक्टर थे। उनका एक बहुत ही समझदार बेटा था, जो बहुत इबादतगुज़ार था। उसे हर साल उमरे करने का शौक़ था, माँ को भी उमरे के लिए ले जाता और दूसरे घर के लोगों को भी, अक्सर इस्लाम का मुताला करता रहता था। मगर कुछ अरसे के बाद वह नास्तिक बन गया। उसके वालिद जब उसे फ़क़ीर के पास लेकर आए तो कहने लगे, जी यह लड़का अब बिल्कुल नास्तिक है। यह दीने इस्लाम को मानता ही नहीं। फ़क़ीर ने उसे बिठाया और उससे पूछा, मामला क्या बना? उसने कहा कि मैं आपको सीधी और साफ़ बात बताता हूँ। मेरा टीचर एक ग़ैर-मुस्लिम

था, उसने मुझे पहले तो यहूदियत की तरफ़ माइल करने की कोशिश की मगर मैं माइल न हुआ। जब उसने देखा कि यहूदी तो बना नहीं और बड़ा पक्का मुसलमान है। उसके बाद उसने मुझे डार्विन थ्योरी पढ़ाना शुरू कर दी। उसने डार्विन थ्योरी की आड़ में मुझे ऐसा परेशान कर दिया कि मैं नास्तिक बन गया।

फ़क़ीर ने कहा कि आप के ज़हन में जो सवालात हैं वे पूछिए। हमारे पास अगली नमाज़ तक के लिए तीन घंटे हैं। उसने डार्विन थ्योरी बयान करना शुरू कर दी। फिर उसके बाद उसके बारे में सवालात पूछने शुरू कर दिए। अल्लाह का शुक्र है फ़क़ीर उसको जवाब देता रहा। साथ-साथ दुआएं भी करता रहा और तवज्जेहात भी देता रहा। तीन घंटे का वक़्त दिया था मगर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने ऐसी मेहरबानी फ़रमाई कि ठीक पचास मिनट के बाद वह कहने लगा कि मुझे कलिमा पढ़ा कर दोबारा मुसलमान बना दीजिए।

अल्लाह का बार बार शुक्र है, कमरे से निकलकर उसने वुज़ू किया और बाप के सामने खड़े होकर नमाज़ पढ़ने लगा। उसके बाप की आँखों से जो आँसू रवां हुए उनकी कैफ़ियत को फ़क़ीर कभी नहीं भूल सकता। उसको तो गोया नया बेटा मिल गया। उसको घर में नई खुशियाँ मिल गयीं। फिर उसके दिल से जो दुआएं निकल रही थीं उन दुआओं का कोई आदमी भला क्या तसव्वुर पेश कर सकता है।

(खुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 5/106)

एक ईसाई से मेरी दीनी गुफ़्तगू

फ़क़ीर एक बार आस्ट्रेलिया (सिडनी) में था। एक ईसाई लड़की ने वक़्त मांगा कि मैं आपसे इस्लाम के बारे में कुछ सवालात पूछना चाहती हूँ। फ़क़ीर ने उसे एक घंटा दिया। वह पहले एक घंटा मुझसे जेसिस क्रिस्ट (हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम) के उठाए जाने और उनके

वापस आने के बारे में सवाल पूछती रही। फिर उसने क़यामत के दिन (Day of Judgement) के बारे में पूछा, फिर जन्नत और दोज़ख़ के बारे में पूछा यहाँ तक कि उसने इस्लाम के बारे में बहुत ज़्यादा तफ़्सीलात पूछीं। जब उसकी तसल्ली हो गई तो मैंने पूछा कि आप बताएं कि कोई सवाल पूछना है? कहने लगी कि अब मेरे दिल में इस्लाम के बारे में कोई और सवाल नहीं, मैं समझती हूँ कि इस्लाम ही बहुत ज़्यादा ख़ूबसूरत मज़हब है। जब उसने ख़ूबसूरत का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया तो फ़क़ीर समझा कि शायद अब यह इस्लाम क़ुबूल कर लेगी। लिहाज़ा फ़क़ीर ने उससे पूछा कि क्या आप इस्लाम क़ुबूल करने के बारे में सोचेंगी? वह कहने लगी कि आप मुझे बताएं कि यह सारे का सारा इस्लाम क़ुरआन में मौजूद हैं। फ़क़ीर ने कहा, हाँ वही तो बुनियादी जड़ है। कहने लगी, क्या आपके पास क़ुरआन है? फ़क़ीर ने कहा, हाँ मेरे पास क़ुरआन है। जब फ़क़ीर ने क़ुरआन मजीद दिखाया तो वह कहने लगी, आप ऐसा करें कि इसकी कई कापियाँ मुसलमान मुल्कों में भी भिजवाएं और उन्हें कहें कि तुम्हें इस क़ुरआन के मुताबिक़ अपनी ज़िंदगियों को बदलने की ज़रूरत है।

अब बताएं कि मैं उसको क्या जवाब देता। मेरे दोस्तो! अगर हम पक्के सच्चे मुसलमान बन जाएं और इस्लाम को उन लोगों के सामने पेश करें तो हो सकता है कि वे इस्लाम क़ुबूल कर लें और पूरी दुनिया में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमें इस्लाम का झंडा बुलंद करने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमा दें। आइए इसको ज़िंदगी का मक़सद बना लीजिए। हम इसकी शुरूआत अपनी ज़ात से करें। आज दिल में अहद कर लीजिए कि हम आज के बाद अपने जिस्म पर इस्लाम का क़ानून लागू करेंगे। अगर हमने अपने आपको बदलना शुरू कर दिया तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमारे इन आमाल की बरकत से दुनिया के दूसरे इंसानों को भी बदल देंगे। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 5/113)

इस्तिक़ामत (जमाव)

क़ुव्वते इरादी पर नुसरते ख़ुदावंदी

बाइबल में एक वाक़िआ लिखा है, क़ुरआन पाक में भी उसका मुख़्तसर ज़िक्र है कि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम और हज़रत तालूत अलैहिस्सलाम वक़्त के बादशाह के जालूत के मुक़ाबले के लिए गए। जालूत का जिस्म बड़ा ताक़तवर और लंबा चौड़ा था उसकी शक्ल व सूरत ही ऐसी थी कि देखने से हैबत तारी हो जाती थी। तालूत अलैहिस्सलाम ज़ईफ़ और बूढ़े थे और हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम जवान उम्र थे और माशाअल्लाह उठती जवानी थी। जब दोनों हज़रात ने जालूत को देखा तो हज़रत तालूत अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया :

(It is very difficult to kill because he is very big.)

इसे मारना तो बहुत मुश्किल है क्योंकि यह तो बहुत बड़ा है।

इधर हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाने लगे :

(It is very easy to kill him because he is very big. I never miss him.)

इसे मारना तो बहुत आसान है क्योंकि यह तो बहुत बड़ा है, मेरा निशाना कभी ख़ता न होगा।

और ऐसा ही हुआ कि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने पत्थर जालूत के माथे पर मारा और ख़त्म कर दिया। जो भी आदमी मज़बूत क़ुव्वते इरादी से काम करता है तो अल्लाह तआला भी उसकी मदद करते हैं।

गर्म तेल में जलकर कबाब बनना मंज़ूर

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के दौरे ख़िलाफ़त में दो मुसलमान

काफ़िरों के हाथों गिरफ़्तार हुए। जब काफ़िर लोगों ने देखा तो उन्होंने बादशाह को मश्वरा दिया कि बजाए इसके कि आप इनको क़त्ल करें या कोई सज़ा दें, आप इन लोगों को इस तरह क़ायल करें कि ये आपके दीन को अपना लें क्योंकि इनके चेहरों से ऐसी बहादुरी टपकती है कि आपकी फ़ौज के सिपाहसालार बन सकते हैं। लिहाज़ा उन्होंने कोशिश की कि हम किसी तरह इनको अपने दीन की तरफ़ माइल कर लें। पहले उन्होंने इनको लालच दिए लेकिन जब देखा की दाल नहीं गलती तो उन्हें डराया धमकाया यहाँ तक कि उन्हें यह कहा गया कि हम तुम्हें मौत के घाट उतार देंगे। बेहतर यह है कि तुम हमारे दीन को क़ुबूल कर लो। लेकिन उनका जवाब यही था :

﴿فاقض ما انت قاض انما تقضي هذه الحيوة الدنيا﴾ (طٰہٰ:۷۲)

तू जो कर सकता है अपनी तरफ़ से ज़ोर लगा ले, तू क्या करेगा। यही होगा कि तेरे इस तकलीफ़ देने से हमें मौत आ जाएगी। जब उनकी तरफ़ से यह जवाब सुना तो वे सटपटा उठे और परेशान हुए कि उनके साथ क्या मामला किया जाए। आख़िर थक कर उन्होंने यह प्लान बनाया कि हम एक जगह तेल गर्म करते हैं और इनमें से एक को उसमें डाल देते हैं। शायद उसकी वजह से दूसरा डर जाए और हमारे दीन को क़ुबूल कर ले। चलो दोनों नहीं तो इनमें से एक तो हाथ आ ही जाएगा। लिहाज़ा तेल गर्म किया गया और इन दोनों को उसके पास बिठाकर डराया गया कि अगर तुम हमारी बात क़ुबूल नहीं करते तो तुम्हें इस तेल के अंदर डाल दिया जाएगा। जब देखा कि वे अपनी बात पर जमे हुए हैं तो उन्होंने इनमें से एक को उठाकर गर्म तेल में डाल दिया। ज़रा तसव्वुर कीजिए कि जब तेल गर्म हो और उसमें गोश्त डाला जाए तो फिर किस तरह कबाब बनता है और क्या नक़्शा सामने आता है। इनमें से जब एक इस तरह कबाब बन गया तो लोगों ने दूसरे के चेहरे के हाव-भाव देखे। जब

उन्हें देखा तो उनकी आँखों में आँसू नज़र आए। वे समझ गए कि यह कुछ डर गए हैं। लिहाज़ा वे कहने लगे कि हम तो पहले ही कहते थे कि अगर तुम हमारी बात मान लोगे तो हम तुम्हें कुछ भी नहीं कहेंगे। चलो पहले के साथ तो जो कुछ पेश आया वह तो हो गया। अब अगर तुम हमारी बात मान लो तो हम तुम्हें तेल में नहीं डालेंगे। इस पर उन्होंने बादशाह को जवाब दिया कि शायद तू यह समझता है कि मैं इस बात से डर रहा हूँ कि जैसे तूने इसे तेल में डाला है इसी तरह तू मुझे भी तेल में डाल देगा, हर्गिज़ ऐसा नहीं है। हकीकत यह है कि मुझे यह ख़्याल आ रहा है कि मेरी यह एक ही जान है। जब तुम मुझे एक दफ़ा तेल में डालोगे तो यह तो ख़त्म हो जाएगी। काश! मेरे जिस्म के बालों के बराबर मेरी जानें होतीं, तू मुझे उतनी दफ़ा तेल में डालता और मैं उतनी जानों का नज़राना अपने रब के हुज़ूर में पेश करता, सुब्हानअल्लाह। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक्क़ार 8/141)

फ़िरऔन हज़रत आसिया रज़ियल्लाहु अन्हा को न डगमगा सका

फ़िरऔन हज़रत मशाता को शहीद करवाकर जब घर पहुँचा तो अपनी बीवी हज़रत आसिया रज़ियल्लाहु अन्हा से कहने लगा कि मैंने एक औरत को इबरतनाक सज़ा दे दी है। उसकी बीवी ने कहा, तेरा नास हो, तूने एक मासूम बच्ची की जान भी ली और बेगुनाह औरत का कत्ल भी नाहक़ किया। फ़िरऔन ने कहा, मैंने उसको इसलिए इबरतनाक सज़ा दी कि वह मुझे ख़ुदा नहीं मानती थी। यह सुनकर हज़रत आसिया ने कहा कि ख़ुदा तो मैं भी तुझे नहीं मानती थी बल्कि एक आम इंसान है। जब फ़िरऔन ने यह सुना तो हैरान रह गया क्योंकि उसे हज़रत आसिया रज़ियल्लाहु अन्हा से बड़ी मुहब्बत थी। हज़रत आसिया रज़ियल्लाहु अन्हा को अल्लाह तआला ने बड़ा

हुस्न व जमाल अता किया था। फ़िरऔन ने उसे पूरी क़ौम की औरतों में से चुनकर उसके हुस्न व जमाल की वजह से अपनी बीवी बनाया था। इस वजह से वह उससे बड़ी मुहब्बत करता था। लिहाज़ा फ़िरऔन कहने लगा, तुम कैसी बातें कर रही हो? वह कहने लगीं, मैं बिल्कुल ठीक कह रही हूँ कि तू झूठा है। परवरदिगार तो वही है जिसका पैग़ाम लेकर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए हैं। फ़िरऔन ने यह बात सुनी तो उसे बहुत ग़ुस्सा आया। लिहाज़ा कहने लगा कि मैं तुम्हारा भी वही हश्र करवाऊंगा जो मैंने मशाता का करवाया है। वह कहने लगीं तू जो चाहता है कर ले, मेरे साथ मेरा परवरदिगार है। अब मैंने फ़ैसला कर लिया है कि मैं अपने परवरदिगार को नहीं छोड़ सकती हाँ तेरी हर चीज़ को लात मार सकती हूँ। जब उसने ये बातें सुनीं तो वह फिर दरबार में आया। अब फिर उसने लोगों को बुलवाया और कहने लगा, देखो यह कितनी बड़ी साज़िश हो गई है। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने मेरी बीवी को भी बहका लिया है। आज इस औरत को या तो मार डालूंगा या फिर वह अपनी बात से हट जाएगी। लिहाज़ा उसने अपनी बीवी को गिरफ़्तार करवा कर दरबार में बुलवाया। वह तो मलिका थी और उसके इशारों पर नौकर चाकर भाग-भाग कर काम करते थे। लोग एहतिराम की वजह से उसकी तरफ़ आँख उठाकर भी नहीं देखते थे। आज वह फ़िरऔन के दरबार में मुलज़िम बनकर खड़ी है। फ़िरऔन ने उसे कहा कि तू इतने अलीशान महल में रहती है, इतनी नेमतों में पली है, मैंने तुझे अपनी महबूबा बनाया हुआ हूँ, तुझे अब महल वाली नाज़ व नेमत वाली ज़िंदगी से महरूम होना पड़ेगा। बेहतर है तू अब भी बाज़ आ जा और मुझे इलाहा मान ले। वह कहने लगी अब मैंने ईमान क़ुबूल कर लिया है। लिहाज़ा मैं अपनी बात से पीछे नहीं हट सकती। इसलिए फ़िरऔन ने फ़ैसला कर लिया कि मैं इसे भी सज़ा दूँगा।

फ़िरऔन ने सबसे पहले सज़ा के तौर पर उसे रुसवा करने का फ़ैसला किया। लिहाज़ा उसने कहा कि सबसे पहले इस औरत के जिस्म से लिबास उतार दिया जाए। अब बताइए किसी मर्द को कहा जाए कि तुझे लोगों के बीच बेलिबास कर देंगे, मर्द को कितनी शर्म आती है। वह चाहता है कि ज़मीन फट जाए और मैं अंदर उतर जाऊँ। वह तो आख़िर औरत थीं और औरत के अंदर तो अल्लाह तआला ने शर्म हया रखी होती है। फ़िरऔन ने उसके जिस्म से लिबास उतरवा दिया। अब सोचिए कि वह अब कितनी अजीब हालत की शिकार है। एक तरफ़ ईमान है दूसरी तरफ़ इम्तिहान है। वह डटी रहीं। फ़िरऔन ने कहा, अच्छा! अगर अब भी नहीं मानती तो मैं तुझे और तरह का अज़ाब दूंगा। लिहाज़ा फ़िरऔन ने कहा कि इसका मुँह मेरे महल की तरफ़ करके लिटा दो ताकि आख़िरी वक़्त भी निगाहें इसकी मेरे महल की तरफ़ लगी रहें और इसके दिमाग़ में यह बात रहे कि मैं इन नेमतों को ठुकराकर ज़लील व ख़्वार होकर मर रही हूँ। लिहाज़ा उसे फ़िरऔन के हुक्म के मुताबिक़ लिटा दिया गया। उसके हाथों और पाँव में लोहे की कीले गाड़ दी गयीं ताकि हिल न सके। उसके बाद फ़िरऔन ने लोगों को बुलाकर कहा कि इसके जिस्म से खाल जुदा करना शुरू कर दो। अब बताइए कि वह ज़िंदा औरत है और उसके जिस्म से खाल उतारी जा रही है। नाज़ुक बदन है मगर उसको बरदाश्त कर रही है। उसे अल्लाह के नाम पर तकलीफ़ दी जा रही है। इस तरह उसके जिस्म से खाल उतार दी गई। अल्लाह की शान देखिए कि वह अभी तक ज़िंदा थीं मगर जिस्म ज़ख़्म ज़ख़्म बन चुका था।

फ़िरऔन का दिल अब तक ठंडा नहीं हुआ था। लिहाज़ा वह कहने लगा, मिर्चें लाओ और इसके पूरे जिस्म पर छिड़क दो। हज़रत आसिया रज़ियल्लाहु अन्हा के जिस्म पर मिर्चें डाल दी गयीं तो वह मछली की

तरह तड़पने लग गयीं। इस तड़पने की हालत में उन्होंने अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की हुज़ूर एक दुआ मांगी कि ऐ अल्लाह! फ़िरऔन का महल सामने है, वह कहता है कि हम ने तुम्हें इस महल से निकाल दिया है। आज के बाद तुम इस महल में नहीं जा सकोगी। इसलिए ﴿رب ابن لی عندك بيتا فی الجنة﴾ ऐ परवरदिगार! मुझे इस महल के बदले में जन्नत में आपके पास एक घर चाहिए,

﴿ونجنی من فرعون وعمله ونجنی من القوم الظالمين. (التحريم)﴾

और मुझे फ़िरऔन और उसके अमले से निजात अता फ़रमा दीजिए। अल्लाह तआला ने उसी हाल में उनको शहादत के मर्तबे पर पहुँचा दिया, सुब्हानअल्लाह। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 8/203)

क़ब्र से मुश्क की महक आने लगी...

हदीस पाक में आया है कि मैराज के वक़्त जब नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम बैतुलमुक़्क़दस की तरफ़ सफ़र कर रहे थे तो रास्ते में एक वादी से ख़ुशबू आई। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम से पूछा, जिब्रील! जो ख़ुशबू मैं यहाँ सूंघ रहा हूँ, यह कहाँ से आ रही है? जिब्रील अलैहिस्सलाम ने बताया कि अल्लाह के महबूब! फ़िरऔन के महल में 'मशाता' नाम की जो एक नौकरानी थी, यहाँ उसकी क़ब्र है। यह ख़ुशबू उसकी क़ब्र से आ रही है और आपको महसूस हो रही है।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 3/37, 8/203)

तेरे सामने पहाड़ हो जाए नरम और मुलायम

एक आदमी ने ख़्वाब में देखा कि उसे कहा गया कि अगर तुम अल्लाह के रास्ते में निकलो और तुम्हें जो चीज़ सबसे पहले नज़र

आए और तुम उसे खा लो तो तुम्हें बड़े दर्जात मिल जाएंगे। उसकी आँख खुली तो उसने नीयत कर ली। लिहाज़ा जब वह सुबह उठकर शहर से बाहर निकला तो उसकी पहली नज़र पहाड़ पर पड़ी। उसके दिल में ख़्याल आया कि मैं पहाड़ तो नहीं खा सकता। लेकिन ख़्वाब में यह शर्त थी कि जो चीज़ पहली दफ़ा नज़र आए, उसको अगर खाओगे तो तुम्हें बड़े दर्जात मिलेंगे। कभी तो उसके दिल में ख़्याल आता कि नहीं, जाना मेरा काम है, अल्लाह तआला आसान कर देंगे। चुनाँचे वह आदमी चलता रहा लेकिन अल्लाह की शान कि वह जैसे-जैसे पहाड़ की तरफ़ क़दम उठाता रहा, हर क़दम पर पहाड़ छोटा होता गया यहाँ तक कि जब यह आदमी क़रीब पहुँचा तो देखा कि वहाँ गुड़ की एक छोटी सी डली पड़ी हुई है। उसने उसे उठाकर मुँह में डाल लिया। इस्तिक़ामत के साथ क़दम उठाने पर अल्लाह तआला पहाड़ को भी गुड़ की डली बना देते हैं। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 8/186)

फ़िरऔन मशाता की इस्तिक़ामत को हिला न सका

फ़िरऔन के महल में 'मशाता' नामी एक औरत फ़िरऔन की बेटियों के बाल संवारा करती थी। एक बार वह फ़िरऔन की बेटी के बाल संवार रही थी। इसी बीच उसके हाथ से कंघी नीचे गिर गई। जब वह कंघी उठाने लगी तो उसने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के परवरदिगार का नाम लिया। जब मशाता ने अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का नाम लिया तो फ़िरऔन की बेटी समझ गई कि यह मेरे वालिद को माबूद नहीं मानती बल्कि मूसा अलैहिस्सलाम के अल्लाह पर ईमान रखती है। लिहाज़ा उस लड़की ने मशाता से पूछा, क्या तुम मेरे वालिद को "इलाह" नहीं मानती हो? उसने कहा हर्गिज़ नहीं। मेरा ख़ुदा तो वह है जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का परवरदिगार है। जब लड़की ने मशाता का दो टूक जवाब सुना तो वह भागकर अपने

बाप के पास गई और कहने लगी कि आपके महल में आपके साए के नीचे रहने वाली औरत आपको ख़ुदा नहीं मानती। बेटी की लगी लिपटी बातें सुनकर फ़िरऔन गुस्से में आ गया। लिहाज़ा वह कहने लगा, अच्छा! मैं दरबार में जाकर उस औरत को ऐसी इबरतनाक सज़ा देता हूँ कि या तो वह मूसा अलैहिस्सलाम के इलाहा को इलाहा कहने से बाज़ आ जाएगी या फिर अपनी जान से हाथ धो बैठेगी।

फ़िरऔन जब अपने दरबार में पहुँचा तो उसने उस औरत को अपने पास बुलवाया और कहा, तुम मूसा अलैहिस्सलाम के इलाहा को इलाहा कहना छोड़ दो। वह कहने लगी, हर्गिज़ नहीं। उसने मशाता को बड़ा डराया धमकाया मगर वह कहने लगी कि अब तुम जो कुछ कर सकते हो कर लो, मैं पीछे नहीं हट सकती। ﴿فاقض ما انت قاض﴾ उसका यह दिलेराना जवाब सुनकर फ़िरऔन ने "अना" (नाक) का मसुअला बना लिया। लिहाज़ा फ़िरऔन ने कहा कि इसको ज़मीन पर लिटा दिया जाए। उसे ज़मीन पर लिटा दिया गया। उसके दोनों हाथों और पाँव में कीलें गाड़ दी गयीं ताकि वह हरकत न कर सके। इसी दौरान वज़ीर आया और उसने फ़िरऔन से कहा कि उसकी एक दूध पीती छोटी बच्ची भी है, अगर इसकी उस बेटी को इसके सामने क़त्ल कर दो तो यह अपनी मामता से मजबूर होकर आपकी बात मान जाएगी। लिहाज़ा फ़िरऔन ने उसकी दूध पीती बच्ची को घर से बुलवाया और उसके सीने पर लिटा दिया। वह बच्ची माँ के सीने से लगकर दूध पीने लग गयी। बच्ची अभी दूध पी ही रही थी कि फ़िरऔन ने कहा कि मैं तुम्हारी इस बच्ची को तुम्हारे ही सीने पर क़त्ल कर दूँगा। वह इतनी बड़ी धमकी सुनकर भी कहने लगी कि अब मेरे दिल में इतना इत्मिनान भर चुका है कि मैं अपनी आँखों से बेटी को ख़ून में लतपत तड़पता तो देख सकती हूँ मगर मैं अपने

ईमान का ख़ून नहीं कर सकती। लिहाज़ा मशाता के सीने पर ही उसके मासूम बच्चे की गर्दन काट दी गई। जिस माँ के सीने पर बेटी का ख़ून बह रहा हो उस माँ के दिल पर क्या गुज़रती है। जब बेटी ठंडी हो गई तो फ़िरऔन ने कहा कि अब तुम्हें क़त्ल कर देंगे। उसने कहा, तुमको जो मर्ज़ी हो कर लो, मैं पीछे नहीं हट सकती। आख़िर उस औरत को शहीद कर दिया गया।

शाही महल में सहाबी रज़ियल्लाह अन्हु की इस्तिक़ामत और बेबाकी

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने जब फ़ारस पर हमला किया तो एक ऐसे शहर में जिसमें बादशाह का तख़्त भी था। घेराव किए हुए मुसलमानों को काफी दिन गुज़र गए। बादशाह ने अपने साथियों से मश्वरा किया कि इन लोगों से कैसे छुटकारा हासिल किया जाए। ये तो जिधर भी क़दम उठाते हैं कामयाब हो जाते हैं। अगर ये हम पर मुसल्लत हो गए तो हम क्या करेंगे। लोगों ने मश्वरा दिया कि बादशाह सलामत! आप इनको बुलाकर अपना दबदबा और जाह व जलाल दिखाएं। ये भूखे नंगे लोग हैं, ये हमारे माल व दौलत से डर जाएंगे। उसने कहा, बहुत अच्छा। लिहाज़ा उसने पैग़ाम भिजवाया कि सुलह के लिए कोई आदमी भेजो जो बातचीत करे। सहाबा किराम ने एक सहाबी को उस तरफ़ रवाना किया।

ये ऐसे सहाबी थे जिनका कुर्ता फटा हुआ था और बबूल के कांटों से सिला हुआ था। उनके बैठने के लिए घोड़े पर ज़ीन नहीं थी बल्कि नंगी पीठ पर बैठ कर आए और हाथ में सिर्फ़ भाला था। वहाँ जाकर बादशाह के तख़्त पर बैठ गए। बादशाह को बड़ा गुस्सा आया। कहने लगा, तुम्हें कोई लिहाज़ नहीं कि तुम किसके पास आए हो। न

कोई आदाब का ख़्याल है न तरीक़ा सलीक़ा। फ़रमाया कि हमारे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें बादशाहों के दरबार में इसी शान से आने का तरीक़ा सिखाया है। यह सुनकर उसे बड़ा गुस्सा आया। कहने लगा कि तुम क्या चाहते हो? फ़रमाया, ﴿اسلم تسلم﴾ इस्लाम क़ुबूल कर ले सलामती पा जा। कहने लगा, नहीं क़ुबूल करता। फ़रमाया कि अगर नहीं क़ुबूल करता तो फिर हुकूमत हमारी होगी और तुम्हें रहने की पूरी आज़ादी होगी। उसने कहा यह कैसे हो सकता है कि हम अपनी हुकूमत ऐसे भूखे नंगे ग़रीब लोगों के हवाले कर दें। सहाबी फ़रमाने लगे, अच्छा याद रखना कि अगर यह बात न मानी तो हम तुम्हारे साथ जंग करेंगे। तलवार हमारा और तुम्हारा फ़ैसला करेगी और तुम्हारी बेटियाँ हमारे बिस्तर बनाया करेंगी।

भरे दरबार में तलवारों के साए में बादशाह को इस तरह निडर होकर एक बात कह दी। दरबारियों के सामने यह बात सुनकर बादशाह का पसीना छूट गया। उसकी बड़ी सुबकी हुई। कहने लगा, अच्छा तुम्हारी तो यह ज़ंग भरी तलवारें हैं, तुम इनके साथ हमारा क्या मुक़ाबला करोगे? आप तड़प कर बोले, ऐ बादशाह! तुम ने हमारी ज़ंग भरी तलवारों को तो देखा है लेकिन तलवारों के पीछे वाले हाथों को नहीं देखा। तुम्हें पता चल जाएगा कि किन हाथों में ये तलवारें हैं। उन्होंने अल्लाहु अकबर का नारा लगाया। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उन्हें कामयाबी से हमकिनार कर दिया। जी हाँ जो ग़ैरुल्लाह से नहीं डरते अल्लाह तआला उनकी बात में यूँ असर पैदा फ़रमा देते हैं। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 3/69)

लगाता था तू जब नारा तो ख़ैबर तोड़ देता था
हुक्म देता था दरिया को तो रस्ता छोड़ देता था

अगर इस्तिक़ामत होती तो जलना न पड़ता

एक बार हज़रत सिर्री सक़्ती रह० जा रहे थे। दोपहर का वक़्त था। उन्हें नींद आई। वह क़ैलूला की नीयत से एक पेड़ के नीचे सो गए। कुछ दरे लेटने के बाद जब उनकी आँख खुली तो उन्हें एक आवाज़ सुनाई दी। उन्होंने ग़ौर किया तो पता चला कि उस पेड़ से आवाज़ आ रही थी जिसके नीचे लेटे हुए थे। जी हाँ जब अल्लाह तआला चाहते हैं तो ऐसे वाक़िआत दिखा देते हैं। पेड़ उन्हें कह रहा है, ﴿یا سری! کن مثلی﴾ ऐ सिर्री! तू मेरे जैसा हो जा। वह यह आवाज़ सुनकर बड़े हैरान हुए। जब पता चला कि यह आवाज़ पेड़ से आ रही है तो आप ने उस पेड़ से पूछा ﴿کیف اکون مثلک﴾ कि ऐ पेड़! मैं तेरे जैसा कैसे बन सकता हूँ? पेड़ ने जवाब दिया ﴿ان الذين يرمونني بالاحجار فارميهم بالاثمار﴾ ऐ सिर्री! जो लोग मुझ पर पत्थर फेंकते हैं मैं उन लोगों की तरफ़ अपने फल लौटाता हूँ। इसलिए तू भी मेरे जैसा बन जा। वह उसकी यह बात सुनकर और भी ज़्यादा हैरान हुए मगर अल्लाह वालों को फ़िरासत (समझबूझ) मिली होती। लिहाज़ा उनके ज़ह्न में फ़ौरन ख़्याल आया कि अगर यह पेड़ इतना ही अच्छा है कि जो इसे पत्थर मारे, यह उसे फल देता है तो अल्लाह तआला ने पेड़ की लकड़ी को आग की ग़िज़ा क्यों बनाया? लिहाज़ा उन्होंने पूछा कि ऐ पेड़! अगर तू इतना ही अच्छा है तो ﴿فكيف مصيرك الى النار﴾ यह बता कि अल्लाह तआला ने तुझे आग की ग़िज़ा क्यों बनाया दिया? इस पर पेड़ ने जवाब दिया ऐ सिर्री! मेरे अंदर ख़ूबी बहुत बड़ी है मगर इसके साथ एक कमी भी बहुत बड़ी है। इस कमी ने मेरी इतनी बड़ी ख़ूबी पर पानी फेर दिया है। अल्लाह तआला को मेरी वह कमी इतनी नापंसद है कि अल्लाह तआला ने मुझे आग की ग़िज़ा बना दिया है। मेरी कमी यह है ﴿فاميلت بالهواء هكذا هكذا﴾ जिधर की हवा

चलती है मैं उधर को ही डोल जाता हूँ यानी मेरे अंदर इस्तिक़ामत नहीं है। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 8/84)

फ़तावानवीसी में इमाम मालिक रह० की जुर्रत और बेबाकी

हज़रत इमाम मालिक रह० से फ़तवा पूछा गया। उन्होंने हाकिमों की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ फ़तवा दिया। उनको सज़ा के तौर पर गधे पर बिठा दिया गया और उनके चेहरे पर स्याही मल दी गई। फिर वक़्त के हाकिम ने हुक्म दिया कि उन्हें मदीना में फिराओ। लिहाज़ा मदीना मुनव्वरा के इमाम और फ़क़ीह के चेहरे को स्याह कर दिया गया और गधे पर बिठाकर फिराया गया। अब हज़रत इमाम मालिक रह० की जुर्रत देखिए कि फ़रमाने लगे, लोगो! तुम में जो पहचानते हो कि मैं इमाम मालिक हूँ वे तो पहचानते हैं और जो नहीं पहचानते हो वे भी सुन लें कि मैं अनस का बेटा मालिक हूँ ﴿ولا يخافون لومة لائم﴾ दीन के मामले में उन्होंने मालामत करने वाले की मलामत की कोई परवाह नहीं की। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 8/169)

असीर मालटा की बेमिसाल क़ुव्वते फ़ौलादी

हज़रत शेख़ुलहिंद को दीन के लिए बड़ी क़ुर्बानियाँ देनी पड़ीं। उनके हालाते ज़िंदगी में लिखा है कि जब उनकी वफ़ात हकीम मुहम्मद अजमल की कोठी पर हुई, ग़ुस्ल देने वाले ने देखा कि उनकी पीठ पर ज़ख़्मों के बड़े-बड़े निशान हैं। उसने रिश्तेदारों से पूछा। उन्होंने घरवालों से पूछा लेकिन किसी को कुछ मालूम न था। सब हैरान थे। घरवालों से इस बात को छिपाए रखा, आख़िर क्या मामला है।

हज़रत मौलाना हुसैन अहमद मदनी रह० उस वक़्त कलकत्ता गए

हुए थे। उनको शेख़ुल हिंद की वफ़ात का पता चला तो वहाँ से जनाज़े में शिर्कत के लिए आए। उनसे किसी ने पूछा कि आप बताएं कि यह क्या मामला है? हज़रत मदनी रह० की आँख में आँसू आ गए। फ़रमाने लगे, यह एक राज़ था और हज़रत ने मना फ़रमा दिया था कि मेरी ज़िंदगी में तुम किसी को नहीं बताना। इसलिए अमानत थी और मैं बता नहीं सकता था। अब तो हज़रत वफ़ात पा गए हैं लिहाज़ा अब तो मैं बता सकता हूँ। वह फ़रमाने लगे कि जब हम मालटा में क़ैद थे तो उस वक़्त हज़रत को इतनी सज़ा दी जाती, इतनी सज़ा दी जाती कि जिस्म पर ज़ख़्म हो जाते थे। और कई बार ऐसा होता था कि फ़िरंगी अंगारे बिछा देते और हज़रत को उस पर लिटा देते थे। जेल के हाकिम कहते कि महमूद! सिर्फ़ इतना कह दो कि मैं फ़िरंगियों का मुख़ालिफ़ नहीं हूँ। आपको हम इतना कहने पर छोड़ देंगे। मगर हज़रत फ़रमाते कि नहीं यह अल्फ़ाज़ नहीं कह सकता। वे उनको बहुत ज़्यादा तकलीफ़ देते थे। हज़रत अपनी जगह पर रात को सोने के लिए आते तो सो भी नहीं सकते थे। नींद न आने की वजह से भी तकलीफ़ और उधर से भी तकलीफ़ें। हम लोग हज़रत की हालत देखकर परेशान हो जाते। हमने एक दिन रो कर कहा, हज़रत! आख़िर इमाम मुहम्मद रह० ने "किताबुल हीला" लिखी है। लिहाज़ा कोई ऐसा हीला है कि आप इनकी सज़ा से बच जाएं। हज़रत ने फ़रमाया, नहीं। अगले दिन हज़रत को फिर सज़ा दी गई। जब लगातार कई दिन यह सज़ा मिलती रही तो एक दिन एक फ़िरंगी खड़ा होकर कहने लगा, तुझे है क्या? तू यह क्यों नहीं कहना चाहता कि मैं फ़िरंगियों का मुख़ालिफ़ नहीं हूँ। उस वक़्त हज़रत ने फ़रमाया कि मैं इसलिए नहीं कहना चाहता कि मैं अल्लाह के दफ़्तर से नाम कटवाकर तुम्हारे दफ़्तर में नाम नहीं लिखवाना चाहता। हज़रत मदनी रह० फ़रमाते हैं कि एक दफ़ा हज़रत आए तो हमने

देखा कि ख़तरनाक सज़ा दी गई है। हम हज़रत के साथ तीन चार शागिर्द थे। हमने मिलकर अर्ज़ कि। हज़रत! कुछ मेहरबानी फ़रमाएं। अब जब हज़रत ने देखा कि मिलकर बात की तो उनके चेहरे पर गुस्से के आसार ज़ाहिर हुए। फ़रमाने लगे, हुसैन अहमद! तुम मुझे क्या समझते हो? मैं रुहानी बेटा हूँ हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु का, मैं रुहानी बेटा हूँ हज़रत ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हु का, मैं रुहानी बेटा हूँ हज़रत सुमैय्या रज़ियल्लाहु अन्हा का, मैं रुहानी बेटा हूँ इमाम अहमद बिन हंबल रह० का जिनको इतने कोड़े मारे गए कि अगर हाथी को भी मारे जाते तो वह भी बिलबिला उठता, मैं रूहानी बेटा हूँ मुजद्दिद अलफ़ेसानी रह० का जिनको दो साल के लिए ग्वालियर के क़िले में क़ैद रखा गया था, मैं रूहानी बेटा हूँ शाह वलिउल्लाह मुहद्दिस देहलवी रह० का जिनको हाथों के कलाइयों के क़रीब से तोड़कर बेकार बना दिया गया था। हुसैन अहमद! क्या मैं फ़िरंगियों के सामने हार तसलीम कर लूँ। नहीं ये मेरे जिस्म से जान तो निकाल सकते हैं मगर मेरे दिल से ईमान नहीं निकाल सकते। सुब्हानअल्लाह! जब ऐसी इस्तिक़ामत होती है फिर अल्लाह तआला फ़ैज़ भी जारी फ़रमा देते हैं।

क्या सन् 1857 ई० में तारीख़े नमरूदी दोहराई गई?

हिंदुस्तान से इस्लाम और मुसलमानों को ख़त्म करने के लिए अंग्रेज़ों की यह पॉलिसी थी कि (1) सब से पहले क़ुरआन मजीद को ख़त्म करना चाहिए, (2) उलमा किराम का क़त्लेआम, (3) जिहाद के जज़्बे को ख़त्म करना चाहिए, (4) ये तीन बातें निचोड़ थीं।

लिहाज़ा अंग्रेज़ ने इस पर अमल करना शुरू कर दिया। तीन साल के अंदर क़ुरआन पाक के तीन लाख नुस्ख़े आग की नज़र कर दिए और चौदह हज़ार उलमा किराम को फांसी दी गई।

थामसन अपनी तारीख़ में लिखता है कि देहली से लेकर पेशावर तक मेन सड़क के दोनों तरफ़ कोई बड़ा पेड़ ऐसा नहीं था जिस पर किसी आलिम की लाश लटकती नज़र न आ रही हो। बादशाही मस्जिद में फांसी का फंदा लटका दिया गया और दूसरी मस्जिदों के अंदर उलमा किराम को फांसी दी गई।

थामसन अपनी याद्दाश्त में लिखता है कि मैं देहली गया तो कैंप में ठहरा हुआ था। मुझे वहाँ इंसानी गोश्त के जलने की बदबू महसूस हुई। मैं परेशान होकर उठा कि यह क्या मामला है? जब कैंप के पीछे जाकर देखा तो कुछ अंग्रेज़ों ने अंगारे जलाए हुए थे और चालीस उलमा को बेलिबास करके उन अंगारों के पास खड़ा किया हुआ था और उन्हें यह कहा जा रहा था कि तुम हमेशा के लिए हमारा साथ देने का वादा करो नहीं तो तुम्हें अंगारों पर लिटा देंगे। उन्होंने इंकार किया तो चालीस उलमा को अंगारों पर लिटा दिया गया। यह उनके गोश्त जलने की बदबू थी जो ख़ेमों में भी महसूस हो रही थी। वह कहता है कि इसी तरह चालीस उलमा शहीद हो गए तो फिर और चालीस उलमा को भी इसी तरह ऊपर लिटा गया गया।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 6/93)

मौलाना अहमदुल्लाह साहब रह० तख़्तएदार (फांसी) के लिए तैयार

मौलाना अहमदुल्लाह गुजराती रह० बहुत बड़े आलिम थे। एक अंग्रेज़ ने उनसे कुछ अरबी सीखी थी। यह अंग्रेज़ उस वक़्त उन लोगों में से था जो मुसलमान उलमा को फांसी दे रहे थे। उसने मौलाना अहमदुल्लाह गुजराती रह० से कहा कि आप मेरे उस्ताद हैं आप सिर्फ़ ज़बान से कह दें कि मैं इस तहरीक आज़ादी में शरीक न था। मैं

आपका नाम फांसी देने वालों में से निकाल दूंगा। अहमदुल्लाह गुजराती रह० ने जवाब दिया कि यह बात करके अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के दफ़्तर से नाम निकलवाना नहीं चाहता। सुब्हानअल्लाह तो इन हज़रात ने अपनी जान के नज़राने तो पेश कर दिए मगर अंग्रेज़ का साथ देने पर तैयार न हुए। (खुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 6/94)

दरबारे शाही में मुजद्दिद अलफ़ेसानी रह० की ज़ुर्रात और बेबाकी

इमाम रब्बानी हज़रत मुजद्दिद अलफ़ेसानी रह० जो हिंदुस्तान के शहर सरहिंद में पैदा हुए, उनके दौर में अकबर ने दीन की शक्ल को ख़राब कर दिया था। दीने इलाही के नाम से एक नया दीन दुनिया के सामने पेश कर दिया था जो बिदअतों और रस्मों का पिटारा था। यह वह वक़्त था जब अकबर के बेटे जहांगीर ने अपनी ताक़त के नशे में आकर उलमा को लिखा कि मुझे फ़तवा दो कि बादशाह को सज्दाए ताज़ीमी करना जाएज़ है। जब लोगों के सामने जेलों के दरवाज़े खुल चुके थे, जब उनको दुर्रे नज़र आ रहे थे, खालें पीठ से उतरती नज़र आ रही थीं। उस वक़्त कुछ रब्बानिय्यीन (हक़प्रस्त) ऐसे थे, कुछ अहबार (उलमा) ऐसे थे, जिन्होंने जान की परवाह तक न की। इसलिए कि दीन की हिफ़ाज़त उनकी ज़िम्मेदारी थी। उन्होंने कहा—

जान दी दी हुई उसी की थी
हक़ तो यह है के हक़ अदा न हुआ

लिहाज़ा इमाम रब्बानी मुजद्दिद अलफ़ेसानी रह० ने फ़रमाया कि सज्दाए ताज़ीमी हराम है, क़तअन जाएज़ नहीं है। इस कलिमाए हक़ की वजह से आपको ग्वालियर के क़िले में बंद कर दिया गया, आपके पाँव में ज़ंजीरें डाल दी गयीं। आपने बेड़ियों में रहना तो क़ुबूल कर

लिया मगर उसकी ग़लत बात के आगे झुके नहीं क्योंकि उनको रब के सिवा किसी के आगे झुकना नहीं आता था। सारी ज़िंदगी रब के सामने पेशानियाँ झुकाने वाले भला मख़्लूक़ के सामने कैसे झुक सकते थे। आख़िर उनकी इस्तिक़ामत की बदौलत अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने एक वक़्त वह भी दिखलाया कि जब जहांगीर बादशाह को झुकना पड़ा। सब अमीर उस फ़क़ीर के सामने अदब के साथ खड़े हुए और कहने लगे जो आप कहेंगे आज हम वही करेंगे। लिहाज़ा बिदअतों को ख़त्म कर दिया गया, रस्मों को छोड़ दिया गया और उसकी जगह नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नतों को रिवाज दिया गया। इसी वजह से उनको इमाम रब्बानी मुजद्दिद अलफ़ेसानी रह० कहते हैं। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 3/184)

सैफ़े ख़ुदा की इस्तिक़ामत पर कुफ़्र का लरज़ना

सहाबा किराम की ज़िंदगियों के हालात पढ़कर हैरानी होती है। उनकी जवांमर्दी पर अश-अश करने को दिल करता है। एक बार मश्वरा होने लगा कि इतने इतने काफ़िरों के मुक़ाबले में कितने मुसलमानों को जाना चाहिए? किसी ने कहा, सत्तर चले जाएंगे। किसी ने कहा, चालीस चले जाएंगे। किसी ने कहा, दस चले जाएंगे। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु भी बैठे थे। जब उनसे पूछा गया तो वह कहने लगे, मुझे अकेले भेज दें। यह सुनकर किसी ने कहा, ख़ालिद! इस बात से तो तकब्बुर की बू आती है। वह फ़रमाने लगे कि हर्गिज़ नहीं, क्योंकि मेरी मिसाल बाज़ की सी है और काफ़िरों की मिसाल ऐसे है जैसे जाल में फंसे हुए परिन्दे होते हैं। अब फंसी हुई चिड़िया बाज़ का क्या बिगाड़ सकती है। फिर वह फ़रमाने लगे कि काफ़िर मुर्दा है और मोमिन ज़िंदा है, इसलिए लाखों मुर्दे मिलकर भी एक ज़िंदा आदमी का कुछ नहीं बिगाड़ सकते।

वाक़ई उन पर ऐसी मदद उतरी कि अल्लाह तआला ने उनको कामयाब फ़रमा दिया। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 8/93)

शेख़ुल हिंद रह० के अज़्म व इस्तिक़लाल को सलाम

हज़रत शेख़ुल हिंद रह० दारुल उलूम देवबंद के सपूत थे जिन्होंने अंग्रेज़ के ख़िलाफ़ आज़ादी हासिल करने के लिए बहुत नुमाया काम किया। उनके बारे में शोरश कश्मीरी लिखते हैं—

गर्दिशे दौरां की संगीनी से टकराता रहा
माल्टा में नग़मए महर ओ वफ़ा गाता रहा

माल्टा में आपको क़ैद कर दिया गया, बेड़ियों में क़ैद रहे। उनके कुछ और शागिर्द हज़रत मौलाना हुसैन अहमद मदनी रह०, हज़रत मौलाना अज़ीज़ गुल वग़ैरह भी साथ थे। अंग्रेज़ ने उन पर बहुत सख़्तियाँ कीं मगर ये अपनी बात पर डटे रहे।

एक अजीब वाक़िआ किताबों में पढ़ा है कि जब अंग्रेज़ ने यह फ़ैसला कर दिया कि उनको फांसी दे दी जाए तो यह इत्तिला मिलने के बाद हज़रत शेख़ुल हिंद रह० पर बहुत गिरया तारी रहता था। आपने बहुत ज़्यादा रोना शुरू कर दिया। आपके शागिर्द हैरान होते कि हमें फांसी का हुक्म हो गया तो यह ख़ुशी की बात है लेकिन जब अपने शेख़ को देखते तो वह ख़ूब कसरत के साथ रोते और रोना-धोना सुबह व शाम करते नज़र आते हैं। दिल इतना नरम हो चुका था कि ज़रा ज़रा सी बात पर रोने लग जाते यहाँ तक कि हज़रत मौलाना मदनी रह० और हज़रत मौलाना अज़ीज़गुल रह० ने दिल में सोचा कि हम किसी वक़्त हज़रत की ख़िदमत में अर्ज़ करेंगे कि हज़रत इतना रोने की क्या वजह है? अगर फांसी का हुक्म आ चुका है तो यह ख़ुशी की बात है, इसमें घबराने की कोई बात नहीं।

लिहाज़ा एक मौक़े पर खाने से पहले उन्होंने अर्ज़ किया कि हज़रत! आप आजकल बहुत ज़्यादा रोते हैं, आपके ऊपर बहुत ज़्यादा गिरया तारी होता है, आख़िर क्या वजह है? फांसी का हुक्म हो चुका है तो यह ख़ुशी की बात है। अल्लाह तआला हमारी जान को अपने रास्ते में क़ुबूल कर लेंगे यह तो कोई ऐसी रोने वाली बात नहीं है। जब उन्होंने यह बात कही तो हज़रत शेख़ुल हिंद रह० ने उस वक़्त उनको ज़रा रौब भरी नज़रों से देखा। कहते हैं कि हमारे तो उस वक़्त पसीने छूट गए कि हज़रत इतने जलाल से हमें देख रहे हैं और फिर उसके बाद फ़रमाया कि तुम क्या समझते हो कि मैं मौत के ख़ौफ़ से या फांसी के ख़ौफ़ से रोता हूँ, नहीं बल्कि मेरे ज़हन में कोई और बात है। उन्होंने अर्ज़ किया, हज़रत! फिर कुछ हमें भी बता दीजिए। हज़रत ने फ़रमाया, मेरे दिल में यह बात आ गई कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त बेनियाज़ हैं। मैं उसकी शाने बेनियाज़ी की वजह से रोता हूँ, इसलिए कि कभी-कभी वह बंदे से जान भी लिया करता है और उसकी जान को क़ुबूल भी नहीं किया करता। मैं तो इसलिए रोता हूँ कि ऐ अल्लाह! अगर तूने जान लेने का फ़ैसला कर लिया है तो मेरे मौला! उसको क़ुबूल भी फ़रमा लेना।

हकीम अजमल ख़ान आपके मुरीदों में से था। आप बीमार थे और उसके हाँ इलाज के लिए आए हुए थे। वहीं सन् 1339 हि० में आपकी वफ़ात हुई और वहीं से जनाज़ा उठाया गया। जब आपको ग़ुस्ल दिया जाने लगा तो ग़ुस्ल देने वाले ने देखा कि आपकी पीठ के ऊपर गहरे ज़ख़्म के निशान मौजूद हैं। ऐसी पीठ कभी नहीं देखी थी। लोग परेशान थे कि आख़िर यह बात क्या थी कि आपकी पीठ पर इतने गहरे निशान हैं।

हज़रत मदनी रह० उस वक़्त कलकत्ता में थे। वह भी वफ़ात की ख़बर सुनकर वहाँ पहुँचे। जब उनसे पूछा गया तो हज़रत मौलाना

हुसैन अहमद मदनी रह० ने उस वक़्त राज़ खोला और कहा कि असल में माल्टा में उनको आग के अंगारों पर लिटाया जाता और अंग्रेज़ कहता कि तुम हमारे साथ वफ़ादारी का अहद करो और हमारे हक़ में फ़तवा दो वरना हम तुम्हें आग के अंगारों पर लिटाए रखेंगे। हज़रत के ख़ून से आग के अंगारे बुझते। इतनी तकलीफ़ उठाते मगर अंग्रेज़ से कहते रहते, अंग्रेज़! मैं कभी तेरे हक़ में फ़तवा नहीं दे सकता। अरे मैं बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु का वारिस हूँ, जिनको रेत के ऊपर लिटाया जाता था और सीने पर चट्टाने रख दी जाती थीं, मैं तो ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हु का वारिस हूँ जिनकी कमर के ऊपर ज़ख़्मों के निशानात थे, मैं तो इमाम मालिक रह० का वारिस हूँ जिनके चेहरे पर स्याही मलकर उनको मदीना भर में फिराया गया था, मैं तो इमाम अबूहनीफ़ा रह० का वारिस हूँ जिनका जनाज़ा जेल से निकला था, मैं तो इमाम अहमद बिन हंबल रह० का वारिस हूँ जिनको सत्तर कोड़े लगाए गए थे, मैं इल्मी वारिस हूँ हज़रत मुजद्दिद अलफ़ेसानी रह० का, मैं रूहानी बेटा हूँ शाह वलिउल्लाह मुहद्दिस देहलवी रह० का, भला मैं तुम्हारी बात कैसे क़ुबूल कर सकता हूँ। लिहाज़ा सब तकलीफ़ों को बर्दाश्त कर लेते थे मगर ज़ुबान से अंग्रेज़ के हक़ में कोई बात नहीं कहते थे। ये उनकी क़ुर्बानियाँ थीं। आख़िर अंग्रेज़ को पीछे हटना पड़ा। अंग्रेज़ ने पहले फ़ैसला किया था कि उनको फांसी पर लटका दिया जाए। आख़िर उसने फ़ैसला किया कि फांसी नहीं देते, चलो छोड़ देते हैं। लिहाज़ा अंग्रेज़ को फ़ैसला बदलना पड़ा। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उनके अज़्म व इस्तिक़ामत की वजह से उनको कामयाबी अता फ़रमा दी। कितनी अजीब बात कही—

हालात के क़दमों में क़लंदर नहीं गिरता
टूटे जो सितारा तो ज़मीं पर नहीं गिरता

गिरते हैं समन्दर में बड़े शौक़ से दरिया
लेकिन किसी दरिया में समन्दर नहीं गिरता

आप तो समन्दर थें भला दरिया में कैसे गिर सकते थे। आपके इस अज़्म व इस्तिक़ामत को सलाम करना चाहिए। इस वजह से अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने आपको यह अज़मत अता फ़रमाई कि अल्लाह का शुक्र है कि आपका इल्मी फ़ैज़ भी ख़ूब फैला।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 6/104)

समरक़ंदी नौजवान का अज़्म व इस्तिक़लाल (जमाव)

समरक़ंद के इसी सफ़र में एक आलिम एक नौजवान को आजिज़ से मिलाने के लिए लाए और बताया कि यह वह ख़ुशनसीब नौजवान है जो रूसी इंक़लाब के ज़माने में रोज़ाना पाँच बार अज़ान देकर खुले आम नमाज़ें पढ़ता था। यह सुनकर इस आजिज़ को हैरत हुई और पूछा, वह कैसे? उस नौजवान ने अपनी पीठ पर से कपड़ा हटा दिया। हमने देखा तो उसकी पीठ के एक एक इंच पर ज़ख़्मों के निशानात मौजूद थे। इस आजिज़ ने पूछा यह क्या मामला है?

उसने अपनी दास्तान बयान करना शुरू की। वह कहने लगा, जब मैंने पहली बार अज़ान दी तो पुलिस वाले मुझे पकड़ कर ले गए और ख़ूब मारा। मैं जानबूझ कर इस तरह बन गया जिस तरह कोई पागल होता है। वह जितना ज़्यादा मारते मैं उतना ज़्यादा हँसता। एक एक वक़्त में कई कई पुलिस वाले मारते मारते थक जाते मगर मैं अल्लाह के नाम पर मार खाते खाते न थकता, मुझे बिजली के झटके भी लगाए गए मगर मैंने बर्दाश्त कर लिए, मुझे कई कई घंटे बर्फ़ पर लिटाया गया, मुझे पूरी पूरी रात उल्टा लटकाया गया, मुझे गर्म चीज़ों से दाग़ा गया, मेरे नाख़ुन खींचे गए मगर मैं इस तरह महसूस करवाता

जैसे कोई पागल होता है। मैं जानबूझकर पागलों वाली हरकतें करता था। पुलिस वालों ने एक साल मेरी पिटाई करने के बाद मुझे पागलख़ाने भिजवा दिया। वहाँ भी मैंने एक साल इसी तरह गुज़ारा यहाँ तक कि डाक्टर ने लिखकर दे दिया कि यह आदमी पागल है, इसका दिमाग़ ख़राब है, यह किसी को नुक़सान नहीं पहुँचाता, यह अपने आप में ही मग्न रहता है। लिहाज़ा अब इसको दोबारा गिरफ़्तार न किया जाए। इस तरह उस डाक्टर की रिपोर्ट पर मुझे आज़ाद कर दिया गया। जब मैं बाहर आया तो मैंने एक जगह पर छोटी सी मस्जिदनुमा जगह बनाई। मैं वहीं दिन में पाँच बार अज़ानें देता और पाँच नमाज़ें खुलेआम पढ़ा करता था। इस आजिज़ ने बढ़कर उसकी पेशानी पर बोसा दिया और कहा—

उस क़ौम को शमशीर की हाजत नहीं होती
हो जिसके जवानों की ख़ुदी सूरते फ़ौलाद

यह आजिज़ उस नौजवान के चेहरे को बार-बार देखता और उसकी साबित क़दमी पर रश्क करता रहा—

अज़ल से रच गई है सरबुलंदी अपनी फ़ितरत में
हमें कटना तो आता है मगर झुकना नहीं आता

हज़रत सईद बिन जुबैर रह० की इस्तिक़ामत

ऐसा भी हुआ कि हिज्जाज बिन यूसुफ़ के सामने हज़रत सईद बिन जुबैर रह० खड़े हैं। हिज्जाज कहता है कि मैं अभी तुम्हें फ़ना फ़िन्नार करता हूँ मगर इस्तिक़ामत के पहाड़ सईद बिन जुबैर रह० कहते हैं कि मैं तुझे दोज़ख़ और जन्नत का मालिक नहीं समझता। जी हाँ वह ऐसे थे जो निडर होकर जाबिर सुल्तान के सामने कलिमाए हक़ कहते थे। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़िक़ार 8 168)

दर्दनाक ज़्यादती भरे सफ़र की दास्तान

मौलाना जाफ़र थांसेरी रह० अपनी किताब "तारीख़ काला पानी" में लिखते हैं कि हमारा उलमा का एक क़ाफ़िला था। अंग्रेज़ ने उस क़ाफ़िले को देहली से लाहौर भेजा। मगर जिस अंग्रेज़ ने देहली से लाहौर भेजा उसने हमें सिर्फ़ हथकड़ियाँ लगायीं। लिहाज़ा हम बड़े इत्मिनान से अल्लाह अल्लाह करते हुए देहली से लाहौर पहुँच गए लेकिन लाहौर जेल का इंचार्ज बहुत ही जाबिर और ज़ालिम क़िस्म का आदमी था। उसने कहा ये मौलवी आराम के साथ सफ़र करके यहाँ आ गए। अब मैं इनको सबक़ सिखाउंगा कि ये हमारे साथ कैसे ग़द्दारी करते हैं और हमारे नमक हराम बनते हैं। लिहाज़ा उसने रेलगाड़ी के अंदर छोटे छोटे केबिन बनवाए और हर केबिन में चारों तरफ़ कील लगवाए। वह फ़रमाते हैं कि हमारे बैठने की जगह के चारों तरफ़ एक-एक दो-दो इंच के फ़ासले पर कील लगे हुए थे। उन केबिनों में हमें बिठाया गया। जब रेलगाड़ी चलती और पीछे झटका लगता तो हमारे जिस्म पर पीछे कील चुभ जाते, जब दायीं तरफ़ झटका लगाता तो दायीं तरफ़ कील चुभ जाते, जब बायीं तरफ़ झटका लगता तो बायीं तरफ़ कील चुभ जाते। चलती हुई गाड़ी पर हमें पता नहीं होता था कि ब्रेक लगनी है या नहीं। जब एकदम ब्रेक लगती तो हमारे इन ज़ख़्मों पर फिर कील चुभते। फ़रमाते हैं कि वहीं पसीना भी निकलता और ख़ून भी बहता, सो भी नहीं सकते थे। हमें उन्होंने लाहौर से मुल्तान भेजना था। यह तकलीफ़ देने वाला सफ़र एक माह में तय हुआ और हम पूरा महीना दिन में भी बैठे रहते और रात को भी बैठे रहते। उसी जगह पर हमारा पेशाब पाख़ाना भी निकल जाता। हमारे लिए पानी वग़ैरह भी कुछ नहीं होता जिसकी वजह से बदबू भी बहुत ज़्यादा थी। इतनी सख़्त सज़ा इसलिए दी कि हम तंग आकर कह दें कि जी आप जो कुछ कहते हैं हम मान लेते हैं मगर

क़ुर्बान जाएं उनकी अज़मतों पर कि उन्होंने यह तकलीफ़ तो बरदाश्त कर ली मगर उन्होंने फ़िरंगी की बात को मानना पसंद न किया।

फ़रमाते हैं कि एक महीने के इतने मुशक़्क़त भरे सफ़र के बाद जब हम मुल्तान पहुँचे तो वहाँ पर मौजूद हाकिम ने कहा कि इन लोगों को हम कल फांसी के फंदे पर लटका देंगे। जब हमने फांसी की ख़बर सुनी तो हमारे दिल ख़ुश हुए कि अब हमें अपना मक़सद नसीब हो जाएगा।

अगले दिन वह जब हमें फांसी देने के लिए आया तो उसने देखा कि हमारे चेहरों पर रौनक़ थी क्योंकि थकावट ख़त्म हो चुकी थी। हमारे तर व ताज़ा चेहरों की चमक देखकर वह कहने लगा ओ मुल्लाओ! तुम्हारे चेहरों पर मुझे ताज़गी क्यों नज़र आ रही है? हम में से एक ने जवाब दिया कि हमारे चेहरे इसलिए तर व ताज़ा है कि आप हमें फांसी देंगे तो हमें शहादत नसीब हो जाएगी। जब उसने यह बात सुनी तो वहीं से वापस दफ़्तर चला गया और उसने अपनी बड़ी आथोर्टी से राब्ता किया और बताया कि ये तो ख़ुश हैं कि इनको फांसी दे दी जाए।

लिहाज़ा उसने वापस आकर ऐलान किया कि ओ मुल्लाओ! तुम ख़ुश होकर मौत मांगते हो लेकिन हम तुम्हें मौत भी नहीं देना चाहते। हमने यह फ़ैसला किया है कि तुम्हें काला पानी भेज दिया जाए। इस जगह पर पहुँचकर मौलाना जाफ़र थांसेरी रह० ने एक शे'र लिखा, फ़रमाते हैं—

मुस्तहिक़े दार को हुक्म नज़रबंदी मिला
क्या कहूँ कैसे रिहाई होते होते रह गई

फ़रमाते हैं कि इससे भी बड़ी क़ुर्बानी का वक़्त वह आया जब वह हमें काला पानी भेज रहे थे। उस वक़्त उन्होंने मंसूबाबंदी के

तहत हमारे बेटों, बेटियों, बीवियों और बाक़ी छोटे बड़ों को बुलवा लिया और हमें ज़ंजीरों में बांधकर और बेड़ियाँ पहनाकर उनके सामने सामने पेश किया और उनसे कहा कि तुम इन्हें मना लो। अगर ये कह दें कि हम फ़िरंगी के ग़द्दार नहीं हैं तो हम इन्हें अभी तुम्हारे साथ घर भेज देते हैं। फ़रमाते हैं कि अब बीवी रो रही थी, बेटी भी रो रही थी, मेरा एक छोटा बेटा भी रो रहा था और मेरे साथ लिपट कर कह रहा था कि अब्बू! आप यह कह क्यों नहीं देते। बस आप कहकर हमारे साथ घर चलें। फ़रमाते हैं कि मेरे लिए इससे बड़ा डगमगाने वाला लम्हा कोई नहीं था। जब मेरा बेटा बहुत ज़्यादा रोया तो मैंने अपनी बीवी को इशारा किया बच्चे को सीने से लगाओ और उस बच्चे से कहा कि बेटा! अगर ज़िंदगी रही तो तुम्हारा बाप तुम्हें दुनिया में आकर मिलेगा और अगर न रही तो फिर क़यामत के दिन हौज़े कौसर पर हमारी मुलाक़ात होगी।

मैं सलाम करता हूँ उन उलमा की अज़्मत को, मैं सलाम करता हूँ उनकी इस्तिक़ामत को जिन्होंने इस क़द्र क़ुर्बानियाँ देकर दीन की किश्ती को बहरे ज़ुलमात के भंवर से महफ़ूज़ रखा और अल्लाह का शुक्र है कि हमारे पास आज यह दीन महफ़ूज़ हालत में मौजूद है।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 8/172-174)

घोड़े की इस्तिक़ामत

अगर एक मुजाहिद किसी घोड़े को इसलिए पालता है कि मैं इसकी पीठ पर बैठकर जिहाद करूंगा तो वह घोड़ा पहचानता है कि मुझे इसलिए खिलाया पिलाया गया था कि मैंने जिहाद में शरीक होना है। लिहाज़ा जब उसका मालिक ज़िरह पहनकर उस पर सवार हो जाता है और तलवार हाथ में ले लेता है और उसे दुश्मन के सामने लाकर खड़ा करता है तो वह घोड़ा हालाँकि जानवर है मगर उसमें

इतनी समझ ज़रूर होती है कि अब उस वादे के पूरा करने का वक़्त आ चुका है जिसके लिए मेरे मालिक ने मेरी ख़िदमत की थी। लिहाज़ा घोड़ा तैयार हो जाता है। उसको अपने सामने तलवारें और तीर नज़र आ रहे होते हैं मगर वह घोड़ा घबराता नहीं है। लिहाज़ा जब उसका मालिक उसे भागने के लिए एड़ी का इशारा करता है तो वह घोड़ा भागना शुरू कर देता है। वह बढ़ता चला जाता है, सामने दुश्मन तीर बरसाता है। मगर तीर तलवार और दुश्मन के वार से उसके जिस्म से ख़ून के फ़व्वारे भी छूट रहे हों तो वह इस बात की परवाह किए बग़ैर दुश्मन की सफ़ों में घुसता चला जाता है। वह अपनी जान तो क़ुर्बान कर देता है मगर वह अपने मालिक के इशारे की लाज रख लेता है। अल्लाह तआला को घोड़े की इस इस्तिक़ामत पर अपने क़ुरआन में क़समें खायीं हैं लिहाज़ा फ़रमाया,

﴿و العديت ضبحا فالموريت قدحا فالمغيرات صبحا.﴾

सुब्हानअल्लाह, ऐ मुजाहिद! तेरी अज़्मत को सलाम कि तेरे घोड़े के क़दमों से उठने वाली मिट्टी की भी तेरा परवरदिगार क़स्में खा रहा है। जिस परवरदिगार को घोड़े की जवांमर्दी और बहादुरी इस क़द्र पसंद आई हो कि वह क़समें खाकर क़ुरआन पाक में उसके तज़्किरे फ़रमाते हैं तो जब मोमिन बहादुरी का इज़्हार करेंगे तो अल्लाह तआला को यह बात कितनी पसंद आएगी।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 8/200)

من طلب العلیٰ سہر اللیالی

बरकते-इल्म

بنی آدم از علم یابد کمال
نہ از حشمت و جاہ و مال و منال

बनी आदम अज इल्म याबद कमाल
न अज़ हशमत ओ जाह ओ जमाल ओ मनाल

बरकते इल्म

इमाम अबूहनीफ़ा रह० और सत्रह हदीसें

बाहर मुल्क में एक साहब मेरे पास आए और कहने लगे कि मैंने सुना है कि इमाम अबूहनीफ़ा रह० को कुल सत्रह हदीसें याद थीं तो क्या इसके बावजूद आप लोग अपने को हनफ़ी कहते हैं? आजिज़ ने जवाब दिया कि आपकी बात से पहले तो हो सकता है कि आजिज़ सौ फ़ीसद हनफ़ी हो लेकिन आपकी बात सुनकर एक सौ एक फ़ीसद हनफ़ी हो गया। वह कहने लगे वह कैसे? आजिज़ ने कहा कि यह बात तो पक्की है कि इमाम अबूहनीफ़ा रह० की सरबराही में छः लाख मसाइल का इस्तिंबात (हल) किया गया है तो जो आदमी सत्रह हदीसों से छः लाख मसाइल का इस्तिबांत करे आजिज़ उसे अपना इमाम न माने तो क्या करे। जो बंदा सत्रह हदीसों से छः लाख मसाइल निकाले, आजिज़ तो उसकी अज़्मत को सलाम करता है। आजिज़ तो अपनी अक़्ल को उनके क़दमों में डालता है। फिर उनकी अक़्ल ठिकाने आई। कहने लगी अब बात समझ में आई है। हक़ीक़त यह है कि अल्लाह तआला ने इमाम आज़म को वह मतर्बा दिया था जो आम आदमी की समझ से बाहर है। तफ़्सीर क़ुरआन के बारे में यह बात अच्छी तरह दिमाग़ में बिठा लेनी चाहिए, इस किताब के वही मायने क़ुबूल होंगे जो अल्लाह तआला ने फ़रमाए हैं। उनको समझने के लिए उलमा के पास जाना पड़ेगा और उनकी सोहबत में बैठकर सीखना पड़ेगा, सिर्फ़ किताब पढ़कर हम नहीं समझ सकते। हर बंदे की समझबूझ अलग होती है। जो समझ हमारे बड़ों को हासिल थी वह हमें तो हासिल नहीं है। इसलिए हमें अपने बड़ों के

साथ नत्थी रहना चाहिए। इसी में भलाई है जैसा कि हदीस नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है ﴿البركة مع اكابركم﴾ तुम्हारे अकाबिर के साथ रहने में बरकत है। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 4/17)

यह तो पिस्ते का फ़ालूदा खाएगा

इमाम अबूयुसूफ़ रह० पढ़ने के ज़माने में इमाम अबूहनीफ़ा रह० की ख़िदमत में आए। माँ ने भेजा था धोबी के पास जाओ और कपड़े धोना सीखो। रास्ते में कहीं हज़रत इमाम अबूहनीफ़ा रह० की ख़िदमत में पहुँच गए। हज़रत ने कुछ ऐसा मामला किया कि हज़रत के शागिर्द बन गए। यहाँ तक कि इल्म में बहुत बड़ा मुक़ाम हासिल किया। माँ ने कहा मैंने तुझे धोबी की तरफ़ भेजा था, तेरा बाप मर गया है, तू कुछ काम करता हम खाते-पकाते। उन्होंने आकर इमाम आज़म रह० को यह बात सुनाई। हज़रत ने फ़रमाया कि अपनी माँ को कहना कि मैं एक काम सीख रहा हूँ जिस पर मुझे बहुत ज़्यादा आमदनी की उम्मीद है। उन्होंने जाकर कह दिया। उनकी माँ को तसल्ली न हुई तो वह ख़ुद इमामे आज़म अबूहनीफ़ा रह० के पास आयीं और कहा कि मैंने तो बेटे को धोबी के पास भेजा था कि कोई हुनर सीखता, आपके पास किताबें पढ़ता है? हज़रत ने फ़रमाया कि मैं इसको ऐसा हुनर सिखा रहा हूँ कि यह पिस्ते का बना हुआ फ़ालूदा खाया करेगा। उनकी माँ ने सोचा कि हज़रत ऐसे ही मेरी तसल्ली के लिए बात कर रहे हैं। इमाम अबूयूसुफ़ रह० फ़रमाते हैं कि बात आई गई हो गई। माँ को इत्मिनान हो गया। एक वक़्त आया कि इमाम अबू यूसुफ़ रह० चीफ़ जस्टिस बने। आगे फ़रमाते हैं कि वक़्त का बादशाह हारून रशीद मेरे पास बैठा हुआ था। वह कहने लगा हज़रत! मैने आपके लिए एक चीज़ बनवाई है, मैं रोज़ आपके लिए भिजवा दिया करूंगा। मैंने चीज़ खाई तो बड़ी मज़ेदार थी। मैंने पूछा कि यह

थी क्या? कहने लगे हज़रत यह मेरे लिए भी कभी कभी बनती है लेकिन आपको इल्मी मुक़ाम ऐसा मिला कि आपके लिए यह रोज़ाना आया करेगी। कहने लगे, मैंने पूछा बताओ कि है क्या? कहने लगा कि यह पिस्ते का बना हुआ फ़ालूदा है। फ़रमाते हैं कि इमाम आज़म रह० की बात मुझे याद आई कि उन्होंने मेरी माँ को कहा था कि मैं इनको ऐसा हुनर सिखा रहा हूँ कि यह पिस्ते का बना हुआ फ़ालूदा खाया करेगा। देखा अल्लाह तआला यूँ रिज़्क देते हैं।

इल्म ने हज़रत सालिम रह० को कहाँ पहुँचा दिया

हज़रत सालिम रह० मुहद्दिस गुज़रे हैं, ग़ुलाम थे। तीन सौ दिरहम में बिके थे। फिर इल्म हासिल करके ऐसे मुक़ाम पर पहुँचे कि बादशाह इजाज़त लेकर उनको मिलने आया करता था। एक बार बादशाह मुलाक़ात के लिए आया। आप से इजाज़त चाही। आपने इल्मी मशग़ूली की वजह से माज़रत कर दी। लिहाज़ा बादशाह को बग़ैर मुलाक़ात के वापस जाना पड़ा। हज़रत सालिम रह० बिके थे तीन सौ दिरहम में लेकिन इल्म ने ऐसे मुक़ाम पर पहुँचा दिया कि वक़्त का बादशाह भी उनके दरवाज़े पर दस्तक दे रहा होता था। सुब्हानअल्लाह! वह दुनिया में बिके थे तीन सौ दिरहम में लेकिन यहाँ अल्लाह से सौदा किया था इसलिए क़ीमत बढ़ गई—

जब तक बिके न थे कोई पूछता न था
तुमने ख़रीदकर हमें अनमोल कर दिया

यह बाज़ी इश्क़ की बाज़ी है जो चाहो लगा दो डर कैसा
गर जीत गए तो क्या कहने गर हार गए तो मात नहीं

अगर जीत गए और इल्मी मुक़ाम हासिल हो गया तो क्या ही नसीब हैं और अगर वह मुक़ाम न हासिल हुआ और तलबा ही में रहे तो फिर भी ख़ुशनसीबी है, सुब्हानअल्लाह।

इ़ज़्ज़त कपड़े से नहीं इल्मी ख़ज़ाने से

इमाम शाफ़ई रह० एक बार किसी नाई के पास बाल कटवाने के लिए गए। उसने देखा कि आपने मैले से कपड़े पहने हुए हैं। उसी दौरान कोई अच्छे लिबास वाला दुनियादार सा आदमी उसके पास बाल कटवाने आया। नाई को उम्मीद थी कि इधर से ज़्यादा पैसे मिलेंगे इसलिए उसने इमाम शाफ़ई रह० के बाल काटने से इंकार कर दिया कि मैं तो पहले इसके बाल काटूंगा। आपने अपने गुलाम से पूछा बताओ तुम्हारे पास कुछ पैसे हैं? अर्ज़ किया, जी तीन सौ दीनार हैं। आप रह० ने फ़रमाया यह पैसे इसको वैसे ही दे दो हालाँकि बाल कटवाने के लिए एक या दो दीनार लगते होंगे जब आपने वैसे ही तीन सौ दीनार दिए और बाल भी न कटवाए तो वह बड़ा हैरान हुआ। वह कहने लगा मैं तो समझा था कि आपके ऊपर सिर्फ़ गुदड़ी है मगर सच तो यह है कि गुदड़ी में लाल छिपा हुआ था। उसकी बात सुनकर इमाम शाफ़ई रह० बाहर निकल आए और यादगार शे'र इर्शाद फ़रमाए—

علی ثیاب لو یباع جمیعھا   بفلس لکان الفلس منھن اکثرا

मेरे ऊपर ऐसे कपड़े हैं कि अगर उन तमाम कपड़ों को पैसों के बदले बेच दिया जाए तो एक दिरहम भी उन कपड़ों की क़ीमत से ज़्यादा हो जाएगा मगर इन कपड़ों में एक ऐसी जान है कि अगर तुम सारी दुनिया में ढूंढकर देखो तो तुम्हें इस वक़्त ऐसी जान नज़र नहीं आएगी।

इमाम साहब रह० से ग़लतफ़हमी की वजह

इमाम औज़ाई रह० शाम में रहते थे। उन्होंने इमाम आज़म रह०

के बारे में ऐसी वैसी बहुत सी बातें सुन रखी थीं। एक बार इमाम अबूहनीफ़ा रह० के शागिर्द अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० इमाम औज़ाई रह० की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो उन्होंने पूछा ऐ ख़ुरासानी! (अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० की निस्बत है) अबूहनीफ़ा कौन आदमी है, मैंने सुना वह बहुत गुमराह है। अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० फ़रमाते हैं कि मैं ख़ामोश हो गया। घर आया और इमाम अबूहनीफ़ा रह० के बयान किए हुए मसाइल जिस किताब में थे वह उठाई और इमाम औज़ाई रह० की ख़िदमत में पेश कर दी। उन्होंने पढ़ा तो फ़रमाने लगे, ऐ ख़ुरासानी यह नौमान कौन शख़्स है? उसका इल्मी पाया तो बहुत बुलंद है। उससे तुम्हें फ़ायदा उठाना चाहिए। मैंने कहा यह वही इमाम अबूहनीफ़ा है जिनके बारे में आप बातें सुनते रहते हैं। उनका चेहरा फ़क़ हो गया और कहने लगे, हमने क्या सुना था, हक़ीक़त क्या थी। फ़रमाया ऐ ख़ुरासानी! उसकी सोहबत इख़्तियार कर और फ़ायदा उठा। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 4/25)

इल्मी सैर महद (पालने) से लहद (क़ब्र) तक

मौज़्ज़िज़ सामेईन! इल्म के बारे में जितनी अहमियत रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बतलाई है यक़ीन जानिए उतनी अहमियत किसी और ने नहीं बताई । हम एक दफ़ा कोर्स कर' रहे थे उसका मौज़ू था (Effective Manager) और इंगलैंड के मिस्टर ब्रोडी उस कोर्स के टीचर थे जो एक ही वक़्त में कई युनिवर्सिटियों के विज़ीटिंग प्रोफ़ेसर थे, कैलिफ़ोर्निया की युनीवर्सिटी, इंगलैंड की युनिवर्सिटी, जर्मनी की युनिवर्सिटी और हालैंड की युनीवर्सिटी, इतना क़ाबिल और माहिर बंदा हमें लैक्चर दे रहा था। लैक्चर के दौरान उन्होंने इल्म के बारे में बात की और बात करते करते कहने लगे कि हमारे साइंसदानों ने आज यह बात महसूस की है कि आदमी को सिर्फ़ तालिबइल्मी में ही

नहीं पढ़ना पढ़ता बल्कि वह अपने प्रोफ़ेशन में भी पढ़ना पड़ता है गोया सारी ज़िंदगी पढ़ना पड़ता है। उसने यह बात बड़े नख़रे से की जैसे कोई बड़ी रिसर्च वाली बात की हो। जब उसने यह बात की तो मैं खड़ा हुआ, मैंने कहा कि मैं तुम्हें अपने आक़ा रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस सुना दूँ। उसने कहा, ज़रूर सुनाओ। मैंने यह हदीस सुनाई कि इल्म हासिल करो पंघोड़े (पालने) से लेकर क़ब्र में जाने तक। जब मैंने यह हदीस सुनाई यक़ीन कीजिए कि उसने लैक्चर रोका, अपना ब्रीफ़केस खोला, अपनी डायरी निकाली। मुझे कहता है कि आप यह हदीस मुझे लिखवा दें, मैं आइंदा अपने लैक्चरों में यह हदीस पढ़कर लोगों को सुनाया करूंगा कि चौदह सौ साल पहले मुसलममानों के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इल्म की अहमियत बतलाई, सुब्हानअल्लाह। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 1/41)

तालिब इल्म की दुआओं की बरकत

सुलतान महमूद ग़ज़नवी रह० के दिल में तीन बातें खटकती थीं :

1. एक बात यह दिल में खटकती थी कि मैं सुबक्तगीन का बेटा हूँ और सुबक्तगीन तो पहले बादशाह नहीं था बल्कि एक फ़ौजी था, फिर बादशाह बना। क्या मेरी निस्बत सही है या कुछ और है।
2. दूसरी बात यह दिल में खटकती थी कि दीन के मुख़्तलिफ़ शोबे हैं लेकिन सबसे अफ़ज़ल और बेहतर शोबा कौना सा है यानी उम्मत में जो सबसे आला लोग हैं वे कौन हैं?
3. तीसरी बात यह दिल को खटकती थी कि मुझे बड़े अरसे से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत नसीब नहीं हुई। इसलिए मुझे ज़ियारत नसीब हो जाए।

एक बार वह गली में राउंड कर रहे थे। उन्होंने बाहर आकर एक

तालिब इल्म को रोशनी में पढ़ते हुए देखा। पूछा तुम मस्जिद में क्यों नहीं पढ़ते? उसने कहा, मस्जिद में रोशनी का इन्तिज़ाम नहीं है। यह एक आदमी के घर के बाहर रोशनी जल रही है इसलिए मैं यहाँ बैठकर पढ़ाई कर रहा हूँ। उन्होंने कहा, बच्चे तुम जाओ, आज के बाद मैं तुम्हारे लिए रोशनी का इन्तिज़ाम करा दूंगा। जब तालिब इल्म ने रोशनी देखी तो उसने दुआ कर दी कि ऐ अल्लाह! इस बंदे की मुरादें पूरी कर दे। लिहाज़ा जब सुलतान महमूद ग़ज़नवी रह० घर आए तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत नसीब हुई और आप ने फ़रमाया : "ऐ सुबकतगीन के बेटे! तूने मेरे वारिस की इज़्ज़त की अल्लाह तआला तुझे दुनिया और आख़िरत की इज़्ज़तें नसीब फ़रमाए, सुब्हानअल्लाह। इससे तालिब इल्म की दुआ की बरकत से सुलतान महमूद ग़ज़नवी रह० की तीनों मुरादें पूरी हो गयीं। एक तो उन्हें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत नसीब हुई, दूसरा उनके दिल में अपने नसब के बारे में जो छोटी-मोटी बातें थीं वे ख़त्म हो गयीं, तीसरे उनको यह पता चल गया कि उलमा किराम ही नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वारिस हैं और यही लोग दूसरों से अफ़ज़ल हैं।

तालिबाने उलूमे नबुव्वत की दुआ लीजिए

उन तलबा का अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हाँ बड़ा मुक़ाम होता है। हज़रत ख़्वाजा बाक़ीबिल्लाह रह० जो हज़रत मुजद्दिद अलफ़ेसानी रह० के पीर व मुर्शिद हैं कि एक बात अभी ज़ेहन में आई है। वह इस मज़मून से ही मुताल्लिक़ है। इसलिए वह भी आप हज़रात की ख़िदमत में अर्ज़ कर देता हूँ। एक बार ख़्वाजा बाक़ीबिल्लाह के सामने ही किसी मुरीद ने कहा जी हमारे शेख़ तो ऐसे हैं जिनको अल्लाह तआला ने ऐसे ऐसे मुरीदीन अता किए और ये मुक़ामात अता किए

हैं और हज़रत इस पर ख़ामोश रहे। अब इतनी ख़ामोशी पर अल्लाह तआला की तरफ़ से उनके ऊपर आज़माइश आ गई।

﴾حسنات الابرار سيئات المقربين﴿ आम नेकों की नेकियाँ मुक़र्रिबीन के हक़ में बुराई का दर्जा रखती है। जी हाँ! जब बड़ों के साथ गहरा ताल्लुक़ होता है तो फिर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के नाज़ भी ज़्यादा होते हैं। जी हाँ! यह भी ख़ुदपसंदी में शामिल है कि दूसरे ने तारीफ़ की और आप ख़ामोश रहे, उसे रोका क्यों नहीं। लिहाज़ा आज़माइश के तौर पर क़ब्ज़ की कैफ़ियत आ गई। सब कैफ़ियतें ख़त्म हो गयीं जिसकी वजह से आप कई दिन रोते रहे। आपने अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से दुआ मांगी कि ऐ मेरे मालिक! मेरी किस ग़लती की वजह से ये कैफ़ियतें बंद हो गयीं, आप मुझ पर खोल दीजिए। आख़िर आपको ख़्वाब में बताया गया कि यह इस वजह से कैफ़ियत पेश आई है और अब इसका हल यह है कि आपके क़रीब मदरसे में छोटे-छोटे बच्चे अल्लाह का क़ुरआन पढ़ते हैं, आप जाएं और तलबा से दुआ करवाएं, उनकी दुआ की बरकत से वे चीज़ें फिर आपको नसीब हो जाएंगी। लिहाज़ा आप सुबह उठे और उस मदरसे में गए। जब ख़्वाजा बाक़ीबिल्लाह वहाँ पहुँचे तो अदब की वजह से उस्ताद भी खड़े हो गए और शागिर्द भी खड़े हो गए कि ख़्वाजा साहब तशरीफ़ लाए हैं। ख़्वाजा साहब की आँखों में आँसू आ गए और फ़रमाने लगे कि आप मुझे अल्लाह का बड़ा वली समझकर खड़े हो रहे हैं और मेरी हालत यह है कि मुझे ख़्वाब में हुक्म हुआ है कि मैं दुआ के लिए आप हज़रात के पास जाऊँ। लिहाज़ा अल्लाह तआला के हाँ आपका बड़ा मुक़ाम है, इसके बाद छोटे-छोटे बच्चों ने मिलकर दुआ की और अल्लाह तआला ने ख़्वाजा बाक़ीबिल्लाह रह० को वे कैफ़ियतें फिर वापस कर दीं, अल्लाहु अकबर।

तलबा की मेहमानदारी गोया नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दावत

साईं तवक्कुल शाह अंबालवी रह० का दस्तरख़्वान बड़ा वसी होता था। वह अल्लाह की रज़ा के लिए अल्लाह की मख़्लूक़ को खाना खिलाया करते थे। उनकी तरफ़ से ऐलाने आम था कि जो आए खाना खाए, लिहाज़ा ग़रीब, मुक़ीम, मिस्कीन और नादार लोग आते थे और खाना खाकर चले जाते थे। उनको एक बार ख़्वाब में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत नसीब हुई तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया : तवक्कुल शाह! तुम अल्लाह तआला की दावत तो रोज़ाना करते हो लेकिन तुमने हमारी दावत कभी नहीं की। इसके बाद उनकी आँख खुल गई। वह बड़े परेशान हुए कि इस ख़्वाब का क्या मतलब है? इसलिए उन्होंने रो रो कर अल्लाह तआला से दुआएं मांगी कि परवरदिगार आलम! इस ख़्वाब की हक़ीक़त को वाज़ेह फ़रमा दे। आख़िर उनके दिल में डाला गया कि तुम अल्लाह की मख़्लूक़ को अल्लाह के लिए हर रोज़ खिलाते हो मगर तुमने मेरे नबी के वारिसों यानी उलमा व तलबा और क़ारियों को अपने दस्तरख़्वान पर एहतिमाम के साथ कभी नहीं बुलाया।

इसलिए फ़रमाया कि तुमने हमारी दावत कभी नहीं की लिहाज़ा उन्होंने शहर भर के उलमा, तलबा और क़ारियों की दावत की और फिर यह समझे कि गोया मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दावत फ़रमा दी।

हिफ़्ज़े हदीस की बरकत तो देखिए

हमारे एक ताल्लुक़ वाले दोस्त हैं। वह अल्लाह का शुक्र है हाफ़िज़ हदीस भी हैं। एक बार अपने असबाक़ और अपनी कैफ़ियात

के बारे में बैठे बता रहे थे। मैंने उनसे पूछा कि आप बुख़ारी शरीफ़ के हाफ़िज़ हैं। क्या आपने उन अहादीसे मुबारका की बरकात का भी मुशाहिदा किया है? वह फ़रमाने लगे हज़रत! मैं इस बात पर हैरान हूं कि हिफ़्ज़ हदीस के बाद मेरे ऊपर अल्लाह का ऐसा फ़ज़्ल हुआ कि मेरा कोई हफ़्ता भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत से ख़ाली नहीं गुज़रता। कम से कम एक बार और कभी-कभी एक से ज़्यादा बार मुझे नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ज़ियारत होती रहती है। अल्लाह का शुक्र कि आज भी वह इस वक़्त दुनिया में ज़िन्दा हैं। हदीसे पाक की मुहब्बत ने उन्हें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ऐसा क़ुर्ब अता कर दिया कि उन्हें हर हफ़्ते में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत होती रहती है, सुब्हानअल्लाह।

रिसाला शातबिया का फ़ैज़ इतना आम क्यों?

अल्लाम शातबी रह० ने जब रिसाला "शातबिया" लिखा तो हरम शरीफ़ में हाज़िर हुए और वहाँ पर उन्होंने बारह हज़ार मर्तबा तवाफ़ किया और हर तवाफ़ के बाद दो रक्अत नमाज़ पढ़कर दुआ मांगी कि ऐ अल्लाह! इस किताब को क़ुबूलियते आम्मा नसीब फ़रमा। अल्लाह तआला ने इस किताब को इतनी मक्बूलियत नसीब फ़रमाई कि आज उस वक़्त तक कोई क़ारी नहीं बन सकता जब तक कि वह इस किताब को न पढ़ ले। मालूम हुआ कि वे हज़रात सिर्फ़ लिखते ही नहीं थे बल्कि वे मांगते भी थे। फ़ैज़ का आगे जारी हो जाना क़ुदरत की तरफ़ से होता है और उसके पीछे इंसान का तक़्वा होता है।

आसिफ़ बरख़िया के इल्म, अमल और इख़्लास का रंग

देखिए दुनिया के अंदर भी इंसान ऐसे काम कर दिखाता है जो

जिन्न नहीं कर पाते, पढ़िए क़ुरआन पाक कि जब मलिका बिलक़ीस का तख़्त मंगवाना था तो हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने अपनी पार्लियामेंट के मिंबरों को कहा था, ﴿يا ايها الملا﴾ ऐ मेरे अमीरो! मुशीरो! वज़ीरो! ﴿ايكم ياتينى بعرشها قبل ان ياتونى مسلمين.﴾ तुम में से कौन है जो मलिका बिल्क़ीस का तख़्त मुझ तक ले आए इससे पहले कि बिलक़ीस मुझ तक आ पहुँचे। ﴿قال عفريت من الجن﴾ जिन्नों में इफ़रीत ने कहा (इफ़रीत कहते हैं बड़े जिन्न को) ﴿انا آتيك به قبل ان تقوم مقامك.﴾ मैं उसे आपके पास ला सकता हूँ इससे पहले कि आप अपनी जगह से खड़े हों। आपने फ़रमाया कि यह तो बड़ी देर है कि मज्लिस ख़त्म होने से पहले लाओगे। मुझे इससे पहले चाहिए। अब वहाँ पर जिन्न भी बेबस हो गए। अल्लाह का एक बंदा आसिफ़ बरख़िया उस वक़्त खड़ा होता है, कहता है ﴿انا آتيك به قبل ان يرتد اليك طرفك﴾ मैं ला सकता हूँ इससे पहले कि आप अपनी पलक झपकें, भला यह कौन था? क़ुरआन में इसके बारे में फ़रमाया ﴿قال الذى عنده علم من الكتاب﴾ कहा उसने जिसके पास किताब का इल्म था, सुब्हानअल्लाह। जहाँ इफ़रीत भी कोई काम करने से बेबस हो जाते हैं वहाँ एक अहले इल्म खड़ा होता है।

﴿قال الذى عنده علم من الكتاب انا آتيك به قبل ان يرتد اليك طرفك.﴾

जब उन्होंने पलक झपक कर देखा,

﴿فلما راه مستقرا عنده قال هذا من فضل ربى﴾

फ़रमाया यह तो मेरे रब का फ़ज़्ल है। इसलिए इल्म, अमल और इख़्लास जब तीन चीज़ें इकट्ठी हो जाएं तो फिर यह क़ुव्वत और ताक़त बन जाया करती है। फिर ईमानी क़ुव्वत और ताक़त इंसान को दुनिया और आख़िरत की इज़्ज़तें दिया करती है।

फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु के इल्म व इख़्लास का बेपाया फ़ैज़

सैय्यदना उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के पास इल्म, अमल और इख़्लास से मिलने वाली क़ुव्वत और ताक़त मौजूद थी और इस क़ुव्वत और ताक़त की वजह से अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने दुनिया के हाकिमों और बादशाहों के ताज उनके क़दमों में लाकर डाल दिए। फ़क़ीराना ज़िंदगी थी लेकिन वक़्त के बड़े बड़े सुपर पावर वाले बादशाह क़ैसर व किसरा भी थर्राया करते थे, नाम सुनकर कांपते थे, लरज़ते थे। इसलिए कि उनके पास इल्म, अमल और इख़्लास की क़ुव्वत मौजूद थी।

एक वार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु मिंबर पर खड़े हैं और उस वक़्त कह रहे हैं ﴿يا سارية الجبل﴾ ऐ सारिया! पहाड़ की तरफ़ से ध्यान रखना। हवा उनके पैग़ाम को ज़बान से लेकर अमीरे लश्कर तक पहुँचा देती है। यह उनका हवा पर हुक्म चल रहा है।

किताबों में लिखा है कि एक बार मदीना में ज़लज़ला आया। सैयदना उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने ज़मीन पर ऐड़ी मारी। फ़रमाया, "ऐ ज़मीन! क्यों हिलती है? क्या उमर ने तेरे ऊपर अदल क़ायम नहीं किया?" जमीन का लरज़ा उसी वक़्त रुक जाता है।

इमाम ग़ज़ाली रह० से सवाल : पढ़ते क्यों हो?

इमाम ग़ज़ाली रह० ने पढ़ने के ज़माने में ही ख़्वाजा बू अली फ़ारमदी रह० से तर्बियत पाई। उनकी तर्बियत पर रोशनी डालने के लिए उनके पढ़ने के ज़माने का एक वाक़िआ सुनाता हूँ। जिस मदरसे में इमाम ग़ज़ाली रह० पढ़ते थे। वह मदरसा वक़्त के बादशाह निज़ामुल मलिक तूसी ने बनवाया था। मदरसे के हालात के बारे में

बादशाह को इत्तिला दी गई कि जनाब! आपने जो मदरसा बनवाया था, वहाँ पर तलबा तो सब दुनियादार हैं, दीन सीखने वाला कोई भी नहीं। बादशाह ने कहा अच्छा! मैं इतना पैसा ख़र्च कर रहा हूँ और अगर तलबा वहाँ किताबें पढ़कर भी दुनियादार बनेंगे तो क्या फ़ायदा, इस मदरसे को बंद ही कर दिया जाए मगर दिल में ख़्याल आया कि मैं वहाँ जाकर हालात तो देखूं।

जब बादशाह अपना भेस बदलकर वहाँ पहुँचा तो उसने एक तालिब इल्म से पूछा कि भाई! आप यहाँ कैसे आए? कहने लगा, मैं इल्म पढ़ रहा हूँ, मेरे वालिद फ़लां जगह मुफ़्ती हैं। मैं मुफ़्ती बनूंगा, लोगों में इज़्ज़त हुआ करेगी। दूसरे से पूछा तो उसने कहा कि मेरे वालिद फ़ला जगह क़ाज़ी हैं। मैं बड़ा होकर उनका ओहदा संभालूंगा। तीसरे से पूछा तो उसने कहा, वक़्त का बादशाह उलमा की बड़ी क़द्र करता है। मैं आलिम बनूंगा और बादशाह का मुसाहिब बनूंगा। ये सब बातें सुनकर बादशाह ने सोचा कि वाक़ई ये तो सब के सब दुनियादार हैं, मुझे इतने पैसे ख़र्च करने का क्या फ़ायदा? यह इरादा लेकर जब बाहर निकलने लगा तो दरवाज़े के क़रीब उसने देखा कि एक तालिब इल्म चिराग़ जलाए पढ़ रहा है। उसने सोचा कि चलो इससे भी बात करता चलूं। लिहाज़ा बादशाह क़रीब हुआ और कहा, अस्सलामु अलैकुम। तालिब इल्म ने कहा, वअलैकुम अस्सलाम और फिर पढ़ना शुरु कर दिया। बादशाह ने कहा, क्या बात है, आप मुझसे कोई बात ही नहीं करते। तालिब इल्म ने कहा, जी हाँ! मैं आपसे यहाँ बातें करने तो नहीं आया। बादशाह ने पूछा भई! आप किस लिए आए हैं? तालिब इल्म ने जवाब दिया, मैं यहाँ इसलिए आया हूँ कि मैं अपने परवरदिगार को राज़ी करूं, मुझे नहीं पता कि मैं उसे कैसे राज़ी कर सकता हूँ। ये बातें इन किताबों में लिखी हुई हैं। मैं ये किताबें पढूंगा, इन बातों को समझकर उन पर अमल करूंगा

और अपने परवरदिगार को राज़ी करूंगा। यह बच्चा बड़ा हुआ तो अपने वक़्त का इमाम ग़ज़ाली बना। यह शेख़ की सोहबत थी जिसने बचपन से ही उनके दिल में यह जज़्बा भर दिया कि दीन पढ़ने का मक़सद अल्लाह तआला की रज़ा होती है।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 3/201)

अच्छी नीयत से किताबें देखिए

किसी आदमी ने हज़रत मौलाना क़ासिम साहब नानौतवी रह० से सवाल पूछा, हज़रत! दीन की जो किताबें आपने पढ़ीं वही किताबें आपके दूसरे साथियों ने भी पढ़ीं लेकिन अल्लाह तआला ने जो मर्तबा आपको दिया है वह किसी और को नहीं दिया, इसकी क्या वजह है? हज़रत मौलाना क़ासिम साहब नानौतवी रह० ने अजीब जवाब दिया कि मेरे साथियों ने क़ुरआन मजीद इस नीयत से पढ़ा कि हम मआरिफ़ क़ुरआन को जान लें और हक़ाएक़ क़ुरआन मजीद से वाक़िफ़ हो जाएं। इसलिए वे हक़ाइक़ तो मिल गए मगर वह नेमत न मिली जो अल्लाह तआला ने मुझे अता कर दी। उसने पूछा, हज़रत! यह नेमत आपको कैसे मिली? फ़रमाने लगे कि मैंने जब भी क़ुरआन को पढ़ा हमेशा इस नीयत से पढ़ा कि ऐ अल्लाह! तेरा ग़ुलाम हाज़िर है, तेरा हुक्म जानना चाहता है, जिसको यह अपनी ज़िंदगी में ले आए, सुब्हानअल्लाह। यही चीज़ सहाबा किराम में थी। सैय्यदना सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने ढाई साल के अंदर सूरः बक़रः मुकम्मल की हालाँकि अरबी ज़बान तो उनकी मादरी ज़बान थी, इसलिए उनको तो सर्फ़ व नह्व की कोई ज़रूरत ही नहीं थी फिर ढाई साल कैसे लगे? मालूम हुआ कि वे हज़रात! एक-एक आयत पढ़ते थे और उन पर अमल करते थे। इधर उनकी सूरत मुकम्मल होती थी और उधर उनका अमल उस सूरत पर मुकम्मल होता था।

एक डॉक्टर को दुआ याद न होने पर हसरत

एक पीएचडी डॉक्टर साहब के वालिद का इंतिक़ाल हुआ तो उन्होंने एक आलिमे दीन से कहा कि आपने जनाज़ा पढ़ाना है। जनाज़े के बाद उस पीएचडी डाक्टर ने ज़ार व क़तार रोना शुरू कर दिया। लोगों ने उसे तसल्ली दी कि इस तरह का सदमा हर आदमी को पेश आता है। इसलिए आपको भी सब्र करना चाहिए। मगर वह मुसलसल रोता रहा। आख़िर आलिमे दीन ने उससे आगे बढ़कर पूछा कि आख़िर क्या वजह है कि आप इतना रो रहे हैं। तो उसने कहा कि मैं इस बात पर नहीं रो रहा हूँ कि वालिद फ़ौत हो गए, हर एक को दुनिया से जाना है। मैं तो इस बात पर रो रहा हूँ कि मेरे इस वालिद ने मुझे इतनी दुनियावी तालीम दिलवाई कि मैं पीएचडी डाक्टर बन गया मगर मुझे दीन से इतना दूर रखा कि मेरे वालिद की मैय्यत मेरे सामने पड़ी थी और मुझे नमाज़े जनाज़ा भी नहीं आती थी।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 3/175)

मस्जिद के मीनारें या रॉकेट लान्चर

एक साहब लाहौर के रहने वाले थे। वह अमरीका गए। वहाँ से लौटकर कई सालों के बाद वापस आए। उनके बच्चे वहीं पले, बढ़े। वह अपने बच्चों को लाहौर में गाड़ी में लेकर जा रहे थे। जब हज़रत अली हिजवेरी रह० के मज़ार के सामने से गुज़रने लगे तो मस्जिद के बड़े-बड़े सुतून नज़र आए। वे बच्चे इस्लाम से इतने अंजाने थे कि उन मीनारों को देखकर कहने लगे,

Dad! why these Rocket Lonchers have been fitted right in the center of the city?

अब्बा जान! शहर के बिल्कुल दर्मियान में ये राकेट लांचर क्यों

फ़िट कर दिए गए हैं? यह वहाँ पर मुसलमानों की औलादों का मामला था।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 5/103)

राहे इल्म में धोका कैसा

एक मुहद्दिस दूर दराज़ का सफ़र करके किसी दूसरे मुहद्दिस के पाए गए। वह घोड़ा पकड़ रहे थे मगर कपड़े में या किसी बर्तन में कुछ कंकर डालकर घोड़े को इशारा किया कि घोड़े ने समझा कि दाना है। वह आ गया तो उस शख़्स ने पकड़ लिया। मेहमान मुहद्दिस ने जब यह देखा तो हदीस की रिवायत लिए बग़ैर वापस हो गए। किसी ने पूछा, हदीस क्यों न ली? फ़रमाया जो बंदा हैवान को धोका दे सकता है वह बंदा हदीस के बयान करने में भी धोका दही से काम ले सकता है, सुब्हानअल्लाह!

इल्मी ग़ैरत और सवाल करने से परहेज़ पर नुसरत

तालिब इल्मी के रास्ते में हमारे अकाबिरीन को मुजाहिदे भी करने पड़े। उस वक़्त की मुशक़्क़तें उठानी पड़ीं। यह हर्गिज़ नहीं था कि उनको सहूलतें मैयस्सर थीं। मिसाल के तौर पर सुफ़ियान सौरी रह० अपने दो साथियों के साथ पढ़ने के लिए एक मुहद्दिस की ख़िदमत में पहुँचे। फ़रमाते हैं कि हम तीनों के लिए गुज़र अवक़ात के लिए सत्तू वग़ैरह थे। हम उसी को थोड़ा थोड़ा करके इस्तेमाल करते रहे। हमारे सबक़ पूरा होने में अभी तीन दिन बाक़ी थे कि हमारे पास खाने की चीज़ें ख़त्म हो गयीं। हमने आपस में मश्वरा किया कि भई दो आदमी तो उस्ताद दर्स सुनने के लिए जाया करें और तीसरा मज़दूरी वग़ैरह करके खाने का बंदोबस्त करे ताकि बक़िया दिनों के लिए खाने का कुछ इंतिज़ाम हो जाए। एक एक दिन सबको काम करना पड़ेगा और यूँ तीन दिन गुज़र जाएंगे। फ़रमाते हैं कि बाक़ी दो तो दर्स सुनने

के लिए चले गए और जिस आदमी को पहले दिन मज़दूरी करना थी, वह मस्जिद में चला गया। सोचने लगा कि मख़्लूक़ की मज़दूरी करके मुझे क्या मिलेगा? क्यों न अपने मालिक की मज़दूरी कर लूँ, वास्ते से लेने के बजाए बिना वास्ता क्यों न हासिल करूं। लिहाज़ा उन्होंने नफ़लें पढ़नी शुरू कर दीं। वे नफ़लें पढ़ते रहे, दुआएं मांगते रहे। वह सारा दिन मस्जिद में गुज़ारकर शाम को वापस आ गए। बाक़ी दोस्तों ने पूछा, बताओ भई! कुछ इंतिज़ाम हुआ? कहने लगे जनाब! मैंने सारा दिन एक ऐसे मालिक की मज़दूरी की है जो पूरा पूरा हिसाब चुकाता है। इसलिए वह दे देगा। वे मुतमइन हो गए दूसरे दिन दूसरे की बारी थी। अपनी सोच के तहत उन्होंने भी यही रास्ता अपनाया। वह भी मस्जिद में सारा दिन अल्लाह की इबादत करते रहे और अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से दुआएं मांगते रहे। शाम को दोस्तों ने पूछा, सुनाएं! कोई इंतिज़ाम हुआ? कहने लगे कि मैंने एक ऐसे मालिक की मज़दूरी की है जो किसी का क़र्ज़ नहीं रहने देता बल्कि पूरा पूरा अदा कर देता है और उसका वादा है कि तुम्हारा अज्र मिलकर रहेगा। तीसरे दिन तीसरे ने भी यही अमल किया। अल्लाह की शान कि तीसरे दिन के बाद हाकिमे वक़्त रात को सोया हुआ था। उसने ख़्वाब में एक बहुत बड़ी बला देखी और उस बला ने अपना पंजा उसे मारने के लिए उठाया और कहा, सुफ़ियान सौरी रह० और उनके साथियों का ख़्याल करो। यह मंज़र देखते ही उसकी आँख खुल गई। उसने हर तरफ़ आदमी दौड़ा दिए और कहा कि पता करो सुफ़ियान कौन है? उसने हर एक को दिरहम व दीनार से भरी हुई थैलियाँ भी दे दीं और कहा ये तो इसी वक़्त उनको दे देना और बाद में जब मुझे इत्तिला करोगे तो मैं ख़ज़ाने का मुंह खोल दूंगा। इधर तालीम का दिन पूरा हुआ उधर पुलिस तलाश करते करते मस्जिद में पहुँची। पुलिस वालों ने पूछा यहाँ सुफ़ियान नामी कोई आदमी है? उन्होंने कहा कि

वक़्त के हाकिम को यह ख़्वाब आया है और उसने हमें भेजा है। सुफ़ियान सौरी रह० और उनके साथियों ने आपस में मशवरा किया कि अब दो दरवाज़े हैं, एक मालिक का दरवाज़ा और एक हाकिमे वक़्त का दरवाज़ा। हमने जो इल्म पढ़ा है उसमें तो यही सीखा है कि हमको मालिक से लेना है। लिहाज़ा हमारी इल्मी ग़ैरत गवारा नहीं करती कि हम चलकर हाकिमे वक़्त के दरवाज़े पर जाएं। अल्लाहु अकबर! तीन दिन के भूखे थे मगर हाकिम वक़्त के पास जाना गवारा न किया बल्कि उसी हालत में उन्होंने वापस अपने वतन का सफ़र मुकम्मल किया। जिनकी नज़र अल्लाह की ज़ात पर रहती है उनके साथ अल्लाह की मदद नाज़िल होती है।

इल्म दोस्त की नज़र ज़ाते ख़ुदा पर न कि वज़ीफ़े पर

बहावलपुर में एक नवाब साहब ने एक मदरसा बनवाया। उसने मुक़ामी उलमा से कहा कि इमारत तो मैं बनवा देता हूँ मगर आबाद कैसे होगी? उलमा ने कहा कि आपको ऐसी हस्ती के बारे में बताएंगे, आप उन्हें ले आना मदरसा चल जाएगा। उसने कहा हीरा तुम ढूंढना, क़ीमत हम लगा देंगे। नवाब साहब को बड़ा नाज़ था पैसे का। लिहाज़ा जब इमारत बन गई तो उसने उलमा से पूछा बताओ कौनसा हीरा ढूंढा है? कहने लगे, (मौलना) क़ासिम नानौतवी रह०। उसने उलमा से पूछा कि हज़रत की तंख़्वाह कितनी होगी? उन्होंने कहा हज़रत की तंख़्वाह चार पाँच रुपए होगी। उस दौर में इतनी ही तंख़्वाह होती थी। कहने लगा, जाओ और मेरी तरफ़ से हज़रत को सौ रुपए माहाना का पैग़ाम दे दो। अब जिस आदमी को पाँच रुपए के बजाए सौ रुपए मिलना शुरू हो जाएं तो कितना फ़र्क़ है। लिहाज़ा उलमा बड़े ख़ुश हुए कि जी हाँ, अब तो हज़रत ज़रूर आ जाएंगे। देवबंद जाकर हज़रत से मिले। हज़रत ने उनकी ख़ूब ख़ातिर तवाज़ो

फ़रमाई। पूछा कैसे आना हुआ? कहने लगे हज़रत! नया मदरसा बन गया है। आप वहाँ तशरीफ़ लाएं, नवाब साहब ने आपके लिए सौ रुपए माहाना तंख़्वाह मुक़र्रर किया है। हज़रत रह० ने फ़रमाया : "बात यह है कि मेरी तंख़्वाह तो पाँच रुपए है। उसमें तीन रुपए मेरे ज़ाती ख़र्चे के हैं और दो रुपए मैं ग़रीबों, मिस्कीनों, यतीमों में ख़र्च करता हूँ। अगर मैं वहाँ चला गया और सौ रुपए तंख़्वाह हो गई तो मेरा ख़र्चा तो तीन रुपए रहेगा और बाक़ी सत्तानवें रुपए ग़रीबों में बांटने के लिए मुझे सारा दिन उनको ढूंढना पड़ेगा और मैं पढ़ा तो नहीं सकूंगा। लिहाज़ा मैं वहाँ नहीं जा सकता।" ऐसी दलील दी कि उन उलमा की ज़बाने बंद हो गयीं। इसे ज़ोहद फ़िद्दुनिया कहते हैं, अल्लाहु अकबर कबीरा।

हज़रत थानवी रह० की दस्तारे फ़ज़ीलत पर माज़रत

हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह० ने तालिब इल्मी के में दौराए हदीस मुकम्मल किया तो मोहतमिम साहब ने जलसे के लिए इंतिज़ामात किए कि दस्तारबंदी करवाते हैं। हज़रत थानवी रह० अपने साथ पाँच सात शार्गिदों को लेकर हज़रत शेख़ुल हिंद रह० की ख़िदमत में गए और वहाँ जाकर कहने लगे कि हज़रत! हमने सुना है कि मदरसे वाले तलबा की दस्तारबंदी के लिए इंतिज़ाम कर रहे हैं। हज़रत ने फ़रमाया : "हाँ।" कहने लगे, हज़रत हमारी गुज़ारिश यह है कि हमारी दस्तारबंदी न करवाई जाए। ऐसा न हो कि लोग हमें देखकर ऐतिराज़ करें कि ऐसे नालायक़ तलबा की दस्तारबंदी करा दी गई, कहीं मदरसे की बदनामी न हो। हज़रत शेख़ुल हिंद रह० जलाल में आकर फ़रमाने लगे, अज़ीज़म! आप अपने उस्तादों के दर्मियान रहते हैं, इसलिए अपने आपको कुछ नहीं पाते, जब हम नहीं होंगे तो फिर तुम ही तुम होगे।

यह दारुलउलूम का तालिब इल्म नहीं

दारुलउलूम देवबंद के इब्तिदाई ज़िम्मेदारों में हज़रत शाह रफ़ीउद्दीन साहब रह० थे। वह एक सूफ़ी और ज़ाकिर शाग़िल बुज़ुर्ग थे। जब उन्होंने ज़िम्मेदारी संभाली तो एक दिन वह दारुलउलूम के कुँए पर वुज़ू करने के लिए तशरीफ़ ले गए। उस वक़्त एक तालिब इल्म उनके पास आया। उसके पास प्याले में पतली सी दाल थी। उसने वह प्याला हज़रत को दिखाया और कहा, देखिए जी! आपकी निगरानी में दारुलउलूम में ऐसा सालन पक रहा है जिससे वुज़ू भी जाएज़ हो जाए। यह कहने के बाद प्याला उसके हाथ से गिरा और उलट गया।

वह लड़का तो भाग गया लेकिन जब उस्तादों को इत्तिला मिली तो उस पर बहुत ज़्यादा शर्मिन्दा हुए। कि एक तालिब इल्म को यह हिम्मत कैसे हुई कि उसने नाज़िम साहब के सामने ऐसी हरकत की। उस्ताद उनकी बुज़ुर्गी से वाक़िफ़ थे। लिहाज़ा वे आए और कहने लगे हज़रत! आप महसूस न करें, नादिम व शर्मिन्दा हैं कि एक तालिब इल्म ने ऐसा किया है। हज़रत ने फ़रमाया : "नहीं, नहीं वह तो तालिब इल्म ही नहीं है।" अब उस्ताद कहते हैं कि वह तालिब इल्म है और हज़रत फ़रमाते हैं कि वह तालिब इल्म नहीं है। किसी ने कहा कि रसोईघर से पता कर लो। वहाँ उसका नाम होगा। जब वहाँ से पता किया गया तो वाक़ई वहाँ भी उसका नाम था और वहाँ से बाक़ायदा खाना लिया करता था। यह मालूम करके वे फिर हज़रत के पास आए और कहने लगे, हज़रत! वह तालिब इल्म ही है, उसका नाम रसोईघर में भी लिखा हुआ है। फ़रमाने लगे नहीं, वह तालिब इल्म नहीं है। फिर किसी ने कहा क्लास के उस्ताद से पता कर लें। जब उस्ताद से पता चला तो उसका नाम तो वहाँ भी था मगर वह

लड़का पढ़ने नहीं आता था बल्कि किसी तालिब इल्म से राब्ता था और वह तालिब इल्म उसकी हाज़िरी लगवा देता था। वह सिर्फ़ खाना खाने के लिए रसोई में आता था और खाना खाकर वापस चला जाता।

जब उस्तादों को हकीकत का पता चला तो वे सोच में पड़ गए कि शाह साहब तो कभी-कभी आते हैं और हम हर वक्त यहाँ होते हैं। हमें तो उसकी पहचान न हुई और शाह साहब ने उसे पहचान लिया। वे और ज़्यादा शर्मिन्दगी महसूस करने लगे। लिहाज़ा उन्होंने हज़रत से माफ़ी मांगी और अर्ज़ किया, हज़रत! हमें यह समझ में नहीं आई कि आप तो तलबा से इतना ताल्लुक़ भी नहीं रखते फिर आपको कैसे पता चला कि वह तालिब इल्म है या नहीं? इस पर उन्होंने जवाब दिया : "जब मैं यहाँ का निगरां बना तो एक दफ़ा मैंने ख़्वाब में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा कि आप इसी कुँए के ऊपर खड़े हैं। और आपके हाथों में पानी का डोल है, तालिब इल्म लाइन बनाकर आपकी ख़िदमत में हाज़िर होते हैं और आप सबके डोल में पानी भरते जाते हैं। मैंने उस वक्त मौजूद तमाम तलबा को देखा लेकिन उसकी शक्ल नहीं देखी थी। इस तरह मैं पहचान गया कि वह दारुलउलूम का तालिब इल्म नहीं है।"

हज़रत इमाम शाफ़ई रह० के इल्मी कमालात

उलमाए किराम में कुछ ने बहुत की कम उम्री में इल्म के जाम पिए। हज़रत इमाम शाफ़ई रह० के हालाते ज़िंदगी में लिखा है कि इमाम शाफ़ई रह० तेरह साल की उम्र में इमाम शाफ़ई बन चुके थे। इस उम्र में उन्होंने दर्स क़ुरआन देना शुरू कर दिया था। यह वह वक्त था जब सफ़ेद बालों वाले बड़े बड़े मशाइख़ उनके हलकाए दर्स

में बैठा करते थे। एक दफ़ा दर्स क़ुरआन दे रहे थे। उसी दौरान दो चिड़ियाँ लड़ती हुई उनके क़रीब आकर गिरीं। यह कम उम्र तो थे ही, इन्होंने अपना अमामा उतारा और उन चिड़ियों के ऊपर रख दिया। अब दर्से क़ुरआन के दर्मियान जो यह काम किया तो जो मशाइख़ बैठे थे उन्होंने इस चीज़ को महसूस किया कि यह अदब के ख़िलाफ़ है। लिहाज़ा उन्होंने अमामा अपने सर पर रख लिया और फ़रमाया ﴿الصبی صبی ولو كان ابن نبی﴾ कि बच्चा तो बच्चा ही होता है चाहे किसी नबी का बेटा ही क्यों न हो। फिर उन मशाइख़ की तसल्ली हुई कि हाँ कम उम्री की वजह से ऐसी बातें हो सकती हैं।

❁ ❁ ❁

بسم اللہ الرحمن الرحیم

शौक़े इल्म

और

ज़ौक़े मुताला

بنی آدم از علم یابد کمال

نہ از حشمت و جاہ و مال و منال

बनी आदम अज़ इल्म या बद कमाल

न अज़ हशमत ओ जाह ओ जमाल ओ मनाल

शौक़े इल्म और ज़ौक़े मुताला

दो पैग़म्बरों का सवाल उधर से अजीब जवाब

आपके सामने एक इल्मी बात पेश करता हूँ जो उलमा और तलबा के लिए बहुत मज़े की बात होगी। अल्लाह तआला के दो पैग़ंबर ऐसे हैं जिनका क़ुरआन मजीद में भी तज़्किरा है और उन दोनों ने मुर्दों के ज़िंदा होने का सवाल किया मगर सवाल का अंदाज़ अलग था। एक हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम थे। उन्होंने जब मुर्दों को देखा तो उस वक़्त अल्लाह तआला से पूछा कि ऐ परवरदिगार ﴿انى يحى هذه الله بعد موتها﴾ अल्लाह इसको किस तरह ज़िंदा करेगा मरने के बाद? उन्होंने पूछा मगर इसके जवाब में अल्लाह तआला ने उन्हीं को मौत दे दी और एक सौ साल तक उसी हालत में रहे। इसके बाद अल्लाह तआला ने उनको ज़िंदा फ़रमा दिया।

दूसरे हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम थे। उन्होंने भी मुर्दों के ज़िंदा होने के बारे में सवाल किया। उनके सवाल पूछने का अंदाज़ यह था कि ﴿كيف تحى الموتى﴾ ऐ अल्लाह आप मुर्दों को कैसे ज़िंदा फ़रमाएंगे। "कैफ़ा" के लफ़्ज़ में सवालिया बात हैं। इसमें कोई ताज्जुब ज़ाहिर नहीं होता कि जी इनको कैसे ज़िंदा करेंगे बल्कि सिर्फ़ एक सवाल पूछा। इसीलिए जब पूछा ﴿اولم تؤمن﴾ क्या आप इस बात पर ईमान नहीं लाए तो जवाब में फ़ौरन अर्ज़ किया ﴿قال بلى﴾ ऐ अल्लाह! मानता हूँ, ईमान है ﴿ولكن ليطمئن قلبى﴾ मैंने तो अपने दिल के इत्मिनान के लिए सवाल किया है। क्योंकि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने कैफ़ा के लफ़्ज़ के साथ सवाल पूछा इसलिए परवरदिगार आलम ने किसी ग़ैर पर मौत को तारी किया और फिर

उसको ज़िंदा करके उनके सामने मौजिज़ा दिखा दिया। जबकि हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम ने सवाल पूछते हुए ताज्जुब के साथ पूछा जैसे इस बात पर यह बड़े हैरान हो रहे हों कि ﴿انی یحی هذه الله بعد موتها﴾। क्योंकि ताज्जुब पाया जाता था इसलिए परवरदिगार ने ग़ैर पर मौत तारी करने के बजाए उन्हीं पर मौत तारी कर दी और सौ साल तक आराम से सुला दिया। फिर ज़िंदा करके पूछा, ऐ मेरे पैग़ंबर अब बताइए।

इस सारी तफ़्सील का हासिल यह निकला कि एक लफ़्ज़ की तब्दीली से दोनों के साथ मामला अलैहिदा अलैहिदा हुआ। इससे मालूम हुआ कि बंदा अल्लाह तआला के साथ जैसा गुमान करेगा परवरदिगार उसके साथ वैसा ही मामला करेगा। लेकिन हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने भी क्योंकि सवाल तो पूछा था इसलिए सवाल पूछने की कोई क़ीमत तो देनी पड़नी थी क्योंकि बाक़ी अंबिया अलैहिमुस्सलाम भी तो थे जिन्होंने सवाल ही नहीं पूछा था। इसलिए तमाम अंबिया में से अल्लाह तआला ने किसी से वह क़ुर्बानी न मांगी जो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से मांगी। गोया अल्लाह तआला ने फ़रमाया ऐ प्यारे ख़लील! मैंने मुर्दों को ज़िंदा तो करके आपके सवाल का जवाब दे दिया लेकिन क्योंकि सवाल पूछा था इसलिए इसकी क़ीमत भी देते जाइए। अब आपको अपने हाथों से अपने बेटे को शहीद करके दिखाना पड़ेगा। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 7/145)

इमाम मुस्लिम रह० का मुताले में ध्यान

इमाम मुस्लिम रह० का मशहूर वाक़िआ है कि एक बार वह कोई हदीस पाक तलाश कर रहे थे। उस वक़्त उन्हें भूख लगी हुई थी, साथ ही खजूरों की एक थैली पड़ी हुई थी। लिहाज़ा उन्होंने एक खजूर मुँह में डाल ली और किताब का मुताला करने में मसरूफ़ हो

गए। उस वक़्त मुताले में इस क़द्र ध्यान की कैफ़ियत थी कि पता ही न रहा कि मैं कितनी खजूरें खा चुका हूँ। जब खाते खाते ज़्यादा खा लीं तो उसकी वजह से बीमार हो गए और आख़िर अल्लाह तआला के हुज़ूर पहुँच गए। उनको इल्म में इतना इस्तिग़राक़ नसीब हुआ था कि उन्हें आसपास की ख़बर ही नहीं होती थी।

अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० की इल्मी मज्लिस का रंग

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० के पास हदीस का इल्म सीखने के लिए इतना बड़ा मजमा होता था कि एक दफ़ा दवातों की तादाद को गिना गया तो चालीस हज़ार निकलीं। उस दौर में लाउडस्पीकर तो होते नहीं थे। वह हदीस सुनाते तो कुछ लोग नमाज़ के मुकब्बिर की तरह उनके अलफ़ाज़ को ऊँची जगह से ऊँचे अलफ़ाज़ के साथ दोहरा देते ताकि पूरे मजमे तक आवाज़ पहुँच जाए। उन मुकब्बिर हज़रात की तादाद बारह सौ हुआ करती थी। पूरा मजमा कितना बड़ा होगा। इतने बड़े बड़े मजमे के अंदर बैठकर हदीस का इल्म पढ़ाया।

इसको कहते हैं शौक़े इल्म

इमाम मुहम्मद रह० एक जगह दर्स दे रहे थे। वहाँ कुछ मील के फ़ासले पर एक बस्ती थी। वहाँ से भी लोग उनके पास हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि हज़रत! आप हमारे हाँ भी दर्स दिया करें। उन्होंने फ़रमाया : मेरे पास वक़्त बहुत कम होता है। उन्होंने कहा, हज़रत! हम एक सवारी का बंदोबस्त कर देते हैं, आप दर्स देते ही उस सवारी पर सवार हों और हमारी बस्ती में आएं और वहाँ दर्स देकर जल्दी वापस आ जाएं। इस तरह पैदल आने जाने में जो वक़्त लगेगा वही दर्स में लग जाएगा। आपने क़ुबूल फ़रमाया लिया। जब

आपने यह दर्स देना शुरू किया तो ये वे दिन थे जब इमाम शाफ़ई रह० उनकी ख़िदमत में पहुँचे हुए थे। उन्होंने भी अपनी दरख़्वास्त पेश करते हुए कहा, हज़रत! मुझे आपसे यह किताब पढ़नी है। हज़रत ने फ़रमाया, भई अब वक़्त कैसे फ़ारिग़ करेंगे? अब मुझे यहाँ भी दर्स देना होता है और वहाँ भी दर्स देना होता है। उन्होंने अर्ज़ किया, हज़रत जब यहाँ से दर्स देने के बाद सवारी पर बैठकर अगली बस्ती की तरफ़ जाएंगे तो आप सवारी पर बैठे-बैठे दर्स दे दें। मैं सवारी के साथ दौड़ता भी रहूँगा और आपसे इल्म भी सीखता रहूँगा। तारीख़े इंसानियत तलबे इल्म की इससे आला मिसाल पेश नहीं कर सकती। यह दीने इस्लाम का हुस्न व जमाल है।

शौक़े इल्म नींद उड़ा देता है

इमाम मुहम्मद रह० इमाम शाफ़ई रह० के उस्ताद बने हैं। इमाम शाफ़ई रह० फ़रमाते हैं कि मुझे इमाम मुहम्मद रह० के पास एक रात गुज़ारने का मौक़ा मिला। फ़रमाते हैं कि उन्होंने इशा के बाद चिराग़ के सामने किताब खोली और उसमें से कुछ पढ़ा। फिर चिराग़ बुझा दिया और लेट गए। थोड़ी देर के बाद उठे, चिराग़ जलाया फिर किताब देखी और फिर लेट गए, फिर थोड़ी देर के बाद उठे, चिराग़ जलाया किताब देखी फिर लेट गए। फ़रमाते हैं कि मैं सारी रात जागा और मैंने गिना कि उन्होंने एक रात में सत्रह बार उठकर चिराग़ जलाया। सत्रह बार का मतलब? अगर आठ घंटे की रात हो तो हर आध घंटे बाद चिराग़ जलाया, अब सोचिए कि वह सोए कहाँ? दरअसल वह चिराग़ बुझाते इसलिए थे कि फ़ालतू तेल न जले और फ़ुज़ूलख़र्ची न हो जाए। फिर जब वह लेटते थे तो नींद नहीं होती थी बल्कि ग़ौर व ख़ौस और तदब्बुर और फ़िक्र किया करते थे। फ़रमाते हैं कि जब सुबह उठे तो मैंने अर्ज़ किया, हज़रत! आप रात को सत्रह बार उठे

थे, आप कितना सोए? तो इमाम मुहम्मद रह० ने जवाब दिया कि मैं रात को सोया नहीं बल्कि मैंने एक हज़ार मसाइल के जवाब तलाश कर लिए, अल्लाहु अकबर।

इल्म हासिल करने की तेज़ रफ़्तार

हमारे सलफ़ सालिहीन ने अपनी ज़िंदगियों में इतनी मेहनत की कि आज आम लोग उन वाक़िआत को सुनकर हैरान रह जाते हैं। आप अंदाज़ा कर सकते हैं कि इमाम शाफ़ई रह० तेरह साल की उम्र में इमाम शाफ़ई बन चुके थे। तेरह साल की उम्र में क़ुरआन व हदीस के उलूम को हासिल कर चुके थे और दर्स क़ुरआन देना शुरू कर दिया था। यह उनकी मेहनत थी, यह उनका शौक़ था कि इतनी कम उम्री में उन्होंने इल्म के बड़े बड़े समुन्दर भी पार कर लिए थे।

इल्म का नशा मौत के वक़्त भी न उतर सका

जब इमाम यूसुफ़ रह० पर मौत की कैफ़ियत तारी थी। उस वक़्त उन्होंने एक शागिर्द से मस्अला पूछा, ﴿رمی جمار﴾ (शैतान को कंकरी मारना) ﴿راكبا﴾ (सवार) होकर अफ़ज़ल है या ﴿ماشيا﴾ (पैदल) अफ़ज़ल है? उसने कहा राकिबा। फ़रमाया, "ला।" उसने कहा, "माशिया।" आपने फ़रमाया, "ला।" फिर बताया कि राकिबा कब अफ़ज़ल है और माशिया कब अफ़ज़ल है। अभी यह मस्अला बता रहे थे कि इस दौरान उनकी वफ़ात हो गई।

उलमा ने लिखा है कि आख़िर उन्होंने यह मस्अला क्यों पूछा? उन्होंने इसका जवाब भी लिखा है कि मौत के आख़िरी लम्हात में शैतान बंदे के पास आता है। मुमकिन है उस वक़्त शैतान आया हो और इमाम साहब ने जैसे ही शैतान को देखा हो, उन्होंने उस वक़्त

रमी जमार का मस्अला छेड़ दिया और उसी रमी जमार के मस्अले के बीच अल्लाह तआला ने उनको शैतान से निजात अता फ़रमा दी।

हम वह राही हैं कि चलना ही है मसलक जिनका

हज़रत बायज़ीद बुस्तामी रह० के बारे में आता है कि जुनैद बग़दादी रह० का कौल है कि जिस तरह ज़िब्राईल अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों में जुदा शान अता फ़रमाई है इसी तरह बायज़ीद बुस्तामी रह० को अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने औलिया में जुदा शान अता फ़रमाई है और यह बात करने वाले भी जुनैद बग़दादी रह० हैं। यही बायज़ीद बुस्तामी रह० जब बचपन में यतीम हो गए, माँ ने उन्हें मदरसे में दाख़िल कर दिया। क़ारी साहब से कहा कि बच्चे को अपने पास रखना, ज़्यादा घर आने की आदत न पड़े। ऐसा न हो कि यह इल्म से महरूम हो जाए। लिहाज़ा ये कई दिन क़ारी साहब के पास रहे। एक दिन उदास हुए, दिल चाहा कि अम्मी से मिल आऊँ। क़ारी साहब से इजाज़त मांगी। उन्होंने शर्त लगा दी, तुम इतना सबक़ याद करके सुनाओ तब इजाज़त मिलेगी। सबक़ भी ज़्यादा बता दिया मगर बच्चा ज़हीन था। उसने जल्दी से वह सबक़ याद करके सुना दिया। इजाज़त मिल गई। यह अपने घर वापस् आए, दरवाज़े पर आकर दस्तक दी, माँ वुज़ू कर रही थी। वह पहचान गई, मेरे बेटे की तरह दस्तक मालूम होती है। लिहाज़ा दरवाज़े के करीब आकर पूछा, ﴿من دق الباب﴾ किसने दरवाज़ा खटखटाया? जवाब दिया बायज़ीद हूँ। तो माँ कहती है कि एक मेरा भी बायज़ीद था। मैंने उसे अल्लाह के लिए वक़्फ़ कर दिया, मदरसे में डाल दिया, तू कौन बायज़ीद है जो अब खड़ा दरवाज़ा खटखटा रहा है? तो जब उन्होंने ये अल्फ़ाज़ सुने तो समझ गए, अम्मी चाहती है कि मेरा दरवाज़ा न खटखटाए, अब बायज़ीद मदरसे में अल्लाह का दरवाज़ा खटखटाए

और उसी से ताल्लुक बनाए। लिहाज़ा वापस आए, मदरसे में रहे और उस वक़्त निकले जब आलिम बाअमल बन चुके थे और अल्लाह तआला ने उनको बायज़ीद बना दिया था।

इल्म के प्यासे जेल की सलाख़ों तक

हज़रत इब्ने तैमिया रह० के हालाते ज़िंदगी में लिखा है कि वक़्त के बादशाह ने उनसे कोई फ़तवा मांगा मगर उन्होंने फ़तवा न दिया। उसे गुस्सा आया और क़ैद करवा दिया। जब तीन दिन गुज़रे तो बादशाह अपने दरबार में बैठा था। उस वक़्त एक ऐसा नौजवान जिसकी उठती जवानी थी, उसके चेहरे पर नूरानियत और मासूमियत झलक रही थी। वह नौजवान ज़ार व क़तार रो रहा था। जिसने भी उसको देखा दिल पसीज गया और हर आदमी ने उम्मीद की बादशाह सलामत इस तालिब इल्म की मुराद ज़रूर पूरी करेंगे। जब बादशाह ने देखा तो उसने भी वादा कर लिया कि ऐ नौजवान! तू डर नहीं, तू क्यों इतना रो रहा है? तू जो भी कहेगा हम तेरी बात ज़रूर पूरी करेंगे। जब उसने यह वादा किया तो तालिब इल्म ने फ़रियाद पेश की कि बादशाह सलामत! आप मुझे क़ैदख़ाने में भेज दीजिए। बादशाह बड़ा हैरान हुआ कि क़ैदख़ाने में जाने के लिए तो कोई इस तरह नहीं रोता। उसने पूछा कि आप क़ैदख़ाने में जाने के लिए इतना क्यों रो रहे हैं। तालिब इल्म ने कहा : बादशाह सलामत! आपने मेरे उस्ताद को तीन दिन से क़ैदख़ाने में बंद कर रखा है जिसकी वजह से मेरा सबक़ क़ज़ा हो रहा है। अगर आप मुझे क़ैद में डाल देंगे तो मैं क़ैद व बंद की मशक़्क़तें तो बरदाश्त कर लूंगा मगर अपने उस्ताद से सबक़ तो पढ़ लिया करूंगा। यूँ पहले वक़्तों में शागिर्द अपने उस्ताद से इल्म हासिल किया करते थे। जबकि आज तो इल्म दोस्ती निकलती जा रही है। हमने टीवी को दोस्त बना लिया और बाक़ायदगी के साथ

उस पर तमाशे देखते हैं। और अल्लाह तआला के क़ुरआन को खोलकर बैठने की बहुत कम फ़ुर्सत मिलती है। कई घर ऐसे होते हैं कि जिनके अंदर क़ुरआन खोला ही नहीं जाता, इल्ला माशाअल्लाह।

इल्म के मतवाले ऐसे भी थे

शाह वलिउल्लाह मुहद्दिस देहलवी रह० की उम्र का आख़िरी ज़माना था। एक बार उनके बेटे शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब रह० दर्स क़ुरआन के दौरान पानी मांगा। एक तालिब इल्म भागकर उनके घर गया और कहा कि शाह साहब ने पानी मांगा है। जब शाह वलिउल्लाह मुहद्दिस देहलवी रह० ने सुना तो उन्होंने ठंडी सांस ली और कहने लगे, अफ़सोस! मेरे ख़ानदान से इल्म का नूर उठा लिया गया। बीवी ने कहा जी आप इतनी जल्दी फ़ैसला न करें, मैं अभी सूरतेहाल मालूम कर लेती हूँ। लिहाज़ा उन्होंने गिलास में पानी डाला और उसमें सिरका मिला दिया। सिरका कड़वा होता है और पीने में अजीब ज़ाएक़ा मालूम होता है। वह तालिब इल्म जब सिरका मिला हुआ पानी ले गया तो शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब रह० ने वह पानी लेकर पी लिया और दर्स क़ुरआन देते रहे। जब दर्से क़ुरआन से फ़ारिग़ होकर घर आए तो वालिदा ने पूछा, बेटा! तुमने पानी पी लिया था? अर्ज़ किया, जी हाँ पी लिया था। वालिदा ने पूछा, वह पानी कैसा था? अर्ज़ किया, अम्मी मुझे यह तो पता नहीं वह कैसा था? अब उन्होंने शाह वलिउल्लाह रह० से अर्ज़ किया देखिए कि अब्दुल अज़ीज़ को पानी की इतनी शदीद प्यास थी कि पानी में सिरके का पता नहीं चला। इससे मालूम हुआ कि उन्होंने बेअदबी की वजह से पानी नहीं पिया बल्कि अपनी ज़रूरत की वजह से पिया जो ऐन जाएज़ था वरना तो दर्स भी न दे पाते। इसलिए हमारे ख़ानदान से अभी अदब रुख़सत नहीं हुआ। यह सुनकर शाह वलिउल्लाह मुहद्दिस देहलवी रह०

ने इत्मिनान का सांस लिया और दुआ की, ऐ अल्लाह! मेरे ख़ानदान में इल्म व अदब को हमेशा बाक़ी रखना।

फ़तावा पढ़ते-पढ़ते अल्लाह को प्यारे हो गए

दारुलउलूम के एक मुफ़्ती के हालाते ज़िंदगी में लिखा है कि जब उनकी वफ़ात हुई तो एक फ़तावा उनके सीने पर पड़ा हुआ था। वह इस तरह कि उन्होंने फ़तावा पढ़ना शुरू किया और पढ़ते पढ़ते वह फ़तावा हाथ से गिर गया और इसी हालत में अल्लाह को प्यारे हो गए। हमारे मशाइख़ ने अपने अवक़ात को इस तरह ग़नीमत समझा और इबादात में अपना वक़्त गुज़ारा।

इल्म के मुतलाशी ऐसे भी होते हैं

शाह अब्दुल क़ादिर साहब रायपुरी रह० फ़रमाते हैं कि जब मैं दारुलउलूम मे हाज़िर हुआ तो उस वक़्त क्लास में दाख़िले बंद हो चुके थे। नाज़िम तालीमात ने इंकार कर दिया कि हम आपको दाख़िला नहीं दे सकते। मैंने उनसे गुज़ारिश की हज़रत आख़िर क्या वजह है। उन्होंने फ़रमाया कि असल बात यह है कि हमारे दारुलउलूम में मतबख़ नहीं है और न ही कोई तबाख़ है बल्कि बस्ती वालों ने एक एक दो तालिब इल्मों का खाना अपने ज़िम्मे लिया है इसलिए जितने तलबा का खाना घरों से पक कर आता है उतने तालिब इल्मों को दाख़िला देते हैं और बक़िया से माज़रत कर लेते हैं। अब कोई एक घर भी ऐसा नहीं है जो मज़ीद एक तालिब इल्म का खाना पकाने की हिम्मत रखता हो। हज़रत! फ़रमाते हैं कि मैंने कहा कि अगर खाने की ज़िम्मेदारी मेरी अपनी हो तो क्या पढ़ने के लिए आप मुझे क्लास में बैठने की इजाज़त दे सकते हैं। उन्होंने फ़रमाया ठीक

हैं इस तरह उनको शर्त के साथ दाख़िला मिल गया। हज़रत फ़रमाते हैं कि मैं सारा दिन तलबा के साथ बैठकर पढ़ता रहा। रात को तकरार करता और जब तलबा सो जाते हैं तो मैं उस्ताद की इजाज़त के साथ दारुलउलूम से बाहर निकलता बस्ती में सब्ज़ी या फ़्रुट की दुकाने थीं, उस वक़्त तो वे दुकानें बंद हो चुकी होती थीं। मैं उनके सामने जाता तो मुझे कहीं से आम के छिलके, कहीं से ख़रबूज़े के छिलके और कहीं केले के छिलके मिल जाते। मैं उन्हें वहाँ से उठाकर लाता और धोकर साफ़ करता और फिर खा लेता। मेरे चौबीस घंटे का यह खाना होता था। मैंने पूरा साल छिलके खाकर गुज़ारा मगर अपना सबक़ नाग़ा न किया।

हम तो ठुकरा दें गर राह में मंज़िल आए

हज़रत शाह अब्दुल क़ादिर रह० ने अपने हालाते ज़िंदगी के बारे में लिखा है कि पढ़ने के ज़माने में जब साल के दौरान मेरे अज़ीज़ व अक़ारिब के ख़त आते थे तो मैं डर के मारे वे ख़त ही नहीं पढ़ता था बल्कि उनको मटके में रख देता था। सोचता था कि अगर कोई ख़ुशी की ख़बर होगी तो घर जाने को दिल करेगा और अगर कोई ग़म की ख़बर होगी तो पढ़ाई में दिल नहीं लगेगा। जिसकी वजह से इल्म से महरूम हो जाऊँगा। मैं वह ख़त जमा करता रहता था और साल के आख़िर में शाबान के शुरू में अपने दारुलउलूम का इम्तिहान देकर फ़ारिग़ हो जाता तो फ़ारिग़ होने वाले दिन सारे ख़तों को निकालता, उन्हें पढ़ता और उनकी फ़हरिस्त बनाता। ख़ुशी के ख़तों की अलग फ़हरिस्त बनाता, फिर मैं अपने गाँव आता, ख़ुशी की ख़बर वालों को मैं मुबारकबाद देता और जिनका ग़म मिला होता था उनके सामने तसल्ली व तशफ़्फ़ी के कुछ अल्फ़ाज़ कह देता था। इस तरह लोग

मुझ से ख़ुश हो जाते कि इसने सारा साल हमारी बात याद रखी लेकिन उनको क्या पता था कि उनका ख़त ही इस वक़्त पढ़ा होता था। तो जिन हज़रात ने दुनिया में अज़्मतें पायीं, उन्होंने इल्म हासिल करने में ऐसी यकसूई दिखाई मगर आज के तालिब इल्म को किताब के अलावा बाहरी बातें सुनने का ज़्यादा शौक़ है। जब तकरार करने बैठते हैं तो दो बातें सबक़ की और तीन बातें बाहर की करते हैं। यहाँ तक कि किताब पढ़ते हुए मुल्कों के फ़ैसले हो रहे होते हैं। इसकी असल वजह यह है कि शैतान उनको इल्म से महरूम करना चाहता है इसलिए बातों में लगा देता है।

तसनीफ़ व तालीफ़ में नोके क़लम को फ़ुर्सत कहाँ

एक मुहद्दिस के हालाते ज़िंदगी में लिखा है कि उन्होंने इतनी किताबें लिखीं कि अगर उनके पैदा होने के दिन से लेकर उनके मरने के दिन तक अगर सारे दिनों को गिन लिया जाए और जितनी किताबें लिखीं उनके सफ़्हों को गिना जाए तो हर दिन के अंदर दस सफ़्हात बनते हैं। यह कोई आसान काम नहीं है। पैदा होने से लेकर मरने के दिन तक पूरे दिन गिन लिए जाएं कि इतने हज़ार दिन ज़िंदा रहे और इतने उन्होंने सफ़्हात लिखे और आपस में तक़्सीम किया जाए तो एक दिन के औसत दस सफ़्हात बनते हैं। अब बारह तेरह साल तो इल्म हासिल करने में ही गुज़रे होंगे। अगर वह निकाल दें तो यह दस की बजाए बीस हो जाएंगे। बीस सफ़्हात का एक दिन में हमारे लिए समझकर पढ़ना मुश्किल होता है बजाए इसके कि उसे नए सिरे से तर्तीब या तालीफ़ कर लिया जाए। जो लोग तसनीफ़ व तालीफ़ करते हैं वह समझते हैं कि एक दिन में एक सफ़्हा लिखना भी आसान काम नहीं है तो हम सोचें कि उन्होंने कितनी मेहनत की होगी।

दर्सी दयानत की इंतिहा तो देखिए

हज़रत मौलाना ख़ैर मुहम्मद जालंधरी रह० एक बार दर्स हदीस दे रहे थे। दौराने तदरीस एक जगह ऐसा इश्काल पैदा हुआ कि उसका हल समझ में नहीं आता था। कोई हमारे जैसा होता तो वह वैसे ही गोल कर जाता, पता ही न चलने देता कि यह भी कोई हल तलब नुक्ता है या नहीं। तलबा को क्या पता, वे तो पढ़ रहे होते हैं। यह तो उस्ताद का काम होता है कि बताए या न बताए। मगर वे हज़रात अमीन थे। यह इल्मी ख़्यानत होती है कि उस्ताद के ज़ेहन में ख़ुद इश्काल वारिद हो और जवाब भी समझ में न आए और तलबा को बताया भी न जाए। इन हज़रात से तो ख़्यानत होती नहीं थी। लिहाज़ा आपने तलबा को साफ़ बता दिया कि इस मुक़ाम पर इश्काल वारिद हो रहा है मगर हल समझ में नहीं आ रहा है। काफ़ी देर तक तलबा भी ख़ामोश रहे और हज़रत भी ख़ामोश रहे। आप बार बार उसको पढ़ रहे हैं, कभी सफ़्हा उलट रहे हैं और कभी उसका हाशिया देख रहे हैं मगर उसका कोई हल समझ में नहीं आ रहा है। यहाँ तक कि आपने फ़रमाया कि मुझे बात समझ में नहीं आ रही है। चलें मैं फ़लां मौलाना से पूछ लेता हूँ। यह वह मौलाना थे जो हज़रत ही से दौरए हदीस कर चुके थे। वह हज़रत के शागिर्द थे। अपने शागिर्दों के सामने उनका नाम लिया कि ज़रा उनसे पूछ लेता हूँ। लिहाज़ा उठने लगे। इतने में एक तालिब इल्म भागकर गया और उसने जाकर मौलाना को बता दिया कि हज़रत आपके पास इस मक़सद के लिए आ रहे हैं। मौलाना अपनी किताब बंद करके फ़ौरन हज़रत के पास पहुँचे। हाज़िर होकर अर्ज़ किया हज़रत! आपने याद फ़रमाया है। फ़रमाया : हाँ मौलाना! यह बात मुझे समझ में नहीं आ रही, देखो कि इसका हल क्या है? उन्होंने पढ़ा और समझ तो गए मगर बात यूँ

की, हज़रत! जब मैं आपसे पढ़ता था तो आपने हमें यह सबक़ पढ़ाते हुए इस मुक़ाम को उस वक़्त इस तरह हल फ़रमाया था और आगे उसका जवाब दे दिया। अब देखें कि कि अपनी तरफ़ मंसूब नहीं किया कि जी मो इल्म तो इतना है कि अब उस्ताद भी मुझ से पूछने आते हैं। नहीं, नहीं वह सोहबतयाफ़्ता थे। इसको कहते हैं तसव्वुफ़ और यह है मिटना।

चट्टानें चूर हो जाएं अगर हो अज़्मे सफ़र पैदा

मुहम्मद बिन क़ासिम रह० की क्या उम्र थी, सत्रह साल। आज सत्रह साल के बच्चे को घर का ज़िम्मेदार बना दें वे घर के काम को ठीक तरह से चला नहीं सकता। और वह सत्रह साल का बच्चा चीफ़ इन कमांडर बना हुआ है और फ़ौज को लेकर जा रहा है, कहाँ? राजा दाहिर की मुनज़्ज़म हुकूमत थी। मैंने सिंध में वह मैदान देखा जहाँ राजा दाहिर और मुहम्मद बिन क़ासिम रह० की लड़ाई हुई थी। मैं उसकी वुसअतों को देखकर हैरान हो रहा था। उस वक़्त मेरी अजीब कैफ़ियत थी। मैंने कहा कि यह नौजवान कहाँ से चला, उसके साथ कोई तर्बियत पाई हुई फ़ौज नहीं थी। यह भी एक हक़ीक़त है कि हिज्जाज बिन युसुफ़ ने उसे बुलाकर कह दिया था कि मेरी फ़ौज अलग-अलग मोर्चों पर मसरूफ़ है। मगर मुझे यह बात पहुँचाई गई है कि हमारी कुछ औरतें आ रही थीं। राजा दाहिर के डाकुओं ने क़ाफ़िले को लूट लिया। एक लड़की ने कहा मुझे बचाव! मुझे बचाव। लिहाज़ा मुहम्मद बिन क़ासिम रह० ने (Cornernee lings) के नौजवानों को इकट्ठा किया। ये प्रोफ़ेशनल फ़ौजी नहीं थे। ये ईमान के जज़्बे के घोड़े पर सवार हुए। वे नौजवान इकट्ठे हुए और उन्होंने कहा कि हम आपके साथ चलते हैं। किताबों में लिखा है कि मुहम्मद बिन क़ासिम रह० के ज़हन में यह बात समाई हुई थी कि वह बैठे

बैठे चौंक उठता था और कहता था ﴿لبیک یا اختی لبیک یا اختی﴾ मेरी बहन मैं हाज़िर हूँ, मेरी बहन मैं हाज़िर हूँ। यह चंद नौजवानों की जमात वहाँ पहुँची और राजा दाहिर की लोहे में डूबी हुई फ़ौज के छक्के छुटा दिए। फिर यही नहीं कि उसको कंट्रोल किया बल्कि उसको कंट्रोल करके अपनी सेकेंड लाइन के हाथ में उसकी कमान दे दी। खुद आगे मार्च कर लिया। खुद कंट्रोल करना कुछ और चीज़ होती है मगर इतनी खुद एतिमादी (Confidence) कि उसको सेकेंड लाइन के हवाले कर दिया और फिर आगे चलते चलते सिंध से लेकर मुल्तान तक इस्लाम का झंडा लहराता रहा।

आज हमारे नौजवानों के अंदर अगर शौक़ तरक़्क़ी कर जाए तो मेरे दोस्तो! दुनिया की कोई ताक़त हमारी तरफ़ मैनी आँख नहीं देख सकती। आज इस बात की ज़रूरत है कि हम मेहनत को अपनाएं लेकिन तन आसानी की ज़िंदगी कामयाब ज़िंदगी नहीं है। कामयाब ज़िंदगी हमेशा लगन, मुजाहिदे की ज़िंदगी हुआ करती है।

एक कचोके (चोट) ने माहिर फ़न बना दिया

दुनिया के मशहूर साइंसदान आइन्स टाइन के बारे में लिखा है कि बपचन में जब स्कूल पढ़ने जाता था तो उसको पैसों का हिसाब नहीं आता था। वह अक्सर अवक़ात कंडेक्टर से लड़ता था कि तुम को इतने पैसे लेने थे और इतने वापस करने थे। जब हिसाब किया जाता तो कंडेक्टर ठीक होता। जब दो चार बार ऐसा हुआ तो एक बार कंडेक्टर ने कह दिया कि तू भी क्या ज़िंदगी गुज़ारेगा तुझे तो जोड़ घटाव नहीं आता। वह बात उसके दिल पर बैठ गई। कहने लगा अच्छा मैं हिसाब पढूंगा। अब उसने हिसाब पर मेहनत करना शुरू कर दी। मेहनत करते करते एक वह वक़्त आया कि उसने (Theory

frelativiti) का नज़रिया पेश करके दुनिया की साइंस में एक इंक़लाब पैदा कर दिया। सच है कि मेहनत का फल ज़रूर मिलता है।

इल्म की पूंजी के नुक़सान पर हिम्मत न हारिए

दुनिया में जिस किसी ने शोहरत व नामवरी हासिल की उसने मेहनत की। चाहे दीन में कोई ऊपर पहुँचा या उलूम दुनिया में कोई ऊपर पहुँचा, मेहनत उनको करना पड़ी। न्युटन के हालाते ज़िंदगी के बारे में लिखा है कि उसने एक तह्क़ीक़ी मज़मून लिखा और वह रखकर लैट्रिन में चला गया। पीछे चिराग़ जल रहा था तो उसका कुत्ता जिसका नाम टोनी रखा हुआ था, अंदर आया और उसने छलांग लगाई तो चिराग़ काग़ज़ों के ऊपर गिरा और पूरे के पूरे काग़ज़ जल गए। जब वह वापस आया और उसने देखा कि पूरे का पूरा तह्क़ीक़ी मज़मून जलकर राख बन गया तो उसने सिर्फ़ इतना कहा, "टोनी तूने मेरा काम बहुत बढ़ा दिया।" उसके बाद उसने फिर नए सिरे से मज़मून लिखना शुरू कर दिया और कई महीने की मेहनत के बाद दोबारा उसे लिखा। वाक़ई धुन और ध्यान बड़ी नेमत है जिसको नसीब हो जाए।

मुक़्तदा (बड़ा) फिसला तो सब फिसले

यह बात याद रखें कि उलमा के लिए एहतियात की ज़िंदगी गुज़ारना ज़्यादा अहम है। हज़रत हसन बसरी रह० फ़रमाया करते थे कि एक बार एक छोटी बच्ची ने नसीहत की जो मैं कभी नहीं भूल सकता। किसी ने पूछा कि हज़रत! यह कौनसी नसीहत है? उन्होंने फ़रमाया कि एक बार बारिश का मौसम था। मैं नमाज़ पढ़ने के लिए मस्जिद जा रहा था। रास्ते में फिसलन थी। सामने से एक छोटी सी

बच्ची आ रही थी। गुज़रते हुए मैंने उस बच्ची से कहा ज़रा एहतियात करना कि कहीं फिसल न जाना। उसने आगे से जवाब दिया, हज़रत! मैं एहतियात करूंगी ही सही मगर आप भी एहतियात कर लेना क्योंकि अगर मैं फिसली तो मेरी ज़ात को नुकसान होगा और अगर आप फिसल गए तो फिर उम्मत का क्या बनेगा? हमारे लिए भी यह बात एक नसीहत की है। आप हज़रात इस्तिक़ामत के साथ शरिअत व सुन्नत पर अमल करें। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त इस इल्म व अमल के सदके दुनिया और आख़िरत में आपको इज़्ज़त अता फ़रमाएंगे। इमाम अहमद बिन हंबल रह० को मस्अला ख़ल्के क़ुरआन में ऐसे सख़्त कोड़े लगाए गए कि वे कोड़े हाथी को लगाए जाते तो वह भी बिलबिला उठता। उनके जिस्म पर जहाँ कोड़े लगे वहाँ का गोश्त मुर्दा हो गया। उस गोश्त को कैंची से काटकर वहाँ मरहम लगाया गया। वे दीन की हिफ़ाज़त के लिए यूँ इस्तिक़ामत के साथ डटे रहे।

इल्मी ज़ौक़ औरतों के तब्क़े में

हमारे कालेज में इस्लामियात के एक प्रोफ़ेसर थे उनकी बेटी ने मैट्रिक इम्तिहान अच्छे नंबरों से पास कर लिया। बेटी के दिल में शौक़ था कि लेडी डाक्टर बनूं। वालिद ने कहा कि कालेज में मख़्लूत तालीम (Co-education) है। उसे मैं पसंद नहीं करता कि मेरी बेटी भी वहीं पढ़े। झंग में उस वक़्त लड़कियों का साइंस कालेज नहीं था, सिर्फ़ आर्टस का था, साइंस की क्लासें नहीं थीं। उस लड़की ने कहा, अब्बू मैं पढ़ना चाहती हूँ। बाप ने कहा प्राइवेट पढ़ लो। लिहाज़ा बाप ने मेडिकल की सारी किताबें बेटी को लेकर दे दीं और उस बेटी ने प्राइवेट इम्तिहान की तैयारी शुरू कर दी। बीच में उसे कहीं-कहीं मुश्किलात पेश आयीं तो उसने अब्बू से कहा कि अब्बू मुझे फ़्लां चीज़ नहीं आती। किसी प्रोफ़ेसर से कहिए कि मुझे समझा दे। अब्बू

ने कहा कि मैं तो अच्छा नहीं समझता कि कोई प्रोफ़ेसर आपको पढ़ाए। उस लड़की ने कहा अब्बू आप मुझे समझा दें। आप अंदाज़ा कीजिए कि वह इस्लामियात के प्रोफ़ेसर अपनी बेटी से प्राबलम्स समझते और कालेज में जाकर कालेज के प्रोफ़ेसर से पूछते कि इनका क्या जवाब है? अब इस्लामियात के प्रोफ़ेसर समझते क्या होंगे? सवाल को क्या समझते होंगे और जवाब को क्या समझते होंगे। लेकिन जो थोड़ा बहुत वह इशारात वहाँ से लेकर आते वह आकर बेटी को देते। बेटी उसे पिकअप कर लेती यहाँ तक कि बेटी ने तैयारी की। मेडिकल का प्राइवेट इम्तिहान दिया। उसके इतने नंबर आ गए कि उसने लाहौर में फ़ातिमा जिन्ना मेडिकल कालेज में दाख़िला ले लिया जो कि लड़कियों का कालेज है। बाद में वह लड़की लेडी डाक्टर बन गई।

किताब का मुताला एक बार या बार बार

मैं आपको एक ऐसी बात सुना दूँ। मुझे यक़ीन है कि आपने पहले नहीं सुनी होगी। मुझे एक बार कालेज के प्रिन्सपल की तरफ़ से ख़त मिला कि फ़लां तारीख़ को हमने फ़ंक्शन करना है और आपको उसमें रोल आफ़ ऑनर्स पेश करना है। इस रोल आफ़ ऑनर को पेश करने के लिए हमने मुल्क के एक नामवर साइंसदाँ अब्दुस्सलाम ख़ुर्शीद को बुलाया है जो अगरचे ग़ैर-मुस्लिम हैं लेकिन पाकिस्तानी है। उसको कनाडा से बुलवाया गया है। मैं उस वक़्त युनिवर्सिटी से छुट्टी लेकर कालेज पहुँचा। बहुत बड़ा फ़ंक्शन था। प्रिन्सपल ने कहा इस बच्चे ने मेरे कॉलेज का बहुत अच्छा रिकार्ड बनाया है। मैं इसके लिए फ़ंक्शन भी शायाने शान करूंगा लिहाज़ा उसने अब्दुस्सलाम ख़ुर्शीद (नोबल प्राइज़ ओनर) को कॉलेज में बुलाया। वह भी इसी कॉलेज से पढ़े जिससे मैं पढ़ा। ख़ैर उस अब्दुस्सलाम ख़ुर्शीद ने मुझे

रोल आफ़ आनर पेश किया। उसके बाद चाय की पार्टी पर इकट्ठे हुए। आपस में बातचीत हुई। हमारे एक प्रोफ़ेसर ने अब्दुस्सलाम ख़ुर्शीद से पूछ लिया कि आप नोबल प्राइज़ ओनर कैसे बने? डाक्टर साहब ने कहा मैं बहुत मेहनती हूँ। इस पर प्रोफ़ेसर ने कहा, साइंस स्टूडेंट तो सारे ही मेहनती होते हैं, सारे ही पढ़ाकू होते हैं, सारे ही किताबी कीड़े होते हैं। उसने कहा नहीं मैं ज़्यादा मेहनती हूँ। इस पर प्रोफ़ेसर ने कहा डाक्टर साहब वह कौनसी मेहनत है जो दूसरे लड़के नहीं करते? सब साइंस पढ़ने वाले लड़के बड़े ज़हीन होते हैं। बड़ी मेहनत करते हैं लेकिन नोबल प्राइज़ ओनर तो नहीं बनते। डाक्टर साहब ने कहा नहीं मैं बड़ा ही मेहनती हूँ। फिर कहा, मैं ज़हीन इतना नहीं हूँ मेहनती ज़्यादा हूँ। प्रोफ़ेसर ने कहा नहीं! नहीं! आप ज़हीन ज़्यादा होंगे। उसने कहा मैं कह रहा हूँ कि मैं मेहनती ज़्यादा हूँ। उसने बड़ी अजीब मिसाल दी। डॉक्टर अब्दुस्सलाम ख़ुर्शीद ने कहा कि मैंने कैमिस्ट्री की एक किताब पढ़ी। वह मुझे समझ नहीं आई। मैंने फिर पढ़ी, समझ नहीं आई, मैंने तीसरी बार पढ़ी मुझे समझ नहीं आई यहाँ तक कि मैंने उस किताब को तिरेसठ बार पढ़ा। वह किताब तक़रीबन हिफ़्ज़ हो गई। उसकी बात सुनकर हम हैरान हुए कि ऐसा भी कोई बंदा हो सकता है कि जिसे एक किताब समझ में न आई तो वह उस किताब को शुरू से लेकर आख़िर तक तिरेसठ बार पढ़ता है। वाक़ई जिसके अंदर इतनी मेहनत का शौक़ हो तो वह मुस्तहिक़ है कि दुनिया में उसे नोबल प्राईज़ दिया जाए।

घरेलू कारोबार हुसूले इल्म में न हो बार

एक नौजवान ने मैट्रिक का इम्तिहान दिया और वह अच्छे नंबरों से कामयाब हुआ। उसके वालिद और वालिदा दोनों बूढ़े हो चुके थे। उसका वालिद बीमार भी था कमज़ोर भी था और काम भी नहीं कर

सकता था। बच्चे ने कहा कॉलेज में दाख़िला दिलवा दें। बाप ने कहा कि हम टुकड़े-टुकड़े को तरसते हैं। बेटा दुकान बना ताकि हमारे लिए खाने पीने का बंदोबस्त हो। बाप ने तीन हज़ार रुपए से उसके लिए अपने घर की बैठक में एक प्रचून की दुकान बनाई। वह बेचारा स्कूल में फ़र्स्ट क्लास आने वाला बच्चा किराने की दुकान चलाने लगा। साथ ही साथ उसे पढ़ने का शौक़ था। उसने एफ़०एस०सी० की किताबें ले लीं और चोरी छिपे पढ़नी शुरू कर दीं। वालिद को पता नहीं है, वालिदा को पता नहीं है। लड़का फ़ारिग़ वक़्त में दुकान पर किताब पढ़ता। जब कोई ग्राहक आता तो उसे सौदा दे देता। ख़ैर उसने एफ़०एस०सी० की फिजिक्स कैमिस्ट्री और मैथ्स की सारी किताबें प्राइवेट ख़ुद पढ़ लीं। कहीं कहीं अटकने लगा तो उसने प्रोफ़ेसर साहब से कहा कि मैं पढ़ना चाहता हूँ। मुझे प्रैक्टिकल करने में आप मेरी मदद करें। प्रोफ़ेसर साहब ने कहा मैं प्रैक्टिकल करवाता हूँ। मुझे क्या एतिराज़ हो सकता है, मुझे तो ख़ुशी होगी। अब देखो उस बच्चे ने कितनी अक़्लमंदी दिखाई कि जिस दिन प्रैक्टिकल होता अपने सौदा लाने का वही दिन मुक़र्रर करता और चार दिन पहले वालिद को कहता कि मुझे फ़लां दिन सौदा लाना है। वालिद कहता बहुत अच्छा। उस दिन यह लड़का पैसे लेता और बाज़ार जाता और एक बहुत ही दीनदार और परहेज़गार आदमी को लिस्ट देता कि यह सौदा निकालकर रखो मैं अभी आता हूँ। जितनी देर दुकानदार सौदा निकालता यह लड़का उस वक़्त कालेज जाकर प्रैक्टिकल करके वापस आता तो सौदा उठाकर घर आता। बाप को पता न चलता कि बेटा सिर्फ़ सौदा लेकर आया है या सौदे के साथ साथ प्रैक्टिकल भी करके आया है। यहाँ तक कि इम्तिहान शुरू हो गया। इम्तिहान भी उसने सौदे की आड़ में दे दिया। एफ़०एस०सी० का प्राइवेट इम्तिहान दिया। आप यक़ीन करें कि यह लड़का प्राइवेट-इम्तिान देने के बाद

लाहौर बोर्ड में सेकेंड आया। जब अख़बार में ख़बर आई तो मुहल्ले वाले लोग उसके वालिद को मुबारकबाद देने लगे। बाप कहता कि मेरा बेटा तो पढ़ता ही नहीं, वह तो दुकानदारी करता है। लोग कहते तेरा बेटा बोर्ड में सेकेंड आया है और वालिद कहते कि मेरा बेटा तो पढ़ता ही नहीं। यहाँ तक कि लोगों ने तसल्ली दिलाई कि मामला यूँ था। फिर कुछ लोगों ने मिल मिलाकर कुछ साहिबे हैसियत लोगों को सूरतेहाल बताई और उनको कहा कि अगर आप अपनी तरफ़ से कोई प्राइवेट स्कालरशिप दे दें, लड़का भी पढ़ जाएगा और माँ बाप को भी कुछ मिल जाएगा। लिहाज़ा उसके लिए दो तीन हज़ार रुपए का बंदोबस्त किया। उस स्कालरशिप में से कुछ तो उसके माँ बाप को दिया कि आप यह लें और मज़े से बैठकर खाएं, लड़के को युनिवर्सिटी में दाख़िल करवाएं ताकि यह वहाँ से इंजीनियरिंग में कोर्स कर सके। उसने इंजीनियरिंग युनिवर्सिटी लाहौर में दाख़िला लिया। सिविल इंजीनियरिंग में कोर्स किया। आज वह लड़का एकसेन लगा हुआ है। गाड़ी उनको मिली हुई है। कोठी उसको मिली हुई है। उसके माँ-बाप उस कोठी में रहते हैं। यह सच्चा वाक़िआ है। इससे क्या नतीजा निकला कि जब इंसान दिल में ठोस इरादा कर लेता है तो वह काम कर गुज़रता है। सच है कि ख़ुदा उनकी मदद करता है जो अपनी मदद आप करते हैं।

पढ़िए मगर बुलंद अज़ाइम के साथ

एक बार फ़क़ीर ने इस्लामिक सेंटर में लड़कों का ज़बानी इम्तिहान लेना था। वहाँ के सब तलबा ग्रेजुएट क्लासों के साइंस स्टूडेंट थे। फ़क़ीर हर तालिब इल्म से तीन तीन सवाल पूछ रहा था। एक तालिब इल्म के साथ एक छोटा भाई भी आया हुआ था। उसकी उम्र आठ नौ साल थी। जब वह बच्चा फ़क़ीर के सामने आकर बैठा तो फ़क़ीर

ने दिल में सोचा कि इससे क्या सवाल पूछे जाएं। एक मेज़ क़रीब ही पड़ी हुई थी, फ़क़ीर ने कहा :

Ok, please tell me who made this table?

आप मुझे यह बताएं कि यह मेज़ किसने बनाई है? वह बच्चा कहने लगा :

Sir, Allah gave man brain and man used that brain and he made this table.

कि अल्लाह ने इंसान को दिमाग़ दिया है, इंसान ने दिमाग़ को इस्तेमाल किया और उसने यह मेज़ बना दी।

जब उसने ठोस जवाब दिया तो फ़क़ीर भी थोड़ा सा संभल गया। उससे दूसरा सवाल पूछा :

You tell me why do you read Quran? Do you feel it is manditory or is it intresting?

यानी आप क़ुरआन क्यों पढ़ते हैं? क्या आप समझते हैं कि यह ज़रूरी है या यह बड़ा दिलचस्प है?

फ़क़ीर अंदाज़ा लगाना चाहता था कि यह मारे बांधे क़ुरआन पढ़ता है या अपने शौक़ से पढ़ता है। जब फ़क़ीर ने उससे यह पूछा तो कहने लगा :

Sir! I feel it is both, it is manditory as well as it is intresting.

उसने कहा मैं समझता हूं कि यह दोनों चीज़ें हैं। यह ज़रूरी भी है और दिलचस्प भी बहुत ज़्यादा है। फ़क़ीर उम्मीद नहीं करता था कि इतना अच्छा जवाब देगा।

अब फ़क़ीर ने तीसरा सवाल पूछा :

Ok, you tell me, what do you want to be in your life?

कि तुम अपनी ज़िंदगी में क्या बनना चाहते हो?

उसने कहा :

Sir, I want to be the President of America.

कि मैं अमरीका का सदर बनना चाहता हूँ।

जब उसने यह कहा तो फ़क़ीर ने अचानक उससे कहा, why कि तुम अमरीका के सदर क्यों बनना चाहते हो? उसने कहा :

Sir, I will be the first Muslim President of America.

कि मैं अमरीका का पहला मुसलमान सदर बनूंगा, सुब्हानअल्लाह।

फ़क़ीर उसके इस जवाब से बहुत ख़ुश हुआ और हैरान हुआ कि अगर आज मुसलमान बच्चों में अल्लाह ने यह जज़्बा पैदा कर दिया तो क्या बईद है कि ऐसा वक़्त भी आए जब दुनिया की सुपरवार की कुर्सी पर एक मुसलमान बैठ कर इस्लाम के क़ानून लागू कर रहा हो।

मेरे दोस्तो! वहाँ के नौजवान उम्मीद की किरन हैं। वहाँ पर मुसलमान का संभलना और अपनी तहज़ीब व तमद्दुन को महफ़ूज़ करके उसके मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारना अच्छे आसार हैं। हो सकता है कि ये लोग वहाँ के मुक़ामी लोगों के लिए दीन की दावत का ज़रिया बन जाएं और अल्लाह तआला वहाँ के मुक़ामी लोगों को दीन में दाख़िल होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दें। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 5/107)

❋ ❋ ❋

ज़हानत

व

ज़कावत

ज़हानत व ज़कावत

हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु को हाफ़्ज़े की क़ुव्वत कैसे मिली?

हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु जब मुलमान हुए तो उस वक़्त बुढ़ापे की उम्र शुरू हो चुकी थी और अक्सर भूल जाया करते थे। लिहाज़ा नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के महबूब! मैं आपकी बातें सुनता हूँ मगर भूल जाता हूँ। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया : अपनी चादर फैलाओ। उन्होंने चादर फैला दी। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने दोनों मुबारक हाथों से ऐसा इशारा फ़रमाया जैसे किसी गठरी में कुछ डाल रहे हों। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : अबूहुरैरह! अब चादर की गठरी बांध लो। लिहाज़ा उन्होंने गठरी बांध ली। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उनको ऐसा हाफ़्ज़ा दिया कि उसके बाद वह कोई बात नहीं भूलते थे। सुब्हानल्लाह इल्म के हासिल करने के लिए उन्होंने क़दम बढ़ाया और उस्ताद ने दुआएं दीं जिसकी बरकत से अल्लाह तआला ने यूँ क़ुबूलियत अता फ़रमाई।

हज़रत मौलाना मुफ़्ती शफ़ी साहब रह० फ़रमाते थे कि अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु 'मौलवी' क़िस्म के सहाबी थे। वह हदीसें इकठ्ठी करने की फ़िक्र में लगे रहते थे। इसीलिए सबसे ज़्यादा रिवायतें भी उन्हीं की हैं, सुब्हानअल्लाह।

याद्दाश्त हो तो ऐसी

एक बार अब्दुल मलिक ने सोचा कि हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु

अन्हु बहुत ज़्यादा अहादीस की रिवायत करते हैं। क्या ये रिवायतें ठीक उन्हीं अल्फ़ाज़ में हैं जो कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के थे या रिवायत बिल मानी करते हैं। लिहाज़ा उसने उनकी दावत की और भी कुछ सहाबा किराम को बुलाया गया। उसने पर्दा लटकाकर दो कातिब हज़रात को बिठा दिया और उन्हें कहा कि अबूहुरैरह जो बोलेंगे आप लोगों को लिखना है। दो बंदे इसलिए बिठाए कि आपस में भी ततबीक़ हो सके। जब महफ़िल शरू हुई तो अब्दुल मलिक कहने लगा हज़रत! आपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बहुत सी बातें सुनीं। आप मेहरबानी फ़रमाकर हमें भी उनकी कुछ बातें सुना दीजिए। सैय्यदना अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस महफ़िल में एक सौ हदीसें रिवायत फ़रमायीं और लिखने वालों ने लिख लीं मगर किसी को पता न चला। उसके बाद महफ़िल ख़त्म हो गई। एक साल बाद उसने हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु को दोबारा दावत दी। इस बार उसने पर्दे के पीछे फिर उन्हीं दो आदमियों को बिठा दिया और कहा कि अपने पिछले नोट्स निकालना और मिलाते जाना। मैं उनसे दरख़्वास्त यह करूंगा कि आपने जो अहादीस पिछली बार सुनायीं उनमें बड़ा मज़ा आया। आप मेहरबानी फ़रमाकर वही हदीसें आज फिर सुना दीजिए। लिहाज़ा महफ़िल लगी तो उसने कहा हज़रत! जो हदीसें आपने पिछले साल सुनायी थीं वे सुनकर बड़ा मज़ा आया था, आप वही हदीसें आज फिर सुनाएं। सैय्यदना अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने फिर वही एक सौ हदीस सुनायीं। दोनों कातिब हैरान में पड़ गए कि कहीं एक हर्फ़ का भी फ़र्क़ न आया। यूँ अल्लाह तआला ने क़ुव्वते हाफ़ज़ा अता फ़रमाई थी।

गर लाख हदीस के हाफ़िज़ न हुए तो...

अबू ज़रआ एक मुहद्दिस गुज़रे हैं उनकी महफ़िल में एक शागिर्द

आया करता था। उसकी नई नई शादी हुई। एक दिन महफ़िल ज़रा लंबी हो गई तो उसके घर जाने में देर हो गई। जब वह रात देर से घर पहुँचा तो बीवी उलझ पड़ी कि मैं इंतिज़ार में थी तुम ने आने में देर क्यों की? उसने समझाया कि मैं वक़्त ज़ाए नहीं कर रहा था। मैं तो हज़रत के पास था। वह कुछ ज़्यादा गुस्से में थी। वह गुस्से में कह बैठी कि तेरे हज़रत को कुछ नहीं आता, तुझे क्या आएगा? उस्ताद के बारे में बात सुनकर तो यह नौजवान भी भड़क उठा। नौजवान लोग तो होते ही आग हैं, तेल लगाने की की ज़रूरत होती है। जैसे माचिस की डिबिया होती है बस रगड़ने की देर होती है। आग तो पहले से अंदर होती है। नौजवान का नफ़्स भी ऐसा ही होता है कि बेचारे बाज़ार से गुज़रते हैं, आँख उठते ही बस रगड़ लगती है और शहवत की आग भड़क उठती है।

जब बीवी ने यह कहा कि तेरे उस्ताद को कुछ नहीं आता तुझे क्या आएगा तो यह सुनकर नौजवान को भी गुस्सा आ गया और कहने लगा कि अगर मेरे उस्ताद को एक लाख हदीसें याद न हों तो तुझे मेरी तरफ़ से तीन तलाक़ हैं। अब गुस्से में फ़ायरिंग तो दोनों तरफ़ से हो गई। ठीक-ठीक निशाने लगाए गए। सुबह उठकर ज़रा दिमाग़ ठंडा हुआ तो सोचने लगे कि हम ने तो बहुत बड़ी बेवक़ूफ़ी की। बीवी ने ख़ाविन्द से पूछा कि मेरी तलाक़ मशरूत थी। अब बताएं कि यह तलाक़ वाक़ेअ हो गई या नहीं। उसने कहा यह तो उस्ताद साहब से पूछना पड़ेगा। उसने कहा कि जाएं और उस्ताद साहब से पता करके आएं। लिहाज़ा यह नौजवान अपने उस्ताद के पास पहुँचा और कहा रात यह वाक़िआ पेश आया। अब आप बताएं कि निकाह सलामत रहा या तलाक़ वाक़ेअ हो चुकी है। उनके उस्ताद यह बात सुनकर मुस्कराए और फ़रमाने लगे कि जाओ तुम मियाँ-बीवी वाली ज़िंदगी गुज़ारो क्योंकि एक लाख अहादीस मुझे इस

तरह याद हैं कि जिस तरह लोगों को सूरः फ़ातिहा याद होती है, सुब्हानअल्लाह। यह क़ुव्वते हाफ़्ज़ा की बरकत थी जो अल्लाह तआला ने अता कर दी थी।

हाफ़िज़ हदीस ऐसे भी थे

यही क़ुव्वते हाफ़्ज़ा की नेमत मुहद्दिसीन को नसीब हुई। अब्दुल्लाह बिन अबिदाऊद रह० एक बार अस्फ़हान पहुँचे तो वहाँ के उलमा ने एक बड़े मुहद्दिस का बेटा समझकर इस्तिक़बाल किया और फिर कहा कि हमें कुछ अहादीस सुना दीजिए। चुनाँचे महफ़िलें जारी हुईं और उन्होंने अपनी याद्दाश्त से 35 हज़ार हदीसें सुना दीं।

फ़ुक़्हा (उलमा) की ज़हन रसाई

सुलेमान बिन महरान रह० जो रिजाल बुख़री से हैं। उन्होंने एक बार इमाम अबू यूसुफ़ रह० से मसूअला पूछा जो उन्होंने बता दिया। सुलेमान बिन महरान बहुत हैरान हुए कि आपने कहाँ से सीखा? इमाम अबू यूसुफ़ रह० ने कहा, हज़रत! आप ही से तो मैंने हदीस सुनी है। कहने लगे, तेरे माँ बाप अभी एक बिस्तर पर जमा भी नहीं हुए थे कि उस वक़्त से मुझे यह हदीस याद थी मगर आपके बताने से मैंने उस हदीस के मफ़हूम को सही तौर पर समझा। फ़रमाया : ﴿نحن الصيادلة وانتم الاطباء﴾ कि हम तो मेडिकल स्टोर वालों की तरह हैं और तुम इलाज करने वालों की तरह हो। हमने ये सब अहादीस परखकर अपने पास इकठ्ठी कर रखी हैं मगर किस में कौन सा फ़ायदा लेना है तो यह काम तुम लोग बेहतर जानते हो।

अबूहनीफ़ा रह० की हैरतअंगेज़ हाज़िर जवाबी

1. एक बार इमाम अबूहनीफ़ा रह० तशरीफ़ फ़रमा थे कि एक

बूढ़ा शख़्स आया और कहने लगा, "वाव अव वावैन?" इमाम अबूहनीफ़ा रह० ने फ़रमाया, "वावैन।" वह कहने लगा, "ला वला।" कहकर चला गया। मज्लिस में शरीक लोगों के पल्ले कुछ न पड़ा हालाँकि उनका इल्मी मर्तबा बहुत बुलंद था। उनमें इमाम अबूयूसुफ़ रह० जैसे कसीरुल हदीस मुहद्दिस थे, क़ासिम बिन माअन रह० और मुहम्मद बिन हसन रह० जैसे अरबी अदब के माहिर, इमाम ज़ुफ़र, आफ़िया बिन यज़ीद रह० जैसे क़ियास और इस्तेहसान के बादशाह थे और इमाम दाऊद ताई रह० जैसे ज़ोहद व तक़्वे के पहाड़ थे मगर इशारों की यह बात उनकी समझ में न आई। आख़िर इमाम अबूहनीफ़ा रह० से दर्याफ़्त किया कि इस बूढ़े ने क्या पूछा था? आपने फ़रमाया, "इसने अत्तहिय्यात के बारे में सवाल किया था कि ﴿التحيات لله والصلوات والطيبات﴾ में दो वाव हैं। वह पूछना चाहता था कि दो वाव वाला अत्तहिय्यात पढ़ूँ या एक वाव वाला।" तो मैंने कहा "वावैन" यानी दो वाला। उसने ख़ुश होकर कहा कि वाक़ई आपका इल्म शजरे तैबा की तरह है ﴿اصلها ثابت وفرعها في السماء﴾ फिर कहने लगा ﴿لا شرقية ولا غربية﴾ और ला वला कहकर इशारा कर दिया कि आपके इल्म की मिसाल न मश्रिक़ में है और न मग़रिब में।

2. इमामे आज़म रह० एक बार दर्स दे रहे थे कि एक औरत आई जो कोई मस्अला पूछना चाहती थी मगर मर्दों की वजह से शर्मा गई और एक बच्चे के हाथ सेब भेज दिया जिसका कुछ हिस्सा सुर्ख़ था और कुछ ज़र्द। हज़रत रह० ने सेब काटकर वापस कर दिया तो वह औरत चली गई। लोगों ने माजरा पूछा। फ़रमाया, वह औरत हैज़ का मस्अला पूछने आई थी मगर तुम्हारी शर्म व हया माने हुई इसलिए अल्फ़ाज़ में मस्अला पूछने के बजाए सबे पेश कर दिया कि क्या औरत के हैज़ के ख़ून की रंगत ज़र्द हो जाए तो ग़ुस्ल कर

सकती है या नहीं? मैंने सेब काटकर सफ़ेदी दिखा दी कि जब तक ज़र्दी सफ़ेदी में न बदले उस वक़्त तक ग़ुस्ल नहीं कर सकती। इन बातों को कौन समझेगा? ऐसे हज़रात के हासिदीन भी ज़्यादा होते हैं जितना कोई बड़ा होगा उसके हासिदीन भी उतने ज़्यादा होंगे।

इमाम अबूहनीफ़ा रह० की मामलाफ़हमी तो देखिए

एक बार दो मियाँ-बीवी आपस में तन्हाई के लम्हात में थे। मियाँ बात करना चाहता था मगर बीवी कुछ नाराज़ थी। यहाँ तक कि मियाँ ने ग़ुस्से में कह दिया, अल्लाह की क़सम जब तक तू नहीं बोलेगी तो मैं तेरे साथ नहीं बोलूंगा। जब मियाँ ने क़सम उठाई तो बीवी ने भी क़सम उठा दी कि अल्लाह की क़सम! जब तक तू पहले नहीं बोलेगा मैं भी नहीं बोलूंगी। अब वह भी चुप यह भी चुप। रात तो गुज़र गई, सुबह को ज़रा दिमाग़ ठंडे हुए तो सोचने लगे कि कोई तो हल होना चाहिए। लिहाज़ा वह सुफ़ियान सौरी रह० के पास गए। उन्हें सारा वाक़िआ सुनाया और पूछा कि अब इसका क्या हल है? फ़रमाया दोनों में से जो पहल करेगा वह हानिस हो जाएगा। उस दौर में जो हानिस बन जाता था उसकी गवाही क़ुबूल नहीं की जाती थी क्योंकि वह समाज में एतिबार के क़ाबिल नहीं रहता था। लिहाज़ा दोनों की ख़्वाहिश थी कि क़सम हमारी न टूटे। अब दोनों परेशान। ख़ाविन्द को ख़्याल आया कि इमाम अबूहनीफ़ा रह० से पूछना चाहिए। लिहाज़ा उनके पास पहुँचा तो हज़रत ने पूछा क्या हुआ? कहने लगा हज़रत! मैं बीवी को बुला रहा था मगर वह बोलती नहीं थी, मानती नहीं थी। मैंने ग़ुस्से में अल्लाह की क़सम उठाई कि जब तक तू मुझसे नहीं बोलेगी मैं तुझ से नहीं बोलूंगा। वह तो लड़ने के लिए पहले ही तैयार थी। उसने भी क़सम उठाई कि जब तक तू नहीं

बोलेगा मैं भी नहीं बोलूंगी। अब हम फंसे हुए हैं। हज़रत ने फ़रमाया, जाओ तुम उसके साथ बात करो। वह तुम्हारी बीवी है। मियाँ-बीवी बनकर रहो। ख़ाविन्द मुस्कराता हुआ घर आया और कहने लगा, मैडम! क्या हाल है? हैलो! आपकी तबियत ठीक है ना? बीवी ने कहा, बस तू हानिस हो गया। कहने लगा मैं तो हानिस नहीं बना। उसने कहा वह क्यों? कहने लगा, मैं इमाम अबूहनीफ़ा रह० से पूछकर आया हूँ। उस दौर में इल्मी ज़ौक़ बहुत ज़्यादा था। बीवी कहने लगी, अच्छा मैं भी जाकर मस्अला पूछती हूँ। मियाँ-बीवी पहले सुफ़ियान सौरी रह० के पास पहुँचे। उनको जाकर बताया तो वह कहने लगे, अबूहनीफ़ा तो हराम को हलाल करता फिर रहा है। चलो मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ। उन्होंने कैसे मस्अला बता दिया।

जब ये सब इमाम अबूहनीफ़ा रह० के पास पहुँचे तो सुफ़ियान सौरी रह० ने कहा, अबूहनीफ़ा! तुमने हराम को कैसे हलाल कर दिया? इमाम अबूहनीफ़ा रह० मुस्कराकर कहने लगे, हज़रत! मैंने तो हराम को हलाल नहीं किया, हलाल को हलाल कहा है। आप इनसे सुनें तो सही वे क्या कह रहे हैं। हज़रत सुफ़ियान सौरी रह० ने उनसे पूछा कि क्या कह रहे हैं? इमाम अबूहनीफ़ा रह० ने कहा, हज़रत! पहले तो ख़ाविन्द ने कहा कि जब तक तू नहीं बोलेगी में तुझसे नहीं बोलूंगा। इसके जवाब में बीवी ने भी कसम उठा दी। आप देखें तो सही कि वह किससे बात करते हुए क़सम उठा रही है। ख़ाविन्द ही से तो बात कर रही है। लिहाज़ा ख़ाविन्द की क़सम तो पूरी हो गई। अब बीवी की क़सम बाक़ी थी। इसलिए मैंने ख़ाविन्द से कहा जाओ तुम उससे बोलोगे तो उसकी भी क़सम पूरी हो जाएगी। तुम दोनों मियाँ-बीवी बनकर ज़िंदगी गुज़ारो। सुफ़ियान सौरी रह० इस नुक्ता समझी और मामलाफ़हमी को देखकर हैरान हो गए।

ख़लीफ़ा मन्सूर इमाम अबूहनीफ़ा रह० के सामने हक्का-बक्का रह गया

एक बार वक़्त के बादशाह ने इमाम अबूहनीफ़ा रह०, इमाम शाबई रह०, इमाम सौरी रह० और एक फ़क़ीह की गिरफ़्तारी का हुक्म दे दिया। वह चाता था कि इन चारों में से एक को चीफ़ जस्टिस (क़ाज़िउल क़ज़ा) बनाए लेकिन चारों बनना नहीं चाहते थे। लिहाज़ा पुलिस वालों ने उनको गिरफ़्तार कर लिया। रास्ते में जब एक जगह पहुँचे तो जो चौथे फ़क़ीह थे, वह बैठे बैठे इस तरीक़े से उठे जैसे क़ज़ाए हाजत की ज़रूरत हो। पुलिस वाले इंतिज़ार में रहे और वह तो गए तो चले ही गए। यह हीला था। अब बाक़ी तीन रह गए। इमाम अबूहनीफ़ा रह० फ़रमाने लगे मैं क़ाफ़िया लगाऊँ कि होगा क्या? दूसरों ने कहा, हाँ लगाएं। कहने लगे, मैं वहाँ जाकर ऐसी बात कहूँगा कि ख़लीफ़ मंसूर के पास उसका कोई जवाब नहीं होगा। लिहाज़ा मैं छूट जाऊँगा। इमाम शाबई रह० भी कोई हीला कर लेंगे। अलबत्ता सुफ़ियान सौरी फंस जाएंगे। चुनाँचे ऐसा ही हुआ। जब तीनों हज़रात को दरबार में पहुँचाया गया तो इमाम शाबई रह० ज़रा आगे बढ़े और जाकर ख़लीफ़ा मंसूर से कहने लगे, ख़लीफ़ा साहब! आपका क्या हाल है? आपके बीवी बच्चों का क्या हाल है? आपके महल का क्या हाल है? आपके अस्तबल का क्या हाल है? आपके घोड़ों का क्या हाल है? आपके गधों का क्या हाल है? ख़लीफ़ा मंसूर को अजीब लगा कि जिस आदमी को मैं चीफ़ जस्टिस बनाना चाहता हूँ वह सबके सामने मेरे घोड़ों और गधों का हाल पूछ रहा है। दिल में सोचा कि यह शख़्स इस अहम मंसब के क़ाबिल नहीं है। चुनाँचे इमाम शाबई से कहने लगा कि मैं आपको चीफ़ जस्टिस नहीं बना सकता। इमाम शाबई रह० इस तरह बच गए। फिर ख़लीफ़ा इमाम

अबूहनीफ़ा रह० की तरफ़ मुतवज्जेह हुआ और कहने लगा, अबूहनीफ़ा! मैंने आज के बाद आपको चीफ़ जस्टिस बना दिया। इमाम अबूहनीफ़ा रह० आगे बढ़े और फ़रमाया, मैं चीफ़ जस्टिस बनने के क़ाबिल नहीं हूँ। ख़लीफ़ मंसूर ने कहा, नहीं, नहीं आप इसके क़ाबिल हैं। इमाम अबूहनीफ़ा रह० ने कहा, ख़लीफ़ा साहब! दो बातें हैं। जो कुछ मैंने कहा या तो वह ठीक है या वह ग़लत है। अगर वह ग़लत है तो झूठ बोलने वाला शख़्स चीफ़ जस्टिस नहीं बन सकता और अगर सच है तो मैं तो कह ही रहा हूँ कि मैं चीफ़ जस्टिस बनने के क़ाबिल नहीं हूँ। अब ख़लीफ़ा हैरान। अगर कहे कि अबूहनीफ़ा तूने ठीक कहा तो भी अबूहनीफ़ा छूटते हैं अगर क़हे तूने ग़लत कहा तो भी अबूहनीफ़ा छूटते हैं। इमाम आज़म अबूहनीफ़ा रह० ने ख़लीफ़ा को भरे दरबार में लाजवाब कर दिया।

एक हदीस से चालीस मसाइल का इस्तिंबात (हल)

एक बार इमाम शाफ़ई रह०, इमाम मालिक रह० के पास पहुँचे। उन्होंने वहाँ रात जागते हुए गुज़ार दी। इमाम मालिक रह० ने पूछा, आप रात को क्यों नहीं सोए? फ़रमाने लगे कि मेरे सामने एक हदीस पाक आ गई थी कि एक बार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने छोटे से बच्चे को जो अनस रज़ियल्लाहु अन्हु का भाई था, फ़रमाया

﴿يا ابا عمير مافعل النغير﴾ ऐ अबू उमैर! तेरे परिन्दे ने क्या किया।

उसने एक परिन्दा पाला था मगर वह मर गया। तो जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उससे मिलते तो उससे ख़ुश तबई फ़रमाते कि तेरे परिन्दे ने तेरे साथ क्या किया यानी मर गया और तुझे छोड़ गया। तो मैं इन अल्फ़ाज़ पर ग़ौर करता रहा और हदीस पाक के इतने से टुकड़े से मैंने फ़िक़्ह के चालीस मसाइल का जवाब निकाल

लिया। जैसे छोटे बच्चे को तसग़ीर के साथ बुला सकते हैं, कुन्नियत से कैसे पुकारा जा सकता है।

सुब्हानअल्लाह, सुब्हानअल्लाह इसीलिए इमाम शाफ़ई रह० फ़रमाया करते थे कि ऐ अल्लाह! दिन अच्छा नहीं लगता मगर तेरी याद के साथ और रात अच्छी नहीं लगती मगर तुझसे राज़ व नियाज़ के साथ।

इमाम अबूहनीफ़ा रह० के हैरतनाक इल्मी जवाबात

एक आदमी आकर कहने लगा, आप उस शख़्स के बारे में क्या कहते हैं, जो

(1) बिन देखे गवाही देता हो,

(2) यहूद व नसारा के क़ौल की तदसीक़ करता हो,

(3) अल्लाह की रहमत से दूर भागता हो,

(4) मुर्दार खा लेता हो,

(5) जिसकी तरफ़ अल्लाह ने बुलाया हो उसकी परवाह न करता हो,

(6) जिससे अल्लाह ने डराया हो उसका ख़ौफ़ न करता हो,

(7) फ़ित्ने को महबूब रखता हो।

इमाम अबूहनीफ़ा रह० ने फ़रमाया : वह शख़्स मोमिन है। सवाल पूछने वाला बड़ा हैरान हुआ, कहने लगा, जी वह कैसे? फ़रमाया, देखो तुमने पहली बात कही कि बिन देखे गवाही देता हो तो मोमिन अपने परवरदिगार की बिन देखे गवाही देता है। दूसरी बात तुमने यह कही कि यहूद व नसारा के क़ौल की तस्दीक़ करता हो तो क़ुरआन पाक में आया है

وقالت اليهود ليست النصارىٰ على شئی وقالت النصارىٰ ليست اليهود على شئی

मोमिन इन दोनों के क़ौल की तस्दीक़ करता है। कहने लगा यह भी ठीक है। तीसरी बात यह थी कि अल्लाह की रहमत से दूर भागता है तो देखो बारिश अल्लाह की रहमत है और बारिश से तो हर आदमी दूर भागता है कि कहीं कपड़े न भीग जाएं। वह कहने लगा यह भी ठीक है। चौथी बात यह कि मुर्दार खाता है तो मछली मुर्दा होती है उसको तो हर बंदा मज़े ले लेकर खाता है। उसने कहा यह भी ठीक है। पाँचवीं बात यह है कि जिसकी तरफ़ अल्लाह तआला ने बुलाया उसकी तरफ़ रग़बत नहीं करता। बस वह जन्नत है कि अल्लाह तआला ने उसकी तरफ़ बुलाया ﴿والله يدعو الى دار السلام﴾ मगर उसको मुशाहिदा हक़ इतना मतलूब है, अल्लाह की रज़ा इतनी मतलूब है कि महबूबे हक़ीक़ी की तरफ़ नज़र हटाकर वह जन्नत की तरफ़ नज़र डालना भी पसंद नहीं करता। छठी बात यह है कि जिससे अल्लाह तआला ने डराया उससे वह डरता नहीं, तो वह दोज़ख़ है। उसको अपने महबूब की नाराज़गी की इतनी फ़िक्र होती है कि अब उसे जहन्नम में जलने की परवाह नहीं। सातवीं बात यह है कि उसे फ़ितना महबूब है। बस औलाद को क़ुरआन में फ़रमाया गया है ﴿انما اموالكم واولادكم فتنة﴾ और औलाद से हर शख़्स को तबई मुहब्बत होती है बस वह शख़्स मोमिन है। सवाल पूछने वाला आदमी हैरान रह गया।

इमाम शाफ़ई रह० की इमाम मालिक रह० के दर्स में शिरकत

इमाम शाफ़ई रह० फ़रमाते हैं कि मैं एक मर्तबा मिना के बाज़ार में था। हज के दिनों में फ़रमाते हैं कि जमरात से फ़राग़त हो गई। मुझे एक बूढ़ा आदमी मिला। थोड़ी देर उसने मुझे देखा और कहने लगा तुझे अल्लाह का वास्ता तू मेरी दावत क़ुबूल कर ले। फ़रमाते हैं

मैंने उसकी दावत को क़ुबूल कर लिया और वह भी ऐसा बेतकल्लुफ़ कि जो उसके पास था पेश कर दिया। उसने रोटी का एक टुकड़ा निकाला और वहीं दस्तरख़्वान पर रख दिया और कहने लगा खाओ मैंने खाना शुरू कर दिया। वह मुझे देखता रहा और कहने लगा मुझे लगता है कि तू क़ुरैशी है। मैंने कहा हाँ लेकिन तुझे कैसे पता चला? उसने कहा कि यह क़ुरैशी दावत देने में बेतकल्लुफ़ होते हैं और क़ुबूल करने में भी। फिर बातें करते रहे मुझे पता चला कि यह मदीने से आया है। फ़रमाते हैं मैंने उससे इमाम मालिक रह० के बारे में पूछा। उसने मुझे उनके कुछ हालात सुनाए। जब उसने देखा कि मैं बड़े शौक़ से उनके हालात पूछ रहा हूँ तो वह कहने लगा कि अगर आप मदीना जाना चाहते हैं तो यह ख़ाकी रंग का ऊँट हमारे पास ख़ाली है। यह हम आपको दे देंगे। आप मदीना पहुँच जाएंगे। कहने लगे कि मैं तो पहले ही से तैयार था। लिहाज़ा मैंने हामी भर ली। फ़रमाते हैं कि मैं क़ाफ़िले के साथ सवार हुआ। हमें रास्ते में मक्का मुकर्रमा से मदीना मुनव्वरा पहुँचने में सोलह दिन लगे। इस दौरान मैंने सोलह क़ुरआन मजीद पढ़ लिए। आज यह हाल है कि हज करके आते हैं, दस दस दिन मदीना गुज़ारकर आते हैं। एक क़ुरआन भी मुकम्मल करने की तौफ़ीक़ नहीं होती। हमारे असलाफ़ जब हज के लिए आते जाते थे तो सैकड़ों लोग उनके हाथों पर कलिमा पढ़कर मसुलामन हुआ करते थे। आज हज करके आते हैं ख़ुद मुसलमान बनकर सही तरह नहीं आते। वापस आकर फिर गुनाहों की तरफ़ चल पड़ते हैं। तो इमाम शाफ़ई रह० ने हालाते सफ़र में सोलह दिन में सोलह क़ुरआन मजीद पूरे किए। फ़रमाते हैं जब हम मस्जिद नबवी पहुँचे तो नमाज़ के बाद मैंने देखा कि एक आदमी ऊँचे क़द का है और उसने एक तहबंद बांधा है। और एक चादर लपेटी हुई है। वह एक जगह बैठ गया और कहने लगा, ﴿قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم﴾

और लोग उसके इर्दगिर्द बैठ गए तो मैं समझ गया कि यही इमाम मालिक रह० होंगे। ये वे दिन थे जब इमाम मालिक रह० हदीस का इमला करा रहे थे। मौत्ता इमाम मालिक की जो हदीस हैं उनको लिखवा रहे थे। मैंने भी एक तिनका उठा लिया और दिल में सोचा कि यह मेरी क़लम है और हाथ सामने कर लिया और सोचा कि यह मेरी कापी है और मैंने अपनी ज़बान से तिनके को लगाया कि जैसे मैं उसको स्याही लगा रहा हूँ और हंथेली पर लिखना शुरू कर दिया। अब तलबा काग़ज़ों पर लिख रहे हैं। चुनाँचे मैंने उनसे इमला की निस्बत हासिल करने के लिए हथेली पर लिखना शुरू कर दिया। कहने लगे इस दौरान इमाम मालिक रह० ने मेरी तरफ़ देखा। उन्होंने उस महफ़िल में एक सौ सत्ताइस हदीसें लिखवायीं। जब अगली नमाज़ का वक़्त हो गया तो महफ़िल बरख़ास्त हो गई। तलबा चले गए। फ़रमाने लगे (इमाम शाफ़ई रह०) कि इमाम मालिक रह० ने मुझे देखा तो मुझे अपनी तरफ़ बुलाया और मुझे कहा कि तू अजनबी मालूम होता है? मैंने कहा जी हाँ मैं मक्का मुकर्रमा से आया हूँ कहने लगे कि तू हथेली पर क्या कर रहा था? मैंने कहा कि मैं अहादीस लिख रहा था। कहने लगे दिखाओ। मैंने दिखाया तो हथेली पर तो कुछ लिखा हुआ नहीं था। उन्होंने कहा कि यहाँ तो कुछ नहीं लिखा। मैंने कहा कि हज़रत न मेरे पास क़लम था न काग़ज़। मैं तो जो आप इमला लिखवा रहे थे उसकी निस्बत हासिल करने के लिए एक तिनके से बैठा हुआ हथेली पर लिख रहा था। इस पर इमाम मालिक रह० नाराज़ हुए कि यह तो हदीसे पाक के अदब के ख़िलाफ़ है कि तुमने इस तरह लिखा। मैंने कहा हज़रत मैं तो ज़ाहिरी मुनासबत के लिए हाथ पर तिनका चला रहा था। हक़ीक़त में तो हदीस पाक दिल में लिख रहा था। कहने लगे कि इमाम मालिक रह० ने फ़रमाया कि अच्छा अगर दिल में लिख रहा था तो मुझे चंद एक रिवायत उसमें से

सुना दे तो मैं जानूँ। फ़रमाने लगे मैंने उनको एक से लेकर एक सौ सत्ताइस हदीसें मतन और सनद के साथ सुना दीं। यह इल्म कि एक सौ सत्ताइस हदीसें जिस तर्तीब से लिखवाई थीं तमाम उस तर्तीब पर उनको सुना दीं। फ़रमाते हैं कि इमाम मालिक रह० बहुत ख़ुश हुए। कहने लगे कि अच्छा तू मेरा मेहमान बन जा। अंधे को क्या चाहिए, दो आँखें। मैं तो पहले ही से तैयार था। कहने लगे, हज़रत मैं तैयार हूँ। इमाम मालिक रह० घर तशरीफ़ ले गए। इमाम मालिक के घर में उनकी बेटियाँ थीं और वे आलिमा थीं। हदीस की हाफ़िज़ा थीं, क़ुरआन मजीद की हाफ़िज़ा थीं। बहुत तक़िया और पाक ज़िंदगी गुज़ारने वाली औरतें थीं। यहाँ तक कि किताबों में लिखा है कि इतना इल्म रखती थीं कि इमाम मालिक रह० कई मर्तबा हदीस का दर्स मस्जिदे नबवी में देते, वे पर्दे के पीछे बैठकर हदीस के दर्स में शरीक होतीं। उनका इल्मी मैयार इतना ऊँचा था कि कई मर्तबा उनका शागिर्द जब हदीस पाक की तिलावत करता और इबारत में कहीं ग़लती करता तो उनकी लड़कियाँ लकड़ी के ऊपर लकड़ी मारकर आवाज़ करतीं जिससे इमाम मालिक रह० समझ जाते कि पढ़ने वाले ने ग़लती की है।

आपने घर जाकर बताया कि आज एक आलिम आ रहे हैं और वे बड़े दाना हैं और बड़े इल्म का शौक़ रखते हैं। वह तो बहरहाल इमाम शाफ़ई रह० थे। उन्होंने घर में खाने का बड़ा एहतिमाम किया, बिस्तर लगाया, मुसल्ला बिछाया, लोटा पानी का भरकर रखा। ﴿اكرام بضيوف الرحمٰن﴾ इमाम शाफ़ई रह० ने खाना खा लिया, लेट गए। सुबह को इमाम मालिक रह० के साथ मस्जिद में आ गए। जब इशराक़ की नमाज़ पढ़कर वापस घर गए तो इमाम मालिक रह० ने इमाम शाफ़ई रह० से फ़रमाया कि मेरी बेटियों को आप पर ऐतिराज़ वाक़ेअ हुआ है और मैं आपको पूछता हूँ। ये सच्चे लोग थे, खरे लोग

थे, साफ़ बात करते थे। फ़रमाया कि बच्चियाँ कह रही हैं कि अब्बू आपने तो यह कहा था कि यह बड़े नेक और अच्छे इंसान हैं लेकिन हमें उन पर इश्काल वाक़ेअ हुआ है। ख़ैर इमाम शाफ़ई से एक बात तो यह पूछी कि सारा कि सारा खाना तन्हा खा गए, दूसरा यह कि हमने मुसल्ला बिछाकर रखा और बर्तन भरकर रखा लेकिन जैसे मुसल्ला बिछाया था सुबह को वैसा ही रखा मिला और पानी भी जूँ का तूँ लगता है कि तहज्जुद की नमाज़ भी न पढ़ी और फिर मस्जिद में तो वुज़ू का इंतिज़ाम भी नहीं लोग घरों से वुज़ू करके जाते हैं और यह उसी तरह आपके साथ उठकर मस्जिद चले गए। पता नहीं नमाज़ भी उन्होंने कैसी पढ़ी तो हमारी समझ से तो बाहर है।

इमाम शाफ़ई रह० ने जवाब दिया कि हज़रत बात यह है कि जब मैंने आपके यहाँ खाना खाया तो खाने में इतना नूर था, इतना नूर था कि हर हर लुक़्मा खाने पर मुझे सीने में नूर भरता नज़र आता था। मैंने सोचा कि मुमकिन है इतना हलाल माल ज़िंदगी में फिर मैयस्सर न हो क्यों न इसे बदन का हिस्सा बनाऊँ। इसलिए मैंने इस सारे खाने को अपने बदन का जुज़ बना लिया, अल्लाहु अकबर। फ़रमाते हैं कि फिर लेट गया लेकिन इस खाने का नूर इतना था कि नींद ग़ायब। तो मैं उन अहादीस में ग़ौर करता रहा। फ़रमाने लगे कि एक हदीस मेरे पेश नज़र रही कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक छोटे बच्चे को जिसका परिन्दा मर गया था, प्यार मुहब्बत से कहा था ﴿يا ابا عمير ما فعل النغير﴾ तो यह जो कुछ अल्फ़ाज़ थे मैं उनके अंदर ग़ौर करता रहा और आज रात मैंने इन चंद अल्फ़ाज़ में से फ़िक़्ह के चालीस मसाइल हल कर कि किसी की दिलजोई के लिए कैसे बात करनी चाहिए। ﴿يا ابا عمير ما فعل النغير﴾ सिर्फ़ इसमें ग़ौर करके मैंने फ़िक़्ह के चालीस मसाइल हल कर लिए कि किसी की दिलजोई के लिए कैसे बात करनी चाहिए। ﴿يا ابا عمير ما فعل النغير﴾ सिर्फ़ इसमें ग़ौर करके मैंने फ़िक़्ह के चालीस मसाइल निकाल लिए और फिर

फ़रमाया क्योंकि मेरा वुज़ू बाक़ी था इसलिए मैं उठा और फ़ज्र की नमाज़ उसी वुज़ू से अदा की। हमारे असलाफ़ का यह हाल था तो सबसे पहला क़दम इल्म हासिल करना, दूसरा क़दम उस पर अमल करना लेकिन अमल करने के साथ काम ख़त्म नहीं होता। एक क़दम और उठाना ज़रूरी है। उसको कहते हैं इख़्लास पैदा करना।

हज़रत शेख़ुल हिंद रह० की क़ुव्वते याद्दाश्त

क़रीब के ज़माने में हमारे अकाबिरीन उलमा देवबंद अरजुमंद के उलूम में अल्लाह तआला ने बहुत बरकत अता की थी। एक बार शेख़ुल हिंद महमूदुल हसन रह० ने अपने शागिर्द से फ़रमाया कि बारिश का मौसम अभी ख़त्म हुआ है और बारिश के मौसम में किताबों को नमी की वजह से दीमक लगने का ख़तरा बढ़ जाता है तो बेहतर है कि हम ये किताबें बाहर धूप में रख दें। अच्छी तरह धूप लग जाएगी तो अंदर रख देंगे। अगर किसी की जिल्द ख़राब हुई और सफ़्हा सही न हुआ तो उसे भी ठीक करेंगे। लिहाज़ा वह शागिर्द यह काम करने लग गया।

उस ज़माने में ज़्यादा किताबें मख़्तूत (हाथ की लिखी हुई) होती थीं। शागिर्द ने एक किताब निकाली और कहने लगा, हज़रत! इसके तो पाँच छः सफ़्हे दीमक ने चाट लिए। हज़रत ने फ़रमाया कि उस जगह पाँच छः सफ़्हे सफ़ेद लगा दो। उसने सफ़ेद काग़ज़ लगाकर धूप में रख दिया। जब सूख गए तो कहने लगा, हज़रत! अब क्या करूं? फ़रमाने लगे, भई! जो इबारत मौजूद नहीं वह उस पर लिख दो। उसने कहा, हज़रत! मैंने तो यह किताब पिछले साल पढ़ी थी। मुझे तो ज़बानी याद नहीं है। हज़रत ने पूछा, बताओ कौन सी किताब है? उसने कहा 'मेबज़ी'। हालाँकि यह किताब छोटी सी है लेकिन मुश्किल किताबों में से है। हज़रत रह० ने फ़रमाया : कहाँ से किताब की इबारत मुन्क़ता हुई है? उसने आख़िरी लफ़्ज़ बता दिया। हज़रत रह० ने आगे

लिखवाना शुरू कर दिया। उसी जगह बैठे हुए इबारत के कुछ सफ़्हे अपनी याद्दाश्त से ज़बानी लिखवा दिए। यह इल्म की बरकत थी। किताब पढ़े हुए सालों गुज़र जाते थे मगर इबारत याद रहती थी।

हज़रत अनवर शाह कश्मीरी रह० का बेमिसाल हाफ़ज़ा (याद्दाश्त)

हज़रत मौलाना अनवर शाह कश्मीरी रह० मिस्र तशरीफ़ ले गए। वहाँ एक किताब 'नूरुल ईज़ाह' देखी। पूछा, क्या ले सकता हूँ क्योंकि हमारे पास नहीं है? उन्होंने कहा हम नहीं दे सकते। हज़रत रह० ने उसको अच्छी तरह देख लिया और वापस आकर उसको ज़बानी लिखवा दिया। जब नक़ल के साथ असल मिलाई गई तो कोई फ़र्क़ न निकला। उनकी लिखी हुई वह किताब आज मदारिस के तलबा पढ़ रहे हैं।

क़ुव्वते हाफ़ज़ा का कमाल

जब बहावलपूर में ख़त्मे नबुव्वत के सिलसिले में मुक़दमा हुआ तो हज़रत मौलाना अनवर शाह कश्मीरी रह० तशरीफ़ ले गए। मुख़ालिफ़ों ने वहाँ एक किताब पेश की। उस किताब का तर्जुमा मुसलमानों के अक़ीदे के ख़िलाफ़ बनता था। वह किताब भी मुसलमानों के बड़ों की थी। जज बड़ा हैरान हुआ। उसने कहा कि देखो यह तो तुम्हारी अपनी ही किताब पेश कर रहे हैं जो तुम्हारी ही जड़ें काट रही है। अल्लामा अनवर शाह कश्मीरी रह० ने फ़रमाया कि ज़रा वह किताब मुझे दिखाई जाए। जज ने किताब दिखाई। हज़रत रह० ने किताब के सफ़्हे का मुताला किया और फ़रमाने लगे कि जिस कातिब ने यह किताब लिखी है उससे असल किताब से लिखते हुए दर्मियान में एक लाइन छूट गई है। उस वक़्त तो छपी हुई किताबें नहीं थी बल्कि

मख़तूता किताबें होती थीं। इस सतर के छूट जाने से जब पिछली इबारत को अगली इबारत से मिलाकर पढ़ते तो मानी मुख़ालिफ़ बन जाते। लिहाज़ा हज़रत ने फ़रमाया कि उसी किताब का एक नुस्ख़ा और मंगवाया जाए। लिहाज़ा एक और नुस्ख़ा मंगवाया गया। जब दोनों नुस्ख़ों को मिलाया तो अल्लामा अनवर शाह कश्मीरी रह० की बात बिल्कुल ठीक निकली। चुनाँचे मुख़ालिफ़ीन के झूठ का पोल खुल गया लेकिन बाद में उलमा ने कहा हज़रत! आप को तो उम्मीद ही नहीं थी कि वे इस किताब का हवाला पेश करेंगे, आप को कैसे याद रहा कि दर्मियान में एक सतर छूटी हुई है? फ़रमाया : "हाँ मैंने सत्ताईस साल पहले यह किताब देखी थी, अल्हम्दुलिल्लाह कि मुझे उस वक़्त से यह बात याद है, सुब्हानअल्लाह।

हिफ़्ज़ और निसयान का अजीब करिश्मा

मौलाना मुफ़्ती जस्टिस तक़ी उस्मानी साहब दामत बरकातुहुम ने अपनी किताब "तराशे" में एक अजीब वाक़िआ लिखा है कि एक आलिम फ़रमाया करते थे कि मुझ से दो काम ऐसे हुए कि कोई भी नहीं कर सकता। एक अच्छा और एक बुरा। अच्छा काम ऐसा हुआ कि कोई कर नहीं सकता और बुरा काम भी ऐसा हुआ कि कोई कर नहीं सकता। लोगों ने पूछा, कौन से काम? वह कहने लगे कि एक दफ़ा उलमा की महफ़िल में तज़्किरा हुआ कि फ़लां हाफ़िज़, फ़लां हाफ़िज़ और मेरे बारे में कहा यह आलिम तो बड़ा भारी है मगर हाफ़िज़ नहीं है। मैंने यह सुना तो मुझे ख़्याल आया कि मैं आज से ही हिफ़्ज़ शुरू करता हूँ। चुनाँचे उसी वक़्त मैंने क़ुरआन के पाक के पारों को याद करना शुरू कर दिया और अल्लाह का शुक्र है कि मैंने तीन दिन के अंदर क़ुरआन पाक का हिफ़्ज़ मुकम्मल कर लिया, यह ख़ैर का काम ऐसा हुआ कि कोई कर नहीं सकता और एक बुरा

काम भी मुझ से हुआ वह यह कि एक दफ़ा महफ़िल में बैठे बैठे मेरे बारे में बात चल पड़ी कि यह बड़ा अक़्लमंद है और कुछ ख़ूबियों का ज़िक्र हुआ। यह सुनकर मेरे अंदर ख़ुद पसंदी आ गई और उजब की थोड़ी सी कैफ़ियत आई जिसका नतीजा मुझे यह मिला कि जुमा का दिन था, मैं जुमा कर तैयारी करने के लिए घर गया, तैयारी के दौरान ख़्याल आया कि मैं अपने बाल और नाख़ुन काटूं। जब मैंने नाख़ून काट लिए तो मैंने सोचा कि मेरी दाढ़ी के बाल काफ़ी बढ़ गए हैं, मैं उनको सुन्नत के मुताबिक़ नीचे से बराबर कर दूँ क्योंकि एक मुट्ठी के बराबर बाल रखना सुन्नत है। इससे बड़े हो जाएं तो काटे जा सकते हैं। वह कहने लगे कि कि मैं एक मुट्ठी भर अपने बाल काटने लगा तो बेख़्याली में नीचे से काटने के बजाए ऊपर से काट बैठा। जब मस्जिद में आया तो मुझे बहुत शर्मिन्दगी हुई। हर बंदा पूछ रहा था और मैं बता रहा था कि मैं भूल गया हूँ। जिस बंदे के तीन दिन में क़ुरान मजीद हिफ़्ज़ करने के चर्चे दुनिया में थे उसकी बेवक़ूफ़ी की यह बात इस क़द्र मशहूर हुई कि उसकी हर जगह बदनामी हुई।

अताउल्लाह शाह बुख़ारी रह० की ज़हानत

खुत्बात के मैदान में सैय्यद अताउल्लाह शाह बुख़ारी रह० ने तहलका मचा दिया। उनकी तक़रीर सुनकर हिन्दू भी मुसलमान हो जाते थे। अल्लाह तआला ने ऐसी ज़हानत दी थी कि हाज़िर जवाब बहुत थे। एक बार एक साहब कहने लगे, हज़रत आप अंग्रेज़ को Show शो (तमाशा) दिखाते हैं, फ़रमाया भई! मैं अंग्रेज़ को Show नहीं दिखाता मैं तो अंग्रेज़ को Shoe शू (जूता) दिखाता हूँ।

एक दफ़ा एक साहब हज़रत बुख़ारी रह० से मिले और कहने लगे, हज़रत! ज़िंदगी कैसे गुज़री। फ़रमाया, भई! आधी रेल में गुज़री आधी जेल में गुज़री।

एक दफ़ा सैय्यद अबुल आला मौदूदी के साथ शाह जी रह० की मुलाक़ात हुई तो अबुआला मौदूदी फ़रमाने लगे, शाह साहब! आपकी जमात को तक़रीर का बड़ा हैज़ा है। शाह जी रह० ने जवाब दिया जैसे आपकी जमात को तहरीर का हैज़ा है।

एक जलसागाह में हिन्दुओं और मुसलमानों का मजमा है। शाह जी रह० ने चाहा कि मैं मुसलमानों और हिन्दुओं से कुछ पूछूँ। चुनाँचे हिसाब का छोटा सा सवाल पूछा। हिंदुओं ने तो जवाब दे दिया मगर मुसलमान न दे सके। अब मुसलमानों की होनी तो सुबकी थी मगर शाह जी फ़रमाने लगे, वाह मुसलमानो! तुम यहाँ भी बेहिसाब हो जबकि अल्लाह तआला तुम्हारे साथ आगे भी बेहिसाब मामला फ़रमाएगा, माशाअल्लाह।

एक शख़्स कहने लगा, शाह जी! क्या मुर्दे सुनते हैं? शाह जी रह० ने फ़रमाया, भई! हमारी तो ज़िंदे भी नहीं सुनते हम मुर्दों की क्या बात करें।

एक दफ़ा अलीगढ़ पहुँचे। कुछ तलबा ने प्रोग्राम बनाया हुआ था कि तक़रीर करने नहीं देनी। शाह जी स्टेज पर आए तो तलबा तो उठ खड़े हुए और शोर मचाना शुरू कर दिया कि बयान नहीं करने देना। शाह जी ने कहा, भई! एक बात सुनो, मैं इतना सफ़र करके आया हूँ अगर इजाज़त हो तो मैं एक रुकू पढ़ लूँ। अब तलबा में इख़्तिलाफ़ हो गया। कुछ कहने लगे जी तिलावत में क्या हरज है और कुछ कहने लगे यह भी नहीं सुननी। यहाँ तक तिलावत की ताईद करने वाले ग़ालिब आ गए। उन्होंने कहा, जी आप रुकू सुना दें। शाह जी रह० ने रुकू पढ़ा, फिर फ़रमाया अज़ीज़ तालिब इल्मो! अगर इजाज़त हो तो इसका तर्जुमा भी पेश कर दूँ। तलबा पर तिलावत का ऐसा असर हुआ कि सब ख़ामोश रहे। चुनाँचे शाह जी रह० ने तक़रीबन दो घंटे तक़रीर फ़रमाई। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 2/195)

हाय रे तूने ज़िंदगी गंवा दी

मुझे यहाँ एक कहानी याद आई है जो हम इंगलिश कि किताबों में पढ़ा करते थे। एक जगह मुख़्तलिफ़ टापू थे। उनमें एक टापू पर आबादी थी मगर दूसरे टापू में स्कूल बनाया गया था। बच्चे स्कूल जाने के लिए किसी मल्लाह के साथ कश्ती में बैठकर दूसरे टापू में जाया करते थे। एक दिन उन तलबा के दिल में शरारत पैदा हुई। उन्होंने कहा कि हम ज़रा इस मल्लाह को छेड़ें तो सही। लिहाज़ा उनमें से एक आगे बढ़ा। मल्लाह से पूछा, जनाब! क्या आपको हिसाब किताब आता है? उसने जवाब दिया मुझे तो नहीं आती। वह कहने लगा कि Then you have wasted half of your life. (तुमने अपने आधी ज़िंदगी तबाह कर ली।) फिर थोड़ी देर के बाद दूसर आगे बढ़ा और कहने लगा, जनाब! आपको साइक्लोजी का पता है? उसने कहा, जी मुझे तो नहीं पता। वे फिर हंसने लगे और कहने लगे कि Then you have wasted half of your life. (तुमने तो आधी ज़िंदगी ज़ाए कर दी।) उसके बाद तीसरा आगे बढ़ा और कहने लगा, जनाब! आपको फ़िज़िक्स और कैमिस्ट्री का पता है? उसने कहा, मुझे तो बिल्कुल नहीं पता। वे कहने लगे कि Then you have wasted half of your life. (तूने तो अपनी आधी ज़िंदगी तबाह कर ली) और वे इसी तरह की बातों से उसका मज़ाक़ उड़ाते रहे। इस दौरान बारिश शुरू हो गई। समुन्दर में उफ़ान पैदा हुआ। ज्वार-भाटे का वक़्त आ गया। कश्ती हिचकोले खाने लगी। अब मल्लाह की बारी थी। चुनाँचे उसने कहा बच्चो, बताओ क्या तुम्हें तैरना आता है? कहने लगे, नहीं हमें तो तैरना नहीं आता। वह कहने लगा, फिर तो तुमने अपनी पूरी ज़िंदगी तबाह कर ली यानी अब तुम डूब जाओगे।

❁ ❁ ❁

بسم الله الرحمن الرحيم

तर्बियत

और

परवरिश

तर्बियत और परवरिश

लख़्ते जिगर की तर्बियत और शौक़े शहादत

हज़रत ख़न्सा रज़ियल्लाहु अन्हा के बारे में आता है कि उनके चार बेटे थे। वे जब खाने पर बैठतीं तो बच्चों को कहतीं मेरे प्यारे बेटो! तुम उस माँ के बेटे हो जिसने न मामूं को रुसवा किया न तुम्हारे बाप के साथ ख़्यानत की। जब बार बार यह कहतीं तो एक बार बच्चों ने कहा, अम्मी! आख़िर इसका क्या मतलब है? तो फ़रमातीं, मैं कुँवारी थी, मुझ से कोई ऐसी ग़लती न हुई जिससे तुम्हारे मामूं की रुसवाई होती और जब शादी हुई तो मैंने तुम्हारे बाप के साथ ख़्यानत नहीं की। मैं इतनी ग़ैरत और बहया ज़िंदगी गुज़ारने वाली औरत हूँ। बच्चे पूछते, अम्मी जान! आप क्या चाहती है? तो माँ कहती! बेटे जब तुम जवान हो जाओगे, तुम सब अल्लाह के रास्ते में जिहाद करना और मेरे बेटों तुम शहीद हो जाना और मैं आकर देखूंगी। अगर तुम्हारे सीनों पर तलवार के ज़ख़्म होंगे तो मैं तुमसे राज़ी हो जाऊँगी और अगर तुम्हारी पुश्त पर ज़ख़्म होंगे तो मैं तुम्हें कभी माफ़ नहीं करूंगी। बेटे पूछते, अम्मी! आप क्यों कहती हैं शहीद हो जाना, शहीद हो जाना। तब माँ समझातीं कि मेरे बेटो! इसलिए कि जब क़यामत के दिन अदल क़ायम होगा और अल्लाह तआला पूछेंगे, शहीदों की माँएं कहाँ हैं? मेरे बेटों उस वक़्त मेरे परवरदिगार के सामने मुझे सुर्ख़रुई नसीब होगी कि मैं भी चार शहीदों की माँ हूँ। सोचने की बात है ऐसे शहीदों के पीछे आपको एक औरत का किरदार माँ की शक्ल में नज़र आएगा।

बेटा! दामने सिद्क़ न छोड़ना

शेख़ अब्दुल क़ादिर जिलानी रह० लड़कपन में तालीम हासिल करने के लिए चलते हैं। माँ उनके कपड़ों में कुछ पैसे सी देती हैं। और नसीहत कर देती हैं कि बेटे हमेशा सच बोलना। चुनाँचे रास्ते में डाकुओं ने लूट लिया। किसी ने पूछा तुम्हारे पास माल है? उन्होंने सच सच बता दिया। उसने सरदार को बताया तो सरदार ने पास बुला कर कहा तूने झूठ क्यों नहीं बोला? न तुझे जान की फ़िक्र न माल की फ़िक्र। कहने लगे, मेरी अम्मी ने कहा था बेटा! सच बोलना और मैंने उनसे वादा कर लिया था। मुझे जान की परवाह न थी, मुझे अपने क़ौल का पास रखना था। डाकुओं के दिल में यह बात घर कर गई कि जब एक बच्चा माँ से किए हुए अहद का इतना पास रखता है तो हमने भी तो कलिमा पढ़कर अपने रब से अहद किया है कि हम उसका पास क्यों न करें। चुनाँचे वे अल्लाह से तौबा करते हैं और उस के बाद उनकी ज़िंदगी में नेकोकारी आ जाती है। यह बच्चा आगे चल कर अब्दुल क़ादिर जिलानी रह० बना तो सोचिए एक और कामयाब मर्द के पीछे आपको औरत का किरदार माँ की शक्ल में नज़र आएगा।

नन्हे मुन्ने को वहदानियत सिखाएं

हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रह० आज भी क़ुतब मीनार के क़रीब लेटे हुए हैं। उनके बारे में भी मशहूर वाक़िआ है। उनके नाम के साथ क़ुतबुद्दीन बख़्तियार 'काकी' का लफ़्ज़ लगाया जाता है। यह हिंदी लफ़्ज़ है इसके मानी रोटी। वाक़िआ यह हुआ कि जब यह पैदा हुए तो उनके वालदैन बैठे हुए आपस में मशवरा कर रहे थे, हमारा बेटा नेक कैसे बने? अच्छा कैसे बने? चुनाँचे उनकी माँ

ने कहा कि मेरे ज़हन में एक बात है। कल से उस पर अमल करूंगी। अगले दिन जब बच्चा मदरसे में चला गया तो माँ ने खाना बनाया और अलमारी में कहीं छिपाकर रख दिया। बच्चा आया, कहने लगा, अम्मी भूख लगी है, मुझे खाना दीजिए। माँ ने कहा, बेटा! हमें भी तो खाना अल्लाह तआला देते हैं, वही रज़्ज़ाक़ हैं, वही रिज़्क़ पहुँचाते हैं, वही मालिक व ख़ालिक़ हैं। माँ ने अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का तार्रुफ़ करवाया और कहा कि बेटा तुम्हारा रिज़्क़ भी वही भेजते हैं। तुम अल्लाह से मांगो। बेटे ने कहा, अम्मी मैं कैसे मांगू? माँ ने कहा, बेटा मुसल्ला बिछाओ। चुनाँचे मुसल्ला बिछा दिया। बेटा अत्तहिय्यात की शक्ल में बैठ गया। छोटे-छोटे मासूम हाथ उठाए, माँ ने कहा, बेटा दुआ करो। बेटा दुआ कर रहा है कि अल्लाह तआला मैं मदरसे से आया हूँ, भूख लगी है, अल्लाह मुझे खाना दीजिए। बेटे ने थोड़ी देर इस तरह आजिज़ी की पूछने लगा, अम्मी अब क्या करूं? माँ ने कहा, बेटा! ढूंढो, अल्लाह ने खाना भेज दिया होगा। थोड़ी देर कमरे में ढूंढा, आख़िर अलमारी में खाना मिल गया। बेटे ने खाना खाया। अब बेटे दिल में एक ख़्याल पैदा हुआ। वह रोज़ अल्लाह तआला की बातें पूछता, अम्मी वह सबको खाना देते हैं, परिन्दों को भी, हैवानों को भी, पता नहीं उसके पास कितने ख़ज़ाने हैं? वह ख़त्म नहीं होते। वह अल्लाह तआला के बारे में ज़्यादा मालूमात हासिल करने की कोशिश करता। माँ का दिल खुश होता कि बेटे के दिल में अल्लाह तआला का ताल्लुक़ बढ़ रहा है। चुनाँचे जब बच्चा महसूस करता, अल्लाह तआला सबको रिज़्क़ दे रहे हैं तो मोहसिन के साथ मुहब्बत तो फ़ितरी चीज़ है। बच्चे के दिल में अल्लाह तआला की मुहब्बत पैदा हो गई। वह मुहब्बत से अल्लाह तआला का नाम लेता। वह सोने से पहले वालिदा से अल्लाह तआला की बातें पूछता। माँ खुश होती कि मेरे बेटे के दिल में अल्लाह तआला की मुहब्बत बस रही है।

कुछ दिन तक सिलसिला इसी तरह चलता रहा। मगर एक दिन यह हुआ कि माँ अपने रिश्तेदारों में किसी तक़रीब में चली गई और वहाँ जाकर वक़्त का ख़्याल न रख सकीं, भूल गयीं। जब ख़्याल आया तो पता चला कि बच्चे के आने का वक़्त काफ़ी देर हुई गुज़र चुका है। माँ ने बुर्क़ा लिया और अपने घर की तरफ़ तेज़ क़दमों से चल दीं। रास्ते में रो भी रही है, दुआएं भी कर रही हैं, मेरे मालिक! मैंने तो अपने बच्चे का यक़ीन बनाने के लिए यह सारा मामला किया था। ऐ अल्लाह! अगर आज मेरे बच्चे का यक़ीन टूट गया तो मेरी मेहनत ज़ाए हो जाएगी। ऐ अल्लाह! पर्दा रख लेना, अल्लाह! मेरी मेहनत को ज़ाए होने से बचा लेना। माँ दुआएं करती आ रही हैं। जब घर पहुँची तो देखती हैं कि बेटा आराम की नींद सो रहा है। माँ ने जल्दी से खाना पकाया और छिपाकर रख दिया। फिर आकर बच्चे के रुख़सार का बोसा लिया। उसे जगाकर सीने से लगाया। कहने लगी बेटा! आज तो तुझे बहुत भूख लगी होगी। बच्चा चाक चौबंद बैठ गया। कहने लगा, अम्मी मुझे तो भूख नहीं लगी। माँ ने पूछा वह कैसे? तो बच्चे ने कहा अम्मी जब में मदरसे से आया तो मैंने मुसल्ला बिछाया और मैंने दुआ मांगी, ऐ अल्लाह! भूख लगी हुई है, थका हुआ भी हूँ, आज तो अम्मी भी घर पर नहीं है, अल्लाह मुझे खाना दे दो। अम्मी! उसके बाद मैंने कमरे में तलाश किया, मुझे एक जगह रोटी पड़ी मिली। अम्मी! मैंने उसे खा लिया मगर जो मज़ा आज आया अम्मी ऐसा मज़ा मुझे ज़िंदगी में कभी नहीं आया था। सुब्हानअल्लाह! माँएं बच्चों की तर्बियत ऐसे किया करती थीं और अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उन्हें क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रह० बना देते थे। चुनाँचे मुग़ल बादशाहों के शेख़ बने और अपने वक़्त में लाखों इंसान उनके मुरीद बने तो एक और कामयाब हस्ती के पीछे आपको औरत का किरदार माँ की शक्ल में नज़र आएगा। यह मिसालें इतनी ज़्यादा हैं कि इंसान हैरान ही हो जाता है।

जिगर के टुकड़े को बावुज़ू दूध पिलाकर तो देखिए

ख़्वाजा अजमेरी रह० ने बंगाल का सफ़र किया। आपके सफ़र में कई लोग आपके हाथ पर मुसलमान हुए। कई लोगों ने तौबा पर बैअत की। जब आप घर तशरीफ़ लाए तो चेहरे पर ख़ुशी के आसार थे। माँ ने पूछा मुईनुद्दीन बहुत ख़ुश नज़र आते हो? कहने लगे कि अम्मा! इसलिए कि सात लाख हिन्दुओं ने मेरे हाथ पर इस्लाम क़ुबूल किया और सत्तर लाख मुसलमानों ने मेरे हाथ पर बैअत तौबा की, इसलिए आज मेरा दिल बहुत ख़ुश है। माँ ने कहा, बेटा! यह तेरा कमाल नहीं है। यह तो मेरा कमाल है। फ़रमाया, मगर बताएं तो सही कैसे? माँ ने जवाब दिया कि बेटा जब तुम पैदा हुए तो मैंने कभी भी ज़िंदगी में तुम्हें बिला वुज़ू दूध नहीं पिलाया। आज उसकी बरकत है कि तुम्हारे हाथों पर अल्लाह तआला ने लाखों लोगों को कलिमा पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दी। तो एक और कामयाब हस्ती के पीछे आपको एक औरत का किरदार नज़र आएगा बहैसियत माँ के।

बा वुज़ू दूध पिलाने का नमूना तो पढ़िए

मैंने अख़बार में सरगोधा की एक औरत का इंटरव्यू पढ़ा। उसके दो बेटे थे। दोनों अपने अपने वक़्त में फ़ौज के जर्नल बने। उनसे किसी ने इंटरव्यू लिया तो ख़ुशनसीब माँ है कि जिसके दो बेटे और दोनों ऐसे शेर बेटे कि अपने अपने वक़्त में जर्नल बने, तेरी कौनसी ख़ास बात है? तूने उनकी तर्बियत कैसे की? उसने कहा था कि मैं सादा सी मुसलमान औरत हूँ मगर किसी बुज़ुर्ग से मैंने सुना था कि जो औरत बावुज़ू अपने बच्चे को दूध पिलाएगी अल्लाह बच्चे को भाग लगाएंगे। मैंने दोनों बच्चों को अलहम्दुलिल्लाह बावुज़ू पिलाया है। हो सकता है कि अल्लाह तआला ने मेरे इस अमल के सदक़े में

दुनिया में इज़्ज़त व वक़ार अता फ़रमाया। चुनाँचे जो औरतें ऐसी नेकी को अपना लेती हैं, अल्लाह तआला उनके बच्चों को नेकबख़्त बना देता है। अपनी ज़िंदगी में ख़ुशियाँ देखने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमा देता है। जो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की नाफ़रमानी करती हैं अल्लाह तआला उन्हें आँखों से दिखाता है कि देख मैंने तुम्हें औलाद मर्ज़ी की न दी और अगर दे भी दी तो उसे नाफ़रमान बना दिया।

वालदैन की ख़िदमत पर ग़ैबी नुसरत

हज़रत थानवी रह० ने बरकत का एक अजीब वाक़िआ लिखा है कि एक नौजवान था। उसने अपने वालदैन की बड़ी ख़िदमत की। भाईयों से कहा जाएदाद का हिस्सा आपके सुपुर्द करता हूँ, वालदैन की ख़िदमत आप मेरे सुपुर्द कर दें। सौदा कर लिया। चुनाँचे उसने माँ-बाप की ख़ूब ख़िदमत की। माँ-बाप फ़ौत हो गए। उसने ख़्वाब में देखा कि कोई उससे कहता है कि फलां पत्थर के नीचे सौ दीनार मिलेंगे क्योंकि तूने माँ-बाप की बड़ी ख़िदमत की है। पूछा उसमें बरकत होगी? कहा, बरकत नहीं होगी। नौजवान ने कहा मैं नहीं लूंगा। सुबह को उठा, बीवी को बताया, बीवी ने कहा बेशक न लेना लेकिन जाकर देख तो सही, पड़े हुए भी हैं या नहीं पड़े हुए। उसने कहा जब लेने नहीं तो मैं जाकर देखता भी नहीं। दूसरी रात फिर ख़्वाब आया कि दस दीनार फ़लां पत्थर के नीचे पड़े हैं। अभी मौक़ा है ले लो, तुम्हारी ख़िदमत के बदले मिल रहे हैं। पूछा बरकत होगी? कहा बरकत तो नहीं होगी। नौजवान कहने लगा मुझे नहीं चाहिए। तीसरी रात फिर ख़्वाब आया कि फ़लां पत्थर के नीचे एक दीनार पड़ा है। अब जाकर ले लो, अब मौक़ा है। पूछा बरकत होगी? कहा, हाँ बरकत होगी। यह सुबह उठा, उस पत्थर के नीचे से जाकर दीनार उठाकर ले आया। घर आते हुए ख़्याल आया क्यों न आज मैं घर में

पकाने के लिए अच्छी चीज़ ले जाऊँ। उसने मछली ख़रीदी। जब घर आया और उसकी बीवी ने मछली को काटा तो उस मछली के पेट से एक ऐसा मोती निकला जिसको बेचा तो उनकी ज़िंदगी का पूरा ख़र्चा निकल आया। यह बरकत आती है। अल्लाह तआला ऐसी जगह से रिज़्क देता है कि इंसान को वहम व गुमान भी नहीं होता।

कुत्ता बेहतर या माँ?

अमरीका की एक रियासत में एक माँ ने अपने बेटे के ख़िलाफ़ मुक़दमा किया। वह मुक़दमा अख़बरात की भी ज़ीनत बना और टीवी में भी इसकी तफ़्सील आई। माँ ने मुक़दमा किया कि मेरे बेटे ने घर में कुत्ता पाला हुआ है और यह रोज़ाना तीन चार घंटे उस कुत्ते के साथ लगाता है। यह उसे नहलाता है। उसकी ज़रूरतें पूरी करता है। उसको अपने साथ टहलाने के लिए भी ले जाता है, वह अपने कुत्ते को रोज़ाना सैर भी करवाता है। उसे खिलाता पिलाता भी है। मैं भी उसी घर के दूसरे कमरे में रहती हूँ लेकिन यह मेरे कमरे में पाँच मिनट के लिए भी नहीं आता। इसलिए अदालत को चाहिए कि वह मेरे बेटे को पाबंद करे कि वह रोज़ाना एक मर्तबा मेरे कमरे में आया करे।

जब माँ ने मुक़दमा किया तो बेटे ने भी मुक़दमा लड़ने के लिए तैयारी कर ली। माँ ने भी वकील बना लिया और बेटे ने भी वकील बना लिया। जब दोनों के वकील जज साहब के सामने पेश हुए तो जज साहब ने मुक़दमे की सुनवाई के बाद फ़ैसला दिया कि अदालत आपके बेटे को आपके कमरे में आने के लिए मजबूर नहीं कर सकती क्योंकि मुक़ामी क़ानून है कि जब औलाद 18 साल की उम्र को पहुँच जाए, उसको हक़ हासिल होता है कि वह अपने माँ-बाप को चाहे तो कुछ वक़्त दे या बिल्कुल अलैहिदगी अपना ले। रही बात कुत्ते की तो कुत्ते के उसके ऊपर हक़ूक़ हैं जिनको अदा करना उसकी ज़िम्मेदारी

है। अलबत्ता अगर माँ को कोई तकलीफ़ है तो उसको चाहिए कि वह हुकूमत से राब्ता क़ायम करे, वह उसे बूढ़ों के घर में ले जाएंगे और वहाँ जाकर उसकी ख़बरगीरी करेंगे। अब बताइए कि जहाँ माँ बेटे का यह ताल्लुक होगा वहाँ ज़िंदगी सुकून से कैसे गुज़रेगी।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 5/95)

सफ़ेद फ़ाम और कुत्ते में कौन वफ़ादार?

हमारे एक दोस्त कहने लगे कि मैं हवाई जहाज़ में सफ़र कर रहा था। मेरे बिल्कुल करीब एक जोड़ा बैठा हुआ था। पहले तो वे अपने ही कामों में लगे रहे। कुछ देर के बाद फ़ारिग़ हुए तो उन्होंने मुझसे हैलो हाय कहा। मैंने उनसे पूछा (How many kids have you?) कि तुम्हारे कितने बच्चे हैं? वे दोनों मियाँ-बीवी जवाब देने लगे कि (We would like to have a dog.) कि हम बच्चों के बजाए घर में एक कुत्ता पालना पसंद करेंगे। वे कहते हैं कि मैं हैरान हुआ और उनसे पूछा, भई! आप कुत्ता पालना क्यों पसंद करेंगे? कहने लगे इसलिए वह बच्चों से ज़्यादा वफ़ादार होता है। जब माँ-बाप का औलाद के बारे में यह तसव्वुर हो तो औलाद का माँ-बाप के बारे में क्या तसव्वुर होगा। इसलिए औलाद ज़रा बड़ी होती है तो माँ-बाप को सामने कह देती है—

You enjoyed your life and now let me enjoy my life.

कि आपने अपनी ज़िंदगी के मज़े लिए अब हमें अपनी ज़िंदगी के मज़े लेने दें। उनके दिलों में इतनी बेमुरव्वती नज़र आती है जैसे ख़ून बिल्कुल सफ़ेद हो गए हैं।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 5/94)

❋ ❋ ❋

بسم الله الرحمن الرحيم

﴿وما خلقت الجن والانس الا ليعبدون.﴾

इबादत

व

रियाज़त

इबादत व रियाज़त

रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जिगर के टुकड़े का ज़ौक़े इबादत

सय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के बारे में आता है कि सर्दियों की लंबी रात है। इशा की नमाज़ पढ़कर उन्होंने दो रकुअत नफ़्ल की नीयत बांध ली। क़ुरआन में ऐसी लज़्ज़त मिली, दिल में ऐसी चाश्नी थी कि क़ुरआन पाक पढ़ने में लुत्फ़ आ रहा था। पढ़ती रहीं, पढ़ती रहीं। रुकू व सज्दे में लुत्फ़ आ रहा था। जी नहीं चाहता था कि सज्दे से सर उठाएं। लिहाज़ा जब दो रकुअतें पूरी कीं और दुआ के लिए हाथ उठाए तो देखा की सहरी का वक़्त होने वाला है। रोने बैठ गयीं। कहने लगीं, या अल्लाह! तेरी रातें कितनी छोटी हो गयीं, मैंने दो रकुअत पढ़ीं और तेरी रात मुकम्मल हुई। तो उन औरतों को रातों के छोटा होने का शिकवा हुआ करता था। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 1/153)

तीरों पर तीर खाते रहे मगर...

मशहूर रिवायत है कि दो आदमियों की ड्यूटी लगी कि तुम पहाड़ की चोटी पर जाओ और पहरा दो। दोनों ने सोचा कि दोनों जागेंगे तो आख़िरी रात में सो जाएंगे। लिहाज़ा यह तय पाया कि एक जागे और दूसरा सोए। अब जागने वाले ने यह सोचा कि मैं जाग ही रहा हूँ तो क्यों न क़ुरआन ही पढ़ लूँ। उन्होंने दो रकुअत की नीयत बांध ली। इतने में दुश्मन ने तीर मारा, फिर दूसरा मारा, फिर तीसरा मारा। अब उनके जिस्म से ख़ून निकल रहा है और इतना निकला कि उन्हें डर हुआ कि कहीं बेहोश होकर गिर गया तो ज़िम्मेदारी में कोताही होगी।

लिहाज़ा जल्दी से सलाम फेरकर साथी को जगाते हैं और कहते हैं कि अगर आज ज़िम्मेदारी निभाने में कोताही का डर न होता तो मैं तीरों पर तीर खाता रहता लेकिन पूरी सूरः कहफ़ पढ़े बग़ैर नमाज़ मुकम्मल न करता। उनको तीर लगते थे और हमारे करीब से मच्छर गुज़र जाए या मक्खी आकर बैठ जाए तो नमाज़ की कैफ़ियत चली जाती है। इसलिए कि क़ुरआन मजीद से लुत्फ़अंदोज़ नहीं हो रहे होते हैं। जब लुत्फ़ अंदोज़ होना शुरू कर देंगे तब उस वक़्त हमें क़ुरआन पढ़ने में मज़ा आएगा, अल्लाहु अकबर कबीरा। (दवाए दिल 61)

शहादत के वक़्त भी शौक़े इबादत

सईद बिन जुबैर रह० को जब हिज्जाज बिन युसूफ़ ने क़त्ल करना था तो पूछा कि तुम्हारी आख़िरी तमन्ना क्या है? फ़रमाने लगे कि दो रक्अत नफ़्ल पढ़ना चाहता हूँ। लिहाज़ा उन्होंने जल्दी-जल्दी नफ़्ल पढ़ लिए। हिज्जाज ने पूछा कि जल्दी क्यों पढ़ लिए? फ़रमाया जी तो चाहता था कि लम्बा क़याम, रुकू करूं मगर दिल में ख़्याल आया कि तू यह सोचेगा कि मौत के डर की वजह से नमाज़ लम्बी कर ली। इसलिए मैंने जल्दी पढ़ लीं। अब ज़रा सोचिए इधर जल्लाद उनका सर क़लम करने को तैयार है और उधर उनकी हालत यह है कि जी तो चाहता था कि दो रक्अत लम्बी पढ़ लेता। इसकी क्या वजह थी? उनको अल्लाह तआला ने नमाज़ के अंदर लुत्फ़ अता फ़रमा दिया था। उनके लिए रातों का जागना कोई मुश्किल नहीं था।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 5/128)

इमामे आज़म रह० का मामूल

इमामे आज़म रह० भी दोपहर के वक़्त क़ैलूला की नीयत से सो जाते थे और पूरा वक़्त इबादत में गुज़ारते थे। यह बात पहले समझ

में नहीं आती थी लेकिन ज़िक्र की लाइन में लगने के बाद आख़िर समझ में आ गई कि हमारे मशाइख़ को सारी सारी ज़िंदगी इबादत की तौफ़ीक़ मिल जाती थी। अल्लाह तआला उनकी नींद के वक़्त में बरकत दे देते थे। चुनाँचे थोड़ी देर की नींद उनके जिस्म को सुकून दे देती थी। उनके नज़दीक सोना बराए सोना तो होता नहीं। नींद का मक़सद तो जिस्म को राहत देना होता है कि जिस्म ताज़ा दम हो जाए और फिर काम में लग जाए। इसीलिए हज़रत मुर्शिद आलम रह० अपने आख़िरी दिनों में फ़रमाया करते थे। अब मेरे लिए दिन और रात का फ़र्क़ ख़त्म हो गया है। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 11/157)

जज़्बा इबादत की क़द्र व मंज़िलत

इमाम अहमद बिन हंबल रह० के पड़ौस में एक लोहार रहता था। जब वह फ़ौत हुआ तो बाद में किसी मुहद्दिस ने ख़्वाब में देखा, उसने पूछा, सुनाइए, आगे क्या मामला पेश आया? वह कहने लगा कि मुझे भी अहमद बिन हंबल के दर्जे में रख दिया गया है और अब मैं उनके साथ रह रहा हूँ। जिस मुहद्दिस ने यह ख़्वाब देखा वह बड़े हैरान हुए कि यह लोहार तो सारा दिन लोहा कूटता था और इमाम अहमद बिन हंबल दीन का काम करने वाले थे और मसअला ख़ल्के क़ुरआन के मामले में क़ुर्बानियाँ देने वाले अल्लाह के मक़बूल बंदे थे। इस लोहार को उनका मर्तबा दे दिया गया। लिहाज़ा उन्होंने दूसरे मुहद्दिस को बताया। उन्होंने जवाब दिया कि इसको कोई न कोई अमल ऐसा है जो अल्लाह के यहाँ पसंद आ गया।

उन्होंने कहा अच्छा उनके घर वालों से पता करता हूँ। लिहाज़ा उन्होंने उस लोहार की बीवी से जाकर कहा कि मैंने तुम्हारे ख़ाविन्द को ख़्वाब में बड़े अच्छे दर्जे में देखा है। मुझे लगता है कि अल्लाह तआला को उसका कोई अमल पसंद आ गया है। आप मुझे उसका

कोई ख़ास अमल बताएं। उसने जवाब दिया कि वह एक अयालदार और ग़रीब आदमी था। सारा दिन भट्टी में लोहा कूटता रहता था और वक़्त पर नमाज़ें भी पढ़ता था। इसके अलावा उसकी कोई ख़ास इबादत नहीं होती थी। उन्होंने कहा, फिर भी ज़रा सोचकर बताएं। उसकी बीवी ने सोचकर बताया कि मुझे उसकी ज़िंदगी में दो बातें नुमाया महसूस हो रही हैं, एक तो यह कि उसके अंदर नमाज़ और अज़ान का इतना अदब था कि अगर लोहा कूटते हुए कभी उसका हाथ ऊपर होता और उसके हाथ में हथौड़ा होता और ठीक उसी लम्हे अल्लाहु अकबर की आवाज़ आती तो वह उसको मारने के बजाए रख देता था कि अब मेरे मालिक के मुनादी ने पुकारा है और मुझे अब उसके दरबार में हाज़िरी देनी है और दूसरी बात यह है कि वह सारा दिन मेहनत करके रात को थका हुआ आता था तो हम मियाँ बीवी बच्चों के साथ अपने घर की छत पर सोते थे और हमारे पड़ौस में इमाम अहमद बिन हंबल रह० रहते थे। इमाम अहमद बिन हंबल रह० सारी रात क़ुरआन पढ़ते हुए गुज़ार देते थे। यह उनकी तरफ़ देखता और हसरत से ठंडे साँस लेता और कहता कि मेरे बच्चे ज़्यादा हैं और घर में कोई एक बंदा भी ऐसा नहीं जो मेहनत कर सके। मुझे ही सारा दिन लोहा कूटना पड़ता है और इस मेहनत की वजह से इतना थक जाता हूँ कि मैं अल्लाह की इबादत नहीं कर सकता। अगर मेरी पीठ हलकी होती तो मैं भी इमाम अहमद बिन हंबल रह० की तरह क़याम करता। वह मुहद्दिस यह सुनकर फ़रमाने लगे कि अज़ान के इस अदब और दिल में नेकी का शौक़ रखने की वजह से अल्लाह तआला ने उसको इमाम अहमद बिन हंबल रह० का रुत्बा अता फ़रमा दिया।

सुब्हानअल्लाह! इससे पता चलता है कि अगर इंसान किसी ऐसे

माहौल में फंस जाए कि वह नेकी न कर सके तो कम से कम दिल में तपड़ ज़रूर रखनी चाहिए क्योंकि कभी-कभी अल्लाह तआला दिल की तड़प पर भी वह नेमत और अज्र अता फ़रमा देते हैं।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 11/229)

सफ़रे तैबा (मदीना) और ज़ौक़े इबादत

इमाम शाफ़ई रह० फ़रमाते थे कि मैं मक्का मुकर्रमा से मदीना तैय्यबा गया। मुझे जाते हुए सवारी के ऊपर 16 दिन लगे और 16 दिनों में मेरे 16 क़ुरआन पूरे हो गए। उन को क्यों इतना इबादत का शौक़ होता था? आपको फल खाने का शौक़ है, जूस पीने का शौक़ है, आइस क्रीम खने का शौक़ होता है। इसी तरह उन हज़रात को इबादत का शौक़ होता था। आपको अलग-अलग खाने खाकर मज़ा आता है। उनको मुख़्तलिफ़ इबादतें करके मज़ा आता है।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 5/127)

औरतें ज़ौक़े इबादत राबिया बसरिया रह० से पूछें

राबिया बसरिया रह० के पास एक आदमी दुआओं के लिए हाज़िर हुआ। वह उस वक़्त ज़ोहर की नमाज़ पढ़ रही थीं। उसने सोचा कि अच्छा मैं बाद में आऊँगा। जब वह बाद में आया तो वह नफ़्लें पढ़ रही थीं। फिर आया तो अस्र की नमाज़ पढ़ रही थीं। अस्र के बाद आया तो वह ज़िक्र व अज़्कार में मशग़ूल थीं। फिर आया तो मग़रिब की नमाज़ पढ़ रही थीं। फिर आया तो अव्वाबीन पढ़ रही थीं। फिर आया तो वह इशा पढ़ रही थीं। जब इशा के बाद आया तो देखा कि लंबी रकअत की नीयत बांधे हुए थीं। सलाम ही नहीं फेर रही थीं। वह बैठा रहा, बैठा रहा। जब बहुत थक गया तो कहने लगा, अच्छा सो जाता हूँ और फ़ज्र के बाद मिल लूंगा। फिर

फ़ज्र का वक़्त आया तो वह फ़ज्र की नमाज़ पढ़ रही थीं। उसके बाद वह इशराक़ पढ़कर थोड़ी देर के लिए लेटीं तो वह आदमी फिर आया। किसी ने बताया कि वह इशराक़ की नफ़्लें पढ़कर अभी लेटी हैं। वह कहता है कि मैं बस थोड़ी देर बैठा था कि वह घबराकर उठीं और आँखें मलकर कहने लगीं,

﴿اللهم انى اعوذبك من عين لا تشبع من النوم.﴾

ऐ अल्लाह मैं ऐसी आँखों से पनाह मांगती हूँ जो नींद से पुर नहीं होतीं।

यह कहकर उठ बैठीं और अल्लाह तआला की इबादत में मशग़ूल हो गयीं। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 11/156)

मेरी जनाज़े की नमाज़ वह पढ़ाए जिनकी...

जब हज़रत क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रह० की वफ़ात हुई तो कोहराम मच गया। जनाज़ा तैयार हुआ। एक बड़े मैदान में जनाज़ा पढ़ने के लिए लाया गया। मख़्लूक़ मोर व मगस की तरह जनाज़ा पढ़ने के लिए निकल पड़ी थी। इंसानों का एक बड़ा समुन्दर जो हद्दे निगाह तक नज़र आता था। यूँ मालूम होता था कि एक बिफरे हुए दरिया की मानिन्द यह मजमा है। जब जनाज़ा पढ़ाने का वक़्त आया, एक आदमी आगे बढ़ा। कहता है कि मैं वसी हूँ, मुझे हज़रत ने वसीयत की थी। मैं इस मजमे तक वसीयत पहुँचाना चाहता हूँ। मजमा ख़ामोश हो गया। वसीयत क्या थी। ख़्वाजा बख़्तियार काकी रह० ने यह वसीयत की कि मेरा जनाज़ा वह शख़्स पढ़ाए जिनके अंदर चार ख़ूबियाँ हों। पहली ख़ूबी यह हो कि ज़िंदगी में उसकी तकबीरे ऊला कभी क़ज़ा न हुई हो, दूसरी शर्त उसकी तहज्जुद की नमाज़ कभी क़ज़ा न हुई हो, तीसरी बात यह है कि उसने ग़ैर महरम

पर कभी भी बुरी नज़र न डाली हो, चौथी बात यह है कि इतना इबादत गुज़ार हो कि यहाँ तक कि उसकी अस्र की सुन्नतें भी कभी न छोड़ी हों। जिस शख़्स में ये चार ख़ूबियाँ हों वह मेरा जनाज़ा पढ़ाए। जब यह बात की गई तो मजमे को साँप सूंघ गया, सन्नाटा छा गया। लोगों के सर झुक गए। कौन है जो आगे क़दम बढ़ाए। काफ़ी देर हो गई यहाँ तक कि एक आदमी रोता हुआ आगे बढ़ा। हज़रत बख़्तियार काकी रह० के जनाज़े के क़रीब आया। जनाज़े से चादर हटाई और कहा क़ुतबुद्दीन आप ख़ुद तो फ़ौत हो गए, मुझे रुस्वा कर दिया। उसके बाद फिर मजमे के सामने अल्लाह को हाज़िर नाज़िर जानकर क़सम उठाई कि मेरे अंदर ये चारों ख़ूबियाँ मौजूद हैं। लोगों ने देखा यह वक़्त का बादशाह शम्सुद्दीन अलतमश था। अगर बादशाही करने वाले दीनी ज़िंदगी गुज़ार सकते हैं क्या हम दुकान करने वाले या दफ़्तर में जाने वाले ऐसी ज़िंदगी नहीं गुज़ार सकते। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमें नेकी करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 1/98)

आह तकबीरे तहरीमा फ़ौत हो गई

एक बार हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही रह० दारुलउलूम के सालाना जलसे में तश्रीफ़ लाए। हज़रत बावुज़ू थे। आप स्टेज से उठे ताकि नमाज़ के लिए मस्जिद में जाएं। आगे सलाम करने वालों का इतना मजमा था कि उन्होंने आपको घेर लिया। अब मजमे में बंदा बाज़ दफ़ा ऐसा घिर जाता है कि उसी को पता होता है, दूसरों को पता नहीं होता। बंदा सोचता है कि अब मैं क्या करूं। अब हज़रत चाहते थे कि लोग हटें और मैं मस्जिद तक पहुँचू। यहाँ तक कि जब मजमा हटाते हुए बड़ी मुश्किल से मजिस्द में पहुँचे तो जमात खड़ी हो चुकी थी और इमाम ने एक रक्अत पढ़ा ली थी। हज़रत ने

जमात के साथ नमाज़ पढ़ी और बड़ी हसरत के साथ कहा, "आज तेईस साल के बाद तकबीरे ऊला क़ज़ा हो गई।"

अब क़ज़ा होने में उनका कोई क़ुसूर नहीं था। जलसागाह के साथ ही मस्जिद थी। वह वक़्त से पहले नमाज़ के लिए तैयार भी थे और बावुज़ू भी थे। जा रहे थे मगर अल्लाह के बंदे दर्मियान में आ गए। वे जाने ही नहीं दे रहे थे। अल्लाहु अकबर तेईस-तेईस साल तक तकबीरे ऊला के साथ नमाज़ अदा की। (खुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 11/171)

सज्दे से सर उठाऊँ तो कैसे?

हज़रत मौलाना महमूदुल हसन गंगोही रह० नमाज़ का लंबा सज्दा किया करते थे। किसी ने वजह पूछी तो फ़रमाने लगे कि हर सज्दा करता हूँ तो दिल यह कहता है कि मालूम नहीं फिर यह मौक़ा मिले या न मिले। इसलिए मेरा सर उठाने को दिल नहीं चाहता।

इसी तरह मौलाना याह्या साहब रह० लंबा सज्दा करते थे। किसी ने कहा कि हज़रत इतना लंबा सज्दा? फ़रमाने लगे कि रिवायत में आया है कि ﴿الساجد يسجد على قدمى الرحمن﴾ सज्दा करने वाला अल्लाह के क़दमों पर सज्दा कर रहा होता है। तो जब सज्दा करता हूँ तो मुझे महसूस होता है कि अल्लाह तआला के क़दमों पर सर रख दिया। इसलिए मेरा सर उठाने को जी नहीं चाहता।

निशाने तेरी सुजूद जबीं पर हुआ तो क्या
कोई ऐसा सज्दा कर कि ज़मीन पर निशान रहे

(तमन्नाए दिल 122)

बावुज़ू ज़िंदगी गुज़ारने की तड़प

मुझे हज़रत मुजद्दिद अलफ़ेसानी रह० की औलाद में से एक

साहब के घर जाने का मौक़ा मिला। उनके बच्चे घर के ग्राउंड में फ़ुटबाल खेल रहे थे। नई आबादी थी, मस्जिद क़रीब नहीं थी। इसीलिए घर में ही जमात से नमाज़ अदा करना पड़ती थी। जब हमने मग़रिब की नमाज़ के लिए अज़ान दी और सफ़ें बनानी शुरू कीं तो हमने देखा कि वे बच्चे जो फ़ुटबाल खेल रहे थे, छोटे-बड़े सारे ही आए और आकर सफ़ बांधकर खड़े हो गए। मैंने घरवालों से पूछा कि इन बच्चों ने वुज़ू नहीं करना? उन्होंने कहा कि वुज़ू किया हुआ है। इस आजिज़ ने सोचा कि शायद उन्होंने सोचा होगा कि मेहमान आया हुआ है नमाज़ तो पढ़नी ही है इसलिए हम पहले से वुज़ू करके खेलते हैं। लेकिन नमाज़ पढ़ने के बाद घरवाले ने बताया कि हमारे ख़ानदान में ऊपर से मशाइख़ यह अमल चलता आ रहा है कि कोई बच्चा भी जब चार-पाँच साल की उम्र से बड़ा हो जाता है तो हम उसको हर वक़्त बावुज़ू रहने की तलक़ीन करते हैं। हमारे घर में आपकी किसी बंदे को भी जागते हुए होश की हालत में बेवुज़ू नहीं देखेंगे। आज के दौर में भी ऐसे लोग हैं कि जिनको बावुज़ू ज़िंदगी गुज़ारने की तड़प और तमन्ना होती है। ﴿كما تعيشون تموتون﴾ फ़रमाया, तुम जिस हाल में ज़िंदगी गुज़ारोगे तुम्हें उसी हाल में मौत आएगी।

बावुज़ू ज़िंदगी गुज़ारने वालों को अल्लाह तआला बावुज़ू मौत अता फ़रमाएंगे। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 5/125)

मस्जिद में गधा मैं तो नहीं...

एक देहाती का गधा मस्जिद में आ गया। मौलाना साहब ने देखा तो उसको एक डंडा लगाया। देहाती ने पूछा, मौलाना साहब! इसको डंडा क्यों मार रहे हो? उन्होंने कहा, मस्जिद में जो घुस आया। कहने लगा, क्या करूं वह जानवर है उसे पता नहीं था, कभी मुझे भी आपने मस्जिद में देखा है? (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 5/137)

अज़ान की मुख़्तलिफ़ ताबीर

इब्ने सीरीन रह० की ख़िदमत में एक आदमी आया और उसने कहा, हज़रत! मैंन ख़्वाब देखा है कि मैं अज़ान दे रहा हूँ। हज़रत ने फ़रमाया, तुझे इज़्ज़त मिलेगी। थोड़ी देर के बाद एक और आदमी आया और उसने भी कहा, हज़रत! मुझे ख़्वाब आया है कि मैं अज़ान दे रहा हूँ। हज़रत ने फ़रमाया, तुझे ज़िल्लत मिलेगी। और ऐसा ही हुआ। लोगों ने पूछा, हज़रत! यह क्या मामला है? फ़रमाया कि क़ुरआन मजीद में दो जगह अज़ान का लफ़्ज़ है।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 11/227)

बेवक़्त अज़ान देने वाले का ख़्वाब

इब्ने सीरीन रह० के पास एक आदमी आया और उसने कहा, हज़रत! मैंने ख़्वाब देखा है मैं मर्दों के मुँह पर और औरतों के पोशीदा आज़ा पर मुहर लगा रहा हूँ। उसने कहा, मैंने यह अजीब सा ख़्वाब देखा है। इसकी वजह से बहुत परेशान हूँ। आप मुझे इसकी ताबीर बता दें। इब्ने सीरीन रह० ने फ़रमाया कि पहली बात तो यह है कि लगता है तुम मौज़्ज़िन हो। उसने कहा, जी हाँ, मैं मौज़्ज़िन हूँ। फिर हज़रत ने फ़रमाया कि इस ख़्वाब की ताबीर यह है कि तुम रमज़ानुल मुबारक में सहरी के वक़्त तुलू फ़ज्र से पहले अज़ान दे देते हो और तुम्हारी वजह से लोगों का खाना पीना और जमा का मामला बंद हो जाता है। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 11/228)

मौसमे इबादत में अकाबिर की रियाज़त

हज़रत शेख़ुल हिन्द मौलाना महमूदुल हसन देवबंदी रह० की नमाज़ तरावीह उस वक़्त ख़त्म होती थी जब सहरी का वक़्त हो जाता था। चुनाँचे तरावीह ख़त्म करते ही सहरी खाते और साथ ही फ़ज्र की

नमाज़ के लिए तैयार हो जाते थे। सारी रात इबादत में गुज़ार देते। एक बार कई दिन मुसलसल मुजाहिदे से गुज़र गए तो घर की औरतों ने महसूस किया कि हज़रत रह० की तबियत में गिरावट और कमज़ोरी है। ऐसा न हो कि तबियत ज़्यादा ख़राब हो जाए तो उन्होंने मिन्नत समाजत की कि हज़रत! आप बीच में एक रात वक़्फ़ा कर लें, तबियत को कुछ आराम मिल जाएगा। फिर दस गुज़र जाएंगे लेकिन हज़रत फ़रमाने लगे कि मालूम नहीं आइंदा रमज़ान कौन देखेगा और कौन नहीं देखेगा। घर की औरतों ने किसी बच्चे के ज़रिए क़ारी को पैग़ाम भिजवाया कि क़ारी साहब आप किसी रात बहाना कर दें कि मैं थका हुआ हूँ, आराम करने को जी चाहता है। (हज़रत की आदते शरीफ़ा थी कि दूसरे के उज़्र को बड़ी जल्दी क़ुबूल कर लिया करते थे।) क़ारी साहब ने कहा, बहुत अच्छा कि वह मेरे शेख़ व मुर्शिद हैं, उन पर इस वक़्त कमज़ोरी और ज़ोफ़ ग़ालिब है। तो चलो आज की रात ज़रा आराम से गुज़रेगी। क़ारी साहब तरावीह पढ़ाने के लिए आए तो कहने लगे कि हज़रत! आज मेरी तबियत बहुत थकी हुई है, इसलिए आज मैं ज़्यादा तिलावत नहीं कर सकूंगा। हज़रत रह० ने फ़रमाया, हाँ बहुत अच्छा, आप बिल्कुल बहुत थोड़ी सी तिलावत करें। क़ारी साहब आप थके हुए हैं, आप अपने घर न जाइए बल्कि यहीं मेरे बिस्तर पर सो जाएं। क़ारी साहब को मजबूरन तामील करना पड़ी। हज़रत के बिस्तर पर लेट गए। हज़रत ने फ़रमाया क़ारी साहब! आप बिल्कुल आराम करें और सो जाएं फिर लाइट बुझा दी और किवाड़ बंद कर दिए। क़ारी साहब फ़रमाते हैं कि जब थोड़ी देर के बाद मेरी आँख खुली तो कोई बंदा मेरे पाँव दबा रहा है, मुठ्ठी भींच रहा है। मैं हैरान होकर बैठा। जब क़रीब हो कर देखा तो मेरी हैरत की इंतिहा न रही कि मेरे पीर मुर्शिद हज़रत शेख़ुल हिंद रह० अंधेरे में बैठे मेरे पाँव दबा रहे हैं। मैंने कहा, हज़रत! आपने यह क्या किया? फ़रमाने लगे, क़ारी साहब! आप ने ख़ुद ही तो कहा था कि मैं थका हुआ हूँ तो

मैंने सोचा कि चलो मैं आपके पाँव दबा देता हूँ। आपको कुछ आराम मिल जाएगा। क़ारी साहब कहने लगे, हज़रत! अगर आपको रात जागकर ही गुज़ारनी है तो चलें मैं क़ुरआन सुनाता हूँ आप क़ुरआन सुनते रहें। रात यूँ बसर हो जाएगी। चुनाँचे क़ारी साहब फिर मुसल्ले पर आ गए। उन्होंने क़ुरआन पढ़ना शुरू कर दिया। हज़रत ने क़ुरआन सुनना शुरू कर दिया, अल्लाहु अकबर।

सौम (रोज़ा)

माहे रमज़ान में यकसू हो जाइए

हज़रत रायपुरी रह० के मामूलात में लिखा है कि जब 29 शाबान का दिन होता था तो अपने मुरीदीन व मुतवस्सिलीन को जमा फ़रमा लेते और सबको मिल लेते और फ़रमाते भई! अगर ज़िंदगी रही तो अब रमज़ान के बाद मुलाक़ात होगी और अपने ख़ादिम को बुलाते और उसे एक बोरी दे देते और फ़रमाते रमज़ानुल मुबारक में जितने ख़ुतूत आएं वे सब इस बोरी में डाल देना, ज़िंदगी रही तो रमज़ानुल मुबारक के बार खोलकर पढ़ेंगे। रमज़ानुल मुबारक में डाक नहीं देखा करते थे। फ़रमाते थे कि बस यह महीना मैंने अपने लिए मख़्सूस कर लिया है। अगर ज़िंदगी रही तो इसके बाद फिर दोस्तों से मुलाक़ात होगी। आपके हाँ पूरा रमज़ानुल मुबारक ऐतिकाफ़ की हालत में गुज़ारने का मामूल था। 29 शाबानुल मुअज़्ज़म के दिन जो शख़्स आपकी मस्जिद में बिस्तर लेकर जाता तो उसको मस्जिद में बिस्तर लगाने की जगह नहीं मिला करती थी। दूर दराज़ से लोग रमज़ानुल मुबारक का महीना वहाँ गुज़ारने के लिए आते थे और पूरा रमज़ानुल मुबारक यादे इलाही में गुज़ार दिया करते थे।

एक अमरीकी ग़ैर-मुस्लिम का एतिराफ़

मुझे एक साहब मिले। कहने लगे, मैं रोज़े रखता हूँ। वह अमरीकन थे। मैंने कहा वह क्यों? तुम तो ग़ैर-मुस्लिम हो, तुम रोज़े कैसे रखते हो? कहने लगे कि साल में कुछ वक़्त इंसान पर ऐसा भी गुज़रना चाहिए कि वह डाइटिंग करे। जब हम कुछ अरसे के लिए डाइजेस्टिव सिस्टम (निज़ामे हज़्म) को फ़ारिग़ रखते हैं तो जिस्म के अंदर कुछ रतूबतें ऐसी होती हैं जो कि ख़त्म हो जाती हैं, बहुतसी पेचीदा बीमारियाँ ख़त्म हो जाती है। भूखा रहने से डाइजेस्टिव सिस्टम पहले से ज़्यादा मज़बूत हो जाता है और बेहतर तरीक़े से काम करने के क़ाबिल हो जाता है, मैंने और मेरी बीवी ने यह फ़ैसला किया है कि हम साल में एक महीने इस तरह रोज़ा रखकर डाइटिंग किया करेंगे। मैंने उसे बताया कि यह सुन्नत है कि हर महीने अय्यामे बीज़ के तीन रोज़े रखें। ख़ासतौर पर वे लोग जो ग़ैर-शादी शुदा हों वे ज़्यादा कसरत से रोज़ा रखें। यह भूखा रहना इंसान के अंदर डिसीपिलिन और सब्र व ज़ब्त पैदा करता है। ग़ैर-शदीशुदा को इसकी ज़्यादा तलक़ीन की गई है ताकि उसकी शहवानी क़ुव्वत मुनासिब रह सके। आज के ग़ैर-मुस्लिम इसके अंदर माद्दी फ़ायदा देखकर इसको अपनाने की कोशिश कर रहे हैं। फ़क़ीर ने सुन्नत नबवी में सौ से ज़्यादा ऐसी मिसालें देखी हैं जिनको हू-ब-हू साइंस की दुनिया तसलीम करती है। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 1/198)

फ़्रांस के एक सर्जन की तहक़ीक़

तबलीग़ी जमात के एक दोस्त फ़्रांस गए। वह फ़रमाते हैं कि वहाँ मैं वुज़ू कर रहा था तो एक आदमी खड़ा ग़ौर से देख रहा है। मैंने महसूस किया लेकिन ख़ैर वुज़ू करता रहा। जब मैंने वुज़ू मुकम्मल

किया तो उसने मुझे बुलाकर पूछा कि आप कौन हैं? मैंने कहा मुसलमान हूँ, कहाँ से आएं हो? मैंने कहा पाकिस्तान से, कहने लगा कि पाकिस्तान में कितने पागलख़ाने हैं? बड़ा अजीब सा सवाल था। मैंने कहा दो हैं या चार, मुझे तो पता नहीं। वह कहने लगा, You do not know? तुम नहीं जानते? मैंने कहा, नहीं। कहने लगा, यह अभी आपने क्या किया? मैंने कहा वुज़ू किया। कहने लगा रोज़ाना करते हैं? मैंने कहा बल्कि दिन रात में पाँच दफ़ा करते हैं। वह कहने लगा, Oh I see. मैंने जब उससे पूछा भई आपका क्या मतलब है? वह कहने लगा, मैं यहाँ पागल लोगों के हस्पताल में सर्जन हूँ, मैं तहक़ीक़ करता हूँ कि लोग पागल क्यों होते हैं? मेरी तहक़ीक़ यह है कि इंसान के दिमाग़ के सिगनल पूरे जिस्म के अंदर जाते हैं तो हमारे जिस्म के आज़ा काम करते हैं। इस दिमाग़ से कुछ बारीक बारीक रगें हमारी गर्दन की पुश्त से पूरे जिस्म को जा रही हैं। मैंने रिसर्च की है कि अगर बाल बहुत बढ़ा दिए जाएं और गर्दन के पिछले हिस्से को बहुत ख़ुश्क रखा जाए तो रगों के अंदर कई दफ़ा ख़ुश्की पैदा होती है, रगें खिंचती हैं तो कई दफ़ा ऐसा भी होता है कि इंसान का दिमाग़ काम करना छोड़ देता है। इसलिए डाक्टरों ने सोचा कि इस जगह को दिन में चार दफ़ा तर रखना चाहिए। मैंने आपको देखा कि आपने हाथ मुँह तो धोया ही है लेकिन गर्दन की पिछली तरफ़ भी आपने कुछ किया। इसलिए आप लोग कैसे पागल हो सकते हैं।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 1/99)

औरत मर्द के बराबर सवाब में

एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में एक सहाबिया रज़ियल्लाहु अन्हा आयीं और अर्ज़ करने लगीं कि मैं औरतों की तरफ़ से नुमाइंदा बनकर आई हूँ और आप से सवाल पूछना चाहती हूँ। मर्द लोग नेकी में हमसे आगे निकल गए, फ़रमाया : वह

कैसे? कहने लगी कि मर्द लोग मस्जिद में जाकर जमात के साथ नमाज़ पढ़ते हैं, उन्हें अज्र व सवाब ज़्यादा मिलता है, जिहाद में आपके साथ शरीक होते हैं, हम घरों में बैठी रहती हैं तो हमें ये नेकियाँ नहीं मिलतीं। मर्द हम से आगे निकल गए। अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : "पूछने वाली ने बहुत अच्छा सवाल पूछा।" फिर आपने फ़रमाया : जो औरत घर के अंदर नमाज़ पढ़ लेती है उसको उस मर्द के बराबर सवाब मिलता है जो मस्जिद में जाकर नमाज़ पढ़ लेता है। अल्लाह तआला फ़र्ज़ नमाज़ मस्जिद में जाकर अदा करने वाले के बराबर सवाब अता फ़रमा देते हैं और फिर यह भी फ़रमाया जो औरत अपने बच्चे की ख़ातिर रात को जागती है (बच्चा दूध के लिए जागा या अपनी किसी क़ज़ाए हाजत के लिए जागा और माँ को जागना पड़ा) फ़रमाया : जो औरत अपने बच्चों की वजह से रात को जागती है। अल्लाह तआला इसको उस मुजाहिद के बराबर अज्र अता फ़रमाते हैं जो सरहद पर खड़ा होकर सारी रात पहरा देता है, सुब्हानअल्लाह। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 1/157)

टीले के बराबर आटा सदक़ा करने का अज्र

एक मर्तबा बनी इस्राईल में क़हत पड़ा। लोग भूख से मरने लगे। एक आदमी शहर से बाहर निकलने लगा। तो उसने अपने सामने रेत का एक टीला देखा जो पहाड़ की तरह था। यह देखकर उसके दिल में बात आई कि अगर मेरे पास इतना आटा होता तो मैं शहर के सारे लोगों में तक़्सीम कर देता। हदीस पाक में आया है कि अल्लाह पाक ने फ़रिश्ते को उस वक़्त हुक्म दिया कि जाओ और मेरे बंदे के नामाए आमाल में इतना आटा सदक़ा करने का अज्र लिख दो।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 11/230)

● ● ●

بسم الله الرحمن الرحيم

﴿واتموا الحج والعمرة لله.﴾

हज बैतुल्लाह

हज बैतुल्लाह

माज़ूर मुश्ताक़े हरम की कर्बनाक रूदादे सफ़र

एक नौजवान की बात किताबों में लिखी है। मालिक बिन दीनार रह० फ़रमाते हैं कि गर्मी का मौसम था और इतनी गर्मी थी कि परिन्दे भी पेड़ों के साए में छिपकर बैठ गए थे। सूरज आग बरसा रहा था। कोई जानदार बाहर नज़र नहीं आ रहा था। इतने में मुझे किसी ज़रूरी काम से बाहर निकलना पड़ गया। मैंने देखा कि एक नौजवान जो दोनों पैरों से मुहताज है। वह अपने कुल्हों के बल ज़मीन के ऊपर घिसटता घिसटता आ रहा है। मैं हैरान हुआ। जब क़रीब आया तो मैंने देखा कि उसका चेहरा गर्मी की वजह से लाल हो चुका था और उसके कपड़े पसीने से तर हो चुके थे। मैंने सलाम किया, उसने सलाम जवाब दिया। तआरुफ़ हुआ। पूछा कहाँ जा रहे हो। जवाब दिया हज के लिए जा रहा हूँ। मैंने उसे कहा कि देखो तुम मेरे घर के अन्दर थोड़ा आराम कर लो। जब गर्मी ज़रा कम होगी अस्र के वक़्त तो फिर चल पड़ना वह कहने लगा कि मालिक बिन दीनार आप तो पाँव के बल चलते हो, सफ़र जल्दी तय होता है मैं तो कूल्हों के बल घिसट घिसट कर चल रहा हूँ मुझे वक़्त ज़्यादा लगता है। मुझे डर है कि कहीं ऐसा न हो कि सफ़र लम्बा है, मुझे वक़्त ज़्यादा लग जाए और कहीं हज के दिन ही न निकल जाएं। इसलिए मैं रास्ते में रुक नहीं रहा। मैंने कहा ऐ अल्लाह के बन्दे! तुम रुक जाओ हम सवारी का इन्तेज़ाम कर देते हैं। तुम बजाए पैदल जाने के सवारी पर सवार होकर चले जाओ। कहते हैं कि जब यह कहा तो उस नौजवान ने गुस्से की नज़र से मेरी तरफ़ देखा और कहने लगा मालिक बिन

दीनार मैं तुम्हें अक़्लमंद समझता था। आज पता चला कि तुम अक़्ल से बिल्कुल कोरे हो। मैंने कहा वह कैसे? अर्ज़ किया कि तुम बताओ अगर किसी ग़ुलाम ने अपने मालिक का जुर्म किया हो, नाफ़रमानी की हो और फिर वह सोचे कि अपने मालिक को मनाने के लिए जाऊँ। अब बताओ उस ग़ुलाम को सवार होकर जाना अच्छा लगता है या पैदल? अपने मालिक की ख़िदमत में तो आजिज़ी के साथ पेश होना अच्छा लगता है। मालिक बिन दीनार रह० फ़रमाते हैं कि मुझे उसकी बात ने हैरान कर दिया। ख़ैर वह तो चला गया और मैं बात भूल गया। फ़रमाते हैं कि मैंने उसी साल हज किया और जब मैं शैतान को कंकरियाँ मारकर वापस लौटा तो मैंने देखा कि एक जगह मजमा है। मैंने पूछा क्या है। कहने लगे एक नौजवान है दुआएं मांग रहा है और उसकी दुआएं ऐसे इश्क़ व मुहब्बत में डूबी हुई हैं। लोग खड़े सुन रहे हैं। मैंने कहा ज़रा मुझे भी देखने दो। रास्ता लिया, जब देखा कि तो वही नौजवान दुआएं कर रहा था और कह रहा था कि ऐ अल्लाह तेरी मेहरबानी शामिले हाल हो जाए, मैंने तेरे घर का तवाफ़ किया, हज्रे असवद को भी बोसा दिया, मैंने मक़ामे इब्राहीम पर भी सज्दे किए, काबे के ग़िलाफ़ को पकड़कर भी दुआएं मांगी, अल्लाह वक़ूफ़े अरफ़ात में भी हाज़िर हुआ, मुज़दलफ़ा में भी हाज़िर हुआ। ऐ मालिक मैंने शैतान को भी कंकरियाँ माकर अपनी दुश्मनी का इज़्हार भी कर दिया। ऐ अल्लाह अब क़ुर्बानी का वक़्त आ गया है। सब गुंजाइश वाले लोग खड़ें हैं ये जाएंगे और जानवरों को क़ुर्बान करेंगे और मालिक तू जानता है कि मेरे पास तो एहराम के कपड़ों के सिवा कुछ और नहीं। ऐ अल्लाह आज मैं अपनी जान आपके नाम पर क़ुर्बान करना चाहता हूँ। मेरे मालिक मेरी इस क़ुर्बानी को क़ुबूल कर लीजिए। कहते हैं मजमे के सामने उसने यह बात कही और कलिमा पढ़ा और उसकी रूह परवाज़ कर गई। अल्लाह के चाहने

वाले ऐसे भी गुज़रे हैं। अल्लाह की मुहब्बत में जान देने वाले और अल्लाह के नाम पर जान देने वाले, अल्लाहु अकबर।

(तमन्नाए दिल स० 53)

हज़रत इब्राहीम बिन अद्हम रह० का पैदल सफ़र हज

हज़रत इब्राहीम बिन अद्हम रह० नीशापूर से हज करने चले और ढाई साल में मक्का मुकर्रमा पहुँचे। उन्होंने हर क़दम पर दो रकअत नफ़्ल पढ़ें जब वहाँ पहुँचे तो जाकर दुआ मांगी, ऐ अल्लाह! लोग तो तेरे घर में क़दमों के बल पहुँचते हैं और मैं पलकों के बल चलकर आया हूँ। हज का ताल्लुक़ माल से नहीं, आमाल से है। यह बात याद रखिएगा, इंशाअल्लाह फ़ायदा मिलेगा। महबूबे खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को राज़ी करने वाले आमाल अपनाओ, अल्लाह तआला रास्ता खोल देगा। (खुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 11/114)

हज माल से नहीं आमाल की बरकत से

1. चंद साल पहले की बात है कि पाकिस्तान में ही एक ऐसा मालदार आदमी था अगर वह चाहता तो वह पाकिस्तान से जाकर रोज़ाना उमरा कर सकता था। वह दर्जनों दफ़ा यूरोप और अमरीका तो गया है लेकिन उसे हज की तौफ़ीक़ न मिली। वह मुझे मिला तो मैंने पूछा कि आप हज व उमरा से महरूम क्यों हैं? ख़ैर उसने हज करने की आमादगी ज़ाहिर कर दी। जब हज करने का मौक़ा आया तो इन्कम टैक्स में उलझ गया जिसकी वजह से न जा सका। बाद में मिला तो पूछा, भई! हज पर क्यों नहीं गए? वह कहने लगा जी इन्कम टैक्स में उलझ गया था। मैंने कहा कुछ उलझ नहीं गए थे उलझा दिए गए थे, लिहाज़ा तौबा करो। (खुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 11/112)

2. एक सिविल इंजीनियर साहब थे। वह रिटायर हुए तो हमने उसे तर्ग़ीब दी कि आप पर हज फ़र्ज़ है क्योंकि आप हैसियतदार आदमी हैं। लिहाज़ा आप अपना फ़र्ज़ पूरा करें। आप अभी तो बड़ी आसानी से जा सकते हैं क्योंकि आपकी उम्र पैंसठ साल है। चुनाँचे उन्होंने हज के लिए दरख़्वास्त दे दी। उसकी दरख़्वास्त मंज़ूर हो गई और उसे ग्रुप लीडर बना दिया गया। इत्तिला आई कि फ़लां तारीख़ को आपकी फ़्लाइट है। पासपोर्ट बना, टिकट बनी और पासपोर्ट पर वीज़ा लग गया।

रवानगी से दो दिन पहले उसका बड़ा भाई उससे मिलने आया। उसने मिलकर उससे कोई ऐसी ज़हरीली बात कही कि उस बंदे ने हज पर जाने का इरादा तर्क कर दिया। हमने उसे बड़ा समझा था कि भई! चले जाओ। वह कहने लगा कि अब तो नहीं जाऊँगा अलबत्ता अगले साल चला जाऊँगा। अल्लाह की शान कि उसकी टिकट पर लिखा हुआ था कि फ़लां तारीख़ को जाना है और फ़लां तारीख़ को आना है, वह आदमी न गया।

लेकिन जिस तारीख़ को उसे वापस आना था उस तारीख़ के तीन दिन बाद उसको हार्ट अटैक हुआ और वह इस दुनिया से चला गया। अगर वह हज पर चला जाता जैसे हमने उसे सलाह दी थी उसके पिछले गुनाह भी माफ़ हो जाते और हज से वापस आकर तीन बाद तो उसका जाना मुक़द्दर था ही। इस तरह वह गुनाहों से पाक साफ़ होकर दुनिया से रुख़्सत हो जाता।

तवाफ़, काबा का या तजल्लियाते काबा का

जुनैद बग़दादी रह० फ़रमाते हैं कि मैं एक मर्तबा तवाफ़ कर रहा था। मैंने एक जवान लड़की को देखा। वह बड़े आशिक़ाना अश'आर पढ़ रही थी। जैसे कोई अपने महबूब के इश्क़ में डूबा होता है और

महबूब की मुलाक़ात के लिए बेक़रार होता है इसी तरह वह भी बेचैनी में आहें भर रही थी और आशिक़ाना अश'आर पढ़ रही थी। मैंने उस लड़की से कहा, ऐ लड़की! तू नौजवान है और तुझे ऐसे खुले खुले आशिक़ाना अश'आर पढ़ना सही मालूम नहीं देता। उसने मेरी तरफ़ देखा तो कहने लगी, जुनैद! मुझे यह बताओ कि तुम बैत का तवाफ़ कर रहे हो या रब्बुलबैत का का तवाफ कर रहे हो यानी क्या तुम घर का तवाफ़ कर रहे हो या घरवाले का तवाफ़ कर रहे हो? मैंने कहा कि मैं तो बैत का तवाफ़ कर रहा हूँ। जब मैंने यह कहा तो वह मुस्कराई और कहने लगी, हाँ जिनके दिल पत्थर होते हैं वे पत्थर के घर का तवाफ़ किया करते हैं, अल्लाहु अकबर। कुछ वे लोग होते हैं जो घर को देखकर आते हैं और कुछ लोग ऐसे होते हैं जो घर वाले की तजल्लियात को देखकर आते हैं। इसीलिए हज के बाद के तवाफ़ का नाम "तवाफ़े ज़ियारत" है। जी हाँ क़िस्मत वालों को ज़ियारत नसीब होती होगी। यह कैसे हो सकता है कि कोई घर बुलाए और मुलाक़ात न करे। कोई खुद आए और अगला मुलाक़ात से इंकार कर दे तो और बात होती है। बुलाकर तो कोई भी मुलाक़ात से इंकार नहीं करता। जी हाँ! अल्लाह तआला ने खुद इन अल्फ़ाज़ में हज के लिए बुलाया ﴿واذن فی الناس بالحج﴾ और उन लोगों के दर्मियान हज का ऐलान कर दो। मेरे प्यारे इब्राहीम! दो अज़ान, करो ऐलान कि आओ मेरे बंदो हज के लिए। जब उस महबूब ने बुलाया है तो अपना दीदार भी अता करता होगा। वाह मेरे मौला! वह बहुत ही अजीब जगह है। वहाँ पर अल्लाह तआला की तजल्लियात बारिश की तरह छम-छम बरस रही होती हैं। (खुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 11/115)

सत्तर तवाफ़ की दौलत कैसे नसीब...

एक बुज़ुर्ग के हालात ज़िंदगी में लिखा है कि सत्तर साल की उम्र

थी और सत्तर साल की उम्र में वह रोज़ाना सत्तर बार बैतुल्लाह का तवाफ़ किया करते थे। हर तवाफ़ के सात चक्कर होते हैं और सत्तर तवाफ़ों के 490 चक्कर और हर तवाफ़ के दो रक्अत वाजिबुत्तवाफ़ और वाजिबुलग़ैरअ अदा करने पड़ते हैं। सत्तर तवाफ़ हों तो 140 रक्अत नफ़्लें। अब हम चालीस रक्आत नफ़्लें ही पढ़ कर देख लें कि हालत क्या बनती है। यह उनका अमलों में से एक अमल था कि 490 चक्कर लगाते और उसके ऊपर 140 रक्अतें नफ़्लें पढ़ते और यह ज़िंदगी का एक मामूल था। बाक़ी मामूलात इसके अलावा हुआ करते थे। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 5/127)

काबा दिल की दुनिया बदल देता है

मुझे अमरीका में एक जगह पर बताया गया कि यहाँ एक औरत है जो पहले यहूदी मज़हब से ताल्लुक़ रखती थी और अब मुसलमान हो चुकी है। वह बड़ी पक्की मुसलमान है। उसकी सबसे बड़ी ख़ूबी यह है कि वह बहुत ख़ुशू ख़ुज़ू के साथ नमाज़ पढ़ती है। जब वह नमाज़ पढ़ती है तो उसमें डूब जाती है। वह एहतिमाम से वुज़ू करती है, फिर वह अपने ख़ास कपड़े पहनती है जो उसने नमाज़ के लिए बनाए हुए हैं। फिर तअदील अकरकान (सकून) के साथ नमाज़ पढ़ती है। यहाँ तक कि मुसलमान औरतें उसको देखकर शर्मा जाती हैं और सही मानो में दीनदार बनने की कोशिश करती हैं। मुझे बताया गया कि वह कुछ मसाइल पूछना चाहती हैं। मैंने कहा बहुत अच्छा। चुनांचे वह पर्दे के पीछे बैठकर इंगलिश में बात करने लगी। वह मसाइल पूछती रही। उसने तक़रीबन दो घंटे इस्लाम के बारे में बहुत अच्छे अच्छे सवाल किए। वाक़ई उसके दिल में इल्म हासिल करने की तलब थी। बातचीत के दौरान मैंने उससे पूछा कि वह कौन सा लम्हा था जब आपके दिल की दुनिया बदली और आप मुसलमान बन गयीं?

वह कहने लगी कि मेरे ख़ाविन्द की जद्दा में नौकरी थी और मैं भी उसके साथ वहाँ रहती थी। उससे पहले हम दोनों अमरीका में एक दफ़्तर में काम करते थे। दफ़्तर वालों ने कहा कि हम ने जद्दा में एक नया दफ़्तर खोला है अगर कोई वहाँ जाना चाहे तो हम तंख़्वाह और सहूलियात भी ज़्यादा देंगे और उन्हें एक और मुल्क देखने का मौक़ा भी मिल जाएगा। हम दोनों मियाँ-बीवी तैयार हो गए तो इस तरह हम जद्दा पहुँच गए। मैं यहूदी मज़हब से ताल्लुक़ रखती थी और वह ईसाई मज़हब से ताल्लुक़ रखता था। वहाँ मैं कुछ लोगों को देखती कि वे सफ़ेद लिबास पहनकर कहीं जा रहे होते थे। कभी कारों में, कभी बसों में। मैं हैरान होती कि ये लोग कहाँ जाते हैं। मैं उनके बारे में अपने ख़ाविन्द से पूछती। वह कहता कि यहाँ मुसलमानों का काबा है, ये वहाँ जाते हैं। एक मर्तबा मेरे दिल में तड़प पैदा हुई कि हम मुसलमानों के काबा को जाकर क्यों नहीं देखते। वह कहने लगा कि वहाँ ग़ैर-मुस्लिम नहीं जा सकते। मैंने कहा अगर हम नहीं जा सकते तो कम से कम कोशिश तो कर सकते हैं, मुमकिन है कि अल्लाह तआला हमें मौक़ा दे दे। वह कहने लगा अगले दिन मैंने मुसलमान औरतों जैसा एक रूमाल लिया और सर पर बांध लिया और मेरे ख़ाविन्द ने भी सर पर टोपी कर ली और हम भी उसी रास्ते पर चल पड़े। क़ुदरती बात है कि वह ऐसा वक़्त था कि जब ट्रेफ़िक पुलिस वाले खाना खा रहे थे। उन्होंने एक बंदा चैक करने के लिए खड़ा किया हुआ था। ट्रेफ़िक ज़्यादा थी और चैक करने वाला वह एक आदमी था। वक़्त भी रात का था। लिहाज़ा वह दूर से ही सबको जाने का इशारा कर रहा था। इस तरह हम उस ट्रेफ़िक से आगे निकल गए और मक्का मुकर्रमा पहुँच गए। हम लोगों ने पूछा कि मुसलमानों का काबा कहाँ है? उन्होंने काबा की तरफ़ इशारा करते हुए कहा यहाँ है। चुनाँचे हम हरम में दाख़िल हो गए।

हम चलते चलते जब मताफ़ में पहुँचे तो हमने बैतुल्लाह शरीफ़ पर नज़र डाली। हमें वहाँ इतनी बरकतें इतनी रहमतें और इतने अनवारात नज़र आए कि हम दोनों की निगाहें वहाँ टिकी रहीं।

मैं भी रोने लगी, मेरा ख़ाविन्द भी रोने लगा। कुछ देर तक हम वहाँ खड़े रोते रहे। दिल की दुनिया बदल चुकी थी। आख़िर हमने एक दूसरे की तरफ़ देखा तो उसने मुझसे पूछा कि क्या तुम्हें इस जगह हक़ीक़त मिली और मैंने उससे पूछा कि क्या तुम्हें हक़ीक़त मिली है? तो हम दोनों ने कहा, हाँ हक़ीक़त मिली है। चुनाँचे उसी लम्हे हमने कलिमा पढ़ा और मुसलमान हो गए। हमें किसी मुसलमान ने नहीं कहा कि तुम मुसलमान हो जाओ बल्कि हमें अल्लाह के घर ने मुसलमान बनाया है, सुब्हानअल्लाह। दुनिया में ऐसे लोग भी मौजूद हैं जिनको सिर्फ़ बैतुल्लाह शरीफ़ को देखने से ईमान की दौलत नसीब हो जाती है। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 11/88)

एक बच्चे के दिल में काबा की मुहब्बत

हज़रत मुर्शिद आलम रह० ने एक अजीब वाक़िआ सुनाया। फ़रमाने लगे कि हम हरम शरीफ़ में ठहरे हुए थे। एक छोटा सा बच्चा कभी-कभी हमारे ख़ेमे में आता। हम उसे खाने के लिए रोटी दे देते और वह ख़ुशी ख़ुशी चला जाता था। उसके बार-बार आने से हमें उसके साथ मुहब्बत हो गई और वह छोटा सा बच्चा भी हम से मानूस हो गया। जब हमारा क़याम पूरा हो गया और हमें आगे सफ़र पर जाना था तो मेरी बीवी ने बच्चे को बुलाया और कहा अगर तुम हमारे साथ चलो तो हम तुम्हें ले चलते हैं। उसने कहा : "कहाँ?" उन्होंने कहा कि अपने मुल्क में। वह कहने लगा, "वहाँ क्या होगा?" उन्होंने कहा वहाँ गर्मी भी कम है, वक़्त पर खाना भी मिल जाता है

और पानी भी मिल जाता है। तुम्हें वहाँ हर तरह की सहूलत मिलेगी। कोई तंगी नहीं होगी। अच्छा लिबास मिलेगा, ग़रज़ हर तरह की नेमत मिलेगी। उन्होंने उसको बड़ी सहूलियतें गिनवायीं। वह बच्चा बड़े ग़ौर से सब बातों को सुनता रहा। जब उन्होंने बात मुकम्मल कर ली तो उस वक़्त बच्चे ने बैतुल्लाह शरीफ़ की तरफ़ नज़र डाली और उसकी तरफ़ इशारा किया और पूछा, क्या बैतुल्लाह शरीफ़ भी वहाँ पर होगा? उन्होंने जवाब दिया कि यह तो वहाँ नहीं होगा। यह सुनकर बच्चा कहने लगा कि यह वहाँ नहीं होगा तो मुझे वहाँ जाने की कोई ज़रूरत नहीं है। मुझे तो सिर्फ़ बैतुल्लाह का पड़ौस चाहिए।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 11/95)

फ़र्शे हरम तक पहुँच कर भी दीदे काबा से महरूम

किसी मुल्क में एक डाक्टर साहब मिले। उन्होंने अपना वाक़िआ सुनाया कि हम घरवाले उमरा करने के लिए गए। हम अपने बेटे को भी साथ लेकर गए। वह भी डाक्टर था। कई तो पीएचडी डाक्टर होते हैं और कई पीएचडी सिर्फ़ होते हैं। क्या मतलब? 'पी' का मतलब फिरा, 'एच' का मतलब हुआ और 'डी' का मतलब दिमाग़ यानी फिरा हुआ दिमाग़। उन्होंने बताया कि हमने एहराम बांधे और मक्का मुकर्रमा पहुँच गए। जब उमरा करने के लिए मस्जिदे हराम के दरवाज़े पर पहुँचे तो हमारा बेटा कहने लगा कि मेरे दिल को कुछ हो रहा है, लिहाज़ा मैं अंदर नहीं जाता। हमने उसे समझाया, लेकिन वह कहने लगा नहीं। हमने कहा फिर तुम यहीं बैठ जाओ ताकि तुम्हारी तबियत कुछ संभल जाए। हम दोनों मियाँ-बीवी उमरा करने के लिए आए तो बेटा वापस कमरे में आया। कपड़े बदले और वहाँ से वापस अपने मुल्क आ गया। अल्लाह तआला ने उसे बैतुल्लाह शरीफ़ के दरवाज़े से वापस धुतकार दिया। बैतुल्लाह शरीफ़ के दरवाज़े तक

पहुँच गया लेकिन बैतुल्लाह शरीफ़ को देखने की तौफ़ीक़ नहीं मिली।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 11/134)

हसरत है उस मुसाफ़िरे मुज़तर के हाल पर
जो थक के रह गया हो मंज़िल के सामने

एक ग्वाले का सच्चा जज़्बए हज

जामिया अशरफ़िया में एक बुज़ुर्ग गुज़रे हैं, मौलाना इदरीस कांधलवी रह०, उन्होंने मआरिफ़ुल क़ुरआन भी लिखी है, एक वाक़िआ सुनाया करते थे। क्योंकि वह फ़क़ीह थे इसलिए उनका सुनाया हुआ वाक़िआ सुनाने की हिम्मत कर रहा हूँ।

लाहौर का एक ग्वाला था, गाय भैंस के दूध दूहने वाले को ग्वाला कहते थे। उसके दिल में हज करने की बड़ी तलब थी। चनाँचे जब लोग हज करके वापस आते तो वह उनसे बड़े शौक़ व मुहब्बत के साथ सफ़रे हज के हालात पूछता। यहाँ तक उसने हज के मौसम में लोगों से पूछना शुरू कर दिया कि लोग हज के लिए कैसे जाते हैं? किसी ने उसे बताया कि हज के लिए कराची से जाते हैं। चुनाँचे उसने लोगों से पूछना शुरू कर दिया कि कराची कैसे जाते हैं? किसी ने कहा स्टेशन से जाते हैं। फिर उसने लोगों से पूछा कि स्टेशन कहाँ से जाते हैं? किसी ने उसको स्टेशन पहुँचा दिया। अब वहाँ स्टेशन पर पूछता फिर रहा है कि मुझे कराची जाना है। कराची कैसे जाते हैं? वह कई दिनों तक लाहौर स्टेशन पर फिरता रहा। आख़िर-ट्रेन के एक कंडेक्टर गार्ड ने सोचा बेचारा कई दिनों से फिर रहा है। लिहाज़ा इसके साथ कुछ तआवुन करना चाहिए। चुनाँचे ग्वाले से कहा कि तुम मेरे साथ ट्रेन में बैठ जाओ मैं तुम्हें कराची ले जाता हूँ। इस तरह ट्रेन के ज़रिए कराची पहुँच गया।

कराची रेलवे स्टेशन पर पहुँचकर उसने फिर पूछना शुरू कर दिया कि मुझे हज पर जाना है, कैसे जाऊँ? किसी ने उसे हाजी कैम्प जाने का रास्ता बता दिया और वह हाजी कैम्प चला गया। वहाँ तो पूरा शहर आबाद होता है। लोग रोज़ाना पानी के जहाज़ पर सवार होकर जा रहे होते हैं। जब वह लोगों को सवार होकर जाते देखता तो उसके जज़्बात के समुन्दर में और जोश आ जाता। अगरचे उसके पास वसाईल नहीं थे, न टिकट था, न पासपोर्ट था और न ही पैसे थे मगर दिल में हज करने का सच्चा जज़्बा मौजूद था। चुनाँचे वह वहाँ भी यह कहता रहा कि मुझे हज पर जाना है।

एक दिन उसके दिल में ख़्याल आया कि जो हाजियों का सामान ले जाने वाले क़ुली थे उनकी एक ख़ास वर्दी है और उनको ऊपर जाने की इजाज़त है। लिहाज़ा मुझे किसी क़ुली से दोस्ती लगानी चाहिए। चुनाँचे उसने एक क़ुली से दोस्ती लगा ली और उसे कहा, भई! आप अपनी वर्दी मुझे दे दें। मैं भी हाजियों का सामान ऊपर पहुँचाउंगा। जब सामान ख़त्म हो जाएगा तो मैं अपने कपड़े पहनकर आपकी वर्दी वापस भेज दूंगा। मेरा भी काम बन जाएगा और आपकी वर्दी भी वापस आ जाएगी। लिहाज़ा उस क़ुली ने अपनी वर्दी उसे दे दी और वह सामान उठाने के बहाने उस जहाज़ पर आता जाता रहा। जब सारा सामान ख़त्म हो गया तो वह उधर ही कहीं छुप गया और अपने कपड़े पहनकर क़ुली की वर्दी वापस भिजवा दी। अब वह वहीं पर इधर उधर वक़्त गुज़ारता रहा। वहाँ तो एक जहाज़ में हज़ारों लोग होते हैं, क्या पता चले कौन कहाँ है? उसके दिल में अल्लाह तआला की ऐसी मुहब्बत थी कि पासपोर्ट और टिकट बग़ैर वह जज़्बात के घोड़े पर सवार होकर अल्लाह का घर देखने जा रहा था। लोग तो अपने कमरों में बिस्तरों पर सोते और वह बेचारा बैठ बैठ कर वक़्त गुज़ार लेता।

उसने जहाज़ में एक आदमी के साथ वाक़िफ़यत पैदा कर ली और उससे कहा भाई! जब जद्दा आ जाए तो मुझे बता देना। चुनाँचे जब जद्दा शहर की रोशनियाँ सामने नज़र आने लगीं और समुन्दरी जहाज़ साहिल के क़रीब पहुँच गया तो उस आदमी ने कहा, वह देखो! जद्दा आ गया। उस आदमी ने देखा कि वह नौजवान जहाज़ के अर्श के ऊपर चढ़ा और उसने समुन्दर में छलांग लगा दी। उसे तैरना तो आता नहीं था चुनाँचे जब वह नीचे गया तो फिर ऊपर उभर ही न सका। जब उस आदमी ने देखा कि यह तो नज़र ही नहीं आ रहा है तो वह समझ गया कि वह नौजवान डूब गया और उसने दिल में सोचा कि अच्छा, अल्लाह को यही मंज़ूर था।

जब उस आदमी ने हज किया और तवाफ़े ज़ियारत के बाद हरम से बाहर निकल रहा था तो उसने देखा कि वह ग्वाला भी हरम शरीफ़ से बाहर निकल रहा है और उसने अरबों जैसे कपड़े पहने हुए हैं। उसने पूछा, क्या आप वही हैं जिसने समुन्दर में छलांग लगाई थी? वह कहने लगा, हाँ मैं वही हूँ। वह वहाँ एक दूसरे को ख़ूब मिले। उसने ग्वाले से पूछा कि सुनाओ तुम्हारे साथ कैसी बीती? उसने कहा, मेरे साथ चलो, तुम्हें आगे जाकर बताऊँगा। लिहाज़ा वह आदमी उसके साथ चल पड़ा। जब वह बाहर निकले तो देखा कि बिल्कुल नई कार खड़ी है और ड्राइवर इंतिज़ार कर रहा है। ग्वाला कार के अंदर बैठा और साथ उस आदमी को भी बिठा लिया और ड्राइवर उनको एक मकान की तरफ़ ले गया जो बिल्कुल नया बना हुआ था। अंदर जाकर देखा कि कोठी सजी हुई है। ग्वाले ने उसे एक जगह जाकर बिठा दिया और नौकर से कहा मेहमान के लिए खाने-पीने की कोई चीज़ ले आओ। चुनाँचे वह शर्बत और फल ले आया। उस आदमी ने हैरान होकर पूछा, भई! मुझे बताओ क़िस्सा क्या है? वह कहने लगा, मैं तुम्हें क़िस्सा बाद में सुनाऊँगा, पहले यह देखो कि यह

कार भी मेरी है, ड्राइवर भी मेरा है और मकान भी मेरा है। उसने पूछा, भई! यह सब कुछ तुम्हें कैसे मिला?

वह कहने लगा, है तो यह राज़ की बात लेकिन चूँकि तुम मेरे राज़दार हो इसलिए मैं तुम्हें बता देता हूँ। चुनाँचे वह कहने लगा, मेरे दिल में अल्लाह का घर देखने का बहुत शौक़ था और उस शौक़ व मुहब्बत में मैंने यह हुलिया किया। जब मैं जद्दा पहुँचा तो मैंने कहा, ऐ अल्लाह! मैं तेरे हवाले करता हूँ। यह कहकर मैंने छलांग लगा दी। मुझे तैरना तो आता नहीं था। बस ऐसे ही हाथ पाँव मारता रहा। नतीजा यह निकला कि मुझे लहरें ख़ुद ही धकेल धकेल कर साहिल की तरफ़ ले जाती रहीं। मेरे अंदर भी पानी चला गया था और मेरे होश भी उड़ गए थे। जब मैं साहिल पर पहुँचा तो नीम बेहोशी की हालत में था। मैं बाहर निकला, वहीं लेट गया। जब उठा तो सुबह तहज्जुद का वक़्त था। मैंने इधर उधर देखा तो बाहर जाने के सब रास्ते बंद थे। साहिल के साथ ग्रिल लगी हुई थी और आगे दरवाज़ा बंद था। मैं वहीं ग्रिल के पास बैठ गया। मैंने देखा कि उस ग्रिल के दूसरी तरफ़ कोठीनुमा एक घर है और उस घर के सहन में एक गाय बंधी हुई है। दो आदमी उस गाय का दूध निकालने के लिए आए मगर गाय उनसे मानूस नहीं थी जिसकी वजह से क़ाबू में नहीं आ रही थी। जब वे दूध निकालने के लिए बैठे तो गाय ने उन्हें बैठने नहीं दिया। वह बड़ी मुसीबत में गिरफ़्तार थे। एक आदमी गाय को पकड़ता और दूसरा थन को हाथ लगाता तो गाय भागकर दूसरी तरफ़ चली जाती थी। तक़रीबन आधा घंटा उसके साथ कुश्ती करते रहे। मेरा तो काम ही यह था। जब मैंने यह मंज़र देखा तो मैंने उन्हें इशारा किया कि अगर कहो तो मैं इसका दूध निकाल देता हूँ। वह अरबी बोलते और समझते थे। इसलिए उनको इशारे से ही दूध निकाल देने की पेशकश की। उन्होंने कहा आ जाओ। मैंने कहा यह बंगला है मैं तो नहीं आ सकता।

अल्लाह की शान कि वह कोठी उस सीपोर्ट के डायरेक्टर की थी। उसका एक बेटा था। डाक्टरों ने हिदायत की हुई थी कि अपने बेटे को गाय का दूध पिलाया करें। उस ज़माने में फ़ीडर की माँ नहीं होती थी। उसने स्पेशल अपने बेटे के लिए गाय रखी हुई थी। गाय के अंदर दूध तो होता था मगर उसे निकालने नहीं देती थी जिसकी वजह से डायरेक्टर और उसकी बीवी को बड़ी परेशानी होती थी कि बच्चे को दूध पूरा नहीं मिलता। अब जब मैंने कहा कि मैं दूध निकाल देता हूँ तो उन दोनों ने जाकर डायरेक्टर से कहा कि यहाँ जंगले के अंदर मुसाफ़िरों में से एक आदमी कहता है कि मैं दूध निकाल देता हूँ। उसने कहा यह चाबी लो और जाकर उसे ले आओ। वे गेट का ताला खोलकर मेरे पास आए और मुझे डायरेक्टर साहब के पास ले गए। जब मैंने गाय को ज़रा हाथ फेरा और उसे प्यार की बात कही तो वह मानूस हो गई। मैंने नीचे बैठकर उनको आठ दस किलो दूध निकालकर दे दिया।

जब डायरेक्टर की बीवी ने देखा तो वह बड़ी ख़ुश हुई और कहने लगी कि आज तो मेरा बेटा सारा दिन दूध पिएगा। फिर वह कहने लगी कि इस आदमी को नहीं जाने देना। जब डायरेक्टर साहब से मुलाक़ात हुई तो उसने पूछा आप कौन हैं? मैंने कहा मैं तो पाकिस्तान से हज करने आया हूँ। वह कहने लगा कि हम तुम्हें वापस नहीं जाने देंगे इसलिए कि तुम अच्छा दूध निकालते हो। मैंने कहा कि मैं दूध तो निकाल दिया करूंगा लेकिन मैंने हज भी करना है। वह कहने लगा तुम फ़िक्र न करो हम तुम्हें हज भी करवा देंगे। दूसरे दिन उसकी बीवी ने अपने वालिद को फ़ोन किया और सारी तफ़्सील बता दी। उसके वालिद ने दो सौ गाय और भैंसों का बाड़ा बनाया हुआ था। चुनाँचे जब उसने यह बात सुनी तो बहुत ख़ुश हुआ और कहने लगा कि हमें तो ख़ुद ऐसे ट्रेन्ड आदमी की ज़रूरत है। बाद में उसने

डायरेक्टर साहब के पास फ़ोन किया और कहा कि उस आदमी को मेरे पास भेज दो। उसने कहा, जी बहुत अच्छा, मैं भेज देता हूँ। चुनाँचे डायरेक्टर साहब ने मुझे एक गाड़ी में बिठाया और अपने ससुर के घर पहुँचा दिया। उसके ससुर ने मुझे कहा कि मैं तुम्हें यहाँ रखता हूँ। तुम्हारे ज़िम्मे यह काम है कि सुबह व शाम मेरी गाए भैंसों को दूध निकाल दिया करोगे। जब दूध दूहने का वक़्त आया तो मैंने उसकी बीस पच्चीस गाए भैंसों का दूध मनों के हिसाब से निकाल दिया। वह बड़ा हैरान हुआ कि इतना दूध भी निकल सकता है। वह मुझे कहने लगा कि बस अब तुम यहीं रहना और मैंने उसे कहा कि मुझे हज पर जाना है। वह थोड़ी-थोड़ी देर के बाद यही कहता कि बस अब तुमने यहीं रहना है लेकिन मैं जवाब में यही कहता कि मुझे हज पर जाना है। मैं तीन दिन वहाँ रहा और तीनों दिन वह मुझे बार-बार यही कहता कि तुम्हें यहीं रहना है और मैं कहता कि मुझे हज पर जाना है। तीसरे दिन वह कहने लगा, मियाँ! हम तुझे हज भी करवाएंगे लेकिन तूने रहना यहीं है। मैंने कहा कि मैं हज तो करूंगा लेकिन बाक़ी बातें बाद में करेंगे।

उसने मुझे हज भी करवा दिया है। हज करने के बाद मैंने उससे कहा कि मेरा हज हो गया है अब मुझे घर वापस ज़ाना है। वह कहने लगा, नहीं तूने यहीं रहना है। मैंने कहा कि मेरे तो बीवी बच्चे वहाँ हैं। उसने कहा फ़िक्र न करो। मैंने एक नया घर बनाया है। वह घर मैं तुझे देता हूँ, यह मेरी नई गाड़ी है यह भी तुझे देता हूँ और यह ड्राइवर भी तुझे देता हूँ। अब तुम अपनी बीवी बच्चों के नाम और एड्रेस बता दो, मैं पैग़ाम भेजता हूँ और आने वाले जहाज़ में तुम्हारे बीवी बच्चे भी पहुँच जाएंगे। फिर एक हज क्या हर साल हज करते रहना। अब एक हफ़्ते बाद मेरे बीवी-बच्चे भी मेरे पास पहुँच जाएंगे। मैंने हज भी कर लिया, अल्लाह ने घर भी दे दिया और गाड़ी भी दे

दी है। यह अल्लाह तआला के घर को देखने की बरकत है कि अल्लाह तआला ने मुझे दुनिया की नेमतें भी अता कर दीं हैं। अब मैं यहीं रहूँगा। हर साल बैतुल्लाह शरीफ़ का हज करूंगा। भई! हम से तो वह ग्वाला अच्छा कि उसने दूध निकालने की बरकत से बैतुल्लाह शरीफ़ देख लिया। सच है कि जब जज़्बा सच्चा हो तो फिर बात भी बन जाती है। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार11/96-101)

बैतुल्लाह शरीफ़ की बरकत का एक हैरतअंगेज़ वाक़िआ

बैतुल्लाह शरीफ़ की बरकत का एक वाक़िआ अभी याद आया। वह भी आपको सुनाता चलूँ। एक नौजवान किसी फ़ैक्ट्री में हमारे साथ काम करता था। वह इतना ख़ूबसूरत था कि उसे देखकर इंसान हैरान हो जाता था। उसके नक़्श व नैन, उसका क़द और उसका डील डौल क़ाबिल दिया था और उसकी छाती ऐसी बाडी बिल्डर्स की तरह थी कि उसके सीने पर अगर पानी का गिलास रखा जाए तो वह भी ठहर सकता था। जब वह चलता तो पता चलता कि एक नौजवान चलकर आ रहा है। जहाँ उसकी पर्सनेलिटी ख़ूबसूरत थी वहाँ अल्लाह तआला ने उसे माल व दौलत भी बड़ा दिया था। वह कई मरबअ खेती की ज़मीन का वारिस था। उसका एक भाई और था जो मेजर था। वह नौजवान युनिवर्सिटी के माहौल में जाकर दहरिया बन गया था।

जब हमें पता चला कि वह दहरिया है तो हमें फ़िक्र हुई। मैंने अपने साथ वाले इंजीनियर से कह दिया कि आप लोगों ने इससे कोई बहस नहीं करनी। अलबत्ता जब कभी कोई बात हुई तो यह आजिज़ फ़क़ीर ही उससे बात करेगा। क्योंकि हम दोनों का एक ही ओहदा था इसलिए वह मेरे साथ ज़रा हिसाब से बात करता था।

उसने तरह-तरह बातें करनी शुरू कर दीं, किसी से कहता, यार! जिस तरह तुम अल्लाह से डरते हो मैं नहीं डरता। कभी कुछ कहता

और कभी कुछ। कोई मुलाज़िम आकर कहता, जी मुझे छुट्टी चाहिए, यह पूछता क्यों? वह बताता कि मुझे जमात के साथ जाना है। वह कहता, अच्छा अच्छा तुम जिहालत फैलाने जा रहे हो। एक दिन उसने आकर इंजीनियर से कहा, यार! मैं आज जनाज़ा पढ़ने गया था। मैंने कई क़ब्रों को हाथ लगाया लेकिन मुझे तो उनमें से कोई भी गर्म महसूस नहीं हुई। इस तरह टोंट करता था। इन हालात के पेश नज़र हम उसकी हिदायत के लिए दुआ भी करते थे और इस इंतिज़ार में भी थे कि किसी मुनासिब वक़्त में उससे बात करेंगे।

एक दिन उसने बताया कि मेरी वालिदा ने मेरी शादी का प्रोग्राम बनाया है। हमने कहा बहुत अच्छा। जब उसने यह बात ज़ाहिर की तो इधर उधर से तजवीज़ें आने लगीं। कभी कर्नल की बेटी के लिए डिमांड आती तो कभी प्रोफ़ेसर की लड़की के लिए। हम हैरान थे कि उसके पास एक महीने में एक सौ नौ रिश्ते आए क्योंकि जो आदमी भी उसे देखता उसका जी चाहता कि हमारे क़रीब ही कहीं उसका रिश्ता हो जाए। उसने मुझसे मश्वरा किया कि अब मैं क्या करूं? मैंने कहा, जी आप सबको पढ़ लें कि वे कैसे कैसे लोग हैं। फिर उनमें से जो पाँच दस आपको मुनासिब नज़र आएं उनसे मुलाक़ात कर लें। उसके बाद आपके लिए फ़ैसला करना आसान हो जाएगा। उसने कहा, ठीक है।

इसी बातचीत के दौरान मैंने उसे कहा, जी आप अल्लाह तआला के बारे में ऐसी जुर्रत वाली बातचीत न किया करें क्योंकि अल्लाह की लाठी बेआवाज़ है। वह कहने लगा, आप कहते हैं तो आइंदा कोई ऐसी बात नहीं करूंगा। वैसे मैं इतना डरता नहीं हूँ। जब उसने यह बात कही तो मैंने उससे कहा, अच्छा! फिर मेरी बात भी सुन लें कि अब [illegible] ज़रा तैयार हो जाएं क्योंकि जो अल्लाह तआला पर इतनी जुर्रत करता है कि फिर अल्लाह तआला उसे तिगनी का नाच

नचा देते हैं। जो बातों से नहीं मानता वह लातों से मानता है और आप तो अब बातों की हद क्रास कर गए हैं। वह कहने लगा, ठीक है। आप भी यहीं हैं और मैं भी यहीं हूँ। मैंने भी कहा :

﴿فانتظروا انی معکم من المنتظرین﴾

पस तुम इंतिज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इंतिज़ार करने वाला हूँ।

दूसरे तीसरे दिन हमें इत्तिला मिली कि वह मोटरसाइकल पर जा रहे थे। उसका अचानक एक्सीडेंट हुआ। उसको चोटें तो आयीं हैं मगर इतनी सीरियस नहीं। इसी वजह से वह आज छुट्टी पर है। हम उसकी तबियत पूछने के लिए उसकी रिहाइशगाह पर गए। हमने उससे पूछा, जी आपका एक्सीडेंट कैसे हुआ? वह कहने लगा, बस अचानक ही एक्सीडेंट हुआ। सड़क बिल्कुल साफ़ थी। मैं तो आराम से मोटरसाइकल चलाते हुए जा रहा था कि आँखों के सामने अचानक अंधेरा सा आ गया और मेरी मोटरसाइकल नीचे गिर गई।

दो चार दिन बाद इत्तिला मिली कि वह पैदल चल रहा था कि अचानक नीचे गिर गया। उसने लाहौर जाकर अपना चैकअप कराया तो उन्होंने उसका ईलाज शुरू कर दिया। ईलाज करते करते किसी ने बताया कि इसके नर्वस सिस्टम में कोई ख़राबी है। लिहाज़ा उसका आप्रेशन करना पड़ेगा। उसके भाई ने नौ ब्रिगेड जर्नल डाक्टरों का एक पैनल बनवाया। वे सबके सब बाहर से पढ़ लिखकर और तजुरिबा करके आए थे। उन्होंने शोहरा में एक फ़ौजी हस्पताल में उसका आप्रेशन किया। आप्रेशन आठ घंटों में पूरा हुआ। जब वह वापस आया तो कुछ दिनों के बाद उसकी तबियत थोड़ी सी ठीक हुई। उसके बाद पता चला कि उसको बुख़ार हो गया है। बुख़ार से आराम हुआ तो उसने दफ़्तर आना शुरू कर दिया।

एक दिन उसने मुझे बताया कि मुझे तो चीज़ें दो नज़र आ रही हैं यानी वह कह रहा था कि मेरी आँखें एक चीज़ नहीं देख रही हैं बल्कि उनका फ़ोकस ख़त्म हो चुका है। अब हर आँख अलग-अलग चीज़ें देख रही है। इस तरह उसको एक के बजाए दो बंदे नज़र आने लगे। सलाम उसको करे या उसको करे। ऐसा बंदा कारख़ाने में किस तरह काम कर सकता था। लिहाज़ा वह गोया बैठ ही गया।

अभी दो चार दिन ही गुज़रे थे कि उसको हाथों से पसीना बहना शुरू हो गया। इतना पसीना कि अगर वह हाथ का रुख़ नीचे करता तो पानी के क़तरे टपक रहे होते थे। वह तीन-तीन चार-चार तौलिए अपने पास रखता था यहाँ तक कि किसी काग़ज़ पर साइन करना मुश्किल हो गया। वह अजीब मुसीबत में मुब्तला था।

हमने उसे कहा कि यह ख़ुदा तआला का ग़ैबी निज़ाम है जो हरकत में आ गया है। इसका एक ही हल है कि अपने रब को तसलीम करो और माफ़ी मांगो वरना नहीं छूटोगे। वह हंस के टाल देता और कहता कि ज़िंदगी में सेहत व बीमारी तो होती ही रहती है।

क्या मुसलमान बीमार नहीं होते?

क्या काफ़िर की सेहत नहीं होती?

हम ने कहा ठीक है और देख लो।

उसके बाद उसे बुख़ार हो गया और लंबी छुट्टी पर घर चला गया। एक महीने बाद हमें इत्तिला मिली कि वह तो अपनी ज़िंदगी के बिल्कुल आख़िरी लम्हात में है। हम सरगोधा में उसके घर उसकी अयादत के लिए गए। मैंने उस बंदे को जाकर देखा तो वह हड्डियों का ढांचा बन चुका था। उसका वज़न चालीस किलो के क़रीब रह गया होगा। उसको कमज़ोरी इतनी आ चुकी थी कि वह अपनी करवट भी ख़ुद नहीं बदल सकता था। उसकी अम्मी उसको करवट

बदलवाती थी। वह अपने हाथ से रोटी भी नहीं खा सकता था। वह अपने कपड़े भी नहीं बदल सकता था। ज़रा सोचिए तो वह कैसा हो गया होगा। उसकी जवानी भी हमने देखी थी और उसका यह हाल भी हमने देखा।

उसकी हालत देखकर मुझे दिल में बहुत ही दुख हुआ। मैंने उससे कहा हम आपके ईलाज की कोई तजवीज़ बनाते हैं। हम आपको बाहर मुल्क भिजवाएंगे। मुझे अल्लाह तआला से उम्मीद है कि आप सेहतमंद हो जाएंगे। क्या आप वापस आते हुए उमरा करके आएंगे? उसने हाँ में सर हिला दिया।

इंडस्ट्री के जो बड़े थे उनके साथ आजिज़ का मुहब्बत का ताल्लुक था। चुनाँचे मैंने वापस आकर उन्हें कहा, जी देखें कि वह जवान आदमी है, दुनिया में जहाँ कहीं भी इस बीमारी का ईलाज हो सकता है आप वहाँ उसको भेजें और उसका ख़र्चा अदा करें। उन्होंने कहा ठीक है। मैं आपके ज़िम्मे कर देता हूँ। आप टिकटें बनवाएं और उनको भेजें। मैं सारी अदाएगी कर दूंगा।

हमने फ़ौरन World Health Organization 'आलमी इदारा सेहत' को ख़त लिखा कि यह बीमारी है। पूरी दुनिया में अगर कहीं इस बीमारी का ईलाज हो सकता है तो हमें बताओ। उन्होंने जवाब दिया कि इस बीमारी का ईलाज कनाडा में सिर्फ़ एक डाक्टर के पास है। और उसके पास अब तक नौ मरीज़ ठीक हुए हैं। हमने उससे राब्ता किया। उस डाक्टर ने बताया कि मेरी बीवी भी इस मर्ज़ में मुब्तला थी। मैंने दिन रात मेहनत की और वह सेहतमंद हो गई। इस वक़्त तक मेरे पास नौ मरीज़ ठीक हो चुके हैं। अगर आप भी आना चाहते हैं तो आ जाएं। इतना इतना ख़र्चा होगा।

हमने जहाँ उसकी कनाडा के लिए टिकटें बनवायीं वहाँ साथ ही उसके भाई की भी बनवा लीं क्योंकि वह खुद तो जा नहीं सकता

था। अल्लाह की शान कि इस आजिज़ ने उनकी टिकटें बनवायीं तो वापसी सऊदी अरब के ज़रिए बनवायीं। हमने उसके भाई से कह दिया कि देखो, उसने उमरा करने के लिए हाँ की हुई है। लिहाज़ा आप वापसी पर खुद भी उमरा करना और इसको भी साथ मे उमरा करवाना। उसने कहा ठीक है।

अल्लाह तआला की शान देखिए कि जब वे वापस आया तो हम जैसी उम्मीद कर रहे थे कि वह वहाँ ईलाज करवाकर सेहतमंद हो जाएगा। इसी तरह वह काफ़ी सेहतमंद वापस आया और मिला। वह थोड़ी देर बैठा तो कहने लगा, "नमाज़ का वक़्त हो गया है।"

मैंने उसके चेहरे की तरफ़ देखा और कहा, ख़ैर तो है। वह कहने लगा नमाज़ के लिए तैयारी कर लें। हमने कहा कि नमाज़ के लिए तो अभी आधा घंटा बाक़ी है। इस वक़्त आप हमें अपने सफ़र के हालात सुना दें। उसके बाद इंशाअल्लाह नमाज़ भी पढ़ेंगे। अब उसने हालात खुद सुनाए :

वह कहने लगा कि जब मैं यहाँ से कनाडा गया तो डाक्टर ने मुझे मशीन पर लिटा दिया। मेरे साथ कंप्युटर मशीनें जोड़ दीं और लैबोट्री में पता नहीं क्या कुछ था। मेरी हर चीज़ मानीटर हो रही थी। Misthenea Gravous बीमारी निकली। उसने मेरा पूरा ख़ून Centrifugari Machine (सैनेट्री फ्युजल मशीन) के ज़रिए निकाल कर उसको साफ़ किया और बीमारी का प्लाज़्मा Plazma निकालकर वापस कर दिया। उसने एक दफ़ा ऐसा भी किया और फिर कई दिन बाद दूसरी मर्तबा किया और फिर कई दिन बाद तीसरी मर्तबा किया। जब वह तीन दफ़ा इस तरह कर चुका तो उसने मेरे भाई को बुलाया और कहा, "भई! आपके भाई की ज़िंदगी के कुछ ही दिन हैं। बचने की उम्मीद नहीं है।" भाई ने पूछा वह कैसे? उसने कहा, 'मैंने जितने मरीज़ों का ईलाज किया उनके लिए मैंने सिर्फ़ एक-एक मर्तबा

यह तरीक़ा अपनाया और वे सब ठीक हो गए। जबकि यहाँ तीन दफ़ा यह तरीक़ा इस्तेमाल कर चुका हूँ लेकिन ठीक नहीं हुआ।" मेरे भाई ने कहा, डाक्टर साहब! जब आपकी तरफ़ से जवाब है तो बजाए इसके कि भाई की लाश वापस लेकर जाऊँ, इसे ज़िंदा ही ले जाता हूँ ताकि यह अम्मी को एक नज़र देख ले।

उसने कहा, हाँ ले जाओ। इस तरह हम वहाँ से बग़ैर ईलाज के वापस आ गए। जब जद्दा पहुँचे तो वहाँ से अगली फ़्लाइट नहीं मिलती थी। मेरे भाई ने कहा, जी मेरे साथ मरीज़ है। उन्होंने कहा जो मर्ज़ी है, इस वक़्त सारी फ़्लाईटें बुक हैं और आप लोगों को यहाँ दो दिन इंतिज़ार करना पड़ेगा। मेरे भाई ने कहा, मेरे साथ बहुत सीरियस मरीज़ है। उन्होंने कहा, मरीज़ है तो हम क्या करें, हम इतना कर सकते हैं कि हम आपको प्राइवेट सवारी दे सकते हैं ताकि आप एयरपोर्ट से शहर चले जाएं। और वहाँ दो दिन ठहर कर वापस चले जाएं। वह कहने लगे, इस तरह हम जद्दा शहर में आ गए।

शहर पहुँचकर भाई ने मुझसे पूछा कि क्या मैं आपको वहाँ ले जाऊँ जहाँ का आपने वादा किया था? मैंने कहा ठीक है ले जाओ। चुनाँचे भाई मुझे मक्का मुकर्रमा लेकर चले गए और मैंने अपनी ज़िंदगी में पहली मर्तबा बैतुल्लाह शरीफ़ को देखा।

वह कहने लगा, बैतुल्लाह शरीफ़ को देखकर मेरे दिल पर अजीब सा असर हुआ। अब देखिए वह मुसलमान नहीं था बल्कि दहरिया था और ख़ुदा के वजूद को नहीं मानता था। उस बंदे की यह हालत थी। उसने कहा कि मेरे दिल में कुछ अजीब सी कैफ़ियत बनी और मैंने बैठे बैठे दुआ मांगी। ज़रा तवज्जोह फ़रमाइए।

"अल्लाह अगर तू है तो मुझे सेहत अता फ़रमा ताकि मैं चल चलकर तेरे घर का तवाफ़ कर सकूँ।" उसके बाद मेरे दिल में एक अजीब ख़ुशी की सी कैफ़ियत आ गई। मैंने दवाई पीना बंद कर दी।

अल्लाह तआला की शान देखें कि जब मैं अगले दिन सोकर उठा तो सुबह तर व ताज़ा था। मैं भाई के साथ बैतुल्लाह शरीफ़ के पास आया, कलिमा पढ़ा और मैंने चलकर बैतुल्लाह शरीफ़ का तवाफ़ किया, अल्लाहु अकबर कबीरा।

मेरे दोस्तो! अगर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त इस घर में जाने वाले दहरियों की दुआएं भी क़ुबूल कर लेता है और उनको हिदायत दे देता है और उनकी मुरादें भी पूरा करता है तो जो मोमिन यहाँ से अल्लाह के घर के लिए जाते होंगे वह वहाँ जाकर अल्लाह की रहमतों से कितना हिस्सा पाते होंगे। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 11/111)

शौक़ हो तो सफ़रे हज आसान

पिछले साल हज के मौक़े पर सऊदी अरब के अख़बार में एक ख़बर आई। यमन के एक हाजी साहब आए हुए थे। उनकी तस्वीर भी अख़बार में छपी हुई थी। उनकी उम्र एक सौ बीस साल थी। उन्होंने बयान दिया कि मैंने पहला हज बीस साल की उम्र में किया सौवाँ हज करने आया हूँ। उन्होंने यह भी कहा कि मैंने बीस हज सवारी पर किए और अस्सी हज पैदल चलकर किए।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 11/114)

بسم الله الرحمن الرحيم

﴿فاقرؤا ما تيسر من القرآن.﴾

तिलावते

कलाम पाक

तिलावते कलाम पाक

क़ुरआन सुनने की ख़्वाहिश

एक बार हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु बैठे थे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको बुलाकर फ़रमाया कि मुझे सूरत सुनाओ। हदीस पाक का मफ़हूम है कि मुझे हुक्म हुआ है कि मुझे सूरः बैय्यनः सुनाओ। वह बड़े समझदार थे। चुनाँचे आगे से पूछने लगे, ऐ अल्लाह के महबूब! ﴿اللّٰه سمّاني﴾ क्या अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने मेरा नाम लेकर फ़रमाया है? नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया ﴿نعم اللّٰه سمّاك﴾ हाँ अल्लाह तआला ने तुम्हारा नाम लेकर फ़रमाया कि उबई बिन काब से कहो कि क़ुरआन सुनाए। महबूब! आप भी सुनेंगे और मैं (परवरदिगार) भी सुनूंगा। यह सुनकर उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु की आँखों में आँसू आ गए। उनका यह रोना ख़ुशी का रोना था।

कहाँ मैं और कहाँ यह निकहते गुल
नसीम सुबह तेरी मेहरबानी

(दवाए दिल 142, ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 11/218)

क़ुरआन सुनने के लिए मुश्ताक़ फ़रिश्ते भी ...

एक सहाबी अपने घर के अंदर तहज्जुद में क़ुरआन मजीद पढ़ रहे थे। तबियत ऐसी मचल रही थी कि जी चाह रहा था कि ज़रा ऊँची आवाज़ से पढ़ें मगर क़रीब ही एक घोड़ा बंधा हुआ था और चारपाई पर बच्चा लेटा हुआ था। महसूस किया कि जब ऊँचा पढ़ता हूँ तो घोड़ा बिदकता है। लिहाज़ा दिल में ख़ौफ़ पैदा हुआ कि कहीं बच्चे को

नुक़सान न पहुँचा दे। फिर आहिस्ता पढ़ना शुरू कर देते। सारी रात यही मामला होता रहा। जब तहज्जुद मुकम्मल की और दुआ के लिए हाथ उठाए तो क्या देखते हैं कि कुछ सितारों की तरह रोशनियाँ हैं जो उनके सरों पर आसमान की तरफ़ वापस जा रही हैं। यह उन रोशनियों को देखकर हैरान हुए। सुबह हुई तो वह सहाबी नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह! के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मैंने रात को तजज्जुद इस अंदाज़ से पढ़ी कि बच्चे के ख़ौफ़ की वजह से आहिस्ता पढ़ता था और जी चाहता था कि ज़रा आवाज़ के साथ पढ़ूँ। मगर दुआ के वक़्त मैंने कुछ रोशनियाँ आसमान की तरफ़ जाते देखीं। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि वह रब्बे करीम के फ़रिश्ते थे जो तुम्हारा क़ुरआन सुनने के लिए अर्शे रहमान से नीचे उतर आए थे। अगर तुम ऊँची आवाज़ से क़ुरआन पढ़ते रहते तो आज मदीना के लोग अपनी आँखों से फ़रिश्तों को देख लेते, सुब्हानअल्लाह। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 3/216)

तिलावते क़ुरआन पर नुज़ूले रहमत

एक बार नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मस्जिद में तशरीफ़ लाए। तहज्जुद का वक़्त था। एक तरफ़ देखा कि हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु नफ़्लें पढ़ रहे हैं और आहिस्ता क़ुरआन मजीद पढ़ रहे हैं तो दूसरी तरफ़ सैय्यदना उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ज़रा ऊँची आवाज़ से क़ुरआन मजीद की तिलावत फ़रमा रहे हैं। तहज्जुद में दोनों तरह पढ़ने की इजाज़त है। जब दोनों ग़ुलाम पढ़ चुके तो हाज़िरे ख़िदमत हुए। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा, अबूबक्र! तुम आहिस्ता क्यों पढ़ रहे थे? अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी! मैं उस ज़ात को क़ुरआन सुना रहा था जो सीनों के

भेद भी जानती है। मुझे भला ऊँचा पढ़ने की क्या ज़रूरत थी? फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा, ऐ उमर! तुम ऊँचा क्यों पढ़ रहे थे? अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी! मैं सोए हुओं को जगा रहा था। शैतान को भगा रहा था। सुब्हानअल्लाह! क़ुरआन पढ़ा जाता था और शैतान उन जगहों से भाग जाया करता था। अल्लाह तआला की रहमतें नाज़िल होती थीं। आज भी अगर कोई इंसान इस क़ुरआन को मुहब्बत से पढ़ेगा तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की रहमतें उतरेंगी और उसकी बरकत से सीने रोशन हो जाएंगे। इसलिए फ़रमाया ﴿لتخرج الناس من الظلمت الى النور﴾ कि यह क़ुरआन इंसानों को अंधेरों से रोशनी की तरफ़ ले जाता है। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 3/217)

रहमतों के झुरमुट में रहमत से महरूमी

यह बात बड़े अफ़सोस से कह रहा हूँ कि एक क़ारी साहब अपने हालात बताते हुए कह रहे थे हज़रत! जब मैं बच्चों को पढ़ा रहा था तो ऐन सबक़ सुनने की हालत में मेरी शहवत भरी नज़र एक बच्चे पर पड़ रही थी। आख़िर इसकी क्या वजह है? ऐसा क्यों हो रहा है? हालाँकि अल्लाह तआला तो फ़रमाते हैं कि जहाँ क़ुरआन पढ़ा जाए वहाँ रहमत उतरती है। अब वह बंदा जिसने फ़ज्र से पहले क्लास लेनी शुरू की और फिर फ़ज्र के बाद से इशा तक मुख़्तलिफ़ वक़्फ़ों से बच्चों को अल्लाह क़ुरआन पढ़ाया, ख़ुद भी पढ़ा, बच्चों से भी सुना और एक वक़्त में दर्जनों बच्चों की क़ुरआन पढ़ने की आवाज़ें कानों में जाती रहीं तो वह दिन के बारह चौदह घंटे अल्लाह की रहमतों के झुरमुट में बैठा रहा। ऐसे बंदे का दिल तो बिल्कुल धुल जाना चाहिए था। उस पर नफ़्स व शैतान ने ग़लबा क्यों किया और उस पर क़ुरआन मजीद की तिलावत का असर क्यों न हुआ? हमारे मशाइख़ ने इसका यह जवाब दिया है कि क़ुरआन मजीद की तिलावत के

वक़्त अल्लाह की रहमतों के उतरने में तो कोई शक ही नहीं मगर उसका दिल रहमतों को जज़्ब नहीं कर रहा होता।

एक मिसाल से यह बात अच्छी तरह समझ में आ जाएगी। जब बच्चा पैदा होता है तो अगर आप उसको पहले दिन भैंस का दूध पिला दें तो उसका मेदा उसको बरदाश्त नहीं कर सकेगा। उसका पेट ख़राब हो जाएगा और उसे दस्त की तकलीफ़ हो जाएगी। इसलिए बच्चे को या माँ का दूध पिलाया जाए या बकरी का दूध पिलाया जाए। क्योंकि बकरी का दूध बहुत हलका और पतला होता है। इसलिए बच्चा उसे बरदाश्त कर लेगा। और जवान होकर भैंस का एक किलो दूध भी बरदाश्त कर लेगा। क्या मतलब? मतलब यह है कि शुरू में कमज़ोरी थी। इसलिए उसे हलकी फुलकी चीज़ की ज़रूरत थी। जब हलकी ग़िज़ा मिलती रही और वह परवरिश पाता रहा तो फिर उसके अंदर ताक़त बढ़ती रही यहाँ तक कि उसके अंदर गाए का दूध जज़्ब करने की सलाहियत पैदा हो गई। फिर जब बढ़ते बढ़ते वह जवान हो गया तो उसके अंदर भैंस का दूध बरदाश्त करने की सलाहियत पैदा हो गई। बिल्कुल इसी तरह क़ुरआन मजीद के अनवारात सक़ील हैं अल्लाह तआला फ़रमाते हैं

﴿انا سنلقى عليك قولا ثقيلا.(المزمل ٥)﴾

अन्क़रीब हम आप पर एक भारी बात नाज़िल करेंगे।

इसलिए इसके अनवारात को बरदाश्त कर लेना हर बंदे के बस की बात नहीं होती। हमारे मशाइख़ फ़रमाते हैं कि ज़िक्रुल्लाह के अनवरात बहुत लतीफ़ होते हैं। लिहाज़ा जो बंदा अल्लाह तआला का ज़िक्र करता है तो उसका क़ल्ब गुनाहों के मैल की वजह से जितना भी गंदा हो ज़िक्र के अनवारात को क़ुबूल कर लेता है। इस ज़िक्रुल्लाह से उसके क़ल्ब की नूरानियत बढ़ती रहती है यहाँ तक कि

एक वक़्त ऐसा आता है कि उसका दिल ला इलाहा इल्लल्लाह के अनवारात क़ुबूल करने के क़ाबिल हो जाता है। ला इलाहा इल्लल्लाह का ज़िक्र करते करते इंसान की एक ऐसी कैफ़ियत बन जाती है कि जब वह क़ुरआन मजीद के अनवारात का भी फ़ैज़ पाना शुरू कर देता है। अब उसके दिल की रूहानियत इतनी बन चुकी होती है कि यह क़ुरआन सुनकर फड़क उठता है। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 10/67)

आपके मुँह से मुश्क की ख़ुश्बू आने लगी

इमाम आसिम रह० जब मस्जिदे नबवी में जाते थे तो वहाँ क़ुरआन पाक पढ़ा करते थे। उनके मुँह से ख़ुशबू आया करती थी। किसी ने पूछा, हज़रत! क्या आप मुँह में इलायची रखते हैं या कोई और चीज़ रखते हैं? हमने इतनी ख़ुशबू कभी कहीं नहीं सूंघी। वह कहने लगे, नहीं, बात यह है कि एक मर्तबा ख़्वाब में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत नसीब हुई तो नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया कि आसिम! तू इतनी मुहब्बत के साथ क़ुरआन पढ़ता है कि मुझे बहुत पसंद आता है, आओ मैं तुम्हारे मुँह को बोसा दे दूँ। जब से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़्वाब में मेरे मुँह का बोसा लिया तब से ख़ुशबू आती है, सुब्हानअल्लाह।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 10/174, 11/60)

तिलावत की आवाज़ पर फ़रिश्ते उतर पड़े

एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु अपने घर में तहज्जुद की नमाज़ में क़ुरआन पढ़ रहे हैं, तबियत पर कैफ़ से ज़रा ऊँची आवाज़ से क़ुरआन पढ़ने को जी चाहता है। घर का सहन छोटा है, घोड़ा भी बंधा है और एक चारपाई पर बच्चा भी सोया हुआ है। जब ऊँचा

पढ़ते हैं तो घोड़ा बिदकने लगता है, दिल में डर सा महसूस होता है कि कहीं बच्चे को तकलीफ़ न पहुँचा दे, लात न मार दे, आहिस्ता आहिस्ता क़ुरआन पढ़ने लग जाते हैं। थोड़ी देर के बाद फिर तबियत मचलती है तो ऊँचा पढ़ते हैं, घोड़ा बिदकता है। फिर आहिस्ता पढ़ने लग जाते हैं। बस यही कुछ तक़रीबन सारी रात होता रहा। जब उन्होंने सुबह के वक़्त दुआ के लिए हाथ उठाए तो निगाह आसमान पर पड़ी, क्या देखते हैं कि कुछ रोशनियाँ निहायत तेज़ी के साथ उनके सर से दूर आसमान की तरफ़ जा रही हैं। हैरान हुए कि क्या चीज़ है? लिहाज़ा सुबह को नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के नबी! रात मेरे साथ यह मामला होता रहा। ऊँचा पढ़ता था तो डर महसूस होता था कि बच्चे को तकलीफ़ न पहुँच जाए और आहिस्ता पढ़ता था तो फिर तबियत मचलती थी कि ऊँचा पढ़ूं। जब मैंने दुआ के लिए हाथ उठाए तो निगाह आसमान की तरफ़ उठी, मैंने कुछ रोशनियां दूर जाती हुई देखीं। अल्लाह तआला के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि यह अल्लाह तआला के फ़रिश्ते थे जो तेरा क़ुरआन सुनने के लिए आसमान से नीचे उतर आए थे। अगर तुम ऊँची आवाज़ से पढ़ते रहते तो आज मदीना के लोग फ़रिश्तों को अपनी आँखों से देख लेते। वह फ़र्श पर क़ुरआन पढ़ते थे तो अर्श से फ़रिश्ते उतर आते थे। (वाक़िआत फ़क़ीर 1/218)

दौराने तिलावत तीरों की चुभन का एहसास कहाँ?

एक बार नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिहाद से वापस तशरीफ़ ला रहे थे। आप ने एक जगह पड़ाव डाला और इर्शाद फ़रमाया कि दो आदमी रात को पहरा दें ताकि बक़िया लोग आराम की नींद सो सकें। दो सहाबा ने अपने आपको इस ख़िदमत के लिए

पेश किया। आपने उनसे फ़रमाया कि उस पहाड़ की चोटी पर चले जाओ और दुश्मन का ख़्याल रखो, ऐसा न हो कि दुश्मन शबे ख़ून मारे और लोगों को नुक़सान हो। वे दोनों सहाबी पहाड़ की चोटी पर चले गए, थोड़ी देर तो बैठे रहे, थोड़ी देर के बाद आपस में मशवरा किया कि अगर दोनों जागते रहे तो मुमकिन है कि आख़िरी पहर में दोनों को नींद आ जाए तो बेहतर यह है कि एक बंदा अभी सो जाए और दूसरा जागता रहे। बाद में दूसरा जाग जाए और पहला सो जाए। इस तरह फ़र्ज़े मंसबी भी पूरा हो जाएगा और वक़्त भी अच्छा गुज़र जाएगा। उन्होंने सोचा कि मैं ख़ामोशी से इधर-उधर देख रहा हूँ। कितना अच्छा हो कि मैं दो रकअत ही पढ़ लूँ। चुनाँचे दो रकअत की नीयत बांधी और सूरः कहफ़ शुरू पढ़ना शुरू कर दी। सूरः कहफ़ पढ़ने में कुछ ऐसा मज़ा आया कि पढ़ते ही रहे। इसी बीच दुश्मन उधर कहीं आ निकला। उसने देखा की लश्कर तो सोया हुआ है, क़रीब कोई ऐसा तो नहीं जो पहरे में हो। उसने ऊपर पहाड़ की चोटी पर देखा तो एक आदमी खड़ा नज़र आया। उसने दूर ही से एक तीर मारा जो उनके जिस्म पर लगा और ख़ून निकल आया मगर सूरः कहफ़ पढ़ते रहे, दूसरा तीर मारा तो ख़ून दूसरी जगह से निकल आया मगर फिर भी क़ुरआन पढ़ते रहे। इस तरह कई तीर उनके जिस्म पर लगे और ख़ून निकलता रहा। ख़ून निकलने का मस्अला उस वक़्त तक वाज़ेह नहीं हुआ था। वह क़ुरआन पढ़ते रहे, पढ़ते रहे यहाँ तक कि महसूस हुआ कि जिस्म से इतना ख़ून निकल चुका है, कहीं ऐसा न हो कि कमज़ोरी की वजह से बेहोश होकर गिर जाऊँ। अगर गिर गया तो फिर मेरे भाई को कौन जगाएगा और लश्कर की हिफ़ाज़त कौन करेगा। यह तो ज़िम्मेदारी में कोताही होगी। लिहाज़ा जल्दी से सलाम फेरा और भाई को जगाकर कहने लगे कि दुश्मन तीरों पर तीर मारता रहता तो मैं उनको खाता रहता मगर सूरः कहफ़ को मुकम्मल

किए बग़ैर मैं कभी सलाम न फेरता, मुझे क़ुरआन के पढ़ने में ऐसा मज़ा आ रहा था, सुब्हानअल्लाह। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 3/219)

चरागाह से दरबारे ख़िलाफ़त तक

सैय्यदना उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु अपने ख़िलाफ़त के ज़माने में एक बार फ़ौज लेकर मक्का मुकर्रमा की पहाड़ी पर चढ़ रहे थे। दोपहर का वक़्त है। चिलचिलाती धूप है। एक जगह खड़े हो गए और नीचे वादी में देखना शुरू कर दिया। फ़ौज सारी खड़ी है। पसीने में शराबोर है, कोई साया नहीं, बचाव की सूरत नहीं, सब परेशान हो गए। किसी ने कहा, अमीरुल मुमिनीन! ख़ैरियत तो है? आप यहाँ खड़े हैं। फ़रमाया कि मैं नीचे वादी में देख रहा हूँ जहाँ इस्लाम लाने से पहले मैं अपने ऊँटों को चराता था और लड़कपन में मुझे ऊँट चराने का तरीक़ा नहीं आता था। मेरे ऊँट ख़ाली पेट घर जाते तो मेरा वालिद ख़त्ताब मुझे डांटता था, कोसता था। कहता था कि उमर! तू क्या कामयाब ज़िंदगी गुज़ारेगा, तुझे तो ऊँट भी चराने नहीं आते हैं। उस वक़्त को याद कर रहा हूँ कि जब उमर को जानवर चराने नहीं आते थे। और आज इस वक़्त को देख रहा हूँ कि जब इस्लाम और क़ुरआन के सदक़े अल्लाह तआला ने उमर को अमीरुल मुमिनीन बना दिया है। यह किताब यूँ उठाती है। हम भी अगर इसको पढ़ेंगे तो अल्लाह तआला हमें भी इज़्ज़त अता फ़रमाएंगे। (दवाए दिल 65)

तिलावते क़ुरआन के शैदाई

इमाम आज़म अबूहनीफ़ा रह० के हालाते ज़िंदगी में लिखा है कि आप रमज़ानुल मुबारक में तिरेसठ बार क़ुरआन पाक की तिलावत किया करते थे। एक क़ुरआन पाक दिन में पढ़ते थे और एक रात में पढ़ते थे और तीन क़ुरआन पाक तरावीह में सुना करते थे। रमज़ानुल

मुबारक में तिरेसठ क़ुरआन पाक दिन और रात में और तीन क़ुरआन पाक तरावीह की नमाज़ में, अल्लाहु अकबर।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 1/121)

सूरः बक़रः की तक्मील में ढाई साल में

हदीस पाक में आता है कि हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने सूरः बक़रः को ढाई साल में मुकम्मल किया। उनकी मादरी ज़बान अरबी थी। उनको पढ़ने में फिर क्या दिक़्क़त थी। हक़ीक़त यह थी कि वह क़ुरआन की आयत पढ़ते थे तो उस पर अमल करते थे। इधर क़ुरआन मुकम्मल होता था और इधर उनका अमल क़ुरआन के मुताबिक़ हो जाता था। इसलिए हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के अमल बिल क़ुरआन के बारे में कहा जाता है, ﴿كان وقافا عند حدود الله﴾। वह अल्लाह के अह्काम को सुनकर अपनी गर्दन झुका दिया करते थे।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 3/230)

पाँच साला हाफ़िज़ क़ुरआन

हारून रशीद के ज़माने में एक पाँच साला बच्चा पेश किया गया। उसके बाप ने बताया कि यह बच्चा क़ुरआन मजीद का हाफ़िज़ है। हारून रशीद ख़ुद भी क़ुरआन पाक का हाफ़िज़ था। उसने कहा मैं बच्चे से क़ुरआन मजीद सुनूंगा। लिहाज़ा बाप ने बेटे से कहा, बेटा! क़ुरआन सुनाओ। वह बच्चा इतना छोटा था कि ज़िद करने लगा कि अब्बू! पहले मेरे साथ वादा करो कि आप मुझे गुड़ लेकर देंगे। उस ज़माने मे गुड़ ही चिविंगम होता था। बेटे के इसरार पर बाप ने वादा किया कि हाँ मैं तुम्हें गुड़ की डली लेकर दूंगा। उसने कहा, अच्छा सुनाता हूँ। हारून रशीद ने पाँच जगहों से उससे क़ुरआन पाक सुना

और उसने पाँचों जगहों से क़ुरआन पाक सही सही सुना दिया, सुब्हानअल्लाह। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 1/189)

बदनिगाही की नहूसत से क़ुरआन भूल गए

हज़रत जुनैद बग़दाद रह० का एक मुरीद था। उसने एक ख़ूबसूरत लड़के को देखा। वह कहने लगा, हज़रत यह लड़का ग़ैर-मुस्लिम है। क्या यह भी जहन्नम में जाएगा? उन्होंने फ़रमाया कि लगता है कि तूने इसे बुरी नज़र से देखा है। अब इसका वबाल तुझ पर ज़रूर पड़ेगा। वह हाफ़िज़ क़ुरआन था। इस एक नज़र की वजह से उनका वह मुरीद क़ुरआन मजीद भूल गया।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुज़ूर दुआ है कि अब तक जो गुनाह हो चुके हैं वह माफ़ फ़रमा दें और आइंदा गुनाहों से महफ़ूज़ फ़रमा दें। ऐ मालिक! हम कमज़ोर हैं। हमें अपनी मदद अता फ़रमा दीजिए और हमें नफ़्स और शैतान के मुक़ाबले में कामयाब फ़रमा दीजिए। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 9/128)

औरत जो क़ुरआनी आयतों से बात करती थी

अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० ने एक औरत का वाक़िआ बयान किया जो क़ुरआन करीम की आयतों से बात का जवाब दिया करती थी। इस वाक़िए की तफ़्सील बयान करने से बात ज़्यादा लंबी हो जाएगी। फिर भी फ़रमाते हैं कि मैं एक जगह सोया हुआ था। मैंने देखा कोई सवारी पर सवार मेरे पास आया। मैंने पूछा तू कौन है? उधर से जवाब मिला ﴿سلام قولا من رب رحيم﴾ औरत की आवाज़ थी। जब इन अल्फ़ाज में सलाम किया। मैंने पूछा, अम्मा! किधर से आ रही हो। उधर से जवाब मिला ﴿واتموا الحج والعمرة لله﴾ मैं पहचान गया उमरा करके आ रही है। मैंने पूछा, यहाँ कैसे? कहने लगी ﴿من

﴿يضلل الله فلا هادي له.﴾ मैं समझ गया कि यह रास्ता गुम कर गई है। मैंने पूछा अम्मा जान! कहाँ जाना चाहती हो? कहने लगी ﴿ادخلوا المصر ان شاء آمنين﴾ मैं समझ गया शहर जाना चाहती है। इसलिए मैंने उसकी सवारी की मुहार पकड़ ली और चलना शुरू कर दिया। दर्मियान में मैंने पूछना चाहा, तुम्हारी ज़िंदगी कैसी है? शौहर है या नहीं? मैंने यह बात पूछी तो उन्होंने आगे आयत पढ़ी ﴿ولا تقف ما ليس لك به علم ان السمع والبصر والفواد كل اولئك كان عنه مسئولا.﴾ जब उन्होंने यह आयत पढ़ी तो मैं समझ गया कि यह इस बारे में मुझसे कोई बात करना नहीं चाहती। मैंने कुछ अरबी के अश'आर शुरू कर दिए। फ़रमाते हैं उसने आगे से क़ुरआन पढ़ा ﴿فاقرؤا ما تيسر من القرآن.﴾ अगर तुम्हें कुछ पढ़ना ही है तो क़ुरआन पढ़ो। कहने लगे मैं क़ुरआन पढ़ता रहा। जब शहर आ गया तो मैंने पूछा यहाँ कौन है? कहने लगी, ﴿المال والبنون زينة الحيوة الدنيا.﴾ मैं समझ गया उनके बच्चे हैं। पूछा उनका नाम क्या है? फ़रमाने लगीं, इब्राहीम व इस्माईल व इस्हाक़। मैं समझ गया कि इनके तीन बच्चे हैं और ये उनके नाम हैं। जब दरवाज़े पर जाकर आवाज़ लगाई तो तीन ख़ूबसूरत नौजवान जिनके चेहरे पर इतना नूर था, इतनी जाज़िबयत थी कि बंदे की निगाह हटती नहीं थी। हीरे और मोती की तरह चमकते चेहरों वाले वे नौजवान आए। उनके चेहरों पर तक़्वे के आसार थे। नेकी के आसार थे। फ़रमाते हैं मैं तो उनके हुस्न व जमाल को देखता ही रह गया। वे आए, अपनी माँ से मिले, वे ख़ुश हुए। अम्मी हम तो परेशान थे। आप कहाँ रह गयी थी। अब उनकी माँ ने कहा ﴿ويطعمون الطعام﴾ जब उन्होंने यह अल्फ़ाज़ ये कहे तो बच्चों ने फ़ौरन दस्तरख़्वान बिछा दिया। खाने के लिए कुछ उनके पास था, निकालकर रख दिया और कहा आप खा लीजिए। मैंने इंकार किया तो कहने लगी, ﴿انما نطعمكم لوجه الله.﴾ मैं समझ गया अल्लाह की रज़ा के लिए कुछ खिलाना चाहती हैं। मैंने खा लिया।

खाने के बाद मैं एक तरफ़ को जाने लगा तो उन्होंने मुझे अलविदाई बात कही ﴿ان هذا كان لكم جزاء وكان سعيكم مشكورا۔﴾ मैं बड़ा है हैरान। मैंने उनके बच्चे से पूछा यह आपकी माँ का अजीब मामला है। जबसे मुझे मिली तब से हर बात के जवाब में क़ुरआन पाक की आयत पढ़ती हैं। उन्होंने कहा हमारी माँ क़ुरआने पाक की हाफ़िज़ा हैं, हदीस की आलिमा हैं। इनके दिल में ख़शियते इलाही इतनी आ चुकी है। यह सोचती हैं कयामत के दिन जब मेरे नामाआमाल को खोला जाएगा। कहीं ऐसा न हो कि उसमें उल्टी सीधी बातचीत दर्ज हो। पिछले बीस साल से उनकी ज़बान से क़ुरआन पाक की आयत के सिवा कुछ नहीं निकला, सुब्हानअल्लाह। (सुकूने दिल 177)

क़ुरआनी असरअंगेज़ी पर घरवाले इस्लाम से मुशर्रफ़

हमारे मुल्क पाकिस्तान के सूबा सिंध में एक हिन्दू घराने के इस्लाम लाने का एक अजीब वाक़िआ पेश आया। एक जवान का ताल्लुक़ हिन्दू घराने से था। उसे कैंसर का मर्ज़ हो गया। डाक्टरों ने लाईलाज क़रार देकर हास्पिटल से घर भेज दिया। उसकी उम्र चालीस बयालिस साल थी। वह घर आकर बड़ा उदास व परेशान रहने लगा। उसे रह रह कर यह ख़्याल आता कि मैं तो बस चंद दिनों के बाद मर जाऊँगा। एक दिन उसकी बीवी उसके पास बैठी थी। वह उसके साथ मुहब्बत भरी बातें कर रहा था। इस दौरान वह कहने लगा, अब तो मैं और आप जुदा हो जाएंगे क्योंकि अब मेरी सेहत बहाल होने का कोई चान्स नहीं है।

बीवी ने कहा, अगर आप मेरे साथ वादा करें कि मैं जो भी कहूँगी आप मेरी बात मानेंगे तो इस शर्त पर मैं आपको एक चीज़ पिलाती हूँ, आप बिल्कुल सेहतमंद हो जाएंगे।

उसने जवाब दिया, जब हास्पिटल में मेरे ईलाज के लिए दवाईयाँ

नहीं तो आपके पास कौन सी चीज़ आ गई? वह कहने लगी, क्या आपको मुझसे मुहब्बत है? उसने कहा, जी हाँ, बहुत मुहब्बत है। बीवी ने कहा, अगर आपको मुझसे वाक़ई मुहब्बत हैं तो फिर वादा करें। आप बिल्कुल ठीक हो जाएंगे। फिर हम इकट्ठे लंबी ज़िंदगी गुज़ारेंगे। बस आप वादा करें कि जो बात मैं कहूँगी आप ज़रूर मानेंगे। उसने कहा मैं तो आपकी बातें वैसे ही मानता हूँ। पहले ज़माने में तो जानवर को रस्सी डालकर पीछे लेकर चलते थे लेकिन आजकल के नौजवान ऐसे सधाए हुए हैं कि वैसे ही पीछे चल रहे होते हैं।

ख़ैर मियाँ ने वादा कर लिया कि आप जो बात भी कहेंगी मैं मानूंगा। उसके बाद उसकी बीवी उसके पास कुर्सी डालकर बैठ गई। उसने अपने पास एक जग में पानी भी रख लिया। वह कुछ पढ़ पढ़ कर उस पर फूंकती रही। जब वह फ़ारिग़ हुई तो उसने मियाँ को उसमें से कुछ पानी दिया। फिर जब भी उसको प्यास महसूस होती तो वह उस जग में से पानी पिला देती।

अल्लाह की शान देखिए कि उसने अभी कुछ दिन ही वह पानी पिया था कि वह अपने आपको सेहतमंद महसूस करने लगा। उसने जाकर लैब्रोट्री टैस्ट कराया तो पता चला कि उसके अंदर का ब्लड कैंसर ख़त्म हो चुका था। उसको यक़ीन न आया। जब उसने सारी सूरतेहाल अपनी बीवी को बताई तो उसने कहा कि किसी दूसरी लैब्रोट्री से चैक करवा लें। लिहाज़ा दूसरी लैब्रोट्री में चला गया। वहाँ से भी यही रिपोर्ट मिली कि ब्लड कैंसर ख़त्म हो चुका है। वह बड़ा हैरान हुआ।

जब वह दूसरी रिपोर्ट लेकर घर आया तो बीवी से कहने लगा, मेरी बीमारी तो वाक़ई ख़त्म हो चुकी है। और अब मैं अपने आपको

बेहतर महसूस कर रहा हूँ मगर सच सच बताएं कि आख़िर यह मामला क्या है? बीवी ने कहा, पहले तो आप वादा पूरा करें जो मेरे साथ किया था, फिर बताऊँगी। उसने कहा ठीक है, आप मुतालबा करें, आप जो बात भी कहेंगी मैं पूरी करूंगा। वह कहने लगी, "आप कलिमा पढ़कर मुसलमान बन जाएं।" जब उसकी बीवी ने यह कहा तो वह हिन्दू जवान हैरान रह गया। वह उसके चेहरे की तरफ़ देखकर ग़ौर से देखकर बोला, आप क्या कह रही हैं?

बीवी ने कहा, मैं आपकी बीवी हूँ, अब आपको सेहत मिल चुकी है, आपने मुझसे वादा किया हुआ है, लिहाज़ा अब आप अपना वादा निभाएं और कलिमा पढ़कर मुसलमान हो जाएं। उसने कहा, मैं तो यह तसव्वुर भी नहीं कर सकता था कि आप मुझसे यह कहेंगी।

बीवी ने कहा, जी आपकी बात बिल्कुल ठीक है, लेकिन अब जो कह दिया है वह पूरा करें। उसने पूछा, क्या आप मुसलमान हैं? बीवी कहने लगी, हाँ मैं मुसलमान हूँ।

उसने कहा कि तुम्हारा बाप तो इतना पक्का हिंदू है कि वह तो औरों को भी हिन्दू बनाता है। अगर उसे आपके बारे में पता चल गया तो वह आपका गला काट देगा। तुम ऐसे घर की लड़की हो फिर तुम कैसे मुसलमान बन गयीं? बीवी ने कहा, यह लंबी कहानी है, फिर सुनाऊँगी। आप पहले कलिमा पढ़ें और मुसलमान हो जाएं। मियाँ अब अच्छी तरह क़ाबू में आ चुका था इसलिए उसे कलिमा पढ़ना ही पड़ा। अलहम्दुलिल्लाह वह मुसलमान बन गया। उसके बाद उसने बीवी से कहा अब बताओ कि असल में मामला क्या हुआ था? अब उसने उसे यह कहानी सुनाई जो अब मैं सुना रहा हूँ।

बीवी ने कहा कि जब मैं छोटी उम्र में स्कूल में पढ़ती थी उस वक़्त मेरी क्लास में एक मुलमान लड़की भी थी। वह मेरी सहेली बन

गई। वह हमारे पड़ोस में ही रहती थी। मैं शाम के वक़्त उसके घर खेलने के लिए जाती थी। उसकी वालिदा मुसलमान बच्चों को क़ुरआन मजीद पढ़ाती थीं। मेरी सहेली भी अपनी वालिदा से क़ुरआन मजीद पढ़ती थी। क्योंकि वह मेरी सहेली थी इसलिए जब वह अपना सबक़ याद करती तो मैं भी उसके पास बैठ जाती थी। मैं भी ज़हीन थी। उसे भी सबक़ याद हो जाता और मुझे भी उसका सबक़ याद हो जाता। जब वह अम्मी को सुनाती तो मैं भी उनसे कहती कि ख़ाला! मैं भी सुनाती हूँ। इस तरह वह मुझसे भी सबक़ सुन लेती थीं।

जब ख़ाला ने कुछ दिनों में मेरा शौक़ देखा तो उन्होंने मुझे मश्वरा दिया कि बेटी! तुम रोज़ाना ही तो आती हो, तुम भी इसके साथ साथ रोज़ाना याद करती रहो। क्योंकि मेरी क्लास फ़ैलो थी इसलिए मैंने कहा, जी ठीक है। जब मैंने यह कहा तो ख़ाला कहने लगी, बेटी! यह किसी को न बताना। मैंने कहा, जी मैं किसी को नहीं बताऊँगी। इस तरह मैं दो साल तक उनके घर जाती रही और सबक़ पढ़ती रही। जिस तरह उनकी बेटी ने नाज़रा क़ुरआन पाक मुकम्मल किया उसी तरह मैंने भी उसके साथ क़ुरआन पाक मुकम्मल कर लिया।

मैंने जब क़ुरआन पाक मुकम्मल पढ़ लिया तो मैंने ख़ाला से कहा, बाक़ी बच्चे तो घर में पढ़ते हैं लेकिन मैं तो घर में नहीं पढ़ सकती। उन्होंने कहा कि क़ुरआन मजीद में अलम-नशरह एक सूरत है। यह सूरत पढ़कर अगर किसी मरीज़ पर दम कर दें या पानी पर दम करके उसे पिला दें तो उसको सेहत मिल जाती है। यह अमल मुझे किसी बुज़ुर्ग ने बताया था। अब यही अमल मैं आपको बता रही हूँ, इसे याद रखना यह कभी न कभी तेरे काम आएगा। वह मुझे इस किस्म की बातें सुनाती रहती थीं।

जब मैं जवान हुई और मेरी शादी होने लगी तो चंद दिन पहले मैं उनके पास गई और उनके पास बैठकर बहुत रोई। मैंने कहा, ख़ाला! आपकी बेटी मेरी सहेली थी। उसकी वजह से मैं आपके घर आया करती थी। इसी बहाने से मैंने क़ुरआन पाक भी पढ़ लिया था और आपने मुझे कलिमा भी पढ़ा दिया था। अंदर से तो मैं मुसलमान हो चुकी हूँ लेकिन अब जहाँ मेरी शादी हो रही है, वहाँ तो मैं न अपने ईमान का इज़्हार कर सकती हूँ और न ही मेरे पास क़ुरआन मजीद होगा, वहाँ मेरा क्या बनेगा? ख़ाला ने कहा, बेटी! तुम परेशान न हो। मैं किसी न किसी तरह तुम्हारे साथ जहेज़ में क़ुरआन मजीद भेज दूंगी। मैंने कहा, यह तो बहुत ही अजीब बात है। चुनाँचे ख़ाला ने मेरी वालिदा को पैग़ाम भिजवाया कि आपकी बेटी मेरी बेटी की सहेली है, मेरी बेटी उसे हदिए के तौर पर जहेज़ में कुछ कपड़े देना चाहती है। अगर इजाज़त हो तो मैं भी कपड़े बनवा दूँ। मेरे माँ-बाप के वहम व गुमान में भी यह बात नहीं आ सकती थी। उन्होंने सोचा कि यह दोनों प्राइमरी से लेकर कालेज तक क्लास फैलो हैं और आपस में मुहब्बत भी रखती हैं। इसलिए उन्होंने इजाज़त दे दी कि ठीक है। आप भी कुछ जोड़े बनवा दें। लिहाज़ा उन्होंने जवाब भेजा कि हम उसको जहेज़ में सात जोड़े बनवाकर देंगे।

उस ख़ाला ने मेरे लिए बहुत क़ीमती जोड़े बनवाए। उन्होंने कपड़ों को बहुत ही ख़ूबसूरत तरीक़े से गिफ़्ट पैक करवाया और उनके बीच में क़ुरआन मजीद भी गिफ़्ट पैक करके हमारे घर पहुँचा दिया। और साथ ही यह कि कहा कि हमने इसके कपड़े गिफ़्ट पैक किए हैं, आप उसे यहाँ अपने घर न खोलना बल्कि आपकी बेटी अपने नए घर जाकर खोलेगी ताकि उसका ख़ाविन्द भी देखकर ख़ुश हो।

मेरे माँ-बाप को उनकी यह बात बहुत अच्छी लगी। लिहाज़ा

उन्होंने कहा कि यह गिफ़्ट पैक वाक़ई बहुत ख़ूबसूरत है। बेहतर यही होगा कि दुल्हन उसे अपने घर में जाकर ही खोले। मैं जब आपके घर में आई तो मैंने सबसे पहला काम यह किया कि जिस कमरे में मेरी रिहाइश थी, मैंने कलाम पाक निकालकर कहीं छिपा दिया। जब आप रोज़ाना दफ़्तर चले जाते तो मैं पीछे क़ुरआन पाक खोलकर पढ़ लेती और जब आपके वापस आने का वक़्त क़रीब होता तो मैं उसे अच्छी तरह छिपा कर रख देती ताकि आप इसको देख न लें। ज़िंदगी के इतने साल मैंने अपना ईमान छिपाए रखा। आख़िर आप बीमार हो गए और दवाईयों ने काम न किया। मेरे दिल में पक्का यक़ीन था कि जहाँ दवाईयाँ काम नहीं आतीं वहाँ अल्लाह का कलाम काम आ जाता है। अल्लाह तआला भी इसी कलाम में फ़रमाते हैं :

﴿شفاء لما في الصدور﴾

(यह क़ुरआन मजीद) सीने (दिल) की बीमारियों के लिए शिफ़ा है।

वह कहने लगी, जब आप अपनी ज़िंदगी से नाउम्मीद हो गए और आपने मुझे कहा अब मैं मरने के क़रीब हूँ तो फिर मैंने आपसे कहा कि वादा करें जो मैं कहूँगी आप उसे पूरा करेंगे तो मैंने आपको कुछ पानी पिलाती हूँ। आपने मेरी बात मान ली और मैं वही सूरत आपको पानी पर दम करके दी और अल्लाह तआला ने आपको शिफ़ा अता फ़रमा दी। मैंने भी कलिमा पढ़ा हुआ था और आप भी मुसलमान बन चुके हैं। अल्लाह तआला ने आपको नई ज़िंदगी दी है। अब आप अपनी ज़िंदगी को अल्लाह के दीन की ख़िदमत में सर्फ़ कर दीजिए, अल्लाहु अकबर। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 10/106-112)

सूरः फ़ातिहा का असर

अमरीका में जब कोई आदमी बहुत ज़्यादा सुकून महसूस करता है

तो कहता है, I am felling natural high. कि मैं क़ुदरती तौर पर बहुत ज़्यादा सुकून महसूस कर रहा हूं। अमरीका का एक अमीर आदमी था जिसकी ज़िंदगी में सुकून नहीं था। इस वजह से उसके सर में दर्द अक्सर रहता था। हमारे एक दोस्त मिस्टर अहमद किसी सरकारी काम के सिलसिले में वहाँ गए और एक मकान में रिहाईश अख़्तियार कर ली। उस मकान के क़रीब ही वहाँ के मुक़ामी लोगों ने एक मस्जिद बनाई हुई थी। मिस्टर अहमद ने भी वहाँ नमाज़ पढ़नी शुरू कर दी। उस अमीर आदमी से उसकी दोस्ती हो गई, उसका मकान भी क़रीब ही था।

एक दफ़ा मिस्टर अहमद नमाज़ पढ़ने के लिए अपने घर से निकले तो उस अंग्रेज़ ने पीछे से आवाज़ देकर कहा, मिस्टर अहमद इधर आएं, मैं आपको गाना सुनाना चाहता हूं। मिस्टर अहमद ने कहा, मैं गाना सुनने से नफ़रत करता हूं और अब मैं नमाज़ के लिए जा रहा हूं, मैं नहीं आ सकता, उसने इसरार करते हुए, फिर वही बात दोहराई। आख़िर वह कहने लगा, मिस्टर अहमद! मैं आपको वह गाना सुनाना चाहता हूं, जो आप इस मीनार से रोज़ाना पाँच मर्तबा सुनते हैं।

मिस्टर अहमद फ़रमाते हैं कि शायद अज़ान की बात कर रहा है। उस कमरे में टेबल पर एक तबला रखा हुआ था, उसने कमरा बंद कर दिया और तबला बजाना शुरू कर दिया, मैं परेशान था कि जमात का वक़्त निकल जाएगा मगर उसने थोड़ी देर के बाद तबले के सुर पर ﴿الحمد لله رب العالمين﴾ पढ़ना शुरू कर दिया। मैं तो समझ गया कि हक़ीक़त में वह क्या पढ़ रहा था। उसने गाने की सुर बनाकर पूरी सूरः फ़ातिहा पढ़ दी। मैंने बाद उससे पूछा कि तूने यह गाना किससे हासिल किया? उसने बताया कि मुझे बहुत ज़्यादा ज़हनी परेशानी रहती थी। मिस्र में एक मुसलमान दोस्त रहते थे। मैंने उनसे

अपनी ज़हनी परेशानी बयान की तो उन्होंने मुझे यह गाना दिया है और कहा कि जब तुम्हें बहुत ज़्यादा परेशानी हो तो किसी तन्हा कमरे में बैठकर पढ़ लिया करो। तुम्हें सुकून मिल जाया करेगा। उसके बाद जब भी मुझे कोई परेशानी होती है तो मैं इसी तरह यहाँ बैठकर यह गाना गा लेता हूँ तो मुझे ज़्यादा सुकून मिलता है और फिर मैं अपने दोस्तों को बताता हूँ I am felling natural high. कि मैं क़ुदरती तौर पर बहुत ज़्यादा सुकून महसूस कर रहा हूँ।

(खुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 3/224)

एक ईसाई लड़की का इक़रार कि अब असल इंजील कहाँ?

फ़क़ीर ने एक मर्तबा स्वीडन के एक कालेज में इस्लाम के उनवान पर लैक्चर देते हुए कहा कि क़ुरआन दुनिया की वाहिद किताब है जो आज तक असली हालत में मौजूद है। एक ईसाई लड़की ने सवाल किया कि क्या हमारे पास असली किताब नहीं है? फ़क़ीर ने पूछा कि यह बताएं कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर इंजील किस ज़बान में नाज़िल हुई? कहने लगी, सुरयानी ज़बान में, मैंने पूछा कि आज कि ज़बान में है? कहने लगी, अंग्रेज़ी ज़बान में। फ़क़ीर ने कहा, मालूम हुआ कि जिस ज़बान में नाज़िल हुई थी आज उस ज़बान में इंजील आपके पास मौजूद नहीं है। लड़की कहने लगी हाँ मैं तसलीम करती हूँ कि हमारे पास उसका अंग्रेज़ी तर्जुमा है। फ़क़ीर ने कहा कि इसको आप खुदा का कलाम (Words of God) नहीं कह सकते। उसने सारी क्लास के सामने तसलीम किया कि वाक़ई असल इंजील इस वक़्त मौजूद नहीं है।

(वाक़िआत फ़क़ीर : 1/238)

ज़ालिकल किताबु ला रैबा फ़ीह

जर्मनी में म्यूनिख़ युनिवर्सिटी का एक मज़हबी शोबा "डिपार्टमेंट आफ़ थियालोजी" के नाम से मशहूर है। वहाँ के प्रोफ़ेसर ने बहुत सारी रक़म रिज़र्व कराई ताकि दुनिया के मुख़्तलिफ़ हिस्सों से मुसलमानों की किताब (क़ुरआन मजीद) को इकठ्ठा करके देखें कि इनमें कोई फ़र्क़ तो नहीं, चुनाँचे पूरी दुनिया के मुख़्तलिफ़ इलाक़ों से क़ुरआन पाक के चालीस हज़ार नुस्ख़े इकठ्ठे किए गए और उन सब नुस्ख़ों के एक एक हर्फ़ और एक एक नुक़्ते को जब मिलाया गया तो कहीं भी फ़र्क़ न निकला। सुब्हानअल्लाह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का फ़रमान है :

﴿انا نحن نزلنا الذكر وانا له لحافظون.﴾

इस नसीहतनामे को हमने नाज़िल किया और इसकी हिफ़ाज़त भी हमारे ज़िम्मे है।

बहरहाल क़ुरआन पाक के जमा होने में कोई आदमी शक नहीं कर सकता। बस यह ख़ुदा का कलाम (Words of God) है।

पत्तों पर लिखा क़ुरआन पाक भी देखा हमने

फ़क़ीर को समरक़ंद जाने का मौक़ा नसीब हुआ तो वहाँ की लायब्रेरी में लोहे की तख़्तियों पर लिखा हुआ क़ुरआन पाक देखा। लाइब्रेरी इंचार्ज औरत ने एक दूसरा नुस्ख़ा दिखाया, कहने लगी, यह एक नादिर चीज़ है। जब फ़क़ीर ने देखा तो आप यक़ीन कीजिए कि उसके पत्तों की रगें अभी तक इस तरह साफ़ नज़र आती हैं। फ़क़ीर ने उनको हाथ लगाकर देखा, वह पेड़ के पत्ते थे मगर उन्हें किताबी शक्ल में बंद किया गया था। यह मालूम नहीं कि कब लिखा था फिर

भी यक़ीनी तौर पर काग़ज़ की ईजाद से पहले की बात होगी। सुब्हानअल्लाह! आज तक पत्तों पर लिखा हुआ क़ुरआन महफ़ूज़ है।
(खुत्बात ज़ुलफ़ुक्क़ार 3/223)

माज़ी क़रीब में क़ुरआन मजीद का अजीब मौजिज़ा

क़ुरआन मजीद अल्लाह तआला का ऐसा अज़ीमुश-शान कलाम है जिसके मौजिज़े हर दौर में नज़र आते रहे। सन् 1987 ई० की बात है कि इस आजिज़ को अमरीका में कुछ वक़्त गुज़ारने का मौक़ा मिला। उस वक़्त मिस्र के मशहूर क़ारी अब्दुल बासित जिनकी कैसिटें आप अक्सर सुनते रहते हैं, वह भी वहाँ तशरीफ़ लाए। कुछ ऐसा सिलसिला बना कि मुख़्तलिफ़ महफ़िलों में वह क़ुरआन पाक की तिलावत करते थे और यह आजिज़ कहीं उर्दू में कहीं इंगलिश में जैसा मजमा होता था उसी के हिसाब से कुछ बातें अर्ज़ कर दिया करता था। इसी अंदाज़ से मुख़्तलिफ़ जगहों पर प्रोग्राम होते रहे, आपको पता ही कि क़ारी अब्दुल बासित कितना डूब कर क़ुरआन पढ़ते थे। अल्लाह करीम ने उनको आवाज़ भी ऐसी दी थी कि जो उनकी ज़बान से क़ुरआन पाक सुनता था वह अश-अश कर उठता था। उनको इस आजिज़ से इतनी मुहब्बत थी कि वह मेरा नाम लेकर मुझसे बात नहीं करते थे बल्कि जब भी बात करनी होती तो वह मुझे ﴾رجل صالح﴿ रजलुन सालेह हकर बात करते थे। एक मर्तबा किसी ने उनसे पूछा, क़ारी साहब! आप इतना मज़े का क़ुरआन मजीद पढ़ते हैं, आपने भी कभी क़ुरआन का मौजिज़ा देखा है? वह कहने लगे, क़ुरआन का मौजिज़ा? मालूम नहीं कि मैंन क़ुरआन के सैकड़ों मौजिज़े आँखों से देखे हैं। मैंने कहा कोई एक तो सुना दीजिए तो यह वाक़िआ उन्होंने ख़ुद सुनाया :

क़ारी साहब फ़रमाने लगे कि यह उस वक़्त की बात है कि जब

जमाल अब्दुन्नासिर मिस्र का सदर था। उसने रशिया का सराकरी दौरा किया। वहाँ पर कम्युनिस्ट हुकूमत थी। उस वक़्त कम्युनिज़्म की तूती बोलती थी। दुनिया इस सुर्ख़ इंक़लाब से घबराती थी। दुनिया में इसको रीछ समझा जाता था। आज तो इस सुपर पावर को अल्लाह तआला ने जिहाद की बरकत से सफ़र पावर बना दिया है। जमाल अब्दुन्नासिर मास्को पहुँचा, उसने वहाँ जाकर अपने मुल्की कामों के बारे में कुछ मुलाक़ातें कीं, मुलाक़ातों के बाद उन्होंने थोड़ा सा वक़्त आपसी बातचीत के लिए रखा हुआ था। उस वक़्त वे आपस में गप्पे मारने के लिए बैठ गए। जब आपस में गप्पे मारने लगे तो उन कम्युनिस्टों ने कहा, जमाल अब्दुन्नासिर! तुम क्या मुसलमान बने फिरते हो, तुम हमारी सुर्ख़ किताब को संभालो, जो कम्युनिज़्म की बुनियादी जड़ थी, तुम भी कम्युनिस्ट बन जाओ। हम तुम्हारे मुल्क में टैक्नालोजी का तार्रुफ़ करा देंगे। तुम्हारे मुल्क में साइंसी तरक़्क़ी बहुत ज़्यादा हो जाएगी और तुम दुनिया के तरक़्क़ी याफ़्ता मुल्कों में शुमार हो जाओगे। इस्लाम को छोड़ो और कम्युनिज़्म अपना लो। जमाल अब्दुन्नासिर ने उन्हें इसका जवाब तो दिया सही मगर दिल को तसल्ली न हुई। इतने में वक़्त ख़त्म हो गया और वापस आ गए। मगर दिल में कसक बाक़ी रह गई कि मुझे इस्लाम की हक़्क़ानियत को और भी ज़्यादा वाज़ेह करना चाहिए था। जितना मुझ पर हक़ बनता था मैं नहीं कर सका। दो साल बाद जमाल अब्दुन्नासिर को एक बार फिर रूस जाने का मौक़ा मिला। क़ारी साहब फ़रमाते हैं कि मुझे सदर की तरफ़ से लेटर मिला कि आपने तैयारी करनी है और मेरे साथ मास्को जाना है। कहने लगे कि मैं बड़ा हैरान हुआ कि क़ारी अब्दुलबासित की ज़रूरत तो पड़े सऊदी अरब में, अरब इमारात में, पाकिस्तान में वहाँ मुसलमान बसते हैं। मास्को और रशिया जहाँ ख़ुदा से बेज़ार लोग मौजूद हैं। दीन से बेज़ार लोग मौजूद हैं वहाँ

क़ारी अब्दुलबासित की क्या ज़रूरत पड़ गई। ख़ैर तैयारी की और मैं सदर के हमराह वहाँ पहुँचा।

वहाँ उन्होंने अपनी मीटिंग मुकम्मल कीं। उसके बाद थोड़ा सा वक़्त आपसी बातचीत के लिए रखा हुआ था। फ़रमाने लगे इस मर्तबा जमाल अब्दुन्नासिर ने हिम्मत से काम लिया और उनसे कहा कि यह मेरे साथी हैं जो आपके सामने कुछ पढ़ेंगे, आप सुनिएगा। वे समझ न पाए कि यह क्या पढ़ेगा। वे पूछने लगे कि यह क़ुरआन पढ़ेगा? उन्होंने कहा, अच्छा पढ़िए। फ़रमाने लगे मुझे इशारा मिला और मैंने पढ़ना शुरू किया। सूरः ताहा का वह रुकू पढ़ना शुरू कर दिया जिसे सुनकर किसी दौर में हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु भी ईमान ले आए थे :

طٰهٰ. مَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لِتَشْقٰیO اِلَّا تَذْكِرَةً لِّمَنْ يَّخْشٰیO

.......اِنَّنِیْٓ اَنَا اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدْنِیْ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِیْ.

फ़रमाते हैं कि मैंने जब दो रुकू तिलावत करके आँख खोली तो क़ुरआन का मौजिज़ा अपनी आँखों से देखा कि सामने बैठे हुए कम्युनिस्टों में से चार पाँच आदमी आँसुओं से रो रहे थे। जमाल अब्दुन्नासिर ने पूछा, जनाब! आप क्यों रो रहे हैं? वे कहने लगे, हम तो कुछ नहीं समझे कि आपके साथी ने क्या पढ़ा है मगर पता नहीं कि इस कलाम में कुछ ऐसी तासीर थी कि हमारे दिल मोम हो गए। आँखों से आँसुओं की झड़ियाँ लग गयीं और हम कुछ बता नहीं सकते कि यह सब कुछ कैसे हुआ। सुब्हानअल्लाह जो क़ुरआन को मानते नहीं, क़ुरआन को जानते नहीं अगर वे भी क़ुरआन सुनते हैं तो अल्लाह तआला उनके दिलों में भी असर पैदा कर दिया करते हैं।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 8/221-224)

दरूद पढ़ने पर मुँह से ख़ुशबू

शेखुल हदीस मौलाना ज़करिया रह० ने फ़ज़ाइल दरूद शरीफ़ में लिखा है कि एक आदमी रात को सोने से पहले रोज़ाना दरूद शरीफ़ पढ़ता था। एक रात ख़्वाब में उसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत नसीब हुई। अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, अपना मुँह मेरे क़रीब करो जिससे तुम मुझ पर दरूद पढ़ते हो, मैं उसका बोसा लेना चाहता हूँ। उसने अपना रुख़्सार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़रीब कर दिया। अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसके चेहरे का बोसा लिया और उसकी आँख खुल गई। जैसे ही आँख खुली पूरा घर मुश्क की ख़ुश्बू से महक रहा था। उसके बाद आठ दिन तक उसके रुख़्सार से मुश्क की ख़ुश्बू आती रही। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 10/190)

❋ ❋ ❋

بسم الله الرحمن الرحيم

﴿فادعونی استجب لکم.﴾

दुआ और आह व ज़ारी

दुआ और आह व ज़ारी

रहमत के उबलते चश्मे

अल्लाह तआला की रहमत का तो यह हाल है कि एक आदमी जो बुतों का पुजारी था वह एक जगह बैठकर या सनम! या सनम! या सनम! की तस्बीह पढ़ रहा था। वह सनम कहते कहते रात को थक गया तो उसे ऊँघ आने लगी। जब ऊँघ आई तो उसकी ज़बान से या सनम के बजाए या समद! का लफ़्ज़ निकल गया जैसे ही उसकी ज़बान से यह लफ़्ज़ निकला तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने फ़ौरन फ़रमाया :

﴿لبيك يا عبدي﴾ मेरे बंदे मैं हाज़िर हूं, मांग क्या मांग रहा है?

फ़रिश्ते हैरान होकर पूछने लगे, ऐ अल्लाह! यह बुतों का पुजारी और सारी रात बुत के नाम की तस्बीह करता रहा है। अब नींद के ग़लबे की वजह से आपका नाम निकल गया है और आपने फ़ौरन मुतवज्जे होकर फ़रमाया कि मेरे बंदे! तू क्या चाहता है, इसमें क्या राज़ है? अल्लाह तआला ने फ़रमाया, मेरे फ़रिश्तो! वह सारी रात बुतों को पुकारता रहा और बुत ने कोई जवाब न दिया, जब उसकी ज़बान से मेरा नाम निकला तो अगर मैं भी जवाब न देता तो मुझ में और बुत में क्या फ़र्क़ रह जाता? जो परवरदिगार इतना मेहरबान हो कि बंदे की ज़बान से नींद की हाल में भी अगर नाम निकल आए तो परवरदिगार उसको भी क़ुबूल फ़रमा ले तो हम होश व हवास में दुआएं मांगेंगे तो परवरदिगार हमारी दुआओं को क्यों न क़ुबूल फ़रमाएंगे। दुआ है कि परवरदिगार आलम हमें अपनी सच्ची मुहब्बत

अता फ़रमा दे और मौत के वक़्त हमारे पास ईमान की नेमत सलामत रहे और कयामत के दिन नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के झंडे के साए तले हाज़िर हो जाएं।

(खुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 11/77)

आह व ज़ारी और शब बेदारी ने बेड़ा डुबो दिया

सलाहुद्दीन अय्यूबी रह० सलीबी जंगों में मसरूफ़ थे। दुश्मन की तादाद बहुत ज़्यादा है। मुसलमानों की तादाद बहुत थोड़ी है। इत्तिला मिली की दुश्मन का बहरी बेड़ा आ रहा है। इस पर सलाहुद्दीन को बड़ी फ़िक्र हुई कि मुसलमानों की तादाद पहले ही थोड़ी और ऊपर से दुश्मन का बहरी बेड़ा आ रहा है। तो यह तो मुसलमानों पर मुश्किल का वक़्त आ गया। लिहाज़ा वह बैतुलमुक़द्दस पहुँचे और सारी रात रुकू व सज्दे में गुज़ार दी। अल्लाह के हुज़ूर रोने धोने और दुआएं मांगने में गुज़ार दी। सुबह की नमाज़ पढ़कर जब बाहर निकले तो देखते हैं कि एक अल्लाह वाले खड़े हैं जिनका पुरनूर चेहरा बतला रहा था कि अल्लाह पाक ने उन्हें कोई रूहानी ताक़त अता की है। सलाहुद्दीन अय्यूबी रह० क़रीब हुए कि मैं उनसे दुआ करवाता हूँ। चुनाँचे सलाम किया। अर्ज़ किया कि हज़रत दुआ फ़रमा दें। दुश्मन का बहरी बेड़ा आ रहा है। उन्होंने सलाहुद्दीन के चेहरे को देखा। वह भी माद्दे से पार को देखना जानते थे। उनको भी अल्लाह पाक ने बसीरत दी हुई थी। पहचान गए फ़रमाने लगे, सलाहुद्दीन तेरे रात के आँसुओं ने दुश्मन के बहरी बेड़े को डुबो दिया। और वाक़ई तीन दिन के बाद इत्तिला मिली के दुश्मन का बहरी बेड़ा रास्ते में ग़र्क़ हो चुका है। तो जो इंसान रातों को उठकर मांगता है अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उसके लिए दुनिया का जुगराफ़िया ही बदल कर रख देते हैं। उसके हाथ उठ जाते हैं, अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त तक़दीरों के फ़ैसले कर देते हैं।

यह मामूली बात नहीं होती। यह बहुत बड़ी नेमत होती है। इसलिए हमें इस दिल को बनाने की ज़रूरत है। (दवाए दिल : 28)

दुआ से बदलती वह तक़्दीर देखी

मुल्ला लाहौरी रह० इमाम रब्बानी मुजद्दिद अलफ़ेसानी रह० के दो बेटे हज़रत मुहम्मद सईद रह० और हज़रत मुहम्मद मासूम रह० के उस्ताद थे। एक मर्तबा मुजद्दिद अलफ़ेसानी रह० को कश्फ़ के ज़रिए पता चला कि मुल्ला ताहिर की पेशानी पर 'मुल्ला ताहिर लाहौरी शक़ी' लिखा हुआ है। हज़रत रह० ने इसका तज़किरा अपने साहबज़ादों से कर दिया। क्योंकि हज़रत के साहबज़ादे मुल्ला ताहिर के शागिर्द थे इसलिए उन्होंने हज़रत से दरख़्वास्त की कि आप अल्लाह तआला से दुआ कर दीजिए कि अल्लाह तआला शक़ावत को मिटाकर सआदत में बदल दें। चुनाँचे हज़रत ने दुआ फ़रमाई कि ऐ अल्लाह! मुल्ला ताहिर लाहौरी की पेशानी से शक़ी का लफ़्ज़ मिटाकर सईद लफ़्ज़ तहरीर फ़रमा दें। अल्लाह तआला ने हज़रत की दुआ क़ुबूल फ़रमा ली और मुल्ला ताहिर लाहौरी की पेशानी पर शक़ी के बजाए सईद का लफ़्ज़ लिख दिया गया। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 10/270)

ख़ुदाया दिल की किश्ती को पलट दे

ज़ुन्नून मिसरी रह० एक मर्तबा किश्ती में सफ़र कर रहे थे। दरिया में एक और किश्ती भी चल रही थी। उसमें नौजवान मर्द, औरतें और लड़कियाँ सफ़र कर रही थीं। वह लोग कुछ खा पी रहे थे और हंसी मज़ाक़ में कहकहे भी लगा रहे थे। लगता यूँ था कि गंदे लोग थे और उन्होंने गंदी महफ़िल लगाई हुई थी। जब हज़रत रह० की किश्ती के लोगों ने देखा तो उन्हें बड़ा ग़ुस्सा आया और उनमें से

एक आदमी ने ज़ुन्नून मिस्री रह० के पास आया और अर्ज़ किया, हज़रत देखिए! इनको ख़ुदा का ख़ौफ़ नहीं है। ये दरिया के पानी के अंदर भी इस क़िस्म की गंदी हरकतें करने के लिए आए हुए हैं। पी पिला रहे हैं और क़हक़हे लगा रहे हैं। लिहाज़ा आप बद्दुआ कर दें कि अल्लाह तआला उनकी किश्ती को ग़र्क़ कर दे। आप पहले तो ख़ामोश रहे लेकिन जब लोगों ने बार बार कहा तो आपने उस किश्ती वालों को देखा और हाथ उठाकर यूँ दुआ की ऐ अल्लाह! जैसे आपने इनको दुनिया की ख़ुशियाँ अता की हैं इसी तरह इनको आख़िरत की ख़ुशियाँ भी अता फ़रमा दें। जब उन्होंने दुआ मांगी तो अल्लाह तआला ने उस किश्ती वालों को तौबा की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दी, अल्लाहु अकबर। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 10/247)

दुआ का बदला दुआ की सौग़ात से

सैय्यदा आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा का अमल था कि अगर कोई सवाली उनके दरवाज़े पर आता तो अपनी ख़ादिमा के हाथ उसको पैसे भिजवा देतीं और दरवाज़े पर आकर ख़ुद सुनतीं कि वह क्या कहता है। ख़ादिमा को भी इस बात का पता था। उसने एक दिन पूछ लिया कि ऐ उम्मुल मुमिनीन! आपके एक अमल की हमें कुछ समझ नहीं आती कि आपके दर पर जब भी कोई मांगने वाला मांगने के लिए आता है तो आप उसको हमारे हाथ से दिलवाती हैं मगर दर पर पीछे जाकर सुनती हैं कि उसने लेकर क्या कहा? इसकी क्या वजह है? उम्मुल मुमिनीन रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया कि मैं जाकर सुनती हूँ कि वह मुझे क्या दुआ दे रहा है, जो दुआ वह मुझे देता है मैं वही दुआ उस बंदे के लिए देती हूँ ताकि मेरी दुआ उसकी दुआ का बदला बन जाए, अमल का अज्र तो मैं अपने

परवरदिगार से चाहती हूँ। सुब्हानअल्लाह उनको इस बात का कितना ख़्याल होता था कि मुझे अपने अमल का बदला अल्लाह रब्बुलइ़ज़्ज़त से चाहिए। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 12/107)

औरंगज़ेब रह० को तख़्त मिलने की दुआ

अगर हज़रत अक़्दस थानवी रह० जैसे मुहक़्क़िक़ आलिम और फ़क़ीह कोई वाक़िआ लिखते हैं तो वह हमारे लिए सनद होता है। वह अपनी किताब में एक वाक़िआ लिखते हैं कि दाराशिकोह और औरंगज़ेब आलमगीर रह० दोनों भाई थे। उनमें आपस में तख़्त की कशमश थी। उन दोनों में से हर एक ख़्वाहिश थी कि तख़्त व ताज मुझे मिले। दाराशिकोह चाहता था कि मेरा हक़ बनता है लिहाज़ा बादशाहत मुझे मिलनी चाहिए जबकि औरंगज़ेब आलमगीर रह० मशाइख़ की सोहबत पा चुके थे। इसलिए वह चाहते थे कि अगर मुझे सलतनत मिल जाए तो मैं बिदअतों का ख़ात्मा करके शरिअत व सुन्नत को ऊपर उठाऊँगा।

दाराशिकोह को किसी ने बताया कि फ़लां जगह पर एक बुज़ुर्ग रहते हैं जिनकी दुआ क़ुबूल होती है, उनसे दुआ करवाएं। जब वह वहाँ गए तो उन बुज़ुर्ग ने खड़े होकर मुसाफ़ा किया और बैठने के लिए अपना मुसल्ला पेश किया। दाराशिकोह ने अदब की वजह से कहा, नहीं जी, मैं इस क़ाबिल कहाँ कि इस जगह बैठ सकूं। अगर उन्होंने बुज़ुर्गों की सोहबत उठाई होती तो समझते कि (الامر فوق الادب) कि हुक्म का दर्जा अदब से ज़्यादा होता है। उन बुज़ुर्ग ने फिर कहा यहाँ बैठ जाओ। मगर उसने दूसरी बार भी यही कहा, हज़रत! मैं इस क़ाबिल कहाँ। उन्होंने तीसरी बार इसरार किया कि बैठिए। लेकिन कहने लगा, जी नहीं आप ही बैठिए। जब वे बैठ गए

तो दाराशिकोह भी उनके सामने बैठा। उनकी आपस में बातचीत होती रही। फिर जब उठने लगा तो कहा, हज़रत! दुआ फ़रमा दें कि अल्लाह तआला मुझे तख़्त व ताज अता फ़रमा दे। बुज़ुर्ग फ़रमाने लगे, हमने तो मुसल्ला पेश किया था, आप ख़ुद ही नहीं बैठे तो क्या करें अब वक़्त गुज़र चुका है। उसे बहुत ज़्यादा अफ़सोस हुआ। अब उसने सोचा कि कहीं औरंगज़ेब आलमगीर रह० को पता न चल जाए। लिहाज़ा उसने इस बात को छिपाए रखा।

अल्लाह तआला की शान देखिए कि कुछ अरसे के बाद औरंगज़ेब आलमगीर रह० को भी किसी ने बता दिया कि फ़लां जगह पर एक अल्लाह के मक़्बूल बुज़ुर्ग रहते हैं, आप उनके पास जाएं। औरंगज़ेब आलमगीर रह० तो वैसे ही अल्लाह वालों के सोहबत पाए और साहिबे निस्बत थे। वह भी वहाँ पहुँच गए। जब वहाँ पहुँचे तो उन बुज़ुर्ग ने खड़े होकर उनका इस्तिक़बाल किया और कहा, जी आइए तशरीफ़ लाइए और बैठिए। उन्होंने अदब की वजह से कहा, हज़रत! मैं इस क़ाबिल कहाँ? उन्होंने फ़रमाया, नहीं, नहीं बैठो। जब दोबारा कहा बैठो तो वह मुसल्ले पर बैठ गए। बातचीत होती रही। जब उठने लगे तो उन्होंने कहा, मेरा दिल चाहता है कि शरिअत व सुन्नत को क़ायम करने के लिए काम करूं, इसलिए दुआ फ़रमाएं कि अल्लाह तआला मुझे तख़्त व ताज अता फ़रमा दें। वह बुज़ुर्ग फ़रमाने लगे, भई तख़्त तो हम तुझे पहले ही दे चुके हैं। जब उन्होंने तख़्त का नाम लिया तो पहचान गए कि अल्लाह वालों की ज़बान से निकला हुआ एक-एक बोल मायने रखता है इसलिए कहने लगे कि हज़रत तख़्त तो मिल गया और क्या ताज नहीं मिलेगा? फ़रमाया कि ताज का निज़ाम तो आपको वुज़ू करवाने वाले के पास है।

औरंगज़ेब आलमगीर रह० को फ़ौरन याद आया कि हाँ शहज़ादा

होने की वजह से महल में मेरा एक ख़ादिम है, वह वाक़ई नेक आदमी है, मिटा हुआ है और वही मुझे वुज़ू करवाता है। मुझे तो पता ही न था। लिहाज़ा वापस आकर सोच में पड़ गए कि मैं उनसे अपने सर पर ताज कैसे रखवाऊँ। क्योंकि सोहबत पाए हुए थे इसलिए समझ गए कि वे मौक़े कहना तो अदब के ख़िलाफ़ होगा।

वह अमामा तो बांधते ही थे। अगली दफ़ा जब वुज़ू किया तो अपने दोनों हाथों को जान बूझकर मसरूफ़ कर लिया और उन्हें कहा कि यह अमामा मेरे सर पर रख दीजिए। वह कहने लगे मैं इस क़ाबिल कहाँ कि मेरे हाथ आपके सर तक पहुँचे। वह फ़रमाने लगे, नहीं, नहीं अमामा रख दीजिए। थोड़ी देर तक उन्होंने इंकार किया लेकिन औरंगज़ेब आलमगीर रह० ज़िद्द करते रहे। आख़िर में उन्होंने अमामा उठाकर औरंगज़ेब आलमगीर रह० के सर पर रख दिया। और उस बुज़ुर्ग को बुरा भला कहना शुरू कर दिया कि उसने मेरा राज़ खोल दिया। इस तरह का निज़ाम अल्लाह तआला ने अपने बंदों के सुपुर्द किया होता है। उनको पहचानना मुश्किल होता है। उनका पता भी नहीं चलता। बातिनी फ़िरासत और बसीरत रखने वाले तो उनको पहचानते हैं हर बंदा नहीं पहचानता। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 5/157)

माँ की बद्दुआ का असर आज नहीं तो कल

बुज़ुर्गों ने लिखा है कि एक मासूम बच्चा रो रहा था। माँ ने इस तरह ग़ुस्से में कहा दिया तो मर जाए। अल्लाह तआला को जलाल आ गया। अल्लाह तआला ने उसकी बद्दुआ को क़ुबूल फ़रमा लिया मगर बच्चे को उस वक़्त मौत न दी। जब वह बच्चा बड़ा हुआ तो ऐन जवानी के आलम में वह माँ-बाप की आँख की ठंडक बना, माँ-बाप के दिल का सुकून बना जो भी उस बच्चे की जवानी देखता वही हैरान रह जाता। ऐन आलमे शबाब में जब वह फल पक चुका

तो अल्लाह तआला ने उसे तोड़ लिया—

मीठा रसीला साफ़ सुनहरी जवान सा
एक सेब धम से फ़र्शे ज़मीन पर टपक पड़ा

उसको मौत दे दी। अब वही माँ रो रही है कि मेरा जवान बेटा बिछड़ गया मगर उसे बताया गया कि तेरी यह वही बद्दुआ है जो तूने बच्चे के लिए मांगी थी मगर हमने फल को उस वक़्त न काटा, उसे पकने दिया। जब यह फल पक चुका, अब इसे काटा है कि तेरे दिल को अच्छी तरह दुख हो। अब क्यों रोती है? यह तेरे हाथों की कमाई है। कितनी बार ऐसा होता है कि माँ बद्दुआएं कर देती है। जब अपने सामने देखती है कि बद्दुआ क़ुबूल हुई तो फिर रोती फिरती है कि मेरे बेटे का एक्सीडेंट हो गया, मेरे बेटे की ज़िंदगी ख़राब हो गई। ऐ बहन! ये सब कुछ इसलिए होता है कि तू अपने मुक़ाम को जानती नहीं है। तुझे मालूम होना चाहिए कि अगर तू नमाज़ पढ़ती और अपने बच्चे के लिए दुआ करती तो अल्लाह तआला तेरे बच्चे को नसीब लगा देते। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 1/154)

माँ की दुआ हिफ़ाज़त का ज़ामिन

एक बुज़ुर्ग के बारे में आता है कि उनकी वालिदा फ़ौत हो गयीं। चुनाँचे अल्लाह तआला ने उस बुज़ुर्ग को इल्हाम फ़रमाया कि ऐ मेरे प्यारे! अब ज़रा संभल कर रहना जिसकी दुआएं तेरी हिफ़ाज़त करती थीं, वह हस्ती दुनिया से उठ गई है, अल्लाहु अकबर वाक़ई बात ऐसी ही है कि माँ बाप की दुआएं बच्चों के गिर्द पहरा देती हैं।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 1/155)

झुके मेरे सामने और मांगे किसी और से

एक दफ़ा मुर्शिदे आलम रह० मस्जिद मे तशरीफ़ फ़रमा थे, पता

नहीं कि इस आजिज़ के दिल में क्या बात आई कि अर्ज़ किया कि हज़रत आपको घर तशरीफ़ लाए हुए काफ़ी वक़्त हो गया है। आप वुज़ू ताज़ा करने के लिए तशरीफ़ ले जाएं। हज़रत रह० ने मुस्कुराकर देखा और घर तशरीफ़ ले गए। अगले दिन बैठे हुए थे, पता नहीं क्या बात हुई कि इस आजिज़ ने अर्ज़ किया हज़रत! काफ़ी वक़्त हो गया आपने खाना भी नहीं खाया, आप खाना खा लीजिए। हज़रत रह० फिर मुस्कुरा पड़े और घर तशरीफ़ ले गए। तीसरे दिन फिर कोई ऐसी बात हो गई तो हज़रत रह० मुझसे फ़रमाने लगे कि देखो! एक ऐसा वक़्त आता है कि बंदे के दिल में किसी चीज़ की ज़रूरत महसूस होती है तो अल्लाह तआला उसको मख़्लूक़ के सामने सवाल भी नहीं करने देते बल्कि मख़्लूक़ के दिल में डाल देते हैं और वे खुद उनको कहते हैं कि आप हमारी इस चीज़ को क़ुबूल फ़रमा लीजिए। फिर फ़रमाने लगे कि अल्लाह तआला ने मुझे एक ऐसा वक़्त दे दिया है कि अब मुझे मख़्लूक़ के सामने किसी चीज़ को कहने की ज़रूरत ही पेश नहीं आती। सुब्हानअल्लाह! अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से मांगते मांगते बंदे पर एक ऐसा वक़्त आ जाता है कि अल्लाह तआला उस बंदे को मख़्लूक़ से मांगने का मौक़ा ही नहीं देते। फ़रमाते हैं कि जिसका सर कभी किसी ग़ैर के सामने नहीं झुका मैं अपने उस बंदे का हाथ किसी ग़ैर के सामने कैसे फैलने दूंगा, सुब्हानअल्लाह।

(खुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 7/112)

इख़्लास

और

रिया (दिखलावा)

इख़्लास और रिया

इख़्लास की बरकत से काम अधूरा नहीं रहता

सैय्यदना उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में एक इलाक़े का शहज़ादा था। वह गिरफ़्तार होकर पेश हुआ। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु चाहते थे कि उस बंदे को क़त्ल ही करवा दें क्योंकि उसने मुसलमानों के ख़िलाफ़ मुसीबत बनाई हुई थी। चुनाँचे आपने उसे क़त्ल करने का हुक्म दे दिया। जब क़त्ल का हुक्म दे दिया तो उसने कहा, जी क्या आप मेरी आख़िरी तमन्ना पूरी कर सकते हैं? आपने पूछा कौन सी? उसने कहा मुझे प्यास लगी हुई है। लिहाज़ा मुझे पानी का प्याला दीजिए। आपने हुक्म दिया कि इसे पानी का प्याला दो। चुनाँचे उसे पानी का प्याला दे दिया गया।

जब उसने पानी का प्याला हाथ में लिया तो कांपना शुरू कर दिया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा, भई! आप कांप क्यों रहे हैं। कहने लगा, मुझे डर लग रहा है कि इधर मैं पानी पीने लगूंगा और उधर जल्लाद मुझे क़त्ल कर देगा। इसलिए पिया ही नहीं जा रहा है। हज़रत उमर ने फ़रमाया तू फ़िक्र मत कर जब तक तू यह पानी नहीं पी लेता उस वक़्त तक तुझे क़त्ल नहीं किया जाएगा। जैसे ही आपने यह कहा तो उसने पानी का प्याला ज़मीन पर गिरा दिया और कहने लगा, जी आप क़ौल दे चुके हैं कि जब तक मैं पानी का प्याला नहीं पिऊँगा आप मुझे क़त्ल नहीं करेंगे। लिहाज़ा आप मुझे क़त्ल नहीं कर सकते। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया : हाँ! मैंने क़ौल दिया था। लिहाज़ा अब मैं तुझे क़त्ल नहीं करता। जैसे ही आपने कहा कि मैं तुझे क़त्ल नहीं करता तो उस वक़्त वह कहने

लगा, जी आपने तो फ़रमाया कि आप मुझे क़त्ल नहीं करेंगे लेकिन मेरी बात सुन लीजिए कि आप मुझे कलिमा पढ़ाकर मुसलमान बना दीजिए। आपने पूछा भई! आप पहले तो मुसलमान नहीं बने, अब बन रहे हैं? उसने जवाब दिया कि पहले आप मेरे क़त्ल का हुक्म दे चुके थे अगर मैं उस वक़्त कलिमा पढ़ लेता तो लोग कहते कि मौत के ख़ौफ़ से मुसलमान हुआ है। लिहाज़ा मैं चाहता था कि कोई ऐसा हीला करूं कि मौत का ख़ौफ़ टल जाए। फिर मैं अपनी मर्ज़ी से इस्लाम क़ुबूल करूं और लोगों को पता चल जाए कि अल्लाह की रज़ा के लिए इस्लाम क़ुबूल किया है। तो मुख़्लिस बंदे का काम अधूरा नहीं रहता बल्कि हमेशा रब्बुलइज़्ज़त उसको पूरा कर देते हैं।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 12/91)

हैदरे कर्रार (अली) रज़ियल्लाहु अन्हु का मैदाने कारज़ार में इख़्लास

एक बार सैय्यदना हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु जिहाद के दौरान एक काफ़िर के सीने पर चढ़ बैठे। आप चाहते थे कि उसको ख़ंजर से ज़िब्ह कर दूँ। उसने हज़रत अली के चेहरे पर थूक दिया। जैसे उस मरदूद ने थूका आप फ़ौरन पीछे हट गए। वह बड़ा हैरान हुआ कि अब तो उन्हें ज़रूर क़त्ल कर देना चाहिए था। वह पूछने लगा कि जी आपने मुझे क़त्ल क्यों नहीं किया? आपने फ़रमाया : मैं तुझे अल्लाह की रज़ा के लिए मारना चाह रहा था। अब तुमने मेरी तरफ़ जो थूका तो मेरे नफ़्स का गुस्सा भी शामिल हो गया और मैं अपने नफ़्स की ख़ातिर किसी को क़त्ल नहीं करना चाहता। जब उसने यह सुना तो वह इतना मुतास्सिर हुआ कि कहने लगा, अच्छा पहले तो मैं कुफ़्र पर मर रहा था। अब आपका इख़्लास मुझे इतना अच्छा लगा कि आप मुझे कलिमा पढ़ाकर मुसलमान भी बना दीजिए। अब ज़ाहिर में यह

नज़र आ रहा है कि यह पीछे हट गए तो यह बंदे को नहीं मारेंगे। मगर अल्लाह तआला काम को अधूरा नहीं रहने देते। अल्लाह तआला ने उस बंदे को कलिमे की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दी।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 12/90)

हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु से दामने इख़्लास न छूट सका

सैय्यदना उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने जंगे यरमूक के मौक़े पर हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़त भेजा कि आज से आप जो लश्कर के अमीर थे इस ओहदे से उतर गए और जो ख़त लेकर आ रहे हैं यह उस पोस्ट पर आ गए। अगर आप मेरे पास वापस आना चाहते हैं तो मदीना आ जाएं और अगर आम फ़ौजी की तरह लड़ना चाहें तो आप को लड़ने की इजाज़त है। तो हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु वापस न आए बल्कि एक आम फ़ौजी बनकर लड़ना क़ुबूल किया। बाद में किसी ने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद से पूछा, हज़रत! पहले तो आप फ़ौज के कमांडर इन चीफ़ थे और एक ख़त के ज़रिए आप को एक आम फ़ौजी बनकर लड़ना पड़ा। आपके लिए तो यह बड़ा मुश्किल होगा। उन्होंने फ़रमाया, मेरे लिए कोई मुश्किल नहीं होगा क्योंकि जब मैं फ़ौज का अमीर था तो उस वक़्त भी मैं उसी मालिक को राज़ी करना चाहता था और मैं एक सिपाही बनकर लड़ा तब भी मैं उसी मालिक को राज़ी कर रहा था।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 12/84)

मेरा रब मेरा नाम जानता हो फिर...

हज़रत साद बिन अबि वक़ास रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब मदाइन को फ़तेह किया तो कुछ दिनों के बाद एक आम मुजाहिद उनके पास

आया। उसने कोई चीज़ कपड़े में लपेटी हुई थी। उसने वह चीज़ निकाली और कहने लगा, ऐ अमीर जैश! मैं आपकी ख़िदमत में यह अमानत देने के लिए आया हूँ। जब हज़रत ने उसको खोला तो मदाइन के बादशाह का ताज था। वह ताज सोने का बना हुआ था और उस पर इतने क़ीमती हीरे मोती लगे हुए थे कि अगर वह मुजाहिद उसको बेचकर खाता तो उसकी सात नस्लों को कमाने की ज़रूरत न होती। जो बादशाह इस जंग में क़त्ल हुआ था उसके सर का वह ताज कहीं गिरा था। वह मिट्टी में पड़ा था और उस मुजाहिद को मिल गया। किसी को पता नहीं था कि वह ताज इसके पास है। उसने भी उसको छिपा कर रखा। जब हर चीज़ सैटल हो गई तो उसने लाकर साद बिन अबि वक़ास को पेश कर दिया। हज़रत उसके इख़्लास पर हैरान हुए कि किसी को इस ताज के बारे में पता भी नहीं था। यह ग़रीब सा बंदा है, यह इसे अपने पास रख भी सकता था। लिहाज़ा उन्होंने उसके इख़्लास पर हैरानी का इज़्हार किया और उससे पूछा, ऐ मुजाहिद! तेरा नाम क्या है? इस सवाल पर मुजाहिद ने अपना रुख़ फेरकर उनकी तरफ़ अपनी पीठ कर दी और कहा कि जिस रब को राज़ी करने के लिए मैंने यह ताज वापस किया है वह रब मेरा नाम जानता है। यह कहकर वह उनके दरबार से चला गया।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 12/107)

इख़्लास व एहतियात का अजीब नमूना

अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० के वालिद का नाम मुबारक था। वह एक आदमी के ग़ुलाम थे। उसने उनको अपने बाग़ की निगरानी पर रखा हुआ था। बाज़ किताबों में अनार का बाग़ आया है और बाज़ में आम का बाग़। बहरहाल फलों का बाग़ था। उनको वहाँ काम करते हुए तीन साल गुज़र चुके थे।

एक दिन बाग़ का मालिक वहाँ आ पहुँचा। उसने उनसे कहा, भई! मुझे फल खिलाओ। वह एक पेड़ से फल लेकर आए। जब उसने काटा और खाया तो खट्टा था। मालिक ने कहा, आप तो खट्टा फल ले आए हैं। वह फिर गए और दूसरी जगह से फल उतार कर ले आए। जब काटा तो वह भी खट्टा था। जब तीसरी दफ़ा लाए तो फिर भी खट्टा। मालिक बड़ा नाराज़ हुआ। उसने कहा, तुम्हें बाग़ की रखवाली करते हुए तीन साल गुज़र चुके हैं लेकिन तुम्हें अब तक यह पता नहीं चला कि किस पेड़ का फल मीठा है और किस पेड़ का फल खट्टा है। जब वह ख़ूब नाराज़ हुआ तो हज़रत मुबारक रह० ने आख़िर कहा, जी आपने मुझे बाग़ की निगरानी के लिए रखा था, फल खाने के लिए तो नहीं रखा था। मैंने तीन साल में कभी कोई फल नहीं खाया। इसलिए मुझे नहीं पता कि किस पेड़ का फल खट्टा है और किस पेड़ फल का मीठा है। उस मालिक को उनकी यह बात इतनी अच्छी लगी कि उसने उनको आज़ाद कर दिया। फिर उसने अपनी बेटी के साथ उसका निकाह भी कर दिया और उनको उस बाग़ का मालिक बना दिया। अल्लाह तआला ने उनको बेटा अता फ़रमाया जिसका नाम उन्होंने अब्दुल्लाह रखा और फिर वह अपने वक़्त में अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० बना, सुब्हानअल्लाह यह होता है इख़्लास। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक्कार 12/92)

इमाम अबूदाऊद रह० की लिल्लाहियत पर जन्नत का परवाना

इमाम अबू दाऊद रह० एक बड़े मुहद्दिस गुज़रे हैं। एक बार वह एक किश्ती का सफ़र कर रहे थे। उनके सामने एक और किश्ती आ रही थी। उनको सफ़र के दौरान उस वक़्त छींक आई। जब सामने से

आने वाली किश्ती बिल्कुल क़रीब थी। जिस बंदे को छींक आए उसे चाहिए कि वह अलहम्दुलिल्लाह कहे और अलहम्दुलिल्लाह के अल्फ़ाज़ सुनने वाले को चाहिए कि वह इसके जवाब में 'यरह-मुकल्लाह' कहे। उसके बाद छींकने वाला आदमी उसके जवाब में यह्दिकुमुल्लाह कहे। चुनाँचे उन्होंने छींक आने पर 'अलहम्दुलिल्लाह' कहा। साथ वाली किश्ती में से एक आदमी ने उनकी ज़बान से 'अलहम्दुलिल्लाह' सुना तो उसने जवाब में 'यरह-मुकल्लाह' कहा लेकिन हज़रत अबू दाऊद रह० ने जवाब देना था तो किश्ती दूर जा चुकी थी। और वहाँ तक आवाज़ नहीं पहुँच सकती थी। जब हज़रत किनारे पर पहुँचे तो वहाँ जाकर उन्होंने एक और किश्ती किराए पर ली और एक दिरहम उसको दिया और किश्ती से वापस आए और वापस आकर उस बंदे को जिसने 'यरह-मुकल्लाह' कहा था उसे जवाब में 'यह्दि कुमुल्लाह' कहा और वापस आ गए। रात को जब सोए तो ख़्वाब में किसी कहने वाले ने कहा, अबूदाऊद रह० को मुबारकबादी दे दो कि उसने एक दिरहम के बदले में अल्लाह तआला की जन्नत ख़रीद ली, अल्लाहु अकबर। मुहद्दिसीन अल्लाह की रज़ा के लिए यूँ इख़्लास के साथ अमल करते थे। इस वजह से आज उनका फ़ैज़ जारी है। आज दुनिया उनकी किताबें पढ़ रही है और अपनी ज़िंदगी को शरिअत के मुताबिक़ गुज़ार रही है। और वह हज़रात अपनी क़ब्रों के अंदर इसका अज्र व सवाब पा रहे हैं। इख़्लास वाले बंदे की मेहनत छोटी और उसे उजरत मोटी मिलती है। वह काम थोड़ा करता है और अल्लाह तआला की तरफ़ से अज्र बड़ा पा लेता है।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 12/106)

इख़्लास ने रिज़्क़ के दरवाज़े खोल दिए

इब्ने अक़ील रह० अपना वाक़िआ लिखते हैं कि मैं बहुत ही

ज़्यादा ग़रीब आदमी था। एक बार मैंने तवाफ़ करते हुए एक हार देखा जो बड़ा क़ीमती था। मैंने वह हार उठा लिया। मेरा नफ़्स चाहता था कि मैं उसे छिपा लूँ लेकिन मेरा दिल कहता था, हर्गिज़ नहीं, यह चोरी है बल्कि दयानतदारी का तक़ाज़ा यह है कि जिसका हार है उसे मैं वापस कर दूँ। चुनाँचे मैंने मुताफ़ में खड़े होकर ऐलान कर दिया कि अगर किसी का हार गुम हुआ है तो आकर मुझसे ले ले। कहते हैं कि एक नाबीना आदमी मेरे पास आया और कहने लगा कि यह हार मेरा है और मेरे थैले में से गिरा है। मेरे नफ़्स ने मुझे और भी मलामत की कि हार तो था भी नाबीना का, इसका किसी को क्या पता चलना था। छिपाने का अच्छा मौक़ा था मगर मैंने वह हार उसे दे दिया। नाबीना ने दुआ दी और चला गया।

कहते कि मैं भी दुआएं मांगता था कि ऐ अल्लाह! मेरे लिए कोई रिज़्क़ का बंदोबस्त कर दे। अल्लाह तआला की शान कि मैं वहाँ से "हल्ला" आ गया। यह एक बस्ती का नाम है। वहाँ की एक मस्जिद में गया तो पता चला कि कुछ दिन पहले इमाम साहब फ़ौत हो गए थे। लोगों ने मुझे कहा कि नमाज़ पढ़ा दो। जब मैंने नमाज़ पढ़ाई तो उन्हें मेरा नमाज़ पढ़ाना अच्छा लगा। वे कहने लगे, तुम यहाँ इमाम क्यों नहीं बन जाते। मैंने कहा, बहुत अच्छा। मैं वहाँ इमामत के फ़राईज़ अंजाम देने शुरू कर दिए। थोड़े दिनों के बाद पता चला कि जो इमाम साहब पहले फ़ौत हुए थे उनकी एक जवान साल बेटी है। वह वसीयत कर गए कि किसी नेक बंदे से इसका निकाह कर देना। मुक़्तदी लोगों ने मुझसे कहा, जी अगर आप चाहें तो हम इस यतीम बच्ची का आपसे निकाह कर देते हैं। मैंने कहा, जी बहुत अच्छा। चुनाँचे उन्होंने उसके साथ मेरा निकाह कर दिया।

शादी के कुछ अरसे के बाद मैंने अपनी बीवी को देखा कि उसके गले में वही हार था जो मैंने तवाफ़ के दौरान एक नाबीना आदमी को

लौटाया था। उसे देखकर मैं हैरान रह गया। मैंने पूछा यह हार किसका है? उसने कहा, यह मेरे अब्बू ने मुझे दिया था। मैंने पूछा आपके अब्बू कौन थे? उसने कहा, वह आलिम थे, इस मस्जिद में इमाम थे और नाबीना थे। तब मुझे पता चला कि उसके अब्बू वही थे जिनको मैंने वह हार वापस किया था। मैंने उसको बताया कि यह हार तो मैंने उनको उठाकर दिया था। वह कहने लगी कि आपकी भी दुआ क़ुबूल हो गई और मेरे अब्बू की भी दुआ क़ुबूल हो गई। मैंने कहा, वह कैसे? उसने कहा आप की दुआ तो इस तरह क़ुबूल हुई कि अल्लाह तआला ने आपको घर भी दिया, घरवाली भी दी और रिज़्क़ भी दिया और मेरे अब्बू की दुआ इस तरह क़ुबूल हुई कि जब वह हार लेकर वापस आए तो वह दुआ मांगते थे कि ऐ अल्लाह! एक अमीन शख़्स ने मेरा हार मुझे लौटाया है। ऐ अल्लाह! ऐसा ही शख़्स मेरी बेटी के लिए ख़ाविन्द के तौर पर अता फ़रमा दे। अल्लाह तआला ने मेरे बाप की दुआ भी क़ुबूल कर ली और आपको मेरा ख़ाविन्द बना दिया। मुख़्लिस बंदे का काम अल्लाह तआला कभी रुकने नहीं देते, अटकने नहीं देते बल्कि किश्ती हमेशा किनारे लगा दिया करते हैं।

(ख़ुत्बात ज़ुल्फ़ुक़्क़ार 12/93)

हज़रत मौलाना मुहम्मद याक़ूब रह० का मारना भी अल्लाह के लिए

हज़रत मौलाना मुहम्मद याक़ूब नानौतवी रह० हमारे बड़ों में से थे। एक बार वह किसी बच्चे को किसी ग़लती पर सज़ा देने लगे। उसे दो चार थप्पड़ लगाए। जब थप्पड़ लगे और उसे दर्द हुआ तो रोकर कहने लगा, मुझे अल्लाह के लिए माफ़ कर दें। हज़रत रह० ने फ़रमाया, ओ ख़ुदा के बंदे! मैं तुझे अल्लाह के लिए ही मा रहा हूं।

तो मालूम हुआ कि उनका गुस्से के वक़्त भी किसी को मारना अल्लाह के लिए हुआ करता था। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 6/30)

हज़रत मदनी रह० का इख़्लास भरा अमल

हज़रत लाहौरी रह० एक वाक़िआ सुनाया करते थे कि हज़रत मदनी रह० हज के सफ़र से वापसी पर ट्रेन में सफ़र कर रहे थे। उनके क़रीब ही एक हिन्दू जैन्टलमैन भी बैठा हुआ था। दौराने सफ़र उसको बैतुलख़ला जाने की ज़रूरत पेश आई। उसने जाकर देखा तो बैतुलख़ला बहुत गंदा था। वह जल्दी वापस आ गया। किसी ने पूछा आप गए थे और जल्दी वापस आ गए। उसने कहा, लोग गंद मचा देते हैं, बैतुलख़ला में सफ़ाई ही नहीं करते। मुझे ज़रूरत तो थी लेकिन बैतुलख़ला इतना गंदा था कि मैं उसको इस्तेमाल नहीं कर सका।

यह बात करके वह हिन्दू बैठ गया। थोड़ी देर बाद शेख़ुल हदीस, शैख़े तरीक़त उठे और और ट्रेन के बैतुलख़ला में तशरीफ़ ले गए और सारे बैतुलख़ला को साफ़ कर दिया। जब साफ़ करने के बाद वापस आकर बैठे तो कहने लगे कि मैं बैतुलख़ला इस्तेमाल करने के लिए गया तो अभी तो बड़ा साफ़ था। यह इसलिए कहा कि वह इस्तेमाल कर ले। जब वह हिन्दू दोबारा गया तो उसने उसको बड़ा साफ़ पाया। उसने उसे इस्तेमाल किया और वापस आकर कहने लगा जी वाक़ई किसी ने साफ़ कर दिया।

लोगों को ताज्जुब हुआ कि आख़िर इसको किसने साफ़ किया। वहाँ एक आलिम और भी बैठे हुए थे उनका नाम ख़्वाजा निज़ामुद्दीन था। उन्होंने हज़रत मदनी रह० के बारे में ग़ायबाना कुछ बातें सुनी हुई थीं और वह उनकी मुख़ालिफ़त किया करते थे। उन्होंने जब कुछ खोद कुरेद की तो पता चला कि हज़रत मदनी रह० ने बैतुलख़ला साफ़ किया है। यह देखकर उस ख़ुद्दर पोश फ़क़ीर के सामने ख़्वाजा

निज़ामुद्दीन ने अपने हाथ जोड़ दिए और कहने लगा जी मुझे माफ़ कर दें। मैंने उम्र भर आपकी ग़ीबत की है, मुझे आपकी अज़्मतों का पता नहीं था। आज पता चला है कि आप कितने अज़ीम इंसान हैं कि हिन्दू की ख़ातिर आपने ऐसा काम किया है। हज़रत मदनी रह० ने फ़रमाया कि मैंने तो अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत पर अमल किया है। लोग हैरान होकर पूछने वह कैसे? तो फ़रमाया कि एक बार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में एक यहूदी आया। उसको भूख लगी हुई थी। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसको खाना दिया तो उसने खाना ज़्यादा खा लिया। रात को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसको सोने के लिए बिस्तर दिया। पेट नरम होने की वजह से क़ुदरतन उसकी ऐसी कैफ़ियत हुई कि उसी बिस्तर में उसका पाख़ाना निकल गया। वह सुबह इसी हालत में उठकर वहाँ से चल दिया। जब वह कुछ दूर पहुँचा तो उसे याद आया कि जल्दी में अपना कुछ सामान वहाँ भूल गया है। चुनाँचे वह समान लेने के लिए वापस आया तो देखा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने हाथों से उस बिस्तर को धो रहे थे। यह मंज़र देखकर उसकी आँखों में से आँसू निकल आए और उसने कहा, आप को अल्लाह ने आपको वह ख़ुल्क़ अता किए हैं जो ख़ुल्क़ दुनिया में किसी के पास नहीं हो सकते। लिहाज़ा आप मुझे कलिमा पढ़ाकर मुसलमान बना दीजिए। तो हज़रत मदनी रह० ने फ़रमाया कि मेरे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेहमान की ख़ातिर यह अमल किया था और मैंने भी अपने आक़ा की सुन्नत पर अमल किया है। तो ये मुख़्लिस लोग थे। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 12/85)

हज़रत अब्दुल मालिक सिद्दीक़ी रह० का इख़्लास

जब रिया दिल से निकलती है तो फिर "मैं" की धज्जियाँ उड़

जाया करती हैं और इंसान के अंदर आजिज़ी भर जाया करती है। फिर वह लोगों की कड़वी कसैली बातें भी सब्र के साथ सुन लेता है। हज़रत ख़्वाजा अब्दुल मलिक सिद्दीक़ी रह० पर अल्लाह तआला ने दीन के ख़ज़ाने तो खोले ही थे आख़िरी उम्र में उन पर दुनिया के दरवाज़े भी खोल दिए थे। चुनाँचे उनको ख़ूब सहूलतें हासिल थीं। इसकी वजह से उनके वक़्त के कुछ उलमा कभी कभी इधर उधर की बातें कर देते थे। वे कहते थे कि जी इतनी बड़ी मस्जिद बना दी, यह पैसा आ गया वह पैसा आ गया। अल्लाह की शान देखो कि मस्जिद कोई बनाता है और मरोड़ किसी और के दिल में उठता है। हज़रत सिद्दीक़ी रह० ख़ामोश रहते थे।

एक बार एक शहर से हज़रत के मुरीद उनसे मिलने के लिए आए। उस शहर में एक बड़े आलिम थे। वह उनसे मिले और पूछा, कहाँ जा रहे हो। उसने कहा, जी मैं हज़रत सिद्दीक़ी रह० को मिलने जा रहा हूँ। उन्होंने कहा, अच्छा उनको मेरा पैग़ाम दे देना कि दुनिया और आख़िरत दो सौकनें हैं, जब आदमी एक से निकाह करता है तो दूसरी रूठ जाया करती है। असल में उन्होंने चोट की थी कि अब आप पर फ़ुतूहात के दरवाज़े खुल गए हैं लिहाज़ा आप अपने दीन की ख़ैर मनाएं।

जब वह साहब हज़रत सिद्दीक़ी रह० के हाँ आए और उनसे मिले तो हज़रत ने उनके हालचाल के साथ क़ुदरतन यह भी पूछ लिया कि आपके शहर के वह बड़े आलिम किस हाल में मिले थे? उसने कहा ठीक हैं। फिर उनसे पूछा आपकी उनसे मुलाक़ात कब हुई थी? उन्होंने कहा, जी आते हुए मुलाक़ात हुई थी। हज़रत ने पूछा, भई! उन्होंने कोई बात कही थी? जी हाँ ये अल्लाह वाले जो जसीसुल क़ुलूब (दिलों के जासूस) होते हैं। जब यह पूछा तो वह साहब ख़ामोश हो गए। अब हज़रत सिद्दीक़ी रह० को अंदाज़ा हो गया कि

कोई बात है। चुनाँचे हज़रत ने फ़रमाया, जो बात उन्होंने तुम्हें कही थी वही बात ज़ूँ की तूँ मुझे कहो। अब वह फंस गया। बहरहाल उसने ना चाहते हुए बताया कि हज़रत! जब मैं उनसे मिला और बताया कि आपको मिलने जा रहा हूँ तो बड़े मुस्कुराए और कहने लगे कि मेरा पैग़ाम दे देना कि दुनिया और आख़िर दो सौकने हैं, जब बंदा एक से निकाह करता है तो दूसरी रूठ जाया करती है। यह बात सुनकर हज़रत सिद्दीकी रह० ने सर झुका लिया और आँखों से आँसू गिरना शुरू हो गए। इतने आँसू गिरे कि आपका दामन आँसुओं से तर हो गया।

अब वह आदमी परेशान हुआ कि मैंने कौन सी बात कर दी कि हज़रत इतने ग़मज़दा हुए। जब हज़रत काफ़ी देर रोते रहे तो फिर उसने पूछा, हज़रत अगर मुझसे कोई ग़लती हुई हो तो आप मुझे माफ़ फ़रमा दें। आपने फ़रमाया, नहीं नहीं आपसे कोई ग़लती नहीं हुई। उसने कहा, फिर हज़रत आप इतना क्यों रोए? उन्होंने फ़रमाया कि मैं शुक्र की वजह से रो रहा हूँ कि अल्हम्दुलिल्लाह इस वक़्त भी दुनिया में ऐसे लोग मौजूद हैं जिनको हमारे सीधे रहने की फ़िक्र मौजूद है और वे हमें नसीहतें करते रहते हैं। अब बताइए कि हज़रत उसको जवाब में क्या कह सकते थे। लेकिन अपनी आला ज़रफ़ी की वजह से ख़ामोश रहे। हम होते तो क्या कहते? हम कहते कि बड़े आए बात करने वाले। यह नहीं देखते वह नहीं देखते मगर नहीं अल्लाह वालों की बात ही और होती है। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 12/87)

मिलना-जुलना, खाना-पीना सभी हो अल्लाह के लिए

शेख़ुल हदीस हज़रत ज़करिया रह० ने एक वाक़िआ लिखा है कि एक बुज़ुर्ग दरियाए जमना के किनारे रहते थे। उनके पास एक आदमी आया और कहने लगा, जी दरिया के दूसरे किनारे मेरा एक

काम है लेकिन दरिया के अंदर तूफ़ान बहुत है जिसकी वजह से किश्ती के ज़रिए जाना मुश्किल है। अब मैं क्या करूं? उन्होंने फ़रमाया, जाओ और दरिया के किनारे खड़े होकर कह दो कि तुझे उस शख़्स की तरफ़ से पैग़ाम है जिसने कभी अपनी बीवी के साथ हमबिस्तरी नहीं की और न कभी खाना खाया कि तुम मुझे रास्ता दे दो। अब वह बंदा तो यह सुनकर चला गया और जाकर दरिया को वही पैग़ाम दिया। दरिया की तुग़यानी कम हो गई और उस शख़्स ने आराम से दरिया पार कर लिया।

इधर बीवी साहिबा ने भी शौहर की बात सुन ली थी और माशाअल्लाह सात बच्चे भी थे, वह बड़ी तिलमिलाई कि यह अजीब है मुझे रुसवा कर रहा है। वह बुज़ुर्ग जब अपने घर में आए तो वह आगे गुस्से में भरी बैठी थी। कहने लगी कि यह तू खा खा कर मोटा हो रहा है इसको तो तू जान और तेरा ख़ुदा लेकिन यह बता कि तूने जो मेरे साथ कभी मुलाक़ात नहीं की तो यह सात बच्चे कहाँ से हो गए। इस पर उन्होंने उसको वज़ाहत के साथ बात समझाई कि देख मैंने जब कभी खाना खाया हमेशा इस नीयत से खाया कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के महबूब ने फ़रमा दिया कि तेरी जान का तुझ पर हक़ है। इसलिए अपनी जान का हक़ अदा करने के लिए खाना खाया, नफ़्स की लज़्ज़त की वजह से कभी नहीं खाया। इसी तरह अगरचे मैं सात बच्चों का बाप हूँ मगर बीवी से मुलाक़ात करते हुए मेरे दिल में हमेशा यह नीयत होती थी कि शरिअत ने मुझ पर बीवी के हुक़ूक़ आएद किए हैं। लिहाज़ा मैं अपनी बीवी का हक़ अदा कर रहा हूँ। मेरा मक़सद सिर्फ़ नफ़्स की लज़्ज़त और अपनी ख़्वाहिश को पूरा करना नहीं होता था अगरचे मैंने इतनी बार उसका हक़ अदा किया मगर यह ऐसे ही था जैसे मैंने अपने लिए किया ही नहीं।

अल्लाह के लिए निन्नानवें मटके तोड़े मगर...

एक बादशाह के सौ मटके शराब के जा रहे थे। एक अल्लाह वाले को पता चला तो उनको गुस्सा आ गया। चुनाँचे उन्होंने मटके तोड़ना शुरू कर दिए। उन्होंने निन्नानवें मटके तोड़कर एक छोड़ दिया। जब बादशाह को पता चला तो उसने उन्हें गिरफ़्तार करवा लिया। उसने पूछा, तुमने मटके क्यों तोड़े? वह कहने लगे, जब मुझे पता चला कि इन मटकों में शराब है तो मेरी ग़ैरत ने गवारा न किया कि तुम मुसलमान हो और शराब पीते हो। इसलिए मैंने इन मटकों को तोड़ दिया उसने कहा, अच्छा निन्नानवें मटकों में तो ग़ैरत काम आई लेकिन सौवें मटके में ग़ैरत क्यों न काम आई? फ़रमाने लगे, निन्नानवें तक मैं तोड़ता चला गया। जब निन्नानवें का मटका तोड़ रहा था तो मेरे दिल में ख़ुशी की एक लहर पैदा हुई कि देखो मैंने कितना बड़ा काम कर लिया। फिर मैंने सोचा कि अब तो काम अल्लाह के लिए था और अगर अब अगला मटका तोडूँगा तो वह अपने नफ़्स की वजह से तोडूँगा इसिलए सौवाँ छोड़ दिया। जब बादशाह ने यह सुना तो उनको सज़ा देने के बजाए वैसे ही आज़ाद कर दिया, अल्लाहु अकबर। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 12/92)

शिद्दते भूख में भी तर्के इख़्लास गवारा नहीं

अहमद बलगरामी रह० एक दिन वुज़ू कर रहे थे। वुज़ू करने के बाद जब उठे तो नक़ाहत और कमज़ोरी की वजह से नीचे गिर गए। जो शागिर्द वुज़ू करवा रहा था उसने पूछा, हज़रत! क्या हुआ? उनकी ज़बान से निकल गया, मैं तीन दिन से फ़ाक़े से हूँ, उस कमज़ोरी की वजह से चक्कर आया और मैं गिर गया। वह शागिर्द उनको छोड़कर खाना लेने चला गया। खाना लाकर उसने अर्ज़ किया, हज़रत खाना

खा लीजिए। हज़रत ने फ़रमाया, मैं यह खाना नहीं खाऊँगा। उसने पूछा क्यों? फ़रमाया इसलिए कि जब मैंने तुम्हें बता दिया कि मैं तीन दिनों से फ़ाक़े से हूँ और तुम चले गए तो मेरे दिल में यह ख़्याल आया कि मुमकिन है कि तुम खाने की कोई चीज़ लेकर आओगे। यह जो तमा मख़्लूक़ के साथ इसको इशराफ़े नफ़्स कहते हैं। यह भी अल्लाह के ग़ैर के साथ तमा है। मैं इसको भी पसंद नहीं करता और अपनी उम्मीदें सिर्फ़ अल्लाह के साथ रखता हूँ। चुनाँचे उन्होंने खाना खाने से इंकार कर दिया। मगर वह शागिर्द भी इतना होनहार था कि जब हज़रत ने इंकार कर दिया तो कहने लगा, हज़रत! अच्छा आप खाना नहीं खाते तो मैं खाना ले जाता हूँ। वह खाना लेकर चला गया। वह पाँच दस मिनट नज़र से ओझल रहा और उसके बाद फिर वह वापस आ गया और अर्ज़ करने लगा, हज़रत! अब तो आपके दिल से तमा ख़त्म हो गई है। अब दोबारा खाना ले आया हूँ, आप क़ुबूल फ़रमा लें। अब हज़रत ने वह खाना क़ुबूल फ़रमा लिया। पता चला कि हमारे मशाइख़ हर काम अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की रज़ा के लिए किया करते थे और अल्लाह तआला बंदे की नीयत के मुताबिक़ मामला फ़रमा देते हैं। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 12/95)

इख़्लास वालों की क़द्र व मंज़िलत बारगाहे अक़्दस में

पुराने ज़माने में एक तूलून नामी हाकिम गुज़रा है। वह दीनदार मिज़ाज का आदमी था। उस वक़्त के हाकिम दुनियादार होने के बावजूद दीनदार भी हुआ करते थे। उसने एक बार एक बच्चे को लावारिस पड़ा देखा तो वह समझ गया कि इसकी माँ ने इसको जना है और इसे यहाँ छोड़ दिया है। चुनाँचे उसने बच्चे को उठाया और उसने बच्चे का नाम अहमद रखा। लेकिन वक़्त के साथ साथ वह अहमद यतीम के नाम से मशहूर हो गया। अब उसने अहमद यतीम

को बेटों की सी मुहब्बत दी। उसकी अच्छी तर्बियत की और फिर उसको अपना ख़ास मुसाहिब बना दिया। अहमद यतीम बड़ा दयानतदार, नेकोकार और परहेज़गार नौजवान था।

कुछ अरसे के बाद तूलून की वफ़ात होने लगी तो उसने अपने बेटे अबुल जैश को अपना नायब बनाया और पूरी सलतनत उसके हवाले कर दी और यह वसीयत की कि बेटा! यह (अहमद) तेरा भाई है। मैंने इसकी परवरिश की है। तुम भी सारी उम्र इसका ख़्याल रखना। उसके बाद वह फ़ौत हो गया। चुनाँचे अबुल जैश ने कंट्रोल संभाला तो उसने भी अहमद यतीम के साथ अच्छा ताल्लुक़ रखा। एक बार अबुल जैश को किसी चीज़ की ज़रूरत पड़ी। उसने अहमद यतीम को बुलाया और कहा यह चाबी लें और फलां रास्ते से आप मेरे कमरे में चले जाएं और यह चीज़ उठा लाएं। उसने दिन में वह रास्ता खोला और कमरे में चला गया। वह जैसे ही उस कमरे में दाख़िल हुआ तो उसने देखा कि अबुलजैश की एक ख़ूबसूरत बांदी जो बड़ी ख़ूबसूरत थी और अबुलजैश उसके साथ बड़ी मुहब्बत करता था। वह उस वक़्त वह उस कमरे में किसी ख़ादिम के साथ ज़िना कर रही थी। उस बांदी को उम्मीद ही न थी कि दिन के वक़्त भी मर्द कमरे में वापस आ सकता है। जैसे ही उसने दरवाज़ा खोला और यह मामला देखा तो वह मर्द भाग गया और औरत अहमद यतीम को अपने चक्कर में फंसाने लगी और उसकी मिन्नत समाजत करने लगी कि तुम भी मेरे साथ वही करो जो वह कर रहा था। लेकिन उसके दिल में नेकी थी लिहाज़ा कहने लगा, हर्गिज़ नहीं।

﴿قال معاذ الله انه ربی احسن مثوای. (یوسف ۲۳)﴾

सुब्हानअल्लाह! नेक लोगों का यही दस्तूर रहा है। चुनाँचे अहमद यतीम उस बदकार औरत के चंगुल से निकल गए और वह चीज़

उठाकर उस कमरे से वापस आ गए। अब उस बांदी के दिल में यह बात खटक गई कि अगर यह जाकर मेरी शिकायत लगाएगा तो मुझे क़त्ल कर दिया जाएगा लेकिन उन्होंने उसका पर्दा रखा और आकर वह चीज़ अबुल जैश को दे दी और बात गोल कर दी।

अबुलजैश ने उन्हीं दिनों में एक निकाह कर लिया और दूसरा निकाह करने की वजह से पहली बीवी के पास वक़्त गुज़ारने मेमं ज़रा कमी आने लगी। क्योंकि वह दिल में सोचती थी कि इसका कोई न कोई असर तो होना है। इसलिए उसके दिल में यह बात खटक गई कि अहमद यतीम ने मेरे ख़ाविंद को सब कुछ बता दिया है जिसकी वजह से मेरे ख़ाविंद की तवज्जोह मुझसे हट गई है।

औरत के दिल में जब हसद आ जाए तो फिर वह क्या क्या मक्कारियाँ कर गुज़रती है। लिहाज़ा उसने सोचा कि मैं किसी तरह अहमद यतीम को रास्ते से हटाऊँ। एक दिन अबुलजैश उससे मिलने आया। जब उसने देखा कि मेरा मियाँ बड़ी मुहब्बत की नज़र से मुझे देख रहा है और प्यार दे रहा है तो वह उस वक़्त रोने लग गई। उसने कहा, तुम क्यों रो रही हो? वह कहने लगी, मैं क्या बताऊँ। एक दिन अहमद यतीम हमारे कमरे में आया था। उसने मेरे साथ बदकारी की कोशिश की और मैंने बड़ी मुश्किल से अपने आपको उसके चंगुल से बचाया था। जब अबुलजैश ने यह सुना तो उसे याद आया कि हाँ मैंने एक मर्तबा दिन के वक़्त अहमद यतीम को चाबी देकर भेजा था। उसने मेरे हरम के साथ ख़्यानत करने की कोशिश की होगी। यह सोचकर उसकी आँखों में ख़ून उतर आया। उसने उसी वक़्त नीयत कर ली कि मैं अहमद यतीम को क़त्ल करवा देता हूँ।

जब वह दरबार में आया तो उसने अपने ख़ास आदमी को बुलाया और उसे कहा कि मैं एक बर्तन देकर आपकी तरफ़ भेजूंगा और वह आपको मेरा यह पैग़ाम देगा कि इस बर्तन को कस्तूरी से भर दो।

आपको यह काम करना है कि वह बर्तन जो बंदा लेकर आएगा, आप उसको क़त्ल करके उसका सर उस बर्तन में डालकर मेरे पास ले आना। फिर उसने अहमद यतीम को बुलवाया और उससे बातें शुरू कर दीं। जब उसका गुस्सा ठंडा न हुआ तो उसने अहमद यतीम को वह बर्तन दे दिया और कहने लगा, आप फ़लां आदमी के पास जाएं और उससे कहें कि वह इसको कस्तूरी से भर लाए। अहमद यतीम को तो कुछ पता नहीं था। यह बर्तन लेकर कुछ आगे गया तो रास्ते में उसी आदमी से मुलाक़ात हो गई जिसने बांदी के साथ ज़िना किया था। उसने अहमद यतीम से वह बर्तन ले लिया कि यह काम मैं कर देता हूँ। लिहाज़ा वह आदमी उस ख़ास आदमी के पास गया तो उसने उसे फ़ौरन क़त्ल करवा दिया और उसका सर बर्तन में डालकर अबुलजैश के पास भिजवा दिया। जब अबुलजैश ने अहमद यतीम को ज़िंदा हालत में देखा तो बड़ा हैरान हुआ कि मैंने तो कुछ और प्लानिंग की थी। यह क्या हुआ। अहमद यतीम बड़े हैरान थे कि बर्तन में कस्तूरी की बजाए उसी ख़ादिम का सर था।

उस वक़्त अबुलजैश ने कहा कि मैंने तो तुम्हें मरवाने के लिए यह काम किया था। अब अहमद यतीम को वाज़ेह हुआ कि उस बांदी के कहने पर अबुलजैश ने मेरे ख़िलाफ़ यह सब कुछ किया है। लिहाज़ा अब अहमद यतीम ने पूरी कहानी सुनाई कि जनाब! मैंने आपकी बीवी की पर्दापोशी की थी मगर उस बदकार औरत ने मुझे रास्ते से हटाने के लिए आपको मेरे ख़िलाफ़ कर दिया और क़ुदरतन वही बंदा मरा जो उसका ज़्यादा चाहने वाला था। जब अबुलजैश को यह पता चला तो उसने बांदी को गिरफ़्तार करवा लिया। जब उसने पूछा तो उसने अपने गुनाह का इक़रार कर लिया। अबुल जैश ने उस बांदी को भी क़त्ल करवा दिया। अबुलजैश की नज़र में अहमद यतीम की क़द्र व मंज़िलत और बढ़ गई और उसने वसीयत की कि मेरे बाद

उनको बादशाह बनाया जाए, अल्लाहु अकबर। देखिए जिसके अंदर इख़्लास था अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने उसको बचा लिया और बदकार और ख़ाईन बंदे अपने अंजाम को पहुँच गए। लिहाज़ा यह दस्तूर ज़हन में रख लें कि मुख़्लिस बंदा जब भी किसी काम के लिए क़दम उठाता है, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हमेशा उस बंदे को कामयाब फ़रमा देते हैं।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 12/96)

तीरों की बौछार में रहा फिर भी गुमनाम रहा

मुस्लिमा बिन अब्दुल मालिक एक हाकिम था। एक बार उसने फ़ौज चढ़ाई तो दुश्मन ने क़िले के अंदर छिपकर पनाह ले ली। मुसलमानों ने उस क़िले का घेराव कर लिया। वह घेराव कई दिन तक रहा। वे लोग इतनी अड़ रहे थे कि कोई रास्ता पैदा नहीं हो रहा था। दुश्मनों में से एक आदमी ऐसा था जो दीवार पर चढ़कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में गुस्ताख़ाना अल्फ़ाज़ कहा करता था। मुसलमान चाहते थे कि हम जल्दी फ़तेह कर लें लेकिन जब वे क़रीब जाते तो दुश्मन तीरों की ऐसी बारिश बरसाता कि ये पीछे हट जाते।

अल्लाह तआला की शान देखें कि एक दिन एक मुसलमान नौजवान फ़ौज के साथ आगे गया और तीरों की परवाह किए बग़ैर आगे बढ़ता रहा। तीर उसके जिस्म में चुभते रहे। वह सिर्फ़ अपना सर बचाता रहा। आख़िर तीरों की बारिश में से गुज़रकर दीवार के साथ जाकर बैठ गया। अब वह ऐसी जगह बैठा था कि जहाँ तीर मारने वालों के तीर उस तक नहीं पहुँच सकते थे। वहाँ से उसने दीवार तोड़नी शुरू कर दी। उसको देखकर कुछ और नौजवान भी आगे चले गए और उन सबने मिलकर आख़िर उस दीवार में नक़ब लगा दी। जब उसमें चंद मुसलमान नौजवान अंदर दाख़िल हो गए तो

अल्लाह तआला ने वह किला फ़तेह करवा दिया। अब उस नौजवान की बहादुरी पर पूरा लश्कर हैरान था कि इस नौजवान ने तीरों की बारिश में अपनी जान की परवाह नहीं की। यह तीरों पर तीर खाता रहा और आख़िर इतने बड़े कारनामे का सबब बना। हर आदमी जानना चाहता था कि यह साहिबे नक़ब कौन है?

जब फ़तेह हो गई तो एक मौक़े पर सब लोग इकट्ठा थे। उस वक़्त अमीरे लश्कर ने खड़े होकर कहा मैं साहिबे नक़ब को अल्लाह का वास्ता देता हूँ कि वह मेरे कहने पर खड़ा हो जाए ताकि मैं जानूं कि वह कौन है। जब उसने यह कहा, तो एक नौजवान खड़ा हो गया। उसने अपना चेहरा छिपाया हुआ था। वह कहने लगा, अमीरुल मुमिनीन! मैं भी आपको अल्लाह का वास्ता देता हूँ कि आपने मुझे खड़ा तो कर लिया। आप मेरा नाम हर्गिज़ न पूछिए। चुनाँचे अमीर लश्कर उसके इस अमल से इतना खुश हुआ था कि वह दुआ मांगा करता था, ऐ अल्लाह क़ियामत के दिन मेरा हशर भी उस साहिबे नक़ब के साथ फ़रमा दीजिए, सुब्हानअल्लाह। वह इतना मुख़्लिस बंदा था उसने इतना बड़ा काम कर दिया और वह यह भी नहीं चाहता कि मेरा नाम भी लोगों को मालूम हो। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 12/108)

मेरा नाम ज़ाहिर न होने पाए

चौथी सदी हिजरी में एक बुज़ुर्ग अबू उम्र मुजाहिद रह० गुज़रे हैं। उनके वक़्त में हाकिम ने लोगों के फ़ायदे की ख़ातिर एक फ़लाही काम करवाना था लेकिन उसमें बहुत ज़्यादा पैसा लगता था जबकि उनके पास उतनी रक़म नहीं थी। उसने अबू उम्र मुजाहिद रह० से अर्ज़ किया, हज़रत! मैं चाहता हूँ कि मैं सदक़ा जारिया का काम करूं लेकिन मेरे पास ख़ज़ाने में इतना पैसा नहीं कि मैं यह काम कर सकूँ। हज़रत ने उसको दो लाख दीनार दे दिए। वह यह रक़म लेकर

बहुत खुश हुआ।

अगले दिन उसने लोगों को बुलाया और उनको तर्ग़ीब दी कि जो रक़म बचती है वह भी आप लोग दे दें। और बात करते वक़्त उसने लोगों को बता दिया कि अबू उमर मुजाहिद रह० ने भी मुझे दो लाख दीनार अता किए हैं। जैसे ही उसने यह कहा कि तो अबू उमर मुजाहिद रह० खड़े हो गए और कहने लगे, अमीर साहब! मुझसे एक ग़लती हो गई है कि मैंने यह रक़म आपको तो दे दी मगर मैं अपनी वालिदा से उसकी इजाज़त नहीं ले सका और मैं समझता हूँ कि अगर मैं उनसे इजाज़त ले लूँ तो यह ज़्यादा बेहतर होगा। लिहाज़ा आप मेरी रक़म वापस कर दीजिए। अब जब उसने इतने लोगों में अपनी रक़म वापस मांगी तो लोग पहले तारीफ़ें कर रहे थे अब उन सब ने उसे बुरी नज़र से देखा और कहा कि यह कैसा बंदा है। अमीर वक़्त को भी वह रक़म वापस करनी पड़ी। जब अमीर वक़्त ने रक़म वापस कर दी और उन्होंने ले ली। सब लोग चले गए तो रात के अंधेरे में वह ही रक़म (दो लाख दीनार) लेकर दोबारा आए और अमीर से कहने लगे कि आपने तो मुझे ज़िब्ह ही करना चाहा मगर अल्लाह तआला ने मुझे बचा लिया। मैंने अपनी वालिदा का बहाना बनाया था हालाँकि यह रक़म मेरी ही मिल्कियत में थी। अब मैं आपको दोबारा अल्लाह के नाम पर देता हूँ आप मेरा नाम किसी के सामने न लीजिएगा। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 12/109)

रिया से मिट जाते हैं अज्र व सवाब

एक मर्तबा हज़रत बायज़ीद बुस्तामी रह० ने "सूर: ताहा" की तिलावत की। रात को ख़्वाब में देखा कि एक क़ुरआन मजीद है जिसके ऊपर सुनहरी हरुफ़ में लिखा हुआ है। उन्होंने ख़्वाब में "सूर: ताहा" पढ़ी। वह बड़े खुश हुए कि अल्लाह तआला के हाँ मेरे आमाल

नामे में "सूरः ताहा" की तिलावत का अज्र लिख दिया गया है।

जब शौक़ से देख रहे थे तो एक सफ़्हे पर देखा कि बीच में कुछ आयतों की जगह ख़ाली है। वह ख़्वाब में ही बड़े हैरान हुए कि यह जगह ख़ाली क्यों है? सोचते रहे, सोचते रहे। आख़िर अल्लाह तआला ने मदद फ़रमाई और ख़्वाब में ही ख़्याल आया कि हाँ जब मैं तिलावत कर रहा था तो उस वक़्त इन आयात की तिलावत करते वक़्त एक वाक़िफ़ आदमी मेरे क़रीब से गुज़रा था और मेरे दिल में यह ख़्याल आया था कि यह बंदा मेरी तिलावत सुनकर ख़ुश होगा। बस दिल में इतने से ख़्याल पैदा होने पर अल्लाह तआला ने उन आयात के अज्र से महरूम फ़रमा दिया कि दिल में यह ख़्याल क्यों पैदा हुआ कि यह बंदा तिलावत सुनकर ख़ुश होगा।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 12/170)

क़द्र व मंज़िलात

और

हौसला अफ़ज़ाई

क़द्र व मंज़िलत और हौसला अफ़ज़ाई

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की दुआ की क़द्रदानी

एक मर्तबा हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु मक्का मुकर्रमा से लौट कर मदीना की तरफ़ आ रहे थे। रास्ते में रात आ गई। पड़ाव डाला। आप खुले मैदान में सोए हुए थे। अचानक आपकी आँख खुली तो देखा कि आसमान पर चौदहवीं का चाँद नूर बरसा रहा था। जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने आसमान के चाँद को देखा तो उन्हें बेइख़्तियार मदीने का चाँद याद आ गया। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ख़्याल आते ही उठ बैठे। उस वक़्त तन्हाई थी। ठंडी हवा चल रही थी। आसमान से नूर बरस रहा था। क़ुबूलियत दुआ का मौक़ा महसूस हो रहा था। उस वक़्त हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के सामने अपने दिल का राज़ खोला और अपने दिल की तमन्ना यूँ बयान की :

﴿اللهم ارزقني شهادة في سبيلك واجعل قبري في بلد حبيبك.﴾

ऐ अल्लाह! मुझे अपने रास्ते में शहादत अता फ़रमाइए और मेरी क़ब्र महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शहर में बना दीजिए।

अब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने तो इतना ही मांगा था कि उनको शहादत तो किसी जगह भी मिल सकती थी चाहे पहाड़ की चोटी पर मिलती, चाहे किसी मैदान में मिलती मगर अल्लाह तआला क़द्रदान हैं, अल्लाह तआला ने उनकी तमन्ना को पूरा किया मगर किस अंदाज़ में किया कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु बावुज़ू हैं,

मुसल्लए नबवी पर खड़े हैं, क़ुरआन पाक की तिलावत कर रहे हैं। इस क़ुर्ब व एहसान की कैफ़ियत में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को शहादत अता फ़रमा दी। वह ज़ख़्म उसी वक़्त लगा था। मुसल्लए नबवी पर शहादत का मर्तबा अता फ़रमा देना अल्लाह की तरफ़ से क़द्रदानी नहीं तो और क्या है। उन्होंने तो सिर्फ़ शहादत मांगी थी मगर उनकी उम्मीद से बढ़कर उनके साथ ख़ैर का मामला किया गया।

उन्होंने दूसरी दुआ यह मांगी थी : ऐ अल्लाह! मेरी क़ब्र अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शहर में बना देना। अगर क़ब्र जन्नतुल बक़ी में बन जाती तो तब भी दुआ पूरी हो जाती मगर अल्लाह तआला क़द्रदान हैं। अल्लाह तआला ने उनकी क़ब्र के लिए कहाँ जगह अता फ़रमाई। अल्लाह तआला ने उन्हें रियाज़ुलजन्नत में और महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़दमों में दफ़्न होने की जगह अता फ़रमा दी। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तरफ़ से उनकी यह क़द्रदानी थी। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 12/31)

दरबारे फ़ारूक़ी में हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु का मुक़ाम

हज़रत ज़ैद के बेटे उसामा थे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन पर कितनी मेहरबानी फ़रमाई कि उनके बेटे को अमीरे लश्कर बनाकर भेजा हालाँकि सहाबा किराम में बड़े बड़े अकाबिर मौजूद थे। लेकिन यह छोटी उम्र में अमीर बनकर जा रहे थे। अल्लाह की शान कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके हाथ में झंडा पकड़ाया और उन्हें लश्कर का अमीर बनाया।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का ज़माना था। कुछ सहाबा किराम

को बैतुलमाल से कुछ हदिया मिला करता था। एक मर्तबा उस हदिए के ताय्युन की ज़रूरत पेश आई तो उसामा बिन ज़ैद और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुम के नाम सामने आए। अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बहुत ख़िदमत की। वह इमामुल मुहद्दिसीन थे और इल्म में बड़ा मुक़ाम रखते थे। सहाबा किराम में उनका मुक़ाम था। लोग उनके पास हदीस की रिवायत के लिए आते थे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनका माहाना थोड़ा तय किया और हज़रत उसामा बिन ज़ैद का माहाना ज़्यादा मुक़र्रर कर दिया। वह बड़े हैरान हुए। उन्होंने आकर अपने वालिद से पूछा, अब्बा जान! आपने उसामा बिन ज़ैद का माहाना ज़्यादा मुक़र्रर किया और मेरा कम तय फ़रमा दिया। इस पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अजीब जवाब दिया :

बेटा! मैंने यह काम इसलिए किया कि तेरी निस्बत उसामा और तेरे बाप की निस्बत उसामा का बाप अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ज़्यादा महबूब थे।

यह तो उनका अपना क़ौल है मगर बताने का मक़सद यह है कि क्योंकि उनके वालिद ने अपना बेटा बना लिया था और उनको क़ुर्ब की निस्बत मिल गई थी। इसलिए हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस निस्बत का लिहाज़ रखा और उन्होंने अपने बेटे की बनिस्बत उनका माहाना ज़्यादा तय फ़रमा दिया। यह अल्लाह तआला की तरफ़ से क़द्रदानी है। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 12/34)

बारगाहे इलाही में सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु की हौसला अफ़ज़ाई

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु एक सहाबी हैं। वह

ईरान में रहते थे। आतिशप्रस्त थे। उनके वालिद का एक ही काम था कि वह हर वक़्त आग जलाए रखते थे। वह आग को बुझने नहीं देते थे। उन बेचारों का खुदा कहीं बुझ न जाए। लिहाज़ा उसको लकड़ियाँ देनी पड़ती हैं। उसने हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा कि बेटा! आपका भी एक ही काम है कि आग जलती रहना चाहिए। यह अच्छे भले बड़ी उम्र के हो गए मगर उनको बाहरी दुनिया का पता ही नहीं था।

एक मर्तबा उनका वालिद बीमार हो गया। उसने उनको भेजा कि ज़मीनों पर जाओ वहाँ से पैसे लेकर आने हैं लेकिन याद रखना सीधा जाना और सीधा आना। वक़्त ज़ाए न करना। उन्होंने पहले कभी बाहर निकलकर नहीं देखा था। अब उनको बाहर निकलने का मौक़ा मिला। लिहाज़ा जब बाहर निकलकर जा रहे थे तो एक राहिब (ईसाईयों का आलिम) उनको मिल गया। उन्होंने उस राहिब से रास्ता पूछा। उनकी आपस में बातचीत होने लगी। राहिब ने उनसे पूछा कि क्या करते हो? उन्होंने बता दिया। इस तरह बातचीत से उनको राहिब के साथ ताल्लुक़ हो गया। उसने कहा कि यहाँ क़रीब हीएक चर्च है। मैं वहीं पर होता हूँ। तुझे जब मौक़ा मिले मेरे पास से होकर जाया करो। चुनाँचे वह जब भी उधर आते जाते वह उसको मिलकर जाते।

राहिब ने उनके सामने ईसाईयत की तालीमात पेश कीं। उस वक़्त ईसाई मज़हब सच्चा मज़हब था। उनके दिल में ख़्याल आया कि यह मज़हब बिल्कुल ठीक है लिहाज़ा मैं यह मज़हब इख़्तियार करूंगा। यह उससे पूछने लगे कि क्या मैं तालीम हासिल कर सकता हूँ? उसने कहा कि हाँ मगर हमारे बड़े आलिम फ़लां शहर में रहते हैं अगर आपने इल्म हासिल करना है तो उनके पास चले जाएं। उन्होंने कहा कि मैं उनके पास कैसे जाऊँगा? राहिब ने कहा कि वहाँ

क़ाफ़िले जाते हैं जब अगला क़ाफ़िला जाएगा तो मैं आपको उस क़ाफ़िले वालों के साथ भेज दूंगा। वह कहने लगे कि ठीक है। बस मुझे इत्तिला दे देना। मैं घर से आजाऊँगा क्योंकि अगर मैं यहाँ रहा तो अब्बू मुझे आग जलाने पर ही रखेंगे और उसकी वजह से मेरी ज़िंदगी भी नहीं संवरेगी। लिहाज़ा बेहतर यही है कि मैं वहाँ जाकर इल्म हासिल कर लूँ।

जब एक क़ाफ़िला जाने लगा तो उस राहिब ने उनको इत्तिला दी और यह क़ाफ़िले के साथ वहाँ चले गए। जिसके पास गए वह बड़ी उम्र का आलिम था। उन्होंने उस आलिम से तक़रीबन एक साल तक पढ़ा और उसके बाद वह फ़ौत हो गए। हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु बड़े परेशान हुए कि मैं इनसे पढ़ने आया था और यह फ़ौत हो गए हैं।

फिर वह उनसे भी बड़े आलिम के पास गए। वह भी बूढ़े हो चुके थे। उनके पास कुछ अरसा पढ़ा ही था कि वह भी बीमार हो गए। लिहाज़ा उन्हें फिर परेशानी हुई। इसी परेशानी के आलम में उनसे पूछा कि अब क्या करूं? उन्होंने फ़रमाया कि कोई बात नहीं, आप मेरे बाद फ़लां से इल्म हासिल कर लेना। चुनाँचे जब वह आलिम फ़ौत हुए तो वह तीसरे के पास चले गए। अल्लाह की शान देखिए कि तीसरा भी बूढ़ा था। वह भी बीमार हो गया। अब तो हज़रत सलमान फ़ारसी रोने लगे कि पता नहीं यह क्या मामला है कि मैं जिधर भी जाता हूँ उधर उस्ताद में जुदाई का दाग़ दे जाते हैं। उसने कहा कि परेशान होने की ज़रूरत नहीं है। मैं आपको एक पक्की बात बताता हूँ। अब तुझे किसी उस्ताद के पास जाने की ज़रूरत ही नहीं। उन्होंने पूछा, वह कैसे? उसने कहा कि अब वह वक़्त आ गया है जिसमें नबी आख़िरुज़्ज़मां सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तशरीफ़ लाना है। मैं निशानियाँ बता देता हूँ। लिहाज़ा आप कोशिश करके

उस इलाक़े में चले जाएं जहाँ उन्होंने आना है। वहाँ जाकर उनसे तालीम हासिल करना। यह सुनकर वह बहुत ख़ुश हुए। चुनाँचे उसने उन्हें वह निशानियाँ बता दीं और एक क़ाफ़िले वालों के साथ मदीना की तरफ़ रवाना भी कर दिया। उस ज़माने में मदीना को यसरिब कहा जाता है।

क़ाफ़िले वालों ने बीच में बदअहदी की कि यह बच्चा है और इसका कोई वली वारिस नहीं हैं। उन्होंने उन्हें मदीना जाकर एक गुलाम की हैसियत से बेच दिया और उन्हें एक यहूदी ने ख़रीद लिया। उनका वहाँ कोई वाक़िफ़ न था। अलबत्ता उन्होंने जब यह इलाक़ा देखा और निशानियों को देखा जो उनके उस्ताद ने उन्हें बताई थीं तो उनको तसल्ली हो गई कि यह वही इलाक़ा है जहाँ नबी आख़िरुज़्ज़मां सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तशरीफ़ लाना है। चुनाँचे दिल में फ़ैसला कर लिया कि अब मैं यहीं रहूँगा। उस यहूदी का एक खजूरों का बाग़ था। वह सारा दिन उसमें काम करते रहते थे। एक बार खजूर के पेड़ पर चढ़कर खजूर उतार रहे थे कि उस यहूदी का एक दोस्त उसे मिलने आया। वह उस यहूदी के साथ मिलकर बातें करने लगा। बातों ही बातों में कहने लगा कि मक्का से एक आदमी यहाँ आए हैं और वह नबुव्वत का दावा कर रहे हैं। जब उन्होंने ये अल्फ़ाज़ सुने तो उन्होंने शौक़ में ऊपर से नीचे छलांग लगा दी क्योंकि वह पहले ही ऐसी ख़बर के मुन्तज़िर थे। माशाअल्लाह बच्चों का काम ऐसा ही होता है। आकर उस यहूदी से पूछने लगे कि जी! वह कौन से नबी तशरीफ़ लाए हैं? यहूदी ने जब यह सुना तो उसने उन्हें ज़ोर से एक थप्पड़ लगाया और कहा, जा तू अपना काम कर। उनको छलांग लगाने से पाँव में तकलीफ़ हो रही थी। साथ ही थप्पड़ की तकलीफ़ भी बर्दाश्त करनी पड़ी। फिर जाकर ख़ामोशी से काम करने लगे। फिर अब इस सोच में पड़ गए कि अब मैं क्या करूं। आख़िर उनके

दिल में यह बात आई कि मुझे हफ़्ते में एक दिन छुट्टी होती है। मैं उस दिन जाकर बस्ती वालों से पूछूंगा कि कौन आए हैं। लिहाज़ा वह छुट्टी के दिन बस्ती में पहुँचे और पूछते पूछते वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पहुँच गए और ज़ियारत करके अपनी आँखों को ठंडक पहुँचाई।

उनको उस्ताद ने नबी आख़िरुज़्ज़मां सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दो निशानियाँ बतायीं थीं। एक निशानी तो यह कि वह हदिया क़ुबूल कर लेंगे और दूसरी यह कि वह सदके का माल क़ुबूल नहीं फ़रमाएंगे। चुनाँचे उन्होंने कुछ हदिया लाकर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पेश किए और अर्ज़ किया कि यह सदक़ा के पैसे हैं आप क़ुबूल फ़रमा लीजिए। अल्लाह के महबूब ने इर्शाद फ़रमाया, नहीं हम सदक़ा नहीं लेते। एक निशानी पूरी हो गई। फिर किसी दूसरे मौके पर अर्ज़ किया, जी! यह हदिया क़ुबूल फ़रमा लीजिए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वह हदिया क़ुबूल फ़रमा लिया।

इस तरह दूसरी निशानी भी पूरी हो गई। माशाअल्लाह अब उनके दिल को तसल्ली हो गई। और कलिमा पढ़कर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ग़ुलामों में शामिल हो गए। इस्लाम क़ुबूल करने के बाद उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में कैफ़ियत बयान की। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि तुम आते रहा करो। शुरू में उन्होंने ईमान को छिपाया। वह छुट्टी के दिन महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में आ जाते और दिन गुज़ार कर चले जाते।

कुछ अरसे बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत ने इतना जोश मारा कि कहने लगे कि अब तो मुझ से जुदा नहीं रहा जा सकता। अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि तुम उस यहूदी से जाकर तय कर लो। उन्होंने जाकर

उसे कहा जी आप मुझे आज़ाद कर दें। उसके बदले आप जो रक़म कहें वह अदा कर दूंगा जो काम कहेंगे वह करूंगा।

वह यहूदी बड़ा तेज़ था। उसने कहा कि मैं दो शर्तों पर आपको आज़ाद करता हूँ। एक शर्त तो यह है कि खजूरों के तीन सौ पेड़ लगाओ। जब वे फल देना शुरू कर दें, तब पहली शर्त पूरी हो जाएगी। उसका ख़्याल था कि अगर आज पेड़ लगाएं तो फल लगने में कई साल लग जाएंगे। दूसरी शर्त यह है कि तुम तीन औक़िया सोना मुझे देना। उसका ख़्याल था कि इतने सोने में तो पचास ग़ुलाम आ जाते हैं, यह कहाँ से इतना दे सकेगा।

उन्होंने उसकी ये शर्तें क़ुबूल फ़रमा लीं और आकर नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ख़िदमत में भी बता दिया। वह अभी इधर बैठे थे कि एक आदमी ने सोने की एक डली नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ख़िदमत में हदिए के तौर पर पेश किया। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वह सोना उनको दे दिया और फ़रमाया! सलमान! अल्लाह तआला ने तेरा काम आसान कर दिया। जाओ और उसे यह दे दो। अब यह ले गए और उस यहूदी को जाकर वह सोना दे दिया। सोने की वह डली देखने में तो छोटा सा लगता था लेकिन जब उसका वज़न किया तो बिल्कुल पूरा निकला। वह बड़ा हैरान हुआ। उसने सोचा कि शायद तराज़ू में कोई ख़राबी हो। उसने तराज़ू ठीक किया और फिर तोला। फिर वह वज़न पूरा निकला। इस तरह उसने कई बार किया और हर बार वज़न बराबर निकला। आख़िर वह हैरान होकर कहने लगा चलो ठीक है, अब खजूरों का बाग़ लगाओ। हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु ने फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया। आपने इर्शाद फ़रमाया कि तुम ज़मीन तैयार करो और हमारा इंतिज़ार

करना। हम आकर तुम्हारे साथ खजूर लगवाएंगे। अल्लाह तआला की शान देखिए कि अल्लाह के महबूब ने आकर उनके साथ खजूरें लगवायीं और उन खजूरों ने उसी साल फल उठाया, अल्लाहु अकबर। जब दोनों शर्तें पूरी हो गयीं तो उसे आज़ाद करना पड़ा।

आज़ाद होकर वह नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ख़िदमत में आ गए और अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी! मैं हाज़िर हूँ, अब मेरे लिए क्या हुक्म है? आपने इर्शाद फ़रमाया, अब तुम अस्हाबे सुफ़्फ़ा में शामिल हो जाओ। जो ग़रीब लोग मक्का मुकर्रमा, हब्शा और दूसरी जगहों से हिजरत करके आए हुए थे उनके लिए एक चबूतरा सा बना हुआ था, उस पर वे रहते थे। उन्हें अस्हाबे सुफ़्फ़ा (चबूतरे वाले) कहा जाता था। आपने इर्शाद फ़रमाया कि तुम भी इन्हीं में शामिल हो जाओ। लिहाज़ा वह भी अस्हाबे सुफ़्फ़ा में शामिल हो गए और उनके मानीटर बन गए।

अब देखना यह है कि अल्लाह तआला ने उनके साथ क्या क़द्रदानी का मामला फ़रमाया।

अपना घर किस लिए छोड़ा था? अल्लाह तआला के लिए अपने रिश्तेदारों को किस लिए छोड़ा था? अल्लाह तआला के लिए। जिसने अपना घर बार और अपने रिश्तेदार अल्लाह की रज़ा के लिए छोड़े थे अल्लाह तआला ने उनकी इतनी क़द्रदानी फ़रमाई कि एक वक़्त ऐसा आया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया ﴾السلمان منا اهل البيت﴿ सलमान तो हमारे अहले बैत में से है।

अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु को अपने अहले बैत में शामिल फ़रमा लिया, अल्लाहु अकबर। रिश्तेदारों को छोड़ा तो अल्लाह तआला ने उनकी निस्बत किन के साथ कर दी? अहले बैत के साथ।(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 12/35-41)

हज़रत सुराक़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथों के कंगन

अगर कोई आदमी नेक नीयती के साथ अल्लाह के लिए दुनिया की कोई क़ुर्बानी देगा तो अल्लाह तआला उसको इसका बदला दुनिया में भी देंगे और आख़िरत में भी देंगे। हदीस पाक से इसकी दलील मिलती है। जब नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम हिजरत के सफ़र में थे उस वक़्त आपके पीछे एक काफ़िर आ गया जिसका नाम सुराक़ा था। जब उसने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देख लिया तो आपकी दुआ से उसके पाँव ज़मीन में धंस गए। फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वस्सलम ने दुआ फ़रमाई और उसके पाँव को ज़मीन ने छोड़ दिया। जब वह जाने लगा तो डर था कि कहीं वह जाकर फिर न बता दे। उस वक़्त उसने नबी अलैहिस्सलाम से अर्ज़ किया मुझे कलिमा पढ़ा दीजिए। चुनाँचे नबी अलैहिस्सलाम ने उसे कलिमा पढ़ा दिया लेकिन इससे पहले नबी अलैहिस्सलाम ने बशारत दी थी कि सुराक़ा! मैं दख रहा हूँ कि अल्लाह तआला ने तो तेरे हाथों या तेरे बाज़ुओं में किसरा के कंगन अता फ़रमा दिए हैं। उसको नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुख़बरी करने पर सौ या दो सौ ऊँटों का ईनाम कितना था जो काफ़िरों ने ऐलान कर दिया था लेकिन उसने अल्लाह की निस्बत से सौ या दो सौ ऊँटों के ईनाम की क़ुर्बानी दे दी कि मैं इस दुनियवी फ़ायदे को छोड़ता हूँ और अब वापस जाकर उनके बारे में कुफ़्फ़ार को नहीं बताऊँगा। चुनाँचे अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उसकी क़ुर्बानी की क़द्रदानी फ़रमाई और दो सौ ऊँटों के बदले में किसरा जैसे बादशाह के कंगन उसके बाज़ुओं में अता फ़रमा दिए, सुब्हानल्लाह जो बंदा अल्लाह की निस्बत से दुनिया की क़ुर्बानी देता है अल्लाह तआला उसे दुनिया से महरूम नहीं करते बल्कि दुनिया को कई गुना करके उसके क़दमों में डाल देते हैं। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 12/31)

ज़ुबैदा ख़ातून पर नज़रे करम

हारून रशीद की बीवी ज़ुबैदा ख़ातून बड़ी नेक और दीनदार मलिका थी। उसको क़ुरआन मजीद के साथ इतनी मुहब्बत थी कि उसने अपने घर में तीन सौ हाफ़िज़ात तंख़्वाह पर रखी हुई थीं। उसने उनकी तीन शिफ़्टें बनाई हुई थीं। हर शिफ़्ट में एक सौ हाफ़िज़ात होती थीं। उन हाफ़िज़ात को महल के मुख़्तलिफ़ कमरों, बरामदों और कोनों में बिठा दिया जाता था। और उनका काम अपनी शिफ़्ट में बैठकर क़ुरआन मजीद पढ़ना होता था। इस तरह पूरे महल में हर वक़्त सौ हाफ़िज़ात के क़ुरआन की आवाज़ आती थी।

इस औरत को पता चला कि जब लोग सफ़र हज पर जाते हैं तो उनको रास्ते में पानी नहीं मिलता। इसलिए वह अपने साथ सवारियों पर पानी लादकर जाते हैं। जब कभी पानी ख़त्म हो जाता है तो कभी-कभी लोग प्यासे रहते हैं बल्कि कभी-कभी तो कई लोग मर ही जाते हैं। हर बीवी अपने ख़ाविन्द से फ़रमाइश करके कोई न कोई काम करवाती है। इसने भी अपने ख़ाविन्द से कहा कि मेरे दिल की तमन्ना है है कि आप एक नहर बनवाएं जो मैदाने अरफ़ात तक पहुँचे ताकि हाजी लोग जब उसके क़रीब से गुज़रें तो उनको पानी मिलता रहे। हारून रशीद ने उसकी फ़रमाइश को पूरा कर दिया और एक आलीशान नहर बनवा दी। उस नहर से हज़ारों इंसानों, हैवानों, चरिन्दों और परिन्दों ने पानी पिया और फ़ायदा उठाया।

ज़रा सोचें कि किसी को पानी का एक प्याला पिलाना कितनी बड़ी नेकी है। क़यामत के दिन एक जहन्नमी किसी जन्नती को देखकर उसे पहचान लेगा और कहेगा कि आपने मुझसे एक बार पानी मांगा था और मैंने आपको पेश किया था। वह कहेगा हाँ। वह कहेगा कि आप अल्लाह के हुज़ूर मेरी शफ़ाअत कर दीजिए। हदीस

पाक में आया है कि एक प्याला पानी पिलाने पर वह जन्नती शफ़ाअत करेगा और अल्लाह तआला उस जहन्नमी को जहन्नम से निकालकर जन्नत अता फ़रमा देंगे। एक प्याला पानी पिलाने की अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हाँ इतनी क़द्र है।

इंसान तो आख़िर इंसान है। जानवर को पानी पिलाना भी क़ीमती है। हदीस पाक में आया है कि एक औरत ने अपनी पूरी ज़िंदगी कबीरा गुनाहों में गुज़ार दी थी। एक मर्तबा वह कहीं जा रही थी। उसने एक कुत्ते को प्यासा देखा। गर्मी का मौसम था। उसकी ज़बान निकली हुई थी और प्यास की वजह से वह हांप रहा था। उसके दिल में तरस आया और उसने अपने दुपट्टे के साथ कोई चीज़ बांधी और पानी डालकर उस कुत्ते को पानी पिलाया जब कुत्ते ने पानी पिया तो कुत्ते को होश आ गया और अल्लाह की रहमत को जोश आ गया। सिर्फ़ कुत्ते को पानी पिलाने पर उसकी ज़िंदगी के कबीरा गुनाहों को माफ़ कर दिया गया। सिर्फ़ कुत्ते को पानी पिलाने पर उसकी ज़िंदगी के सब कबीरा गुनाहों को माफ़ फ़रमा दिया गया। अब सोचिए कि प्यासे को पानी पिलाना कितना बड़ा अमल है। ज़ुबैदा ख़ातून ने लाखों प्यासों को पानी पिलाया। जब इंतिक़ाल हो गया तो वह किसी को ख़्वाब में मिली, उसने पूछा, ज़ुबैदा! तेरा आगे क्या बना? कहने लगी कि बस मुझ पर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की रहमत हो गई। उसने कहा, हाँ! तेरे तो काम ही इतने बड़े थे। तूने नहर बनवाकर बहुत बड़ा काम किया। तेरी तो बख़्शिश होनी ही थी। वह कहने लगी कि मेरी बख़्शिश नहर की वजह से नहीं हुई। उसने पूछा, वह क्यों? वह कहने लगी, जब मेरा नहर वाला अमल अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के सामने पेश किया गया तो परवरदिगार आलम ने फ़रमाया कि तुमने नहर इसलिए बनवाई थी कि तुम्हारे पास बैतुलमाल का पैसा था। अगर न होता तो नहीं बनवा सकती थी। यह कोई ऐसा काम नहीं,

तुम मुझे बताओ कि तुमने मेरे लिए कौनसा अमल किया? वह कहने लगी कि मैं यह सुनकर घबरा गई कि मेरे पास तो ऐसा कोई अमल नहीं है।

इस घबराहट में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की रहमत मेरी तरफ़ मुतवज्जेह हुई और फ़रमाया, हाँ तेरा एक अमल ऐसा है जो तुमने हमारे लिए किया था। वह अमल यह है कि एक बार आप खाना खा रही थी, भूख लगी हुई थी। आपने लुक़्मा तोड़ा कि मैं उसे अपने मुँह में डाल लूँ। मुँह में डालने से पहले इधर से अज़ान की आवाज़ तेरे कानो में पड़ी। तुम्हारे सर पर पूरी तरह दुपट्टा नहीं था और आधा सर नंगा था। उस वक़्त तेरे दिल में ख़्याल आया कि अल्लाह का नाम बुलन्द हो रहा है और मेरा सर नंगा है। तुमने भूख को रोका, लुक़्मा नीचे रखा और अपने दुपट्टे को ठीक किया और उसके बाद तूने लुक़्मे में जो देर की यह मेरे नाम के अदब की वजह से की। बस इसकी वजह से तेरी मग़फ़िरत की जाती है। सुब्हानअल्लाह, अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त तो यह देखते हैं कि हमारी रज़ा के लिए क्या किया गया है। अब यह अमल देखने में छोटा सा है मगर क्योंकि उसने यह अल्लाह की रज़ा के लिए किया इसलिए अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हाँ उसकी क़द्र भी ज़्यादा हुई। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 12/47)

एक बुतपरस्त की पुकार और उसकी क़द्रदानी

एक बुतप्रस्त था वह परेशान हाल होकर सारी रात अपने बुत से दुआएं मांगता रहा। वह उसके सामने सनम सनम पुकारता रहा। मगर कोई बात न बनी। यहाँ तक कि उसे ऊँघ आने लगी। ऊँघ में उसकी ज़बान से समद या समद निकल गया। समद अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का नाम है। जैसे ही उसने समद कहा अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की रहमत

उसकी तरफ़ मुतवज्जेह हुई और परवरदिगार आलम ने फ़रमाया, ﴿لبيك يا عبدى﴾ मेरे बंदे! में हाज़िर हों।

जब परवरदिगार आलम ने यह जवाब दिया तो फ़रिश्ते हैरान होकर पूछने लगे कि ऐ परवरदिगार आलम वह एक बुतप्रस्त है वह सारी रात बुत के नाम की तस्बीह जपता रहा। उसने ऊँघ की वजह से ग़फ़लत में या समद कहा है और उसकी तरफ़ मुतवज्जेह हो रहे हैं। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने फ़रमाया, ठीक है कि वह बुतप्रस्त था और सारी रात बुत के नाम की तस्बीह जपता रहा। इस बुतन उसको कोई जवाब न दिया और ऊँघ में मुझे पुकारा। अगर मैं भी जवाब न देता तो फिर मुझ में और बुत में क्या फ़र्क़ रह जाता, अल्लाहु अकबर। जो परवरदिगार इतना क़द्रदान हो क्या हमें उसकी क़द्रदानी करनी चाहिए या नहीं करनी चाहिए। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 12/49)

✽ ✽ ✽

ज़ोहद

व

इस्तग़ना

ज़ोहद व इस्तिग़ना

हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ज़ोहद व कनाअत के पैकर

एक बार अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की बीवी के दिल में बड़ी तमन्ना थी कि घर में कोई स्वीट डिश तैयार करें। उन्होंने हज़रत अबूबक्र से कहा कि कुछ पैसे दें। अमीरुल मुमिमीन हज़रत अबूबक्र ने फ़रमाया कि मेरे पास पैसे तो नहीं हैं। उनकी बीवी ने सोचा कि मुझे रोज़ाना का थोड़ा-थोड़ा ख़र्चा मिलता है, मैं उसमें से बचाती रहती हूँ। जब मुनासिब रक़म जमा हो जाएगी तो कोई मीठी चीज़ बना लूंगी। इस तरह उन्होंने एक दिन स्वीट डिश बनाई। ख़ुद भी खाई और हज़रत अबूबक्र को भी पेश की। हज़रत अबूबक्र ने पूछा यह पैसे कहाँ से आए? कहने लगीं कि आप मुझे जो रोज़ाना ख़र्चा देते हैं मैंने उसमें से थोड़ा थोड़ा बचाकर कुछ पैसे इकट्ठे किए और आज यह स्वीट डिश बनाई है। आपने फ़रमाया बहुत अच्छा, साबित हुआ कि यह ख़र्चा हमारी ज़रूरत से ज़्यादा है। लिहाज़ा आपने इतनी मिक़्दार आइन्दा बैतुल माल से लेनी बंद कर दी।

फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ज़ोहद व कनाअत के रहबर

हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का गुज़ारा बहुत मुश्किल था। हज़रत अली और कुछ दूसरे सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम भी थे। उन्होंने मिलकर मशवरा किया कि अमीरुल मुमिमीन हज़रत

उमर को बैतुलमाल से बहुत कम तंख़्वाह मिलती है। इसे बढ़ाना चाहिए। सबने मशवरा कर लिया कि इतना बढ़ाना चाहिए लेकिन सवाल यह पैदा हुआ कि अमीरुल मुमिनीन को कौन बताए। इसके लिए कोई तैयार न हुआ। मशवरे में तय पाया कि हम उम्मुल मुमिनीन हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा को इस मशवरे से आगाह कर देते हैं और वह अपने वालिद मोहतरम को यह बात बता देंगी। लिहाज़ा उन्होंने हज़रत हफ़सा को अपना मशवरा बता दिया। यह भी कहा कि हमारे नामों का इल्म अमीरुल मुमिनीन को न हो। उम्मुल मुमिनीन हज़रत हफ़सा ने एक बार मौक़ा पाकर हज़रत उमर को बताया कि अब्बा जान! कुछ हज़रात ने यह सोचा है कि आपकी तंख़्वाह कुछ बढ़ा देना चाहिए क्योंकि आपका वक़्त तंगी से गुज़र रहा है। हज़रत उमर ने पूछा, यह किस-किस ने मशवरा किया है? उन्होंने कहा मैं उनका नाम नहीं बताऊँगी। यह सुनकर हज़रत उमर ने फ़रमाया, हफ़सा! अगर तू मुझे उनके नाम बता देती तो मैं उनको ऐसी सज़ा देता कि उनके जिस्मों पर निशान पड़ जाते कि ये लोग मुझे दुनिया की लज़्ज़तों की तरफ़ माइल करना चाहते हैं। और फिर फ़रमाया, हफ़सा! तू मुझे बता कि तेरे घर में नबी अलैहिस्सलाम की गुज़रान कैसी थी? हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा ने जवाब में कहा कि मेरे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास पहनने के लिए एक ही जोड़ा था। दूसरा जोड़ा गेरू रंग का था। जो कभी किसी लश्कर के आने पर या जुमा के दिन पहना करते थे। खजूर की छाल का एक तकिया था। एक कंबल था जिसे सर्दियों में आधा ऊपर और आधा नीचे ले लेते थे और गर्मियों में चार तह करके नीचे बिछा लेते थे। मेरे घर में कई दिनों तक चूल्हे में आग भी नहीं जलती थी। मैंने एक बार घी के डिब्बे की तलछट से रोटी को चिपड़ दिया तो नबी अलैहिस्सलाम ने खुद उसे शौक़ से खाया और दूसरों को भी शौक़ से खिलाया।

यह सुनकर हज़रत उमर ने फ़रमाया, हफ़सा! नबी अलैहिस्सलाम ने एक रास्ते पर ज़िंदगी गुज़ारी। उनके बाद अमीरुल मुमिनीन अबूबक्र ने भी उसी रास्ते पर ज़िंदगी गुज़ारी और वह अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मिल गए हैं। अगर मैं भी उसी रास्ते पर चलूंगा तो फिर मैं उनसे मिल सकूंगा। अगर मेरा रास्ता बदल गया तो मंज़िल भी बदल जाएगी। सुब्हानअल्लाह इन हज़रात को यह हक़ीक़त समझ में आ चुकी थी कि यह दुनिया की ज़िंदगी ख़त्म होने वाली है। इसलिए वे ज़रूरत के बराबर दुनियावी नेमतें हासिल करते थे और लज़्ज़तों को आख़िरत पर छोड़ देते थे।

हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का ज़ोहद व फ़ाक़ा

सैय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बहुत ज़्यादा मुहब्बत थी। एक बार नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम घर में मौजूद थे। हज़रत फ़ातिमा तशरीफ़ लायीं। आक़ा ने आपसे पूछा कि कैसे आयीं? आपने अपने दुपट्टे का पल्लू खोला। उसके अंदर आधी रोटी थी। आपने वह रोटी नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पेश की और कहा, अब्बा जान! मैं आपके लिए अपनी तरफ़ से तोहफ़ा लायी हूं। पूछा, फ़ातिमा! क्या बात बनी? अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी! हम कई दिनों से भूखे थे। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु कुछ काम किया और आटा लेकर आए। मैंने रोटियां पकायीं। एक हसन रज़ियल्लाहु अन्हु ने खाई, एक हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु ने खाई। एक अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने खा ली। एक रोटी सवाली को दे दी और एक रोटी मेरे लिए बची थी। अब्बा जान! जब मैं रोटी खा रही थी तो दिल में ख़्याल आया, फ़ातिमा! तुम बैठी रोटी खा रही हो। पता नहीं तुम्हारे अब्बा हुज़ूर को कुछ खाने को मिला या नहीं मिला। इसलिए

मैंने बाक़ी आधी रोटी कपड़े में लपेटी और आपकी ख़िदमत में ले आई हूँ। अब्बा हुज़ूर! मैं आपको यह हदिया पेश कर रही हूँ। इसे क़ुबूल फ़रमा लीजिए। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, फ़ातिमा! मुझे क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है आज तीन दिन गुज़र गए तेरे बाप के पेट में खाने का कोई लुक़्मा नहीं गया।

हज़रत सालिम रह० की शाने इस्तग़ना

हमारे बड़ों पर ऐसे-ऐसे वाक़िआत पेश आए कि उन्हें वक़्त के बादशाहों ने बड़ी-बड़ी जागीरें पेश कीं मगर उन्होंने अपनी ज़ात के लिए कभी क़ुबूल नहीं की। हज़रत उमर इब्ने ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के पोते हज़रत सालिम रह० एक बार हरम मक्का में तशरीफ़ लाए। मुताफ़ (तवाफ़ की जगह) में आपकी मुलाक़ात वक़्त के बादशाह से हिशाम बिन अब्दुल मलिक से हुई। हिशाम ने सलाम के बाद अर्ज़ किया हज़रत! कोई ज़रूरत हो तो हुक्म फ़रमाएं ताकि मैं आपकी कोई ख़िदमत कर सकूं। आपने फ़रमाया, हिशाम, मुझे बैतुल्लाह शरीफ़ के सामने खड़े होकर ग़ैरुल्लाह से हाजत बयान करते हुए शर्म आती है क्योंकि अदब इलाही का तक़ाज़ा है कि यहाँ सिर्फ़ उसी के सामने हाथ फैलाया जाए। हिशाम ला जवाब हो गया। क़ुदरतन जब आप हरम शरीफ़ से बाहर निकले तो हिशाम भी ठीक उसी वक़्त बाहर निकला। आपको देखकर फिर वह क़रीब आया और कहने लगा, हज़रत अब फ़रमाइए कि मैं आपकी क्या ख़िदमत कर सकता हूँ? आपने फ़रमाया, हिशाम, बताओ मैं तुमसे क्या मांगू, दीन या दुनिया? हिशाम जानता था कि दीन के मैदान में तो आपका शुमार वक़्त के अहम तरीन बुज़ुर्ग हस्तियों में होता है। लिहाज़ा कहने लगा, हज़रत आप मुझसे दुनिया मांगे। आपने फ़ौरन जवाब दिया कि दुनिया

तो मैंने दुनिया के बनाने वाले से भी नहीं मांगी, भला तुम से क्यों मांगूगा। यह सुनते ही हिशाम का चेहरा लटक गया और अपना सा मुँह लेकर रह गया।

तख़्ते ख़िलाफ़त पर भी ज़ाहिदाना ज़िंदगी

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० वक़्त के ख़लीफ़ा थे। एक बार आप अपने कमरे में बैठे हुए थे। आपने अपनी बेटी को आवाज़ दी कि बेटी! मेरे लिए पानी का प्याला लाओ। काफ़ी देर गुज़र गई मगर बेटी नहीं आई। आपने फिर सख़्ती से बुलाया। बीवी ने आकर पूछा क्या हुआ? फ़रमाया, मैंने बेटी से कहा कि पानी का प्याला ला। इतनी देर हो गई है वह अभी तक पानी का प्याला लेकर नहीं आई। कितनी नाफ़रमान बनती चली जा रही है। बीवी फ़ातिमा रह० ने कहा, आपकी बेटी नाफ़रमान नहीं। उसने जो कपड़ा पहना हुआ था (शलवार) वह फट गया था। दूसरे कमरे में शलवार को उतारकर बैठी सी रही थी। उसको सिए और पहने बग़ैर वह कैसे आ सकती थी? वक़्त का ख़लीफ़ा हो और उसकी बेटी के पास पहनने के लिए सिर्फ़ एक लिबास हो। यह उन हुक्मरानों के अमीन होने की दलील है। इसमें शक नहीं कि वह ख़ज़ानों की कुंजियों के मालिक थे मगर उनका ग़लत इस्तेमाल नहीं किया करते थे। शाही मिलने के बावजूद उन्होंने फ़कीराना ज़िंदगी अपनाई हुई थी।

बेटे गवर्नर बन गए

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० के ग्यारह बेटे थे। आप जब वफ़ात पाने लगे तो एक आदमी आपके पास आया और उसने कहा, उमर बिन अब्दुल अज़ीज़! आपने अपने बच्चों के साथ इंसाफ़

नहीं किया। आपने कहा, वह कैसे? उसने कहा, आपसे पहले जो लोग हुक्मरान थे उन्होंने तो अपनी औलादों के लिए इतनी जाएदादें बना लीं। इतने लाख दीनार व दिरहम छोड़े और आपने अपनी औलाद के लिए कुछ भी नहीं किया। यह सुनकर आपको उस वक़्त गुस्सा आया और चेहरे पर लाली ज़ाहिर हुई। आपने फ़रमाया, मुझे ज़रा उठाकर बिठा दो। आपको टेक लगाकर बिठा दिया गया। आपने फ़रमाया, अगर मैंने अपनी औलाद को नेकी सिखाई है तो मेरे परवरदिगार का वादा है, ﴿وهو يتولى الصالحين﴾ कि नेक लोगों का वली ख़ुद परवरदिगार होता है। मैं अपने बेटों को अल्लाह तआला की सरपरस्ती में छोड़कर जा रहा हूँ। और अगर ये नेक नहीं हैं तो मुझे भी परवाह नहीं कि उनके साथ दुनिया में क्या होता है।

आप तो वफ़ात पा गए मगर इमाम शाफ़ई रह० या इसी तरह की कोई और बुज़ुर्ग हस्ती थी। वह फ़रमाते हैं कि मैंने देखा कि पहले वाले हुक्मुरान जिन्होंने अपनी औलादों के लिए लाखों दिरहम व दीनार छोड़े, उनकी औलाद को देखा कि वे जामा मस्जिद के दरवाज़े पर भीख मांग रही थी और मैंने उम्र बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० के बेटों को देखा कि उनके ग्यारह बेटे मुख़्तलिफ़ इलाक़ों के गवर्नर बने हुए थे क्योंकि लोगों को उनसे बेहतर बंदा मिलता कोई नहीं था।

पूरी सलतनत की क़ीमत प्याले भर पानी के सिवा...

एक बार सुलेमान बिन हर्ब रह० तशरीफ़ ले जा रहे थे। वक़्त का बादशाह हारून रशीद उस वक़्त उनके दरबार में मौजूद था। हारून रशीद को प्यास लगी। उसने अपने ख़ादिम से कहा कि मुझे पानी पिलाओ। ख़ादिम एक गिलास में ठंडा पानी लेकर आया। जब बादशाह ने गिलास हाथ में पकड़ लिया तो सुलेमान रह० ने उन्हें

कहा, बादशाह सलामत! ज़रा रुक जाइए। वह रुक गया। उन्होंने फ़रमाया कि आप मुझे एक बात बताइए जैसे आपको अभी प्यास लगी है, ऐसे में आप इस प्याले को कितनी क़ीमत में ख़रीदने पर तैयार हो जाएंगे? हारून रशीद ने कहा मैं तो आधी सलतनत दे दूंगा। फिर सुलेमान रह० ने फ़रमाया, आप यह पानी पी लें और यह आपके पेट में चला जाए लेकिन अंदर जाकर आपका पेशाब बंद हो जाए और फिर वह निकल न पाए और पूरी दुनिया में सिर्फ़ एक हकीम हो जो उसे निकाल सकता हो तो बताइए, इसको निकलवाने की कितनी फ़ीस देंगे? सोचकर हारून रशीद रह० बक़िया आधी सतलनत भी इसको दे दूंगा। वह कहने लगे बादशाह सलामत ज़रा ग़ौर करना कि आपकी पूरी सलतनत पानी का एक प्याला पीने और पेशाब बनकर निकलने के बराबर है, अल्लाहु अकबर।

ज़ाहिद ने हाथ हटाए पाँव बढ़ाए

एक बादशाह कहीं जा रहा था। उसने देखा कि रास्ते में एक फ़क़ीर लेटा हुआ है और उसने बादशाह की तरफ़ पाँव फैलाए हुए हैं। बादशाह हैरान हुआ कि सारी दुनिया मेरी जी हुज़ूरी करने वाली है और यह अजीब आदमी है कि फटे पुराने कपड़े पहने हुए और मेरी तरफ़ पाँव पसारे हुआ सो रहा है। बादशाह ने एक आदमी से कहा, इसको कुछ पैसे दे दो। जब उसके नौकर ने पैसे आगे बढ़ाए तो फ़क़ीर कहने लगा, बादशाह सलामत! जब से मैंने आपकी तरफ़ से हाथ हटाए हैं तब से मैंने आपकी तरफ़ पाँव फैलाए हुए हैं, सुब्हानअल्लाह। ये हैं ज़ाहिद जिनके दिलों में दुनिया की मुहब्बत नहीं होती।

ख़्वाजा अबुलहसन ख़रक़ानी रह० की शाने इस्तग़ना

हमारे मशाइख़ अल्लाह तआला की याद में लगे रहते थे। उनकी

नज़र में इंसान की अज़्मत उसके दीन की वजह से होती थी और दुनिया की वजह से उनके हाँ इंसान की अज़्मत नहीं होती थी। ख़्वाजा अबुलहसन ख़रक़ानी रह० सिलसिला नक़्शबंदिया के बुज़ुर्गों में से थे। वह एक फ़क़ीर आदमी थे। अल्लाह ने उन्हें आम क़ुबूलियत दी थी। उनकी ख़ानक़ाह पर वक़्त के अमीर, कबीर लोग भी आते थे। एक बार उन्होंने अपने ख़ादिमों को हुक्म दिया कि आज सारी ख़ानक़ाह की सफ़ाई करो। उस ज़माने में चिप्स के फ़र्श नहीं होते थे बल्कि कच्ची मट्टी होती थी। जुमा का दिन था। इसलिए कुछ लोग नहाने धोने में लग गए और कुछ ख़ानाक़ाह की सफ़ाई करने में मसरूफ़ हो गए। हज़रत रह० के सर के बाल लंबे-लंबे थे। उनके सर में खुजली सी होने लगी। सर में खुजली कभी तो जुओं की वजह से होती है और कभी ज़्यादा दिन न नहाने की वजह से भी ख़ारिश सी होती है। हज़रत को ख़ारिश महसूस हुई तो आपने अपने एक ख़ादिम से फ़रमाया ज़रा मेरे बालों में देखो कि जुओं की वजह से ख़ारिश हो रही है या किसी और वजह से। उसने कहा, जी बहुत अच्छा। अब हज़रत बैठ गए और उस ख़ादिम ने जुएं ढूंढना शुरू कर दिया। बाहर लोगों ने झाडू देना शुरू कर दिया। ख़ूब मिट्टी उड़ने लगी। अल्लाह की शान कि ठीक उसी वक़्त सुलतान महमूद ग़ज़नवी हज़रत की मुलाक़ात के लिए पहुँच गया। जब मुरीदों ने देखा कि बादशाह सलामत आ गए है। तो वह घबराए कि यहाँ तो मिट्टी उड़ रही है। उनमें से एक भागा कि मैं हज़रत को बादशाह के आने की ख़बर दे दूं। उसने अंदर आकर अजीब मंज़र देखा कि हज़रत सर झुकाकर बैठे हैं और एक ख़ादिम आपके बालों में जुएं तलाश कर रहा है। उस मुरीद ने ख़ादिम को इशारा किया कि वह बादशाह सलामत आ रहे हैं। जब उसे मालूम हुआ कि बादशाह सलामत आ रहे हैं तो वह ख़ादिम भी घबरा सा गया और उसी हालत उसने कहा,

हज़रत! हज़रत ने उसकी तरफ़ सर उठाकर देखा तो वह फिर कहने लगा। हज़रत! वह बादशाह सलामत आ रहे हैं। हज़रत यह सुनकर फ़रमाने लगे, ओहो! मैं समझा कि तेरे हाथ में कोई बड़ी सी जूँ आ गई। इससे अंदाज़ा लगाइए कि उनके दिल में दुनिया की क्या हक़ीक़त होती थी। जब सुल्तान महमूद ग़ज़नवी रह० हज़रत अबुलहसन ख़रक़ानी रह० के पास आया तो हज़रत बैठे रहे। वह ख़ुद आकर हज़रत से मिला। उसने मिलने के बाद एक थैली में कुछ पैसे हज़रत को हदिए के तौर पर पेश किए मगर हज़रत रह० ने उसे लेने से इंकार कर दिया। उसने फिर थैली पेश की। हज़रत के पास उस वक़्त एक सूखी रोटी पड़ी हुई थी। आपने उस थैली के बदले में वह सूखी रोटी पेश की और फ़रमाया, इसे खाइए। अब उसने रोटी का लुक़्मा तो मुँह में डाल लिया लेकिन सूखा लुक़्मा उसके गले से नीचे नहीं उतर रहा था बल्कि वह लुक़्मा उसके गले में फंस गया। हज़रत रह० ने जब देखा कि गले में लुक़्मा फंस चुका है तो पूछा क्या बात है, लुक़्मा नीचे नहीं उतर रहा? उसने कहा, जी हाँ नहीं उतर रहा है। हज़रत रह० ने फ़रमाया, आपकी यह थैली भी इसी तरह मेरे गले से नीचे नहीं उतर रही है। सुब्हानअल्लाह! ऐसी नसीहत की।

शेख़ जिलानी रह० की दुनिया से बेरग़बती

शैख़ अब्दुल क़ादिर जिलानी रह० के बारे में किताबों में एक वाक़िआ लिखा है कि एक बार तिजारत का सामान एक जहाज़ में आ रहा था। किसी ने आकर बताया कि हज़रत ! इत्तिला मिली है कि यह जहाज़ डूब गया है। हज़रत ने फ़रमाया, अल्हम्दुलिल्लाह। थोड़ी देर बाद ख़बर मिली कि हज़रत! वह जहाज़ बचकर किनारे लग गया है। हज़रत ने फ़रमाया, अल्हम्दुलिल्लाह। एक आदमी पूछने लगा, हज़रत! डूबने की ख़बर मिली तो भी अल्हम्दुलिल्लाह और

बचने की ख़बर मिली तो भी अलुहम्दुलिल्लाह? हज़रत रह० ने फ़रमाया कि जब डूबने की ख़बर मिली तो मैंने अपने दिल में झांका तो इसमें उसका ग़म नहीं था इसलिए मैंने कहा अलुहम्दुलिल्लाह और जब बचने की ख़बर मिली तो दिल में झांका तो इसमें ख़ुशी नहीं थी। इसलिए मैंने कहा अलुहम्दुलिल्लाह।

हज़रत मिर्ज़ा मज़हर जानेजानाँ रह० का ज़ोहद व परहेज़गारी

हमारे सिलसिला नक़्शबंदिया के एक शैख़ मिर्ज़ा मज़हर जाने जानाँ रह० को वक़्त के गवर्नर ने पैग़ाम भेजा कि हज़रत! आप तश्रीफ़ लाइए। आपकी ख़ानकाह में दूर दराज़ से लोग फ़ायदा उठाने के लिए आते हैं। हमने फ़ैसला किया है कि आपके लिए ज़मीन का एक बड़ा टुकड़ा ख़ास कर दिया जाए। हज़रत रह० ने जवाब भिवाया कि अल्लाह तआला ने इस दुनिया को क़लील (थोड़ा) फ़रमाया। ﴿قل متاع الدنيا قليل﴾ आप कह दीजिए कि दुनिया की पूंजी थोड़ी है। जिस पूरी दुनिया को अल्लाह तआला ने क़लील कहा, उस क़लील में से थोड़े से हिस्से में आपको इख़्तियार है। इस थोड़े से हिस्से में से आप थोड़ा सा हिस्सा मुझे देना चाहते हैं तो इतना थोड़ा लेते हुए मुझे शर्म आती है।

नीमरोज़ की हुक्मुरानी मच्छर के पर से भी कमतर

एक बार हाकिमे वक़्त ने शेख़ अब्दुल क़ादिर जिलानी रह० के नाम एक पर्चा लिखा कि आप लोगों को अल्लाह! अल्लाह! सिखाते हैं और दूर दराज़ से आकर लोग आप से फ़ैज़याब होते हैं। इसलिए मैंने ख़ुश होकर आपको इलाक़ा नीमरोज़ का गवर्नर बना दिया है।

हज़रत ने उसी पर्चे की पीठ पर उसका ऐसा जवाब लिखकर वापस भेजा जो सोने की रोशनाई से लिखने के क़ाबिल है। फ़रमाया,

"जब से मुझे नीमशब (आधी रात) की हुक्मरानी मिली है तब से मेरी नज़रों में नीमरोज़ की हुक्मरानी मच्छर के पर के बराबर भी नहीं।"

हज़रत मौलाना क़ासिम साहब नानौतवी रह० का इस्तग़नाए क़ल्बी

इंसान जब इस्तग़ना के काम करता है तो दुनिया उसके पीछे भागती है। हज़रत मौलाना क़ासिम साहब रह० फ़रमाया करते थे कि जो आदमी मुझे मुहताज समझकर हदिया पेश करे, मेरा दिल उसका हदिया क़ुबूल करने को नहीं करता। अलबत्ता सुन्नत समझकर पेश करे तो उसे ज़रूरत क़ुबूल करूंगा। एक दफ़ा एक आदमी ने आकर आपको हदिया पेश किया। आपने महसूस किया कि यह तो एहसान चढ़ाकर हदिया दे रहा है। चुनाँचे आपने इंकार कर दिया मगर वह भी पीछे लगा रहा कि हज़रत! क़ुबूल कीजिए। हज़रत! क़ुबूल कीजिए। हज़रत ने दो चार दफ़ा बाद उसको सख़्ती से डांट दिया कि नहीं। मैं क़ुबूल नहीं करूंगा। जब उसने देखा कि चेहरे पर जलाल है तो पीछे हट गया। जब मस्जिद से बाहर निकलने लगा तो उसकी नज़र हज़रत के जूतों पर पड़ी। उसके दिल में ख़्याल आया कि हज़रत जब बाहर निकलेंगे तो जूते तो पहनेंगे ही सही। लिहाज़ा उसने वह पैसे हज़रत के जूतों में रख दिए। जब हज़रत मस्जिद से बाहर निकले और पाँव जूते में रखा तो उसमें पैसे थे। आपने देखा और मुस्कराकर फ़रमाया कि ये वही पैसे हैं जो आदमी हदिए में पेश कर रहा था। पहले सुना करते थे और आज आँखों से देख लिया कि जो इंसान दुनिया को ठोकर लगाता है दुनिया उसके जूतों में आया करती है।

हज़रत अक़्दस थानवी रह० की ख़ुद्दारी और क़नाअत

हज़रत अक़्दस थानवी रह० से एक नवाब साहब बैअत हो गए। बड़े माल पैसे वाले थे। उस दौर में जब उस्ताद की तंख़्वाह पाँच रुपए माहाना हुआ करती थी। उसने हज़रत को एक लाख रुपया भिजवाया। हज़रत ने उसके ख़त की तहरीर से महसूस किया कि यह तो एहसान जतलाकर पेश कर रहा है। हज़रत ने मनीआर्डर वापस कर दिया। जब मनीआर्डर वापस गया तो वह सटपटा गया। उसने फिर ख़त लिखा, कहने लगा, हज़रत! मैंने बैअत होकर आपको एक लाख रुपया हदिया पेश किया। आपको ऐसा मुरीद और कहीं नहीं मिलेगा। हज़रत ने ख़त पढ़ा और जवाब लिखा कि अगर तुझ जैसा मुरीद नहीं मिलेगा तो तुझे भी मुझ जैसा पीर नहीं मिलेगा जो तेरे एक लाख रुपए को ठोकर मार दे।

दुनिया से बेरग़बती और अहले दुनिया से एहतियात

ख़्वाजा अहमद सईद रह० हमारे सिलसिला नक़्शबंदिया के एक बुज़ुर्ग हैं। आप अबूसईद रह० के बेटे और शाह अब्दुलग़नी के भाई हैं। शाह अब्दुलग़नी रह० वह मुहद्दिस है जो हज़रत मौलाना क़ासिम रह० वग़ैरह के उस्ताद कहे जाते हैं जिनका फ़ैज़ आज दारुलउलूम देवबंद की वजह से पूरी दुनिया में फैल चुका है।

अंग्रेज़ी हुकूमत के दौर में ख़्वाजा अहमद सईद और शाह अब्दुल ग़नी रह० यहाँ से हिजरत करके हिजाज़ चले गए। कम व बेश सौ आदमियों का क़ाफ़िला था। वहाँ गए तो बहुत तंगी थी। तंगी की हालत बनी हुई थी, फ़ाक़े हो रहे थे। औरतें भी थीं, बच्चे भी थे। इस दौरान में शाहअब्दुल ग़नी रह० जो इल्म के आफ़ताब व महताब थे उनके दिल में ख़्याल आया कि क्यों न हम यहाँ के मुक़ामी लोगों से

राब्ता करें और उनको अपनी हालत बताएं ताकि बच्चों के लिए कुछ इंतिज़ाम हो सके। उन्होंने आकर भाई शाह अहमद सईद रह० से कहा कि मेरे दिल में इस तरह का ख़्याल आया है। हज़रत शाह अहमद सईद रह० ने अजीब जवाब दिया। फ़रमाया मेरी हालत ऐसी है कि जैसे एक रोज़ेदार ने रोज़ा रखा हुआ है और उसके इफ़्तार करने में कुछ मिनट बाक़ी हैं। क्या आप ऐसे आदमी को किसी वजह से रोज़ा तोड़ने का हुक्म देंगे? क्योंकि आलिम थे इसलिए इल्मी अंदाज़ में बात कही। वह कहने लगे कि अगर इतना थोड़ा सा वक़्त बाक़ी है तो रोज़ा पूरा करने का मशवरा दिया जाएगा। फ़रमाया, मेरा यही हाल है कि इस दुनिया का रोज़ेदार हूँ। अब इफ़्तार का वक़्त क़रीब है और मैं अब दुनिया का रोज़ा तोड़ना नहीं चाहता।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 3/168)

हारून रशीद के लड़के का ज़ोहद व मुजाहिदा

हारून रशीद का एक बेटा था। वह इब्तिदाई जवानी से ही बड़ा नेकोकार था और परहेज़गार था। उसके दिल में आख़िरत की तैयारी का ग़म लग गया था। वह महल में रहते हुए भी सादा कपड़े पहनता और दस्तरख़्वान पर सूखी रोटी भिगोकर खा लेता था। उसको दुनिया की रंगीनियों से कोई वास्ता नहीं था। गोया वह एक दरवेश था। अब लोग बातें बनाते कि यह पागल हो गया है। एक दिन बादशाह को कुछ लोगों ने बहुत ही गुस्सा दिलाया कि आप इसका ख़्याल नहीं करते और उसको समझाते नहीं। लिहाज़ा आप इस पर ज़रा सख़्ती करें, सीधा हो जाएगा। उसने बच्चे को बुलाकर कहा कि तुम्हारी वजह से मुझे अपने दोस्तों में ज़िल्लत उठानी पड़ती है। उसने कहा अब्बा जान! अगर मेरी वजह से आपको ज़िल्लत उठानी पड़ती है तो मुझे आप इजाज़त दीजिए। मैं इल्म हासिल करने के लिए पहले भी

कहीं जाना चाह रहा था। अगर आप इजाज़त दें तो मैं वहाँ चला जाता हूँ। बादशाह ने गुस्से में आकर कह दिया कि चले जाओ। उसने तैयारी कर ली। अब बादशाह ने अपनी बीवी को बताया लेकिन उस वक़्त पानी सर से ऊपर गुज़र चुका था। बच्चे ने कहा कि अब तो मैं नीयत कर चुका हूँ। लिहाज़ा अब मैं नहीं रुकूंगा।जब उसकी माँ ने उसका पक्का इरादा देखा तो उसने उसे एक क़ुरआन मजीद दे दिया और एक अंगूठी दे दी और कहा, बेटा! ये दो चीज़ें अपने पास रखना। क़ुरआन मजीद की तिलावत करना और अगर तुम्हें कहीं ज़रूरत पड़े तो अंगूठी को इस्तेमाल में ले आना। बच्चे ने वे दोनों चीज़ें अपनी माँ से ले लीं और रुख़्सत हो गया। वह नौजवान इतना ख़ूबसूरत था कि लोग उसके चेहरे को देखा करते थे। उसके सामने दुनिया की सब नेमतें मौजूद थीं। अगर वह चाहता तो अय्याशी में अपना वक़्त गुज़ारता। अगर वह चाहता तो महलों की सहूलत भरी ज़िंदगी गुज़ारता। मगर नहीं। उसके दिल में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मुहब्बत थी। उसके दिल में आख़िरत का ख़ौफ़ था। उसके दिल में इल्म की तलब का शौक़ था। उसने कहा मुझे इस दुनिया की ज़िंदगी की लज़्ज़तें नहीं लेनी। मुझे तो हमेशा की लज़्ज़तें हासिल करनी हैं। लिहाज़ा वह अपने महल को छोड़कर चल पड़ा।

यूँ वक़्त के शहज़ादों ने इल्म को तलब करने के लिए महलों की ज़िंदगी को भी लात मार दी। अब अगर तलबा में से कोई किसी अमीर बाप का बेटा हो तो वह भी इस बात पर ग़ुरूर न करे कि मैं इतने बड़े घर को छोड़कर आया हूँ। अरे इस रास्ते पर तो वक़्त के शहज़ादे भी चटाइयों पर बैठे नज़र आते हैं।

منت منہ کہ خدمت سلطانی ہمیں کنی ۔ منت شناس ازو کہ بخدمت گزاشتت

ऐ दोस्त! तू बादशाह पर एहसान न जतला कि तू उसकी

ख़िदमत करता है। उसकी ख़िदमत करने वाले लाखों हैं। यह बादशाह का तुझ पर एहसान है कि उसने तुझे ख़िदमत के लिए क़ुबूल कर लिया।

ख़्वाब में हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत करने वालों के लिए दरूद शरीफ़

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عِتْرَتِهٖ بِعَدَدِ كُلِّ مَعْلُوْمٍ لَّكَ

अल्लाहुम्मा सल्लि अला मुहम्मदिवं व इतरतिहि बि अददि कुल्लि मअलूमिल्लका।

ख़ुदाई रिज़्क़
और
जूद व सख़ा
(ख़र्च करना)

ख़ुदाई रिज़्क़ और जूद व सख़ा

एक चींटी का सालाना रिज़्क़ किस क़द्र

हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम एक दफ़ा कहीं जा रहे थे। एक चींटी ने दूसरी चींटी से कहा ﴿يا ايها النمل ادخلوا مساكنكم﴾ ऐ चींटियो! अपने बिलों में दाख़िल हो जाओ। सुलेमान अलैहिस्सलाम का लश्कर आ रहा है। कहीं तुम्हें पाँव में मसल न दे। ﴿فتبسم ضاحكا من قولها﴾ सुलेमान अलैहिस्सलाम ने उसकी बात सुनी तो मुस्कराए। उसको बुलाया और पूछा, ऐ चींटी! तेरी ख़ुराक कितनी होती है? उसने कहा कि एक साल में पानी के कुछ क़तरे और गेहूँ के कुछ दाने। सुलेमान अलैहिस्सलाम ने कहा, अच्छा मैं तुम्हारा इम्तिहान लेता हूँ। चुनाँचे आपने उसे एक जगह बंद कर दिया और गेहूँ के कुछ दाने और कुछ बूंदे पानी की रख दीं। साल भर के बाद जब निकाला तो देखा कि चींटी ने जितना कहा था उससे भी थोड़ा खाया था। हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम यह देखकर बहुत ख़ुश हुए और फ़रमाया, ऐ चींटी! तू मुझसे मांग जो कुछ मांग सकती है। उनकी सलतनत इंसानों पर थी, हैवानों पर थी, चरिन्दों पर थी, परिन्दों पर थी, जिन्नों पर थी, ख़ुश्की की मख़्लूक़ पर थी, तरी की मख़्लूक़ पर थी। क्या अजीब सलतनत थी। चींटी ने जवाब दिया कि ऐ सुलेमान अगर आप दे सकते हैं ﴿زدني رزقا وعمرا﴾ आप मेरा रिज़्क़ बढ़ा दें और मेरी उम्र बढ़ा दें। सुलेमान अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, यह तो मेरे बस में नहीं। यह तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हाथ में है। वही चाहता है तो रिज़्क़ भी बढ़ा देता है और उम्र भी बढ़ा देता है।

रिज़्के हलाल के अनवारात

हज़रत मौलाना असग़र हुसैन कांधलवी रह० के मामू शाह हुसैन अहमद मुन्ने शाह के नाम से मशहूर थे। देखने में उनका क़द छोटा था। लेकिन अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हाँ उनका क़द बहुत बड़ा था। उनकी ज़िंदगी माली लिहाज़ से बहुत मामूली सी थी। वह घास काटकर बेचा करते थे। और रोज़ाना थोड़े-थोड़े से पैसे बचाते रहते। यहाँ तक कि पूरे साल में इतने पैसे बच जाते कि वह एक बार दारुलउलूम के उस्तादों की दावत करते थे। उस्ताद लोग फ़रमाते थे कि हम सारा साल उनकी दावत के मुन्तज़िर रहते क्योंकि हम जिस दिन उनके घर से खाना खा लेते थे उसके बाद चालीस दिन तक हमारी नमाज़ की हुज़ूरी में इज़ाफ़ा हो जाता था। सुब्हानअल्लाह इतना हलाल व पाकीज़ा माल था।

आबिद के यक़ीं से रोशन है सादात का सच्चा साफ़ अमल
आँखों ने कहाँ देखा होगा इख़्लास का ऐसा ताजमहल

इमाम बुख़ारी रह० का सात बादाम पर गुज़र बसर

इमाम बुख़ारी रह० ने ऐसी ज़हानत पाई थी कि आपको लाखों हदीसें ज़बानी याद थीं। एक बार उनसे पूछा गया कि आप दिन में कितना खाना खाते हैं? तो फ़रमाने लगे कि मैं आजकल सात बादाम खाकर अपने काम में लग जाता हूँ और मेरा पूरा दिन इसी पर गुज़र जाता है। अल्लाहु अकबर जितने लोगों का क्यू लेवल अच्छा होता है ये सब वे लोग होते हैं जिनके अंदर चर्बी थोड़ी होती है और उनके जिस्म बहुत अच्छे होते हैं।

बंद पत्थर में रोज़ी का इंतिज़ाम

हमारे एक दोस्त सैर के लिए सूरत तशरीफ़ ले गए। बीवी बच्चे

भी साथ थे। एक पहाड़ पर उन्होंने एक ख़ूबसूरत और गोल शक्ल का चमकदार पत्थर देखा। उन्होंने उठाकर देखा तो बहुत साफ़ और मुलायम था। रंग भी बहुत ख़ूबसूरत था। बच्चों ने ज़िद की कि वह पत्थर घर ले चलें। वालिद ने भी सोचा कि चलो डेकोरेशन के काम आएगा। सफ़र की यादगार सही, ले ही चलते हैं। लिहाज़ा उन्होंने वह पत्थर लाकर घर में सजा दिया। दो साल बाद वही साहब एक दिन उस पत्थर को अपने हाथ में लेकर कहने लगे, या अल्लाह! तूने यह कैसा ख़ूबसूरत पत्थर बना दिया है। इसी दौरान में वह पत्थर हाथ से छूट गया। नीचे फ़र्श पर गिरते ही टूट गया। एक लम्हे के लिए उन्हें अफ़सोस तो हुआ मगर साथ ही देखकर हैरानी हुई कि पत्थर के ठीक बीच में एक सुराख़ था जिसमें से एक कीड़ा निकला और चलने लगा। अब बताएं बंद पत्थरों में कीड़ों को कौन रोज़ी देता है? यक़ीनन अल्लाह तआला देता है। बस सब तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो तमाम जहानों का परवरदिगार है।

रिज़्के हलाल के चाहने वाले वकील की सबक़ देनी वाली दास्तान

अब मैं आपको एक ऐसा वाक़िआ सुनाता हूँ जिससे सारी बात आसानी से समझ में आ जाएगी। हमारे एक दोस्त वकालत का काम करते थे। वकालत एक ऐसा पेशा है कि जहाँ पर दुनिया भर के झूठ बोलने पड़ते हैं। एक शायर ने तो यहाँ तक कह दिया था—

पैदा हुआ वकील तो शैतान ने कहा
लो आज हम भी साहिबे औलाद हो गए

मगर यक़ीन कीजिए उन्होंने वकालत का काम भी जारी रखा और

अपनी ज़िंदगी का रुख़ भी बदल लिया। उनकी बीवी लेडी डाक्टर थी। जब वकील साहब का अल्लाह वालों से ताल्लुक हुआ तो अल्लाह ने दिल की हालत बदल दी। कहने लगे मुझे आज के बाद झूठ नहीं बोलना। मेरा अल्लाह मुझे सच बोलने पर रोज़ी देगा। लोगों ने कहा, आपका दिमाग़ ठीक तो है? सच बोलने से वकालत नहीं चलेगी। उन्होंने कहा चलेगी या नहीं चलेगी मगर सच ज़रूर चलेगा। अब तो मैंने दिल में फ़ैसला कर लिया है। वकील साहब एक दिन दफ़्तर आए और कहने लगे, मुझे आज सिर्फ़ वे मुक़दमे लेने हैं जो सच्चे होंगे। लोगों से कह दिया कि अगर आप झूठे हैं तो मुझे अभी बता दें अगर सुनवाई के दौरान मुझे पता चल गया तो मैं आपकी मुख़ालिफ़त करूंगा। अगर सच होगा तो डटकर हिमायत करूंगा। लोगों ने कहा, अल्लाह की पनाह। लिहाज़ा सब के सब दूसरे वकीलों के पास चले गए। वकील साहब का दफ़्तर ख़ाली। सारा दिन कोई काम नहीं। इसी हालत में कई महीने गुज़र गए। लोगों में चर्चा होने लग गया। किसी ने मजनू कहा, किसी ने पागल कहा, किसी ने बेवक़ूफ़ कहा, किसी ने कहा कि मौलवियों ने इसकी मत मार दी है। अच्छा ख़ासा वकील था, उन्होंने बिगाड़कर रख दिया।

वह अल्लाह का बंदा पक्का और सच्चा था। कहता था कि मुझे झूठ बोलकर रोज़ी नहीं लेनी। अल्लाह की ज़ात मुझे सच बोलने पर ही रोज़ी देगी। एक साल गुज़र गया मगर कोई काम न आया। बीवी क्योंकि लेडी डाक्टर थी उसकी तंख़्वाह से घर का ख़र्चा चलता रहा। बीवी बहुत समझदार थी। एक दिन वकील साहब से कहने लगी, जब झूठ बोलना छोड़ चुके हैं तो आप वकालत छोड़ दें और तिजारत का पेशा अपना लें। आप सच ही बोलें। अल्लाह उसी में बरकत देगा। वकील साहब कहा नहीं, बोलना भी सच है और करनी भी वकालत है। बीवी ने कहा, अच्छी बात है। मेरी दुआएं और मेरा तआवुन

आपके साथ है। अल्लाह तआला आपको कामयाब फ़रमाए। वकील साहब एक साल तक घर से दफ़्तर आते और सारा दिन पंखे के नीचे बैठकर अख़बार पढ़ते और घर वापस चले जाते। एक दफ़ा जजों के सामने चर्चा आ गया कि फ़लां वकील झूठे मुक़दमे नहीं लेता। तंगी बर्दाश्त कर रहा है और कहता है कि मर जाऊँगा मगर सच को नहीं छोड़ सकता। सब जज साहिबान इस बात से बहुत मुतास्सिर हुए। वक़्त के साथ-साथ उनकी इज़्ज़त लोगों के दिलों में पैदा होना शुरू हो गई। वह कहने लगे कि एक साल इम्तिहान का था।

दूसरा साल शुरू हुआ तो तबलीग़ी जमाअत वाले, तसव्वुफ़ वाले, मदरसों वाले लोगों ने सोचा कि फ़लां वकील सच्चे मुक़दमे लेता है। हमारे मुक़दमे सच्चे हैं। पैसा हमारे पल्ले नहीं। थोड़ा बहुत दे देंगे। उनका भी गुज़ारा हो जाएगा। लिहाज़ा वे आने शुरू हो गए। जो भी आता सच्चा मुक़दमा लेकर आता। वकील साहब मुक़दमा लेकर अदालत में जाते और उनके हक़ में फ़ैसला हो जाता। तीसरा मुक़दमा आया। उनके हक़ में फ़ैसला हुआ। कुछ दिन गुज़रे तो जज साहिबान आपस में मिले और कहने लगे कि यह वकील जो भी मुक़दमे लाता है वे सच्चे होते हैं। इसलिए अब इससे ज़्यादा सवाल ही न किया करो। चुनाँचे वकील साहब मुक़दमा लेकर जाते तो कुछ ही मिनटों के अंदर-अंदर उनके हक़ में फ़ैसला हो जाता। बड़े-बड़े अमीरों ने सोचा कि हमारे मुक़दमे सच्चे ही हैं तो फिर क्यों न हम मुक़दमा इसको दें। जब वह आना शुरू हुए तो पैसे भी ज़्यादा मिलने लगे। जब वकील साहब झूठ बोलते थे तो एक महीने के बीस हज़ार रुपया कमाते थे और जब सच बोलना शुरू किया तो एक माह में चालीस हज़ार रुपया कमाने लगे।

सच बोलने पर अल्लाह ने दुगना रिज़्क़ कर दिया। अभी कुछ दिन पहले की बात है कि कुछ वकीलों का जज बनने का इम्तिहान

हुआ तो हमारे इस वकील दोस्त को कामयाबी हुई और वह जज बन गए। एक वक़्त था कि वही आदमी वकील की जगह खड़े होकर झूठ बोलता था। जब सच बोलना शुरू किया तो अल्लाह ने उसको अदालत की कुर्सी पर बिठा दिया। पहले वह खड़ा हुआ सर, सर कर रहा होता था। अब अल्लाह ने अदालत की कुर्सी पर बिठा दिया। अब वहाँ बैठकर हुक्मनामे जारी करता है।

मेरे दोस्तो! यह बात साबित हो गई है कि जो सच बोलेगा अल्लाह उसे फ़र्श से उठाकर अर्श पर बिठा देगा। मेरे दोस्तो! यक़ीन बनाने की ज़रूरत है। अगर अल्लाह तआला पर तवक्कुल नसीब हो जाए तो न ज़मीनों के झगड़े बाक़ी रहेंगे न दफ़्तरों में रिश्वत रहेगी। न दुकानों में मिलावट रहेगी। न झूठ बोलकर कमाना रहेगा। न धोके से कमाना रहेगा। ये चीज़ें तो अपने आप ख़त्म हो जाएंगी।

मेरे दोस्तो! हम तमाम चीज़ों से अपनी निगाहों को हटाकर एक अल्लाह की ज़ात पर लगा लें। आज माँ से पूछें कि तुम्हारा बेटा क्या बनेगा? कहती है जी डाक्टर बनेगा, इंजीनियर बनेगा, पाइलेट बनेगा। है कोई माँ जो यह कहे कि मेरा बेटा मुफ़स्सिर बनेगा, मुहद्दिस बनेगा, मेरा बेटा मुजाहिद बनेगा। मैं आपसे सवाल करता हूँ, कान खोलकर सुनना। फिर न कहना कि किसी ने कोई बात समझाई नहीं थी। मिम्बरे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर बैठा हूँ, अल्लाह की किताब मेरे हाथ में है। अल्लाह के घर में बैठा हूँ। मुझे एक बात बताएं। आप ने कभी देखा कि कोई आदमी जो आलिम बाअमल हो और वह भूखा प्यासा एड़ियाँ रगड़-रगड़ कर मर रहा हो? जबकि कई पीएचडी करने वाले, इंजीनियरिंग करने वाले, कई ऐसे जिनको भूखे, प्यासे एड़ियाँ रगड़-रगड़ कर मरते देखा गया है। हमारा बेटा आलिम बनेगा। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त वहाँ से रिज़्क़ देंगे जहाँ से अंबिया किराम अलैहिमुस्सलाम को रिज़्क़ दिया करते थे। ﴿ومن يتوكل على الله﴾

ومن يتوكل على الله فهو حسبه जो अल्लाह पर तवक्कुल करता है तो अल्लाह उसके लिए काफ़ी हो जाता है।

मछलियाँ साइज़ में कार के बराबर

आप देखिए बाहर मुल्कों जाने वाला हवाई जहाज़ कितना बड़ा होता है कि उसमें पाँच-छः सौ मुसाफ़िर आ जाते हैं। फिर वह इतना ऊँचा उड़ रहा होता है कि जब हम उसे देखते हैं तो एक परिन्दे की तरह नज़र आता है। मैंने एक दफ़ा पैरिस से उड़ान की। किसी दूसरे मुल्क जाना था। रास्ते में समुन्दर पड़ता था। मैंने जहाज़ में बैठे हुए नीचे समुन्दर को देखा तो मुझे मछलियाँ टोयटा क्रोला कार के बराबर नज़र आयीं यानी मैं जहाज़ में बैठा हूँ और मुझे समुन्दर में तैरती हुई मछलियाँ टयोटा क्रोला कार के बराबर नज़र आती हैं। तो मैं हैरान हुआ कि ज़मीन से अगर हवाई जहाज़ को देखता हूँ तो परिन्दे के बराबर नज़र आता है। तो यह कितनी बड़ी मछलियाँ होंगी जो जहाज़ में बैठे हुए कार के नराबर नज़र आ रही हैं। वाक़ई व्हेल मछली और शार्क मछली बहुत बड़ी होती है। अब सोचिए कि सुलेमान अलैहिस्सलाम के जिन्नों ने उस मछली को सारी ख़ुराक डाल दी तो भी उस मछली का मुँह खुला रहा। सुलेमान अलैहिस्सलाम हैरान हुए कि या अल्लाह वह सारा खाना ख़त्म हो गया। मछली से पूछो! तूने इतना खाया। वह कहने लगी मैं उस पाक परवरदिगार की तारीफ़ करती हूँ, ऐ अल्लाह के प्यारे नबी जितना लुक़्मा आपने मुझे खिलाया अल्लाह तआला इस से तीन गुना बड़ा लुक़्मा रोज़ाना खिलाया करते हैं, अल्लाहुअकबर।

क़ुरआन व हदीस में तिब्ब के रहनुमा उसूल

हारून रशीद का ज़माना था। बादशाह के पास एक ईसाई पादरी

आया जो बड़ा अच्छा हकीम भी था। उसने बादशाह से कहा कि मैं आपसे एक बात करना चाहता हूँ। उसे मौक़ा दिया गया। उसने कहा कि मैं दीन का इल्म भी रखता हूँ और हिकमत का इल्म भी जानता हूँ। आपसे मैं यह पूछता हूँ कि आप जो यह कहते हैं कि क़ुरआन मजीद में ज़िंदगी के तमाम उसूल मौजूद हैं। क्या क़ुरआन मजीद में इंसान की सेहत के बारे में कोई उसूल बताया गया है? हारून रशीद ने अपने पास मौजूद उलमा से कहा कि आप इसके सवाल का जवाब दें। एक आलिम अली बिन हुसैन खड़े हुए और उन्होंने फ़रमाया, जी हमें क़ुरआन मजीद में जिस्मानी सेहत के बारे में एक सुनहरा उसूल बताया गया है। पूछा गया वह सुनहरी उसूल क्या है? उन्होंने फ़रमाया कि क़ुरआन पाक में अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया,

﴿كلو واشربوا ولا تسرفوا (الاعراف-٣١)﴾

तुम खाओ पियो मगर इसराफ़ (फ़ुज़ूलख़र्ची) न करो यानी ओवर ईटिंग (बसियारख़ोरी) न करो बल्कि जितनी ज़रूरत हो उतना खाइए और फिर अल्लाह के गीत गाइए। यह जो ओवर ईटिंग (ज़्यादा खाने) से मना किया गया है यह एक ऐसा बेहतरीन उसूल है कि अगर इंसान इस पर अमल करे तो उसकी ज़िंदगी में बीमारियाँ आने की उम्मीद बहुत कम हो जाती है।

वह हकीम यह सुनकर कहने लगा कि मैं हकीम हूँ और मैं यह तसीलम करता हूँ कि यह एक बेहतरीन उसूल है। उसने फिर कहा, क्या तुम्हारे नबी अलैहिस्सलाम ने भी रूहानी तालीमात के साथ-साथ जिस्मानी सेहत के बारे में भी कोई उसूल बताया है कि आदमी अपने जिस्म का ख़्याल कैसे रख सकता है? वह आलिम कहने लगे जी हाँ। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें जिस्मानी सेहत के बारे में भी बड़ा अनमोल उसूल बता दिया है। उन्होंने हदीसे पाक बयान की जिसका उर्दू तर्जुमा यह है :

मैदा तमाम बीमारियों की बुनियाद है। तुम जिस्म को वह दो जिसकी इसको ज़रूरत है। और परहेज़ इलाज से बेहतर है।

जब ईसाई हकीम ने अली बिन हुसैन की ज़बान से क़ुरआन व हदीस में मौजूदा तिब के यह रहनुमा उसूल सुने तो वह कहने लगा तुम्हारी किताब और तुम्हारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जालीनूस के लिए कोई तिब नहीं छोड़ी, अल्लाहु अकबर।

इलाज से अगर चपाती खा सकूं तो एक करोड़ का ईनाम

अख़बार में एक दफ़ा पढ़ा कि फलां-फलां मुल्क का आदमी है जो करोड़पति है। उसने अख़बार में इश्तेहार दिया है कि अगर कोई डॉक्टर मेरा इलाज कर दे यहाँ तक कि मैं एक चपाती खाने के क़ाबिल हो जाऊँ तो मैं उसको इतने-इतने करोड़ रुपया ईनाम दूंगा। करोड़ों रुपया ख़र्च करने को तैयार है लेकिन सेहत साथ नहीं देती कि एक दिन में एक रोटी खाने के क़ाबिल हो। अल्लाह तआला ने हमें सेहत दी है कि हम अपनी ज़रूरत के मुताबिक़ खाते पीते हैं। यह अल्लाह की कितनी बड़ी नेमत है। हम सोचें कि क्या हम ने उसकी बंदगी का हक़ अदा किया या नहीं किया।

ज़्यादा खाने के वाक़िआत

1974 ई० में मुफ़्ती महमूद रह० ने ज़ुलफ़क़ार अली भुट्टो के दौर में जेल भरो तहरीक चलाई थी। जिसके नतीजे में हुकूमत ने मिर्ज़ाइयों को काफ़िर क़रार दिया था। लोग ख़ुद गिरफ़्तारियाँ पेश करते थे। मस्जिदों में बरेलवियों, देवबन्दियों, अहले हदीस औ शिया हज़रात इकट्ठे हो जाते थे। सब उलमा ख़त्मे नबुव्वत के उनवान पर

तक़रीरें करते थे। तक़रीरें करने के बाद पंद्रह बीस नौजवान जो गिरफ़्तारियाँ पेश करने के लिए तैयार हो जाते थे। वह गले में फूलों के हार डाल लेते, जुलूस निकाला जाता और वह नौजवान जुलूस के आगे आगे होते और ख़ूब नारे लगते थे और पुलिस उस जुलूस के आगे-आगे चल रही होती थी। जहाँ जुलूस ख़त्म होता वहाँ पुलिस हार पहनने वाले लोगों को गाड़ी में बिठाकर जेल ले जाती थी और बाक़ी लोग घरों को चले जाते थे। यह रोज़ का मामूल था।

ये लोग अख़्लाक़ी मुजरिम तो थे नहीं। ये तो शरीफ़ लोग थे। इन में जहाँ उलमा, हाफ़िज़ और क़ारी हज़रात होते थे वहाँ दुनिया के पढ़े लिखे नवजवान भी ख़त्मे नबुव्वत के जज़्बे में डूबे हुए गिरफ़्तारियाँ पेश करते थे। यह बात पुलिस भी जानती थी। इसलिए वह इनके साथ बदतमीज़ी नहीं करती थी। वह इनको गाड़ियों में बिठाकर ले जाती और उनको जेल में ले जाकर छोड़ देती थी। बस फ़र्क़ इतना था कि वह बाहर की बजाए जेल के गेट के अंदर होते थे। जेल के अंदर मस्जिद बनी हुई थी। वे मस्जिद में नमाज़ भी पढ़ते और इधर-उधर घूमते फिरते थे।

इसी दौरान हमारे हज़रत मुर्शिदि आलम रह० के बड़े बेटे हज़रत मौलाना अब्दुर्रहमान क़ासमी रह० के दिल में ख़्याल आया कि मैं भी गिरफ़्तारी पेश करूं। हज़रत साहबज़ादे साहब बहुत ही दिलेर और जीदार बंदे थे। अल्लाह ऐसा नेक बेटा हर एक को दे। एक दिन हज़रत ने भी गिरफ़्तारी पेश कर दी। पुलिस ने उनको जेल में पहुँचा दिया। गिरफ़्तारियाँ पेश करने वाले जो नुमायां और ख़ास बंदे होते थे उनको पुलिस उसी शहर में नहीं रखती थी बल्कि उन्हें किसी दूसरे शहर में भेज देती थी। लिहाज़ा पुलिस ने उन्हें चकवाल जेल में रखने के बजाए झेलम भेज दिया। उस वक़्त वह ज़िले का सदर मुक़ाम था।

अल्लाह तआला की शान कि रावलपिंडी से एक और बुज़ुर्ग

हज़रत मौलाना गुलामुल्लाह ख़ाँ रह० भी गिरफ़्तार होकर झेलम आए हुए थे। वह शैखुल कुरआन के नाम से मशहूर थे। जेल सुपरिन्टेंडन्ट ने सोचा कि मौलाना साहब आलिम हैं और इनके हज़ारों शागिर्द हैं और साहबज़ादे साहब पीर के बेटे हैं और उनके भी हज़ारें मुरीद हैं। इसलिए इन दोनों को एक ही कमरे में रखना चाहिए। लिहाज़ा उसने इन दोनों हज़रात के लिए एक कमरा ख़ास कर दिया।

दिन में सैंकड़ों की तादाद में लोग उनकी मुलाकात के लिए रोज़ाना पहुँचे होते थे। मज़े की बात यह कि जो भी मुलाकात के लिए आता तो कोई मिठाई का डिब्बा लाता, कोई बिस्कुट लाता और कोई खाने की और कोई चीज़ लाता। इन दोनों के पास खाने पीने की चीज़ों का ढेर लग जाता था। उन्होंने प्रोग्राम बनाया कि यहाँ इतने लोग आए हुए हैं। अगर हम रोज़ाना चाय बना लिया करें तो और यह मिठाई और बिस्कुट वगैर से उनको नाश्ता करवा दिया करें तो रोज़ाना निकलता भी रहेगा और मेहमान नवाज़ी भी होती रहेगी। इस तरह रोज़ाना का मामूल बन गया।

हज़रत कासिम साहब रह० ने फ़रमाया, एक दिन हम आकर बैठे तो बातचीत की कि हम ने कल के लिए फलां बंदे को भी दावत दी है और फलां को भी, चकवाल का एक आदमी था। उसका नाम मौलाबख़्श था। वह भी ख़त्मे नबुव्वत के शौक में जेल आया हुआ था। मौलाना गुलामुल्लाह ख़ाँ ने फ़रमाया कि मैंने मौलाबख़्श को भी दावत दी है। हज़रत कसमी साहब रह० ने फ़रमाया कि जब मैंने सुना कि मौलाबख़्श को भी दावत दे दी है तो मैं बहुत ही परेशान हुआ। मौलाना साहब ने फ़रमाया, तुझे क्या हुआ। मैंने कहा, आपने सचमुच मौलाबख़्श को दावत दी है? फ़रमाया कि हाँ, मैंने उसको भी दावत दे दी है। मैंने कहा फिर तो दूसरों के लिए खाना कम पड़ जाएगा।

उन्होंने फ़रमाया, हम फ़ज्र की नमाज़ पढ़कर मौलाबख़्श को बुला लेंगे और सब कुछ उसके सामने रख देंगे। वह जितना चाहेगा खालेगा और जो बचेगा, उसके हिसाब से और मेहमानों को बुला लेंगे। मैंने कहा कि हाँ यह राय ठीक है।

हज़रत क़ासमी रह० फ़रमाते हैं कि जब मैंने हिसाब लगाया तो मेरे पास दस किलो मिठाई पड़ी थी। मैंने दिल में सोचा कि अगर कोई एक पाव मिठाई मुश्किल से खाई जाती है। फ़रमाते हैं कि हमारे पास फ़ौजियों वाले बड़े-बड़े मग थे जिनमें तीन कप चाय आ सकती थी। मैंने पानी के चालीस मग डाले और ऊपर से दूध डाला और चाय बनाई। अंदाज़ा था कि हर आदमी एक मग चाय पिएगा और एक पाव मिठाई खाएगा। फ़रमाते हैं कि मैंने तहज्जुद के बाद इंतिज़ाम कर दिया था और उसके बाद नमाज़ पढ़ने चला गया।

नमाज़ फ़ज्र के बाद दर्से क़ुरआन हुआ और दर्से क़ुरआन के बाद मौलाबख़्श आ गया। हमने उसको दस्तरख़्वान पर बिठाया। कहते हैं कि हम उसके सामने मिठाई का एक-एक डिब्बा खोलकर दस्तरख़्वान पर रखते रहे और फ़ौजियों वाला मग भी चाय से भर-भर कर देते रहे। वे बातें भी करता रहा और इधर से मिठाई खाता रहा और चाय भी पीता रहा। हज़रत क़ासमी रह० साहब फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला की शान देखो कि अल्लाह के उस बंदे ने दस किलो मिठाई खाई और चालीस मग चाय पी।

जब उसने सब कुछ खा पी लिया तो फिर उसने इधर उधर देखा। वह इधर-उधर इसलिए देख रहे रहा था कि सब कुछ ख़ैर-ख़ैरियत से सिमट गया है या नहीं। जब उसको यक़ीन हो गया कि यहाँ सब कुछ सिमट गया है तो वह मौलाना साहब से कहने लगा, अच्छा! मौलाना अब आप मुझे इजाज़त दीजिए मैं अब यहाँ से जाता हूँ। हज़रत ने फ़रमाया, भई! आप बैठें और हमारे साथ बातें करें। वह कहने लगा,

नहीं हज़रत! अब आप इजाज़त दें। जब उसने वापसी की ज़िद की तो मौलाना गुलामुल्लाह ख़ाँ साहब समझे कि अब इसके पेट में मरोड़ हो रहा है। इसलिए अब यह भागना चाहता है। चुनाँचे मौलाना साहब ने उसे कहा, भाई! तुम्हें क्या जल्दी है। इतना जल्द क्यों जाना चाहते हो? वह कहने लगा,

"मौलाना असल वजह यह है कि मेरा नाश्ता चौधरी ज़हूर इलाही की तरफ़ है।" एक दफ़ा वह हमारे हज़रत मुर्शिदे आलम रह० के सामने आया तो हज़रत ने उसके डांटते हुए कहा,

"ओ मौलाबख़्शा! रोट्टी ताँ नई खान्दा, रोट्टी ताँ पई खांदी ऐ।"

ऐ मौलाबख़्श! तू रोटी नहीं खा रहा है बल्कि रोटी तुझे खा रही है। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 11/176-179)

मेहमान से पहले रिज़्क़ व बरकत की आमद

इसी शहर में हकीम अंसारी साहब थे। वह वफ़ात पा चुके हैं। हम स्कूल जाया करते थे तो रास्ते में उनकी दुकान आया करती थी। उस वक़्त उनके बाल सफ़ेद थे। उनका ताल्लुक़ भी मिस्कीन पूर शरीफ़ में सिलसिला नक़्शबंदिया से ही था। जब हमारा भी इस सिलसिले के साथ ग़ुलामी का ताल्लुक हुआ तो हम भी उनसे दुआएं लेने के लिए अक़ीदत व एहतिराम के साथ उनके पास जाते थे।

उन्होंने एक वाक़िआ सुनाया और फ़रमाया कि मैं इस वाक़िए का चश्मदीद गवाह हूँ। वाक़िआ यूँ है कि इस शहर से कुछ फ़ासले पर एक गाँव में एक साहब की अपनी बीवी से कुछ अनबन हो गई। अभी झगड़ा ख़त्म नहीं हुआ था कि उसी बीच उनका मेहमान आ गया। ख़ाविन्द ने उसे बैठक में बिठा दिया और बीवी से कहा फ़लाँ रिश्तेदार मेहमान आया है। उसके लिए खाना बनाओ। वह गुस्से में

थी, कहने लगी तुम्हारे लिए खाना है न तुम्हारे मेहमान के लिए। वह बड़ा परेशान हुआ कि लड़ाई तो हमारी अपनी है अगर रिश्तेदार को पता चल गया तो बिला वजह की बातें होंगी। लिहाज़ा ख़ामोशी से आकर मेहमान के पास बैठ गया।

इतने में ख़्याल आया कि चलो बीवी अगर रोटी नहीं पकाती तो सामने वाले हमारे पड़ौसी बहुत अच्छे हैं, ख़ानदान वाली बात है। मैं उन्हें एक मेहमान का खाना पकाने के लिए कह देता हूँ। वह उनके पास गया और कहने लगा कि मेरी बीवी की तबियत ख़राब है (अब यह कैसा कहता कि नीयत ख़राब है) लिहाज़ा आप हमारे मेहमान के लिए खाना बना दीजिए। उन्होंने कहा, बहुत अच्छा, जितने आदमियों का कहें खाना बना देते हैं। वह मुतमइन होकर मेहमान के पास आकर बैठ गया कि मेहमान को कम से कम खाना तो मिल जाएगा जिससे इज़्ज़त बच जाएगी।

थोड़ी देर के बाद मेहमान ने कहा, ज़रा ठंडा पानी तो पिला दीजिए। वह उठा कि घड़े का ठंडा पानी लाता हूँ। अंदर गया तो देखा कि बीवी साहिबा तो ज़ार व क़तार रो रही थी। वह बड़ा हैरान हुआ कि यह शेरनी और आंसू। कहने लगा, क्या बात है? उसने पहले से ज़्यादा रोना शुरू कर दिया। कहने लगी, बस मुझे माफ़ कर दें। वह समझ गया कि कोई वजह ज़रूर बनी है। उस बेचारे ने दिल में सोचा होगा कि मेरे भी नसीब जाग गए हैं। कहने लगा कि बताओ तो सही क्यों रो रही हो? उसने कहा कि पहले आप मुझे माफ़ कर दें फिर मैं आपको बात सुनाऊँगी। ख़ैर उसने कह दिया कि जो लड़ाई झगड़ा हुआ मैंने वह दिल से निकाल दिया है और आपको माफ़ कर दिया है। कहने लगी जब आपने आकर मेहमान के बारे में बताया और मैंने कह दिया कि न तुम्हारे लिए कुछ पकेगा और न मेहमान के लिए। छुट्टी करो तो आप चले गए मगर मैंने दिल में सोचा कि

लड़ाई तो मेरी और आपकी है और यह मेहमान रिश्तेदार है। हमें इसके सामने तो पोल नहीं खोलना चाहिए। लिहाज़ा मैं उठी कि खाना बनाती हूँ। जब मैं किचन में गई तो मैंने देखा कि जिस बोरी में हमारा आटा पड़ा होता है एक सफ़ेद बालों वाला आदमी उस बोरी में से कुछ आटा निकाल रहा है। मैं यह मंज़र देखकर सहम गई वह मुझे कहने लगा, ऐ औरत! परेशान न हो। यह तुम्हारे मेहमान का हिस्सा था जो तुम्हारे आटे में शामिल था। अब क्योंकि यह पड़ौसी के घर में पकना है इसलिए मैं वही आटा लेने के लिए आया हूँ। जी हाँ मेहमान बाद में आता है जबकि अल्लाह तआला उसका रिज़्क़ पहले भेज देते हैं। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 4/218)

रिज़्क़ का इंतिज़ाम दुश्मन के महल में

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की पैदाइश से पहले फ़िरऔन के नजूमियों ने बता दिया था कि तुम्हारी हुकूमत में एक ऐसा बच्चा पैदा होगा जो तुम्हारे तख़्त व ताज को छीन लेगा। उसने कहा, अच्छा! मैं इसका बंदोबस्त करता हूँ। आइन्दा दो साल तक वह बनी इस्राईल के बच्चों को कटवाता रहा। जो बच्चा पैदा होता उसे ज़िब्ह करवा देता। मर्दों के अलग बाग़ीचे बना दिए ताकि ये इधर ही खेलें, खाएं, सोएं औरतों के अलग बाग़ीचे बना दिए ताकि वे भी उधर ही खाएं, पिएं, सोएं। बनी इस्राईल के मर्द व औरतों का मिलना जुलना बंद कर दिया गया। दो साल तक कोई शौहर अपनी बीवी से नहीं मिल सकता था। मक़सद यह था कि न माँ-बाप मिलेंगे न बच्चा होगा। अगर इस दौरान कोई बच्चा पैदा भी हो गया तो मैं उसे क़त्ल करवा दूंगा। मगर होता वही है जो मंज़ूरे ख़ुदा होता है। करना ख़ुदा का क्या हुआ कि इन मर्दों का एक बड़ा अफ़सर और उन औरतों की एक बड़ी अफ़सर दोनों मियाँ-बीवी थे जो फ़िरऔन को रिपोर्ट पेश

करने आते थे और वहीं रात गुज़ारते थे। उनको आपस में हमबिस्तरी का मौक़ा मिल जाता था। उनमें से एक हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के बाप थे और एक उनकी माँ थी।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम माँ के पेट में परवरिश पाते रहे। जब विलादत हुई तो आप अलैहिस्सलाम की माँ डरी कि ऐसा न हो कि इस बच्चे को भी ज़िब्ह कर दिया जाए। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि ﴿واوحينا الى ام موسىٰ ان ارضعيه﴾ और हमने "वही" की मूसा अलैहिस्सलाम की माँ की तरफ़ कि तू इसको दूध पिला। ﴿فاذا خفت عليه﴾ और अगर तुझे डर लगे कि सिपाही उसको न ले जाएं तो फिर उसको एक ताबूत में बंदकर और ताबूत को दरिया में डाल दे। ﴿فليلقه اليم بالساحل﴾ दरिया से यह ताबूत किनारे जा लगेगा, पकड़ेगा कौन? ﴿يأخذه عدو لي وعدو له﴾ वह जो मेरा भी दुश्मन है और इसका भी दुश्मन।

उम्मे मूसा की अक़्ल कहती है कि वाह ख़ुदाया! तेरे वादे भी अजीब! तू बच्चे को बचाना चाहता है तो मैं किसी कोने में रख दूंगी ताकि यह पुलिस वालों को नज़र ही न आए या फिर कोई पुलिस वाला इस घर में आ ही न सके। तूने बचाने का वादा भी किया तो कितना अजीब कि इसको ताबूत में डाल और ताबूत को दरिया में डाल। अब सोचिए! अगर इसमें हवा के दाख़िल होने का बंदोबस्त करें तो सुराख़ रखने पड़ेंगे। अगर सुराख़ रखे गए तो पानी उसमें दाख़िल हो जाएगा। गोया टकराव की शक्ल पैदा हो गई। बहरहाल माँ ने धड़कते हुए दिल के साथ अपने बच्चे को ताबूत में डाल दिया। अक़्ल की बात बिल्कुल न सुनी। वह जानती थी कि यह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का वादा है जो मेरा भी परवरदिगार है और बच्चे का भी परवरदिगार है। वही बच्चे की परवरिश फ़रमाएगा। चुनाँचे क्या हुआ? उस बच्चे को फ़िरऔन और उसकी बीवी ने पकड़ा। अल्लाह तआला

फ़रमाते हैं ﴿والقيت عليك محبة منى﴾ मैंने अपनी तरफ़ से तेरे चेहरे पर मुहब्बत डाल दी, मुहब्बत इलक़ा कर दी। चुनाँचे फ़िरऔन की बीवी ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को देखा तो वह बहुत ख़ूबसूरत लग रहे थे। कहने लगी ﴿لا تقتلوه﴾ इसको क़त्ल न करना, ﴿عسى ان ينفعنا﴾ हो सकता है यह हमें नफ़ा पहुँचाए, ﴿او نتخذه ولدا﴾ या हम इसको अपना बेटा बना लेते हैं। देखा! क़ुदरत का करिश्मा के क़ौम के बच्चे मरवाने वाला ख़ुद अपने दिल के हाथों मरा पड़ा है।

फ़रमाने शाही जारी हुआ तो बच्चे को दूध पिलाने वाली औरतें आयीं। मगर बच्चा दूध ही नहीं पीता। फ़िरऔन परेशान है कि बच्चा दूध नहीं पीता। अक़्ल का अंधा उसकी मत मारी गई। सारी क़ौम के बेटों को मरवाता रहा। यह समझ न आई कि अल्लाह तआला उसी के हाथों से बच्चे की परवरिश करवा रहे हैं।

दूसरी तरफ़ हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की माँ का हाल भी अजीब था :

واصبح فؤاد ام موسى فرغا ان كادت لتبدى به لولا ان

ربطنا على قلبها لتكون من المؤمنين۝

अगर अल्लाह उसके दिल को तसल्ली न देते तो वह अपना राज़ फ़ाश कर बैठती। लेकिन अल्लाह तआला ने उसके दिल को ताक़त दे दी, संभाला दे दिया। बेटी को भेजती हैं कि देख, फ़िरऔन के घर क्या हो रहा है। वह फ़िरऔन के घर जाकर देखती है कि बच्चा दूध नहीं पी रहा है। फ़िरऔन से कहने लगी, मैं ऐसे लोगों का पता बता दूं जो इस बच्चे की परवरिश भी करेंगे और इसके ख़ैरख़्वाह भी होंगे। मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि फ़िरऔन के दिल में ख़्याल गुज़रा कि यह ख़ैरख़्वाहों का नाम लेने वाली कौन आई। चुनाँचे फ़िरऔन ने बच्ची से पूछा कि कौन हैं इसके ख़ैरख़्वाह? बच्ची ऐसी समझदार थी कि फ़ौरन

कहने लगी कि सारी क़ौम आपकी ख़ैरख़्वाह है। जो भी दूध पिलाएगी वह इसकी ख़ैरख़्वाह होगी। फ़िरऔन बच्ची की बात से मुतमइन हो गया। बच्ची ने घर आकर माँ को सूरतेहाल बताई तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की माँ भी बच्चे को दूध पिलाने तशरीफ़ ले गयीं। बच्चे को छाती से लगाया तो बच्चे ने दूध पीना शुरू कर दिया। फ़िरऔन ख़ुशियाँ मनाने लगा। उसे यह बात समझ न आई कि हो सकता है यह इस बच्चे की माँ हो। कहता है अच्छा हुआ बच्चे ने तेरा दूध पीना शुरू कर दिया? तू इस बच्चे को घर ले जा, इसकी परवरिश ठीक करना। इसकी हर चीज़ का ख़्याल रखना। मैं तुझे सरकारी फ़न्ड से इतना वज़ीफ़ा देता रहूँगा। अल्लाह तआला ने जो वादा फ़रमाया था वह सच कर दिखाया। चुनाँचे अल्लाह तआला फ़रमाते हैं,

﴿فرددنه الى امه كى تقر عينها ولا تحزن.﴾

कि हमने लौटा दिया उसको माँ के पास ताकि माँ की आँखें ठंडी हों और उसके दिल में कोई ग़म न हो।

﴿ولتعلم ان وعد الله حق﴾ और वह जान ले कि अल्लाह के वादे सच्चे हैं। ﴿ولكن اكثر الناس لا يعلمون﴾ लेकिन अक्सर लोग इस बात को जानते नहीं। उम्मे मूसा अलैहिस्सलाम अपने बेटे को दूध पिलाती थीं और सरकार से वज़ीफ़ा मिलता था। यूँ अल्लाह तआला अपनी ज़ात पर तवक्कुल करने वालों को दो गुने मुनाफ़े अता करते हैं।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 2/67-69)

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इशारे पर हज़ार पेड़ों का ईसार

वे सहाबा किराम जो नए-नए मुसलमान होते थे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनकी दिलदारी के लिए उनसे बहुत ज़्यादा मुहब्बत

फ़रमाया करते थे। एक बार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ फ़रमा थे। एक आदमी जो नया-नया मुसलमान हुआ था आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ। वह कहने लगा, ऐ अल्लाह के नबी मेरा एक बाग़ है और मेरे साथ एक मुसलमान का बाग़ है। वह मुसलमान बूढ़ा हो चुका है। अगर मेरे पेड़ों की लाइन सीधी हो तो उसके दस पेड़ आ जाते हैं। इस तरह मैं हिफ़ाज़त के लिए दीवार भी बना सकता हूँ। मैंने उस बूढ़े मुसलमान से कहा कि यह दस पेड़ मुझे दे दो। लेकिन वह बेचने को तैयार नहीं। लिहाज़ा आप मेहरबानी फ़रमा कर ये पेड़ मुझे दिलवा दें। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बूढ़े सहाबी को तलब फ़रमाया। वह सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु आपकी ख़िदमत में हाज़िर हो गए। अच्छा बूढ़ों की समझ कभी-कभी अपनी ही होती है क्योंकि उम्र ही ऐसी होती है। बूढ़ा आदमी तो बता भी नहीं सकता कि उसको क्या-क्या तकलीफ़ है। एक बूढ़ा आदमी किसी डॉक्टर के पास गया। उसने डॉक्टर से कहा, जी मुझे बहुत कम दिखाई देता है। डॉक्टर साहब ने कहा, बाबा जी! यह बुढ़ापा है। बूढ़ा आदमी फिर कहने लगा, डॉक्टर साहब मेरे सब दांत गिर गए हैं। डॉक्टर साहब ने कहा, जी! यह बुढ़ापा है। बूढ़े आदमी ने फिर कहा, डॉक्टर साहब! मुझे खाना हज़म नहीं होता। डॉक्टर साहब ने कहा जी यह बुढ़ापा है। वह फिर कहने लगा, डॉक्टर साहब, मैं चलता हूँ तो आँखों के सामने अंधेरा छा जाता है। डॉक्टर साहब ने कहा, जी! यह बुढ़ापा है। बूढ़ा आदमी बुढ़ापे वाला जवाब बार-बार सुनकर तंग आ चुका था और गुस्से में कहने लगा, यह क्या बात हुई कि हर चीज़ बुढ़ापा है। डॉक्टर साहब कहने लगे, बाबा जी! यह बुढ़ापा है। ख़ैर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस सहाबी को बुलाया और फ़रमाया कि आपका यह भाई चाहता है कि अगर आप उसे अपने दस पेड़ दे दें तो उनकी लाइन सीधी हो सकती है। वह बूढ़े सहाबी आगे से पूछते हैं, ऐ

अल्लाह के नबी! यह आपका हुक्म है या मशवरा है? आपने इर्शाद फ़रमाया, यह मेरा हुक्म नहीं है। तुम्हें फ़ैसला करने का अख़्तियार है। वह जवाब में कहने लगे कि ऐ अल्लाह के नबी! मैं नहीं देना चाहता। जब उस बूढ़े सहाबी ने कहा मैं नहीं देना चाहता तो नया मुसलमान कुछ मायूस सा हुआ। उसके बाद नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया कि अगर तुम उसे नहीं देना चाहते तो मैं उसे ख़रीदना चाहता हूँ। लिहाज़ा मुझे दे दो। उन्होंने फिर पूछा, ऐ अल्लाह के नबी! यह आपका हुक्म है या मशवरा है? आपने फ़रमाया, मशवरा है। वह कहने लगे, मैं नहीं देता। यह कहकर वह सहाबी अपने घर के लिए रवाना होने लगे तो आपने इर्शाद फ़रमाया कि सुनो! तुम्हें जन्नत के पेड़ बदले में मिलेंगे और मैं जन्नत में बहुत बड़ा बाग़ दिलवाने की ज़मानत देता हूँ और तुम्हें जन्नत में घर भी मिलेगा लेकिन वह कहने लगे, ऐ अल्लाह के नबी! ﴿لا حاجة لي﴾ अब मुझे कोई ज़रूरत नहीं है।

यह बात एक सहाबी ने सुनी जिनका एक हज़ार पेड़ों का बाग़ था। वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में आए और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी! आपने जो ख़ुशख़बरी उसे दी है कि अगर तुम यह दस पेड़ दे दो तो तुम्हें जन्नत में बाग़ मिलेगा और घर भी मिलेगा। क्या यह वादा उसके साथ था या मेरे साथ भी है। आपने फ़रमाया, अगर तुम ख़रीदकर दे दो तो यह वादा तुम्हारे लिए भी है। वह कहने लगे, बहुत अच्छा। वह सहाबी वहाँ से चले और कुछ देर बाद बूढ़े मियाँ के घर पहुँच गए। उन्होंने बूढ़े मियाँ को सलाम किया और उससे पूछा कि क्या आप जानते हैं कि मैं कौन हूँ? वह कहने लगे, नहीं। आप ही बता दें। कहने लगे, मैं क़ुब्बा का फ़लाँ अमीर आदमी हूँ जिसका एक हज़ार पेड़ों का बाग़ है। बूढ़े मियाँ कहने लगे, हाँ उसकी तो बहुत शोहरत सुनी है। अच्छा आप वही हैं। आपके बाग़ की तो बड़ी आला खजूरें हैं और बहुत ज़्यादा फल देती

हैं। वह कहने लगे, अच्छा आपने भी मेरे बाग़ का ज़िक्र सुना हुआ है। अब मैं आपके साथ एक सौदा करने आया हूँ। बूढ़े मियाँ कहने लगे वह क्या? उन्होंने कहा, आपके जो ये दस पेड़ हैं ये मुझे दे दें और मेरा हज़ार पेड़ों वाला बाग़ आप ले लें। यह सुनकर उनकी आँखों में चमक आ गई। वह बूढ़े मियाँ थे और उन्हीं पेड़ों पर उनका गुज़ारा था। इसलिए वह छोड़ना नहीं चाहते थे। लेकिन जब उन्होंने यह सुना कि इसके बदले में एक हज़ार पेड़ों का बाग़ मिलेगा तो कहने लगे, ठीक है मैं तेरे साथ सौदा कर लेना चाहता हूँ। चुनाँचे तय पा गया कि बूढ़े मियाँ ने हज़ार पेड़ों के बदले में दस पेड़ दे दिए हैं।

वह सहाबी यह सौदा करके नबी अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ करने लगे, ऐ अल्लाह के नबी! मुझे वह पेड़ मिल गए हैं और अब वे पेड़ आपकी ख़िदमत में पेश करता हूँ। नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया, मैं ज़मानत देता हूँ कि इसके बदले में तुम्हें जन्नत में मकान भी मिलेगा और बाग़ भी मिलेगा। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुबारक ज़बान से जन्नत की ज़मानत की खुशख़बरी सुनकर वह हज़ार पेड़ों के बाग़ के किनारे पर वापस आए। बाग़ के अंदर दाख़िल न हुए। वहीं से खड़े होकर अपनी बीवी को आवाज़ दी और कहा, ऐ फ़लाँ की अम्मी! ऐ फ़लाँ की अम्मी। बीवी ने कहा, क्या बात है? आप अंदर क्यों नहीं आते? वह कहने लगे, मैं इस बाग़ का सौदा कर चुका हूँ। अब यह बाग़ मेरा नहीं है बल्कि मैंने इसे जन्नत के बाग़ के बदले में अल्लाह के हाँ बेच दिया है। सामान और बच्चों समेत बाहर आ जा। मैं इधर ही इंतिज़ार करूंगा। बीवी ने जब यह सुना तो कहने लगीं, मैं तुझ पर क़ुर्बान जाऊँ। तूने तो ज़िंदगी में पहली दफ़ा अच्छा सौदा करके मेरा दिल खुश कर दिया। वह अपना सामान और बच्चों को लेकर बाग़ से बाहर आ गई और उन्होंने वह बाग़ अल्लाह के रास्ते में सदक़ा कर

दिया। सुब्हानअल्लाह! जिनका माल ऐसा हो कि अल्लाह के लिए आख़िरत कमाने के लिए वह उसे लगा रहे हों तो वह माल उनके लिए बेहतरीन सवारी है। और अगर माल दुनिया के मज़े की ख़ातिर हो तो फिर वह नुक़सानदेह है।

क्या दुनिया उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु की सख़ावत पेश कर सकती है?

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने जिन सहाबा किराम को दुनिया का माल दिया वे दोनों हाथों से अल्लाह तआला के रास्ते में ख़र्च करते थे ताकि अल्लाह हाँ ज़्यादा से ज़्यादा रुतबे पाएं। हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु को अल्लाह तआला ने ख़ूब माल दिया था। उनके दिल में माल की मुहब्बत नहीं दी थी। वह अपना माल अल्लाह की राह में ख़र्च करने में कभी ढील नहीं करते थे। बैरे रोमा एक कुआँ था जो एक यहूदी की मिल्कियत में था। उस वक़्त मुसलमानों को पानी हासिल करने में काफ़ी मुश्किल का सामना था। वह इस यहूदी से पानी ख़रीदते थे। जब हज़रत उस्मान ने देखा कि मुसलमानों को पानी हासिल करने में काफ़ी दुश्वारी का सामना है तो वह यहूदी के पास गए और उसे फ़रमाया कि यह कुँवा बेच दो। उसने कहा, मेरी तो बड़ी कमाई होती है। मैं तो नहीं बेचूंगा। यहूदी का जवाब सुनकर हज़रत उस्मान ने फ़रमाया कि आप आधा बेच दें और क़ीमत पूरी ले लें। वह यहूदी न समझ सका। अल्लाह वालों के पास फ़िरासत होती है। यहूदी ने कहा, हाँ ठीक है कि आधा हक़ दूंगा और क़ीमत पूरी लूंगा। उसने क़ीमत पूरी ले ली और आधा हक़ दे दिया और कहा कि एक दिन आप पानी निकालें और दूसरे दिन हम पानी निकालेंगे। जब हज़रत उस्मान ने उसे पैसे दे दिए तो आपने ऐलान करवा दिया कि

मेरी बारी के दिन मुसलमान और काफ़िर सब बग़ैर क़ीमत के अल्लाह के लिए पानी इस्तेमाल करें। जब लोगों को एक दिन मुफ़्त पानी मिलने लगा तो दूसरे दिन ख़रीदने वाला कौन होता। चुनाँचे वह यहूदी कुछ महीनों के बाद आया और कहने लगा, जी आप मुझसे बाक़ी आधा भी ख़रीद लें। आपने बाक़ी आधा भी ख़रीदकर अल्लाह के लिए वक़्फ़ कर दिया।

हलाकत के दहाने से हिफ़ाज़त

बनी इस्राईल की एक औरत अपने बच्चे को लेकर जंगल से गुज़र रही थी। अचानक एक भेड़िया और उसने उस औरत पर हमला कर दिया। जब भेड़िए ने हमला किया तो वह कमज़ोर दिल औरत घबरा गई। जिसकी वजह से उसका बेटा उसके हाथ से नीचे गिर गया। उस भेड़िए ने उस बच्चे को उठाया और भाग गया। जब माँ ने देखा कि भेड़िया मेरे बेटे को मुँह में डालकर ले जा रहा है तो माँ की ममता ने भी जोश मारा और उसके दिल से एक आह निकली। जैसे ही उसकी आह निकली तो उसने देखा कि एक जवां मर्द सा आदमी पेड़ के पीछे से उस भेड़िए के सामने आया और भेड़िए ने जब अचानक किसी को अपने सामने देखा तो वह भी घबरा गया। जिसकी वजह से बच्चा भेड़िए के मुँह से नीचे गिर गया और वह भाग गया। उस नौजवान ने बच्चे को उठाया और लाकर उसकी माँ के हवाले कर दिया।

वह माँ कहने लगी कि तू कौन है? जिसने मेरे बच्चे की जान बचा दी? उसने कहा, मैं अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का फ़रिश्ता हूँ। मुझे परवरदिगार ने आपकी मदद के लिए भेजा है। एक दफ़ा आप अपने घर में बैठे हुए खाना खा रही थीं। ठीक उसी वक़्त किसी सवाली ने आपके दरवाज़े पर रोटी का टुकड़ा मांगा। आपके घर में उस वक़्त

वही रोटी थी जो आप खा रही थीं। आपने उस वक़्त सोचा कि मैं अल्लाह के नाम पर सवाल करने वाले को ख़ाली कैसे भेजूं। तुमने अपने मुँह का लुक़्मा निकालकर उसको दे दिया। उस सदक़े की बरकत से अल्लाह ने तेरे बच्चे की हिफ़ाज़त के लिए मुझे भेजा।

बीवी की तर्ग़ीब पर शौहर की सख़ावत

हमारे इस ज़िले में फ़ैसलाबाद रोड पर एक गाँव में एक नेक औरत रहती थी। वह बहुत ज़्यादा सख़ावत वाली थी। वह इतनी नेक दिल, इतनी मेहमान नवाज़ और इस क़दर ग़रीबों पर ख़र्च करने वाली थी कि लोग उसे हातिम ताई की बेटी कहते थे। वह गाँव सड़क के क़रीब ही था। पहले तो कोई मुस्तक़िल बस स्टाप न था मगर देहाती लोगों की आने-जाने की वजह से आहिस्ता आहिस्ता सड़क के ऊपर बस स्टाप बन गया। अंदर के इलाक़ों के देहाती लोग पाँच, दस मील चलकर वहाँ आते कि हम ख़रीद व फ़रोख़्त के लिए बस पर बैठकर शहर को जाएंगे। कभी-कभी ऐसा होता है कि बस का वक़्त ख़त्म हो जाता तो उन बेचारों के पास वहाँ रहने के लिए कोई इंतिज़ाम नहीं होता था। वे इसी हाल में बैठकर रात गुज़ारते। भूखे प्यासे रहते। अगर औरतें साथ होतीं तो और ज़्यादा परेशानी होती। उस औरत ने महसूस किया कि यहाँ तो उनके लिए कोई बंदोबस्त होना चाहिए। लिहाज़ा उसने अपने शौहर से कहा कि क्यों न हम लोगों की सहूलत के लिए एक मेहमानख़ाना बनवा दें ताकि वे लोग जो रात को आगे या पीछे नहीं जा सकते वह आसानी से रात गुज़ार सकें और वे अगले दिन अपने काम के लिए रवाना हो जाया करेंगे।

शौहर को यह बात पसंद आई। उसने मेहमानख़ाना बनवाया और एक आदमी रखकर उनके लिए खाना पकाने का बंदोबस्त कर दिया। अब लोग आने-जाने लगे। और जो रात के वक़्त आगे पीछे नहीं जा

सकते थे वे रात को वहीं से खाना खाते और रात को आराम से सो जाते। फिर रात गुज़ारकर अपने काम के लिए चले जाते। लिहाज़ा किसी 'ख़ैरख़्वाह' ने शौहर को मशुवरा दिया कि आपकी बीवी तो आपको कंगाल कर देगी। रोज़ाना इतना-इतना पकता है और फ़ालतू लोग आकर खा जाते हैं, ऐसी सख़ावत का क्या फ़ायदा।

जब दोस्तों ने ख़ाविंद को बार-बार मशुवरा दिया तो ख़ाविंद के दिल में भी यह बात आ गई कि भई! यह तो वाक़ई लोगों ने तमाशा बना लिया है। लिहाज़ा उसने एक दिन फ़ैसला कर लिया कि मेहमानख़ाना बंद कर दिया जाए। बीवी को पता चला तो परेशान हुई कि जब परवरदिगार ने हमें इतनी ज़मीनें दी थीं कि हमारी गेहूँ से ही रोटी बनती थी और सारा साल मेहमान नवाज़ी का सवाब मिलता था। अब यह नेकी का ज़रिया बंद हो गया। लेकिन जब ख़ाविंद ने कह दिया तो बीवी ख़ामोश हो गई। नेक बीवियाँ फिर बात करने के लिए मौक़ा ढूंढा करती हैं, झगड़े नहीं करतीं। इसलिए वह मौक़े की तलाश में रही।

एक दिन मियाँ से कहने लगी कि आज मेरी तबियत कुछ उदास सी है। घर में रह-रह कर कुछ तंग सी आ गई हूँ, क्यों न मैं ज़मीनों पर ज़रा हो आऊँ। उसने कहा बहुत अच्छा। मियाँ उसको ज़मीन पर लेकर चला गया। वहाँ कुँआ, बाग़ और फसलें थीं। वह थोड़ी देर चली फिरी और फिर आकर कुँए के किनारे पर बैठ गई और कुँए के अंदर देखना शुरू कर दिया। मियाँ भी इधर-उधर फिरता रहा। काफ़ी देर के बाद कहने लगा, भागवान! चलें देर हो रही है। कहने लगी, बस चलते हैं। फिर कुँए के अंदर दोबारा झांकना शुरू कर दिया। थोड़ी देर के बाद उसने फिर कहा। वह फिर जवाब में कहने लगी, अच्छा अभी चलते हैं और फिर कुँए में देखती रही। आख़िर मियाँ ने

कहा, खुदा की बंदी! कुँए में क्या देख रही हो? कहने लगी कि मैं देख रही हूँ कि ख़ाली डोल पानी में जा रहे हैं और भर-भर कर वापस आ रहे हैं। मगर कुँए का पानी जैसा है वैसा ही है। उसने कहा, खुदा की बंदी! तू अगर सारा दिन और सारी रात बैठी रहेगी तो यह पानी तो ऐसे ही रहेगा, ख़ाली डोल भर-भर कर के आते रहेंगे मगर पानी में कमी नहीं आएगी। जब ख़ाविंद ने यह बात कही उस नेक औरत ने कहा, अच्छा क्या कुँए का पानी ख़त्म नहीं होता? उसने कहा वाक़ई कुँए का पानी ख़त्म नहीं होता। यह सुनकर वह कहने लगी, अल्लाह तआला ने हमारे घर के अंदर भी एक कुँआ जारी किया था। लोग ख़ाली पेट आते थे और पेट का ढोल भरकर जाते थे। तुम्हें क्यों डर हुआ कि अल्लाह तआला तुम्हारे इस कुँए के पानी को कम कर देंगे?

बीवी की बात सुनकर मियाँ के दिल पर चोट पड़ी। कहने लगा, मैं मेहमानख़ाने को दोबारा जारी करता हूँ। लिहाज़ा वह औरत जब तक ज़िंदा रही इस इलाक़े में वह मेहमानख़ाना उसी तरह जारी रहा।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 4/220)

ख़ौफ़ व ख़शियत

और

तौबा व मग़फ़िरत

ख़ौफ़ व ख़शियत और तौबा व मग़फ़िरत

चेहरए अनवर पर ख़ौफ़ के क़तरे

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की बेटी औ उम्मत की माँ हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती थीं कि एक बार नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तश्रीफ़ लाए और बिस्तर पर आराम फ़रमाने लगे। मेरे भाई अब्दुल्लाह बिन उमर सहन में बैठकर क़ुरआन मजीद पढ़ रहे थे। फ़रमाती हैं कि मैं नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ बिस्तर पर आराम कर रही थी। अचानक अब्दुल्लाह ने आयत पढ़ी ﴿كلا انهم عن ربهم يومئذ لمحجوبون﴾ मुजरिम लोग क़यामत के दिन इस तरह खड़े होंगे कि उनके परवरदिगार के बीच पर्दा होगा। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह आयत सुनी तो आपकी आँखों से आँसू निकल आए। हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मुझे अपने गालों पर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आँसू गिरते हुए महसूस हुए तो मैं हैरान हुई। मैं नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चेहरे मुबारक की तरफ़ देखने लगी। मैंने पूछा, आक़ा! आपको कोई तकलीफ़ हो रही है? फ़रमाया, नहीं। मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के महबूब! आप जन्नत के शौक़ में रो रहे हैं? फ़रमाया, नहीं। तो मैंने पूछा, ऐ महबूब! आप क्यों रो रहे हैं? नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रोते हुए फ़रमाया, ﴿انا مشتاق وربى اشتياق﴾ मैं तो मुश्ताक़ हूँ, अल्लाह का आशिक़ हूँ और उसके इश्क़ व मुहब्बत में रो रहा हूँ।

आपने दो बार ये अल्फ़ाज़ दोहराए। आज हम इत्तिबाए सुन्नत की बातें करते हैं। काश! हमें अल्लाह के महबूब की इस सुन्नत पर भी अमल नसीब हो जाए।

सारी चमक दमक तो इन्हीं मोतियों से है
आँसू न हो तो इश्क़ में कुछ आबरू नहीं

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 4/191)

तेरे रोने पर फ़रिश्ते भी रो पड़े

एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु तहज्जुद में क़ुरआन पढ़ते हुए रो पड़े। नबी अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में जब हाज़िर हुए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "तेरे क़ुरआन पढ़ने और रोने ने अल्लाह के फ़रिश्तों को भी रुलाया। सुब्हानअल्लाह उनको रोता देखकर अल्लाह के फ़रिश्तों को भी रोना आ गया। उनको क़ुरआन पाक का ऐसा मज़ा और लुत्फ़ आया करता था। तीर लग रहे हैं और नमाज़ पढ़ रहे हैं और फिर अपने साथी को जगाकर एक सहाबी कहते हैं कि अगर मुझे अपनी ज़िम्मेदारी में कोताही का डर न होता तो मै तीरों पर तीर खाता रहता लेकिन सूरः कहफ़ पूरी किए बग़ैर नमाज़ न ख़त्म करता। उनको तीर लगते थे फिर भी उनका दिल चाहता है था कि सूरः कहफ़ पूरी पढ़ लूँ। और हमारे दिल का यह हाल है कि क़रीब मच्छर भी गुज़र जाए तो नमाज़ की सारी कैफ़ियत ख़त्म हो जाती है। क़ुरआन शरीफ़ की लज़्ज़त है और अपना एक लुत्फ़ है।

मौला मेरे बुढ़ापे की लाज रख ले

अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० ने सारी ज़िंदगी हदीस पढ़ाई। यहाँ

तक कि एक वक़्त में चालीस-चालीस हज़ार शागिर्द उनसे हदीस पाक पढ़ा करते थे। जब वह फ़ौत होने लगे तो अपने शागिर्दों से फ़रमाया कि मुझे चारपाई से उठाकर ज़मीन पर लिटा दो। नीचे न कोई क़ालीन था न कोई फ़र्श था और न कोई संगे मरमर लगा हुआ था। फिर भी शागिर्दों ने हुक्म पूरा करते हुए उनको ज़मीन पर लिटा दिया। यह देखकर तलबा की चीख़ें निकल गयीं कि इतने बड़े मुहद्दिस अपनी दाढ़ी को पकड़कर अपने गालों को ज़मीन पर रगड़ने लग गए और रोते हुए दुआ करने लगे कि ऐ अल्लाह! अब्दुल्लाह के बुढ़ापे पर रहम फ़रमाना। अल्लाहु अकबर जिसने सारी ज़िंदगी हदीस पढ़ाई उसने यह नहीं कहा कि ऐ अल्लाह! मैंने हदीस के दर्स दिए, मैंने लोगों को दीन की तरफ़ बुलाया, मैंने लोगों को नेकी तरफ़ बुलाया। कोई अमल इस क़ाबिल न समझा कि अल्लाह की हुज़ूर पेश कर सकें। आख़िर में आजिज़ी कर रहे हैं कि ऐ अल्लाह! अब्दुल्लाह के बुढ़ापे पर रहम फ़रमा। वह अपने सफ़ेद बालों को पेश करते थे कि ऐ अल्लाह! कोई अमल ऐसा नहीं जो आपके सामने पेश कर सकें। आप ही मुझ पर रहम फ़रमाइए। हमें भी इसी तरह करना चाहिए कि हम भी अपने गुनाहों को याद करके अल्लाह तआला के सामने नादिम हों और उसका ख़ौफ़ तलब करें ताकि गुनाहों से बच सकें। इस तरह मांगें कि जैसे हमें जो कुछ मिलना है वह अल्लाह तआला की रहमत से ही मिलना है। इस दर से हटकर हम जाएंगे तो हमें कुछ नहीं मिल सकता। (वाक़िआते फ़क़ीर 1/200)

सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़ुसूसियत

जब नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि मैं अबूबक्र से कहता हूँ कि वह मेरी बीमारी की वजह से मुसलमानों की नमाज़ का इमाम बने और सैय्यदा आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा से

पूछा तो उन्होंने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह! के नबी! ﴿إن أبا بكر إذا قام في مقامك لم يسمع الناس من البكى.﴾ बेशक अबू बक्र की हालत ऐसी है कि जब वह आपके मुसल्ले पर खड़े होंगे तो वह तिलावत करते हुए इतना रोएंगे कि नमाज़ियों को उनकी तिलावत क़ुरआन समझ ही नहीं आएगी। मैं उनकी तबियत को जानती हूँ, मैं उनकी बेटी हूँ।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 4/180)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का ख़ौफ़ कि कहीं मेरा नाम . . .

अल्लाह तआला ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु को इतने बुलन्द मुक़ामात नसीब फ़रमाए थे। इसके बावजूद अपने बारे में इतने फ़िक्रमंद थे कि एक बार हज़रत हुज़ैफ़ा से पूछा, हुज़ैफ़ा! मुझे यह तो पता है कि तुम्हें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुनाफ़िक़ों के नाम बता दिए थे। मैं आप से मुनाफ़िक़ीन के नाम तो नहीं पूछता बस इतनी बता पूछता हूँ कि कहीं "उमर" का नाम तो उन मुनाफ़िक़ों की फ़हरिस्त में शामिल नहीं है। अगर हम होते तो कहते कि हम तो मुरादे मुस्तफ़ा हैं। हमारे लिए तो महबूब ख़ुदा दुआएं मांगते थे। देखिए तो सही कि जिन्हें मांगकर लिया गया है वह परवरदिगार के हुज़ूर इस तरह झुकते थे और अपने बारे में इतनी एहतियात करते थे फिर भी पूछते थे कि कहीं उमर का नाम तो उनमें शामिल नहीं। क्या हमने कभी ऐसी नज़र अपनी ज़ात पर डाली है? नहीं बल्कि हमारी तो गर्दनें तनी रहती हैं। आँखें खुली रहती हैं। हमारी निगाहें दूसरों के चेहरों पर पड़ती हैं। हमें दूसरों के ऐब तो नज़र आते हैं मगर अपनी हालत नज़र नहीं आती। काश! यह आँखें बंद होतीं, ये गर्दनें झुक जातीं और ये निगाहें अपने सीने पर पड़तीं कि मेरे अपने अंदर

क्या-क्या ऐब छिपे हुए हैं। आज इस बात की बहुत कमी है।

नमाज़ में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़ौफ़ व ख़शियत का आलम

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का हाल यह था कि फ़ज्र की नमाज़ में इमाम होते थे। सूरः यूसुफ़ की तिलावत करते हुए इतना रोते कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन शद्दाद फ़रमाते हैं ﴿وانا في اخر الصفوف﴾ मैं सफ़ों में आख़िर में था ﴿يقرء﴾ हज़रत उमर पढ़ रहे थे ﴿إِنَّمَا أَشْكُوا بَثِّي وَحُزْنِي إِلَى اللَّهِ﴾ और मैं आख़िर सफ़ में खड़ा उनके रोने की आवाज़ को सुन रहा था। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 4/180)

हज़रत अली बिन अयाज़ रह० की ख़शियत

फ़ुज़ैल बिन अयाज़ रह० के बेटे अली बिन फ़ुज़ैल रह० को मुक़ामे ख़ौफ़ नसीब था। जब क़ुरआन पढ़ा या सुना करते तो अज़ाब की आयतों पर बेहोश हो जाते थे। लिहाज़ा दिल में तमन्ना किया करते थे कि या अल्लाह! कभी मुझे भी एक वक़्त में पूरा क़ुरआन सुनने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा क्योंकि वह तिलावत करते वक़्त थोड़ा सा पढ़ते और जहाँ डराने की बात आती तो वहीं बेहोश हो जाते थे। उन के बारे में आता है कि एक बार उनके सामने क़ारी ने पढ़ा ﴿يوم يقوم الناس لرب العلمين﴾ कि वह ऐसा दिन होगा कि इंसान अपने परवरदिगार के सामने खड़े किए जाएंगे। इस बात को सुना और उसी वक़्त बेहोश होकर गिर गए, अल्लाहु अकबर। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 4/180)

हज़रत शिबली रह० बेहोश होकर गिर पड़े

एक बार हज़रत शिबली रह० ने यह आयत सुनी ﴿لئن شئنا لنذهبن

﴿بالذی اوحینا الیک﴾ इमाम तरावीह पढ़ा रहा था। जब उसने यह आयत पढ़ी तो हज़रत शिबली रह० वहीं गिरकर बेहोश हो गए। हमें क्या पता है कि क़ुरआन सुनकर आशिक़ों के साथ क्या होता है।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 4/181)

नाज़ है गुल को नज़ाकत का चमन में ऐ ज़ौक़
उसने देखे ही नहीं नाज़ व नज़ाकत वाले

हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम की आह व ज़ारी

हदीस पाक में आया है कि एक बार हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम रोए। ﴿فقال الله ما هذا البكی﴾ अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया, ऐ शुऐब! आपका यह रोना कैसा? ﴿اشوقا الی الجنة ام خوفا من النار﴾ क्या जन्नत के शौक़ की वजह से है या जहन्नम के ख़ौफ़ की वजह से है? ﴿فقال لا رب﴾ अर्ज़ किया ऐ परवरदिगार! ऐसा तो नहीं। गोया न जन्नत के शौक़ में और न जहन्नम के ख़ौफ़ से मैं रो रहा हूँ ﴿ولكن شوقا الی لقائک﴾ मैं तो आपकी मुलाक़ात के शौक़ में रो रहा हूँ। ﴿فاوحی الله الیه﴾ अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उनकी तरफ़ 'वही' नाज़िल फ़रमाई :

﴿ان یکن ذلک هنیا لک لقائی یا شعیب لذلک﴾

ऐ शुऐब! आपको मुबारक हो कि इस रोने की वजह से आपको मेरी मुलाक़ात नसीब होगी। (सुब्हानअल्लाह)

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 4/190)

नेमत के मिलने पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का ख़ौफ़

एक बार हज़रत उमर ने पीने के लिए पानी मांग तो उनको पानी के बजाए शर्बत दे दिया गया। आप शर्बत पीने लगे तो आँखों में आँसू जारी हो गए। किसी ने कहा, ऐ अमीरुल मुमिनीन आप क्यों

रोते हैं? फ़रमाया, मुझे क़ुरआन पाक की एक आयत रुला रही है। ऐसा न हो कि उमर बिन ख़त्ताब को कह दिया जाए ﴿اذهبتم طيباتكم فى حياتكم الدنيا واستمتعتم بها﴾ कि तुम अपनी नेमतें दुनिया के अंदर लूट चुके हो। तुमने ख़ूब मज़े उड़ाए। ऐसा न हो कि मुझे जो ये नेमतें मिल रही हैं ये मेरी नेकियों का अज्र कहीं दुनिया ही में न मिल रहा हो। आप इतना रोते थे कि आँसुओं की चलने की वजह से गालों पर लकीरें पड़ गई थीं हालाँकि आप मुरादे मुस्तफ़ा थे। अशरा मुबश्शरा में से थे मगर इसके बावजूद बहुत ज़्यादा रोने वाले थे।

हज़रत सीरीन रह० की बहन का ख़ौफ़ व रोना

इब्ने सीरीन रह० जिन्होंने ताबीरु-रुया किताब लिखी है उनका मर्तबा अल्लाह तआला ने बहुत बड़ा किया। आज भी हर आलिम के पास वही किताब होती है और ख़्वाबों की ताबीर उसी में से बताई जाती है। उनकी बहन थीं, हफ़सा। ये सारी क़िरातों में इतनी माहिर थीं, इतनी अच्छी क़ारिया थीं। उनके हालात में लिखा है कि 32 साल अपने घर की मस्जिद में गुज़ार दिए। सिर्फ़ पाकी वग़ैरह के लिए मस्जिद से बाहर निकलतीं। बाक़ी सारा वक़्त उसी मस्जिद में बैठकर औरतों को और छोटे बच्चों को दीन की तालीम देतीं। इतनी बड़ी क़ारिया थीं कि मुहम्मद बिन सीरीन रह० को ख़ुद अगर क़ुरआन में किसी लफ़्ज़ की अदाएगी के अंदर मुशक्कतें पेश आतीं तो किसी बच्चे को भेज कर कहते कि जाओ देखो हफ़सा इस लफ़्ज़ को किस तरह अदा करती है। फिर उस लफ़्ज़ को तुम भी वैसे ही अदा कर लेना। उनके बारे में बाज़ ताबईन रह० ने लिखा है कि हम ने इतनी इबादतगुज़ार और इतनी इल्म वाली औरत कहीं नहीं देखी। यहाँ तक कि बाज़ किताबों में लिखा है कि हम ने ऐसी औरत इल्म वाली देखी कि जिनको अगर हम हसन बसरी पर भी चाहें फ़ज़ीलत दे सकते हैं। किसी ने कहा

सईद बिन मुसय्यब रह० से भी ज़्यादा। तो जवाब दिया हाँ। किसी ने उनकी बांदी से पूछा अपनी मालकिन के बारे में क्या कहती हो?

उसने बड़ी तारीफ़ें कीं और कहने लगीं बड़ा अच्छा क़ुरआन पढ़ती हैं। हर वक़्त इबादत करती रहती हैं। हर काम शरिअत के मुताबिक़ करती हैं लेकिन पता नहीं उनसे कौन सा गुनाह हो गया जो इतना बड़ा है जो इशा से नमाज़ की नीयत बांधकर रोना शुरू करती हैं और फज्र तक खड़ी रोती रहती हैं। (वह बेचारी बांदी यह समझीं कि शायद किसी बड़े गुनाह की वजह से सारी रात रो रो का माफ़ियाँ मांगती हैं।) तो इससे अंदाज़ा लगाइए कि हफ़सा बिन्त सीरीन ने दीन की ख़िदमत कितनी ज़्यादा की। इस क़िस्म की और भी बहुत सी मिसालें हैं।

राबिया बसरिया रह० का ख़ौफ़े ख़ुदा

राबिया बसरिया रह० एक दफ़ा कहीं बैठी थीं। क़रीब ही एक आदमी भुना हुआ गोश्त खा रहा था। उन्होंने जब उसे देखा तो रोना शुरू कर दिया। वह आदमी समझा कि उन्हें भूख लगी है और यह चाहती हैं कि मुझे भी खाने को दिया जाए। उसने पूछा कि क्या आप भी खाएंगी? फ़रमाने लगीं नहीं, मैं इसलिए नहीं रो रही हूँ बल्कि मैं किसी और बात पर रो रही हूँ। उसने पूछा कि वह कौन सी बात है? फ़रमाने लगीं कि मैं इस बात पर रो रही हूँ कि जानवरों और परिन्दों को आग पर भूनने से पहले उन्हें मार दिया जाता है और ज़िब्ह किए हुए जानवर को भूनते हैं। मैं क़यामत के दिन को सोच रही हूँ कि जब ज़िंदा इंसानों को आग में डालकर भून दिया जाएगा। मैंने भुने हुए मुर्ग़ को देखा तो मुझे क़यामत का दिन याद आ गया। मुझे वह रात याद आ गई जिसकी सुबह को क़यामत होगी। ऐ बंदे! तू भुने मुर्ग़ खाने का आदी है, कबाब और तिक्के मंगवाकर- मंगवाकर खाता

है। सोचा करें कि हम जो उसका गोश्त भून-भूनकर खा रहे हैं उसे तो ज़िब्ह करके भूना गया। अगर हम गुनाह करेंगे तो फ़रिश्ते हम ज़िंदों को भूनेंगे। इसलिए हमें गुनाहों से ज़रूरत बचना चाहिए।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 6/154)

हसन बसरी रह० का ख़ौफ़

सहाबा किराम, ताबईन और तबे ताबईन के तीन दौर ऐसे हैं कि इन लोगों में ख़ुशू ज़्यादा ग़ालिब होता था। हसन बसरी रह० के बारे में आता है कि आप चलकर आते तो तबियत पर ऐसा ग़म होता था कि जैसे वह आदमी आ रहा हो जिसने अभी-अभी अपने बाप को क़ब्रिस्तान में दफ़न किया। जब बैठते थे तो यूँ महसूस होता था कि जैसे वह मुजरिम है जिसके लिए फांसी का हुक्म जारी हो चुका है। आप इस क़द्र रोते थे कि आँसुओं का पानी ज़मीन पर बह पड़ता था। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 6/244)

हज़रत राबिया बसरिया का ख़ौफ़

राबिया बसरिया रह० के बारे में किताबों में लिखा है कि आप ख़ौफ़े से इतना रोती थीं कि आँसुओं के क़तरे ज़मीन पर गिरने लगते तो इतने आँसू गिरते कि बाज़ दफ़ा ज़मीन पर घास उग जाती थी।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 6/542)

हज़रत हंज़ला रज़ियल्लाहु अन्हु का ख़ौफ़े ख़ुदा

हमारे बड़े जब ज़रा सी कैफ़ियत बदलते देखते तो फ़ौरन रो पड़ते थे। एक बार हज़रत हंज़ला घर से निकले और कहने लगे ﴿نافق حنظلة نافق حنظلة﴾ ऐ अल्लाह के महबूब आपकी सोहबत में जो कैफ़ियत

होती है वह घर में नहीं होती। बस हंज़ला तो मुनाफ़िक़ हो गया।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक्क़ार 6/245)

हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम का ख़ौफ़

नबी अलैहिस्सलाम ने एक बार जिब्रील अलैहिस्सलाम से पूछा, ऐ जिब्रील! क्या तुझे मेरे रहमतुल्लल्लि-आलमीन होने से हिस्सा मिला है? अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! जी हाँ मुझे आपके रहमतुल्लल्लि-आलमीनी से हिस्सा मिला है। आपने पूछा वह कैसे? अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के महबूब! जब आप दुनिया में तशरीफ़ नहीं लाए थे। उस वक़्त मैं अपने अंजाम के बारे में डरा करता था। मेरे सामने कई नेक लोगों के अंजाम बुरे हुए। मैंने शैतान का अंजाम भी देखा था जिसकी वजह से मैं भी डरा करता था कि पता नहीं मेरा अंजाम क्या होगा लेकिन जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए अल्लाह तआला ने आप पर एक आयत उतार दी :

﴿انه لقول رسول كريم، ذى قوة عند ذى العرش مكين مطاع ثم امين-﴾

यह आयत क्योंकि मेरे बारे में है और इससे मुझे अपने अच्छे अंजाम का पता चल गया है। इसलिए मेरे दिल पर जो ग़म सवार रहता था आपकी रहमतुल्लल्लि-आलमीनी के सदक़े मुझे अब इस ग़म से निजात नसीब हो गई है, सुब्हानअल्लाह।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक्क़ार 6/249)

ख़ुशी के आँसू

हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु तशरीफ़ फ़रमा हैं। टाट का लिबास पहने हुए हैं। सब कुछ महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पेश कर चुके हैं। ऊपर से हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम उतरते हैं।

जिब्रील अमीन ने टाट का लिबास पहना हुआ था। उन्होंने नबी अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में सलाम पेश किया और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी! मुझे अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने भेजा है। वह अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के अमल से इतना ख़ुश हैं कि उन्होंने आसमान के सब फ़रिश्तों को हुक्म दिया है कि तुम भी सिद्दीक़े अकबर की तरह टाट का लिबास पहनो। इसीलिए मैं भी टाट का लिबास पहनकर हाज़िर हुआ हूँ। अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि जाओ पूछ कर आओ कि क्या अबूबक्र इस हाल में भी मुझसे ख़ुश हैं। सैय्यदना सिद्दीक़ अकबर ने सुना तो उनकी आँखों से आँसू आ गए और कहने लगे, मै। अपने रब से हर हाल में ख़ुश हूँ।"

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के तक़्वे का नतीजा

सूरः यूसुफ़ जिसको क़ुरआन ने अहसनल क़सस कहा है, ﴿نحن نقص عليك احسن القصص﴾ ख़ास तौर पर बड़ा सबक़ है, इस सूरत में इसलिए को इतना अहम बताया गया है कि इसमें अल्लाह तआला दो जमाअतों का ज़िक्र करते हैं। एक जमाअत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाईयों की और एक जमाअत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की। जी हाँ कई बंदे अकेले होते हैं लेकिन अपनी ज़ात में इदारा होते हैं। एक होते हैं लेकिन जमाअत से ज़्यादा भारी होते हैं। दलील क़ुरआन से पेश करता हूँ ﴿ان ابراهيم كان امة﴾ बेशक इब्राहीम अलैहिस्सलाम उम्मत थे। देखा! जी हाँ ऐसा भी होता है। तो एक जमाअत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की और दूसरी जमाअत उनके भाईयों की। भाईयों पर इम्तिहान आया। वे कहने लगे, हम यूसुफ़ को क़त्ल कर देते हैं। ﴿اقتلوا يوسف او اطرحوه ارضا﴾ हम यह गुनाह कर गुज़रते हैं और फिर उसके बाद हम तौबा करके नेक बन जाएं। चुनाँचे गुनाह कर गुज़रे। यूसुफ़ अलैहिस्सलाम पर भी इम्तिहान आया ﴿وراودته التي هو في بيتها﴾

﴿نفسه﴾ यह अल्लाह तआला की रहमत थी कि ऐसे इम्तिहान से भी बच गए यहाँ तक कि गवाहियाँ दे दीं औरत ने और कहना पड़ा मालिक को ﴿يوسف ايها الصديق﴾ ऐ सच्चे यूसुफ़, सुब्हानअल्लाह! अल्लाहु अकबर। फिर क्या हुआ? अल्लाह तआला ने फिर उनको जेल से निकालकर तख़्त पर बिठा दिया। फिर यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने कहा मुझे फ़ाइनेन्स मिनिस्टर बना दो। नबी थे अल्लाह तआला ने उन्हें सलाहियत भी अता फ़रमाई थी। वह हुकूमत की बागडोर संभाल सकते थे। हुकूमत चलाकर दिखाई। क़हत पड़ जाता है। भाईयों की जमाअत सारी की सारी क़हत की शिकार हो गई। यूसुफ़ अलेहिस्सलाम इस क़हत में तख़्त पर बैठे हुए हैं। अब अल्लाह तआला का निचोड़ निकालते हैं। क़ुरआन पाक में मंज़र बयान करते हैं और अजीब है वह मंज़र। यूसुफ़ अलेहिस्सलाम के भाई आ रहे हैं, ग़ल्ला मांगने के लिए, पैसे पूरे नहीं हैं। ग़ल्ला पूरा मांगते हैं। कहते हैं कि पैसे तो पूरे नहीं। आप कोई सदक़ा ख़ैरात कर दें। यह भी नबी अलैहिस्सलाम के बेटे हैं। वह भी नबी अलैहिस्सलाम के बेटे। ये इम्तिहान में नाकाम, वह इम्तिहान में कामयाब। यह तख़्त पर वे फ़र्श पर हैं। क़ुरआन पाक नक़्शा बयान करता है। सुब्हानअल्लाह! क़ुर्बान जाएं क्या किताब है। फ़रमाया ﴿قالو﴾ कहने लगे, ﴿يا ايها العزيز﴾ ऐ अज़ीज़े मिस्र!

مسنا واهلنا الضر وجئنا ببضاعة مزجة فاوف لنا
الكيل وتصدق علينا ان الله يجزى المتصدقين

हमें और हमारे अहलेख़ाना (घरवालों) को तंगदस्ती ने बेहाल कर दिया है और हम पैसे भी इतने लाए हैं जो पूरे नहीं। हमें वज़न पूरा दे दो और हमारे ऊपर सदक़ा ख़ैरात कर दीजिए। बेशक अल्लाह तआला सदक़ा देने वालों को जज़ा देता है।

जब यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने देखा कि यह हालत हो गई है तो पूछा

﴿ما فعلتم بيوسف﴾ तुमने यूसुफ़ के साथ क्या किया था? कहने लगे, ﴿أإنك لأنت يوسف﴾ क्या आप यूसुफ़ हैं? ﴿قال أنا يوسف وهذا أخي﴾ कहा हाँ मैं यूसुफ़ हूँ और यह मेरा भाई (बिनयामीन है), तहक़ीक़ अल्लाह ने हम पर एहसान किया ﴿إنه من يتق ويصبر﴾ जो मुत्तक़ी होता है और अपने अंदर सब्र व ज़ब्त पैदा करता है ﴿فإن الله لا يضيع أجر المحسنين﴾ बेशक अल्लाह तआला नेकोकारों के अज्र को ज़ाए नहीं किया करता। लिहाज़ा हर दौर में हर ज़माने में जो यूसुफ़ सिफ़्त बनेगा अल्लाह तआला फ़र्श से उठाकर अर्श पर बिठा देगा। देखना दुनिया भी बनेगी और आख़िरत भी बनेगी। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 1/62)

ज़िना से बचने पर सुलेमान बिन यसार रह० को बशारत

अलहम्दुलिल्लाह इस उम्मत में ऐसे-ऐसे औलिया गुज़रे हैं जिन्होंने पाकदामनी की अनमिट छाप छोड़ी हैं। सुलेमान बिन यसार रह० इमाम आज़म रह० इमाम आज़म अबूहनीफ़ा रह० के पास बैठने वालों में से थे। उनके पास कसरत से आते जाते थे। उनका शुमार वक़्त के मुहद्दिसीन और सूफ़िया में होता था। वह बहुत ही ख़ूबसूरत थे। एक बार एक औरत ने उनकी तरफ़ गुनाह का पैग़ाम भेजा और कहा कि मैं आपकी ख़ूबसूरती की वजह से आप पर फ़िदा हूँ। अब मौक़ा है लिहाज़ा आप मेरे घर आ जाएं ताकि मैं अपनी हसरत पूरी कर सकूँ। उन्होंने जवाब में कहा, ﴿معاذ الله﴾ मैं अल्लाह की पनाह चाहता हूँ।

जब वह रात को सोए तो उन्हें ख़्वाब में सैय्यदना हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की ज़ियारत नसीब हुई। यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, सुलेमान यसार! मैं तो अल्लाह का नबी था। मेरे साथ अल्लाह की हिफ़ाज़त थी। जब मेरे सामने गुनाह पेश हुआ तो मैंने कहा था, मआज़ल्लाह। लेकिन नबुव्वत की हिफ़ाज़त के साथ कहा

था। कमाल तो तूने दिखाया कि वली होकर वह काम किया जो वक़्त का नबी किया करता है।

ज़िना से बचने पर मुश्क की ख़ुशबू

इंडिया में एक बुज़ुर्ग ख़्वाजा मुश्की रह० थे। उनके जिस्म से मुश्क की सी ख़ुश्बू आती थी। लोग हैरान होकर पूछते थे कि आप कैसी ख़ुश्बू लगाते हैं कि आपके कपड़े पर वक़्त ख़ुश्बू में बसे हुए लगते हैं? किसी ने एक मर्तबा बहुत मजबूर किया तो वह फ़रमाने लगे कि मैं तो कोई ख़ुश्बू नहीं लगाता। उसने कहा कि आपके कपड़े से ख़ुश्बू कैसी आती है?

उन्होंने कहा कि वाक़िआ यह है कि एक बार मैं किसी गली में से गुज़र रहा था। एक मकान का दरवाज़े पर एक बूढ़ी औरत खड़ी हुई थी। उसने मुझे देखकर कहा कि घर में कोई बीमार है। तुम नेक बंदे नज़र आते हो। उसको कुछ पढ़कर फूंक दो। हो सकता है कि ठीक हो जाए। मैंने उस पर भरोसा किया और घर के अंदर चला गया। जब अंदर गया तो उसने ताला लगा दिया। उसके बाद घर की मालिक सामने आई। उसकी नीयत मेरे बारे में बुरी थी। वह कहने लगी कि मैं रोज़ाना तुझे गुज़रता हुआ देखती थी। मेरे दिल में बुराई का ख़्याल पैदा होता था। चुनाँचे मैंने आज तुझे इस बूढ़ी औरत के ज़रिए घर में बुला लिया है। लिहाज़ा अब मैं गुनाह करना चाहती हूँ। जब उसने नीयत का इज़्हार किया तो मैं बहुत परेशान हुआ। मैंने उसका मुतालबा मानने से इंकार कर दिया और बाहर निकलने की कोशिश की। लेकिन वह कहने लगी कि अब ताला लग चुका है। अगर नहीं मानोगे तो मैं शोर मचाऊँगी और बोहतान लगाकर संगसार कराऊँगी। अब दो बातों में से एक तय कर लो। या तो संगसार होना

पसन्द कर लो या मेरे साथ गुनाह का काम कर लो। उसकी यह बात सुनकर मैं बहुत परेशान हुआ। आख़िर अल्लाह तआला ने मेरे ज़ेहन में तर्कीब डाली तो मैंने उससे कहा कि मुझे बैतुलख़ला जाने की ज़रूरत है। लिहाज़ा मैं फ़ारिग़ होकर तुम से बात करूंगा। उस औरत ने सोचा कि चलो तैयार तो हो गया। उसने मुझे बैतुलख़ला की जगह दिखा दी। मैं वहाँ गया तो मुझे बैतुलख़ला में जो गंदगी और निजासत नज़र आई। मैंने उसे अपने हाथों से अपने जिस्म और अपने कपड़ों पर मल लिया। जब मैं बाहर निकला तो मेरे जिस्म से सख़्त बदबू आ रही थी। चुनाँचे उस औरत ने मुझे देखा तो उसके दिल में मेरी तरफ़ से नफ़रत पैदा हो गई। और वह कहने लगी कि यह तो कोई पागल है। निकालो इसको यहाँ से। यूँ मैं अपना ईमान बचाकर उसके घर से निकल आया। उसके बाद मुझ परेशानी हुई कि मेरे बदन और कपड़ों से लोगों को बदबू आएगी। लिहाज़ा जल्दी से गुस्लख़ाने में पहुँचा और मैंने अपने बदन और कपड़ों को धोया और पाक किया। जब गीले कपड़े पहनकर बाहर निकला तो उस वक़्त मेरे जिस्म से ख़ुश्बू आने लगी अल्लाहु अकबर। उनका असली नाम तो कुछ और था लेकिन क्योंकि उनके जिस्म से मुश्क की ख़ुश्बू आती थी इसलिए लोग उन्हें ख़्वाजा मुश्की कहकर पुकारते थे। एक मोटी सी बात ज़ेहन में बिठा लेनी चाहिए कि नेकी से जिस्म में ख़ुश्बू आती है और गुनाह से जिस्म में बदबू आती है।

एहतियात की इंतिहा इसे कहते हैं

इंसान को चाहिए कि न तो वह अपनी इबादत पर नाज़ करे और न ही अपने आप पर भरोसा करे। एक दफ़ा किसी ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को देखा कि अपने दरवाज़े की दहलीज़ पर बैठे हुए

हैं। उसने उन्हें सलाम किया और आगे चला गया। थोड़ी देर बाद वह फिर वापसी पर उसी रास्ते से गुज़रने लगा तो देखा कि अभी तक हज़रत उमर दरवाज़े की दहलीज़ पर बैठे हुए हैं। वह हैरान होकर पूछने लगा, ऐ अमीरुल मुमिनीन! आप दरवाज़े पर उस वक़्त से बैठे ही हुए हैं। आप फ़रमाने लगे, मेरी बेटी हफ़सा! उम्मुल मुमिनीन है। वह आज घर आई हुई है। और मेरी बीवी घर पर नहीं। जिसकी वजह से वह घर में अकेली है। इसलिए मैंने घर में उसके पास बैठने के बजाए यहाँ दरवाज़े पर बैठना पसन्द किया। अल्लाहु अकबर हमारे असलाफ़ उस शैतान मरदूद के शर से इस क़द्र बचते थे। उस मरदूद की चालों को उस वक़्त तक समझना मुमकिन नहीं है जब तक अल्लाह तआला की मदद शामिल हाल न हो।

हज़रत अबूदुजाना का एहतियात

हमें हर काम शरिअत व सुन्नत के मुताबिक़ करना चाहिए। चाहे वह काम छोटा हो या बड़ा। सहाबा किराम इतने एहतियात करने वाले थे कि हज़रत अबूदुजाना एक सहाबी हैं। वह फ़ज्र की नमाज़ पढ़ते और पढ़ने के बाद जल्दी अपने घर चले जाते। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में फ़ज्र की महफ़िल में नहीं बैठते थे। किसी ने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया कि अबूदुजाना पता नहीं किस हाल में है कि जल्दी चला जाता है। जब नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे पूछा कि तुम जल्दी क्यों चले जाते हो? तो कहने लगे ऐ अल्लाह के नबी मेरे पड़ौसी के घर में एक पेड़ है जिस पर फल लगे हुए हैं। मगर उसकी कुछ शाख़ें मेरे घर पर आती हैं। और जब रात होती है तो शाख़ों से फल मेरे घर में गिर जाते हैं। मैं फ़ज्र की नमाज़ पढ़कर जल्दी जाता हूँ कि मेरे बच्चे जाग जाएं और बिला इजाज़त दूसरे के फल खाने का

गुनाह न कर बैठें। इतनी छोटी सी बात में शरिअत का ख़्याल रखते थे। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 5/219)

ख़ौफ़े ख़ुदा हो तो ऐसा

एक ताबई रह० के बारे में आता है कि उनको ईसाई बादशाह ने क़ैद करवा दिया। वह चाहता था कि उनको क़त्ल करवा दे। मगर उसके वज़ीर ने कहा कि नहीं इसके अंदर बहादुरी इतनी है कि अगर यह किसी तरह हमारे मज़हब पर आ जाए तो यह हमारी फ़ौज का कमान्डर इन चीफ़ बनेगा। ऐसा बंदा आपको कहाँ से मिल सकेगा। उसने कहा, अच्छा मैं इसको अपने मज़हब पर लाने की कोशिश करता हूँ। उसका ख़्याल था कि मैं इसको लालच दूंगा। चुनाँचे उसने उनको लालच दिया कि हम तुम्हें सलतनत देंगे। तुम हमारा मज़हब अपना लो। मगर उन्होंने कोई तवज्जेह न दी। जब उन्होंने कोई तवज्जेह ही न दी तो वह परेशानी के आलम में सोच रहा था। इस दौरान उसकी नौजवान बेटी ने पूछा अब्बा जान! आप परेशान क्यों बैठे हैं? उसने कहा, बेटी! यह मामला है। वह कहने लगी, अब्बा जान! आप मुझे इजाज़त दें तो मैं रास्ते पर लाती हूँ।

चुनाँचे बादशाह ने उन्हें एक कमरे में बंद करवा दिया और उस लड़की से कहा कि तुम इसे रास्ते पर ले आओ। वह लड़की उनके लिए खाना लाती और बन संवरकर सामने आती। उसका ये सब कुछ करने का मक़सद उन्हें अपनी तरफ़ माइल करना था। वह लड़की इस तरह चालीस दिन तक कोशिश करती रही। मगर उन्होंने उसे आँख उठाकर भी न देखा। चालीस दिन गुज़र जाने के बाद वह उनसे कहने लगी कि आप कैसे इंसान हैं। दुनिया का हर मर्द औरत की तरफ़ मुतवज्जेह होता है और मैं इस क़द्र ख़ूबसूरत हूँ। हज़ारों में से कोई एक भी ऐसी नहीं और मैं रोज़ाना तुम्हारे लिए बन संवरकर आती

रही लेकिन तुमने कभी आँख उठाकर भी नहीं देखा। इसकी क्या वजह है? तुम मर्द नहीं हो या क्या हो?

उन्होंने फ़रमाया कि मेरे परवरदिगर ने ग़ैर औरत की तरफ़ देखने से मना फ़रमाया है। इसलिए मैंने आपकी तरफ़ तवज्जेह नहीं की। उस लड़की ने कहा, जब तुम अपने परवरदिगार के साथ इतनी मुहब्बत है तो फिर हमें भी कुछ तालीमात दो। चुनाँचे उन्होंने उस लड़की को दीन की बातें सिखानी शुरू कर दीं,

शिकार करने को आए थे शिकार हो के चले

आख़िर वह लड़की इस्लाम क़ुबूल करने के लिए तैयार हो गई। लिहाज़ा उन्होंने उसको कलिमा पढ़ाकर मुसलमान बना दिया। वह कलिमा पढ़कर कहने लगी कि अब मैं मुसलमान हूँ। लिहाज़ा अब मैं यहाँ नहीं रहूंगी। बाद में उसने खुद ही एक तर्कीब बताई जिसकी वजह से उन तबई रह० को भी कैद से निजात मिल गई और लड़की खुद भी महलों को छोड़कर मुसलमान के साथ चली गई।

हैरत की बात है कि एक नौजवान लड़की उनको अपनी तरफ़ मुतवज्जेह करने के लिए चालीस दिन तन्हाई में कोशिश करती रही। मगर उन्होंने उसकी तरफ़ आँख उठाकर भी न देखा। या अल्लाह हमें तो हैरानी होती है। फ़रिश्तों को भी ताज्जुब होता होगा। यह किस लिए था? इसलिए कि उनका तज़किया हो चुका था और नफ़्स के अंदर से गंदगी निकल चुकी थी। मगर आज नौजवानों की हालत ऐसी है कि वे गुनाह इसलिए नहीं कर पाते कि कोई गुनाह के लिए तैयार नहीं होता वरना अगर कोई गुनाह का इशारा कर दे तो गुनाह के लिए अभी तैयार हो जाएं।

ख़ौफ़े खुदा का असर नस्लों तक

एक बार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु रात को गलियों के अंदर

पहरा दे रहे थे। सुबह सादिक़ का वक़्त था। एक घर से औरतों के बोलने की आवाज़ आई। आप करीब होकर आवाज़ सुनने लगे। आपने महसूस किया कि एक बूढ़ी औरत अपनी कम उम्र लड़की से कहने लगी कि बेटी! क्या बकरी ने दूध दे दिया है? उसने कहा, जी हाँ! दे दिया है। पूछा कितना दिया? जवाब मिला, थोड़ा दिया है। उस बूढ़ी औरत ने कहा, लेने वाले आएंगे तो वे पूरा मांगेंगे। लड़की ने कहा कि बकरी ने थोड़ा दिया है। बूढ़ी औरत कहने लगी, अच्छा फिर इसमें पानी मिला दो ताकि मिक़्दार पूरी हो जाए। लड़की ने कहा, मैं क्यों पानी मिलाऊँ? बुढ़िया ने कहा, कौन सा उमर देख रहा है? उस लड़की ने जवाब दिया कि अम्मा! अगर उमर रज़ियल्लाहु अन्हु नहीं देख रहे हैं तो उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का ख़ुदा तो देख रहा है। हज़रत उमर ने यह बात सुनी तो बहुत ख़ुश हुए और वापस चले गए। सुबह होते ही आपने दोनों को बुलाया तो पता चला कि वह लड़की जवान उम्र थी। आपने अपने बेटे के लिए उसे पसन्द कर लिया और उसे अपनी बहू बना लिया। यही लड़की बड़ी होकर हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० की नानी बनी।

मेरा ख़ुदा देख रहा है

एक बार हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा जंगल में बैठे थे। एक चरवाहा आ पहुँचा। आपने उससे फ़रमाया, आओ हमारे साथ खाना खाओ। वह कहने लगा, ﴿انا صائم﴾ मैं रोज़ादार हूँ। आप हैरान हुए कि जंगल और वीराने में धूप पर सारा दिन फिरने वाला और बकरियों को चराने वाला, यह नौजवान रोज़े से है। आपके दिल में ख़्याल आया कि इसे आज़माते हैं। आपने उसे फ़रमाया कि एक बकरी हमारे हाथ बेच दो। हम तुम्हें पैसे देते हैं। इसको ज़िब्ह करेंगे और गोश्त भूनेंगे। हम भी खा लेंगे और तुम भी शाम को खा

लेना। वह कहने लगा, जनाब! ये बकरियाँ मेरी नहीं हैं। यह तो मेरे मालिक की हैं। आपने फ़रमाया, तुम्हारा मालिक यहाँ तो नहीं है। कह देना कि भेड़िया खा गया है। जैसे ही आपने यह कहा, वह नौजवान फ़ौरन कहने लगा कि अगर मेरा मालिक इस वक़्त मौजूद नहीं है तो ﴿فاين الله﴾ अल्लाह कहाँ है? सहाबा किराम के दिलों में ख़ौफ़े ख़ुदा वाली यह नेमत ऐसी उतरी हुई थी। तन्हाईयों में भी उनके दिलों में हर वक़्त यह ख़्याल रहता था कि अल्लाह तआला हमें देख रहे हैं। इसलिए वे गुनाह से बचते थे।

बादशाहों में भी ख़ौफ़े आख़िरत

मुहम्मद शाह मकरान एक बादशाह गुज़रा है। एक बार वह सिपाहियों के साथ शिकार को निकला। बादशाह सलामत शिकार खेल रहे थे। सिपाहियों के हाथ एक बूढ़ी औरत की गाय आ गई। उन्होंने उसे ज़िब्ह करके उसका गोश्त भूनकर खा लिया। बुढ़िया ने कहा कि मुझे पैसे दे दो ताकि मैं कोई और गाय ख़रीद लूं। उन्होंने पैसे देने से इंकार कर दिया। अब वह बड़ी परेशान हुई। उसने किसी आलिम को बताया कि मेरी तो रोज़ी का सहारा इसी गाय पर था। यह सिपाही उसको भी खा गए हैं और अब पैसे भी नहीं देते। अब मैं क्या करूं? उन्होंने कहा कि बादशाह नेक आदमी है। लिहाज़ा तुम सीधे बादशाह से बात करो। उसने कहा कि मुझे ये सिपाही आगे जाने नहीं देते। उन्होंने कहा कि मैं तुझे एक तरीक़ा बता देता हूँ कि बादशाह को परसों अपने घर जाना है। उसके घर के रास्ते में एक दरिया है और उसका एक ही पुल है। वह इस पर से ज़रूर गुज़रेगा। तुम उस पुल पर पहुँच जाना और जब बादशाह की सवारी वहाँ से गुज़रने लगे तो उसकी सवारी को ठहराकर तुम अपनी बात बयान कर देना। चुनाँचे तीसरे दिन बुढ़िया वहाँ पहुँच गई।

बादशाह की सवारी पुल पर पहुँची, बुढ़िया तो पहले ही इंतिज़ार में थी। उसने खड़े होकर बादशाह की सवारी रोक ली। बादशाह ने कहा, अम्मा! आपने मेरी सवारी को क्यों रोका है? बुढ़िया कहने लगी, मुहम्मद शाह! मेरा और तेरा एक मामला है। इतना पूछ्ती हूँ कि तू वह मामला इस पुल पर हल करना चाहता है या क़ियामत के दिन पुलसिरात पर हल करना चाहता है? पुलसिरात का नाम सुनते ही बादशाह की आँखों में आँसू आ गए। वह नीचे उतरा और कहने लगा, "अम्मा मैं अपनी पगड़ी आपके पाँव प रखने को तैयार हूँ। आप बताए कि आपको क्या तकलीफ़ पहुँची है? मुझे माफ़ी दे दो। मैं क़ियामत के दिन पुलसिरात पर किसी झगड़े का सामना करने के क़ाबिल नहीं हूँ। चुनाँचे उस बुढ़िया ने अपनी बात बता दी। बादशाह ने उसे सत्तर गायों के बराबर क़ीमत दे दी और माफ़ी मांगकर बुढ़िया को राज़ी किया ताकि क़ियामत के दिन पुलसिरात पर उसका दामन न पकड़े।

मौलाना हुसैन अली रह० और अल्लाह का डर

हमारे सिलसिले नक़्शबंदिया के एक बुज़ुर्ग गुज़रे हैं हज़रत हुसैन अली वान फ़ुचरान वाले। हज़रत ख़्वाजा सिराजुद्दीन से ख़िलाफ़त पाई हालाँकि ख़्वाजा सिराजुद्दीन उनके शागिर्द थे। उनसे पढ़ते थे। यह भी ख़ुलूस देखिए। हमारे बड़ों के इख़्लास की इससे बड़ी और क्या मिसाल होगी कि जिसको किताबें पढ़ा रहे हैं ख़ुद उसी से बैअत हो रही हैं। सुलूक सीखने के लिए। बड़ों की छोटों से फ़ैज़ उठाने की बेहतरीन मिसाल इस दौर में इससे बड़ी नहीं मिल सकती। उनसे ख़िलाफ़त पाई। लेकिन अल्लाह तआला ने मुक़ाम बड़ा दिया। हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही रहमतुल्लाहि अलैहि के शागिर्द थे। बड़ी निस्बत थी, बड़े आलिम थे। लेकिन जब उनका आख़िरी वक़्त आया

तो हज़रत की कैफ़ियत यह थी कि जो भी उनसे मिलने आता, वह उससे मुसाफ़ा करते और मुसाफ़ा करके हालचाल पूछते और हालचाल पूछने के बाद फ़रमाते कि देखो! मेरा अल्लाह तआला से मुलाक़ात का वक़्त क़रीब है। आपने भी तैयारी कर ली होगी। मुझे भी तैयारी करनी है। अच्छा फिर मिलेंगे और रुख़्सत कर देते। फिर दूसरा आता, मुलाक़ात करते, उसका हाल-चाल पूछते और फिर यही फ़रमाते। मेरा अल्लाह तआला से मुलाक़ात का वक़्त क़रीब है। मैंने भी तैयारी करनी है, आपने भी तैयारी कर ली होगी। अच्छा फिर मिलेंगे। कई महीनों तक यही मामूल रहा। शौक़ व इश्तियाक़ इतना बढ़ गया था, सुब्हानअल्लाह। जब कोई परिन्दे को आज़ाद करने लगे ना और परिन्दा देखे कि दरवाज़ा खुलने लगा है तो परिन्दा फड़कता है। ऐसी उनकी कैफ़ियत थी कि मेरा अल्लाह तआला से मुलाक़ात का वक़्त क़रीब है। हमने कभी इस अंदाज़ से सोचा कि मेरा अल्लाह तआला से मुलाक़ात का वक़्त क़रीब है।

ऊँट के दिल में भी ख़ौफ़े ख़ुदा . . .

हदीस पाक में आया है कि एक सहाबी नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी! मेरा एक ऊँट है। मैं सारा दिन मेहनत मज़दूरी करता हूँ। इस ऊँट पर सामान लादता हूँ। और मैं उसके दाने पानी का पूरा-पूरा ख़्याल रखता हूँ। लेकिन जब मैं रात को आकर सोता हूँ तो कभी-कभी वह ऐसी दर्दनाक आवाज़ निकालता है कि मेरी आँख नहीं लगती। अब मैं आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ हूँ। आप दुआ फ़रमा दीजिए कि ऊँट मुझे रात को सोने दिया करे।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब यह बात सुनी तो आपने फ़रमाया, हमने मुद्दई की बात सुन ली। अब हम जिस पर

दावा किया गया है उसको भी बुलाएंगे। चुनाँचे ऊँट को बुलाने का हुक्म दिया गया तो ऊँट बड़े अदब व एहतिराम से चलता हुआ बारगाहे नबुव्वत में हाज़िर हुआ। वह नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने अत्तहिय्यात की शक्ल में बैठ गया। नबी करम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऊँट से इर्शाद फ़रमाया कि तेरा मालिक तेरी शिकायत बयान कर रहा है कि वह तेरे दाने पानी का ख़्याल रखता है लेकिन तू उसका ख़्याल नहीं रखता और रात को ऐसी आवाज़ें निकालता है कि जिससे तेरे मालिक की नींद ख़राब होती है। यह क्या मामला है?

यह सुनकर ऊँट की आँखों में आँसू आ गए और कहने लगा, ऐ अल्लाह के महबूब! मामला यह है कि हम दोनों सारा दिन मेहनत व मज़दूरी करते हैं। यह मेरा ख़्याल रखते हैं और मैं इनका ख़्याल रखता हूँ। यह बोझ लादते हैं और मैं लेकर पहुँचाता हूँ। यह मुझे दाना भी देते हैं। हम दोनों एक दूसरे के अच्छे साथी हैं। नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया कि जब अच्छे साथी हो तो फिर इसको सोने क्यों नहीं देते? वह कहने लगा, ऐ अल्लाह के नबी! मामला यह है कि यह कई बार थके हुए आते हैं, मग़रिब के बाद खाना खाते हैं। उस वक़्त कभी-कभी इन पर नींद ग़ालिब आ जाती है तो सोचते हैं कि मैं थोड़ी देर के लिए कमर सीधी कर लूं। फिर मैं उठकर इशा की नमाज़ पढ़ लूंगा। लेकिन जब कमर सीधी करने के लिए लेटते हैं तो नींद गहरी हो जाती है। इन्होंने इशा की नमाज़ नहीं पढ़ी होती। रात को काफ़ी देर हो जाती है क्योंकि मैं करीब होता हूँ इसलिए मुझे नींद नहीं आती कि अगर इनकी नमाज़ क़ज़ा हो गई तो कहीं ऐसा न हो कि क़यामत के दिन अल्लाह तआला मुझसे पूछें कि तूने अपने साथी को क्यों नहीं जगाया था ताकि वह मेरे हुक्म की पाबन्दी कर लेता। ऐ महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! थकावट की वजह से मेरे ऊपर भी नींद

का ग़लबा होता है मगर मैं अल्लाह तआला की जलालते शान की वजह से डरता हूँ और दर्दनाक आवाज़ें निकालता हूँ कि मेरा मालिक उठ जाए और अपने मालिक की बंदगी कर ले सुब्हानअल्लाह।

(वाकिआते फ़कीर 1/199)

दिल सोज़ी से तौबा का असर

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने में एक बड़ा ही गुनाहगार आदमी था। उसने कभी नेकी नहीं की थी। वह हर वक़्त जवानी वाले शहवानी कामों में लगा रहता था यानी दिन रात नफ़्सानी ख़्वाहिशात को पूरा करने में लगा रहता था। गोया रात दिन वह शैतान बनकर काम करता रहता था। उसके दिल में अल्लाह तआला की तरफ़ ध्यान ही नहीं जाता था। वह ज़हनी ख़्वाहिशात में इतना मस्त था कि अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के तरफ़ "वही" नाज़िल फ़रमाई कि ऐ मेरे प्यारे मूसा! फ़लाँ बंदे को जाकर मेरा पैग़ाम दे दो कि तुम्हें मैंने बंदगी के लिए भेजा था मगर तुमने दुनिया में जाकर नाफ़रमानी की। तुमने इतने बड़े गुनाह कि गुनाहों ने तुम्हें घेर लिया है। अब मैं तुमसे नाराज़ हूँ। इसलिए मैं तुम्हें नहीं बख़्शूंगा और क़यामत के दिन तुम्हें जहन्नम का अज़ाब दूंगा। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने जब यह पैग़ाम सुनाया कि तुमने इतने गुनाह किए हैं कि अल्लाह तआला तुझसे नाराज़ हैं और फ़रमाते हैं कि ऐ मेरे बंदे मैं तुझ पर गुस्सा हूँ। तूने क़दम-क़दम पर मेरे हुक्मों को तोड़ा है और मेरे पैग़ंबर अलैहिस्सलाम की सुन्नतों को छोड़ा। लिहाज़ा मैं तुम से ख़फ़ा हूँ। अब मैं तुझे नहीं बख़्शूंगा और तुझे जहन्नम में डालूंगा। उस बंदे ने जब यह बात सुनी तो उस बंदे के दिल में अजीब तरह की कैफ़ियत पैदा हुई। वह सोचने लगा कि ओहो! मैं इतना गुनाहगार हूँ कि परवरदिगार मुझ से नाराज़ हो गए हैं। और

अल्लाह ने अपने पैग़ंबर अलैहिस्सलाम के ज़रिए पैग़ाम भेज दिया कि मैं तुझसे ख़फ़ा हूँ। तुझसे राज़ी नहीं हूँगा और तुझे जहन्नम की आग में डालूंगा। वह यही बातें सोचते-सोचते जंगल की तरफ़ निकल गया। वह वीराने में जाकर अपने परवरदिगार से मुनाजात करने लगा कि ऐ अल्लाह! मैं अपने गुनाहों का इक़रार करता हूँ। मैंने बड़े-बड़े गुनाह किए, कोई वक़्त नहीं छोड़ा। दिन में भी किए, रात में भी किए, महफ़िल में भी किए और तन्हाई में भी किए। ऐ अल्लाह! मैंने गुनाह में कोई कसर नहीं छोड़ी। मैंने सर पर गुनाहों के बड़े-बड़े बोझ लाद लिए हैं मगर ऐ अल्लाह! अगर मेरे पास गुनाहों के बोझ हैं तो तेरे पास भी अफ़ुव्व (माफ़ी) व दरगुज़र के ख़ज़ाने हैं। अल्लाह क्या मेरे गुनाह इतने हो गए कि तेरी अफ़ुव्व व दरगुज़र के ख़ज़ानों से भी ज़्यादा हैं? मेरे मौला! अगर तू किसी को पीछे धकेलेगा तो फिर कौन ग़म धोने वाला होगा। ऐ बकसों के दस्तगीर! मैं तेरे सामने फ़रियाद करता हूँ। तू मुझे मायूस न फ़रमा। तेरी रहमत मेरे गुनाहों से ज़्यादा है और मेरे गुनाह तेरी रहमत से थोड़े हैं। आख़िर उसने यहाँ तक कह दिया, ऐ परवरदिगार! अगर मेरे गुनाह इतने ज़्यादा हैं कि बख़्शिश के क़ाबिल नहीं हैं तो फिर मेरी एक फ़रियाद सुन ले कि तेरी जितनी मख़्लूक़ है उन सब मख़्लूक़ के गुनाह तू मेरे सर डाल दे। मुझे क़यामत के दिन अज़ाब दे देना मगर अपने बाक़ी बंदों को माफ़ कर देना।

उसके ये बोल अल्लाह को पसन्द आ गए। लिहाज़ा अल्लाह तआला ने फ़ौरन मूसा अलैहिस्सलाम की तरफ़ "वही" नाज़िल की कि ऐ मेरे पैग़म्बर! उस बंदे को बता दीजिए कि जब तुमने मेरी रहमत का इतना सहारा लिया तो सुन लो कि मैं हन्नान हूँ, मन्नान हूँ, रहीम हूँ, करीम हूँ। लिहाज़ा मैंने तुम्हारे गुनाहों को माफ़ कर दिया बल्कि तुम्हारे गुनाहों को नेकियों में बदल दिया।

नदामत पर निजात, जुर्रात पर अज़ाब

बनी इस्राईल में एक बुज़ुर्ग दामूस रह० थे। एक बार वह अपनी बस्ती से बाहर निकले। सामने पहाड़ पर नज़र पड़ी तो सारे पहाड़ सूखे नज़र आए। उस पर हरियाली नहीं थी। यह देखकर उनके दिल में ख़्याल पैदा हुआ कि कितना अच्छा होता कि इन पर हरियाली होती, झरने होते, मुर्ग़ज़ारें होतीं और ख़ूबसूरत मंज़र होता। अल्लाह तआला ने दिल में इल्हाम फ़रमाया कि ऐ मेरे प्यारे बंदे! तूने बंदगी छोड़ दी और अब तू मेरा सलाहकार बन गया। अब तुझे मेरी तख़्लीक़ में कमी और कोताही नज़र आती है। जब यह इल्हाम हुआ तो वह घबरा गए और उन्होंने अपने दिल में यह नीयत कर ली कि जब तक अल्लाह तआला की तरफ़ से मेरे दिल में साफ़ तौर पर यह बात नहीं आएगी कि मेरी कोताही को माफ़ कर दिया गया है मैं उस वक़्त तक अपने आपको सज़ा दूंगा। यह अल्लाह वालों का तरीक़ा रहा है कि अगर कभी कोताही हो जाती तो वह अपने आप को सज़ा दिया करते थे। चुनाँचे दामूस रह० ने सज़ा के तौर पर दिल में तय कर लिया कि जब तक मेरी ग़ल्ती माफ़ नहीं हो जाती न तो खाना खाऊँगा और न पानी पिऊँगा। बस रोज़े की हालत में रहूंगा। यह बंदे और अल्लाह का अपना मामला होता है। हज़रत अक़्दस मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह० ने लिखा है कि बंदे से अगर कोई गुनाह हो जाए तो वह अपने ऊपर कोई सज़ा मुक़र्रर कर सकता है। मसलन मैं इतना पैसा सदक़ा करूंगा या मैं इतनी नफ़्ले पढ़ा करूंगा या कोई ऐसा काम कि जिससे इंसान के नफ़्स पर बोझ पड़े और वह घबराए। उन्होंने भी यही किया कि दिल में सज़ा के तौर पर यह फ़ैसला कर लिया।

दामूस रह० दो चार दिन के बाद एक क़रीबी बस्ती में गए। वहाँ कोई तक़रीब हो रही थी। बस्ती वालों ने खाना वग़ैरह पकाया हुआ

था। जब दस्तरख़्वान लगा तो लोगों ने उनसे कहा कि आप भी खाएं। उन्होंने माफ़ी चाही मगर कुछ लोग पीछे पड़ गए कि जी आप ज़रूर खाएं। उन्होंने कहा कि नहीं मुझे खाना नहीं है। उनमें से एक ने पूछा कि आख़िर वजह क्या है? उन्होंने वजह बता दी कि मुझ से यह ग़लती हुई है। वह कहने लगा, जनाब! यह कोई बड़ी बात नहीं है। हम सब बस्ती वाले मिलकर इस गुनाह का अज़ाब भुगत लेंगे। आप खाना खा लीजिए। कहने वालों ने जैसे ही यह कहा तो अल्लाह तआला ने फ़ौरन दामूस रहमतुल्लाहि अलैहि के दिल में यह इल्हाम फ़रमा दिया कि मेरे प्यारे! आप इस बस्ती से फ़ौरन निकल जाएं। चुनाँचे जैसे ही वह निकले अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उस बस्ती वालों को ज़मीन में धंसा दिया।

अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० की तौबा

चुनाँचे अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० जवानी में किसी औरत के साथ ताल्लुक़ात बना बैठे। यहाँ तक कि उसको कहा कि मिलने के लिए कोई वक़्त निकालो। उसने कोई रात का वक़्त दिया। ये सारी रात इंतिज़ार में रहे। मगर मुलाक़ात न हो सकी। इसी हालत में सुबह की अज़ान हो गई तो दिल पर चोट लगी कि मैं एक औरत की वजह से सारी रात जागता रहा। मुझे इस औरत का भी मिलाप नसीब न हुआ। काश! मैं अल्लाह तआला की मुहब्बत में सारी रात जागता तो मुझे अल्लाह अपनी विलायत नसीब फ़रमा देते। यह सोचकर दिल में पक्की तौबा कर ली और इल्म हासिल करने के लिए उलमा की एक बस्ती की तरफ़ चल पड़े। चुनाँचे जब शहर से बाहर निकले। एक और बुज़ुर्ग भी उस बस्ती के क़रीब जा रहे थे। सख़्त गर्मी के आलम में यह बादल के साए में चलते रहे। यह समझते रहे कि शैख़ की बरकत है कि बादल का साया है और शैख़ भी यही समझते रहे कि

ऊपर अल्लाह की रहमत हुई कि बादल का साया है। लेकिन जब अपनी-अपनी मंज़िल की तरफ़ जाते हुए दोनों एक दूसरे से जुदा हुए तो उस शेख़ की हैरत की इंतिहा न रही कि बादल का साया तो अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० के सर पर था। वह वापस लौटे और अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० को पकड़कर कहा कि मुझे अल्लाह के लिए बताओ कि तुमने कौन सा अमल किया कि अल्लाह ने गर्मी की तेज़ी से हिफ़ाज़त के लिए तेरे सर पर बादल का साया कर दिया? उनकी आँखों में आँसू आ गए। कहा कि मैंने एक गुनाह से सच्ची तौबा की और मैं नेक बनने के लिए उलमा की बस्ती की तरफ़ चल पड़ा। मेरा परवरदिगार कितना क़द्रदान है कि उसने दुनिया की धूप में बचने का इंतिज़ाम कर दिया। मैं उम्मीद करता हूँ कि वह जहन्नम की आग से भी बचा देगा।

तो जो परवरदिगार इतना क़द्रदान हो कि आदमी अगर गुनाहों से सच्ची तौबा कर ले तो परवरदिगार दुनिया की तपिश से बचा देता है तो फिर जहन्नम की आग से उन्हें क्यों नहीं बचाएगा।

एक बदनाम ज़माना की बदलती ज़िंदगी

हसन बसरी रह० का दौर है। आपकी एक शागिर्द जो बाक़ायदा आपका दर्स सुनने के लिए आया करती थी। उसका एक बेटा था। मियाँ का अच्छा कारोबार था। यह नेक औरत थी, इबादतगुज़ार औरत थी। बाक़ायदा दर्स सुनती और नेकी पर ज़िंदगी गुज़ारती थी। इस बेचारी की जवानी में शौहर चल बसा। उसने दिल में सोचा कि एक बेटा है। अगर मैं दूसरा निकाह कर लूंगी तो शौहर तो मिल जाएगा मगर बच्चे की ज़िंदगी बर्बाद हो जाएगी। पता नहीं यह इसके साथ कैसा सुलूक करेगा। अब वह जवान होने के क़रीब है। यही मेरा सहारा सही। लिहाज़ा यह सोचकर माँ ने जज़्बात की क़ुर्बानी दी।

ऐसी औरत को हदीस पाक में आया है कि जो इस तरह अगली शादी न करे और बच्चों की तर्बियत और हिफ़ाज़त के लिए इसी तरह ज़िंदगी गुज़ार दे तो बाक़ी पूरी ज़िंदगी उसको ग़ाज़ी बनकर ज़िंदगी गुज़ारने का सवाब दिया जाएगा क्योंकि जिहाद कर रही है अपने नफ़्स के ख़िलाफ़। लिहाज़ा वह माँ घर में बच्चे का पूरा ख़्याल रखती थी लेकिन यह बच्चा जब घर से बाहर निकल जाता है तो माँ की निगरानी न हो पाती। अब उसके पास माल की भी कमी नहीं थी। उठती जवानी थी और यह उठती जवानी क्लोरोफ़ार्म के नशे की तरह होती है। जैसे उसका नशा मरीज़ को सुंघाओ तो कुछ पता नहीं चलता। दिन कब चढ़ा, कब डूबा? यह जवानी भी इसी तरह होती है। दीवानी, मस्तानी, शहवानी। कुछ पता नहीं होता इस जवानी में नौजवानों का क्या हो रहा है। अपने जज़्बात में लगे होते हैं। चुनाँचे वह बच्चा बुरी संगत में फंस गया। शबाब और शराब के कामों में लग गया। माँ बराबर समझाती लेकिन बच्चे पर कोई असर न होता। चिकना घड़ा बन गया। वह उनको हसन बसरी रह० के पास लेकर आती। हज़रत भी उसको कई कई घंटे समझाते। लेकिन उसको नेकी की तरफ़ ध्यान ही नहीं था। कभी कभी माँ को मिलने आता। माँ फिर समझाती और फिर उसको हज़रत के पास ले जाती। हज़रत भी समझाते, दुआएं भी करते। मगर उसके कान पर जूँ न रेंगती यहाँ तक कि हज़रत के दिल में यह बात आई कि शायद इसके दिल पर मुहर लग गई है, ﴿كذالك يطبع الله على كل قلب متكبر جبار﴾ कभी-कभी अल्लाह मुहरे जब्बारियत लगा देता है। दिलों को पत्थरों से भी ज़्यादा सख़्त कर देता है। लिहाज़ा हज़रत के दिल में यह बात आई कि शायद अब इसका दिल पत्थर बन गया है। मुहर लग गई है। माँ तो माँ होती है। दुनिया में माँ ही तो है जो अच्छों को भी प्यार करती है बुरों को भी प्यार करती है। उसकी नज़र में तो बच्चे बच्चे ही होते

हैं। सारी दुनिया अच्छों से प्यार करती है मगर माँ यह हस्ती है औलाद बुरी भी हो जाए वह कहेगी किस्मत उनकी मगर मेरे तो बच्चे हैं। माँ तो उनको नहीं छोड़ सकती। बाप भी कह देता है कि घर से निकल जाओ, इसको धक्का दो, मगर माँ कभी नहीं कहती। उसके दिल में अल्लाह ने मुहब्बत रखी है। चुनाँचे माँ उसके लिए फिर खाना बना देती है। उसके लिए दरवाज़ा खोलती है और फिर प्यार से समझाती है। मेरे बेटे नेक बन जा। ज़िंदगी अच्छी कर ले। अब देखिए अल्लाह की शान कि कई साल बुरे कामों में लगकर उसने सेहत तबाह कर ली और दौलत भी तबाह कर ली। उसके जिस्म में बीमारियाँ पैदा हो गयीं। डॉक्टरों ने बीमारी भी ला इलाज बताई शबाब के कामों में पड़कर टीबी तो होती है। तो लाइलाज बीमारी लग गई। लिहाज़ा अब उठने बैठने की भी हिम्मत न रही और बिस्तर पर पड़ गया। इतना कमज़ोर हो गया कि अब उसको आख़िरत का सफ़र नज़र आने लगा। माँ फिर भी पास बैठी हुई मुहब्बत से समझा रही है।

मेरे बेटे तूने जो ज़िंदगी का हश्र कर लिया तो कर लिया। अब भी वक़्त है तू माफ़ी मांग ले, तौबा कर ले। अल्लाह तआला गुनाहों को माफ़ करने वाले हैं। जब माँ ने फिर प्यार व मुहब्बत से समझाया, फिर उसके दिल पर कुछ असर हुआ। कहने लगा, माँ मैं कैसे तौबा करूं? मैंने तो बहुत बड़े-बड़े गुनाह किए हैं। माँ ने कहा, बेटा हज़रत से पूछ लेते हैं। कहा, अम्मी! आप ऐसा करें कि हसन बसरी रह० के पास जाएं और हज़रत को बुलाकर ले आएं। माँ ने कहा, ठीक है बेटा, मैं हज़रत के पास जाती हूँ। बच्चे ने कहा कि अम्मी अगर आप के आने तक मैं दुनिया से रुख़्सत हो जाऊँ तो अम्मी हसन बसरी रह० से कहना कि मेरे जनाज़े की नमाज़ भी वही पढ़ाएं। चुनाँचे माँ हसन बसरी रह० के पास गयीं। हज़रत खाने से फ़ारिग़ हुए थे और

थके हुए थे और दर्स भी देना था। इसलिए कैलूला के लिए लेटना चाहते थे। माँ ने दरवाज़ा खटखटाया। पूछा कौन? अर्ज़ किया हज़रत मैं आपकी शागिर्दा हूँ। मेरा बच्चा अब आख़िरी हालत में है। वह तौबा करना चाहता है। आप घर तशरीफ़ ले चलें और मेरे बच्चे को तौबा करा दें। हज़रत ने सोचा कि अब फिर वह इसको धोका दे रहा है। फिर वह इसका वक़्त ज़ाए करेगा और अपना भी करेगा। सालों गुज़र गए, अब तक कोई बात असर न कर सकी, अब क्या करेगी। कहने लगे मैं अपना वक़्त क्यों ज़ाए करूं, मैं नहीं आता। माँ ने कहा, हज़रत उसने तो यह भी कहा है कि अगर मेरा इंतिक़ाल हो जाए तो मेरे जनाज़े की नमाज़ हसन बसरी रह० पढ़ाएं। हज़रत ने कहा, मैं उसके जनाज़े की नमाज़ भी नहीं पढ़ाऊँगा। उसने तो कभी नमाज़ ही नहीं पढ़ी और कुछ हज़रात थे इस उम्मत में जो बेनमाज़ी के जनाज़े की नमाज़ नहीं पढ़ाते थे। वह कहते हैं कि ﴿من ترك الصلوة متعمدا فقد كفر﴾ यह तो इमाम आज़म रह० पर अल्लाह तआला रहमतें नाज़िल बरसाए कि उन्होंने गुंजाइश रखी कि आप फ़रमाते हैं कि उसने काफ़िरों वाला काम तो किया मगर कुफ़्र का हुक्म इस पर नहीं होता। तो हसन बसरी रह० ने फ़रमाया कि उसने तो कभी नमाज़ नहीं पढ़ी लिहाज़ा मैं जनाज़ा भी नही पढ़ाऊँगा और न पढ़ूँगा। अब वह शागिर्दा थी चुपके से उठी। ग़मगीन दिल है। एक तरफ़ बेटा बीमार दूसरी तरफ़ हज़रत का इंकार उसका तो ग़म दुगना हो गया। वह बेचारी आँखों में आँसू लिए हुए अपने घर की तरफ़ वापस आई। बच्चे ने माँ को ज़ार व क़तार रोता देखा। अब उसका दिल मोम हो गया था। कहने लगा, अम्मी! आप क्यों इतना ज़ार व क़तार रो रही हैं? माँ ने कहा, बेटा! एक तेरी यह हालत है और दूसरी तरफ़ हज़रत ने तेरे पास आने से इंकार कर दिया। तू इतना बुरा क्यों है कि वह तेरे जनाज़े की नमाज़ भी नहीं पढ़ाना चाहते? अब यह बात बच्चे ने सुनी

तो उसके दिल पर चोट लगी। उसके दिल पर सदमा हुआ। कहने लगा, अम्मी! मुझे मुश्किल से सांस आ रही है। ऐसा न हो मेरी सांस उखड़ने वाली हो। लिहाज़ा मेरी एक वसीयत सुन लीजिए। माँ ने पूछा वह क्या? कहा मेरी वसीयत यह है कि जब मेरी जान निकल जाए तो सबसे पहले अपना दुपट्टा मेरे गले में डालना, मेरी लाश को कुत्ते की तरह सहन में घसीटना जिस तरह मुर्दा कुत्ते की लाश घसीटी जाती है। माँ ने पूछा, बेटा वह क्यों? कहा, अम्मी! इसलिए कि दुनिया वालों को पता चले कि जो अपने रब का नाफ़रमान और माँ-बाप का नाफ़रमान होता है उसका यह अंजाम हुआ करता है। और अम्मी मुझे क़ब्रिस्तान में दफ़न न करना। माँ ने कहा, बेटे! तुझे क़ब्रिस्तान में क्यों दफ़न न करूंगी? कहा, अम्मी! मुझे इस सहन में दफ़न कर देना। ऐसा न हो कि मेरे गुनाहों की वजह से क़ब्रिस्तान के मुर्दों को तकलीफ़ पहुँचे। जिस वक़्त नौजवान ने टूटे हुए दिल से आजिज़ी की यह बात कही तो परवरदिगार को उसकी यह बात अच्छी लगी। रूह क़ब्ज़ हो गई। अभी रूह निकली ही थी और माँ उसकी आँखें बंद कर रही थी कि बाहर से दरवाज़ा खटखटाया जाता है। औरत ने अंदर से पूछा ﴿من دق الباب﴾ कौन हैं जिसने दरवाज़ा खटखटाया? जवाब आया, मैं हसन बसरी हूँ। कहा, हज़रत आप कैसे? फ़रमाया, जब मैंने तुम्हें जवाब दे दिया और मैं सो गया तो ख़्वाब में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का दीदार नसीब हुआ। परवरदिगार ने फ़रमाया, हसन बसरी! तू मेरा कैसा वली है, मेरे एक वली का जनाज़ा पढ़ने से इंकार करता है? मैं समझ गया कि अल्लाह ने तेरे बेटे की तौबा को क़ुबूल कर लिया है। तेरे बच्चे की नमाज़ जनाज़ा पढ़ने के लिए हसन बसरी आया है।

प्यारे अल्लाह जब आप इतने करीम हैं कि मरने से कुछ लम्हे पहले अगर कोई बंदा शर्मिन्दा होता है तो आप उसकी ज़िंदगी के

गुनाहों को भी माफ़ कर देते हैं तो मेरे मालिक! आज हम आपके घर में बैठे हुए हैं, आज हम अपने जुर्म की माफ़ी मांग रहे हैं, अपनी ख़ताओं की माफ़ी मांग रहे हैं, मेरे मालिक हम मुजरिम हैं, हम अपने गुनाहों का इक़रार करते हैं, अल्लाह हम झूठ नहीं बोल सकते। हमारी हक़ीक़त आपके सामने खुली हुई है। मगर रहमत फ़रमा दीजिए। मेरे मौला! हमारे गुनाहों को माफ़ फ़रमा दीजिए। हमें तो धूप की गर्मी भी बर्दाश्त नहीं होती। अल्लाह तेरे जहन्नम की गर्मी कहाँ बर्दाश्त होगी। ऐ परवरदिगार आलम! हमारी तौबा क़ुबूल फ़रमा लीजिए और बाक़ी ज़िंदगी ईमानी, इस्लामी, क़ुरआनी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दीजिए, आमीन।

याह्य बिन अक्सम रह० की मुए सफ़ेद पर मग़फ़िरत

याह्यह बिन अक्सम रह० को उनकी वफ़ात के बाद किसी ने ख़्वाब में देखा। पूछा, हज़रत आगे क्या बना? फ़रमाया कि अल्लाह तआला के हुज़ूर में पेशी हुई। मुझे अल्लाह तआला ने फ़रमाया, याह्या! तुम मेरे पास क्या लाए हो? मैंने कहा, ऐ अल्लाह! मेरे पास आमाल का ज़ख़ीरा तो है नहीं। अल्लाह पाक एक हदीस मुबारक मैंने सुनी है। पूछा कौनसी हदीस? अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह! मैंने अपने उस्ताद मौमर से सुना, उन्होंने ज़ोहरी से सुना, उन्होंने उरवा से सुना, उन्होंने हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा से सुना, उन्होंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना, उन्होंने जिब्रील अलैहिस्सलाम से सुना और जिब्रील ने आपसे सुना कि आपने फ़रमाया कि मेरा वह बंदा जो कलिमागो हो और उसके बाल सफ़ेद हो जाएं और इस हाल में वह मेरे सामने पेश कर दिया जाए तो उसके सफ़ेद बालों को देखकर मुझे हया आती है और मैं ऐसे बंदे को अज़ाब नहीं दिया करता। अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया कि तुमने भी ठीक सुना,

मौमर ने भी ठीक सुना, ज़ोहरी ने भी ठीक सुना, उरवा ने भी ठीक कहा, आएशा सिद्दीक़ा ने भी ठीक कहा मेरे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी ठीक कहा, जिब्रील ने भी ठीक कहा और हम ने भी सच कहा, मुझे सफ़ेद बालों वाले मोमिन से वाक़ई हया आती है। याह्या, तेरे सफ़ेद बालों को देखकर मैंने जहन्नम की आग को तेरे ऊपर हराम कर दिया।

अल्लाह ही देगा

देखिए एक बूढ़ी औरत थी। बेचारी ग़रीब थी, माज़ूर सी थी। रोटी नहीं मिलती थी। तड़पती थी, घरों से जाकर मांगती थी। कभी किसी के पास होता तो दे देता और जिसके पास न होता तो वह कहता अच्छा बीबी अल्लाह देगा। अल्लाह की शान कि उस बुढ़िया की वफ़ात हो गई। किसी ने ख़्वाब में उसकी ज़ियारत की। पूछा कि क्या हुआ? कहने लगी, मैं अल्लाह के हुज़ूर पेश हुई। फ़रिश्तों ने मुझसे पूछा कि क्या लाई हो? मैं रोने लग गई। मैंने कहा देखो सारी ज़िंदगी दर-दर की ठोकरें खाती रही। जिधर हाथ फैलाती थी वह कहता था, अल्लाह देगा। अब मैं अल्लाह के हुज़ूर में आई हूं तो मैं तो सारी उम्र सुनती रही, अल्लाह देगा, अल्लाह देगा और तुम पूछते हो क्या लेकर आई? तो मुझे अल्लाह कब देगा? उसकी बात अल्लाह तआला को पसन्द आई। कहते हैं इसी पर अल्लाह तआला ने गुनाहों की मग़फ़िरत कर दी। बस मांगना हमारा काम है।

धंसता हुआ क़ारून अगर मुझसे मांगता

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर क़ारून ने किसी औरत के ज़रिए इल्ज़ाम लगवाया। जब हक़ीक़त खुली तो मूसा अलैहिस्सलाम को बड़ा

दुख हुआ। अल्लाह तआला की तरफ़ मुतवज्जेह हुए। ऐ अल्लाह इसने मेरे ऊपर इल्ज़ाम लगाया। फ़रमाया, ऐ मेरे नबी! तू जो हुक्म देगा ज़मीन उसको मानेगी। मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा, ऐ क़ारून धंस जा। क़ारून कुछ धंस गया। ज़मीन को फिर कहा, क़ारून फिर धंस गया। अब क़ारून रो रहा है। मूसा अलैहिस्सलाम मुझे माफ़ कर दीजिए। मगर मूसा अलैहिस्सलाम जलाल में थे। तीसरी बार फिर फ़रमाया, ऐ ज़मीन! इसे निगल जा। ज़मीन उसे निगल गई। जब ज़मीन निगल गई तो अल्लाह तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम की तरफ़ "वही" फ़रमाई, ऐ मेरे प्यारे नबी! आप जलाल में थे। आपने तीन दफ़ा हुक्म दिया। ज़मीन ने उसे निगल लिया। लेकिन मैं अपनी इज़्ज़त व जलाल की क़सम खाकर कहता हूँ कि अगर उस वक़्त क़ारून मेरे सामने माफ़ी मांग लेता और मैं मामला कर रहा होता तो मैं यक़ीनन उसकी तौबा क़ुबूल कर लेता। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त को बंदे की तौबा बहुत महबूब है।

नज़रे करम होती है किसके दिल पर

एक बुज़ुर्ग जा रहे थे। कुछ बच्चे आपस में बहस कर रहे थे। जब क़रीब से गुज़रे तो वे बच्चे कहने लगे, बाबा जी! हम आपस में किसी मसअले पर बहस कर रहे हैं। आप ज़रा फ़ैसला कर दें। उसने कहा, बेटा क्या मसअला है? बच्चे ने कहा, हम आपस में बहस कर रहे हैं कि एक आदमी बड़ा नेक हो। कभी गुनाह न किया हो, उसके दिल पर अल्लाह की ख़ास नज़र रहती है या एक आदमी बड़ा ही गुनाहगार हो और सच्ची तौबा कर ले उसके दिल पर ख़ास नज़र रहती है? वह बुज़ुर्ग फ़रमाने लगे, बेटा! मैं आलिम तो नहीं हूँ, मगर एक बात मेरे तजरिबे में आई है कि मैं कपड़ा बुनता हूँ, खड्डी चलाता हूँ, धागे होते हैं। मेरे तजरिबे में बात आई कि जो धागा टूट

जाता है मैं उसे गिरह लगाता हूँ। उसके बाद उस पर ख़ास नज़र रखता हूँ कि वह दोबारा टूट न जाए। मुमकिन है जो बंदा शैतान के रास्ते को छोड़कर सच्ची तौबा कर ले, अल्लाह से अपनी गांठ बांध ले मुमकिन है उसके दिल पर अल्लाह की ख़ास नज़र रहती हो कि यह बंदा दोबारा न टूट जाए।

टूटे दिल पर रहमत का साया

किताबों में एक दिलचस्प और अजीब वाक़िआ लिखा है कि एक औरत निहायत ही पाक दामन और नेक थी। वह चाहती थी कि मुझे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत नसीब हो। वह दरूद शरीफ़ भी बहुत पढ़ती थी। लेकिन ज़ियारत नहीं होती थी। उनके शौहर बड़े अल्लाह वाले थे। एक दिन उन्होंने अपने शौहर से अपनी तमन्ना ज़ाहिर की कि मेरा दिल चाहता है कि मुझे भी नबी अलैहिस्सलाम की ज़ियारत नसीब हो लेकिन कभी यह शर्फ़ नसीब नहीं हुआ। इसलिए आप मुझे कोई अमल ही बता दें जिसके करने से मैं ख़्वाब में नबी अलैहिस्सलाम की ज़ियारत की सआदत हासिल कर लूँ। उन्होंने कहा मैं आपको अमल तो बताऊँगा लेकिन आपको मेरी बात माननी पड़ेगी। वह कहने लगी आप मुझे जो बात कहेंगे मैं वह मानूंगी। वह कहने लगे कि अच्छा तो बन संवरकर दुल्हन की तरह तैयार हो जाओ। उसने कहा, बहुत अच्छा। चुनाँचे उसने गुस्ल किया, दुल्हन की तरह बन संवरकर बैठ गई तो वह साहब उनके भाई के घर चले गए और जाकर उससे कहा देखो, मेरी कितनी उम्र हो चुकी है। और अपनी बहन को देखो कि वह क्या बनकर बैठी हुई है। जब भाई घर आया और उसने अपनी बहन को दुल्हन के कपड़ों में देखा तो उसने उसे डांटना शुरू कर दिया कि तुम को शर्म नहीं आती। क्या यह उम्र दुल्हन बनने की है? तुम्हारे बाल सफ़ेद हो चुके हैं।

तुम्हारी कमर सीधी नहीं होती और बीस साल की लड़की बनकर बैठी हो। अब जब भाई ने डांट पिलाई तो उसका दिल टूटा और उसने रोना शुरू कर दिया। यहाँ तक रोते-रोते सो गई। अल्लाह की शान देखिए कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उसे उसी नींद में अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत करवा दी, सुब्हानअल्लाह।

वह ज़ियारत करने के बाद बड़ी ख़ुश हुई। लेकिन शौहर से पूछा कि आपने वह अमल बताया नहीं जो आपने कहा था और मुझे ज़ियारत तो वैसे ही हो गई। वह कहने लगे, अल्लाह की बंदी! यही अमल था। क्योंकि मैंने तेरी ज़िंदगी पर ग़ौर किया। मुझे तेरे अंदर हर नेकी नज़र आई। तेरी ज़िंदगी शरिअत व सुन्नत के मुताबिक़ नज़र आई। अलबत्ता मैंने यह महसूस किया कि मैं क्योंकि आपसे प्यार व मुहब्बत की ज़िंदगी गुज़ारता हूँ इसलिए आपका दिल कभी नहीं टूटा। इस वजह से मैंने सोचा कि जब आपक दिल टूटेगा तो अल्लाह तआला की रहमत उतरेगी और आपकी तमन्ना को पूरा कर दिया जाएगा। इसीलिए मैंने एक तरफ़ आपको दुल्हन की तरह बन संवरकर बैठने को कहा और दूसरी तरफ़ आपके भाई को बुलाकर ले आया। उसने आकर आपको डांट पिलाई जिसकी वजह से आपका दिल टूटा और अल्लाह तआला की ऐसी रहमत उतरी कि उसने आपको अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत करवा दी, अल्लाहु अकबर।

ख़ुदा के दर को थाम लीजिए

हाफ़िज़ इब्ने कय्यिम रह० ने एक अजीब बात लिखी है। सुब्हानअल्लाह! फ़रमाते हैं कि मैं एक दफ़ा एक गली से गुज़र रहा था। एक दरवाज़ा खुला। मैंने देखा कि कोई आठ नौ साल का बच्चा

है और उसकी माँ उससे नाराज़ होकर उसको थप्पड़ लगा रही है। उसको धक्के दे रही है और कह रही है कि तू नाफ़रमान बन गया है, मेरी कोई बात नहीं सुनता, कोई काम नहीं करता, दफ़ा हो जा, चला जा यहाँ से। यह कहकर माँ ने जो धक्का दिया तो वह बच्चा घर से बाहर आ गया। फ़रमाते हैं कि माँ ने तो कुंडी लगा ली। अब मैं वहीं खड़ा रह गया कि देखूं अब क्या होता है? फ़रमाते हैं कि बच्चा रो रहा था क्योंकि मार पड़ी थी। ख़ैर वह उठा और कुछ सोचता-सोचता एक तरफ़ को चलने लगा। चलते-चलते वह एक गली के मोड़ पहुँचा। वहाँ खड़े होकर वह कुछ सोचता रहा और सोचने के बाद उसने फिर वापस आना शुरू कर दिया और चलते-चलते अपने घर के दरवाज़े पर आया और आकर बैठ गया। थका हुआ था, रो भी काफ़ी देर से रहा था। दहलीज़ पर सर रखा, नींद आ गई। वहीं सो गया। चुनाँचे काफ़ी देर के बाद उसकी माँ ने किसी काम के लिए दरवाज़ा खोला तो क्या देखती है कि बेटा उसी दहलीज़ पर सर रखा हुआ पड़ा है। माँ का गुस्सा अभी ठंडा नहीं हुआ था। वह फिर नाराज़ होने लगी और कहने लगी कि चला जा यहाँ से, दूर हो जा मेरी निगाहों से। जब उसने फिर उसे डांटा। अब वह बच्चा खड़ा हो गया, आँख में आँसू आ गए। कहने लगा, अम्मी जान ने अपने घर से धुतकार दिया था तो मैंने सोचा था कि मैं चला जाऊँ। मैं बाज़ार में जाकर भीख मांग लूंगा। मुझे कुछ न कुछ मिल जाएगा। अम्मी! मैं किसी के घर का नौकर बनकर रह जाऊँगा। मुझे जगह भी मिल जाएगी। मुझे खाना भी मिल जाएगा। अम्मी यह सोचकर मैं गली के मोड़ तक चला गया था। मुझे दिल में ख़्याल आया कि मुझे दुनिया की सब नेमतें मिल जाएंगी लेकिन अम्मी जो मुहब्बत मुझे आप दे सकती हैं यह मुहब्बत मुझे कहीं नहीं मिल सकती। अम्मी यह सोचकर मैं वापस आ गया हूँ। अम्मी मैं इसी दर पर पड़ा हूँ, तू मुझे धक्के दे या

मार, मैं कहीं नहीं जा सकता। जब उस बच्चे ने यह बात कही तो माँ की ममता जोश में आई। उसने बच्चे को सीने से लगा लिया और कहा मेरे बेटे! अगर तेरे दिल में यह कैफ़ियत है कि जो मुहब्बत मैं तुझे दे सकती हूँ वह कोई नहीं दे सकता तो मेरे दरवाज़े खुले हैं।

इस तरह अगर हम दरबारे ख़ुदावंदी में को थाम लें तो ख़ुदाए पाक अपनी रहमत व मग़फ़िरत से हमें चिमटा लेंगे।

कुत्ते की नसीहत! मालिक के दर को न छोड़िए

एक मुतवक्किल साहब अल्लाह पर तवक्कुल करने की मेहनत कर रहे थे। वह एक वीराने में इबादत कर रहे थे। उन्हें अल्लाह की रहमत से रोज़ाना खाना मिल जाता था। उनको तीन साल तक खाना मिलता रहा। एक बार उन्हें खाना मिलना बंद हो गया। तीन दिन का फ़ाक़ा होने की वजह से लाचार हो गए। चुनाँचे कहने लगे कि किसी बंदे से जा कर खाना लाना पड़ेगा। लिहाज़ा वहाँ से गए और किसी बंदे के दर पर जाकर सवाल किया। उस बंदे ने उसको तीन रोटियाँ दे दीं।

वह रोटियाँ लेकर आ रहे थे कि रास्ते में एक कुत्ता उनके पीछे लग गया। वह इस क़द्र तेज़ी से भौंक रहा था कि उन्होंने समझा कि शायद यह मुझे खा जाएगा। चुनाँचे उन्होंने जान छुड़ाने के लिए कुत्ते को एक रोटी फेंक दी। कुत्ते ने वह रोटी खा ली और फिर उनके पीछे भागा। फिर उन्होंने जान छुड़ाने के लिए दूसरी रोटी भी डाल दी। उसने वह रोटी भी खा ली और फिर उनके पीछे दौड़ा। अभी मंज़िल पर नहीं पहुँचे थे कि कुत्ता फिर उनके पास पहुँच गया। उन्होंने जान छुड़ाने के लिए तीसरी रोटी भी फेंक दी। कुत्ते ने तीसरी रोटी भी खा ली। जब उन्होंने तीसरी रोटी डाली तो साथ ही यह भी कहा कि तुम कितने ज़ालिम हो कि मेरे लिए एक रोटी भी न बचाई। उसके बाद

अल्लाह तआला ने कुत्ते को बात करने की ताक़त अता फ़रमा दी। जी हाँ! जब अल्लाह तआला चाहते हैं तो बुलवा देते हैं। कुत्ते ने उनसे कहा, "मैं ज़ालिम नहीं हूँ बल्कि तुम ज़ालिम हो।" उन्होंने कहा, वह कैसे? कुत्ता कहने लगा वह इस तरह कि आपका मालिक आपको तीन साल तक एक ही जगह बिठाकर रिज़्क़ देता रहा। फिर तीन दिन रोटी न मिली तो आपने अपने रब का दर छोड़कर किसी और के दरवाज़े पर जाकर दस्तक दी। और मुझे देखो कि मेरा मालिक मुझे कई कई दिन रोटी नहीं डालता। मैं भूखा तो रह लेता हूँ मगर मालिक का दर कभी नहीं छोड़ता।

सबने ठुकराया मगर रहमत ने तो थाम लिया

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने का एक बूढ़ा आदमी मुसलमान हुआ और ताबईन में से हुआ। उसने अपनी ज़िंदगी गाना गाने में गुज़ार दी थी। उसकी आवाज़ बड़ी अच्छी थी। जब वह गाना गाता था तो लोग उसके दीवाने थे। उसके चारों तरफ़ सैंकड़ों लोगों का मजमा होता था। उसकी आमदनी बेशुमार थी। उसकी औलाद नहीं थी और उसकी बीवी भी मर गई थी।

जब वह बूढ़ा हो गया तो दांत गिर गए जिसकी वजह से वह गा ही नहीं सकता था। उसकी आमदनी का ज़रिया ख़त्म हो गया। वह मांगने के लिए वाक़िफ़ लोगों के पास जाता रहा। वह कुछ अरसा तो उसे देते रहे। लेकिन कुछ अरसे के बाद उन्होंने भी मना कर दिया। जब सब दोस्तों ने न कर दी तो कई-कई दिन तक खाने को न मिलता। उसको अपनी जवानी की याद आती कि मैं इतना हसीन था, मेरी आवाज़ कोयल की तरह थी। जब मैं गाता था तो हज़ारों लोग मेरी आवाज़ पर मरते थे और मेरी झलक देखने को तरसते थे लेकिन

आज मैं धक्के खाता फिरता हूँ और कोई बंदा मुझे एक वक़्त का खाना देने को तैयार नहीं है। इस बुढ़ापे और कमज़ोरी और भूख की हालत में उसका दिल बड़ा ही खट्टा हुआ। उसने सोचा कि काश! यह रातें मैं अल्लाह के लिए जागा करता तो अल्लाह तआला मुझे कभी अपने दरबार से न धुतकारते लेकिन मैंने तो अपनी जवानी बर्बाद कर दी। न हुस्न व जमाल रहा न माल रहा और न ही कुछ और मेरे पल्ले रहा। अब मैं अपने रब को कैसे मनाऊँ?

वह इसी सोच में गुम होकर जन्नतुलबक़ी में चले गए और क़ब्रों के बीच की जगह में बैठकर अपनी जवानी को याद करके रोने लग गए। उन्होंने रोते-रोते दुआ मांगी,

"रब्बे करीम! मैंने अपनी जवानी बर्बाद कर दी। अब मेरे पास कुछ भी नहीं कि मैं आपके हुज़ूर पेश कर सकूँ। मेरे मुँह में दांत नहीं, पेट में आंत नहीं। अब मैं बूढ़ा हूँ, लाठी के सहारे चलकर आया हूँ। न आँखों में रोशनी है न कानों में सुनवाई। ऐ मालिक! अब मैं शर्मिन्दा हूँ मगर यहाँ आकर बैठता हूँ ताकि मैं अपनी क़ब्र के क़रीब हो जाऊँ।"

यह वाक़िआ मौलाना रोम रह० ने लिखा है। वह फ़रमाते हैं कि जब वह आदमी अपने गुनाहों पर नादिम व शर्मिन्दा होकर रोया तो उसकी आँख लग गई। थोड़ी देर बाद वह उठा तो देखा कि सामने से एक आदमी चला आ रहा है। जब उसने देखा कि वह अमीरुल मुमिनीन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु थे और उन्होंने अपने सर पर कुछ उठाया हुआ था। वह डर गया कि अब अमीरुल मुमिनीन आ गए हैं। वह तो मुझ जैसे का दुर्रे से इंतिज़ाम करते हैं। ऐसा न हो कि मुझे भी चंद दुर्रे लग जाएं।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसे देख लिया और कुछ आगे चले गए। थोड़ी देर बाद लौटकर दोबारा उसकी तरफ़ आए। जब

उसने उन्हें दोबारा अपनी तरफ़ आते हुए देखा तो और ज़्यादा डर गया कि यह फिर मेरी तरफ़ आ रहे हैं। पता नहीं मेरा क्या बनेगा। जब हज़रत उमर उसके पास आए तो उन्होंने वह गठरी अपने सर से उतारकर उसके सामने रखी और फ़रमाने लगे, "भाई खाना खाओ।"

वह बूढ़ा हैरान हुआ कि अमीरुल मुमिनीन मुझे खाना पेश कर रहे हैं। उसने पूछा, "ऐ अमीरुल मुमिनीन! आप मेरे लिए खाना कैसे लाए?" हज़रत उमर ने फ़रमाया, "दोपहर का वक़्त था, मैं कैलुला कर रहा था कि मुझे ख़्वाब में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तरफ़ से पैग़ाम दिया गया कि मेरा एक दोस्त क़ब्रिस्तान में परेशान बैठा है, वह भूखा है, उमर! जाओ और मेरे उस दोस्त को खाना खिलाकर आओ। जब मेरी आँख खुली तो मैंने सोचा कि अल्लाह का दोस्त है। चुनाँचे मैंने अपनी बीवी से कहा जो खाना तैयार है वह दे दो। उसने खाना बांध दिया। मैंने कहा मैं अल्लाह के दोस्त के पास जा रहा हूँ, लिहाज़ा खाना हाथों में नहीं बल्कि अपने सर पर उठाकर ले जाता हूँ ताकि अल्लाह के दोस्त का इकराम हो सके। इसलिए उमर खाना सर पर उठाकर आया है। ऐ अल्लाह के दोस्त खाना खा लो।"

जब उसने यह सुना तो कहने लगा, अच्छा, मैंने अभी थोड़ी देर पहले अपने रब के सामने तौबा की थी। मेरा परवरदिगार कितना करीम है कि उसने मेरे तमाम गुनाहों के बावजूद मेरी नदामत को क़ुबूल कर लिया और वक़्त के अमीरुल मुमिनीन को ख़्वाब में हुक्म दिया कि जाओ मेरे दोस्त को खाना खिलाकर आओ। ऐ अल्लाह! तू कितना करीम है। इस बात को सुनकर वह बूढ़ा इतना रोया कि वहीं रोते-रोते हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के सामने उसने अपनी जान अल्लाह के हवाले कर दी, अल्लाहु अकबर। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त बड़े क़द्रदान हैं। जिस तरह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त क़द्रदान है, अल्लाह तआला हमें भी यह सिफ़्त अता फ़रमा दे। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 12/81)

दरे रहमत को छोड़ना गवारा नहीं

एक बादशाह ने एक आलिम से कहा कि आप बहुत दूर रहते हैं, मुझे आपसे बड़ी मुहब्बत है। आप आएं और मेरे पास आकर रहें। अगर आजकल के किसी बंदे को बादशाह दावत देता तो वह सर के बल चलकर जाता। लेकिन वह अल्लाह वाले थे, जब उन्हें यह पैग़ाम मिला तो वह आए और उन्होंने बादशाह से भरे दरबार में कहा,

"बादशाह सलामत! अगर मैं आपके पास आकर रहूँ और आपकी कोई बांदी हो और आप मुझे किसी दिन देखें कि मैं आपकी उस बांदी के साथ ज़िना कर रहा हूँ तो आपका रवैय्या क्या होगा? बादशाह यह सुनते ही सख़्त गुस्से में आ गया और कहने लगा,

"क्या तू ऐसा इंसान है? तेरी यह कैसे हिम्मत है कि तू मेरे हाँ आए और फिर यहाँ हरामकारी करे।" जब बादशाह ख़ूब गुस्सा हो गया तो वह आलिम कहने लगे, "बादशाह सलामत! अभी तो मैंने वह गुनाह किया नहीं और आप मुझ पर अभी से गुस्सा हो गए। तो मैं उस करीम का दर छोड़कर आपके दर पर कैसे आऊँ जो गुनाह करते हुए देखकर भी मुझ पर गुस्सा नहीं होता, सुब्हानअल्लाह।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 12/145)

एक कफ़न चोर के टूटे दिल पर मग़फ़िरत

फ़क़ीह अबुल्लैस समरक़ंदी रह० ने तंबीहुल ग़ाफ़िलीन में एक क़िस्सा लिखा है। फ़रमाते हैं कि एक बार हज़रत उमर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िरी के लिए आए तो रास्ते में उन्होंने एक नौजवान को देखा जो बहुत ज़ार व क़तार रो रहा था। उसको रोता देखकर हज़रत उमर का दिल पसीज गया। उन्होंने पूछा, ऐ नौजवान! क्या हुआ? वह कहने लगा, "मैंने एक बड़ा गुनाह कर

लिया है। अब मैं अल्लाह के अज़ाब से डर रहा हूँ कि क्या कर बैठा। सख़्त परेशान हूँ। लिहाज़ा मेहरबानी फ़रमा कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में मेरी सिफ़ारिश फ़रमा दीजिए।

हज़रत उमर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो रो रहे थे। नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया, उमर! क्यों रो रहे हो? अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के महबूब! मैं आपकी ख़िदमत में हाज़िर हो रहा था। रास्ते में एक नौजवान को देखा जो कोई बड़ा गुनाह कर बैठा था। वह बहुत रो रहा था। उसकी आह व ज़ारी ने मुझे भी रुला दिया। नबी अलैहिस्सलाम ने अंदर आने की इजाज़त अता फ़रमा दी तो वह नौजवान आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ और वहाँ भी रोना शुरू कर दिया यहाँ तक कि वह फूट-फूट कर रोने लगा। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, ऐ नौजवान! क्या हुआ? उसने कहा, ऐ अल्लाह के नबी! मैं बहुत बड़ा गुनाह कर बैठा हूँ।

नबी अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, "क्या तेरा गुनाह बड़ा है या अल्लाह का अर्श बड़ा है?

वह कहने लगा, ऐ अल्लाह के नबी! मेरा गुनाह बड़ा है।

नबी अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, तेरा गुनाह बड़ा है या कुर्सी बड़ी है?

वह कहने लगा, ऐ अल्लाह के नबी! मेरा गुनाह बड़ा है।

नबी अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, क्या तूने शिर्क किया है?

उसने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी! मैंने शिर्क तो नहीं किया।

नबी अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, क्या तूने अल्लाह के किसी बंदे को क़त्ल कर दिया है?

उसने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी! मैंने किसी बंदे को क़त्ल भी नहीं किया।

नबी अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, तो फिर ऐसा कौन सा गुनाह है कि जिसको तू इतना बड़ा समझ रहा है?

उसने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के महबूब! मेरा गुनाह बहुत बड़ा है। मैं कई साल से कफ़न चोरी का काम करता था। मुर्दों के कफ़न उतारकर बेचता और अपनी ज़रूरत पूरी करता। कुछ दिन पहले अंसार की एक नौजवान लड़की दफ़न की गई। मैंने अपनी आदत के मुताबिक़ रात को जाकर उसका का कफ़न उतारा और जब कफ़न उताकर जाने लगा तो शैतान ग़ालिब आया और उसने मेरी शहवत को उभार दिया। मैं पलटा और मैंने उस मुर्दा लड़की के साथ ज़िना किया। जब ज़िना करके उठने लगा तो मुझे यूँ आवाज़ आई कि जैसे वह लड़की बोल रही हो और कह रही हो कि ऐ अल्लाह के बंदे! तूने मुझे मुर्दों के मजमे में नंगा कर दिया और कल क़यामत के दिन अल्लाह के हुज़ूर हालते जनाबत में खड़ा होने के लिए मजबूर कर दिया। अब उसकी आवाज़ की वजह से मेरे दिल पर ऐसा रौब है कि मैं समझता हूँ कि मुझ पर अल्लाह तआला का कोई ग़ज़ब है और मैं अल्लाह की पकड़ में हूँ।

जब नबी अलैहिस्सलाम ने यह सुना तो आपको भी बड़ा ताज्जुब हुआ और आपने फ़रमाया, तूने बहुत बड़ा गुनाह किया है। तूने मुर्दा लड़की के साथ ऐसा सुलूक किया। जब अल्लाह के महबूब ने भी फ़रमा दिया कि यह एक बड़ा गुनाह है तो वह नौजवान उठा और रोता हुआ बाहर चला गया। उसने सोचा कि इस वक़्त अल्लाह के महबूब नाराज़ हैं। कहीं कोई ऐसी बात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्यारे मुँह से न निकल जाए जो मेरी बर्बादी का सबब बन जाए। इसलिए वह बाहर चला गया।

जब वह वहाँ से निकला तो सीधा पहाड़ों में चला गया। वह नौजवान चालीस दिन तक नमाज़ें पढ़ता रहा। सज्दे करता रहा और माफ़ी मांगता रहा। उसके दिल को आग लगी हुई थी। वह रो रोकर अल्लाह को मना रहा था। वह अल्लाह के सामने आजिज़ी करता कि ऐ अल्लाह! मेरे मालिक! मैं आपके महबूब की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और उन्होंने भी फ़रमाया, कि यह तो बहुत बड़ा गुनाह है। ऐ अल्लाह! मैं अब कहाँ जाऊँ? मेरा तो तेरे सिवा कोई नहीं। जैसा कि कहने वाले ने कहा है—

मैं तेरे सामने झुक रहा हूँ ख़ुदा
मेरा कोई नहीं अल्लाह तेरे सिवा

जब उसने चालीस दिन माफ़ी मांगी और अल्लाह तआला को मनाया तो नबी अलैहिस्सलाम के पास जिब्रील अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए। जिब्रील अलैहिस्सलाम ने आपकी ख़िदमत में अल्लाह तआला के सलाम पेश किए और अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के महबूब! अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने पूछा है कि ऐ महबूब बताइए कि क्या मख़्लूक को आपने पैदा की है या मैंने पैदा की है?

नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया, अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने मुझे भी और सारी मख़्लूक को भी पैदा फ़रमाया। फिर जिब्रील ने अर्ज़ किया, अल्लाह तआला ने पूछा है कि क्या मख़्लूक को आप रिज़्क देते हैं या मैं देता हूँ?

नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया, मुझे भी और सारी मख़्लूक को भी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ही रिज़्क अता फ़रमाते हैं। जब ये बातें हो गयीं तो तीसरी बात पूछी गई कि मख़्लूक को मैंने माफ़ करना है या किसी और ने करना है? नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया, अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने अपनी मख़्लूक को माफ़ करना है। महबूब

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब यह फ़रमाया तो जिब्रील अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने पैग़ाम भेजा है कि ऐ महबूब! उस बंदे ने मेरे सामने रो-रो कर इतनी माफ़ी मांगी कि मैंने उस बंदे के गुनाह को माफ़ कर दिया, सुब्हानअल्लाह! सुब्हानअल्लाह। फिर अल्लाह के महबूब ने सहाबी को भेजा कि उस नौजवान के पास जाओ और उसको ख़ुशख़बरी सुना दो कि तेरी आजिज़ी अल्लाह रब्बुइज़्ज़त के हाँ क़ुबूल हो गई और परवरदिगार ने तेरी मग़फ़िरत का पैग़ाम भेज दिया है। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 12/146)

بسم الله الرحمن الرحيم

﴿إِنَّ الشَّيْطَانَ لِلإِنْسَانِ عَدُوٌّ مُّبِينٌ﴾

शैतान

और

गुनाह व मआसियत

शैतान और गुनाह व मआसियत

मुनाजात की लज़्ज़त से महरूम कौन?

गुनाहों की वजह से इंसान मुनाजात की लज़्ज़त से महरूम हो जाता है। बनी इस्राईल का एक आलिम था। उससे कोई गुनाह हो गया। एक बार वह दुआ मांगते हुए कहने लगा, ऐ अल्लाह! मैंने तो आपकी नाफ़रमानी की मगर आपने मुझ पर नेमतें बरक़रार रखीं। यह तेरा कितना बड़ा एहसान है। अल्लाह तआला ने उसके दिल में बात डाली कि तुम्हें इसकी सज़ा मिल रहीं है। मगर क्योंकि तुम्हारी आँखों पर पर्दे पड़े हुए हैं। इसलिए तुम्हें वह सज़ा नज़र नहीं आ रही है। उसने फ़ौरन दुआ मांगी, ऐ अल्लाह! आप खोल कर बता दीजिए कि मुझे गुनाहों की सज़ा कैसे मिल रही है? अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने दिल में बात डाली की क्या तुम महसूस नहीं करते कि जब से तुमने यह गुनाह शुरू किया है हमने उसी दिन से तुम्हें अपनी मुनाजात की लज़्ज़त से महरूम कर दिया है। (ख़ुतबात ज़ुलफ़क़्क़ार:10/190)

गुनाह का असर घरवालों पर

एक सुनार था। उसकी बीवी बहुत ख़ूबसूरत थी और अच्छी आदत की थी। एक दिन वह दोपहर के वक़्त खाना खाने घर गया तो उसने देखा कि उसकी बीवी ज़ार व क़तार रो रही थी। उसने पूछा, अल्लाह की बंदी! क्या हुआ? कहने लगी कि यह छोटा सा यतीम बच्चा जो हम ने गोद में लेकर पाला था। अब सत्रह साल का हो चुका है। आज मैंने इसे सब्ज़ी लेने बाज़ार भेजा। जब वापस आकर सब्ज़ी देने लगा तो इसने मेरा हाथ पकड़कर दबा दिया। मुझे

इसकी नीयत में ख़राबी नज़र आई। मुझे बहुत ज़्यादा सदमा हुआ है कि मैं इसके लिए माँ की हैसियत रखती हूँ और इसकी मेरे बारे में यह सोच है। मैं इस सदमे की वजह से बैठी रो रही हूँ कि वफ़ा दुनिया से उठ गई है। यह सुनकर सुनार की आँखों में भी आँसू आ गए। बीवी कहने लगी, अब आप क्यों रो रहे हैं? उसने कहा यह इस बच्चे की कमी नहीं बल्कि मेरी अपनी कमी है। उसने पूछा, वह कैसे? वह कहने लगा कि आज मेरे पास औरतें चूड़ियाँ ख़रीदने के लिए आयीं। उनमें से एक औरत चूड़ी पहनना चाहती थी। मगर उससे पहनी नहीं जा रही थी। उसने मुझे कहा कि आप मुझे चूड़ी पहना दें। जब मैंने उसे चूड़ी पहनाई तो उसके हाथ मुझे अच्छे लगे। इसलिए मैंने उसे चूड़ी पहनाने के बीच उसके हाथों को शहवत के साथ दबा दिया था। उसका नतीजा यह निकला कि मेरी बीवी का हाथ किसी और ने शहवत के साथ दबा दिया।

एक मुअज़्ज़िन का इबतरनाक अंजाम

एक मुअज़्ज़िन मिस्र की जामा मस्जिद में अज़ान दिया करता था। ज़ाहिर में वह दीन का काम करने वाला था लेकिन उसके दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा नहीं रहा। उसके दिल में फ़िस्क़ व फ़ुजूर (बदकारी) भर चुका था। एक बार वह अज़ान देने के लिए मिस्र की उस मस्जिद की दीवार पर चढ़ा। मीनार के इधर-उधर मकानात थे। एक मकान में उसकी नज़र पड़ी तो उसे कोई ख़ूबसूरत लड़की नज़र आई। उसके दिल पर ऐसा असर हुआ कि अज़ान देने के बजाए वह नीचे उतरा और उस घर के पास जाकर मालूमात ली कि यह लड़की कौन है? किसी ने कहा फ़लाँ जगह इसका बाप है। यह उसके पास गया और मालूमात की कि आप कौन हैं? उसने कहा कि हम ईसाई हैं और यहाँ नए आकर बसे हैं। अभी एक दिन हुआ है कि हम यहाँ आकर

ठहरे हैं। उसने कहा कि अच्छा मैं चाहता हूं कि मैं आप लोगों के साथ ताल्लुक़ात रखूँ। ईसाई ने कहा, इसके लिए शर्त यह है कि तुम्हें हमारे दीन पर आना पड़ेगा। फिर मैं अपनी बेटी का तुम्हारे साथ रिश्ता भी कर दूंगा। यह बड़ा खुश हुआ। कहने लगा, ठीक है। मैं तुम्हारे दीन को क़ुबूल कर लेता हूं। ईसाई ने कहा, मेरे साथ आओ। वह उसके साथ सीढ़ियाँ चढ़कर मकान पर जाने लगा। अभी चौथी या पाँचवीं सीढ़ी चढ़ ही रहा था कि उसका पाँव फिसला, गर्दन के बल नीचे गिरा और वहीं पर उसकी जान निकल गई। मीनार पर चढ़ा था अज़ान देने के लिए मगर अल्लाह तआला को उसके अंदर फ़िस्क़ व फ़ुजूर नापसन्द था जिसकी वजह से परवरदिगार ने हालात ऐसे बना दिए कि जब वह मीनार से नीचे उतरा, उस वक़्त वह ईमान से ख़ाली था।

अहले दिल पर मासियत

एक बार इमाम अबूहनीफ़ा रह० ने एक नौजवान को नहाते हुए देखा तो महसूस हुआ कि इसके इस्तेमाल हुए पानी में ज़िना के असरात धुलकर जा रहे हैं। वह आदमी थोड़ी देर बाद आप के पास किसी वजह से आया। आपने उसको अच्छे अंदाज़ से समझाया और तंबीह की। उसने कहा, सचमुच मुझ से गुनाह हुआ है। मैं अल्लाह तआला से माफ़ी मांगता हूँ और आज से मैं सच्ची तौबा करता हूँ। उस दिन के बाद से इमाम साहब रह० ने फ़तवा दिया कि इस्तेमाल किए हुए पानी से वुज़ू करना जाएज़ नहीं क्योंकि जब इंसान वुज़ू करता है तो उस वक़्त उसके गुनाह झड़ते हैं। अल्लाह वालों को उन गुनाहों के असरात नज़र आ जाते हैं। इसी तरह जब इंसान जनाबत (नापाकी) का ग़ुस्ल करता है तो अल्लाह वालों को पता चल जाता है कि कहीं इसके पानी में गुनाहों के असरात तो नहीं। नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया,

﴿اللهم ارنا حقائق الاشياء كما هي﴾

ऐ अल्लाह हमें चीज़ों की हक़ीक़त दिखा दीजिए जैसा कि वे हैं।

इसी तरह अल्लाह वालों को भी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त चीज़ों की हक़ीक़त दिखा देते हैं।

गुनाह कभी सामने आ जाते हैं

किताबों में लिखा है कि अल्लामा इब्ने दक़ीक़ और शेख़ ताजुद्दीन सुबकी रह० की यह आदत थी कि जब वह अपने घर से मस्जिद की तरफ़ नमाज़ के लिए जाते थे तो अपने चेहरे पर पर्दा डाल लेते थे। लोग बड़े हैरान होते थे कि यह इनकी अजीब आदत है। एक दिन एक आदमी ने पूछ ही लिया कि हज़रत! क्या वजह है कि आप अपनी चादर से अपने चेहरे को ढांपकर आते हैं? यह सुनकर उन्होंने अपनी चादर उसके ऊपर डाल दी। उसके बाद जब उसने इधर-उधर देखा तो लोग उसे बिगड़ी हुई शक्लों नज़र आए। किसी की शक्ल कुत्तों जैसी, किसी की बंदरों जैसी और किसी की ख़िन्ज़ीर जैसी।

उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु की फ़िरासत ईमानी

एक बार हज़रत उस्मान ग़नी तशरीफ़ फ़रमा थे। इसी बीच एक आदमी उनके पास आया। आपने उसी वक़्त फ़रमाया, लोगों को क्या हो गया कि बेखटके हमारे पास चले आते हैं और उनकी निगाहों से ज़िना टपकता है। यह सुनकर आने वाले ने तसलीम कर लिया कि हज़रत सचमुच मुझ से रास्ते में बदनज़री हो गई थी।

नज़र की हिफ़ाज़त

एक बुज़ुर्ग की ख़िदमत में एक आदमी अपने बेटे को लाया और

अर्ज़ किया हज़रत! इसके लिए दुआ फ़रमा दें। यह एक अच्छी आदत है। पहले ज़माने में भी लोग अपनी औलाद के लिए अल्लाह वालों से दुआ करवाते थे। अल्लाह करे हमें भी अल्लाह वालो की दुआ लग जाए। यह और बात है कि लोग कई बार अपने बेटों को लेकर दुआएं करवाने के लिए आते हैं मगर बाप की अपनी हालत ऐसी होती है कि पहले उसके लिए दुआ करने को दिल करता है कि अल्लाह इसको हिदायत दे। ख़ैर अल्लाह वालों ने उसके बेटे के लिए दुआ कर दी। उनके पास जेब में कोई मीठी चीज़ थी। उन्होंने निकालकर उस बच्चे को देनी चाही। जब उन्होंने वह चीज़ बच्चे की तरफ़ बढ़ाई तो बच्चे ने मुँह फेर लिया और अपने बाप की तरफ़ देखना शुरू कर दिया हालाँकि बचपन में बच्चे के अंदर मीठी चीज़ खाने का बहुत शौक होता है। उन बुज़ुर्ग ने इर्शाद फ़रमाया, ले लो। बच्चे ने फिर नज़रें हटाकर अपने बाप की तरफ़ देखना शुरू कर दिया। उसके वालिद ने उससे कहा, बेटा! हज़रत आपको चीज़ दे रहे हैं, ले लो। जब बाप ने इजाज़त दे दी तो बच्चे ने हाथ बढ़ाया और वह चीज़ ले ली। तो उन बुज़ुर्ग की आँखों में आँसू आ गए। वह आदमी हैरान होकर पूछने लगा, हज़रत आप क्यों रोए? वह फ़रमाने लगे कि हम से यह बच्चा अच्छा है कि मैंने इसको ऐसी चीज़ दी जिसकी तलब इसके अंदर बहुत है लेकिन उसने चीज़ को नहीं देखा बल्कि आपकी तरफ़ देखा कि मेरा अब्बा मुझे क्या कहता है। ऐ काश! हम जो गलियों में फिरते हैं और हमारी नज़रों के सामने अपनी तरफ़ खींचने वाली हस्तियाँ आती हैं हम भी उधर से नज़र फेरकर देखते कि रब्बे तआला क्या कहता है।

चिड़िया की वफ़ादारी

इब्राहीम अलैहिस्सलाम को जब आग में डाला गया तो इतनी बड़ी

आग थी कि वह आसमान से बातें करती थी। उस वक़्त एक चिड़िया अपनी चोंच में पानी लेकर आती और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की आग पर पानी की बूंद डालती थी। किसी दूसरे परिन्दे ने पूछा कि तेरे एक बूंद पानी डालने से क्या होगा, आग तो न बुझेगी? वह कहने लगी यह तो मैं भी जानती हूँ कि आग तो नहीं बुझेगी मगर मैंने इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दोस्ती का हक़ तो निभाना है। यह छोटे-छोटे मदरसे उस चिड़िया की तरह हैं जो अपनी चोंच में अमन व सकून और अल्लाह की रहमत की एक-एक बूंद लेकर गुनाहों की आग पर डालने की कोशिश कर रहे हैं।

कुत्ते की वफ़ादारी

हयातुल हैवान के अंदर लिखा है एक आदमी सफ़र के लिए निकला। रास्ते में उसने एक जगह एक ख़ूबसूरत क़ुब्बा बना हुआ देखा। उसे देखकर अंदाज़ा होता था कि इसकी तामीर पर ख़ूब ख़र्च किया गया है। उस क़ुब्बे पर लिखा हुआ था कि जो आदमी इस क़ुब्बे की तामीर की वजह मालूम करना चाहे वह उस गाँव में जाकर मालूम करे।

उस आदमी के दिल में चसक पैदा हुई कि गाँव में जाकर इस क़ुब्बे की तामीर की वजह मालूम करनी चाहिए। वह उस गाँव में गया और लोगों से पूछना शुरू कर दिया। वह जिससे भी पूछता वह लाइल्मी ज़ाहिर करता। आख़िर पता करते-करते उसे एक ऐसे आदमी का इल्म हुआ जिसकी उम्र दो सौ बरस थी। वह आदमी उनके पास गया और उनसे क़ुब्बे के बारे में सवाल किया। उस बूढ़े आदमी ने बताया कि मैं अपने वालिद से सुना करता था कि इस गाँव में एक ज़मींदार रहता था। उसके पास एक कुत्ता था जो हर वक़्त उसके साथ रहता था और किसी वक़्त भी उससे अलग नहीं होता था। एक

दिन वह ज़मींदार कहीं सैर करने गया और अपने कुत्ते को घर पर ही बांध गया ताकि वह उसके साथ न जा सके। और चलते वक़्त अपने बावर्ची को बुलाकर हिदायत की कि मेरे लिए दुध का खाना तैयार करके रखे। ज़मींदार वह खाना बड़े शौक़ से खाता था। ज़मींदार के घर में एक गूंगी लड़की भी थी। जब ज़मींदार बाहर गया तो वह लौंडी उस बंधे हुए कुत्ते के क़रीब जाकर बैठ गई। कुछ देर बाद ज़मींदार के बावर्ची ने उसके लिए दूध का खाना तैयार किया और उसको एक बड़े प्याले में रखकर उस गूंगी लड़की और कुत्ते के क़रीब लाकर ऊँची जगह पर रख दिया ताकि जब ज़मींदार वापस आए तो उसको आसानी से खाना मिल जाए।

जब बावर्ची खाना रखकर चला गया तो एक काला नाग उस जगह पर आया और उस ऊँची जगह पर चढ़कर उस प्याले में से दूध पीकर चलता बना। कुछ देर के बाद जब ज़मींदार वापस आया और उसने अपना पसन्दीदा खाना तैयार में रखा हुआ देखा तो प्याला उठा लिया और जैसे ही उसको खाने का इरादा किया तो गूंगी लड़की ने बड़े ज़ोर से ताली बजाई और साथ-साथ ज़मींदार को हाथ के इशारे से भी कहा कि वह इस खाने को न खाए। मगर ज़मींदार गूंगी की बात न समझ सका। और एक नज़र गूंगी को देखकर फिर प्याले की तरफ़ मुतवज्जेह हुआ। अभी उसने खाने के लिए हाथ डाला ही था कि इतने में कुत्ता बहुत ज़ोर से भौंका और लगातार भौंकता रहा। यहाँ तक कि जोश में आकर अपनी ज़ंजीर तोड़ने की कोशिश की। ज़मींदार को उन दोनों की हरकतों पर ताज्जुब हुआ और वह सोचने लगा कि आख़िर यह मामला क्या है? वह उठा और प्याले को रखकर कुत्ते के पास गया और उसको खोल दिया। कुत्ते ने ज़ंजीर से आज़ादी पाते ही उस प्याले की तरफ़ छलांग लगाई और झपटा मारकर उस प्याले को नीचे गिरा दिया। ज़मींदार समझा कि कुत्ता खाने की वजह

से बेताब था। उसने अपना पसन्दीदा खाना गिराने पर गुस्से में आकर कुत्ते को कोई चीज़ उठाकर मार दी। लेकिन कुत्ते ने अब भी प्याले में कुछ दूध बचा हुआ देखा तो उसने फ़ौरन अपना प्याले में डाल दिया और बच्चा हुआ दूध पी गया। दूध कुत्ते के हलक़ से नीचे उतरना था कि वह ज़मीन पर गिरकर तड़पने लगा और कुछ देर बाद मर गया। अब ज़मींदार को और भी हैरानी हुई और उसने गूंगी लड़की से पूछा कि आख़िर इस दूध में क्या बात थी कि कुत्ता पीते ही मर गया? उस वक़्त गूंगी ने इशारों से ज़मींदार को समझाया कि इस दूध में से काला नाग कुछ दूध पी गया था जिसके ज़हर की वजह से कुत्ता मर चुका है और वह खुद और कुत्ता इसी वजह से तुमको पीने से रोक रहे थे। जब ज़मींदार के समझ में सारी बात आ गई तो उसने बावर्ची को बुलाया और उसने बावर्ची को डांट लगाई कि उसने खाना खुला हुआ क्यों रखा था। उसके बाद ज़मींदार ने उस कुत्ते को दफ़ना कर उसके ऊपर यह क़ुब्बा बना दिया।

ज़रा सोचिए कि कुत्ते के अंदर कितनी वफ़ादारी होती है कि उसने अपनी जान देकर अपने मालिक की जान बचाई।

कुत्ते की वफ़ादारी

अजाइबुल मख़्लूक़ात में एक वाक़िआ लिखा है कि एक आदमी ने किसी को क़त्ल करके उसकी लाश किसी कुँए में डाल दी। मक़्तूल का कुत्ता वारदात के वक़्त उसके साथ था। वह कुत्ता रोज़ाना उस कुँए पर आता और जब कभी क़ातिल उसके सामने आता तो वह उसे देखकर भौंकने लगता। लोगों ने जब बार-बार इस बात को देखा तो उन्होंने उस जगह को खुदवाया। वहाँ से मक़्तूल की लाश बरामद हुई और उस क़ातिल को सज़ाए मौत दी गई।

शैतान के तजरिबों का निचोड़

एक बार शैतान की हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात हो गई। उन्होंने पूछा तू कौन है? वह कहने लगा, मैं शैतान हूँ। उन्होंने फ़रमाया, तुम लोगों को गुमराह करने के लिए बड़े डोरे डालते फिरते हो। तुम्हारे तजरिबे में कौन सी बात आइ है? वह कहने लगा कि आपने तो बड़ी अजीब बात पूछी है। यह कैसे हो सकता है कि मैं आपको अपनी सारी ज़िंदगी का तजरिबा बता दूँ। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, फिर क्या है बता दे। वह कहने लगा, तीन बातें मेरे तजरिबात का निचोड़ हैं।

1. पहली बात यह है कि अगर आप सदक़ा करने की नीयत कर लें तो फ़ौरन दे देना क्यों कि मेरी कोशिश यह होती है कि नीयत करने के बाद बंदे को भुला दूँ। जब मैं किसी को भुला देता हूँ तो फिर से याद नहीं होता कि मैंने नीयत की भी थी या नहीं।
2. दूसरी बात यह है कि जब आप अल्लाह तआला से कोई वादा करें तो उसे फ़ौरन पूरा कर देना क्योंकि मेरी कोशिश यह होती है कि मैं उस वादे को तोड़ दूँ। मसलन कोई वादा करे कि ऐ अल्लाह! मैं यह गुनाह नहीं करूंगा तो मैं ख़ास मेहनत करता हूँ कि वह इस गुनाह में ज़रूर मुब्तला हो।
3. तीसरी बात यह है कि किसी ग़ैर-महरम के साथ तन्हाई में न बैठना क्योंकि मैं मर्द की कशिश औरत के दिल में पैदा कर देता हूँ और औरत की कशिश मर्द के दिल में पैदा कर देता हूँ।

मैं यह काम अपने चेलों से नहीं लेता बल्कि मैं अपने आप ये काम करता हूँ।

शैतान तहज्जुद में हाज़िर

एक बुज़ुर्ग के बारे में आता है कि एक रात उनकी तहज्जुद की

नमाज़ क़ज़ा हो गई। उन्होंने उसके अफ़सोस की वजह से सुबह उठकर अल्लाह के सामने गिड़गिड़ाकर माफ़ी मांगी। कुछ दिनों के बाद फिर वह रात को सोए हुए थे। उस रात जिहाद की वजह से बहुत ज़्यादा थकावट थी। तहज्जुद की नमाज़ क़ज़ा होने का वक़्त क़रीब था। कोई आदमी आया और उन्हें पकड़कर जगाया और कहने लगा, जी आप उठें और जल्दी से नमाज़ पढ़ लें। तहज्जुद का वक़्त जा रहा है। वह बुज़ुर्ग उठ बैठे और कहने लगे तू तो मेरा बड़ा भला चाहने वाला है कि ऐन वक़्त पर जगा दिया। तुम्हारी मेहरबानी। यह तो बता कि तू कौन है? वह कहने लगा कि मैं शैतान हूँ। उन्होंने कहा, शैतान तो किसी को तहज्जुद के लिए नहीं जगाता। तूने मुझे कैसे जगा दिया, तुम तो किसी का भला नहीं चाहते? वह कहने लगा, मैं आपका भला आज भी नहीं चाह रहा हूँ। वह बुज़ुर्ग बड़े हैरान हुए कि और फ़रमाने लगे कि तूने मुझे तहज्जुद के लिए जगाया और कह रहा है कि मैं भला नहीं चाह रहा। वह मरदूद कहने लगा वजह यह है कि जब आपकी पहली तहज्जुद की नमाज़ क़ज़ा हुई थी तो उस वक़्त आप इतना रोए थे कि आपको उस रोने पर इतना अज्र मिला कि सालों की तहज्जुद पर भी इतना अज्र नहीं मिल सकता। आप आज भी सो गए थे। तहज्जुद का वक़्त जा रहा था। मैंने सोचा कि अगर आप आज भी इतना रोए तो आपको आज फिर उतना अज्र मिल जाएगा। इसलिए मैंने बेहतर समझा कि आपको जगा दूं ताकि आपको सिर्फ़ रात की तहज्जुद का अज्र मिले।

इमाम राज़ी रह० पर इंतिक़ाल के वक़्त शैतान का हमला

इमाम राज़ी रह० एक बहुत बड़े आलिम थे। उन्होंने वजूद बारी तआला के बारे में एक किताब लिखी जिसमें उन्होंने अल्लाह तआला

के वजूद के बारे में सौ दलीलें दीं। जब उनकी वफ़ात का वक़्त करीब आया तो शैतान ने आकर कहा, राज़ी! ख़ुदा तो मौजूद नहीं है। उन्होंने कहा, नहीं ख़ुदा तो मौजूद है। वह कहने लगा, दलील पेश करो। उन्होंने एक दलील दी। शैतान ने उस दलील को तोड़ दिया। उन्होंने दूसरी दलील दी मगर उसने उसको भी तोड़ दिया। उन्होंने तीसरी दलील दी। उसने उसको भी तोड़ दिया। आख़िर उन्होंने अपनी जमा की हुई सौ दलीलें दीं। और उसने उन सौ की सौ दलीलों को तोड़ दिया। अब इमाम राज़ी रह० घबरा गए लेकिन क्योंकि उनके दिल में इख़्लास था। इसलिए अल्लाह तआला ने उनके ईमान की हिफ़ाज़त की। उस वक़्त आपके पीर व मुर्शिद शेख़ नजमुद्दीन कुबरा रह० दूर दराज़ किसी जगह वुज़ू फ़रमा रहे थे। अल्लाह तआला ने उन्हें इमाम राज़ी रह० की परेशानी के बारे में कश्फ़ से इत्तिला दी। उन्होंने गुस्से में आकर वह लोटा जिससे वुज़ू फ़रमा रहे थे दीवार पर दे मारा और इमाम राज़ी को पुकार कर कहा, अरे राज़ी! तू यूँ क्यों नहीं कह देता कि मैं अल्लाह तआला को बग़ैर दलील के एक मानता हूँ। उस वक़्त शेख़ नजमुद्दीन कुबरा रह० का ग़ुस्सा भरा चेहरा इमाम राज़ी रह० के बिल्कुल सामने था। इमाम राज़ी रह० ने यही कहा तो शैतान उनसे दूर हो गया।

इमाम अहमद बिन हंबल रह० पर शैतान की शैतानियत

जब इमाम अहमद बिन हंबल रह० का आख़िरी वक़्त आया तो तलबा ने उनके सामने कलिमा तैय्यबा को दौर करना शुरू कर दिया। उनकी आवाज़ सुनकर इमाम अहमद बिन हंबल रह० ने फ़रमाया, "ला।" फिर थोड़ी देर के बाद आवाज़ निकाल कर कहा, "ला।"

उनके शागिर्द हैरान हुए कि पूरा कलिमा पढ़ने के बजाए सिर्फ़ "ला" पढ़ रहे हैं। जब थोड़ी देर बाद उनकी तबियत संभली और होश में आए तो कुछ बातें भी करने लगे। इस दौरान एक तालिब इल्म ने पूछा, हज़रत! जब हम कलिमा पढ़ रहे थे तो आप पूरा कलिमा पढ़ने के बजाए सिर्फ़ ला कह रहे थे। इसकी क्या वजह थी? इमाम साहब रह० ने फ़रमाया, उस वक़्त शैतान मेरे सामने था और वह मुझसे कह रहा था, अहमद बिन हंबल! तू ईमान बचाकर दुनिया से जा रहा है और मैं उस मरदूद से कह रहा था, "ला।" अभी नहीं, अभी नहीं बल्कि जब तक मेरी रूह निकल नहीं जाती उस वक़्त मैं तुझसे अमन में नहीं हूँ।

एक आबिद की शैतान से कुश्ती

अह्याउल उलूम में लिखा है कि बनी इस्राईल में एक आबिद रहता था। वह हर वक़्त इबादते इलाही में लगा रहता था। एक बार उनके पास कुछ लोग हाज़िर हुए और कहने लगे, हज़रत! यहाँ एक ऐसी क़ौम रहती है जो एक पेड़ की पूजा करती है। अगर हो सके तो उन लोगों को इस पेड़ की पूजा से किसी तरह रोक दिया जाए। यह सुनकर उनको ग़ुस्सा आया और कुल्हाड़ा कंधे पर रखकर उस पेड़ को काटने के लिए चल दिए।

रास्ते में उन्हें शैतान एक बूढ़े आदमी की शक्ल में मिला। उस मरदूद ने उनसे पूछा, जी आप कहाँ जा रहे हैं? उन्होंने कहा, फ़लाँ पेड़ को काटने के लिए जा रहा हूँ। शैतान ने कहा, तुम्हें उस पेड़ से क्या वास्ता? तुम अपनी इबादत में मशग़ूल रहो। एक बेकार के लिए अपनी इबादत क्यों छोड़ते हो? इबादतगुज़ार ने कहा, यह भी इबादत है। शैतान ने कहा, मैं तुम्हें वह पेड़ काटने नहीं दूंगा। आख़िर दोनों में

मुक़ाबला हुआ वह आबिद बहुत जल्द उस पर हावी हो गया। और उसके सीने पर चढ़कर बैठ गया। शैतान ने अपने आपको बेबस देखकर एक चाल चली। अच्छा एक बात सुन। आबिद ने उसे छोड़ दिया। शैतान कहने लगा कि अल्लाह तआला ने तुझ पर फ़र्ज़ तो नहीं किया। तेरा इससे कोई नुक़सान नहीं है। तू तो उसकी पूजी भी नहीं करता। अल्लाह के बहुत से नबी आए। अगर अल्लाह चाहता तो वह किसी नबी के ज़रिए इसको कटवा देता। इसलिए मैं यही कहता हूँ कि तो तू इसको काटने का इरादा छोड़ दे। लेकिन आबिद ने सही इरादे के साथ कहा कि नहीं मैं तो उसको ज़रूर काटूंगा। यह सुनकर शैतान ने फिर उससे लड़ाई शुरू कर दी और वह आबिद फिर सही इरादे की बरकत से उसके सीने पर चढ़ बैठा। अब शैतान ने एक और पैंतरा बदला। वह कहने लगा कि तू एक ग़रीब आदमी है। दुनिया वालों पर बोझ बना हुआ है। अब मैं आर-पार बात कहता हूँ कि तू इस काम से बाज़ आ जा। मैं तुझे तीन दीनार दे दिया करूंगा जो रोज़ाना अपने सिरहाने से मिल जाया करेंगे। इस रक़म से तेरी ज़रूरतें भी पूरी होंगी, ग़रीब लोगों की मदद भी करना और अपने रिश्तेदारों पर एहसान भी। इस तरह तुम्हें बहुत से ज़्यादा सवाब मिलेगा। जबकि पेड़ के काटने से सिर्फ़ पेड़ के काटने का सवाब मिलेगा, इससे ज़्यादा नहीं। उस आबिद ने शैतान की यह बात मान ली। इस तरह उसे अपने तकिए के नीचे से रोज़ाना तीन दीनार मिलना शुरू हो गए। कुछ दिनों के बाद वह दीनार मिलना बंद हो गए तो उसे फिर शैतान पर गुस्सा आया और फिर कुल्हाड़ा उठाकर पेड़ को काटने के लिए चल दिया। रास्ते में वही बूढ़ा फिर मिला और पूछा कि अब कहाँ जाने का इरादा है। आबिद ने कहा कि उसी पेड़ को काटने जा रहा हूँ। उस बूढ़े शैतान ने कहा कि तू उसको नहीं

काट सकेगा। चुनाँचे अब फिर दोनों के बीच झगड़ा हो गया। अब की बार वह बूढ़ा ग़ालिब आ गया और आबिद के सीने पर चढ़ गया। आबिद ने हैरान होकर उससे पूछा कि क्या बात है कि इस बार तू मुझ पर ग़ालिब आ गया? शैतान ने कहा, पहली बार तेरा गुस्सा ख़ालिस अल्लाह के लिए था। इसलिए अल्लाह तआला ने तुझे ग़ालिब रखा। अब क्योंकि इसमें दीनारों के लालच की मिलावट थी इसलिए मैं तुझ पर ग़ालिब आ गया।

शैतान की सवारी और उसका मकर

एक आदमी की बड़ी तमन्ना थी कि शैतान से मेरी मुलाक़ात हो और उससे बात करूं। एक बार उसकी मुलाक़ात शैतान से हो गई। उसके पास बड़े जाल थे। उस आदमी ने पूछा तुम कौन हो? कहने लगा, शैतान हूँ। उसने जाल की तरफ़ इशारा करते हुए पूछा ये सारा कुछ क्या है? किस लिए लिए फिरते हो? कहने लगा कि ये फंदे हैं और जाल हैं जिनमें लोगों को पकड़ता हूँ। उसने पूछा, मेरे लिए कौन सा जाल है? शैतान कहने लगा कि तेरे लिए किसी जाल की ज़रूरत ही नहीं है। उसने कहा, वाह! मैं ऐसा भी नहीं हूँ कि जाल के बग़ैर तेरे हाथ आ जाऊँ। शैतान ने कहा, अच्छा देख लेना। बात आई गई हो गई।

उसके बाद वह आदमी अपने घर की तरफ़ रवाना हुआ। रास्ते में दरिया था। जब वह दरिया के किनारे पहुँचा तो किश्ती जा चुकी थी। लिहाज़ा उसने फ़ैसला कर लिया कि यह दरिया पार करके जाता हूँ। किनारे पर ही एक बुढ़िया आफ़त की पुड़िया जो हड्डियों को ढांचा बन चुकी थी, लाठी लेकर बैठी रो रही थी। उसने पूछा, अम्मा क्या हुआ? कहने लगी, मुझे दरिया के पार जाना था। किश्ती जा चुकी है

और मैं अकेली हूँ। मैं यहाँ रह भी नहीं सकती। मेरे बच्चे घर में अकेले हैं। तू मुझे भी किसी तरह साथ ले जा। मेरे बच्चे तुमको दुआएं देंगे। उसने कहा, मैं तुझे कैसे लेकर जाऊँ? तुम ख़ुद तो जाओगे, मैं तो हड्डियों का ढांचा हूँ। कंधों पर उठाकर ले जाना। उसने कहा, नहीं, नहीं मैं नहीं ले जाता। उसने उसे बड़ी दुआएं दीं और कहा, तुम्हारा भला होगा। मेरे बच्चे अकेले हैं। मैं घर पहुँच जाऊँगी तो वे भी दुआएं देंगे। उसके दिल में बुढ़िया के बारे में हमदर्दी आ गई। उसने कहा, अच्छा, चलें मैं आपको उठा लेता हूँ। पहले तो उसने सोचा कमर पर उठा लेता हूँ। फिर कहने लगा कि कहीं फिसल न जाए लिहाज़ा कहने लगा कि चलो मेरे कंधों पर बैठ जाओ। वह बुढ़िया को कंधों पर बिठाकर दरिया के अंदर दाख़िल हो गया। चलते-चलते जब वह दरिया के बिल्कुल बीच में पहुँचा तो बुढ़िया ने उसके बाल पकड़कर खींचे और कहने लगी, ऐ मेरे गधे तेज़ी से चल। वह आदमी हैरान होकर पूछने लगा कि तू कौन है? उसने कहा मैं वही हूँ जिसने तुझे कहा था कि तुझे क़ाबू में करने के लिए किसी जाल की ज़रूरत नहीं है। अब देख कि तुझे मैंने बग़ैर जाल के कैसे फंसाया। तुझे नज़र नहीं आ रहा था कि मैं ग़ैर महरम हूँ। तूने मुझे कंधे पर कैसे बिठला लिया था।

शैतान का नंगा फिरना

एक बुज़ुर्ग जा रहे थे। उन्होंने शैतान को नंगा देखा। उन्होंने कहा ओ मरदूद! तुझे आदमियों के बीच इस चलते हुए शर्म नहीं आती। वह कहने लगा, ख़ुदा की क़सम! यह आदमी नहीं हैं। अगर ये आदमी होते तो मैं इनके साथ ऐसा न खेलता जिस तरह लड़के गेंद से खेलते हैं। आदमी तो वह जिन्होंने अल्लाह के ज़िक्र के ज़रिए मेरे बदन को बीमार किया है।

कहीं शहादत का रुत्बा न मिल जाए

एक बुज़ुर्ग दीवार के साथ चारपाई बिछाकर सोए हुए थे। उनके पास शैतान आया और उन्हें जगा दिया। उन्होंने पूछा, क्या हुआ? वह तेज़ी से कहने लगा, यह दीवार गिरने वाली है। बस तू एक तरफ़ हट जा। जब उन्होंने जल्दी में सुना तो वह एक तरफ़ हट गए। जैसे ही वह एक तरफ़ हटे दीवार नीचे गिर गई। वह बुज़ुर्ग कहने लगे, भई! तेरा भला हो, तू मेरा कितना भला चाहने वाला है, तू कौन है? वह कहने लगा, मैं शैतान हूं। उन्होंने कहा, शैतान तो कभी किसी का भला नहीं करता। तूने कैसे भलाई की? वह कहने लगा, मैंने अब भी कोई भलाई नहीं की। वह हैरान होकर कहने लगे, यह भलाई तो है कि तूने मुझे दीवार के नीचे दबने ने से बचा लिया। शैतान ने कहा, यही तो मेरा फ़न था। अगर आप वहीं लेटे रहते और दीवार गिर जाती तो अचानक दीवार के नीचे दबने की वजह से शहादत की मौत आती। मैंने आपको पहले ही जगा दिया कि कहीं आपको शहादत का रुत्बा न मिल जाए।

सौ दलीलें दे दीं मगर फिर भी...

इमाम राज़ी रह० ने वजूद बारी तआला पर सौ दलाइल जमा किए। एक बार उनकी शैतान से मुलाक़ात हो गई। वह शैतान से काफ़ी देर बहस करते रहे। इस दौरान उन्होंने फ़रमया कि ऐ इबलीस! मेरा अल्लाह पर ईमान बड़ा पक्का है। तू मुझे बहका नहीं सकता। इब्लीस ने कहा हर्गिज़ नहीं। यह सामने देहाती खेत में हल चला रहा है। इसका ईमान आपसे ज़्यादा पक्का है। आपने पूछा वह कैसे? उसने कहा, अभी तमाशा देखें। चुनाँचे शैतान एक अजनबी आदमी की सूरत में उस देहाती के पास पहुँचा और कहने लगा कि ख़ुदा

मौजूद नहीं है। उसने दो बड़ी-बड़ी गालियाँ दीं और पाँव से जूती निकाली कि उसकी पिटाई करे। इब्लीस वहाँ से भागा और इमाम राज़ी रह० से कहने लगा, देखा इसका ईमान इतना क़वी है कि वह सुनना भी गवारा नहीं करता कि कोई ख़ुदा के वजूद का इंकार करे। मरने मारने पर तुल गया। आपसे मैंने बहस शुरू की। आपने दलाइल देने शुरू किए। गोया यह बात सुन ली कि ख़ुदा मौजूद नहीं है। अब रही दलाइल की बात तो मैं क़वी दलीलें दे दूंगा तो आप फिसल जाएंगे। आपके दिल में ज़रा शक पैदा हो गया तो आप ईमान से महरूम हो जाएंगे। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 1/325)

शैख़ जीलानी रह० पर शैतान का दाँव

एक बार शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रह० जंगल में मुराक़बा कर रहे थे। अचानक एक नूर ज़ाहिर हुआ जिसने माहौल को मुनव्वर करके रख दिया। हज़रत रह० मुतव्वजेह हुए तो आवाज़ आई, ऐ अब्दुल क़ादिर जीलानी! हम तेरी इबादत से इतने ख़ुश हैं कि हम ने तुम से क़लम उठा लिया। अब तू जो चाहे कर। तेरे गुनाह तेरे आमालनामे में नहीं लिखे जाएंगे। जब शैख़ अब्दुल क़ादिर रह० ने यह बात सुनी तो आपने इस बात को क़ुरआन व हदीस पर पेश किया जो सच्चे गवाह हैं। एक आयत सामने आई कि अल्लाह तआला ने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़रमाया,

﴿واعبد ربك حتى يأتيك اليقين﴾

ऐ महबूब! आप इबादत करते रहिए हत्ताकि आप इसी हाल में पर्दा फ़रमा जाएं।

शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रह० ने सोचा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तो यह हुक्म दिया गया है।

फिर अब्दुल क़ादिर जीलानी की यह मजाल कहाँ कि उससे क़लम हटा लिया जाए। लिहाज़ा समझ गए कि यह तो शैतान का चक्कर है। उन्होंने फ़ौरन पढ़ा *"ला हौला वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाह।"* यह कलिमात शैतान के लिए तोप के गोले की तरह हैं। चुनाँचे जब यह गोला लगा तो वह भाग खड़ा हुआ मगर भागते दूसरे फ़ायर कर गया क्योंकि वह बड़ा ख़तरनाक दुश्मन है। कहने लगा, अब्दुल क़ादिर जीलानी! मैंने अपनी इस चाल से हज़ारों औलिया को धोका दिया है मगर तू अपने इल्म से बच गया। आप रह० ने फिर फ़रमाया, *"ला हौला वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाह।"* कि ओ मरदूद! मैं अपने इल्म की वजह से नहीं बचा बल्कि मैं अपने परवरदिगार के फ़ज़्ल की वजह से बचा हूँ।

﴿إِنَّ الشَّيْطَانَ لِلإِنْسَانِ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ﴾

शर्म व हया

और

इफ़्फ़त व पाकदामनी

शर्म व हया और इफ़्फ़त व पाकदामनी

परवानए रिसालत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शर्म व हया का अजीब नमूना

हदीस पाक में आया है कि हज़रत सअद बिन अबि वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक जगह पर जिहाद के लिए क़दम बढ़ाया। आगे दुश्मन थे। उन्होंने सोचा कि हम इनको किसी तरह इनके दीन के रास्ते से हटाएं। चुनाँचे उन्होंने अपनी औरतों से कहा कि बेपर्दा होकर गलियों में निकल आएं ताकि इनकी निगाहें इधर-उधर उठें। इस तरह उनके साथ अल्लाह की जो मदद है वह ख़त्म हो जाए। जब हज़रत सअद बिन अबि वक़्क़ास ने देखा तो उन्होंने बुलन्द आवाज़ से ऐलान किया,

﴿قُلْ لِلْمُؤْمِنِينَ يَغُضُّوا مِنْ أَبْصَارِهِمْ﴾

ईमान वालों से कह दीजिए कि अपनी निगाहों को नीचा रखें।

यह ऐलान सुनकर पूरे लश्कर के लोगों ने अपनी निगाहों को इस तरह नीचे कर लिया कि किसी की निगाह किसी ग़ैर-औरत पर न पड़ी यहाँ तक कि लश्कर जब लौटकर आए तो उनसे किसी ने पूछा यह तो बताओ कि वहाँ के मकानों की बुलन्दी कैसी थी? फ़रमाने लगे, अमीर लश्कर ने नज़रें झुकाने का हुक्म दिया तो हम ने मकानों की ऊँचाई की तरफ़ ध्यान ही न दिया, सुब्हानअल्लाह।

(वाक़िआत फ़क़ीर 1/119)

हज़रत मरयम रज़ियल्लाहु अन्हा की इफ़्फ़त व पाकदामनी

बीबी मरयम रज़ियल्लाहु अन्हा अल्लाह तआला की नेक बंदी गुज़री हैं। अभी पैदा भी नहीं हुई। माँ के पेट में हैं। उनकी माँ उनके लिए दुआ कर रही हैं,

﴿رَبِّ إِنِّي نَذَرْتُ لَكَ مَا فِي بَطْنِي مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّي﴾

ऐ अल्लाह मेरे पेट में जो भी है मैंने उसे तेरे लिए वक़्फ़ कर दिया, तू इसे क़ुबूल फ़रमा ले।

चुनाँचे अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने फ़रमाया,

﴿فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُولٍ حَسَنٍ وَأَنْبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا وَكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا﴾

हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम उनके ख़ालू थे। वह उनके ज़िम्मेदार बने। हज़रत मरयम अलैहास्सलाम मस्जिद के अंदर एतिकाफ़ की हालत में रहतीं और सारा दिन इबादत में मशग़ूल रहा करती थीं। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तरफ़ से ऐसी रहमत होती कि उनके लिए बेमौसम के फल भेजे गए। लोगों के अंदर उनके इबादत और तक़्वे की धाक बैठी हुई थी। लोग बहुत इज़्ज़त करते थे।

उनके साथ एक वाक़िआ पेश आया। क़ुरआन मजीद ने इस वाक़िए को तफ़्सील से बयान किया है और एक सूरत का नाम भी सूरः मरयम रखा।

﴿وَاذْكُرْ فِي الْكِتَابِ مَرْيَمَ إِذِ انْتَبَذَتْ مِنْ أَهْلِهَا مَكَانًا شَرْقِيًّا﴾

उन्होंने ग़ुस्ल के लिए अपने मकान की मश्रिक़ी (पूरब) सिम्त को अपने लिए ख़ास कर लिया।

﴿مكانا شرقيا﴾ से मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि ईसाइयों ने मश्रिक़

को इसी लिए क़िब्ला बना लिया कि वह मश्रिक़ की तरफ़ गयीं। जब वह मश्रिक़ की तरफ़ गयीं तो ﴿فاتخذت من دونهم حجابا﴾ उन्होंने अपने ईर्द-गिर्द एक पर्दा तान लिया ताकि तन्हाई हो जाए और वह गुस्ल कर सकें। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त फ़रमाते हैं कि इतने में ﴿فارسلنا اليها روحنا﴾ हमने उसकी तरफ़ अपने रूहुल अमीन को भेजा ﴿فتمثل لها بشرا سويا﴾ और वह एक भरपूर इंसान की शक्ल में उसके पास पहुँचे। जब तन्हाई में मरयम रज़ियल्लाहु अन्हा के सामने एक भरपूर इंसान आया तो उस वक़्त वह घबरा गयीं। वह आज के वक़्त की कोई बिगड़ी हुई बेगम नहीं थीं कि एक ग़ैर आदमी को तन्हाई में देखकर मुस्करा देतीं। वह अल्लाह पाक की नेक बंदी थी। लिहाज़ा उसके चेहरे पर घबराहट के आसार नज़र आए।

﴿اني اعوذ بالرحمن منك ان كنت تقيا.﴾

मैं तुझ से अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की पनाह मांगती हूँ कि तुझ से मेरी हिफ़ाज़त फ़रमाए, तेरे चेहरे से तो तक़्वा ज़ाहिर होता है।

उस वक़्त हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने पहचान लिया कि बीबी मरयम घबरा गई इसलिए उन्होंने फ़ौरन अल्लाह तआला का पैग़ाम पहुँचा दिया कि ﴿انما انا رسول ربك﴾ मैं तेरे रब का भेजा हुआ नुमाइंदा हूँ ﴿لاهب لك غلاما زكيا﴾ ताकि तुझे सुथरा बेटा दे।

अब इस बात को सुनकर मरयम रज़ियल्लाहु अन्हा की परेशानी बजाए कम होने के उल्टा और ज़्यादा बढ़ गई। मरयम सोचने लगीं कि मैं पहले तो इससे अल्लाह की पनाह मांग रही थी मगर जो इसने बात कह दी उसने तो मुझे और ज़्यादा परेशान कर दिया। लिहाज़ा कहने लगीं ﴿انى يكون لى غلام﴾ मेरे बेटा कैसे हो सकता है? ﴿ولم يمسسني بشر﴾ न मुझे किसी बशर ने छुआ ﴿ولم اك بغيا﴾ और न मैंने कोई बुराई का काम किया। मरयम जानती थीं कि बेटा होने के लिए

दो सबब हुआ करते हैं, या निकाह के ज़रिए या गुनाह के ज़रिए। क्योंकि उनकी ज़िंदगी में दोनों काम नहीं थे इसलिए मरयम कहने लगीं कि जब सबब मौजूद नहीं तो मेरे बेटा कैसे पैदा होगा? अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया ﴿قال كذلك﴾ कि ऐसा ही है कि न तेरा निकाह हुआ और न तूने गुनाह किया। ﴿كذلك﴾ 'कज़ालिका' के लफ़्ज़ के साथ अल्लाह तआला ने मरयम रज़ियल्लाहु अन्हा की पाकदामनी पर मुहर लगा दी। अल्लाह तआला हर एक को ऐसी बेटी अता फ़रमाए जिसकी पाकदामनी पर ऐसी मुहर लगी हुई हो। आगे फ़रमाया ﴿قال ربك هو على هين﴾ तेरे परवरदिगार ने कहा कि मेरे लिए आसान है। मरयम! यह बेटा तुझे परवरदिगार ने देना है किसी ज़ुल्फ़ों वाली सरकार ने नहीं देना, इसलिए तुझे घबराने की कोई ज़रूरत नहीं।

उसी वक़्त मरयम रज़ियल्लाहु अन्हा को हमल के आसार महसूस होने शुरू हो गए। उस वक़्त मरयम परेशान हो गयीं। वह खजूर के एक पेड़ के साथ जाकर बैठ गयीं। जिब्रील अलैहिस्सलाम तो चले गए मगर बीबी मरयम ग़मज़दा हैं, परेशान हैं, जिंदगी का गुज़रा ज़माना सामने है। वह दिल ही दिल में कहने लगीं, ऐ अल्लाह! मैं तो तेरी इबादत करते हुए उम्र गुज़ारने वाली बंदी हूँ, मैंने अपनी उम्र एतिकाफ़ में गुजारी, लोगों में मेरी नेकी और तक़्वे के चर्चे हैं मगर आज मैं इस हाल में बैठी हुई हूँ कि जब लोगों के सामने यह बात ज़ाहिर होगी तो मैं उनको क्या चेहरा दिखाऊँगी, मेरी सारी इबादत पर पानी फिर जाएगा, लोगों में बदनामी होगी, मेरी ज़िंदगी कैसे गुज़री और यह मामला कैसा पेश आया।

मरयम रज़ियल्लाहु अन्हा उस पेड़ के साथ ऐसे बैठीं जैसे कोई हारा हुआ जरनैल हुआ करता है। उस वक़्त इतनी घबराहट थी कि दिल कह रहा था कि इस ज़िंदगी से तो मर जाना बेहतर है। लिहाज़ा कहने लगी :

﴿يا ليتني مت قبل هذا وكنت نسيا منسيا.﴾

ऐ काश! मैं तो इससे पहले मर चुकी होती और भूली बिसरी चीज़ बन चुकी होती।

मालूम हुआ कि जो अफ़ीफ़ा औरतें होती हैं उन्हें अपनी बदनामी और बेइज़्ज़ती से हमेशा डर लगा करता है। वह अल्लाह की पनाह मांगती हैं, वे मर जाने को पसंद करती हैं मगर कोई ऐसा काम नहीं करतीं। जब बीबी मरयम ने ऐसी बात कही तो ﴿فناداها من تحتها﴾ उन को फिर नीचे से एक आवाज़ आई। बाज़ मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि यह जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने दोबारा उनसे कलाम किया था और कुछ ने कहा कि अल्लाह तआला ने कलाम फ़रमाया। बहरहाल उनको फ़रमाया गया ﴿ألا تحزني﴾ मरयम! तो परेशान न हो, ये रब की बातें हैं। जब उसने तुझे यह निशानी दी तो वह परवरदिगार तेरी पासबानी भी करेगा। फ़रमाया, यह जो तुम्हें अपने क़रीब पेड़ नज़र आ रहा है उस पर हमने खजूरें लगा दीं हैं, तुम खजूर के इस पेड़ को हिलाओ :

﴿وهزي إليك بجذع النخلة تساقط عليك رطبا جنيا.﴾

तुम्हारे ऊपर तर खजूरे गिरेंगी, उनको खा लेना और तुम्हारे नीचे पानी जारी कर दिया गया है उसको पी लेना। उसके बाद जब तुम्हारे हाँ बच्चे की विलादत हो तो उस बच्चे जबीन पर नबुव्वत के नूर की किरने फूटते देखकर उस बच्चे की जबीन को बोसे देना। उससे तुम्हारे दिल को तसल्ली हो जाएगी। मरयम! अगर लोग तुझ से पूछें कि यह क्या मामला है तो कहना ﴿إني نذرت للرحمن صوما﴾ कि मैंने तो रहमान के लिए रोज़ा रखा हुआ है ﴿فلن أكلم اليوم إنسيا﴾ आज किसी बंदे से भी मैं बात नहीं करूंगी। उस वक़्त की शरिअत में बोलने से भी रोज़ा टूट जाता था। उम्मते मुहम्मदिया के लिए अल्लाह तआला ने आसानी

पैदा कर दी कि बोलने की इजाज़त अता फ़रमा दी। लिहाज़ा जब बीबी मरयम बच्चे को लेकर आती हैं ﴿فاتت به قومها تحمله﴾ बच्चे को जब सीने से लगाकर क़ौम में आती हैं तो वे हैरान होते हैं ﴿قالوا يمريم لقد جئت شيئا﴾ कहने लगे, एक मरयम! तू यह क्या ग़ज़ब की चीज़ लेकर आ गई? ﴿يا اخت هارون﴾ ऐ हारून अलैहिस्सलाम की बहन! ﴿ما كان ابوك امرئ سوء وما كانت امك بغيا﴾ न तेरा बाप ऐसा बुरा था और न तेरी माँ ऐसी बुरी थी, तू यह बुराई करके कैसे आई? मालूम हुआ कि औरत से जब कोई ग़ल्ती कोताही होती है तो उसके माँ-बाप और भाईयों पर बात जाती है। उसके महरम मर्दों पर बात जाया करती है।

जब क़ौम ने तानों के नश्तर चलाए तो उस वक़्त हज़रत मरयम रज़ियल्लाहु अन्हा पर ग़म तारी हुआ। मरयम बहुत परेशान हुईं और ﴿فاشارت اليه﴾ बच्चे की तरफ़ इशारा किया। कहना यह चाहती थीं कि मेरा सर मत खाओ, पूछना है तो इस बच्चे से पूछो यह कैसे पैदा हुआ? क़ौम ने बच्चे की तरफ़ देखा और कहा ﴿قالوا كيف نكلم من كان في المهد صبيا﴾ कि गोद में पड़ा छोटा सा बच्चा कैसे बोल सकता है? मगर अल्लाह तआला ने अपनी एक पाकदामन बंदी के लिए निज़ाम को बदल कर रख दिया। फ़रमाया, मेरे प्यारे ईसा! बच्चे इस उम्र में बोला नहीं करते मगर आज तेरी माँ पर बोहतान लगाया जा रहा है, मैं अपने निज़ाम को बदलता हूँ, अब तुझे बोलना होगा और अपनी माँ की सफ़ाई की गवाही देनी होगी। इसलिए हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम बोलते हैं ﴿اني عبد الله﴾ मैं अल्लाह का बंदा हूँ

اتني الكتب وجعلني نبيا وجعلني مباركا اين ما

كنت واوصني بالصلوة ما دمت حيا.

सुब्हानअल्लाह! अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने ईसा अलैहिस्सलाम की ज़बान से अपनी प्यारी बंदी की पाकदामनी की गवाही दिलवाई, सुब्हानअल्लाह। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 5/175-179)

सैय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने पहली का चाँद न देखा

अल्लाह तआला ने सैय्यदा हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को अजीब हया अता फ़रमाई थी। एक दफ़ा चाँद की पहली तारीख़ थी। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाँ आपकी बेटी फ़ातिमा तशरीफ़ लायीं थीं। पूछा फ़ातिमा! क्या तुमने चाँद देखा है। अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मैंने चाँद नहीं देखा। फ़रमाया, बेटी तुमने क्यों नहीं देखा? वह ख़ामोश हो गयीं। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दोबारा पूछा, इसकी क्या वजह थी? सैय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने जवाब दिया, ऐ अब्बा जान! मेरे दिल में ख़्याल आया कि आज पहली का चाँद है सब लोग चाँद की तरफ़ देख रहे होंगे। मैंने इस बात को शर्म व हया के ख़िलाफ़ पाया। इसलिए मैंने आज चाँद नहीं देखा, सुब्हानअल्लाह। अल्लाह तआला हमें भी ऐसी बेटियाँ अता करे जिनमें ऐसी हया हो और अल्लाह तआला हमें भी ऐसी ज़िंदगियाँ अता फ़रमाएं कि हमारी ज़िंदगी से गुनाह निकल जाएं।

निगाहे शरिअत में पसन्दीदा औरत कौन?

औरत की सिफ़ात में से सबसे बेहतर सिफ़्त के बारे में एक बार सहाबा किराम में बात चल रही थी। कोई कुछ कह रहे थे, कोई कुछ कह रहे थे। इसी दौरान हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु उठकर घर

तशरीफ़ ले गए। वहाँ पहुँचकर हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से बात हुई। उनको भी बताया कि आज तो मस्जिद में इस उनवान पर बातचीत हो रही थी। उन्होंने फ़रमाया कि मैं बताऊँ कि अल्लाह के नज़दीक सबसे पसन्दीदा औरत कौन है? फ़रमाया, बताएं। उन्होंने फ़रमाया कि अल्लाह तआला के नज़दीक सबसे पसन्दीदा औरत वह है जो न खुद किसी ग़ैर-महरम (ग़ैर-मर्द) की तरफ़ देखे और न कोई ग़ैर-महरम उसको देख सके यानी इतनी हया वाली हो कि उसकी अपनी निगाहें भी ना-महरम पर पड़ें और वह इतनी पर्दादार हो कि ग़ैर-महरम भी उसको न देख सके। जब उन्होंने यह बताया तो अली रज़ियल्लाहु अन्हु मस्जिद में तशरीफ़ लाए और अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के महबूब! फ़ातिमा ने अल्लाह की पसन्दीदा औरत की दो सिफ़्तें बतायीं हैं। जब ये दो सिफ़्तें बयान कीं तो नबी अलैहिस्सलाम ने मुस्कराए और फ़रमाया, ﴿فاطمه بضعة منى﴾ फ़ातिमा तो मेरे दिल का टुकड़ा है। मालूम हुआ कि जो औरत खुद पर्दादार हो कि ग़ैर-महरम उसको न देख सके और खुद भी ग़ैर-महरम को न देखने वाली हो यह औरत अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की पसन्दीदा औरत है।

हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा की गवाही क़यामत तक

हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा की ज़िंदगी में भी एक अजीब वाक़िआ पेश आया। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की भी अजीब मशीयत होती है। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ग़ज़वा बनी मुस्तलक़ में तशरीफ़ ले गए। जब आप वहाँ से वापस आने लगे तो क़ाफ़िले ने चलना था। क़ाफ़िले के लोग जैस-जैसे तैयार होते चलते रहते थे। सैकड़ों बल्कि हज़ारों ऊँट होते थे। चलते हुए भी घंटों लगा

करते थे। हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने सोचा कि क़ाफ़िले ने जाना है पता नहीं कितना वक़्त लग जाए, क्यों न हो कज़ाए हाजत से फ़ारिग़ हो जाऊँ। कज़ाए हाजत के लिए खेतों में जाया करते थे। लिहाज़ा आप ज़रा दूर चली गयीं ताकि फ़रागत हासिल कर सकें। जब फ़रागत हासिल करके वापस आयीं तो आपने होवज में बैठना था जिसको सवारी के ऊपर रखा जाता था।

इतने में आपने महसूस किया कि मैंने गले में एक हार पहना हुआ था वह कहीं टूटकर गिर गया है। सोचा कि अभी तो रवाना होने में वक़्त होगा, मैं जाकर हार देख लेती हूँ। आप हार ढूंढने वापस तशरीफ़ ले गयीं। पीछे सहाबा किराम ने सोचा कि आप तशरीफ़ तो ले आयी थीं, लिहाज़ा होवज में बैठ गयी होंगी। इसलिए चार-पाँच आदमियों ने होवज को उठाकर ऊँट पर रख दिया। आपकी उम्र कम थी और वज़न भी कम था, चार-पाँच आदमी उठाने वाले तो उनको पता भी न चला कि आप अंदर बैठी हुई हैं या कि नहीं।

अब क़ाफ़िले के लोग तो वहाँ से चले गए। जब वापस आयीं तो आपने देखा कि वह जगह तो ख़ाली है और क़ाफ़िला जा चुका है। आपको इत्मिनान था कि जब नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पता चलेगा तो किसी न किसी को भेजेंगे, इसलिए आप वहीं बैठ गयीं। थोड़ी देर के बाद नींद ग़ालिब आ गई। लिहाज़ा अपने ऊपर चादर ली और सो गयीं।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आदत मुबारक थी कि सहाबा में से किसी एक सहाबी को हुक्म दिया जाता कि जब सारा क़ाफ़िला चला जाए तो अगर रात का वक़्त हो तो सुबह के वक़्त वहाँ आकर देखें कि कहीं कोई चीज़ पीछे पड़ी तो नहीं रह गई। लिहाज़ा एक बदरी सहाबी हज़रत सफ़वान बिन मोतल रज़ियल्लाहु

अन्हु जो पक्की उम्र के थे, उनको नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस काम पर तैनात फ़रमाया था। वह जब उस जगह पर आए तो किसी को उस जगह पर लेटा हुआ पाया। क़रीब आए तो उन्होंने पहचान लिया कि यह तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मोहतरम बीवी हैं। उन्होंने ऊँची आवाज़ में ﴿انا لله وانا اليه راجعون.﴾ 'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन' पढ़ा। उनकी आवाज़ सुनकर आपकी आँख खुल गई। आपने जो चादर अपने ऊपर ली हुई थी उससे अपने आपको पूरी तरह ढांप लिया। उन्होंने आपके लिए ऊँट को बिठाया, आप ऊपर बैठ गयीं, उन्होंने मुहार पकड़ी और चल पड़े यहाँ तक कि जब वह उस क़ाफ़िले के पास पहुँच तो क़ाफ़िले में जो मुनाफ़िक़ मौजूद थे उन्होंने देखा तो कहने लगे कि इसमें तो कुछ न कुछ बात होगी। वे तो पहले ही ऐसे मौक़े की तलाश में थे जिससे मुसलमानों को परेशान कर सकें और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तकलीफ़ पहुँचा सकें। लिहाज़ा उन्हें बातें करने का मौक़ा मिल गया।

लिहाज़ा जब मदीना पहुँचे तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस बात का पता चला। आपको बड़ा सदमा हुआ। लोगों में यह बात आम होना शुरू हो गई। हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैं आकर एक महीने तक बीमार रही और कमज़ोर भी हो गई। एक दिन मैं एक सहाबिया उम्मे मस्तह रज़ियल्लाहु अन्हा के साथ क़ज़ाए हाजत के लिए रात को बाहर निकली। वह एक जगह पर क़दम उठाने लगीं तो उनको ठोकर लगी। उन्होंने अपने बेटे के बारे में बद्दुआ कर दी। मैंने कहा, तुम अपने बेटे के लिए बद्दुआ क्यों कर रही हो? वह कहने लगी तुम्हें पता नहीं कि वह तुम्हारे बारे में क्या बातें कर रहा है? मैंने पूछा कि क्या बात कह रहा है? उस वक़्त उन्होंने सारी तफ़सील बता दी कि आपके बारे

में सारे शहर में यह बातें हो रही हैं। फ़रमाती हैं कि जब मैंने ये बातें सुनीं तो मेरे दिल पर बड़ा सदमा हुआ। मैं घर आई और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इंतिज़ार करने लगी। आप जब मस्जिद से तशरीफ़ लाए तो मैं आपके सामने आई और सलाम किया। आपने मेरे सलाम का जवाब दिया मगर चेहरा दूसरी तरफ़ कर लिया। मैं दूसरी तरफ़ से आई मगर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी निगाहें दूसरी तरफ़ कर लीं। आपकी ख़ामोश निगाहों ने मुझे बहुत सारी बातें सिखा दीं कि इस वक़्त महबूब की तबियत पर बोझ है और आप कोई बात नहीं करना चाहते।

मैंने सोचा कि चलो मैं अपने माँ-बाप के घर चली जाती हूं ताकि सही हालात का पता चल सके। मैंने इजाज़त चाही, अल्लाह के महबूब ने इशारे से फ़रमा दिया कि हाँ चली जाओ। फ़रमाती हैं कि जब मैं वहाँ पहुँची तो मेरी वालिदा ने दरवाज़ा खोला। मैंने देखा कि मेरी वालिदा की आँखें रो-रो कर सुर्ख़ हो चुकी हैं, परेशान चेहरे के साथ खड़ी हैं। मैंने पूछा, अम्मी! क्या हुआ? वालिदा ख़ामोश हैं। आँखों से आँसू टपकना शुरू हो गए। मैंने पूछा अम्मी! मेरे अब्बू किधर हैं? उन्होंने इशारा कर दिया। मैंने देखा कि चारपाई पर बैठे अल्लाह का क़ुरआन पढ़ रहे हैं। एक-एक आयत पर आँखों से आँसू टप-टप गिरते हैं। अल्लाह के हुज़ूर में दुआएं मांग रहे हैं। फ़रमाती हैं कि मैंने जब ग़म का माहौल देखा तो मेरी तबियत और ज़्यादा परेशान हो गई। मैंने सोचा कि मैं क्या करूं? जिन पर मुझे मान था, जो मेरी ज़िंदगी के रखवाले थे वह भी आज मुझसे नाराज़ हैं, माँ-बाप भी आज जुदा हैं, मैं आज कहाँ जाऊँ? दिल में ख़्याल आया कि क्यों न हो कि मैं अपने परवरदिगार की तरफ़ मुतवज्जेह हूँ। इसलिए फ़रमाती हैं कि मैंने वुज़ू किया और घर के एक कोने की तरफ़ जाने लगी। माँ ने पूछा आएशा! किधर जा रही हो? उनको डर लग गया

था कि बेटी ग़मज़दा है, ऐसा न हो कि बेटी कोई संगीन फ़ैसला कर ले। फ़रमाती हैं कि उस वक़्त मैंने अम्मी को कहा, अम्मी! मैं अपने रब के हुज़ूर दुआएं करने जा रही हूँ। गोया यूँ कहना चाहती थीं कि अम्मी! हाईकोर्ट तो नाराज़ हो गए, अब मैं सुप्रीम कोर्ट का दरवाज़ा खटखटाने जा रही हूँ। फ़रमाती हैं कि मैंने मुसल्ला बिछाया और सज्दे में सर रखकर दुआएं मांगनी शुरू कीं कि ऐ मिस्कीनों के परवरदिगार! ऐ फ़रियादियों की फ़रियाद सुनने वाले अल्लाह! ऐ मज़लूमों के परवरदिगार! ऐ कमज़ोरों के सुनने वाले आक़ा! तेरे मक़्बूल बंदों पर जब भी कोई ऐसा वक़्त आया, अल्लाह! तूने ही उनकी मदद की, अल्लाह यूसुफ़ अलैहिस्सलाम पर बात बनी तो भी आपने बरा'त दिलवाई, अल्लाह! मरयम रज़ियल्लाहु अन्हा पर बात बनी थी तो आप ने ही उनकी पाकदामनी की गवाही दिलवाई, अल्लाह! आज तेरे महबूब की हुमैरा तेरे दरवाज़े पर हाज़िर है और फ़रियाद करती है कि मेरे बारे में भी इसी तरह की बातें की जा रही हैं, परवरदिगार! तू हुमैरा की मदद फ़रमा। मेरे आक़ा ने भी इस वक़्त मेरे साथ बात करना छोड़ दी, अल्लाह! तेरे सिवा कोई ज़ात जो दुखी दिलों को तसल्ली दे सके, जो ग़मज़दा दिलों को इत्मिनान दे सके। रो-रो दुआएं कर रही हैं।

उधर दुआएं मांगी जा रही हैं और इधर आक़ा ने मस्जिद नबवी में मज्लिस मशावरत क़ाएम की हुई है। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु तो घर में थे। बाक़ी सहाबा जमा थे। मुहद्दिसीन ने उसका अजीब मंज़र लिखा, फ़रमाते हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी ग़मज़दा बैठे थे, सहाबा किराम के चेहरों पर उदासी थी। उन्होंने अपने महबूब के चेहरे पर ग़मज़दा देखा जिसकी वजह से उनकी तबियत भी अजीब बन चुकी थी। लिहाज़ा कुछ सहाबा किराम सिसकियाँ ले-ले कर रो रहे थे। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने यारों से पूछा, इस मामले में तुम क्या मश्वरा देते हो? सबसे

पहले हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा, उमर! तुम इस मामले में क्या कहते हो? हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने आगे बढ़कर कहा, ऐ अल्लाह के नबी! अल्लाह तआला ने आपको इज़्ज़त और शराफ़त बख़्शी, आपके बदन पर किसी गंदी मक्खी को बैठने की इजाज़त नहीं है। जब अल्लाह तआला ने आपको इतना पाकीज़ा बनाया है कि उस पर एक गंदी मक्खी को बैठने की इजाज़त नहीं तो आपकी जीवन साथी ऐसी कैसे हो सकती हैं जिसके अंदर गुनाहों की गंदगी हो। इसलिए मुझे तो यह चीज़ ठीक नज़र नहीं आती। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा, उस्मान! तुम बताओ क्या मामला हो सकता है? हज़रत उस्मान ने नबुव्वत की सोहबत का हक अदा कर दिया। अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी! अल्लाह तआला ने आपको ऐसा बनाया कि बादल आपके सर पर साया किए रखता है, आपका साया ज़मीन पर नहीं पड़ता कि ऐसा न हो कि किसी का कदम आपके साए पर पड़ जाए, जब अल्लाह तआला ने आपके अदब का इतना लिहाज़ फ़रमाया कि किसी ग़ैर के कदम आपके साए पर नहीं पड़ सकते तो यह कैसे मुमकिन हो सकता है कि किसी को आपकी मोहतरम बीवी पर क़ुदरत हासिल हो जाए। लिहाज़ा यह चीज़ तो हमारे वहम व गुमान से भी बाहर है। उनकी बात सुनकर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ामोश हो गए। उसके बाद नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा, अली! तुम बताओ क्या मामला हो सकता है? हज़रत अली ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी! एक बार आपके जूते के साथ गंदगी लगी हुई थी, आप चाहते थे कि पहन लें मगर अल्लाह तआला ने जिब्राईल अलैहिस्सलाम को भेजा था और आपको इत्तिला दे दी थी कि आपके जूते के साथ

गंदगी लगी हुई है। जब जूते पर गंदगी लगी हुई थी तो आपको बता दिया गया था अगर आपके घरवालों के साथ कोई ऐसा मामला होता तो आपको क्यों न बता दिया जाता। इसलिए यह बात मुझे ठीक नज़र नहीं आती। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फिर ख़ामोश हो गए। आपकी ग़मगीनी को देखकर हज़रत अली दोबारा बोले और कहने लगे, ऐ अल्लाह के नबी! अगर आपकी तबियत बहुत ज़्यादा ग़मज़दा है तो आप चाहें तो तलाक़ दे दें। आपके लिए बीवियों की कौन सी कमी है, अल्लाह तआला आपको कोई और जीवन साथी अता फ़रमा देंगे। उनकी यह बात सुनकर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु तड़पे और खड़े हो गए। उन्होंने उस वक़्त नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा, ऐ अल्लाह के नबी आप यह इर्शाद फ़रमाइए कि यह निकाह आपने अपनी मर्ज़ी से किया था या आपको इशारे से बताया गया था? यह आपकी पसंद थी या किसी और की पसंद थी? नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उंगली से ऊपर की तरफ़ इशारा किया कि यह तो मेरे रब की तरफ़ से इशारा था। हज़रत उमर फ़रमाने लगे, ऐ अल्लाह के नबी! अब आप मुझे छोड़ दीजिए और उन मुनाफ़िक़ों को छोड़ दीजिए, मेरी तलवार जाने और मुनाफ़िक़ों की गर्दनें जानें, ये ऐसी तौहीनी की बात कैसे कर सकते हैं। रब्बे करीम की पसंदीदा के बारे में वे ऐसी बातें कर रहे हैं, यह नहीं हो सकता। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस वक़्त हज़रत उमर को प्यार की निगाहों से देखकर हज़रत उमर के गुस्से को ठंडा किया। दिल से गोया कह रहे हों कि उमर! अल्लाह तेरा निगहबान हो, तूने मेरे ग़म को हल्का कर दिया। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तबियत को इत्मिनान आ गया। आप उठे और मज्लिस बर्ख़ास्त हो गई।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के घर की तरफ़ जाते हैं कि मेरी हुमैरा किस हाल में है? नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दस्तक देते हैं। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की बीवी ने दरवाज़ा खोला। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने देखा कि उनका रो-रो कर बुरा हाल हो चुका है। जब सिद्दीक़े अकबर की तरफ़ देखा तो उनकी आँखें भी रो-रो कर सुर्ख़ हो चुकी हैं और सूझ चुकी थीं। आपने पूछा हुमैरा नज़र नहीं आ रही, हुमैरा कहाँ हैं? उन्होंने कोने की तरफ़ इशारा किया। उस वक़्त हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा सज्दे में दुआएं मांग रही थीं। बाद में फ़रमाती हैं कि महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब तशरीफ़ लाए थे तो मेरे दिल में बात आई थी कि मैं उसी वक़्त आक़ा के क़दमों में चिमट जाऊँ और जी भरकर रो लूँ कि मेरे साथ यह क्या मामला पेश आ रहा है मगर मेरे दिल ने कहा आएशा! तूने अपने रब के सामने अपनी फ़रियाद बयान कर ली है, अब अपने रब से ही मांग ले, तेरा रब तेरा निगहबान होगा। लिहाज़ा नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, हुमैरा! आपकी आवाज़ सुनते ही हुमैरा ने सज्दा पूरा किया और आकर चारपाई पर ख़ामोश बैठ गयीं। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़रीब बैठ गए। आपने प्यार से समझाया कि अगर तुझसे कोई ऐसी ग़ल्ती हो गई है तो अपने रब से माफ़ी मांग ले। रब्बे करीम गुनाहों को माफ़ करने वाला है। फ़रमाती हैं कि उस वक़्त तो मैं सब्र के साथ बैठी थी। आपकी यह बात सुनकर मेरे ज़ब्त के बांध टूट गए, मेरी आँखों से आँसू आना शुरू हो गए। मैं रोती रही मगर ख़ामोश थी। रोते हुए मैंने कहा, मैं वही बात कहूँगी जो जो यूसफ़ अलैहिस्सलाम के वालिद ने कही थी ﴿انما اشكوا بثي وحزني الى الله﴾ मैं अपना ग़म और शिकवा अपने रब से कहती हूँ। फ़रमाती हैं मैंने ये अल्फ़ाज़ कहे और महबूब सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम के चेहराए अनवर की तरफ़ देखा। आपकी पेशानी पर पसंदीदा पसीने के क़तरे देखे और आपके अंदर वह हसीन कपकपी देखी जो 'वही' के नाज़िल होने के वक़्त हुआ करती थी। महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ऊपर गुनूदगी सी तारी हो गई। आपने अपने ऊपर चादर कर ले ली। फ़रमाती हैं कि मैं आराम से बैठी थी। मेरे दिल में ख़्याल था कि अल्लाह तआला इल्क़ा कर देंगे या नींद में कोई ख़्वाब दिखा देंगे और वज़ाहत फ़रमा देंगे। मगर मेरे बाप और मेरी माँ पर कुछ लम्हे बड़े अजीब थे। मैंने अपने वालिद को देखा कि तड़प रहे थे कि 'वही' नाज़िल हो रही है, पता नहीं मेरी बेटी की क़िस्मत का क्या फ़ैसला होता है। वालिद की आँखों में भी आँसू और वालिदा की आँखों में भी आँसू। फ़रमाती हैं कि मैं आराम से बैठी थी। थोड़ी देर बाद मेरे आक़ा ने चेहराए अनवर से कपड़ा हटाया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का चेहराए अनवर कपड़े से ऐसे बाहर निकला जैसे बादल हटता है तो चौदहवीं का चाँद नज़र आता है। फ़रमाने लगीं, मैंने चेहराए अनवर पर बशाशत देखी, मैं समझ गई कि अल्लाह तआला ने रहमत फ़रमा दी।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, आएशा! मुबारक हो, अल्लाह का कलाम आया है। अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया है :

الخبيثت للخبيثين والخبيثون للخبيثت والطيبت للطيبين

والطيبون للطيبت اولئك مبرون مما يقولون.

अल्लाह तआला ने तेरी बराअत नाज़िल फ़रमा दी। फ़रमाती हैं कि उस वक़्त मेरी वालिदा फ़रमाने लगीं, आएशा! उठ और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का शुक्रिया अदा फ़रमा। फ़रमाने लगीं, मेरी तवज्जोह रब की तरफ़ गई। फ़रमाने लगीं, मैं अपने रब का

शुक्रिया अदा करती हूँ जिसने महबूब की हुमैरा की फ़रियाद को क़ुबूल फ़रमा लिया। उनकी पाकदामनी की गवाही में क़ुरआन पाक की अट्ठारह आयतें नाज़िल फ़रमा दी गयीं। यही नहीं उनकी बराअत नाज़िल फ़रमा दी गई बल्कि आगे फ़रमा दिया कि तुम्हें इतना अरसा जो परेशान रहना पड़ा उसके बदले में ﴿لهم مغفرة واجر عظيم﴾ तुम्हारे लिए मग़फ़िरत और अल्लाह तआला की तरफ़ से बड़ा अज्र है।

जब पाकदामन इंसान की ज़िंदगी में परेशानी आती है तो फिर अल्लाह तआला ख़ुद उनकी पुश्तपनाही फ़रमाया करते हैं। आज भी जो इंसान नेकोकारी की ज़िंदगी और परहेज़गारी की ज़िंदगी बसर करेगा अल्लाह तआला की मदद व नुसरत उसके साथ होगी। महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तालीमात कितनी अच्छी हैं कि आपने इस बात से मना फ़रमाया कि कोई भी ऐसा काम किया जाए जो हया के तक़ाज़ों के ख़िलाफ़ हो। आपने एक-एक सहाबी को हया का ऐसा नमूना बना दिया था कि उनकी निगाहें पाकीज़ा, उनका दिल पाकीज़ा और उनकी ज़िंदगी गुनाहों से पाकीज़ा होती थी। अल्लाह तआला हमें भी उनकी पाकदामनी वाली ज़िंदगियों का नमूना अता फ़रमा दे और हमें भी हया और ग़ैरत वाली ज़िंदगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दे। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 5/183-191)

मैं अंधा हुआ उस वक़्त से जब से हुआ तू बेहया

हम अपने असलाफ़ की ज़िंदगियों को देखें तो ये चीज़ें हमें उनमें अजीब व ग़रीब नज़र आती हैं। इमाम आज़म अबूहनीफ़ा रह० एक बार तशरीफ़ ले जा रहे थे। एक आदमी हम्माम से नहाकर निकला तो उसने ऐसा तहबंद बांधा हुआ था कि उसके घुटनों से ऊपर था यानी जिस्म का वह हिस्सा मर्द के लिए छिपाना ज़रूरी है, वह नंगा था तो आपने अपनी आँखों को फ़ौरन बंद कर लिया। वह आदमी क़रीब

आया और कहने लगा ऐ नौमान! आप कब से अंधे हुए? आपने फ़रमाया, जब से तुझसे हया रुख़्सत हुई तब से मैं अंधा हो गया हूँ।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 3/229)

शर्म व हया की पैकर की बरकत से क़हत रुख़्सत हुआ

हज़रत शेख़ अब्दुलहक़ मुहद्दिस देहलवी रह० एक अजीब बात लिखते हैं कि जिस इंसान की ज़िंदगी पाकदामनी की ज़िंदगी होगी अल्लाह तआला उस इंसान की दुआओं को कभी रद्द नहीं फ़रमाया करते। उसके बाद उन्होंने एक वाक़िआ नक़ल किया। फ़रमाते हैं कि देहली में एक दफ़ा क़हत पड़ा। बारिश नहीं होती थी। लोग परेशान, जानवर पेरशान, चरिन्दे परिन्दे परेशान, न सब्ज़ा था न पानी था, हर तरफ़ ख़ुश्की ही ख़ुश्की नज़र आती थी। इस परेशानी के आलम में लोग उमला की ख़िदमत में आए कि आप हमारे लिए कोई दुआ कीजिए। उन्होंने नमाज़े इस्तिस्क़ा के लिए शहर के सब लोगों को बुलाया। छोटे-बड़े, मर्द व औरत सब इकट्ठे हुए। उन्होंने नमाज़ अदा की और अल्लाह तआला से रो-रो कर दुआएं मांगते दिन गुज़र गया मगर क़ुबूलियत के कोई आसार ज़ाहिर नहीं हो रहे थे।

जब अस्र का वक़्त हुआ तो देखा कि एक सवारी पर कोई सवार है और एक नौजवान आदमी उस सवारी की नकेल पकड़कर जा रहा है। वह क़रीब से गुज़रा तो रुका। उसने आकर पूछा कि लोग क्यों जमा हैं? बताया गया कि यह लोग अल्लाह तआला से उसकी रहमत की दुआ मांग रहे हैं मगर क़ुबूलियत के कोई आसार ज़ाहिर नहीं हो रहे हैं। वह कहने लगा, अच्छा मैं दुआ मांगता हूँ। वह आदमी सवारी के तरफ़ गया और वहाँ जाकर पता नहीं उसने क्या बात कही कि थोड़ी देर के बाद आसमान पर बादल आ गए और सब ने देखा कि छम-छम बारिश बरसने लगी। सब हैरान थे। जिन उलमा को उस

लड़के की बात का पता था वह उसके पीछे गए कि हम पूछें कि इस बात में क्या राज़ था? जब उससे जाकर पूछा कि अल्लाह तआला की यह रहमत कैसे आई? तो वह कहने लगा कि इस सवारी पर मेरी माँ सवार थीं उन्होंने पाकीज़ा ज़िंदगी गुज़ारी, पाकदामनी वाली ज़िंदगी गुज़ारी, यह अफ़ीफ़ा ज़िंदगी गुज़ारने वाली औरत है। जब मुझे पता चला कि आप की दुआ क़ुबूल नहीं हो रही है तो मैं उनके पास आया और उनकी चादर का कोना पकड़कर दुआ मांगी कि ऐ अल्लाह! मैं उस माँ का बेटा हूँ जिसने पाकदामनी की ज़िंदगी गुज़ारी। ऐ अल्लाह! अगर आप को यह अमल क़ुबूल है तो आप रहमत की बारिश अता फ़रमा दीजिए। अभी दुआ मांगी ही थी कि परवरदिगार ने रहमत की बारिश अता फ़रमा दी, सुब्हानअल्लाह।

मुल्के यमन से हरम तक इफ़्फ़त की मशाल

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा किराम में हया वाली सिफ़्त कूट-कूटकर भर दी थी कि उनकी निगाहें ग़ैर की तरफ़ उठती ही नहीं थीं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के दौर में एक औरत यमन से चली और मदीना तैय्यबा अकेली आई। उसने महीनों का सफ़र किया। वह रात को भी कहीं ठहरती होगी। उसके पास माल भी था। उसे जान और इज़्ज़त व नामूस का भी ख़तरा था। हज़रत उमर को पता चला तो आपने उसे बुलवाया। पहले यह पूछा कि अकेली क्यों आई? उसने कोई उज़्र पेश किया। फिर आपने एक सवाल पूछा कि बताओ कि तुम जवान उम्र की औरत हो तुमने अकेले सफ़र किया। आबादियों से भी गुज़री, वीरानों से भी गुज़री। तुम्हें जान व माल और इज़्ज़त व आबरू का भी ख़तरा था। यह बताओ कि तुमने यमन से मदीना तक के लोगों को किस हाल पर पाया? उसने जवाब दिया, ऐ अमीरुल मुमिनीन! मैं यमन से चली

और मदीना तक पहुँची और मैंने रास्ते के सब लोगों को ऐसे पाया जैसे ये सब के सब एक माँ-बाप की औलाद होते हैं। उन सब की निगाहें इतनी पाकीज़ा थीं कि जवान उम्र औरत सैंकड़ों मील का सफ़र करती थी और उसे अपनी इज़्ज़त व आबरू का कोई ख़तरा नहीं हुआ करता था।

ग़म व दुख में भी पर्दा न छूट पाया

हदीस पाक में आता है कि एक औरत थी जिसका जवान बेटा मर गया। वह नबी अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हुई। उदास और ग़मगीन थी, रो रही थी। मगर बिल्कुल पर्दे वाले कपड़ों के अंदर लिपटी हुई थी। एक सहाबी ने कह दिया, देखो यह बूढ़ी औरत है। इसका जवान बेटा मर गया है लेकिन यह ख़ुद कितने कपड़ों में लिपटी हुई है। तो वह सहाबिया उनको कहने लगीं, मेरा बेटा ही तो मरा है मेरी हया तो नहीं मरी कि मैं अपने जिस्म से कपड़े हटा दूं। तो ऐसे वक़्त में भी जब माँ बच्चे की वजह से इतनी ग़मज़दा होती है कि उसे अपना होश नहीं रहता। सहाबियात रज़ियल्लाहु अन्हुम इस हालत में भी पर्दे का लिहाज़ करती थीं तो फिर आम हालात में कितना लिहाज़ करती होंगी।

पर्दे का मुख़ालिफ़ हक्का-बक्का

हज़रत मदनी रह० एक बार सफ़र कर रहे थे। एक अंग्रेज़ अपनी मेम साहिबा को लेकर आया और सामने बैठ गया। अब मेम तो बेपर्दा थी। जब उसको पता चला कि हज़रत मदनी रह० हैं तो उसने छेड़-छाड़ शुरू कर दी। कहने लगा कि देखा इस्लाम अपनी औरतों को घरों में जेल की तरह क़ैद रखता है। हम तो अपनी औरतों को आज़ादी देते हैं। देखिए यह मेरे साथ घूम फिर रही है। ज़िंदगी की

ऐश व आराम के दिन गुज़ार रही है। हज़रत मदनी रह० पहले तो सुनते रहे। फिर आपने सोचा कि सीधी तरह तो मानने वाला नहीं। टेढ़ी उंगली से खीर निकालनी पड़ेगी। गर्मी का मौसम था। आपका शागिर्द भी आपके साथ था। और क़ुदरतन शिकंजी बनाने के लिए कुछ नींबू और चीनी वग़ैरह अपने साथ रखवाई हुई थी। आपने उसे इशारा किया कि ज़रा शिकंजी के दो गिलास बनाओ। बहुत गर्मी है। उसने थर्मस से ठंडा पानी निकाला, चीनी मिलाई और नींबू काटा। अब जब अंग्रेज़ के सामने नींबू काटा तो उसके मुँह में भी पानी आ गया। वह भी बड़ा शौक़ की नज़रों से शिकंजी को देख रहा है। अब उससे हज़रत मदनी रह० ने पूछा कि क्या मामला है? आप बड़ी मुहब्बत भरी नज़रों से इस शिकंजी को देख रहे हैं? उसने कहा, जी आपको पता है कि गर्मी है। प्यास है और नींबू तो चीज़ ही ऐसी है कि उसको देखकर मुँह में पानी आता है। अब हज़रत ने उस पर चोट लगाई कि जिस तरह गर्मी के मौसम में प्यासा नींबू देखे तो उसके मुँह में पानी आता है तो यह मेम साहिबा बैठी हैं। इसको देखकर जितने भी लोग रेल में हैं सबके मुँह में पानी आ रहा है। अब तो वह ऐसा शर्मिन्दा हुआ कि उसकी नज़रें नीचे लग गईं।

● ● ●

لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَأَزِيْدَنَّكُمْ وَلَئِنْ

كَفَرْتُمْ إِنَّ عَذَابِيْ لَشَدِيْد.

शुक्र व इम्तिनान (एहसान करना) और सब्र व तवक्कुल

शुक्र व इम्तिनान

शुक्रे इलाही पर रब की तरफ़ से हैरतअंगेज़ बढ़ोत्तरी

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने में एक आदमी था। वह बेचारा बहुत ही ग़रीब था। वह टुकड़े-टुकड़े को तरसता था। एक दफ़ा उनकी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात हो गई। वह कहने लगा, हज़रत! आप कलीमुल्लाह हैं और कोहे तूर पर जा रहे हैं। आप मेरी तरफ़ से अल्लाह तआला की ख़िदमत में यह फ़रियाद पेश कर देना कि मेरी आने वाली ज़िंदगी का सारा रिज़्क़ एक ही दम दे दें ताकि मैं कुछ दिन तो अच्छी तरह से खा पी कर जाऊँ। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने उसकी फ़रियाद अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की ख़िदमत में पेश कर दी। परवरदिगार आलम ने उसकी फ़रियाद क़ुबूल फ़रमाई और उसे कुछ बकरियाँ, गेहूँ की चंद बोरियाँ और चीज़ें उसके मुक़द्दर में थीं वे सब अता फ़रमा दीं। उसके बाद हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अपने काम में लग गए।

एक साल के बाद हज़रत मूसा अलैहिस्सालम को ख़्याल आया कि मैं उस बंदे का पता तो करूं कि उसका क्या बना। जब उसके घर गए तो आपने देखा कि उसने आलीशान मकान बनाया हुआ है। उसके दोस्त आए हुए हैं। उनके लिए दस्तरख़्वान लगे हुए हैं। उन पर किस्म-किस्म के खाने लगे हुए हैं और सब लोग खा पीकर मज़े उड़ा रहे हैं। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम यह सारा मंज़र देखकर बड़े हैरान हुए। जब कुछ दिनों बाद कोहे तूर पर हाज़िर हुए और अल्लाह तआला से हम कलाम हुए तो अर्ज़ किया, ऐ परवरदिगार आलम! आपने उसे जो सारी ज़िंदगी का रिज़्क़ अता फ़रमा दिया था। वह तो

थोड़ा सा था। और अब तो उसके पास कई गुना ज़्यादा नेमतें हैं। अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया, ऐ मेरे प्यारे मूसा! अगर वह रिज़्क़ अपनी ज़ात पर इस्तेमाल करता तो उसका रिज़्क़ वही था जो हमने उसको दे दिया था लेकिन उसने हमारे साथ नफ़े की तिजारत की। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया, अल्लाह! उसने कौनसी तिजारत की? अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया कि उसने मेहमानों को खाना खिलाना शुरू कर दिया और मेरे रास्ते में ख़र्च करना शुरू कर दिया और मेरा दस्तूर है कि जो मेरे रास्ते में एक रुपया ख़र्च करता है मैं उसे कम से कम दस गुना ज़्यादा दिया करता हूँ। क्योंकि उसको तिजारत में नफ़ा ज़्यादा हुआ है इसलिए उसके पास माल व दौलत बहुत ज़्यादा है।

शुक्रे इलाही की इंतिहा को छुआ तूने...

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से अर्ज़ किया ऐ अल्लाह ﴿كيف شكرك﴾ मैं आपका शुक्र कैसे अदा करूं? क्योंकि आपकी एक-एक नेमत ऐसी है कि मैं सारी ज़िंदगी भी इबादत में लगा रहूँ तो सिर्फ़ एक नेमत का शुक्र भी अदा नहीं कर सकता। जब उन्होंने यह कहा तो अल्लाह तआला ने उसी वक़्त उन पर "वही" नाज़िल फ़रमाई कि ऐ मूसा! अगर आपके दिल की यह आवाज़ है कि आप सारी ज़िंदगी शुक्र अदा करें तो भी शुक्र अदा नहीं कर सकते तो सुन लो कि ﴿الآن شكرتني﴾ अब तो आपने मेरा शुक्र अदा करने का हक़ अदा कर दिया, सुब्हानअल्लाह।

हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की शुक्रगुज़ार बीवी

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम अपने बेटे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम और उनकी वालिदा को मक्का मुकर्रमा में छोड़ गए।

उस वक़्त वह एक ऐसी वादी थी जहाँ हरियाली का नाम व निशान भी न था। हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम जब जवान हुए और उनका निकाह क़बीला बनू जरहम की एक लड़की से हुआ। हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम शिकार के लिए जाते थे और उससे जो कुछ मिलता था उसी से गुज़ारा होता था। शिकार एक हवाई रोज़ी होती थी। लिहाज़ा कभी शिकार मिलता और कभी नहीं मिलता।

एक बार हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम शिकार के लिए गए हुए थे कि पीछे हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम मिलने घर आए। उन्होंने अपनी बहू से पूछा कि सुनाओ क्या हाल है? वह कहने लगी, बस ज़िंदगी गुज़र रही है। कभी शिकार मिलता है कभी नहीं मिलता। बहुत तंगी का वक़्त गुज़र रहा है। बहरहाल गुज़ारा हो रहा है। उसने इस तरह नाशुक्री के बोल बोले। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने कुछ देर इंतिज़ार किया और फिर फ़रमाया, अच्छा मुझे वापस जाना है। जब तुम्हारे शौहर आएं तो उन्हें मेरा सलाम कह देना और उनसे कह देना कि तुम्हारे घर की चौखट अच्छी नहीं है। इसे बदल लेना। यह कहकर वह चले गए। वह औरत हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की बात न समझ सकी। जब हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम घर वापस आए तो उनकी बीवी ने उन्हें हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का पूरा पैग़ाम सुना दिया। वह फ़रमाने लगे कि वह तो मेरे वालिद थे। मेरी उनसे मुलाक़ात तो नहीं हो सकी अलबत्ता वह मुझे एक पैग़ाम दे गए हैं कि घर की चौखट अच्छी नहीं, इसे बदल देना यानी तुम्हारी बीवी नाशुक्री है, इसे बदल देना। चुनाँचे उन्होंने अपनी बीवी को तलाक़ देकर फ़ारिग़ कर दिया। कुछ अरसे के बाद एक और क़बीले की लड़की के साथ हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की शादी हुई। अब यह औरत बड़ी सब्र व शुक्र करने वाली थी। साल दो साल के बाद हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम फिर तशरीफ़ लाए। अब की बार भी

हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम घर पर मौजूद नहीं थे। चुनाँचे उन्होंने बहू से पूछा, सुनाओ क्या हाल है? वह कहने लगी, मैं अल्लाह का शुक्र अदा करती हूँ जिसने मुझे इतना नेक ख़ाविन्द अता कर दिया। अल्लाह तआला ने मुझे इतने अच्छे अख़्लाक़ वाला, अच्छे किरदार वाला, मुत्तक़ी और परहेज़गार और मुहब्बत करने वाला ख़ाविन्द दिया है। मैं तो अल्लाह का शुक्र भी अदा नहीं कर सकती। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने पूछा खाना, पीना कैसा है? कहने लगीं, रिज़्क़ तो अल्लाह के हाथ में है जो मिलता है हम दोनों खा लेते हैं और अल्लाह का शुक्र अदा कर लेते हैं और अगर नहीं मिलता तो सब्र कर लेते हैं। जब उसने शुक्र की अच्छी-अच्छी बातें कीं तो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का दिल खुश हो गया और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, अच्छा अब मैं चलता हूँ। तुम अपने ख़ाविन्द को मेरी तरफ़ से सलाम कह देना और कहना कि तुम्हारे घर की चौखट बड़ी अच्छी है, लिहाज़ा तुम इसकी हिफ़ाज़त करना। यह कह कर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम वापस चले गए। जब हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम वापस घर तशरीफ़ लाए तो उनकी बीवी ने उनको पैग़ाम दिया। जब हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम ने पैग़ाम सुना तो वह बड़े खुश हुए और कहने लगे, वह मेरे वालिद थे और मुझे पैग़ाम दे गए हैं कि तुम एक अच्छी बीवी हो। मुझे तुम्हारी क़द्रदानी करनी है और तुझे ज़िंदगी भर अपने साथ रखना है। यह हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की वह बीवी थीं जो हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम से उम्मीद से हुई और उनकी नसल इस औरत से आगे चली।

शुक्रगुज़ार सवाली की दरबारे रिसालत में दिलजोई

एक बार नबी अलैहिस्साम तशरीफ़ फ़रमा थे। आपके पास एक सवाली आया। उसने कहा, ऐ अल्लाह के नबी! मैं मुहताज हूँ इसलिए

अल्लाह के लिए मुझे कुछ दे दीजिए। नबी अलैहिस्सलाम के पास एक खजूर थी। आपने वह खजूर उठाकर उस सवाली को दे दी। उस सवाली ने खजूर तो ले ली मगर इत्मिनान न हुआ वह और ज़्यादा का तलबगार हुआ। आख़िर नबी अलैहिस्सलाम ने उसे भेज ही दिया। थोड़ी देर बाद एक और सवाली आया उसने भी सवाल किया। नबी अलैहिस्सलाम ने एक खजूर उसको भी दे दी। वह खजूर लेकर बहुत ही खुश हुआ कि मुझे अल्लाह के महबूब के हाथों से खजूर मिली है। वह आप सल्लल्लाहु अलैहिस्सलाम का शुक्र अदा करने लगा कि आप का बड़ा एहसान है कि आपने मुझे एक खजूर अता कर दी। जब उसने नेमत की क़द्रदानी की तो अल्लाह के महबूब ने अपनी बीवी से कहा कि उम्मे सलमा के पास जाओ और पूछो कि क्या अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने के लिए कुछ मौजूद है। वह गयीं और उम्मे सलमा ने उसके हाथ चालीस दीनार भेजे। अल्लाह के महबूब सल्ललहु अलैहिस्सलाम ने वह चालीस दीनार उस दूसरे सवाली को अता फ़रमा दिए।

दौलत के नशे में अपनी पिछली हालत को न भूलिए

सुल्तान महमूद ग़ज़नवी रह० एक बड़ा नेक मुसलमान था और बादशाह गुज़रा है। उसके पास एक गुलाम था जिसका नाम अयाज़ था। वह एक देहाती आदमी था लेकिन जब वह बादशाह के पास आया तो एक अच्छा ख़िदमतगार साबित हुआ। बादशाह को उसकी ख़िदमत पसन्द आ गई। इसलिए बादशाह ने उसे अपने साथियों में शामिल फ़रमा लिया। अब दूसरे लोगों के दिलों में हसद पैदा हुआ कि इसकी इतनी हिम्मत अफ़ज़ाई क्यों होती है? अब वह हासिदों ने आपस में मशवरा करते रहते कि हम इसको कैसे बादशाह की नज़र से गिराएं ताकि यह यहाँ से दफ़ा हो जाए और दूर हो जाए। चुनाँचे वह

मौका की तलाश में रहते थे। हसद की आँखें नहीं होंती मगर उसके कान बहुत बड़े होते हैं। इसलिए हासिद लोग छोटी-छोटी बातें सुनकर बतंगड़ बनाने की कोशिश करते हैं। एक दिन उन लोगों ने मिलकर बादशाह से कहा कि बादशाह सलामत! हम आपके करीबी हैं। पढ़े लिखें हैं, ख़ानदानी लोग हैं और अमीरों में भी हैं लेकिन आपकी मुहब्बत की नज़र जो अयाज़ पर है वह और किसी पर नहीं है। बादशाह ने कहा ठीक है मैं आपको कभी इसका जवाब दूंगा।

एक दिन बादशाह ने एक फल मंगवाया जो बहुत की कढ़वा था। उसने उसकी फांके बनवायीं और एक-एक फांक अपने साथियों में बांट दी। एक फांक अयाज़ को भी दी। अब जिसने भी वह फल खाया उसे बहुत कढ़वा लगा। हर एक ने कहा कि बादशाह सलामत! यह फल तो बहुत कढ़वा है। लेकिन जब बादशाह ने अयाज़ को देखा तो वह मज़े से फल खा रहा था। बादशाह ने पूछा, अयाज़! आपको फल कढ़वा नहीं लग रहा है? अर्ज़ किया, बादशाह सलामत! कढ़वा तो बहुत है। बादशाह ने कहा, आप तो बड़े आराम से खा रहे हैं। कहने लगा, मुझे ख़्याल आया कि आपके जिन हाथों से मैं ज़िंदगी में सैंकड़ों मीठी चीज़ें लेकर खा चुका हूं अगर इन हाथों से आज कढ़वी चीज़ भी मिल गई तो मैं उसको कैसे वापस करूं? लिहाज़ा मुझे वापस करते हुए शर्म महसूस हुई और मैंने कढ़वी चीज़ भी खा ली।

मौलाना रोम रह० फ़रमाते हैं कि काश! हमारे अंदर भी यह ख़ूबी पैदा हो जाए कि हम हर हाल में अल्लाह तआला की नेमतों का इस्तेमाल करते हुए उसकी शुक्रगुज़ारी बजा लाएं। जिस परवरदिगार ने हमें हज़ारों ख़ुशियाँ अता फ़रमायीं अगर कभी कोई ग़म और तकलीफ़ की बात पेश आ जाए तो हमें चाहिए कि हम न तो अल्लाह तआला की शिकायत करें और न ही उसका दर छोड़ें। आज तो अल्लाह

तआला की नेमतों की इंतिहा नहीं। उसके बावजूद हमें शुक्र करने का पता ही नहीं।

हर हाल में अपने से अदना को देखिए

एक साहब ने ज़ोहर की नमाज़ पढ़ी। तंगदस्ती इतनी थी कि जूता भी टूट गया। गर्मी का मौसम था। गर्म ज़मीन नंगे पाँव चलते हुए यह मस्जिद से घर की तरफ़ लौटने लगे तो दिल में ख़्याल आया परवरदिगार! मैं तो आपके सामने सज्दा में जाता हूँ, नमाज़ें पढ़ता हूँ, मस्जिद की तरफ़ आता हूँ, मुझे तो आपने जूता भी अता नहीं किया। अभी यह बात सोच ही रहा था कि सामने से एक लंगड़े आदमी को आते हुए देखा, वह बैसाखियों के बल चलकर आ रहा था। फ़ौरन दिल पर चोट लगीं कि ओहो! मैं तो जूते के न होने की शिकायत करता रहा, यह भी तो इंसान है जिसे परवरदिगार ने टांगे भी अता न कीं। यह लकड़ियों के सहारे चलता हुआ आ रहा है तो जब अपने से नीचे वाले को देखा तो दिल में शुक्र की कैफ़ियत पैदा हुई।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 5/19)

शुक्रे इलाही में पत्थर भी रो पड़ा

एक बुज़ुर्ग किसी रास्ते पर जा रहे थे। उन्होंने एक पत्थर को रोते हुए देखा। उन्होंने पत्थर से पूछा कि तुम क्यों रो रहे हो? वह कहने लगा, मैंने किसी क़ारी साहब को पढ़ते हुए सुना है कि ﴿وقودها الناس والحجارة﴾ कि इंसान और पत्थर जहन्नम का ईंधन बनेंगे। जब से मैंने सुना मैं रो रहा हूँ कि क्या पता मुझे भी जहन्नम का ईंधन बनाकर जला दिया जाए। इन बुज़ुर्ग को उस पर बड़ा तरस आया। लिहाज़ा उन्होंने खड़े होकर दुआ मांगी, ऐ अल्लाह! इस पत्थर को जहन्नम का ईंधन न बना, जहन्नम की आग से माफ़ और बरी फ़रमा

देना। अल्लाह तआला ने उनकी दुआ क़ुबूल फ़रमा ली। वह बुज़ुर्ग आगे चले गए। कुछ दिनों के बाद वापस उसी रास्ते को गुज़रने लगे तो देखा कि वह पत्थर फिर रो रहा है। वह फिर खड़े हो गए। पत्थर से बात की तो पत्थर से फिर पूछा कि अब क्यों रो रहा है? तो पत्थर ने जवाब दिया कि ﴿ذلك بكاء الخوف﴾ ऐ अल्लाह के बंदे! जब आप पहले आए थे तो उस वक़्त रोना तो ख़ौफ़ का रोना था ﴿وهذا بكاء الشكر والسرور﴾ और अब मैं शुक्र और सुरूर की वजह से रो रहा हूँ कि मेरे परवरदिगार ने मुझे जहन्नम की आग से माफ़ी अता फ़रमा दी है। जैसे बच्चे का रिज़ल्ट अच्छा निकले तो ख़ुशी की वजह से आँखों से आँसू आ जाते हैं। इसी तरह अल्लाह के नेक बंदों को जब उसकी मारिफ़त मिलती है, जब सीनों में नूर आता है, सकीना नाज़िल होती है और रब्बे करीम की रहमत और बरकत नाज़िल होती है तो अल्लाह के कामिल बंदे फिर अल्लाह के शुक्र से रोया करते हैं।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 4/194)

दो नाशुक्रों का अंजाम

हज़रत मौलाना बदरे आलम साहब रह० "तर्जुमानुस्सुन्नत" में एक हदीस नक़ल फ़रमाते हैं कि बनी इस्राईल में तीन आदमी थे। उनमें से एक आदमी कोढ़ का मरीज़ था। उसके पास एक आदमी ने आकर कहा, क्या आपको कोई परेशानी है? उसने कहा, मैं कौन सी परेशानी आपको बताऊँ? एक तो मैं कोढ़ का मरीज़ हूँ जिसकी वजह से लोग मेरी शक्ल देखना भी पसंद नहीं करते। दूसरे रिज़्क़ की बड़ी तंगी है। उस आदमी ने कहा, अच्छा अल्लाह तआला आपकी बीमारी को भी दूर कर दे और आपके रिज़्क़ में भी बरकत अता फ़रमा दे। नतीजा यह निकला कि अल्लाह तआला ने उसकी बीमारी भी दूर कर दी और अल्लाह तआला ने उसे एक ऊँटनी अता फ़रमाई। उस

ऊँटनी की नसल इतनी बढ़ी कि वह हज़ारों ऊँटों और ऊँटनियों के रेवढ़ का मालिक बन गया। जिसकी वजह से वह बड़ा अमीर आदमी बन गया और रहने के लिए महल बना लिए।

दूसरा आदमी गंजा था। वह आदमी उस गंजे के पास आया और पूछा कि क्या तुम्हारी कोई परेशानी है? उसने कहा, जनाब मेरे सर पर तो बाल ही नहीं हैं। जिसके पास बैठूं वही मज़ाक करता है। जो कारोबार करता हूँ, ठीक नहीं चलता। उसने कहा अच्छा अल्लाह तआला तुझे सर पर ख़ूबसूरत बाल भी अता करे और तुझे अल्लाह तआला रिज़्क भी दे। चुनाँचे अल्लाह तआला ने उसे एक गाय अता की। उस गाय की नसल इतनी बढ़ी कि वह हज़ारों गायों के रेवढ़ का मालिक बन गया। वह भी आलीशान महल मे बड़ी ठाठ की ज़िंदगी गुज़ारने लग गया।

तीसरा आदमी आँखों से अंधा था। वह आदमी उस अंधे के पास गया और उसे पूछा, भई! आपको कोई परेशानी तो नहीं? उसने कहा, जी मैं तो दर-ब-दर की ठोकरें खाता हूँ। लोगों के घरों से जाकर मांगता हूँ, हाथ फैलाता हूँ। मेरी भी कोई ज़िंदगी है। टुकड़े मांग-मांग कर खाता फिरता हूँ। मैं न अपनी माँ को देख सकता हूँ और न बाप को। इसके अलावा रिज़्क की तंगी भी है। उस आदमी ने उसकी बीनाई के लिए और रिज़्क की फ़राख़ी के लिए दुआ कर दी। अल्लाह तआला ने उसे बीनाई भी दे दी और उसको एक बकरी दे दी। उस बकरी का रेवढ़ इतना बढ़ा कि वह हज़ारों बकरियों का मालिक बन गया। इस तरह वह भी आलीशान महल में इज़्ज़त की ज़िंदगी गुज़ाने लग गया। कई सालों के बाद वह तीनों अपने वक़्त के सेठ कहलाने लगे।

काफ़ी अरसा गुज़रने के बाद वही आदमी पहले के पास आया।

उसने उसे कहा कि मैं मुहताज हूँ। अल्लाह के नाम पर मांगने के लिए आया हूँ। उसी अल्लाह ने आपको सब कुछ दिया है। आपके पास तो कुछ भी नहीं था। आज इतना कुछ आपके पास है। आप इसमें से उसी अल्लाह के नाम पर मुझे भी कुछ दे दें। जब उसने सुना कि तुम्हारे पास कुछ भी नहीं था तो उसका पारा चढ़ गया और कहने लगा, ज़लील किस्म के लोग मांगने के लिए आ जाते हैं। ख़बरदार ऐसी बात आइन्दा न करना। मैं अमीर, मेरा बाप अमीर, मेरा दादा भी अमीर आदमी था। हम तो ख़ानदानी अमीर हैं। तुम कौन हो इस बात को करने वाले कि तुम्हारे पास कुछ भी नहीं था। चले जाओ यहाँ से वरना मैं जूते लगवाऊँगा। चुनाँचे उसने कहा, अच्छा मियाँ! नाराज़ न होना, तुम जैसे थे अल्लाह तुम्हें वैसा ही कर दे। वह जब यह कहकर चला गया तो उसके जानवरों में एक बीमारी पड़ गई और उसके सब ऊँट मर गए। और कोढ़ की बीमारी दोबारा लग गई। गोया वह जिस पोज़ीशन में था उसी पोज़ीशन में दोबारा लौट आया।

उसके बाद वह दूसरे आदमी के पास गया और उसे कहा, मैं मुहताज हूँ। मैं उसी अल्लाह के नाम पर मांगने आया हूँ जिसने आपको सब कुछ दिया है। आपके पास तो कुछ भी नहीं था। आज इतना कुछ है। जब उसने यह बात की तो वह बड़ा गुस्से में आ गया और कहने लगा, तुम मुफ़्तख़ोर हो। हम ने कमाकर इतना बनाया है। मैंने फ़लां सौदा किया तो इतनी बचत हुई और फ़लां सौदा किया तो इतने कमाए। लोग मुझे बड़ा बिजनिस माइन्डेड कहते हैं। मेरी तो यह ख़ून पसीने की कमाई है। ऐसे ही पेड़ों से तोड़कर नहीं लाए और न यह चोरी का माल है। अब चल जा यहाँ से वरना दो थप्पड़ लगाऊँगा। जब उस अमीर आदमी ने ख़ूब डांट-डपट की तो उसने कहा, भाई नाराज़ न होना तुम जैसे थे अल्लाह तुम्हें दोबारा वैसे ही कर दे।

चुनाँचे उसके सर के बाल भी ग़ायब हो गए और अल्लाह तआला ने उसकी गायों में एक ऐसी बीमारी पैदा कर दी जिससे सब गायं मर गयीं। इस तरह जैसा पहले था वैसा ही बन गया।

इसके बाद वह तीसरे के पास गया और कहा, भई! मैं अल्लाह के नाम पर मांगने आया हूँ, मुहताज हूँ। आपके पास कुछ भी नहीं था। अल्लाह तआला ने आपको सब कुछ दिया। अब उसी अल्लाह के नाम पर मुझे भी कुछ दे दो। जब उसने यह बात की तो उसकी आँखों में आँसू आ गए। वह कहने लगा, भई! तुमने बिल्कुल सच कहा। मैं तो अंधा था लोगों के लिए तो रात को अंधेरा होता है और मेरे लिए तो दिन में भी अंधेरा हुआ करता था। मैं तो दर-दर की ठोकरें खाता था। लोगों से मांग-मांग कर ज़िंदगी गुज़ारता था। मेरे भी कोई हालात थे? कोई अल्लाह का बंदा आया। उसने मुझे दुआ दी। अल्लाह तआला ने मुझे बीनाई भी दे दी और इतना रिज़्क़ भी दे दिया। आज आप उस अल्लाह के नाम पर मांगने के लिए आए हैं तो मियाँ! इन दो पहाड़ों के बीच हज़ारों बकरियाँ फिर रही हैं। जितनी चाहो तुम अल्लाह के नाम पर ले जाओ। जब उस अमीर आदमी ने यह बात की तो मुख़ातिब कहने लगा, मुबारक हो। मैं तो अल्लाह का फ़रिश्ता हूँ। अल्लाह ने मुझे तीन बंदों की तरफ़ आज़माइश बनाकर भेजा था। दो तो अवक़ात भूल गए मगर तुमने अपनी अवक़ात को याद रखा है। अल्लाह तआला तेरे माल में और ज़्यादा बरकत अता फ़रमाए। चुनाँचे कहते हैं कि वह आदमी बनी इस्राईल का सबसे बड़ा अमीर कबीर आदमी था। साबित हुआ कि बंदा अगर अपनी अवक़ात और बुनियाद को याद रखे तो अल्लाह तआला बरकत दे देते हैं।

क़ौमे सबा का इबतरनाक अंजाम

क़ुरआन मजीद में एक क़ौम का ज़िक्र है जिसे क़ौमे सबा कहते

हैं। मुफ़स्सिरीन ने लिखा है के उस ज़माने में उनके दोनों तरफ़ बाग़ात होते थे। फलों की इतनी ज़्यादती थी कि उनके हाँ का दस्तूर था कि जहाँ से भी कोई फल तोड़ना चाहता था तो तोड़ सकता था। कोई मनाही नहीं थी। इस तरह वह हर वक़्त फल खाया करते थे। अल्लाह तआला ने उस क़ौम से फ़रमाया ﴿كلوا من رزق ربكم واشكروا له﴾ मेरे बंदो! मेरी दी हुई नेमतें खाओ और मेरा शुक्र अदा करो। मगर वह नाशुक्रे निकले और कहने लगे, ऐ अल्लाह! हर तरफ़ हरियाली है, बाग़ात और फल हैं। हम तो देख-देखकर तंग आ गए हैं। हम एक शहर से दूसरे शहर का सफ़र करते हैं तो पता ही नहीं चलता क्योंकि हर तरफ़ पेड़ होते हैं और दूसरा शहर आ जाता है। बीच में अगर कोई वीराना होता तो पता चलता कि हम एक शहर से दूसरे शहर में जा रहे हैं। जब उन्होंने नाशुक्री की यह बात की तो अल्लाह तआला ने ज़मीन के अंदर के पानी को सुखा दिया।

जब पानी सूख गया तो सब बाग़ात के पेड़ सूख गए और नतीजा यह निकला कि वह अल्लाह तआला की नेमतों से महरूम कर दिए गए और खाने को भी तरसने लगे। अल्लाह तआला क़ुरआन पाक में इसका ज़िक्र फ़रमाते हैं। मेरे दोस्तो! क़यामत के दिन आप यह नहीं कह सकेंगे कि हमें कोई क़ुरआन सुनाने वाला नहीं आया था। जो हमें खोल-खोल कर बताता कि हम पर अल्लाह तआला की कितनी-कितनी नेमतें हैं। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं :

﴿لقد كان لسبا في مسكنهم اية جنتن عن يمين و شمال. (سبا: ١٥)﴾

क़ौमे सबा के घरों में बड़ी निशानियाँ हैं। वह जिन रास्तों पर चलते थे उनके दाईं तरफ़ बाग़ात होते थे और बाईं तरफ़ भी बाग़ात होते थे।

﴿كلوا من رزق ربكم واشكروا له بلدة طيبة ورب غفور. (سبا: ١٥)﴾

और फ़रमाया कि मेरा दिया हुआ रिज़्क़ खाओ। और मेरा शुक्र अदा करो, कितना पाकीज़ा शहर है। तुमसे कोई कोताही हो जाए तो माफ़ी मांग लेना। तुम्हारा परवरदिगार तो मग़फ़िरत करने वाला है। मगर वह इस नेमत की क़द्र न कर सके और कहने लगे, ﴿ربنا باعد بين اسفارنا(سبا:١٩)﴾ ऐ अल्लाह! दर्मियान में कोई खुली जगह और वीराने होते ताकि एक शहर से दूसरे शहर जाते हुए पता चलता कि सफ़र क्या है? लिहाज़ा अल्लाह तआला ने उनके बाग़ात को ख़त्म कर दिया। और फ़रमाया दिया :

﴿ذالك جزينهم بما كفروا وهل نجزى الا الكفور. (سبا:١٧)﴾

उन्होंने नेमतों की नाक़द्री की और हमने उनको नेमतों की नाक़द्री का यह बदला दिया और नाशुक्रों का यही बदला होता है।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 8/43-45)

सर पर शिकवे की पट्टी

राबिया बसरिया रह० एक बार कहीं खड़ी थीं। उनके क़रीब से एक नौजवान गुज़रा। उसने अपने सर पर पट्टी बांधी हुई थी। उन्होंने पूछा, बेटा क्या हुआ? उसने कहा, अम्मा! मेरे सर में दर्द है जिसकी वजह से पट्टी बांधी हुई है। पहले तो कभी दर्द नहीं हुआ। उन्होंने पूछा, बेटा! आपकी उम्र कितनी है? वह कहने लगा, जी! मेरी उम्र तीस साल की है। यह सुनकर फ़रमाने लगीं, "बेटा! तेरे सर में तीस साल तक दर्द नहीं हुआ तूने शुक्र की पट्टी कभी नहीं बांधी। तुझे पहली दफ़ा दर्द हुआ तो तूने शिकवे शिकायत की पट्टी फ़ौरन बांध ली है। हमारा हाल भी यही है कि हम सालों उसकी नेमतें और सुकून की ज़िंदगी गुज़ारते हैं। हम उसका तो शुक्र अदा नहीं करते और जब ज़रा सी तकलीफ़ पहुँचती है तो फ़ौरन शिकवे करना शुरू कर देते हैं।

आँखो की क़द्र व क़ीमत और उसका शुक्र

हमारे एक दोस्त एक अजीब वाक़िआ सुनाने लगे। एक साहब का एक्सीडेंट हुआ। उसकी आँख के ऊपर का पर्दा कट गया। कहने लगे, दो घंटे गुज़रते तो आँख पर मिट्टी जम जाए। आम आदमी महसूस नहीं कर सकता कि हवा में कितनी बारीक-बारीक ज़र्रात मिट्टी की शक्ल में होते हैं जो जमते रहते हैं। अक्सर आप देखें कि अगर कोई चीज़ रखें दूसरे दिन उस पर मिट्टी नज़र आएगी। हमारी आँख के ऊपर अल्लाह तआला ने पर्दा बना दिया। यह बंद होता है और खुलता है, बंद होता है और खुलता है। इसके साथ-साथ थोड़ा-थोड़ा पानी अंदर से निकलता है तो पानी के साथ-साथ जैसे किसी चीज़ को झाड़ू लगाते हैं। यह अल्लाह तआला ने झाड़ू का इंतिज़ाम किया हुआ है। यह बंद होता है खुलता है। झाड़ू चल रहा होता है। जब उसकी आँख का ऊपर वाला गोश्त का पर्दा कट गया तो आँख हर वक़्त बिल्कुल खुली रहने लगी। मुसीबत यह बनी की हवा में तैरने वाले ज़र्रात की वजह से आँख पर मिट्टी की तह आ जाए तो थोड़ी देर के बाद धोना पड़े। फिर मिट्टी जम जाए फिर धोना पड़े। कोई पचास दफ़ा धोना पड़े। अब एक दिन में पचास दफ़ा पानी डाला नहीं जाता। लोग अयादत करने आए तो कहने लगे, आँख का छोटा सा पर्दा था। कभी सोचा भी नहीं था कि अल्लाह तआला की कितनी बड़ी नेमत है। हम में कितने हैं जो रात को सोते वक़्त इस नेमत का शुक्र अदा करते हैं? मांगते तो सब हैं मगर उसके देने का शुक्र अदा करने वाले थोड़े हैं। इसकी बुनियादी वजह दिल में ग़फ़लत होती है। जब ग़फ़लत हो तो इंसान का रवैय्या और होता है। जब दिल में ध्यान हो, मारिफ़त हो, फिर रवैय्या कुछ और होता है।

(ख़ुत्बात ज़ुल्फ़ुक़्क़ार 1/165-166)

नेमत की नाक़द्री पर मिलकर रहती है सज़ा

अज़ीज़ तलबा! नेमतों की क़द्रदानी उनकी मौजूदगी में करते रहना। कहीं ऐसा न हो कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का जलाल ज़ाहिर हो जाए। एक औरत तन्दूर में रोटियाँ पकाया करती थी। अल्लाह तआला ने उसको बेटा दिया। उसका बेटा चलने फिरने की उम्र का हो गया। उसे अपनी माँ के साथ बहुत मुहब्बत थी। लिहाज़ा वह माँ के साथ ही हर वक़्त चिमटा रहता था। माँ चाहती थी कि रोटियाँ पकाते वक़्त यह कहीं खेले, आराम करे, सो जाए। लेकिन वह फिर उठकर आ जाता था। एक दिन वह बड़ी तंग हुई। लिहाज़ा उसने उसे बिस्तर पर लिटाया और कहा, ख़बरदार! अगर अब मेरे पीछे आया तो मैं मारूंगी। आँखें बंद कर और सो जा। उसके बाद उसने काम शुरू कर दिया। थोड़ी देर बाद बच्चा उठा और रोता हुआ फिर आ गया। वह अनपढ़ जाहिल थी। लिहाज़ा उसने गुस्से में कह दिया,

"तुझे सुलाया था, तू हमेशा की नींद ही सो जाता तो बेहतर था।"

अल्लाह तआला ने उसकी बद्दुआ को क़ुबूल फ़रमाया लिया। मगर अल्लाह तआला ने उस वक़्त बच्चे को मौत न दी। वह बच्चा बड़ा हुआ। स्कूल के अंदर तालीम में फर्स्ट आया यहाँ तक कि कामयाब बिज़निस मैन बना और वह इतना ख़ूबसूरत था कि जब वह गलियों में चलता था तो मर्द लोग उसे देखकर रश्क करते थे कि जवान बेटा हो तो ऐसा होना चाहिए।

माँ ने उसके रिश्ते के लिए अपने पूरे ख़ानदान में से चुनकर लड़की ढूंढी। शादी के लिए तैयारियाँ पूरी कर लीं। अभी शादी में एक दो दिन बाक़ी थे कि कोई काम करते हुए उस नौजवान का पाँव फिसला, वह गर्दन के बल गिरा और उसकी जान निकल गई। अब जब माँ ने उसकी लाश देखी तो वह अपना दिमाग़ी तवाज़ुन खो बैठी

और पागल हो गई। वह इतना बड़ा सदमा बरदाश्त न कर सकी।

अब वह गलियों में पागलों की तरह फिरती रहती और तिनके चुगती रहती। लड़के उसे पागल कहकर छेड़ते थे। मगर वह पागल नहीं थी। उससे अल्लाह तआला ने जलाल में आकर बेटे वाली नेमत ले ली थी। गोया बद्दुआ के वक़्त अल्लाह तआला ने उसे फ़रमा दिया था कि अच्छा! मैंने तुम्हें बेटे की नेमत दी थी और तू उसकी नाक़द्री करते हुए बद्दुआ देती है कि तू सोया ही रह जाता। हाँ मैं अभी इसको मौत न दूंगा बल्कि मैं इस नेमत को परवान चढ़ने दूंगा यहाँ तक कि जब यह फल पककर तैयार हो जाएगा तो मैं तैयार हुए फल को तोड़ूंगा ताकि तुझे एहसास हो कि तूने मेरी किस नेमत की नाक़द्री की है। वह औरत अपने बेटे की याद में यह पढ़ा करती थी–

آوے ماہی تینوں اللہ وی لیاوے تے تیریاں نت وطناں تے لوڑاں

کملی کر کے چھوڑ گیوں تے میں ککھ گلیاں دے رولاں

यह आजिज़ इसी लिए बार-बार कहा करता है कि नेमतों की क़द्रदानी के लिए नेमतों के छिन जाने का इंतिज़ार न करना। जब अल्लाह नेमत को छीन लेता है तो फिर दोबारा नाक़द्र को नहीं दिया करते। इसलिए नेमत की मौजूदगी में उसकी क़द्रदानी की आदत डालें। घर नेमत है, औलाद नेमत है, माँ-बाप नेमत हैं, बहन-भाई नेमत हैं, मुसलमान भाई नेमत हैं, सेहत नेमत है, सकून नेमत है, रिज़्क़े हलाल नेमत है। अल्लाह तआला ने हमें ये सब नेमतें अता कर दी हैं। हमें चाहिए कि हम इनकी ज़रूर क़द्रदानी करें।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 12/62)

अल्लाह की ख़ुशी मालूम करने का ज़रिया

बनी इस्राईल के एक आदमी ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से

पूछा कि हमें कैसे पता चले कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ख़ुश हैं या नहीं? हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम व 'हे तूर पर तशरीफ़ ले गए। उन्होंने जाकर पूछा, परवरदिगार आलम ये लोग पूछते हैं कि हमें यह कैसे मालूम हो कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हम से राज़ी हैं या नहीं। अल्लाह तआला ने फरमाया कि मूसा उन लोगों से कह दो कि अगर ये लोग अपने दिल में मुझसे ख़ुश हों तो मैं (परवरदिगार) उनसे ख़ुश हूँ और अगर ये अपने दिल में मुझसे शिकायतें रखते हैं तो मैं भी इनसे नाख़ुश हूँ। कितनी आसान तर्तीब बता दी। अब हम अपने दिल में देखें कि अगर दिल से राज़ी हों तो यह समझ लें कि अल्लाह तआला हम से राज़ी हैं और अगर दिल में शिकवे हैं, फ़ला बच्चा छोटी उम्र में मर गया, कारोबारी हालत ख़राब है कि जिधर हाथ डालता हूँ, सोना मिट्टी हो जाता है। अगर इस क़िस्म के शिकवे और शिकायतें हैं तो फिर समझ लें कि उधर से भी जवाब मांगा जाएगा कि बतला तूने भी नेमतों का हक़ अदा किया था कि नहीं?

सब्र व इस्तिक़लाल (जमाव)

सब्र की फ़ज़ीलत

एक बार अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर "वही" भेजी कि ऐ मूसा! क्या आप को ऐसा अमल बताऊँ कि जिसके करने से जिन चीज़ों पर सूरज और चाँद निकलता है वे सब चीज़ें आपके लिए मग़फ़िरत की दुआ करें। उन्होंने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह! वह कौन सा अमल है, ज़रूर इर्शाद फ़रमाएं। अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया, अगर मख़्लूक़ से पहुँचने वाली ईज़ा पर सब्र करोगे तो फिर सब चीज़ें तुम्हारी मग़फ़िरत के लिए दुआ करेंगी।

सब्रे अय्यूब अलैहिस्सलाम

सैय्यदना अय्यूब अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला के पैग़म्बर थे। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उनको माल दिया, औलाद दी, हत्ताकि हर तरह की नेमतें दी थीं। शैतान कहने लगा कि उनकी सारी इबादतें इसलिए हैं कि उनको दुनिया का माल व दौलत मिला हुआ है, ज़रा लेकर देखें कि तो फिर पता चले। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के चाहने से उनका जितना माल था वह सारा का सारा माल किसी वजह से बर्बाद हो गया। कहने लगा, औलाद तो है। ऐसी बीमारी आई कि उनकी जितनी औलाद थी वह सारी की सारी उनकी आँखों के सामने मर गई। शैतान कहने लगा, सेहत तो है। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उनके जिस्म पर चेचक के दानों की तरह दाने निकाल दिए। यहाँ तक कि उनकी ज़बान और आँखों के सिवा पूरा जिस्म उन दानों से भर गया। वह दाने इतने बड़े ज़ख़्म बन गए कि उसमें कीड़े भी पड़ गए।

मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि इस बीमारी में अठ्ठारह साल गुज़र गए और हर दिन अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तरफ़ से सब्र की वजह से उनके दर्जात बुलंद होते, ज़बान से कोई शिकवा व शिकायत की कोई बात न निकलती। यहाँ तक कि अगर कोई कीड़ा जिस्म के ज़ख़्म से गिरता था तो वह उसको भी उठाकर वापस रख देते थे कि जब मेरे जिस्म को अल्लाह तआला ने तेरी ग़िज़ा बनाया तो नीचे क्यों गिर रहा है।

अठ्ठारह साल के बाद शैतान बहुत परेशान हुआ कि यह तो अल्लाह के ऐसे ख़ास बंदे हैं कि इतनी आज़माईशों में भी अपनी ज़बान से कोई बेसब्री या नाशुक्री का लफ़्ज़ नहीं निकाला। शैतान को परेशान देखकर उसके चेलों ने उसे कहा कि मियाँ! तुम ने जिस तरह उनके बाप को भूल में डाला था, क्यों न हम उन पर वही गुर

आज़माएं। कहने लगा, हाँ। लिहाज़ा वह उनकी बीवी के पास एक हकीम और तबीब की शक्ल में गया और कहने लगा कि देखो मैं तुम्हें एक बात बताने के लिए आया हूँ ताकि तुम्हारे मियाँ को सेहत हासिल हो जाए। वह ख़ुश हुई, हर बीवी चाहती है कि शौहर को सेहत मिले। कहने लगा कि उसका इलाज मेरे पास मौजूद है मगर हमारे हाँ दस्तूर यह है कि जैसे तुम अर्श के ख़ुदा को सज्दा करते हो, एक दफ़ा मुझे भी सज्दा कर लो तो मैं एक ऐसा इलाज आज़माऊँगा कि तुम्हारा शौहर सेहतमंद हो जाएगा। बीवी ने सुना तो ख़ामोश हो गई। कहने लगीं कि मैं उनके पास जाऊँगी और उनसे पूछूँगी। लिहाज़ा तफ़्सीर में लिखा है कि वह आपके पास आयीं और उन्होंने आकर पूछा। हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम को बड़ा ग़ुस्सा आया और फ़रमाया, तूने उस वक़्त उस मरदूद को क्यों न कहा कि तू शैतान है, यह क्यों कहा कि पूछकर बताऊँगी? अगर अल्लाह ने मुझे सेहत दे दी तो मैं तुझे सौ कोड़े लगाऊँगा कि तूने ईमानी ग़ैरत क्यों नहीं दिखाई और ऐसे शैतान मरदूद को उसी वक़्त मुँह पर जवाब क्यों न दे मारा। आपका जवाब सुनकर शैतान और नाउम्मीद हो गया। सोचने लगा कि दो चार साल और इसी तरह गुज़रें तो हो सकता है कि यह बीमारी से परेशान हो जाएं।

एक दिन उसने क्या सुना कि हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम दुआ मांग रहे थे कि ऐ अल्लाह! मेरी ज़िंदगी का जो वक़्त गुज़रा वह तो गुज़र गया, जब यह बीमारी और ग़म तेरी ही तरफ़ से है तो अगर आप मुझे सौ साल की ज़िंदगी भी देंगे तो मैं सौ साल भी इस हाल में आपको नहीं भूलूँगा। जब शैतान ने यह सुना तो वह कहने लगा कि वाक़ई यह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के वह ख़ास बंदे हैं कि जिनके ऊपर मेरा कोई दांव नहीं चल सकता।

अल्लाह तआला ने फिर अपने प्यारे नबी अलैहिस्सलाम को सेहत दी। बीमारी की हालत में बीवी को कहा था कि सौ कोड़े लगाऊँगा। लिहाज़ा बात भी पूरी करनी थी। अब अल्लाह तआला ने उनकी बीवी के ऊपर रहम खाया और हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम से कहा कि तुम एक पेड़ की छोटी-छोटी, पतली-पतली टहनियाँ मिसवाक के बराबर इकट्ठी कर लो और एक सौ को बांधकर उसके जिस्म पर एक दफ़ा मारोगे तो सौ कोड़े समझे जाएंगे। यहाँ से एक बात निकली कि जब परवरदिगार आलम किसी बंदे की ग़लती और कोताही को माफ़ करना चाहते हैं तो रब्बे करीम उसका रास्ता ख़ुद बता दिया करते हैं। हदीस पाक में आया है कि अल्लाह तआला जब किसी बंदे की बख़्शिश करना चाहते हैं तो उसके किरामन कातिबीन यानी जो फ़रिश्ते रोज़ाना नेकी और बुराई लिखते हैं, उन में से नेकी के फ़रिश्ते को तो रोज़ाना बदलते रहते हैं मगर गुनाह लिखने वाले फ़रिश्ते को नहीं बदलते। वह वही फ़रिश्ता रहता है। चुनाँचे क़यामत के दिन उस बंदे के आमालनामे में गुनाह तो लिखे होंगे और उन गुनाहों पर गवाही देने के लिए एक फ़रिश्ता होगा। जबकि उसकी नेकियों की गवाही देने के लिए जितनी उसकी ज़िंदगी के दिन थे, उतने ही फ़रिश्ते खड़े होंगे। रब्बे करीम फ़रमाएंगे, मेरे बंदे की नेकियों पर जब इतने गवाह हैं तो मैं इसके गुनाहों वाले एक गवाह को कैसे क़ुबूल कर लूं। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे कि जाओ मैंने बंदे को माफ़ फ़रमा दिया।

बहरहाल अल्लाह तआला ने अय्यूब अलैहिस्सलाम को सेहत अता फ़रमाई और औलाद व माल व मताअ सब कुछ अता किया और और फ़रमाया ﴿انا وجدناه صابرا﴾ हमने उसे सब्र करने वाला पाया। ﴿نعم العبد﴾ मेरा कैसा अच्छा बंदा था, ﴿انه اواب﴾ वह मेरी ही तरफ़ रुजू करने वाला था। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 5/55-58)

हज़रत इमरान अलैहिस्सलाम की बीवी और लख़्ते जिगर (बेटी) का सब्र व तवक्कुल

इमरान अलैहिस्सलाम की बीवी पेट से थीं। क़ुरआन बताता है कि उन्होंने दुआ मांगी ﴿واذ قالت امرات عمران﴾ और जब इमरान की बीवी ने कहा,

﴿ربى انى نذرت لك ما فى بطنى محررا فتقبل منى﴾

ऐ मेरे परवरदिगार! जो कुछ मेरे पेट में है मैंने इसे तेरे लिए वक़्फ़ कर दिया। बस तू मुझसे क़ुबूल फ़रमा ले।

ग़ौर कीजिए कि एक नबी की बीवी दुआ मांग रही है रब के लफ़्ज़ के साथ, ख़ालिक या मालिक के लफ़्ज़ के साथ नहीं। अल्लाह की क़ुदरत कि बेटी पैदा हो गई,

﴿فلما وضعتها قالت رب انى وضعتها انثى﴾

जब उसने बेटी को जना तो कहने लगी, ऐ मेरे परवरदिगार! मैंने तो बेटी को जना है।

﴿وليس الذكر كالانثى﴾ और बेटा बेटी की तरह तो होता। ﴿وانى سميتها مريم﴾ और मैंने इसका नाम मरयम रखा है।

﴿وانى اعيذها بك وذريتها من الشيطن الرجيم.﴾

मैं इसके बारे में और उसकी औलाद के बारे में शैतान मरदूद से तेरी पनाह मांगती हूँ।

इस दुआ के जवाब में अल्लाह तआला भी रब का लफ़्ज़ इस्तेमाल फ़रमाते हैं :

﴿فتقبلها ربها بقبول حسن وانبتها نباتا حسنا وكفلها زكريا.﴾

फिर रब उने उसको क़ुबूल कर लिया, बेहतर क़ुबूल करना और ज़करिया (अलैहिस्सालम) ने उसकी परवरिश की।

रब ने कैसे क़ुबूल किया? यह मरयम रज़ियल्लाहु अन्हा एक दफ़ा अकेली थीं और ज़करिया अलैहिस्सलाम कहीं तबलीग़ पर चले गए थे। वापस आने में देर हो गई। परेशान थे कि पीछे खाने की कोई चीज़ नहीं थी। शायद मरयम भूखी रही होगी। नींद भी आई होगी या नहीं। जब आप हुजरे में दाख़िल हुए तो देखा कि मरयम रज़ियल्लाहु अन्हा मेहराब के अंदर बैठी हुई बे मौसम के फल खा रही हैं। ﴿كلما دخل عليها زكريا المحراب﴾ जब ज़करिया अलैहिस्सलाम दाख़िल हुए मेहराब के अंदर ﴿وجد عندها رزقا﴾ तो उसके पास रिज़्क़ पाते, ﴿قال يا مريم انى لك هذا﴾ पूछा ऐ मरयम! यह कहाँ से आया? ﴿قالت هو من عند الله﴾ कहा यह तो अल्लाह की तरफ़ से है। ﴿ان الله يرزق من يشاء بغير حساب﴾ (अल्लाह) जिसे चाहता है बेहिसाब अता कर देता है।

यह सुनकर हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम ने भी अल्लाह तआला से दुआ मांगी ﴿هنالك دعا زكريا ربه﴾ जब ज़करिया अलैहिस्सलाम ने अपने रब को पुकारा ﴿رب هب لى من لدنك ذرية طيبة﴾ ऐ परवरदिगार! मुझे बेटा अता फ़रमा और बेटा भी ऐसा हो जो पाकीज़ा हो, तैय्यब हो। इस तरह क्यों मांगा? इसलिए कि औलाद का होना एक ख़ुशी और उसका नेक होना उससे बढ़कर ख़ुशी तो बेटा मांगा पाकीज़ा और तैय्यब, सुब्हानअल्लाह।

वह क्योंकि जानते थे कि ऐ अल्लाह! तू मरयम को बेमौसम फल अता कर सकता है, मैं बूढ़ा हो चुका हूँ, मेरी हड्डियाँ कमज़ोर हो गई हैं और मेरे बाल सफ़ेद हो गए। ऐ अल्लाह! इस बुढ़ापे में मुझे बेमौसम फल अता कर सकता है। इस बुढ़ापे में मुझे भी बेटा दे सकता है। तो अल्लाह तआला ने उनको भी बुढ़ापे में बेटा अता फ़रमाया है।

बीबी हाजरा रज़ियल्लाहु अन्हा के सब्र व तवक्कुल की क़द्रदानी

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुक्म पर बीबी हाजरा और इस्माईल अलैहिस्सलाम को मुल्क शाम से लेकर बैतुल्लाह के क़रीब ऐसी जगह पर आबाद करते हैं जिसके बारे में अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया,

﴿بواد غير ذى زرع عند بيتك المحرم (سورة ابراهيم ٣٧)﴾

जब वहाँ चलने लगे तो बीबी साहिबा पूछने लगीं। आप हमें यहाँ क्यों छोड़कर जा रहे हैं? तो उन्होंने कोई जवाब न दिया। दोबारा पूछने पर भी कोई जवाब न दिया। तीसरी बार पूछा, क्या आप हमें अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुक्म की वजह से छोड़कर जा रहे हैं? अब उन्होंने जवाब दिया, जी हाँ। जब उन्होंने यह बताया तो बीबी हाजरा फ़रमाने लगीं कि अगर आप हमें अल्लाह के हुक्म पर छोड़कर जा रहे हैं तो अल्लाह तआला हमें ज़ाए नहीं फ़रमाएंगे। अब देखिए अल्लाह की एक बंदी अल्लाह पर तवक्कुल करती है और ऐसी जगह जहाँ पानी नहीं मिलता और कोई हरियाली दिखाई नहीं देती, वह अल्लाह के नाम पर वहाँ रहने का इरादा कर लेती हैं। रब्बे करीम की क़द्रदानी देखिए कि यही नहीं कि सिर्फ़ उनको पीने के लिए अल्लाह तआला ने पानी अता किया बल्कि ज़मज़म का एक ऐसा चश्मा जारी फ़रमा दिया कि जिससे आज तक पूरी दुनिया के मुसलमान अपने घरों में बैठकर ज़मज़म पिया करते हैं। कहाँ इलाके के लिए पानी नहीं था और कहाँ ऐसा चश्मा कि कम व बेश बीस लाख आदमी हज पर जाते हैं और कम व बेश हर बंदा अपने साथ ज़मज़म का पानी भरकर लाता है। ऐ मालिक! यह कैसा चश्मा है जो इतने बंदों की

ज़रूरतों को पूरा कर रहा है।

एक बार हमें ज़मज़म के कुँए को देखने का शौक़ पैदा हुआ। क्योंकि किताबों में लिखा है कि उसको देखना भी इबादत है। अल्लाह तआला की शान कि हमारे एक क़रीबी दोस्त की वहाँ ड्युटी थी। वह हमें लेकर गए। जब वह हमें अंदर ले गए तो उन्होंने कहा अंदर झांक कर देखें। उन्होंने वहाँ ख़ास लाइनों का इंतिज़ाम किया हुआ था। जब उन्होंने तेज़ लाइटें अंदर डालीं और हमने अंदर झांकर देखा तो मालूम हुआ कि इसकी गहराई तो इतनी नहीं है। मगर नीचे जैसे पाइप में से पानी आ रहा होता है तो इस तरह हमें धारें नज़र आयीं। हमने उससे पूछा, जी यह क्या मामला है? वह कहने लगे कि हम आम लोगों में यह बात नहीं करते। मुझे कई बार ज़मज़म में जाने का मौक़ा मिला। नीचे सात जगहें ऐसी हैं जिनसे पानी उबल रहा है। वाह मेरे मौला! आप कितने क़द्रदान हैं कि बीबी हाजरा के तवक्कुल के सदक़े पूरी मख़्लूक़ को ज़मज़म पहुँचा रहे हैं। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 12/130)

रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नवासे का माफ़ करना और बरदाश्त

एक बार हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि अगर कोई बंदा मेरे एक कान में गाली निकाले और दूसरे कान में माफ़ी मांग ले तो मैं उसी वक़्त माफ़ कर दूंगा। उनका "वल आफ़ीना अनिन्नास" पर ऐसा अमल था। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 10/137)

बेटे के मरने पर सहाबिया का सब्र व जमाव

एक सहाबिया रज़ियल्लाहु अन्हा के हाँ बेटा पैदा हुआ। शौहर जिहाद पर गया हुआ है। जिस दिन शौहर को आना है तो उस दिन

कुछ घंटे पहले बेटा मर गया। अब परेशान बैठी हैं कि शौहर इतने दिनों बाद में आएगा और जब यह मालूम होगा कि बेटा मर गया है तो उसे कितना सदमा होगा। दिल में अफ़सोस होगा। काश! बच्चे को गोद में लेकर प्यार ही कर लेता। जब सहाबिया बहुत परेशान हुई तो उसने बच्चे को नहलाकर कपड़ा डालकर चारपाई पर रख दिया। किसी को इत्तिला न दी। शौहर घर आए तो पूछा क्या बना? बताया कि अल्लाह ने बेटा दिया। पूछा मेरा बेटा कहाँ है? कहा वह सकून में है। शौहर समझे कि सो रहा है। चुनाँचे शौहर ने खाना खाया, रात हो गई। मियाँ-बीवी इकट्ठे भी हुए। सफ़र की बातें भी हुईं लेकिन इस औरत को देखिए जो माँ थी। उसके दिल पर क्या गुज़र रही होगी जिसके मासूम बेटे की लाश सामने चारपाई पर पड़ी हुई हो। लेकिन वह ख़ाविन्द की ख़ुशी की ख़ातिर सीने पर सिल रखकर इस राज़ को छिपाए बैठी है कि मेरे ख़ाविन्द का दिल ग़मज़दा न हो। वह उसके साथ खाना भी खा रही है। हंस बोल भी रही है। दोनों मिल भी रहे हैं यहाँ तक कि इसी हाल में सुबह हो गई। सुबह शौहर से पूछती हैं कि मुझे एक बात बताइए। शौहर ने कहा पूछो। कहने लगी, अगर कोई किसी को अमानत दे और फिर कुछ अरसे बाद वापस मांगे तो वह ख़ुशी से देनी चाहिए या ग़मज़दा होकर। शौहर ने कहा कि ख़ुश होकर। कहा कि आपको भी अल्लाह तआला ने अमानत दी थी। आपके आने से कुछ देर पहले अल्लाह ने वह अमानत वापस ले ली। अब जाइए और ख़ुशी-ख़ुशी अल्लाह के हवाले कर दीजिए, अल्लाहु अकबर। इस सहाबिया रज़ियल्लाहु अन्हा ने हुस्ने माअशरत का हक़ अदा कर दिया। सुबह को शौहर रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहा कि अल्लाह के नबी! मेरे घर में यह मामला हुआ। मेरी बीवी ने मेरी ख़ुशी के लिए इतना सब्र व ज़ब्त दिखाया। अल्लाह के नबी ने दुआ दी। लिहाज़ा अल्लाह

तआला ने उस रात में बरकत डाली और वह औरत अपने शौहर के मिलने की उम्मीद से हुई। अल्लाह तआला ने उनको एक बेटा दिया जो हाफ़िज़ क़ुरआन भी और हाफ़िज़ हदीस भी बना।

सैय्यदना हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु का माफ़ व दरगुज़र करना

हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु घर में तशरीफ़ लाए थे। एक मेहमान आया। आपने उसे बिठाकर बांदी से फ़रमाया, जो इस मेहमान के लिए कुछ लेकर आओ। घर के अंदर कुछ शोरबा था। उस बांदी ने वही शोरबा गर्म किया। प्याले में डालकर लाने लगी। जब दरवाज़े में से दाख़िल होने लगी तो बेतवज्जेही की वजह से उसका पाँव अटका और वह शोरबा नीचे गिरा। उसक कुछ क़तरे आपके जिस्म मुबारक पर भी गिरे। क्योंकि शोरबा गर्म था और गर्म शोरबा जिस्म पर पड़े तो जिस्म जलता है। आपको तकलीफ़ हुई। इसलिए हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस बांदी की तरफ़ गुस्से के साथ देखा। वह बांदी पहचान गई कि आपको बहुत गुस्सा आया मगर वह आपकी ज़िंदगी के उसूल और क़ायदों को जानती थी। जब आपने गुस्से और जलाल से उसकी तरफ़ देखा तो वह फ़ौरन कहने लगी, ﴿والكاظمين الغيظ﴾ क़ुरआन पाक की वह आयत जिसमें अल्लाह तआला ने मोमिनों की सिफ़ात गिनवाते हैं कि वे तो गुस्से को पी जाने वाले होते हैं। आपने फ़ौरन फ़रमाया, मैंने अपने गुस्से को पी लिया। वह कहने लगी, ﴿والعافين عن الناس﴾ इंसानों को माफ़ करने वाले। आपने फ़रमाया, जा मैंने तेरी ग़ल्ती को माफ़ कर दिया। कहने लगी, ﴿والله يحب المحسنين﴾ अल्लाह तआला नेकोकारों से मुहब्बत करते हैं। आप फ़रमाने लगे, जा मैंने तुझे अल्लाह के रास्ते में आज़ाद कर दिया।

आले रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का माफ़ व दरगुज़र करना

एक बार इमाम ज़ैनुल आबिदीन रह० ने एक आदमी को देखा जो उनकी ग़ीबत कर रहा था। आपने फ़रमाया, ऐ दोस्त! अगर तू सच्चा है तो ख़ुदा मुझे बख़्श दे और अगर तू झूठा है तो ख़ुदा तआला तुझे बख़्श दे, सुब्हानअल्लाह कितना आसान जवाब दिया है। बात ही समेट दी।

एक और आदमी ने एक बार आपकी ग़ीबत की तो आपने उसे फ़रमाया, ऐ दोस्त! जितना तुझे मेरे ऐबों का पता है उससे बहुत ज़्यादा ऐब ऐसे हैं जिनका अभी तुझे पता ही नहीं है। इसके बाद उस आदमी को एक हज़ार दीनार हदिए के तौर पर पेश किए। जब उस बंदे ने आपका यह हुस्ने सुलूक देखा तो उसे शर्म आई। चुनाँचे माफ़ी मांगी और कहने लगा, मैं तसदीक़ करता हूँ कि आप रसूल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नवासे के बेटे हैं।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 10/137)

सब्र व तहम्मुल की इंतिहा तो देखिए

एक बार एक आदमी इमाम आज़म रह० को ज़हनी परेशानी देने के लिए मजमे में कहने लगा। आपकी माँ बेवा है। आप उनका निकाह मेरे साथ कर दें। अब यह कितना गुस्सा दिलाने वाली बात थी कि बूढ़ी माँ के लिए निकाह का पैग़ाम भेज रहा है। आपने बड़ी नरमी से जवाब दिया, मेरी माँ आक़िल व बालिग़ हैं। उनसे पूछकर फ़ैसला किया जाएगा। वह आदमी रुख़्सत होकर आगे जाकर गिर पड़ा। गर्दन टूट गई और वहीं मर गया। इस पर आपने फ़रमाया, अबूहनीफ़ा के सब्र ने एक आदमी की जान ले ली।

सताने वालों को दुआओं का तोहफ़ा

एक बार इब्राहीम बिन अदहम रह० ने सर के बाल उतरवा दिए। वह किश्ती में सवार होकर जा रहे थे। उस वक़्त किश्तियाँ इतनी बड़ी होती थीं कि उनमें दो तीन सौ आदमी आसानी से बैठ सकते थे। आप किश्ती में ज़िक्र व अज़कार में मशग़ूल हो गए। जब छोटे बच्चों ने चमकता हुआ सर देखा तो उनको अच्छा लगा। छोटों को क्या वह तो बड़ों भी अच्छी लगती है। सर के बाल उतरवाएं तो उस पर हाथ फेरने का अपना मज़ा होता है। एक बच्चे ने पास आकर उनके सर के ऊपर हाथ फेरा तो उसको बड़ा मज़ा आया। दूसरे बच्चे ने भी हाथ फेरा तो उसे भी बड़ा मज़ा आया। उसने तीसरे को यहाँ तक कि बच्चे बारी-बारी आते और सर पर हाथ फेरकर जाते रहे। उनमें से एक बच्चा कुछ ज़्यादा ही शरारती था। जब वह आया तो उसे शरारत सूझी और उसने हाथ फेरने के बाद एक थप्पड़ सा लगा दिया। उसके बाद दूसरे बच्चे ने भी थप्पड़ लगा दिया। उसके बाद तीसरे ने भी लगा दिया। बच्चे उनको थप्पड़ लगाते रहे और बड़े उनको देखकर हंसते रहे। किश्ती के सब आदमी उनका मज़ाक़ उड़ाते रहे। यहाँ तक कि अजीब बदतमीज़ी का तूफ़ान बर्पा हुआ। जब उन्होंने अल्लाह के एक वली को इस तरह बहुत ज़्यादा ईज़ा पहुँचाई तो फिर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की ग़ैरत भी जोश में आ गई। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उनको इल्हाम फ़रमाया। ऐ इब्राहीम बिन अदहम! इन्होंने तूफ़ाने बदतमीज़ी बर्पा करने में हद कर दी है अगर आप इस वक़्त दुआ करें तो मैं किश्ती को उलट दूँ और सब ग़र्क़ हो जाएं। जैसे ही इल्हाम हुआ हज़रत ने हाथ उठाकर यह दुआ मांगी, ऐ अल्लाह! आप इन सबके दिलों कि किश्ती उलट दीजिए और इनको नेक बना दीजिए। चुनाँचे दुआ क़ुबूल हुई और किश्ती में जितने थे सब ने मरने से पहले विलायत का मुक़ाम हासिल किया।

हज़रत अक्दस थानवी रह० की तहम्मुल मिज़ाजी

हज़रत अक्दस थानवी रह० एक जगह तक़रीर करने के लिए तशरीफ़ ले गए। वहाँ स्टेज पर उन्हें एक चिट मिली। उस पर लिखा था, ' अशरफ़ अली आप काफ़िर हैं, हराम की औलाद हैं और ज़रा संभलकर बात करना।" आपने यह पढ़कर बहुत मुहब्बत से जवाब दिया, भाई यह पर्ची आई है। सारे मजमे को पढ़कर सुनाई और फिर कहा, अगर मैं काफ़िर हूँ तो लो अब कलिमा पढ़ लेता हूँ, "ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसलूल्लाह" और जो दूसरी तोह्मत है उसका जवाब यह है कि इत्तिफ़ाक़ से इस मजमे में मेरे वालिद के निकाह के गवाह मौजूद हैं, उनसे पूछ लें और तीसरी बात ज़रा संभलकर बात करने की है तो न मैं चंदा मांगने आया हूँ न रिश्ता मांगने आया हूँ, मैं संभलकर बात क्यों करूं। मैं तो हक़ बयान करूंगा।

एक अफ़सर ने क़ुली का दिल जीत लिया

एक आदमी गवर्मेंट के किसी महकमे में अफ़सर था। उसने अपनी ज़िंदगी की दास्तान में अपना एक बहुत ही दिलचस्प वाक़िआ लिखा है। मैं आपको वाक़िआ सुना देता हूँ।

वह रेस्ट हाउस में ठहरा हुआ था। उसे एक बार किसी सरकारी दौरे पर एक शहर में से दूसरे शहर जाना था। उसे रेलगाड़ी के ज़रिए जाना था। वह स्टेशन पहुँचा और उसने टिकट ख़रीदा। गाड़ी जिस लाइन पर खड़ी थी उसे वहाँ पहुँचना था। उसने सामान उठाने के लिए क़ुली को बुलाया और उसे कहा, कि भई! मेरा सामान फ़लाँ प्लेटफार्म पर पहुँचा दो। उसने कहा, जी बहुत अच्छा और सामाना उठा लिया। क्योंकि वक़्त कम था। इसलिए वह तेज़ी से प्लेटफार्म की तरफ़ चला। पीछे से क़ुली भी सामान उठाकर भागा। वह आदमी तेज़-तेज़ चलकर

प्लेटफार्म पर बोगी के दरवाज़े पर जल्दी से पहुँच गया लेकिन भीड़ ज़्यादा होने की वजह से क़ुली वक़्त पर न पहुँच सका। उस वक़्त उसको बहुत गुस्सा आया। यहाँ तक कि गार्ड ने सीटी दे दी और गाड़ी चलना शुरू हो गई। वह उस पर चढ़ नहीं सकता था क्योंकि उसका सामान पीछे था। आख़िर उसे गाड़ी छोड़नी पड़ी।

जब वह गाड़ी से रह गया तो उसे बहुत अफ़सोस हुआ कि मेरा प्रोग्राम मिस हो गया। जब गाड़ी चल दी और मुसाफ़िरों को अल्विदा कहने वाले लोग भी चले गए तो उस वक़्त वह क़ुली पसीने से तर सामान उठाए हुए उसके पास आया। उसके चेहरे पर बड़ी नदामत और शर्मिन्दगी थी। वह कहने लगा, साहब मुझे माफ़ कर दें, मैंने यहाँ पहुँचने की बहुत कोशिश की लेकिन रास्ते में इतनी भीड़ थी कि रास्ता नहीं मिल रहा था। उसके दिल में ख़्याल आया कि अब गाड़ी तो जा चुकी है। अब मैं अगर इस बेचारे पर गुस्सा करूंगा तो मुझे क्या फ़ायदा होगा? चुनाँचे उसने उसे प्यार से कहा, कोई बात नहीं, अल्लाह को ऐसा ही मंज़ूर था। चलो कल चला जाऊँगा। जैसे ही उसने यह कहा, उस क़ुली के चेहरे पर सकून आ गया और कहने लगा, अच्छा मैं आपका सामान आपकी गाड़ी में पहुँचा देता हूँ। चुनाँचे उसने उसका सामान गाड़ी तक पहुँचा दिया। उसने वह रात वहीं गुज़ारी। अगले दिन वह वक़्त से कुछ ज़्यादा पहले स्टेशन पर पहुँच गया। जब वह पहुँचा तो उसने देखा कि वही क़ुली पहले से उसका इंतिज़ार कर रहा था। जैसे ही उसने देखा तो उससे ऐसे गर्मजोशी से मिला जैसे कोई बड़ा अज़ीज़ होता है। उसके बाद उस क़ुली ने उसका सामान सर पर उठा लिया और कहने लगा, साहब! आज तो अभी रश नहीं है लिहाज़ा आज तो पहुँचा ही दूंगा। जब क़ुली ने उसका सामान प्लेटफार्म पर पहुँचा दिया तो उसने उसे पैसे देने चाहे तो वह कहने लगा, नहीं साहब! मैं पैसे नहीं लूंगा क्योंकि मेरी गलती की वजह से आपकी ट्रेन मिस हुई थी। उसने पैसे देने की

बड़ी कोशिश की लेकिन क़ुली ने मिन्नत समाजत करनी शुरू कर दी कि अगर आप मुझे पैसे नहीं देंगे तो मैं ज़्यादा ख़ुश हूंगा। आख़िर उसने पैसे नहीं लिए।

क़ुली ने उसे गाड़ी में बिठाया और बोगी के बाहर उसके साथ वाली खिड़की खोलकर खड़ा हो गया और गाड़ी के चलने के वक़्त तक वह उसे बड़ी एहसानमंदों वाली नज़रों से देखता रहा और जब गाड़ी चलने लगी तो उस क़ुली ने उसे ऐसी मुहब्बत से अल्विदा किया कि उसे पूरी ज़िंदगी में कभी किसी रिश्तेदार ने इतनी गर्मजोशी के साथ अल्विदा नहीं किया था।

उसने इस वाक़िए के बाद लिखा कि लेट होने का जो ग़म था वह तो रात को ही ख़त्म हो गया था लेकिन उसकी मुहब्बत भरी अलविदाई नज़र आज बीस साल गुज़रने के बाद भी मेरे दिल में ठंडक पैदा कर देती है। अब देखिए कि वह बंदा दो गालियाँ देकर अपने दिल का गुस्सा ठंडा भी कर सकता था और वह सुनकर घर चला जाता लेकिन उसने माफ़ कर दिया। और उस माफ़ करने का नतीजा निकला कि उसने एहसान माना। उस दिन भी उसका सामान पहुँचाया और अगले दिन भी सामान पहुँचाया यहाँ तक कि जब तक वह रवाना न हुआ और प्लेटफ़ार्म पर ही खड़ा रहा। उसके लिए दुआएं भी करता रहा और उसे मुहब्बत भरी नज़रों से अलविदा भी किया। जी हाँ! जब इंसान दूसरों की ग़ल्तियों को माफ़ कर देता है तो उनकी ग़ल्तियों की तकलीफ़ तो याद नहीं होती माफ़ कर देने का मज़ा उसे ज़िंदगी भर नसीब होता रहता है। इसलिए जब कभी कोई माफ़ी मांगने आए तो सबसे पहले अपनी आख़िरत के बारे में सोचें कि अगर मैंने आज उसको माफ़ न किया तो फिर मैं क़यामत के दिन अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से किस मुँह से माफ़ी मांगूगा।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 10/244-246)

ख़ुदावंद तआला के फ़ैसले पर तसलीम व रज़ा

1. हज़रत मौलाना मुहम्मद याक़ूब नानौतवी रह० से किसी ने कहा, हज़रत! अंग्रेज़ की हिन्दुस्तान पर पकड़ मज़बूत होती जा रही है, क्या ये औलिया कुछ भी नहीं कर सकते? मौलाना याक़ूब नानौतवी रह० ने फ़रमाया, एक तस्बीह घुमाने की बात है मगर क्या करें ऊपर से ऐसा करने की इजाज़त नहीं है।

2. सातवीं सदी हिजरी में तातारी फ़ित्ना उठा। उस वक़्त तज़्किरातुल औलिया को लिखने वाले ख़्वाजा फ़रीदुद्दीन अत्तार रह० ज़िंदा थे। उन्हें पता चला कि तातारी लश्कर उनके शहर के अतराफ़ आ रहा है। जिस वक़्त इत्तिला मिली उस वक़्त वह प्याले में कुछ पी रहे थे। उन्होंने उस प्याले को दूसरी सिम्त घुमा दिया। जब प्याले को घुमाया तो लश्कर रास्ता भूल गया। पूरे का पूरा लश्कर किसी और सिम्त में चला गया। एक साल इसी में गुज़र गया।

एक साल बाद दोबारा पता चला कि तातारी लश्कर इस शहर कर तरफ़ आ रहा है। उन्होंने फिर इरादा किया कि मैं कुछ करूं। मगर इल्हाम हुआ कि प्यारे! मर्ज़ी तो हमारी चलती है। ये क़ज़ा और क़द्र के फ़ैसले हैं जो आपको तसलीम करने पड़ेंगे। चुनाँचे ख़ामोश होकर बैठ गए कि ऐ अल्लाह! जब तेरी रज़ा यूं ही है। जब तेरी रज़ा व क़द्र के फ़ैसले ऐसे ही हैं तो हम कट जाएंगे। फिर नतीजा यह निकला कि वह तातारी लश्कर आया। उन्होंने शहर को फ़तेह किया और लोगों का क़त्लेआम किया। ख़्वाजा फ़रीदुद्दीन अत्तार रह० भी उन्हीं शहीद होने वालों में से थे।

3. जब रेशमी रूमाल की तहरीक चल रही थी। उस वक़्त औलिया और उलमा में अंग्रेज़ के ख़िलाफ़ बड़ा गुस्सा था। मौलाना ताज महमूद अमरोही रह० एक मौक़े पर बात करते हुए बड़े जलाल

में आ गए। फ़रमाने लगे जी चाहता है कि एडवर्ड के महल में घुसकर अपने हाथों से उसका गला दबा दूं मगर क्या करूं ऊपर से ऐसा करने की इजाज़त नहीं है।

4. हज़रत ख़्वाजा अब्दुल मालिक सिद्दीक़ी रह० एक महफ़िल में फ़रमाने लगे कि अगर मैं एक तवज्जोह करूं तो पूरे मजमे को तड़पा कर रख दूँ मगर क्या करूं मुझे ऊपर से ऐसा करने की इजाज़त नहीं है।

5. एक बार ख़्वाजा अब्दुल्लाह अहरार रह० के सामने बताया गया कि बादशाह बड़ा नाफ़रमान बनता चला जा रहा है। फ़रमाने लगे, अगर तसर्रुफ़ करूं तो बादशाह नंगे पाँव दौड़ता हुआ अभी चलकर यहाँ आ जाए मगर क्या करूं कि ऊपर से ऐसा करने की इजाज़त नहीं है। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 5/160)

मर्ज़ी मौला अज़ हमा औला

जब तातार का फ़ितना उठा तो ख़्वाजा फ़रीदुद्दीन अत्तार रह० को इत्तिला मिली कि तातारी इस शहर पर हल्ला बोलने वाले हैं। उन्होंने उठकर दुआ मांगी। ऐ अल्लाह हमें इस फ़ित्ने से महफ़ूज़ फ़रमा। जो लश्कर शहर की तरफ़ चला था इस दुआ की बरकत से रास्ता भूल गया। और किसी तरफ़ जा निकला। चुनाँचे अल्लाह तआला ने पूरे शहर को बचा लिया। अगले साल तातारियों ने फिर शहर का रुख़ किया तो इस बार ख़्वाजा फ़रीदुद्दीन रह० ने दिल में इरादा किया कि मैं दुआ मांगू। मगर इल्हाम कर दिया गया कि मेरे बंदे! यह मेरी मशियत है। अब सर झुकाना पड़ेगा। आपने पहले दुआ मांगी थी जिसे हमने क़ुबूल कर लिया। अब मत हाथ उठाना। यह क़ज़ा व क़द्र के फ़ैसले हैं, इसे होकर रहना है। चुनाँचे हज़रत रह० ने दुआ न मांगी और नतीजा यह निकला कि तातार आए और पूरे शहर

को तहस-नहस कर दिया। उसी दौरान ख़्वाजा फ़रीदुद्दीन रह० भी उन्हीं के हाथों शहीद हो गए। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 6/126)

हज़रत इमाम शाफ़ई रह० ने साफ़ा उतारकर...

इमाम शाफ़ई रह० एक दफ़ा दर्स क़ुरआन दे रहे थे। उसी दौरान दो चिड़ियाँ लड़ती हुई उनके क़रीब आकर गिरीं। यह कम उम्र तो थे सही उन्होंने अपना अमामा उतारा और उन चिड़ियों के ऊपर रख दिया। अब जो दर्स क़ुरआन के बीच यह काम किया तो जो मशाइख़ बैठे थे उन्होंने इस चीज़ को महसूस किया कि यह अदब के ख़िलाफ़ है। चुनाँचे उन्होंने अमामा अपने सर पर रखा और फ़रमाया ﴿الصبی صبی ولو کان ابن نبی﴾ कि बच्चा तो बच्चा ही होता है चाहे किसी नबी अलैहिस्सलाम का बेटा ही क्यों न हो। फिर उन मशाइख़ की तसल्ली हो गई कि हाँ कम उम्री की वजह से ऐसी बातें हो सकती हैं।

❋ ❋ ❋

तवाज़ो व इन्किसारी

और

उजब व किब्र

तवाज़ो इन्किसारी

सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की आजिज़ी और फ़नाइयत

अपने आपको मिटाने की बेहतरीन मिसाल तो सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़िंदगी में मिलती हैं। महबूब दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनको सिद्दीक़ियत की बशारत देते हैं, अशरा मुबश्शरा में उनका ज़िक्र फ़रमाते हैं, ओहद से कहते हैं कि ओहद! क्यो हिलता है तेरे ऊपर सिद्दीक़ है, अपनी हयात में उनको मुसल्ले पर खड़ा फ़रमाते हैं, हिजरत के वक़्त रफ़ीक़े सफ़र बनाते हैं। मगर इस सब कुछ के बावजूद हज़रत सिद्दीक़े अकबर की यह हालत थी कि जब अपने आप पर नज़र डालते तो कांप उठते। रो पड़ते और रो-रो कर कहते, काश! मेरी माँ ने मुझे जना ही न होता। काश! मैं किसी मोमिन के बदन का बाल होता। काश! मैं कोई परिन्दा होता, काश! मैं घास का कोई तिनका होता जिसे कोई जानवर ही खा लेता।

उनकी बेनफ़्सी का यह आलम था कि नबी अलैहिस्सलाम ने उनके बारे में इर्शाद फ़रमाया :

من اراد ان ينظر الى ميت يمشى على وجه الارض فلينظر الى ابن ابى قحافة.

जो शख़्स यह चाहे कि ज़मीन के ऊपर चलती हुई किसी लाश को देखे तो उसको चाहिए कि वह अबू क़हाफ़ा के बेटे (अबूबक्र) को देख ले।

सुब्हानअल्लाह! फिर अल्लाह रब्बुइज़्ज़त ने उन्हें ग़ार में ﴿ان الله معنا﴾ की बशारतें दीं क्योंकि ख़्वाहिशात ख़त्म हो गयी थीं। हवाए

नफ़्सानी का नाम व निशान न रहा था। इंसानियत की हक़ीक़त नसीब हो चुकी थी। वह ज़िंदा तो थे मगर दुनिया में नहीं थे बल्कि उनके दिल व दिमाग़ अर्श के ऊपर पहुँचे होते थे।

ख़ैबर को फ़तेह करने वाले की आजिज़ी और इन्किसारी का आलम

एक बार एक आदमी हज़रत अली रजि० से मिला। वह ताबईन में से थे। उन्होंने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को न पहचाना कि मदीने में नए-नए थे। लिहाज़ा उन्होंने पूछा ﴿من انت﴾ आप कौन हैं? आपने जवाब में इर्शाद फ़रमाया, ﴿ما انا الا رجل من المسلمين﴾ मैं नहीं हूँ मगर मुसलमानों में से एक आदमी। मेरे दोस्तो! उन्होंने यह न बताया कि मैं दामादे मुस्तफ़ा हूँ। मैं ख़ातूने जन्नत फ़ातिमातुज़्ज़ोहरा का शौहर हूँ। मैं ﴿سيدا شباب اهل الجنة﴾ हसन व हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा का वालिद हूँ। मैं बाबुल इल्म (इल्म का दरवाज़ा) हूँ। मुझे असदुल्लाहिल ग़ालिब कहा गया। मेरे हाथ पर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने ख़ैबर को फ़तेह करवाया। उन्होंने अपने बारे में कोई ऐसी बात नहीं कही बल्कि अपनी ज़ात की नफ़ी कर दी। अपनी शान की नफ़ी कर दी। अपने मुक़ामात की नफ़ी कर दी। जब इन बड़ों को यह हाल था तो मैं और आप किस खेत की गाजर-मूली हैं कि हम दावे करते फिरें कि हमें तो यह कैफ़ियत और मुक़ाम हासिल है।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 3/230)

अब्दाल का मुक़ाम कैसे मिला

हज़रत बायज़ीद बुस्तामी रह० अब्दाल के मुक़ाम पर कैसे पहुँचे? फ़रमाया कि एक बार शहर वालों ने कहा कि काफ़ी दिन हुए हैं

बारिश नहीं हुई। लगता है कि शहर में कोई ऐसा गुनाहगार है कि जिसके गुनाहों की वजह से अल्लाह तआला ने रहमत की बारिश को रोका हुआ है। फ़रमाया कि अभी वे बातें कर ही रहे थे कि मैंने दिल में सोचा कि बायज़ीद! तुम्हें इस शहर में रहने का कोई हक़ नहीं। तुम ही गुनाहगार हो जिसकी वजह से अल्लाह तआला ने अपनी रहमतों को रोका हुआ है। मैं अपने को पूरे शहर वालों से सबसे कमतर समझ कर शहर से बाहर निकल गया। मेरे मालिक ने मेरी आजिज़ी को क़ुबूल करके मुझे अब्दाल का मुक़ाम अता फ़रमा दिया, सुब्हानअल्लाह।

सैय्यदुत्ताएफ़ा रह० का तवाज़ो

मशाइख़ में इतनी आजिज़ी होती है कि अगर हमारे सामने खुल जाए तो हम हैरान हो जाएं। हज़रत हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की रह० से एक आदमी ने आकर कहा कि फ़लाँ, बुज़ुर्ग तो लोगों को बड़े इस्तिख़ारे करने के बाद बैअत करते हैं लेकिन आपके पास जो भी आता है आप उसे बैअत कर लेते हैं। फ़रमाया कि मैं तो हर एक को इसलिए बैअत कर लेता हूँ कि अगर क़यामत के दिन मेरे मुरीद अपने पीर को जहन्नम में जाता हुआ देखेंगे तो कोई तो उनमें से ऐसा होगा जो पीर की शफ़ाअत करेगा। किसी एक की शफ़ाअत से अल्लाह तआला पीर को भी जन्नत में जाने की तौफ़ीक़ दे देंगे।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक्कार 3/210)

दारुलउलूम के बानी की शाने फ़नाइय्यत

हज़रत अक़्दस मौलाना मुहम्मद क़ासिम साहब नानौतवी रह० की बात सुनाए बग़ैर महफ़िल के मज़ा ही नहीं आता। अल्लाह तआला ने उनको इल्म व अमल में बहुत बुलन्द मुक़ाम अता किया था। उस

दौर में शाहजहाँपूर इंडिया में साल में एक बार सारे मज़हबों के लोग इकट्ठे होते थे। और अपने-अपने मज़हब की तबलीग़ करते थे। मुसलमान उलमा ने सोचा कि हम किन को बुलाएं। जब हज़रत मौलाना क़ासिम साहब नानौतवी रह० का नाम सामने आया तो सब मुतमइन हो गए कि अच्छा है कि हज़रत तशरीफ़ लाएं और दीन इस्लाम की हक्क़ानियत पर बयान फ़रमाएं। चुनाँचे उन्होंने हज़रत से राब्ता किया। हज़रत ने कहा कि मैं बहस से एक दिन पहले वहाँ ट्रेन के ज़रिए पहुँच जाऊँगा। जब उन उलमा ने यह जवाब सुना तो वे मुतमइन हो गए कि चलो हज़रत तशरीफ़ ले आएंगे।

जिस दिन हज़रत रह० ने आना था उस दिन लोगों ने उनके इस्तिक़बाल की तैयारियाँ कीं और स्टेशन पर पहुँच गए। हज़रत की बातिनी बसीरत (दिल की आँख) के वाक़िए मशहूर थे। हदीस शरीफ़ में है कि ﴿اتقوا فراسة المؤمن فانه ينظر بنور الله﴾ मोमिन बंदे की फ़िरासत (समझ) से डरो वह अल्लाह के नूर से देखता है। चुनाँचे हज़रत ने अपनी बातिनी बसीरत से भांप लिया कि क्योंकि लोगों को मेरे आने की पहले से ख़बर है ऐसा न हो कि वह इस्तिक़बाल के लिए इकट्ठे हो जाएं। मैं तो पहले ही बिगड़ा हुआ हूँ, मेरा नफ़्स कहीं और न बिगड़ जाए। चुनाँचे यह सोचकर आप मंज़िल से एक स्टेशन पहले ही नीचे उतर गए कि मैं अगले शहर तक का सफ़र पैदल ही तय कर लूंगा। तक़रीबन पाँच मील का सफ़र बनता था। आपने पैदल चलना शुरू कर दिया। इधर जब ट्रेन पहुँची तो लोगों ने देखा कि ट्रेन में हज़रत तशरीफ़ नहीं लाए। बहुत हैरान हुए कि क्या बना। उनमें से एक बड़े आलिम ने कहा कि शहर के मुसाफ़िरख़ाने या होटल से मालूमात करो कहीं वहाँ आकर ठहर न गए हों। चुनाँचे उन्होंने होटलों में पता किया तो वहाँ भी क़ासिम के नाम से कोई आदमी नहीं था। एक होटल मे ख़ुर्शीद हसन का नाम नज़र आया।

इधर जिस स्टेशन पर हज़रत उतरे थे वहाँ से अगले शहर जब रवाना हुए तो रास्ते में एक नहर पार करना पड़ी। जब हज़रत वह नहर पार करने लगे तो पाजामा पानी में भीग गया। जब उस नहर से बाहर निकले तो उस वक़्त कोई ख़ादिम, कोई शागिर्द, कोई रफ़ीके सफ़र साथ न था। अकेले जा रहे थे, सुब्हानअल्लाह। यह दीवाना अल्लाह की मुहब्बत में फ़ना होकर दीने इस्लाम का नुमाइन्दा बनकर जा रहा था। जब आप नहर से बाहर निकले तो आपने चादर बांध ली, पाजामा उतार लिया। हाथ में छड़ी थी, सफ़र करना भी ज़रूरी था। सूखने का इंतिज़ार भी नहीं कर सकते थे। चुनाँचे उस छड़ी को कंधे पर रख लिया और उसके पीछे अपना पाजामा लटका लिया। दीन इस्लाम का नुमाइन्दा इस फ़कीराना चाल से आ रहा है। लोग इस्तिक़बाल के लिए जमा हैं और यह फ़कीर अल्लाह की याद में मस्त अपनी मंज़िल की तरफ़ चल रहा है। शहर में पहुँचकर आप ने ख़ुर्शीद हसन (यह आपका असली नाम है और क़ासिम लक़ब है) के नाम से होटल में एक कमरा बुक करवा लिया और सोचा कि आज आराम कर लूँ। कल सुबह से पहले तयशुदा जगह पर पहुँच जाऊँगा।

दूसरी तरफ़ जब लोग ढूंढते ढूंढते होटल पहुँचे तो ख़ुर्शीद का नाम देखा। पहचान लिया कि यह हज़रत ही होंगे। उन्होंने होटल वाले से पूछा कि यहाँ इस कमरे में कौन हैं? उसने कहा कि एक मौलाना है। दुबले, पतले और हलके फुलके से हैं। उन्होंने कहा, बस वही है जो देखने में पतला है। वह ﴿بسطة في الجسم﴾ तो नहीं ﴿بسطة في العلم﴾ ज़रूर हैं। अल्लाह तआला ने इल्म के एतिबार से उसे बड़ा वज़न अता फ़रमाया है। चुनाँचे वह हज़रत के पास गए और मिलकर अर्ज़ किया हज़रत! आप यहाँ पर हैं और हम तो आपके इस्तिक़बाल के लिए स्टेशन पर गए हुए थे। हज़रत रह० ने फ़रमाया, हाँ मैं भी इसीलिए आ गया कि आप मेरे इस्तिक़बाल के लिए स्टेशन पर गए

हुए थे। वे बड़े हैरान हुए कि यह क्या फ़रमा रहे हैं। फिर हज़रत ने उनको आजिज़ी और इन्किसारी का अनमोल दर्स दिया और बड़ी हसरत से अपने बारे में फ़रमाया, "दो लफ़्ज़ पढ़ लिए हैं जिसकी वजह से दुनिया जान गई वरना क़ासिम अपने आपको ऐसे मिटाता कि किसी को नाम का भी पता न चलता।

मेरे दोस्तो! जब अपने दिल में अपने आपको मिटाने की यह कैफ़ियत हो तो अल्लाह तआला ऐसे लोगों को ऊपर उठाया करते हैं। आज जहाँ तक इल्म का नाम रहेगा मौलाना क़ासिम साहब रह० का नाम भी वहाँ तक रहेगा, सुब्हानअल्लाह।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 12/145-148)

तालिबाने उलूमे नबुव्वत के सामने तवाज़े की मिसाल

एक बार हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही रहमतुल्लाहि अलैहि हदीस पढ़ा रहे थे कि एकदम बारिश शुरू हो गई। तलबा ने अपनी किताबें समेटीं और कमरे में भाग गए। हज़रत रह० ने रूहमाल बिछाया और तलबा की जूतियाँ उसमें डालीं और उसकी गठरी बांधकर सर पर रखी और कमरे में ले आए। तलबा ने देखा तो उनकी चीख़ें निकल गयीं। कहने लगे हज़रत! हम ख़ुद जूते उठा लेते। हज़रत रह० ने जवाब दिया, "बच्चो! तुम सारा दिन ﴿قال الله و قال الرسول﴾ (अल्लाह और रसूल का इल्म) पढ़ते हो रशीद अहमद तुम्हारे जूते न उठाए तो और क्या करेगा।

शेख़ तरीक़त के सामने आजिज़ी व इन्किसारी

हज़रत हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर साहब रह० एक बार दस्तरख़्वान पर बैठे। हज़रत गंगोही रहमतुल्लाहि अलैहि और हज़रत

मौलाना फ़ज़्लुर्रहमान गंजमुरादाबादी रह० भी साथ थे। हज़रत हाजी साहब रह० ने एक प्लेट में दाल दी और एक रोटी हज़रत गंगोही रह० के हाथ में पकड़वा दी और फ़रमाया कि वहाँ पीछे दस्तरख़्वान के कोने पर बैठकर खा लो और ख़ुद दस्तरख़्वान पर तरह-तरह की नेमतें खानी शुरू कर दीं। आज का कोई मुरीद होता तो पीर से बदज़न हो जाता कि पीर तो मसावात (बराबरी) नहीं आती। इस पीर को आदाबे मअशरत नहीं आता। इस पीर को तो शरिअत का पता ही नहीं। यह बंदे को बंदा नहीं समझता। उसके अंदर तो तकब्बुर है, इसके अंदर तो उजब है, इसके अंदर तो दुनिया की मुहब्बत है। मालूम नहीं क्या-क्या फ़तवे लग जाते। मगर वह कामिल थे। तालिब सादिक़ थे। वह जानते थे कि इसमें कोई हिकमत होगी। लिहाज़ा आराम से बैठकर खाना शुरू कर दिया। इधर हाजी साहब रह० अपने खाने में बिरयानी और बोटियाँ खा रहे हैं और उधर दाल ही दी हुई थी। थोड़ी देर खाना खाते रहे। थोड़ी देर के बाद कहा, मियाँ रशीद अहमद! जीतो यह चाहता था कि तुझे उधर जूतों में बिठा देता कि वहाँ बैठकर खाना खाओ मगर तुम पर एहसान किया कि तुम्हें अपने दस्तरख़्वान के कोने पर बिठा लिया। यह कहने के बाद हज़रत हाजी साहब रह० ने उनकी तरफ़ देखा। हज़रत गंगोही रह० ने मुस्कराकर कहा, "हज़रत! मेरी अवक़ात तो यही है कि मैं जूतों में बैठने के क़ाबिल भी नहीं था। आपने एहसान फ़रमाया कि अपने दस्तरख़्वान के कोने पर बिठा लिया। जब हज़रत हाजी साहब रह० ने देखा कि ऐसी बात को सुनकर भी नफ़्स भड़का नहीं, चमका नहीं बल्कि आजिज़ी का बोल निकाला है तो फ़रमाया, अलहम्दुलिल्लाह अब काम बन गया। इस इम्तिहान के बाद हज़रत हाजी साहब रह० ने उनको निस्बत हलका फ़रमाई।

ख़्वाजा अब्दुल मालिक रह० की इन्किसारी

अभी मास्टर नजम साहब मुझे मजमे में बैठे सामने नज़र आए। उनको देखकर मुझे एक बात याद आ गई जो एक बार इन्होंने सुनाई थी। वह खुद इसके चश्मदीद गवाह हैं मगर हमने सुनी है। क्योंकि वह बात मौज़ू के बारे में है इसलिए आपको भी सुना देते हैं।

एक बार हज़रत मास्टर साहब हज़रत ख़्वाजा अब्दुल मालिक सिद्दीक़ी रह० की महफ़िल में खानवाल में तशरीफ़ फ़रमा थे कि उस वक़्त हज़रत के एक मुरीद आए। उस मुरीद का ताल्लुक़ ऐसे इलाक़े से था जहाँ हज़रत सिद्दीक़ी रह० के एक और पीर भाई रहते थे। उनको भी इजाज़त व ख़िलाफ़त थी और वह भी बड़े शेख़ थे। हज़रत भी अपने इलाक़े के शैख़ और आलिम थे और वह भी अपने इलाक़े के बड़े शेख़ और आलिम थे। मैं इस वक़्त उनका नाम बताना सही नहीं समझता। जब महफ़िल में वह मुरीद हाज़िर हुए तो हज़रत सिद्दीक़ी रह० ने उनसे पूछा, भई! आते हुए फ़लाँ शेख़ से मिलकर आए हैं? उसने बताया कि हाँ। हज़रत मैं उनसे मिलकर आया हूँ।

यह वह दौर था जब हज़रत सिद्दीक़ी रह० पर अल्लाह तआला ने फ़तूहात का दरवाज़ा खोल दिया था। दुनिया की रेल-पेल थी। दुनिया क़दमों में बिछी हुई थी। हज़रत ने पूछा, अच्छा जब मिलकर आएं हैं तो उन्होंने क्या फ़रमाया? उसने झिझकते-झिझकते हुए कहा कि सलाम भी भेजा है मगर हज़रत ने पहचान लिया कि यह कोई बात छिपा रहा है।

पीर आख़िर पीर होते हैं। हमारे हज़रत मुर्शिदे आलम रह० एक बार कराची में तशरीफ़ फ़रमा थे। एक साहब आए तो किसी ने कहा कि हज़रत! यह फ़लाँ आदमी इस काम के लिए आया है। हज़रत रह० ने गुस्से से फ़रमाया, मैं लानत करता हूँ उस पीर पर जिसके पास मुरीद आए और उसे पता न चले कि यह किस मक़सद के लिए

आया है। अल्लाह तआला अपने प्यारे बंदों को तो फ़िरासत अता फ़रमा देते हैं।

जब हज़रत सिद्दीकी रह० पहचान गए कि कोई बात छिपा रहा है तो फ़रमाया कि बताओ। अब वह ख़ामोश रहा। हज़रत ने सख़्ती फ़रमाई कि बताओ और जिस तरह उन्होंने कहा ठीक उसी तरह बताओ कि जिस तरह यह बात पेश आई है। जब हुक्म दिया तो वह साहब भी सीधे हो गए और कहने लगे, हज़रत! जब मैं उनसे मिला तो बताया कि मैं हज़रत सिद्दीकी रह० की ख़िदमत में जा रहा हूँ तो उन्होंने मुझे कहा कि उनको मेरा सलाम पहुँचा देना और यह कहना कि दुनिया और आख़िरत वे दो बहनें हैं जो एक निकाह के अंदर जमा नहीं हो सकतीं। (وان تجمعوا بين الاختين) यह बताकर कहने लगा, हज़रत मुझे तो बात कुछ भी समझ में नहीं आई इसलिए मैंने कहना मुनासिब न समझा। हज़रत ने जब यह बात सुनी तो रोना शुरू कर दिया। हम जैसा होता तो हम कहते कि बड़े ज़ाहिद बने फिरते हैं। क्या हमारे अंदर दुनिया की मुहब्बत है, हम भी तो अल्लाह की मुहब्बत में दीन का काम कर रहे हैं। हम इसके सौ जवाब दे देते मगर वहाँ तो आजिज़ी थी।

हज़रत सिद्दीकी रह० काफ़ी देर तक सर झुकाकर रोते रहे। आख़िर सर उठाया और ठंडी सांस लेकर फ़रमाया, अलहम्दुलिल्लाह अभी दुनिया में ऐसे लोग मौजूद हैं जो हमारी इस्लाह फ़रमाते रहते हैं, सुब्हानअल्लाह। हमारी यह हालत है कि अगर कोई हमें इस्लाह की बात कह दे तो तौबा, यह तो गोली की तरह लगती है और हर मुमकिन मुख़ालिफ़त पर उतर आते हैं। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 9/148)

बुरा कहने वालों को बुरा न कहिए

हज़रत ख़्वाजा फ़ज़ल अली क़ुरैशी की ख़ानकाह मिस्कीनपुर शरीफ़

में दूर दराज़ से सालिकीन आकर क़याम करते और तज़्किय्ए नफ़्स और तस्फ़िय्ए क़ल्ब (नफ़्स और दिल की इस्लाह) की मेहनत करते थे। आमतौर पर यह हज़रात फ़ज्र के वक़्त क़ज़ाए हाजत के लिए बस्ती से बाहर वीराने में जाते तो वापसी पर कुछ सूखी लकड़ियाँ भी उठाकर ले आते। हज़रत मौलाना अब्दुल ग़फ़ूर मदनी रह० की आदत शरीफ़ा थी कि लकड़ियों का बहुत बड़ा गठ्ठर सर पर उठाकर लाते। मुक़ामी लोग इतना बड़ा गठ्ठर देखकर हैरान होते और आपस में तन्ज़ व मज़ाक़ करते। ये बातें किसी ज़रिए हज़रत क़ुरैशी रह० को पहुँचीं तो हज़रत रह० ने हज़रत मौलाना अब्दुल ग़फ़ूर रह० को बुलाकर फ़रमाया, मौलाना आप इतना बड़ा गठ्ठर सर पर न लाया करें। बस थोड़ी सी लकड़ियाँ भी ले आएंगे तो ख़ैर के काम में शिरकत हो जाएगी। हज़रत मौलाना अब्दुल ग़फ़ूर मदनी रह० ने अर्ज़ किया, हज़रत! मुझे इसमें कोई मशक़्क़त नहीं उठाना पड़ती। मैं अपने शौक़ से ले आता हूँ। हज़रत क़ुरैशी रह० ने फ़रमाया, मौलाना! यहाँ के मुक़ामी लोग जाहिल हैं। ये लोग आपकी क़द्र नहीं जानते। लिहाज़ा आपके बारे में उल्टी सीधी बातें करते हैं। हज़रत मौलाना मदनी रह० पूछा, हज़रत आख़िर क्या बातें करते हैं? फ़रमाया कि मौलाना! जब इतना बड़ा गठ्ठर सर पर ला रहे होते हैं तो ये लोग आपकी तरफ़ इशारा करके कहते हैं देखो पीर क़ुरैशी ने ख़ुरासान से गधा मंगवाया है। हज़रत मौलाना अब्दुल ग़फ़ूर मदनी रह० ने फ़ौरन कहा, हज़रत! ये लोग मुझे पहचानते हैं इसीलिए गधा कहते हैं, सुब्हानअल्लाह तवाज़ो का क्या आलम था। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 3/150)

हज़रत सईद अहमद रह० की तवाज़ो

हज़रत मौलाना सईद अहमद गोहानी रह० अहमदपूर शरक़िया के ख़लीफ़ाओं में से थे। यहाँ भी तशरीफ़ लाते थे। हज़रत मौलाना हकीम

मुहम्मद यासीन साहब के शेख़ थे। इस आजिज़ को भी कई बार यहाँ उनके जूतों में बैठना नसीब हुआ है। उस वक़्त छोटी उम्र थी। ज़ियारत नसीब हुई। वह एक बार झंग तशरीफ़ लाए हुए थे। उनकी महफ़िल में जाकर बैठा तो वह एक मज़मून बयान कर रहे थे। कहने लगे, फ़क़ीरो! तुम तो बहुत अच्छे हो। फ़क़ीरो! तुम तो बहुत अच्छे हो। फ़क़ीरो! तुम तो बहुत अच्छे हो। यह सब ख़लीफ़ा हज़रात दिल के कानों से सुनें। उलमा, हज़रात भी दिल के कानों से सुनें। उस्ताद लोग भी दिल के कानों से सुनें। फ़रमाया, फ़क़ीरो! तुम तो बहुत अच्छे लोग हो कि दीन की मुहब्बत में यहाँ पहुँचे हो। मुझे नेक समझते हो, अल्लाह वाला समझते हो। इस हुस्ने ज़न को लेकर तुम यहाँ आए हो। फ़क़ीरो! तुम तो बहुत-बहुत अच्छे हो। मैं तो कहता हूँ कि तुम जन्नती हो, मैं तो कहता हूँ कि तुम जन्नती हो। बार-बार जन्नत के तज़्किरे किए। सोचने वाला सोचता है कि जी यह तो जन्नत की टिकटें तक़्सीम करने में लगे हुए हैं। हमारे जैसा कोई बदगुमान होता तो हम उठकर ही आ जाते कि जी यह शेख़ भी क्या जो दुनिया में बैठे जन्नत की टिकटें बांट रहा है। नहीं, कभी-कभी मशाइख़ बात इस अंदाज़ से करते हैं कि हक़ीक़त को समझने की ज़रूरत होती है। ज़ब बार-बार कहा कि तुम जन्नती हो तो आख़िर में कह दिया कि मैं लिखकर देने को तैयार हूँ कि तुम सब जन्नती हो। यह कहने के बाद फ़रमाया, हाँ! रहा तुम्हारे पीर का मामला तो वह खटाई में है। क़यामत के दिन मुझे तो ज़ंजीरों बांधकर पेश किया जाएगा। मैं जब तक साबित न कर दूंगा कि मैंने इस अमानत का हक़ अदा कर दिया है। उस वक़्त मेरी ज़ंजीरों को नहीं खोला जाएगा, अल्लाहु अकबर। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 3/151)

मामला तुम्हारे पीर का तो खटाई में है

याद रखें कि किसी ग़रीब या गुनाहगार को कम नज़र से न

देखा करें क्योंकि क्या पता है कि वह ग़रीब आदमी अल्लाह की नज़र में उस अमीर आदमी के मुक़ाबले बहुत ज़्यादा पसन्दीदा हो और क्या पता है कि वह गुनाहगार आदमी ऐसी तौबा कर ले कि अल्लाह तआला उसके गुनाहों को नेकियों में तब्दील कर दें।

एक बार हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम कहीं जा रहे थे। रास्ते में आपने एक गुनाहगार आदमी को देखा। वह अपने गुनाहों पर बहुत ही नादिम और शर्मिन्दा हो रहा था। आपने उससे पूछा तुम्हारी क्या ख़्वाहिश है? वह कहने लगे कि मैंने बड़े-बड़े गुनाह किए हैं। मेरी तो बस यही तमन्ना है कि मेरा मालिक मुझे माफ़ कर दे। फिर थोड़ा सा आगे जाकर आपने एक इबादत गुज़ार आदमी को देखा। आपने उससे भी पूछा कि तुम्हारी ख़्वाहिश क्या है? उसने कहा इस गुनाहगार आदमी की तरफ़ इशारा करके कहा कि मेरी ख़्वाहिश है कि अल्लाह मेरा हश्र उसके साथ न करे। अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर "वही" नाज़िल फ़रमा दी कि ऐ मेरे प्यारे रूहुल्लाह! आप इन दोनों से कह दें कि मैंने दोनों की दुआओं को क़ुबूल कर लिया। जो गुनाहगार मुझसे रहम तलब कर रहा था मैंने उसके गुनाहों को नेकियों में बदलकर उस पर जन्नत वाजिब कर दी और इबादत गुज़ार ने यह दुआ मांगी थी कि मुझे इसके साथ इकठ्ठा न करना क्योंकि वह गुनाहगार जन्नत में पहुँच चुका है इसलिए अब मैं इस इबादतगुज़ार को जन्नत की बजाए जहन्नम में दाख़िल करूंगा। इससे हमें सबक़ मिलता है कि न तो हम अपनी इबादत पर नाज़ करें और न ही किसी गुनाहगार को नफ़रत की निगाह से देखें।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 12/167)

शराबी की आजिज़ी व बेकसी पर मग़फ़िरत

एक बार सुफ़ियान सूरी रह० सोए हुए थे। उनको ख़्वाब में किसी

बुज़ुर्ग की ज़ियारत हुई और फ़रमाया गया कि तुम्हारे पड़ौसी का जनाज़ा तैयार है, तुम जाकर उसका जनाज़ा पढ़ो। सुफ़ियान सौरी रह० जानते थे कि उनका पड़ौसी बड़ा शराबी बंदा है। अब वह उठ बैठे लेकिन बड़े हैरान थे कि इस पड़ौसी के बारे में मुझे फ़रमाया गया कि जाओ इसका नमाज़ जनाज़ा पढ़कर आओ। फिर उनके दिल में ख़्याल आया कि हो सकता है कि इसकी कोई वजह हो। चुनाँचे उन्होंने घरवालों से पुछवाया कि इसकी मौत के वक़्त इसकी आँखों में आँसू थे और यह अल्लाह तआला से यूँ फ़रियाद कर रहा था, "ऐ दुनिया और आख़िरत के मालिक! उस आदमी पर रहम फ़रमा जिसके पास न दुनिया है न आख़िरत है।"

इस आजिज़ी के सदक़े अल्लाह तआला ने मौत के वक़्त उसके गुनाहों को माफ़ फ़रमा दिया, सुब्हानअल्लाह।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक्क़ार 12/144)

एक बूढ़ी औरत की बदहाली

मेरे एक दोस्त कहने लगे कि मैं रेलगाड़ी में सफ़र कर रहा था। एक नव्वे साल से ज़्यादा उम्र की बूढ़ी औरत मुझे कहने लगी, क्या आप मुसलमान हैं? मैंने कहा हाँ, मैं मुसलमान हूँ। कहने लगी कि मैंने सुना है कि मुसलमान वादे के बड़े पाबंद होते हैं। मैंने कहा, हाँ बड़े पाबंद होते हैं। कहने लगी, क्या आप मुझसे एक वादा कर सकते हैं? मैंने कहा, जी बताएं कि क्या वादा करूं? कहने लगी, बस आप मुझ से वादा करें फिर आपको बताऊँगी। मैंने कहा मुझे बताओ तो सही क्या वादा लेना है? कहने लगी, वादा यह लेना है कि आप अमरीका में जहाँ कहीं भी हों रोज़ाना पाँच मिनट के लिए मुझे कलैक्ट काल कर दिया करें। कलैक्ट कॉल ऐसे फ़ोन को कहते हैं कि आप टेलीफ़ोन से किसी आदमी को फ़ोन करें मगर बिल आपकी बजाए उस बंदे को

आएगा जिसको टेलीफ़ोन किया जा रहा है। गोया वह कह रही थी कि बिल मैं अदा करूंगी। मैंने पूछा क्यों, क्या आपके बच्चे नहीं हैं? कहने लगी, बच्चे तो हैं मगर उनके पास मुझे मिलने के लिए टाइम नहीं है। मेरे पास बहुत बड़ा घर है, मुझे इतनी पेंशन मिलती है कि मुझे ख़र्च की परवाह नहीं मगर मैं अपने बच्चों को याद करती हूँ और इतने बड़े घर में सारा दिन अकेली रहती हूँ जिसकी वजह से अब मेरी सेहत भी ख़राब होती जा रही है। अगर आप मुझे कॉल करने का वादा करें तो चौबीस घंटों में मुझे इंतिज़ार रहेगा कि कभी न कभी तो मेरे फ़ोन की घंटी तो बजेगी। मैं यही समझूंगी कि अमरीका में कोई बंदा तो मेरे बारे में सोच रहा होगा। इस तरह आपके फ़ोन के इंतिज़ार में मुझे सारा दिन जीने की ताक़त मिल जाएगी।

अब बताइए कि जिस माँ की उसी मुल्क में औलाद भी मौजूद हो, वह पाँच मिनट के लिए किसी से बात करने को तरसती फिरती है। यह उस सोसाईटी का सबसे कमज़ोर पहलू है।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 5/115-116)

उजब व किब्र (घमंड)

फ़ारूके आज़म का उजब का अनमोल इलाज

सैय्यदना उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने आपको कैसे मिटाया था? एक बार किसी जिहाद से माले ग़नीमत आया। क़ैदी भी आए। आपने देखा तो ख़ुश हुए। उसके बाद लोगों से कहा, ज़रा मिम्बर के क़रीब हो जाओ। लोग मिंबर के क़रीब हो गए। फिर आपने लोगों की तरफ़ मुतवज्जेह होकर अपने आपको कहा, "उमर! तू वही तो है जिसकी माँ सूखा गोश्त चबाया करती थी।" अरब में यह ग़रीबी की अलामत होती थी कि जिनको खाना सहूलत से नहीं मिलता था वह भूख की ज़्यादती की वजह से सूखा गोश्त चबाया करते थे। यह बात कहकर हज़रत उमर मिंबर से नीचे उतर गए। सहाबा किराम हैरान हुए कि हमें अमीरुल मुमिनीन ने इकट्ठा किया था तो क्या यही कुछ कहना था। बाद में उन्होंने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा! हज़रत आपने इतने लोगों को जमा भी किया कि बात सुनो और कोई ख़ास बात भी नहीं की। बस यही कहा कि उमर! तू उस माँ का बेटा है जो सूखा गोश्त चबाया करती थी। आख़िर क्या वजह है? हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जवाब दिया, जब क़ैदी आए और माले ग़नीमत भी आया तो मेरे दिल में ख़्याल आया कि उमर! अल्लाह ने तुझे क्या ही शान दी कि तेरे ज़माने में इस्लाम की फ़ुतूहात हो रही है। मैंने महसूस किया कि मेरे नफ़्स के अंदर कहीं उजब पैदा न हो जाए। मैंने इसका इलाज यह तजवीज़ किया कि सारे लोगों को बुलाकर एक ऐसी बात कह दी। जिसने मेरे अंदर से ख़ुद पसन्दी को ख़त्म करके रख दिया।

किसी ग़ैर को भी हक़ीर न जानिए

शेख़ अब्दुल्लाह उन्दलुसी रह० हज़रत शिबली रह० के पीर थे। ईसाईयों की बस्ती के क़रीब से गुज़र रहे थे। उस बस्ती पर सलीबें लटक रही थीं। थोड़ी देर के बाद वह एक कुँए पर असर की नमाज़ अदा करने के लिए वुज़ू करने चले गए। वहाँ किसी लड़की पर नज़र पड़ी। शेख़ का सीना ख़ाली हो गया। अपने मुरीदों से कहने लगे, जाओ, वापस चले जाओ। मैं इधर जाता हूँ जिधर यह लड़की होगी। मैं इसकी तलाश में जाऊँगा। मुरीदों ने रोना शुरू कर दिया कहने लगे शेख़! आप क्या कर रहे हैं? यह वह शेख़ थे जिनको एक लाख हदीसें याद थीं। क़ुरआन हाफ़िज़ थे। सैंकड़ों मस्जिदें उनके दम क़दम से आबाद थीं। ख़ानक़ाहें उनके दम क़दम से आबाद थीं। उन्होंने कहा कि मेरे पल्ले कुछ नहीं जो मैं तुम्हें दे सकूं। अब तुम चले जाओ। शेख़ इधर बस्ती में चले गए। किसी से पूछा कि यह लड़की कहाँ की रहने वाली है। उसने कहा, यह यहाँ के नंबरदार की बेटी है। उससे जाकर मिले। कहने लगे, क्या तुम इस लड़की का निकाह मेरे साथ कर सकते हो। उसने कहा, यहाँ रहो, हमारी ख़िदमत करो। जब आपस में तालमेल बैठ जाएगा तो फिर आपका निकाह कर देंगे। उन्होंने कहा, बिल्कुल ठीक है। वह कहने लगा, आपको सुअरों का रेवड़ चराने वाला काम करना पड़ेगा। शेख़ इस पर भी राज़ी हो गए और कहने लगे हाँ मैं ख़िदमत करूंगा। अब क्या हुआ? सुबह के वक़्त सुअर लेकर निकलते, सारा दिन चराकर शाम को वापस आया करते। इधर मुरीद जब वापस गए और यह ख़बर लोगों तक पहुँची तो कई लोग तो बेहोश हो गए। कई मौत की आग़ोश में चले गए और कई ख़ानक़ाहें बंद हो गयीं। लोग हैरान थे कि ऐ अल्लाह! ऐसे-ऐसे लोगों के साथ भी तेरी बेनियाज़ी का यह मामला हो सकता है।

एक साल इसी तरह गुज़र गया। हज़रत शिबली रह० सच्चे मुरीद थे। जानते थे कि मेरे शेख़ जमाव वाले थे मगर इस मामले में कोई न कोई हिकमत ज़रूर होगी। उनके दिल में बात आई कि जाकर हालात मालूम करूं। चुनाँचे उस बस्ती में आए और लोगों से पूछा कि मेरे शेख़ किधर हैं? कहा, फ़लाँ जंगल में जाकर देखो, वहाँ सुअर चरा रहे होंगे। जब वहाँ गए तो क्या देखते हैं कि वही अमामा, वही जुब्बा और वही असा जिसको लेकर यह जुमा का ख़ुत्बा दिया करते थे, आज उसी हालत में सुअरों के सामने खड़े सुअर चरा रहे हैं। अल्लामा शिबली रह० क़रीब हुए। पूछा, हज़रत आप क़ुरआन के हाफ़िज़ थे, आप बताइए क्या आपको क़ुरआन याद है? फ़रमाने लगे, याद नहीं। फिर पूछा हज़रत! कोई आयत याद है? सोचकर कहने लगे, एक आयत मुझे याद है। पूछा, वह कौन सी? कहने लगे, ﴿ومن يهن الله فما له من مكرم﴾ जिसे अल्लाह ज़लील करने पर आता है उसे इज़्ज़त देने वाला कोई नहीं होता। पूरा क़ुरआन भूल गए और सिर्फ़ एक आयत याद रही जोकि उनके अपने हाल से ताल्लुक़ रखती थी। हज़रत शिबली रह० रोने लग गए कि हज़रत को सिर्फ़ एक आयत याद रही। फिर पूछा, हज़रत आप तो हाफ़िज़ हदीस थे। क्या आपको हदीसें याद हैं? फ़रमाने लगे एक याद है, ﴿من بدل دينه فاقتلوه﴾ जो दीन को बदल दे उसे क़त्ल कर दो। यह सुनकर हज़रत शिबली रह० फिर रोने लगे तो उन्होंने भी रोना शुरू कर दिया। किताबों में लिखा है कि शेख़ रोते रहे और रोते हुए उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह! मैं आपसे उम्मीद तो नहीं करता था कि मुझे इस हाल में पहुँचा दिया जाएगा। रो भी रहे थे और यह फ़िक़रा बार-बार कह रहे थे। अल्लाह तआला ने शेख़ को तौबा की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दी और उनकी कैफ़ियतें वापस लौटा दीं। फिर बाद में शिबली रह० ने पूछा, यह सारा मामला कैसे हुआ? फ़रमाया, मैं बस्ती से गुज़र रहा था। मैंने सलीब लटकी

हुई देखीं तो मेरे दिल में ख़्याल आया कि ये कैसे कम अक़्ल लोग हैं, बेवक़ूफ़ लोग हैं जो अल्लाह के साथ किसी को शरीक ठहराते हैं। अल्लाह तआला ने मेरी इस बात को पकड़ लिया कि अब्दुल्लाह! अगर तुम ईमान पर हो तो क्या यह तुम्हारी अक़्ल की वजह से है या मेरी रह्मत की वजह से है। यह तुम्हारा कमाल नहीं, यह तो मेरा कमाल है कि मैंने तुम्हें ईमान पर बाक़ी रखा हुआ है। अल्लाह तआला ने ईमान का वह मामला सीने से निकाल लिया कि अब देखते हैं कि तुम अपनी अक़्ल पर कितना नाज़ करते हो। तुमने यह लफ़्ज़ क्यों इस्तेमाल किया। तुम्हें यह कहना चाहिए था कि अल्लाह तआला ने इनको महरूम कर दिया है। तुमने अक़्ल और ज़हन की तरफ़ निस्बत क्यों की?

उज्ब व किब्र का हकीमाना इलाज

हज़रत क़ारी मुहम्मद तैय्यब साहब रह० बहुत हसीन व जमील थे। उनकी तबियत में नफ़ासत भी थी। वह अच्छे और साफ़ कपड़े पहनते थे। वह अपना वाक़िआ ख़ुद लिखते हैं कि मैं छोटी उम्र में मोहतमिम बन गया था। छोटी उम्र और मोहतमिम। इसकी वजह से उनमें कुछ ख़ुदपसन्दी सी आ गई थी। यह मोहतमिम का लफ़्ज़ हम से बना है। यह हम अरबी ज़ुबान का है उर्दू का नहीं। उर्दू के हम का मतलब होता है कि हम ही हम हैं। और अरबी के हम का मतलब "ग़म" होता है क्योंकि उनकी उम्र छोटी थी इसलिए उनमें ग़म वाले हम के बजाए "हम ही हम" वाला हम था। उनकी बैअत की निसबत हज़रत अक़्दस थानवी रह० के साथ थी। जब उन्होंने महसूस किया कि मेरे अंदर ख़ुद-पसन्दी आ गई है तो उन्होंने हज़रत अक़्दस थानवी रह० को ख़त लिखा कि हज़रत! मैं अपने अंदर यह चीज़ महसूस करता हूँ। हज़रत रह० ने फ़रमाया, सब कुछ छोड़कर

हमारे पास आ जाओ। चुनाँचे उन्होंने एहतिमाम को छोड़ा और हज़रत के पास गए। हज़रत रह० ने उनके लिए इलाज तजवीज़ फ़रमाया। देखो... जो माहिर इलाज करने वाला होता है वह बंदे की बीमारी के मुताबिक़ दवा देता है। उन्होंने उनके ज़िम्मे यह ड्यूटी लगाई कि ख़ानक़ाह में जो लोग आते हैं, वे अपने जूते उतारकर मस्जिद में दाख़िल होते हैं। आपने उनके जूतों को सीधा करना है।

अब नौजवान और इतने अख़्तियारात का मालिक और इतने इल्म वाले उनको जूते सीधे करने पर लगा दिया। शुरू में तबियत को नागवारी तो महसूस हुई होगी मगर शेख़ के हुक्म पर जूते सीधे करने शुरू कर दिए। हज़रत थानवी रह० ने उन पर नज़र रखी कि कैसे जूते सीधे करते हैं। एक बार हज़रत ने देखा कि जो नए-नए जूते हैं उनको बिल्कुल सीधा करके रखते हैं और जो गंदे और पुराने हैं उनको बस थोड़ा सा हाथ लगा देते हैं। हज़रत समझ गए कि अभी अंदर से तकब्बुर नहीं निकला। हज़रत थानवी रह० ने फ़रमाया कि पुराने जूतों को पहले ठीक करो। फ़रमाते हैं, बस हज़रत का यह हुक्म होना ही था कि मेरे अंदर से उजब व तकब्बुर सब कुछ निकल गया। कुछ दिन जूतियाँ सीधी करने ने मेरे मन के अंदर से तकब्बुर को बिल्कुल ख़त्म कर दिया।

बड़ाई जताने का इबरतनाक अंजाम

एक आदमी को अल्लाह तआला ने इतनी बड़ी खेतीबाड़ी दी थी कि तीन रेलवे स्टेशन उसकी ज़मीन में बने हुए थे यानी पहला रेलवे स्टेशन भी उसकी ज़मीन में, दूसरा भी उसकी ज़मीन में और तीसरा भी उसकी ज़मीन में था। इतनी जागीर का मालिक, करोड़ोंपति बंदा था। एक बार दोस्तों के शहर के मेन चौक में खड़ा बातें कर रहा था। दोस्तों ने कहा कि कारोबार में कुछ परेशानियाँ हैं। वह ज़रा मूड

में आकर कहने लगा, ओ भूखे नंगो! तुम्हारे पल्ले ही क्या है। कभी-कभी जब पेट भरकर खाने को मिल जाता है तो वह बंदा खुदा के लहजे में बोलना शुरू कर देता है। उसने दोस्तों को कहा, तुम परेशान रहते हो कि आएगा कहाँ से और मैं तो परेशान फिरता हूँ कि लगाऊँगा कहाँ पे। बस यह उजब का बोल अल्लाह तआला को नापसन्द आ गया। बीमार हो गया। कुछ महीनों बाद खुद तो दुनिया से रुख़्सत हुआ और एक बेटा पीछे छोड़ गया। जवान उम्र बेटा जब सर पर बाप नहीं और करोड़ों का सरमाया हाथ में है तो उसके कई उल्टे सीधे दोस्त बन गए। उसको उन्होंने शराब और शबाब वाले कामों में लगा दिया। अब जवानी भी लुट रही है और माल भी लुटा रहा है। वह अपनी मस्तियाँ उड़ा रहा है किसी ने उसको यहाँ से लाहौर का रास्ता दिखा दिया। फिर किसी ने लाहौर से कराची का रास्ता दिखा दिया। किसी ने उसको जूए का रास्ता दिखा दिया। किसी ने कहा कि क्या तुम पाकिस्तान में पड़े हो चलो बाहर किसी मुल्क में चलते हैं। उसने उसे बैंकाक का रास्ता दिखा दिया। पानी की तरह से पैसा बहाया और जूए में भी करोड़ों हारे यहाँ तक कि जितना बैंक में था सारा लग गया। ज़मीनें बिकना शुरू हुई। आहिस्ता-आहिस्ता एक-एक मरब्बा ज़मीन बिकती गई और वह लगाता गया। एक वह वक़्त आया कि जब सारी ज़मीनें बिक गयीं। फिर वह वक़्त आया कि वह नौजवान जिस घर में रहता था उसको वह घर भी बेचना पड़ा। अब उसके पास न रहने के लिए घर था, खाने के लिए उसके पास कुछ नहीं था। जिस जगह पर उसके बाप ने बड़ा बोल बोला था उसका बेटा उसी जगह पर आकर खड़ा होता और लोगों से भीख मांगा करता था, अल्लाहु अकबर कबीरा।

ग़रीबों की आह से डरो

अमीरों से न डरो बल्कि ग़रीबों की आह से डरो। इसलिए कि अगर अमीर मांगेगा तो वह हाकिम के दरवाज़े पर जाएगा और अगर ग़रीब ने आह भर ली तो वह अल्लाह तआला के दरवाज़े को खटखटाएगा।

एक बार सरदाराने क़ुरैश नबी अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में थे। अल्लाह के महबूब की चाहत थी कि अगर यह लोग दीन में आ जाएं तो इनकी वजह से बहुत सारे लोग दीन में आ जाएंगे चुनाँचे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको नसीहत फ़रमाना शुरू कर दी। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनको नसीहत फ़रमा रहे थे तो उस वक़्त एक नाबीना सहाबी चलते हुए आए और महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में तलबगार हुए कि मुझे भी नसीहत की जाए। उस वक़्त नबी अलैहिस्सलाम के दिल में यह बात हुई कि यह तो अपना है इसको तो बाद में भी नसीहत कर सकते हैं और यह क़ुरैश मक्का इस वक़्त आए बैठे हैं इसलिए इस वक़्त किसी और से बात नहीं करता। लिहाज़ा जब नाबीना सहाबी ने अपनी बात बढ़ाने की कोशिश की तो नबी अलैहिस्सलाम के दिल में कुछ नागवारी सी पैदा हो गई और आप के चेहरा-ए-अनवर पर गुस्से के आसार ज़ाहिर हो गए कि यह बात क्यों नहीं समझ रहा है। महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुबारक चेहरे पर जो गुस्से के थोड़े से आसार ज़ाहिर हुए उनके बारे में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने क़ुरआन मजीद में आयत उतार दी और अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से महबूबाना ख़िताब फ़रमाया :

بسم الله الرحمن الرحيم

عبس وتولى ○ ان جاءه الاعمى ○ وما يدريك لعله يزكى ○ او يذكر

فتنفعه الذكرى ○ اما من استغنى ○ فانت له تصدى ○ وما عليك الا

يزكى ○ واما من جاءك يسعى ○ وهو يخشى ○

तेवर चढ़ाई और मुँह मोड़ा इस बात से कि आया उसके पास अंधा। और तुझको क्या ख़बर है शायद कि वह संवरता या सोचता तो काम आता उसका समझाना। वह जो परवाह नहीं करता सो तू उसकी फ़िक्र में है और तुझ पर कोई इल्ज़ाम नहीं कि वह दुरुस्त नहीं होता। और वह जो आया तेरे पास दौड़ता हुआ और वह डरता है।

अल्लाह तआला ने उन नाबीना सहाबी की दो सिफ़ात ख़ासतौर गिनवाईं :

1. ﴿واما من جاءك يسعى﴾ और वह तेज़-तेज़ चलकर महफ़िल में आया।

2. ﴿وهو يخشى﴾ और उसके दिल के अंदर ख़शियत भी थी।

मालूम हुआ कि सच्ची तलब की निशानी यह है कि आदमी नेक महफ़िलों में जाए तो एक तो वहाँ पहुँचने में जल्दी करे और तेज़-तेज़ चलकर जाए और दूसरे यह कि दिल में ख़शियत इलाही भी हो। ऐसे बंदे की अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हाँ बड़ी क़द्र होती है।

फिर अल्लाह तआला ने उन नाबीना सहाबी को ऐसी इज़्ज़त अता फ़रमाई कि रिवायत में आया है कि उसके बाद जब भी वह सहाबी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में आते तो अल्लाह के महबूब उनके बैठने के लिए अपनी चादर बिछा दिया करते थे। जी हाँ! वह सच्ची तलब लेकर आए थे। इसलिए अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हाँ उनका जो मुक़ाम था उस मुक़ाम कोई दसवाँ हिस्सा भी उन सरदाराने क़ुरैश के लिए नहीं था।(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 12/167-169)

● ● ●

ولا تحاسدوا ولا تباغضوا

وكونوا عباد الله اخوانا.

हिर्स व हसद

हिर्स व हसद

हासिद शर्मिन्दा और ग़मगीन रहा

एक दूसरा वाक़िआ लिखा कि सुलतान महमूद ग़ज़नवी रह० के साथियों ने उन्हें यह शिकायत लगाई कि बादशाह सलामत अयाज़ की एक अलमारी है। यह उस अलमारी में ताला लगाकर रखता है। वह रोज़ाना आलमारी को खोलकर देखता है और किसी दूसरे आदमी को देखने नहीं देता। हमारा ख़्याल है कि उसने आपके ख़ज़ाने के क़ीमती हीरे और मोती उसके अंदर छिपा रखे हुए हैं। आप ज़रा इसकी तलाशी लीजिए। जब बादशाह को यह शिकायत लगाई गई तो बादशाह सलामत ने उसी वक़्त अयाज़ को बुलवाया और कहा, अयाज़! क्या तुम्हारी कोई अलमारी है। उसने कहा, जी हाँ है। पूछा उसे ताला लगाकर रखते हो? उसने कहा, जी हाँ। पूछा, किसी और को देखने देते हो? अर्ज़ किया, जी नहीं। फिर पूछा, तुम ख़ुद रोज़ाना उसे देखते हो? अर्ज़ किया, जी हाँ। फिर बादशाह सलामत ने फ़रमाया, चाबी लाओ। अयाज़ ने चाबी दे दी। बादशाह ने किसी बंदे को भेजा कि जाओ और उस अलमारी में जो कुछ मौजूद है वह सब कुछ लाकर सबके सामने पेश कर दो। वह हसद करने वाले बड़े ख़ुश हुए कि देखो अब इसकी हक़ीक़त खुल जाएगी। जब इसकी चोरी का सामान सामने आएगा तो बादशाह अभी इसको धक्के देकर निकाल देगा।

अल्लाह की शान कि जब वह बंदा वापस आया तो उसने आकर बादशाह के सामने तीन चीज़ें रख दीं। एक पुराना जूता था, एक पुराना तहबंद और एक पुराना कुर्ता। बादशाह ने पूछा उसमें कुछ और नहीं था? उसने कहा जी नहीं। फिर बादशाह ने अयाज़ को

तरफ़ मुतवज्जेह होकर पूछा, अयाज़! क्या उसमें कुछ और नहीं? उसने कहा, जी नहीं, यही कुछ था। बादशाह ने कहा, अयाज़! इसमें तो कोई ऐसी क़ीमती चीज़ नहीं है? उसने कहा जी नहीं है जिसे तुम ताले में बंद करके रखो और किसी दूसरे को देखने भी न दो और कोई ऐसी चीज़ भी नहीं जिसे तुम रोज़ाना आकर चैक करो। ठीक है या नहीं? उसने कहा बादशाह सलामत! बात यह है कि मेरे नज़दीक यह बहुत क़ीमती है। बादशाह ने पूछा! भई वह कैसे? उसने कहा, बादशाह सलामत! वह इसलिए कि जब मैं आपके दरबार में पहली बार आया था तो ये जूते पहने हुए था, यह तहबंद बांधे हुआ था और यह कुर्ता पहने हुए था। मैंने इन तीनों चीज़ों को महफ़ूज़ कर लिया था। अब मैं रोज़ाना अलमारी खोलकर इनको देखता हूँ और अपने नफ़्स को समझाता हूँ कि अयाज़! तुम्हारी अवक़ात यही थी। तुम अपनी अवक़ात न भूलना। अब तुम्हें जो कुछ मिला है ये सब तुम्हारे बादशाह का तुम पर एहसान है। लिहाज़ा तुम अपने बादशाह का एहसान सामने रखना। बादशाह सलामत! इस तरह मुझे अपनी अवक़ात याद रहती है कि मैं क्या था और मुझे बादशाह के क़ुर्ब ने क्या-क्या इज़्ज़तें बख़्शीं। काश! हमारी भी यही कैफ़ियत हो जाती कि हम अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की नेमतों को ध्यान में रखते और अपनी अवक़ात को याद रखते। हमें तो ज़रा सा कुछ मिल जाता है तो सब से पहले अपनी अवक़ात को भूलते हैं।

दो ख़तरनाक रूहानी बीमारियाँ

जब हज़रत नूह अलैहिस्सलाम अपने उम्मतियों को लेकर किश्ती में बैठे तो उन्हें किश्ती में एक बूढ़ा नज़र आया। उसको कोई पहचानता भी नहीं था। आप अलैहिस्सलाम ने हर चीज़ का जोड़ा-जोड़ा किश्ती में बिठाया था। मगर वह अकेला था। लोगों ने

उसे पकड़ लिया। वह हज़रत नूह अलैहिस्सलाम से पूछने लगे कि यह बूढ़ा कौन है? हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने उससे पूछा, बताओ तुम कौन हो? वह कहने लगा, जी मैं शैतान हूँ। आपने सुनकर फ़रमाया, तू इतना चालाक और बदमाश है कि किश्ती में आ गया। कहने लगा, जी! मुझसे ग़लती हो गई, आप मुझे माफ़ फ़रमा दें। आपने फ़रमाया, तुम्हें हम ऐसे ही नहीं छोड़ेंगे। तू हमें अपना गुर बताता जा जिससे तू लोगों को सबसे ज़्यादा नुक़सान पहुँचाता है। कहने लगा, जी! मैं सच सच बतलाऊँगा अलबत्ता आप वादा करें कि आप मुझे छोड़ देंगे। आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, ठीक है हम तुम्हें छोड़ देंगे। वह कहने लगा, मैं दो बातों से इंसान को ज़्यादा नुक़सान पहुँचाता हूँ, एक हसद दूसरा हिर्स। वह फिर कहने लगा कि हसद ऐसी चीज़ कि मैं ख़ुद उसकी वजह से बर्बाद हुआ और हिर्स वह चीज़ जिसकी वजह से आदम अलैहिस्सलाम को जन्नत से ज़मीन पर उतार दिया गया। इसलिए मैं इन्हीं दो चीज़ों की वजह से इंसानों को सबसे ज़्यादा नुक़सान पहुँचाता हूँ।

हक़ीक़त में ये दोनों ऐसी ख़तरनाक बीमारियाँ हैं जो तमाम बीमारियों की बुनियाद बनती हैं। आज के सब लड़ाई झगड़े या तो हसद की वजह से हैं या हिर्स की वजह से। हसद करने वाला इंसान अंदर ही अंदर जलता रहता है। वह किसी को अच्छी हालत में देख नहीं सकता। दूसरे इंसान पर अल्लाह तआला की नेमतें होती हैं और हासिद के अंदर मरोड़ पैदा होते हैं कि वह अच्छी हालत में क्यों है।

इमाम अबूहनीफ़ा रह० के हासिदीन (जलने वाले)

इमामे आज़म अबूहनीफ़ा रह० से हसद करने वाले बहुत ज़्यादा थे। जब इंसान में कमाल आता है तो हसद करने वाले भी बन जाते हैं। अब भी ऐसे लोग मौजूद हैं जो इमाम साहब रह० को किसी न

किसी अंदाज़ से निशाना बनाते हैं। दुश्मन दो तरह के होते हैं, अंजान या हासिद। अंजान ना जानने की वजह से बंदे की ख़ूबियों से अंजान होता है। अंजान तो किसी तार्रुफ़ के बाद दोस्त बन जाते हैं। अलबत्ता हसद करने वाले का क्या करें।

इमाम औज़ाई रह० ने एक दिन अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० से कहा, ऐ ख़ुरासानी! यह अबूहनीफ़ा कौन है जो दीन में नई-नई बातें घड़ता रहता है। अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० ने 'किताबुर्रहन' ला कर रख दी। उन्होंने उस किताब को पढ़ा तो कहने लगे, अब्दुल्लाह यह नौमान कौन है? यह तो बड़ा आलिम है। अगर तुम इल्म हासिल करना चाहते हो तो इसकी सोहबत अपनाओ। उनको पहले तार्रुफ़ नहीं था। इब्ने मुबारक रह० ने अर्ज़ किया हज़रत! यही अबूहनीफ़ा रह० जिन्हें आप बिदअती कह रहे थे।

इमाम साहब रह० से हसद की इन्तिहा

तारीख़ में इस क़िस्म के वाक़िआत बहुत हैं। चुनाँचे हासिदों ने सोचा कि इमाम अबूहनीफ़ा के दामन पर ऐसा धब्बा लगा दिया जाए कि लोग बदज़न हो जाएं। लिहाज़ा उन्होंने जवान उम्र बेवा औरत से राब्ता किया कि किसी बहाने से इमाम साहब को अपने घर बुला, हम तुम्हें इसके बदले में एक भारी रक़म अदा करेंगे। औरत बेचारी फिसलती भी जल्दी है और फिसलाती भी जल्दी है। वह झांसे में आ गई। इमाम साहब जब रात को घर जाते हुए उस औरत के घर के सामने से गुज़रे तो औरत पर्दे में होकर निकली और कहने लगी, अबू हनीफ़ा रह०! मेरा ख़ाविंद मर रहा है और वह कोई वसीयत करना चाहता है और वह वसीयत मेरी समझ में नहीं आ रही है। ख़ुदा के लिए आप यह सुन लें। आप घर में दाख़िल हुए, औरत ने दरवाज़ा

बंद कर दिया। कमरे में छिपे हुए हासिदीन बाहर आ गए और कहने लगे, अूबहनीफ़ा आप रात के वक़्त एक अलैहिदा मकान में अकेली नौजवान औरत के पास बुरे इरादे से आए हो।

लिहाज़ा उस औरत को और इमामे आज़म रह० को लोगों ने पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया। हाकिमे वक़्त तक बात पहुँची तो उसने कहा उन्हें फ़िलहाल में बंद कर दिया जाए। मैं सुबह के वक़्त कार्यवाही पूरी करूंगा। इमाम साहब और उस औरत को एक अंधेरी कोठरी में बंद कर दिया गया। इमाम साहब वुज़ू से थे लिहाज़ा नफ़्लें पढ़ने में मशग़ूल हो गए। जब काफ़ी देर गुज़र गई तो उस औरत को अपनी ग़लती का एहसास हुआ कि मैंने इतने पाकदामन आदमी पर इल्ज़ाम लगाया है। जब इमाम आज़म रह० ने नमाज़ का सलाम फेरा तो वह औरत कहने लगी आप मुझे माफ़ कर दें। फिर उसने सारी राम कहानी सुना दी। इमाम आज़म रह० ने फ़रमाया अच्छा जो होना था वह तो हो चुका है। अब मैं तुम्हें एक तरीक़ा बताता हूँ ताकि हम इस मुसीबत से छुटकारा हासिल कर सकें। उसने पूछा वह कैसे? आपने फ़रमाया कि तुम इस पहरेदार की मिन्नत समाजत करो कि लोग मुझे अचानक पकड़कर ले आए हैं, मुझे ज़रूरी काम समेटने के लिए घर जाना है तुम मेरे साथ चलो ताकि मैं वह काम कर सकूं। फिर जब पहरेदार मान जाए तो तुम मेरे घर चली जाना और मेरी बीवी को हालात बता देना ताकि वह तुम्हारे इसी बुर्क़े में लिपट कर यहाँ मेरे पास आ जाए। औरत ने रो-धो कर पुलिस वाले का दिल मोम कर लिया और यूँ इमाम साहब की बीवी हवालात में उनके पास पहुँच गई। जब सुबह हुई तो वक़्त के हाकिम ने तलब किया कि इमाम आज़म और उस औरत को मेरे सामने पेश किया जाए। हासिदों की भीड़ मौजूद थी। जब पेशी हुई तो हाकिम ने कहा

कि अबूहनीफ़ा! तुम इतने बड़े आलिम होकर भी गुनाहे कबीरा करते हो? इमाम साहब ने पूछा आप क्या कहना चाहते हैं? हाकिम ने कहा कि आप एक ग़ैर औरत के साथ रात के वक़्त एक मकान में अकेले देखे गए हैं। इमाम साहब ने फ़रमाया कि वह ग़ैर औरत नहीं है। हाकिम ने पूछा वह कौन है? आपने अपने ससुर की तरफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया, इनको बुलाओ ताकि पहचान लें। वह आए तो उन्होंने देखा तो फ़रमाने लगे यह तो मेरी बेटी है। मैंने फ़लां मजमे में इनका निकाह अबूहनीफ़ा से कर दिया था। इस तरह इमाम आज़म की ख़ुदा दाद फ़हम की वजह से हसद करने वालों की चाल कामयाब साबित न हुई और उनकी साज़िश ख़ाक में मिल गई।

दुनिया में हमारा सबसे बड़ा दुश्मन

यह फ़क़ीर फ़्रान्स गया तो एक दोस्त कहने लगे कि रमज़ानुल मुबारक आया। मुझे रोज़े रखने थे। तरावीह पढ़नी थी। मैंने अपने प्रोफ़ेसर से कहा कि मुझे छुट्टी दे दो। उसने कहा, क्यों? मैंने कहा मुझे रोज़े रखने हैं और तरावीह पढ़नी है। उसने कहा, तुम्हें छुट्टी की क्यों ज़रूरत है? मैंने कहा, फ़लाँ जगह जाना है और मैं वहाँ से रोज़ नहीं आ सकता। उसने कहा, मैं तुम्हें यहीं जगह बता देता हूँ। मैंने कहा, बहुत अच्छा। वह मुझे युनीवर्सिटी में एक जगह ले गया जहाँ पर गोरे चिट्टे नौजवान लड़के काली दाढ़ियाँ, अमामे बांधे हुए, जुब्बे पहने हुए, मिसवाक से वुज़ू कर रहे हैं। नमाज़े पढ़ रहे हैं और आज़ाने दे रहे हैं। क़ुरआन पाक एक आगे पढ़ रहा है दूसरे पीछे से सुन रहे हैं। रोज़े रख रहे हैं। पूरा महीना, फिर एतिकाफ़ में भी बैठे हुए, फिर सुबह शाम जैसे रोज़े की सहरी व इफ़्तारी होती है उसके मुताबिक़ कर रहे हैं। कहने लगे कि मैं ईद पढ़कर जब वापस आया तो मैंने

टीचर से कहा कि आपकी बड़ी मेहरबानी कि आपने मुझे ऐसे नेक लोगों से मिला दिया, मेरा रमज़ान शरीफ़ तो बड़ा अच्छा गुज़रा। वह मुस्कराकर कहने लगा कि आपको पता है यह सब यहूदी थे? मैंने कहा मुझे तो पता नहीं है। कहने लगा कि उन्होंने एक प्रोजैक्ट शुरू किया है कि इस्लाम में मुसलमानों को जैसे रोज़े रखने के लिए कहा गया है तुम हू बहू एक महीना इस तरह देखो कि इसमें क्या अच्छाईयाँ हैं, क्या बुराईयाँ हैं। अच्छाईयाँ होंगी तो हम बिन कहे क़ुबूल कर लेंगे और जो ख़ामियाँ होंगी तो इसके ख़िलाफ़ प्रोपेगंडा करेंगे।

अब बताइए आज दुनिया में यह काम हो रहा है। हमारे नौजवान बैरून मुल्क में युनीवर्सिटियों से इस्लामियात की पीएचडी की डिग्रियाँ लेते हैं वहाँ पर इस्लामियात के हैड आफ़ दी डिपार्टमेंट यहूदी होते हैं। अब बताइए दुनिया में इस वक़्त इस्लाम के ख़िलाफ़ क्या कुछ नहीं हो रहा है अल्लाहु अकबर। इस वक़्त हमारे सबसे बड़े दुश्मन दुनिया के अंदर यहूदी हैं जो पीछे से इस्लाम को हर वक़्त नुक़सान पहुँचाने के लिए कोशिश कर रहे हैं।

रशिया में यहूद की साज़िश

फ़क़ीर एक दफ़ा रूस में सफ़र कर रहा था। मौलाना अब्दुल्लाह और दूसरे लोग सफ़र में साथ थे। ट्रेन में सफ़र कर रहे थे कि एक आदमी आया फ़क़ीर से भी मिला औरों से भी मिला। दाढ़ी रखी हुई थी। फिर साथियों से बातें करने लगा, जब वह चला गया तो फ़क़ीर ने साथियों से पूछा, क्या बातें कर रहा था? कहने लगे कि आपके बारे में पूछ रहा था कि कौन हैं? हमने ने कहा कि आलिम हैं, पीर हैं। कहाँ से आए हैं? बताया गया कि पाकिस्तान से तशरीफ़ लाए हैं। कहने लगा आप भी रशियन हैं, मैं भी रशियन हूँ। आप लोग इसको

धोका दो। आप लोग इसे कहीं बाहर-बाहर फिराते रहो। इसका पैसा ख़र्च करवा दो। फिर यह अपने आप यहाँ से चला जाएगा। हमें इन लोगों से क्या फ़ायदा है? इसको यहीं से चलता कर दो ताकि यहाँ कोई दीने इस्लाम का काम न कर सके। इस क़िस्म के ज़ाती तजरिबात और मुशाहिदे फ़क़ीर को कई मर्तबा हुए हैं। अब बात समझ में आई है कि इनके दिलों में क्या ग़ैज़ व ग़ज़ब की सूरत होती है। अल्लाह तआला ने सच फ़रमाया:

﴿قل موتوا بغيظكم﴾ तुम मर जाओ अपने गुस्से में, ﴿كبرت كلمة تخرج من افواههم ان يقولون الا كذبا﴾ और ﴿قد بدت البغضاء من افواههم وما تخفى صدورهم اكبر﴾ ज़बान से बातें करते हैं और उनके दिलों में इतना कुछ इस्लाम के ख़िलाफ़ छिपा हुआ है।

بسم الله الرحمن الرحيم

الحياء شعبة من الايمان (الحديث)۔

हुस्ने मआशरत
और
हुस्ने अख़्लाक़

हुस्ने मआशरत और हुस्ने अख़्लाक़

मुसबत (पोज़िटिव) सोच के फ़ायदे

अबुलहसन ख़रक़ानी रह० हमारे सिलसिले के एक बुज़ुर्ग थे। लेकिन उनकी एक आज़्माइश थी कि उनके घर में बीवी बड़ी तेज़ तर्रार थी। वह उस पर सब्र करते थे और सब्र पर अल्लाह तआला ने उनको विलायत अता फ़रमा दी थी। चुनाँचे एक बार एक मुरीद उनसे मिलने के लिए आया। उसने घर जाकर पूछा कि हज़रत कहाँ हैं? बीवी ने कहा, कौन हज़रत? कहाँ के हज़रत? उसने कहा, जी मैं उनसे मिलने आया हूँ। जवाब दिया कि जाओ वहाँ कहीं जंगल में बैठे होंगे। वहीं मिल लो। मुरीद समझ गया कि मामला ज़रा नाज़ुक सा है। चुनाँचे वह हज़रत को मिलने जंगल में आया मगर क्या देखता है कि हज़रत शेर पर सवार होकर आ रहे हैं। यह एक करामत थी जो अल्लाह तआला ने ज़ाहिर कर दी। अब जब उसने देखा कि हज़रत तो जंगल में शेर पर सवारी कर रहे हैं और घर में बीवी उन पर सवारी कर रही है, सोचने लगा कि यह क्या मामला है? जब हज़रत उनको मिले तो हज़रत ने भी उनको पहचान लिया और फ़रमाया कि देखो मैं घर में बीवी की इस तकलीफ़ को बोझ उठाता हूँ। अल्लाह तआला उस शेर को मेरा बोझ उठाने पर लगा देते हैं। तो जब यह बात बताई तो वह मुरीद रुख़्सत हुआ लेकिन जब हज़रत घर को आने लगे तो दुआ मांगी कि ऐ अल्लाह! यह औरत बहुत ही ज़्यादा गुस्से वाली है और तेज तर्रार है। ऐ अल्लाह! कोई ऐसा मामला हो

कि यह अक़ीदत वाली बन जाए ताकि दीन के काम में रुकावट न रहे। चुनाँचे अल्लाह तआला ने उनको एक करामत बख़्शी कि वह हवा में उड़ने लग गए और उड़ते-उड़ते अपने घर के ऊपर से गुज़रे। जब वापस घर आए तो घर में दाख़िल होते हैं। बीवी ने इस्तिक़बाल किया कि बड़े बुज़ुर्ग बने फिरते हो और बड़े वली बने फिरते हो। वली तो वह था जिसे मैंने आज हवा में उड़ते हुए देखा।

हज़रत ने उनकी बात सुनकर कहा कि अल्लाह की बंदी वह मैं ही तो था जो यहाँ से उड़ाकर गुज़र रहा था। मैंने ही अल्लाह तआला से दुआ मांगी थी। जब बीवी ने यह सुना तो थोड़ी देर सोचकर कहने लगी अच्छा, आप थे। उन्होंने कहा, हाँ! हाँ! मैं ही था। कहने लगी, मैं भी सोच रही थी कि टेढ़ा टेढ़ा क्यों उड़ रहा है। अब सोचिए कि घर किस तरह आबाद हो। लिहाज़ा मनफ़ी (नगेटिव) सोच से बचने की कोशिश करें और मुसबत सोच रखें।

बीवी से हुस्ने सुलूक पर मग़फ़िरत

हज़रत अक़्दस थानवी रह० ने एक वाक़िआ लिखा है कि एक आदमी की बीवी से ग़लती हो गई। इतना बड़ा नुक़सान था कि अगर वह चाहता तो उसे तलाक़ दे देता क्योंकि वह हक़ पर था। लेकिन उसने उसे अल्लाह की बंदी समझकर माफ़ कर दिया। कुछ अरसे बाद उसकी वफ़ात हो गई। किसी ने उसे ख़्वाब में देखा तो उससे पूछा, सुनाओ भई! आगे क्या बना? कहने लगा, बस अल्लाह तआला ने मुझ पर मेहरबानी फ़रमा दी और मेरे गुनाहों को माफ़ कर दिया। उसने पूछा किस वजह से आपकी माफ़ी हुई? वह कहने लगा कि एक ऐसी बात थी जो मैं भूल ही गया था। हुआ यह था कि एक बार मेरी बीवी से कोई ग़लती हो गई थी। मैं अगर चाहता तो सज़ा देता।

तलाक़ दे देता। मगर मैंने उसे अल्लाह की बंदी समझकर माफ़ कर दिया। परवरदिगार ने कहा, तूने उसे मेरे बंदी समझकर माफ़ कर दिया था। आज मैंने तुझे अपना बंदा समझकर माफ़ कर देता हूँ।

बीवी को माफ़ करने पर रहमत

एक आदमी के बारे में लिखा है कि उसकी बीवी बेअक़्ल सी थी। ग़ल्तियाँ कर बैठती थी। कभी कोई नुक़सान, कभी कोई नुक़सान। ग़ुस्सा तो उस आदमी को बहुत आता लेकिन सोचता कि अगर मैंने इसे तलाक़ दे दी तो यह बेचारी तो परेशान हो जाएगी। फिर कौन इसे लेगा। चलो इसकी ज़िंदगी भी गुज़र जाएगी और मेरा वक़्त भी गुज़र जाएगा। लिहाज़ा वह उसकी ग़ल्तियों को माफ़ कर देता कि कोई बात नहीं, अल्लाह की बंदी है। इसी हाल में ज़िंदगी गुज़ार दी। यहाँ तक कि वफ़ात हो गई। मरने के बाद किसी ने ख़्वाब में देखा तो पूछा कि सुनाइए, आपके साथ क्या मामला बना? कहने लगा, मुझे अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुज़ूर पेश किया गया। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने फ़रमाया, मेरे बंदे! तू अपनी बीवी को मेरी बंदी समझकर माफ़ कर दिया करता था जा आज मैंने अपना बंदा समझकर माफ़ कर दिया।

मुहब्बत भरी ज़िंदगी का तरीक़ा

एक बार प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम घर तशरीफ़ लाए। सहन में देखा कि सैय्यदा आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा प्याले से पानी पी रही हैं। दूर से देखा तो वहीं से फ़रमाया, हुमैरा! (नाम आएशा था मगर प्यार से हुमैरा कहा करते थे। नबी पाक ने हमें इसमें भी सबक़ दे दिया) दूर से फ़रमाया, हुमैरा। बोलीं! ऐ अल्लाह के नबी फ़रमाइए। फ़रमाया, थोड़ा सा पानी मेरे लिए भी बचा देना। वह उम्मती थीं,

बीवी थीं, आप शौहर थे और सैय्यदुल मुरसलीन भी थे, रह्मुतलिल्ल आलमीन भी थे। बरकतें तो आपकी ज़ात से मिलती थीं। मगर सुब्हानअल्लाह मुहब्बत भी अजीब चीज़ होती है कि जीवन साथी को देखा कि पानी पी रही हैं तो दूर से कहा कि कुछ पानी मेरे लिए भी बचा देना। हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने कुछ पानी बचा दिया। जब आप करीब तशरीफ़ लाए तो अपनी बीवी का बचा हुआ पानी हाथ में लेकर पीना चाहा। अचनाक आप रुक गए। पूछा कि हुमैरा तूने इस प्याले पर किस जगह लब लगाया था। हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने उस जगह की निशानदिही कर दी। आपने उसी जगह पर अपना लब मुबारक लगाया।

उलमा किराम ने एक वाक़िआ लिखा है कि एक बीवी बहुत ख़ूबसूरत थी जबकि ख़ाविन्द बदसूरत था और शक्ल का अनोखा था, रंग का काला था। बहरहाल ज़िंदगी गुज़र रही थी। नेक मआशरे में ज़िंदगियाँ गुज़र जाया करती हैं। एक मौके पर शौहर ने बीवी की तरफ़ देखा तो मुस्कराया, ख़ुश हुआ। बीवी देखकर कहने लगी कि हम दोनों जन्नती हैं। उसने पूछा यह आपको कैसे पता चला? बीवी ने कहा, जब आप मुझे देखते हैं तो ख़ुश होते हैं, शुक्र अदा करत हैं। और जब मैं आपको देखती हूँ तो सब्र करती हूँ। शरिअत का हुक्म है कि सब्र करने वाला भी जन्नती और शुक्र करने वाला भी जन्नती है।

दुनिया में जन्नत के मज़े

हज़रत मौलाना अहमद अली लाहौरी रह० का ताल्लुक सिख घराने से था। आप इब्तिदाए जवानी में कलिमा पढ़कर मुसलमान हो गए थे और दारुलउलूम देवबंद में दाख़िला ले लिया। यहाँ तक कि आप दौरए हदीस के दर्जे तक पहुँच गए।

आप यह वाक़िआ ख़ुद सुनाया करते थे कि जब मेरे ससुर को

उनके घरवालों ने कहा कि अब हमारी बच्ची जवान है। इसलिए इसके लिए कोई मुनासिब रिश्ता तलाश करके निकाह कर देना चाहिए। वह पंजाब के मदरसों के दौरे पर निकले ताकि उन्हें अपनी बच्ची के लिए कोई आलिम फ़ाज़िल नौजवान मिल सके। यहाँ तक कि दारुलउलूम देवबंद पहुँच गए। जब उन्होंने दौरए हदीस की क्लास को देखा तो उनकी निगाहें मेरे ऊपर अटक गयीं। उन्होंने शेख़ुल हिन्द मौलाना महमूदुल हसन रह० से पूछा कि यह बच्चा कौन है? उन्होंने बताया कि यह सिख घराने से ताल्लुक़ रखता है और मुसमलान होकर हमारे पास इल्म हासिल किया है। उन्होंने पूछा, क्या शादी-शुदा है? शेख़ुल हिन्द रह० ने फ़रमाया, नहीं। उन्होंने शेख़ुल हिन्द रह० से पूछा क्या यह शादी करना चाहता है? तो मेरे उस्ताद मोहतरम ने मुझसे पूछा कि क्या तुम शादी करने के लिए तैयार हो? मैंने अर्ज़ किया, हज़रत! मैं मुसलमान हूँ और मेरा सारा ख़ानदान काफ़िर है। अब मुझ अकेले को कौन बेटी दे देगा। उन्होंने पूछा कि अगर कोई अपनी बेटी आपको दे तो आपकी क्या राय है? मैंने कहा, हज़रत! मैं इस सुन्नत को ज़रूर अदा कर करूंगा। मैं इसके छोड़ने का गुनाह क्यों अपने सर लूँ? चुनाँचे मेरे ससुर साहब ने फ़रमाया दिया कि कल असर के बाद निकाह होगा।

फ़रमाते हैं कि उसके बाद मैं अपने दोस्तों के पास आया और उन्हें बताया कि कल मेरा निकाह है। तलबा तलबा ही होते हैं। वह यह सुनकर मुझसे मुहब्बत प्यार की बातें करने लग गए। काफ़ी देर के बाद एक दोस्त ने कहा, जी आपके कपड़े बड़े मैले हैं। लिहाज़ा आपको चाहिए कि आप किसी दोस्त के कपड़े उधार ले लें और वह पहनकर निकाह की तक़रीब में जाएं। मैंने कहा कि मेरी तबियत इस बात को गवारा नहीं करती। मैं जो कुछ हूँ सो हूँ। मैं उधार तो नहीं मांगूगा। तलबा मुत्तक़ी होते हैं, आसानी से नहीं छोड़ते। चुनाँचे वह

कहने लगे, अच्छा अगर किसी दूसरे से नहीं मांगना चाहते तो आप इसी सूट को धोकर दोबारा पहन सकते हैं ताकि साफ़ कपड़े हों। हज़रत के अपने अल्फ़ाज़ में है :

"मेरे भेड़ कद पए" यानी मेरी कंबख़्ती आ गई कि मैंने अपने दोस्त की बात मान ली। चुनाँचे मैंने अगले दिन धोती बांधी और कपड़े धो लिए। सर्दी का मौसम था और ऊपर से आसमान पर अब्र हो गया। असर का वक़्त आ गया। मैंने मस्जिद के एक तरफ़ कपड़े हवा में लहराने शुरू कर दिए और साथ ही दुआएं भी मांगनी शुरू कर दीं कि ऐ अल्लाह! इन कपड़ों को सुखा दे और मौसम की ख़राबी की वजह से कपड़े सूखने में नहीं आ रहे थे। यहाँ तक कि असर की अज़ान हो गई और मैंने सर्दी के मौसम में गीले कपड़े पहने और मजमे में आकर बैठ गया। लेकिन मेरे ससुर का दिल भी सोने का बना हुआ था कि उनकी नज़रें इन चीज़ों पर बिल्कुल नहीं थीं। उन्होंने देखा कि कल भी यही कपड़े थे और मैले थे और आज भी वही कपड़े हैं और गीले हैं और इसके पास कोई दूसरा जोड़ा भी नहीं है। उन्होंने अपनी बेटी का निकाह कर दिया। कुछ अरसे बाद रुख़्सती हो गई।

शुरू के कुछ दिनों में मेरे ऊपर फ़ाक़े आए क्योंकि मैं तालिब इल्म था और ताज़ा-ताज़ा पढ़कर फ़ारिग़ हुआ था। कमाई का कोई ऐसा सिलसिला भी नहीं था। कभी खाने को मिल जाता और कभी न मिलता। कुछ अरसे मेरी दुल्हन मेरे घर में रही। उसके बाद जब वह अपने वालदैन के घर गई तो उसकी वालिदा ने उससे पूछा, बेटी! तूने अपने नए घर को कैसा पाया? फ़रमाते हैं कि मेरी बीवी, तक़्वे वाली, नेक और पाक औरत थी। उसकी नज़र मेरी दीनदारी पर थी। चुनाँचे उसने इसको सामने रखते हुए अपनी माँ से कहा, "अम्माजी मैं तो समझती थी कि मरकर जन्नत में जाएंगे मैं जीती जागती जन्नत में

पहुँच गई हूँ।" हज़रत वाला फ़रमाया करते थे, 'मेरे ससुर ने मुझे उस वक़्त पहचान लिया था जब अहमद अली, अहमद अली नहीं था और आज तो अहमद अली अहमद अली है।

(ख़ुत्बात ज़ुल्फ़ुक़्क़ार 12/194)

मुस्कुराहट मुहब्बत का सरचश्मा (जड़) है

कराची के एक साहब का मुझ से ताल्लुक़ था। एक बार वह मियाँ-बीवी दोनों मिलने आए। वह कहने लगे, हज़रत हमारी शादी को चार साल हो चुके हैं। और हम इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि अब हमारा गुज़ारा मुश्किल है। क्योंकि हम दोनों आप से बैअत हैं। हाज़िर इसलिए हुए हैं कि आप से इजाज़त ले लें और नसीहत भी ले लें ताकि आप नाराज़ न हों कि तुमने तो बताया ही नहीं। यह मियाँ साहब के अल्फ़ाज़ थे।

अब उन्होंने आकर कुछ बातें बतायीं। ऐसे हालात में पीरों का यह काम होता है कि Read in between the line (बैनस्सुतूर असल हक़ीक़त को समझें)। कुछ तो मुरीद आकर बताते हैं और कुछ उनको पढ़ना पढ़ता है कि अंदर की बात क्या है। ख़ैर अंदर की बात का पता चल गया कि इन दिनों शौहर का कारोबार कुछ मुश्किल सा बना हुआ है और जब वह घर आते हैं तो वही फ़िक्रें और वही सोचें उन्हें घेरे रहती हैं। बीवी उस वक़्त खाना खाती है जब वह घर आते हैं। और जब वह घर आते हैं तो उनका मूड बना होता है। ऐसी हालत में तो घर में मुहब्बत वाला माहौल पैदा नहीं किया जा सकता।

मैंने उनसे कहा कि आप जिस फ़ैसलाकुन नतीजे पर पहुँचे हैं उसके लिए आप छः महीने इंतिज़ार करें। वह कहने लगे, जी बहुत अच्छा। मैंने कहा कि शौहर यह वादा करे कि वह एक काम करेगा।

उसने कहा, जी हज़रत मैं ज़रूर करूंगा। मैंने कहा कि वादा यह लेना है कि आप जब भी घर आएं, आप अपनी बीवी को देखकर मुस्कराएंगे। उनको यह छोटी सी बात नज़र आई। वह कहने लगे, जी हज़रत! बहुत अच्छा। उस वक़्त इस बात की हक़ीक़त को न पा सके। अब बताएं कि बीवी इंतिज़ार में हो, मिलकर खाना खाना चाहती हो। शौहर के लिए दरवाज़े खोले और शौहर पर उसकी नज़र पड़े और वह मुस्कराए तो बहारें शुरू हो जाती हैं या नहीं?

मैंने उनको छः महीने का वक़्त दिया था। उन्होंने उस नसीहत पर अमल शुरू कर दिया। चुनाँचे छः महीने तो क्या एक महीने बाद फ़ोन आया कि हज़रत जितनी मुहब्बत की ज़िंदगी हम अब बसर कर रहे हैं, हमने इसके बारे में कभी सोचा भी नहीं था। ज़रा सोचिए कि एक मुस्कराहट न होने की वजह से दोनों की ज़िंदगी ख़राब हो कर रह गई थी। जहाँ नबी अलैहिस्सलाम की एक सुन्नत के छूटने पर घर उजड़ने की नौबत आ रही थी, वही सुन्नत ज़िंदा करने पर पर जन्नत का मंज़र पेश करने लगा।

क़ाबिले अफ़सोस वाक़िआ

लाहौर में एक साहब की बेटी की शादी होनी थी। उसने एक साल से उसकी प्लानिंग शुरू कर दी। कार्ड छपवाए और बड़े पैसे ख़र्च किए। उसने यहाँ तक इंतिज़ाम किया कि बारात के साथ आने वाले हर मेहमान के गले में एक हज़ार रुपए का हार डाला। और वे बर्तन जिनमें बरातियों ने खाना खाया वह पत्थर के बने हुए अनमोल क़िस्म के बर्तन थे। वे बर्तन उसने खुद बनवाए थे। उन बर्तनों पर उसने शादी की यादगार भी लिखवाई थी। हर बाराती को इजाज़त थी कि वह अपने इस्तेमाल में आने वाले बर्तन यादगार के तौर पर ले जा सकता है। इधर लड़के वालों ने भी ख़ूब इंतिज़ाम किया कि चिड़िया

घर से किराए पर हाथी ले आए। दुल्हा मियाँ हाथी पर बैठकर ससुराल पहुँचे जैसे जंग करने चला हो। इसके अलावा उन्होंने पैसा पानी की तरह बहाया।

जब रुख़्सती हो गई तो मर्द घर वापस आए तो औरतों ने लड़की के वालिद से पूछा हक़ मेहर कितना मुक़र्र किया है? उस वक़्त उनको ख़्याल आया कि हमने तो निकाह पढ़ा ही नहीं। तब उन्होंने बारातियों की तरफ़ पैग़ाम भिजवाया कि बारात को यहीं रास्ते में रोक लिया जाए ताकि बच्ची का निकाह करने के बाद उसे नए घर में दाख़िल किया जाए। अंदाज़ा कीजिए कि इतने पैसे ख़र्च किए और इतने अरसे से प्लानिंग की। हर चीज़ का तो ख़्याल रखा लेकिन अल्लाह के हुक्म का ख़्याल न रखा। यह दीन से दूरी का नतीजा है। इसके ख़िलाफ़ जो लोग दीनदारी की बुनियाद पर अपने नए घर की बुनियाद रखते हैं वे दुनिया में ही जन्नत के मज़े ले लेते हैं।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 12/195)

सास बहू के झगड़े का हल

मेरे पास एक औरत आई जो काफ़ी पढ़ी लिखी लगती थी। शायद एमए किया हुआ था। उसने पर्दे के पीछे बैठकर बात की। अपनी सास के बड़े गिले शिकवे किए कि नाक में दम कर रखा है। बात-बात पर नोक-झोंक करती है। ग़र्ज़ उसने सास का ख़ूब रोना रोया। तक़रीबन आधे घंटे सास के शिकवे करती। उसी दौरान वह रो पड़ी। लेकिन साथ ही बताया कि ख़ाविन्द मेरे साथ बहुत अच्छा है। बहुत प्यार, सुलूक रखने वाला है। उसके शौहर की एक फ़ैक्ट्री है, बड़ा खाता पीता घराना है। कार कोठी उसके पास है लेकिन सास की वजह से बहुत परेशान थी। जब उसने बताया कि शौहर उसके साथ

बहुत अच्छा है, उससे उसे कोई शिकवा नहीं तो मैंने उससे एक सवाल किया कि आप इस घर में कैसे आयीं? कहने लगी, वह तो मेरी सास मेरे घर आई। मुझे देखा और पसन्द किया और मुझे ब्याह कर ले आई। इस पर मैंने कहा उसने तो आप पर एहसान किया कि इतने अच्छे घर में आपको ले आई जिसमें आपको शौहर भी अच्छा मिला। इस बड़े एहसान पर तो आपको अपनी सास का शुक्रगुज़ार रहना चाहिए। लेकिन यह शिकवे कैसे? मैंने कहा, अब बताएं कि इतने बड़े एहसान के मुक़ाबले में तुम्हारी ये सब बातें कैसी हैं। कहने लगी, आपने तो मेरा मसअला हल कर दिया। इस एहसान के मुक़ाबले में तो ये बातें वाक़ई कोई हैसियत ही नहीं रखतीं।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 2/159)

रंजिश को इस तरह दूर कीजिए

दो भाई थे जिनमें मुहब्बत का ताल्लुक़ था लेकिन बीवियों की आपस में नहीं बनती थी। उनमें से एक भाई ने दूसरे भाई को दावत खाने के लिए घर बुलाया और उसके सामने खाना लाकर रखा। उसकी बीवी को पता चला तो उसने सामने से खाना उठा लिया कि हम इस बंदे को खाना नहीं देते। यह भी दिल में बहुत रंजीदा हुआ। उसके भाई ने जब चेहरे पर गुस्से के असरात देखे तो कहने लगा कि एक बार मैं आपके घर आया था। याद रहे कि आपने भी खाना मेरे सामने रखा था। आपकी एक मुर्ग़ी भागती हुई आई और सालन में उसका पाँव पड़ा तो सालन गिर गया। मैंने रोटी न खाई क्योंकि सालन और नहीं था। तुम्हारी घर की एक मुर्ग़ी ने सालन ख़राब कर दिया और मैंने यह महसूस न किया। अगर मेरी बीवी ने गुस्से में खाना उठा लिया तो आप गुस्सा क्यों होते हैं। दूसरे भाई ने कहा बात तो सच्ची है। क्या मैं इतना भी लिहाज़ नहीं कर सकता जितना इसने

मेरी मुर्ग़ी का किया था। चुनाँचे बात जल्दी समझ में आ गई। मामला उलझते उलझते बिल्कुल सुलझ गया। अगर समझने की नीयत हो तो बात जल्दी समझ में आ जाती है अगर लड़ने की नीयत हो बात बिल्कुल समझ में नहीं आती। अच्छा पड़ौसी बनकर रहना मकारिमे अख़्लाक़ में से है।

बाअख़्लाक़ पड़ौस की क़ीमत

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० के पड़ौस में एक यहूदी रहता था। उसे मकान बेचने की ज़रूरत पेश आई। एक आदमी ख़रीदने के लिए आया। उसने पूछा कि आप मकान कितने में देंगे? वह यहूदी कहने लगा, दो हज़ार दीनार का। उसने कहा, जी इस जैसा मकान तो यहाँ एक हज़ार दीनार का मिलता है। यहूदी उसके जवाब में कहने लगा कि वाक़ई एक हज़ार दीनार तो इस मकान की क़ीमत है और दूसरा हज़ार दीनार अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० के पड़ौस की क़ीमत है, सुब्हानअल्लाह।

यतीम नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नज़र में

मशहूर रिवायत है कि नबी अलैहिस्सलाम ईद के दिन घर से मस्जिद की तरफ़ तशरीफ़ लाने लगे। रास्ते में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुछ बच्चों को खेलते हुए देखा। उन्होंने अच्छे कपड़े पहने हुए थे। बच्चों ने सलाम अर्ज़ किया तो नबी अलैहिस्सलाम ने जवाब इर्शाद फ़रमाया। उसके बाद आप आगे तशरीफ़ ले गए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आगे चले तो एक बच्चे को ख़ामोशी के साथ उदास बैठे हुए देखा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके क़रीब रुक गए और उस बच्चे से पूछा तुम्हें क्या हुआ है? क्या वजह है कि तुम उदास और परेशान नज़र आ रहे हो? उसने रोकर कहा, ऐ

अल्लाह के महबूब! मैं यतीमे मदीना हूँ। मेरे सर पर बाप का साया नहीं है। जो मेरे कपड़े ला देता। मेरी अम्मी नहलाकर मुझे कपड़े पहना देती। इसलिए मैं यहाँ उदास बैठा हूँ। नबी अलैहिस्सलाम ने उसे फ़रमाया कि तुम मेरे साथ आओ।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसे लेकर वापस अपने घर तशरीफ़ लाए और आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमाया, हुमैरा! उन्होंने अर्ज़ किया, लब्बैक या रसूलुल्लाह! अल्लाह के रसूल मैं हाज़िर हूँ। आपने फ़रमाया, तुम इस बच्चे को नहला दो। चुनाँचे उन्होंने नहला दिया। इतने में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी चादर के दो टुकड़े कर दिए। कपड़े का एक टुकड़ा उसे तहबंद की तरह बांध दिया गया और दूसरा उसके बदन पर लपेट दिया गया। फिर उसके सर पर तेल लगाकर कंघी की गई। यहाँ तक कि वह बच्चा तैयार हो गया और नबी अलैहिस्सलाम के साथ चलने लगा तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नीचे बैठ गए। और उस बच्चे को फ़रमाया, तू पैदल चलकर मस्जिद नहीं जाएगा बल्कि मेरे कंधों पर सवार होकर जाएगा।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस बच्चे को अपने कंधों पर सवार किया और इसी हालत में उसी गली में तशरीफ़ लाए जिसमें बच्चे खेल रहे थे। जब उन्होंने यह मामला देखा तो वह रोकर कहने लगे, काश! हम भी यतीम होते और आज हमें भी नबी अलैहिस्सलाम के कंधों पर सवार होने का शर्फ़ नसीब हो जाता।

नबी अलैहिस्सलाम जब मस्जिद तशरीफ़ लाए तो आप मिम्बर पर बैठ गए तो वह बच्चा नीचे बैठने लगा। नबी अलैहिस्सलाम ने उसे इशारे से फ़रमाया कि तुम आज ज़मीन पर नहीं बैठोगे बल्कि मेरे साथ मिंबर पर बैठोगे। चुनाँचे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने

उस बच्चे को अपने साथ मिंबर पर बिठाया और फिर उसके सर पर हाथ रखकर इर्शाद फ़रमाया कि जो शख़्स यतीम की किफ़ालत (देखभाल) करेगा और मुहब्बत व प्यार की वजह से उसके सर पर हाथ फेरेगा उसके हाथ के नीचे जितने बाल आएंगे अल्लाह तआला उसके आमालनामे में उतनी नेकियाँ लिख देगा, सुब्हानअल्लाह।

लख़्ते जिगर हो तो ऐसी हो

एक बार नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम घर में मौजूद थे। हज़रत फ़ातिमा तश्रीफ़ लायीं। आक़ा ने आपसे पूछा कि कैसे आयीं? आपने अपने दुपट्टे का पल्लू खोला। उसके अंदर आधी रोटी थी। आपने वह रोटी नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पेश की और कहा, अब्बा जान! मैं आपके लिए अपनी तरफ़ से तोहफ़ा लायी हूँ। पूछा, फ़ातिमा! क्या बात बनी? अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी! हम कई दिनों से भूखे थे। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने कुछ काम किया और आटा लेकर आए। मैंने रोटियाँ पकायीं। एक हसन रज़ियल्लाहु अन्हु ने खाई, एक हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु ने खाई। एक अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने खा ली। एक रोटी सवाली को दे दी और एक रोटी मेरे लिए बची थी। अब्बा जान! जब मैं रोटी खा रही थी तो दिल में ख़्याल आया, फ़ातिमा! तुम बैठी रोटी खा रही हो। पता नहीं तुम्हारे अब्बा हुज़ूर को कुछ खाने को मिला या नहीं मिला। इसलिए मैंने बाक़ी आधी रोटी कपड़े में लपेटी और आपकी ख़िदमत में ले आई हूँ। अब्बा हुज़ूर! मैं आपको यह हदिया पेश कर रही हूँ। इसे क़ुबूल फ़रमा लीजिए। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, फ़ातिमा! मुझे क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है आज तीन दिन गुज़र गए तेरे बाप के पेट में खाने का कोई लुक़्मा नहीं गया।

बाप बेटी से सुलूक

हमारे एक प्रोफ़ेसर हमें इंजीनियरिंग का एक मज़मून पढ़ा रहे थे। कहने लगे कि मैंने जर्मनी से एक कोर्स किया। जिस आफ़िस में काम करता था उस आफ़िस में मेरे साथ वाले काउंटर पर एक लड़की बैठती थी। एक दिन वह देर से आफ़िस में पहुँची। मैंने देखा कि परेशान सी लग रही है। मैंने उससे पूछा, क्या कोई मुश्किल पेश आई है? वह कहने लगी कि मैं अपने वालिद के मकान में रहती थी। मेरे वालिद मुझसे बहुत ज़्यादा किराया वसूल करते हैं। कुछ दिनों से किसी आदमी ने उनको ज़्यादा किराए का आफ़र कर दिया था। वह मुझसे कह रहे थे कि या तो तुम किराया बढ़ाओ या फिर मैं दूसरे आदमी के साथ मामला तय कर लूंगा। मैंने कहा कि मेरी सालाना तरक़्क़ी आने वाली है। उसके बाद मैं ज़्यादा किराया देना शुरू कर दूंगी मगर वह दो रोज़ पहले आए और कहने लगे कि मैंने उस आदमी से बातचीत कर ली है इसलिए तुम अपने लिए जगह का बंदोबस्त कर लो। मुझे नए मकान का बंदोबस्त करके अपना सामान शिफ़्ट करना पड़ा जिसकी वजह से आज मैं थकी हुई और परेशान हालत में आफ़िस पहुँची हूँ। यह है उनका मन्फ़ी पहलू।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 5/96)

भूखों, बीमारों की ख़िदमत की अज़मत

हदीस पाक में आता है कि क़यामत के दिन एक आदमी को खड़ा किया जाएगा। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे ऐ मेरे बंदे! मैं भूखा था तूने मुझे खाना नहीं खिलाया। वह हैरान हो जाएगा कि या अल्लाह! तेरी शान बड़ी है। आप भूख प्यास से पाक हैं। अल्लाह तआला फ़रमाएगा, ऐ मेरे बंदे तूने मेरी बीमारपुर्सी नहीं की। वह बंदा

हैरान होकर रह जाएगा। हैरान होकर अर्ज़ करेगा या अल्लाह यह कैसी बात है कि आपक भूखे प्यासे थे मैंने खाना नहीं खिलाया, आप बीमार थे मैंने बीमार पुर्सी नहीं की। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे कि दुनिया में फ़लाँ मौक़े पर तेरा पड़ौसी भूखा था और प्यासा था तू उसे खाना खिलाता। यह ऐसा ही होता जैसे तूने मुझे खाना खिला दिया। अगर बीमार की अयादत करता तो ऐसा ही था जैसे तूने मेरी अयादत की। इंसान को उस वक़्त एहसास होगा। दूसरे इंसानों की ग़मगुसारी पर क्या सवाब होता है। आज अच्छा पड़ौसी बन जाना भी क़िस्मत वाले को नसीब होता है। आज तो लड़ाई ही पड़ौसियों से होती है हालाँकि पड़ौसी के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, जिब्रील अलैहिस्सलाम मेरे पास इतनी बार आए कि मुझे शक हुआ कि मरने के बाद पड़ौसी को वारिसों में शामिल कर लिया जाएगा। लेकिन हमारा झगड़ा चलता ही पड़ौसियों के साथ है। बच्चों की छोटी-छोटी बातों पर आपस में उलझ पड़ते हैं। थोड़ी देर में रिश्ते नाते ख़त्म करके रख देते हैं हालाँकि बात को अगर सुलझाना चाहें तो सुलझ जाती है। (वाक़िआत फ़क़ीर 1/224)

मक्खी पर शफ़क़त भी रहमत का ज़रिया

एक मुहद्दिस वफ़ात होने के बाद किसी को ख़्वाब में नज़र आए। उसने पूछा, हज़रत! आगे क्या बना? फ़रमाने लगे कि मैं एक अमल को छोटा समझता था मगर परवरदिगार के हाँ क़ुबूल हो गया और मेरी बख़्शिश हो गई। उसने पूछा, हज़रत! वह कौन सा अमल था? फ़रमाया कि एक बार मैं हदीसें लिख रहा था। मैंने अपना क़लम दवात में डुबोकर निकाला। उसके ऊपर स्याही लगी हुई थी। एक मक्खी आई और उस स्याही के ऊपर बैठ गई। मैंने सोचा कि यह प्यासी होगी, चलो मैं थोड़ी देर के लिए क़लम रोक लेता हूँ। मैंने एक

लम्हे के लिए क़लम वहीं रोक लिया कि मक्खी स्याही चूस ले। उसके बाद वह मक्खी उड़ गई और मैंने लिखना शुरू कर दिया। मैं तो इस अमल को भूल गया था मगर आमालनामे में मौजूद था। परवरदिगार ने फ़रमाया कि तुमने मक्खी की प्यास का ख़्याल रखा आज मैं तेरी प्यास का ख़्याल रखते हुए तुझे जहन्नम से बरी कर देता हूँ, सुब्हानअल्लाह। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़क़्क़ार 4/108)

सिद्क़ व अमानत से क्या शर्फ़ मिला

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पहली शादी हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के साथ हुई। यह वह औरत थीं जिनको अल्लाह तआला ने बड़ा शर्फ़ अता फ़रमाया था। जब निकाह होना था तो उन्होंने तिजारत के लिए नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भेजा। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तिजारत पर गए। उन्होंने अपने ग़ुलाम मैसरा को आपके साथ भेजा कि पता करो कि सफ़र के हालात कैसे हैं? अल्लाह तआला ने आपको दो गुना फ़ायदा अता फ़रमाया। मैसरा ने आकर बड़ी अच्छी अच्छी बातें सुनायीं। हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा का दिल बहुत ख़ुश हुआ कि जिस इंसान की अमानत और सदाक़त इतनी अच्छी है, वही ज़िंदगी का अच्छा साथी बन सकता है। लिहाज़ा आपने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बहुत से तोहफ़े वग़ैरह दिए और आख़िर आपके चचा की तरफ़ पैग़ाम भेजा कि अगर आप मेरे रिश्ते के लिए आना चाहते हैं तो मेरे भाई उमर से या मेरे वालिद से बात कीजिए। लिहाज़ा आपके चचा ने उनकी बात कही और आख़िर निकाह हुआ। निकाह में बीस ऊँट महर रखे गए और दो ऊँटों को ज़िब्ह किया गया था।

यह वह औरत थीं जिनको अल्लाह तआला ने बड़ा ऐजाज़ बख़्शा कि जब अल्लाह तआला का क़ुरआन नाज़िल हुआ, नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिब्राईल अलैहिस्सलाम से सुना तो उसके बाद आपने सब से पहले अपनी मोहतरम बीवी को यह बात सुनाई। इसलिए नबुव्वत की ज़बान से सबसे पहले क़ुरआन सुनने का शर्फ़ एक औरत को हासिल हुआ। इस उम्मत के मर्दों पर औरतों में से इस औरत को यह फ़ज़ीलत हासिल है जिसको अल्लाह के महबूब की मुबारक ज़बान से सबसे पहले क़ुरआन सुनने का शर्फ़ हासिल हुआ और इस उम्मत में से इस औरत को ऐज़ाज़ हासिल हुआ कि उसने अपनी आँखों से मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह को मुहम्मदुर्रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बनते सबसे पहले देखा।

जब आप किसी वजह से ग़मज़दा होते और फ़रमाते ﴿خشيت على نفسي﴾ कि जब वह फ़रिश्ता आता है तो मुझे अपनी जान का ख़ौफ़ होता है। आप फ़रमातीं थी ﴿كلا﴾ हर्गिज़ नहीं, अल्लाह तआला आप को ज़ाए नहीं फ़रमाएगा। अल्लाह तआला आपकी मदद करेगें। लिहाज़ा वह नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तसल्ली देती थीं। हिजरत से तीन साल पहले 65 साल की उम्र में आपकी वफ़ात हुई।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 5/179)

अख़्लाके नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उम्मेजमील को दामने इस्लाम में...

देखिए कि उम्मे जमील एक औरत नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ऊपर कूड़ा करकट डालती थी। वह बीमार हो गई। उसकी बेटी तीमारदारी करती थी। उनके घर में कोई मर्द नहीं था। उनका हाल पूछने वाला कोई नहीं था। वह माँ-बेटी ज़िंदगी का

तकलीफ़ वाला वक्त गुज़ार रही थीं। करीब के लोगों के पास फ़ुर्सत ही नहीं थी कि इन गरीबों के खाने या दवाई के बारे में पूछ लेते। इस परेशानी के आलम में कई दिन गुज़र गए।

एक बार बेटी अपनी माँ के पास बैठी कुछ बातें कर रही थी मगर माँ कमज़ोरी की वजह से जवाब भी नहीं दे पाती थी। इतने में दरवाज़े पर दस्तक हुई। माँ ने कहा, बेटी! जाओ देखो कौन है? बेटी दरवाज़े पर आई और दरवाज़ा खोलकर बाहर देखा। बाहर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, अबू बक्र और उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के साथ खड़े हैं। वह देखकर बड़ी हैरान हुई। वह भागकर माँ के पास गई और कहा जिन पर तू रोज़ाना कूड़ा करकट फेंकती थी आज वह बदला लेने के लिए अपने दोस्तों को लेकर आ गए हैं। हमारे पल्ले तो कुछ है नहीं, वे तो हमें गला घोंटकर जान से मार देंगे। इस बीमार बुढ़िया के दिल पर बहुत परेशानी गुज़री। कहने लगी अब हम क्या कर सकते हैं। पूछो वे हमें क्या कहते हैं। हम रहम की अपील कर लेंगे। बहरहाल उनको आने दो, हम माफ़ी मांग लेंगे।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अंदर तशरीफ़ लाए। आपने देखा कि उम्मे जमील परेशान हाल होकर बिस्तर पर बैठी हैं, निगाहें नीची हैं, पूछती हैं, ऐ मुहम्मद! आज आप यहाँ कैसे तशरीफ़ लाए हैं? आप फ़रमाते हैं कि कई दिनों से तूने मेरे ऊपर कूड़ा-करकट नहीं डाला था। मैंने लोगों से पूछा कि इसकी वजह क्या है? लोगों ने मुझे बताया कि जो औरत आप पर कूड़ा-करकट डालती थी वह अब बीमार हो चुकी है। लिहाज़ा मैं तेरी बीमार पुर्सी के लिए तेरे पास चलकर आया हूँ। अब बताइए कि इस औरत के दिल में क्या ही मुहब्बत पैदा हुई होगी। वह कूड़ा-करकट डालने वाली औरत ठीक उसी वक्त कलिमा पढ़कर मुसलमान हो गई।

तीन सौ आदमियों का क़ुबूले इस्लाम

हदीस पाक में आया है कि एक देहाती मस्जिदे नबवी में आकर बैठा। थोड़ी देर के बाद उसको हाजत से फ़ारिग़ होने की ज़रूरत महसूस हुई। उसने मस्जिद के सहन में एक तरफ़ जाकर पेशाब करना शुरू कर दिया। सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने देखा तो उन्होंने उसको मना किया कि तुम यह क्या कर रहे हो? नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने देखा तो सहाबा किराम से मना फ़रमाया कि जो यह कर रहा है उसे इस हाल में मत रोको। जब वह फ़ारिग़ होकर आपके पास आया तो आपने इर्शाद फ़रमाया कि यह मस्जिद अल्लाह का घर है। अल्लाह तआला अज़मतों वाले हैं और अज़मतों वाले अल्लाह पाक के घर को भी पाकीज़ा रखना चाहिए। आपने इतने प्यार से उसे समझाया कि वह बड़ा मुतास्सिर हुआ। थोड़ी देर के बाद वह कहने लगा कि मैं वापस जाना चाहता हूँ। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसको पहनने के लिए एक लिबास भी हदिये के तौर पर दिया और जब वह पैदल जाने लगा तो अल्लाह के महबूब ने अपनी सवारी भी उसको हदिए के तौर पर दे दी। उसने लिबास पहना और सवारी पर सवार होकर अपने घर की तरफ़ रवाना हो गया।

जब वह अपने क़बीले के लोगों में दाख़िल होने लगा तो आबादी के बाहर से ही पुकारने लगा, ओ मेरे भाई! ओ मेरे मामू! ओ मेरे चाचा! ज़रा मेरी बात सुनना। लोग भागकर इकट्ठे हो गए कि क्या बात है। पूछा कि तुम्हें क्या हो गया? कहने लगा, मैंने एक ऐसे सिखाने वाले को देखा जो यक़ीनन एक बड़ी शफ़ीक़ हस्ती और अख़्लाक़ वाली हस्ती है। मैंने इतना बड़ा जुर्म किया कि अल्लाह के घर में गंदगी फैला दी मगर उन्होंने मुझे डांटा नहीं, मारा नहीं, गाली

नहीं दी, उन्होंने मुझ से सख़्ती नहीं की बल्कि मुझे प्यार से समझा दिया और फिर मुझे आते हुए ये हदिए और तोहफ़े देकर भेजा। सब लोग कहने लगे कि अच्छा, हम भी जाकर उनको देखेंगे। लिहाज़ा उस क़बीले के तीन सौ आदमी उसके साथ आए और इस्लाम के दामन में दाख़िल हो गए, सुब्हानअल्लाह।

मुफ़्ती लुत्फ़ुल्लाह रह० के किरदार में तासीर

हज़रत मुफ़्ती लुत्फ़ुल्लाह सहारनपूरी रह० दारुलउलूम देवबंद के एक बड़े बुज़ुर्ग गुज़रे हैं। एक बार अपनी औरतों को लेकर किसी शादी में शामिल होने के लिए जाना था। एक सवारी बना ली जिस के ऊपर घर की सारी औरतें बैठ गयीं। बच्चे भी बैठ गए। मर्द सिर्फ़ आप ही साथ थे। आप उनको लेकर शादी में शरीक होने के लिए दूसरी जगह जा रहे थे। रास्ते में एक जगह वीराना आया। वहाँ कुछ डाकू छिपे हुए थे। उन्होंने देखा कि कोई सवारी आ रही है जिस पर बहुत सारी पर्दादार औरतें और सिर्फ़ एक मर्द है तो वे बाहर निकल आए। सवारी को घेर लिया। कहने लगे कि हम माल लूटेंगे और इज़्ज़तें भी ख़राब करेंगे। हज़रत रह० फ़रमाने लगे आप यह सारे का सारा माल ले जाएं मगर पर्दादार औरतों के सरों से चादरें न खींचिए। आपको उनके कानों से ज़ेवर खींचने की ज़रूरत नहीं। हम ख़ुद ही उतारकर सारे का सारा ज़ेवर आपको दे देते हैं। डाकू कहने लगे, बहुत अच्छा। आपने घर की औरतों से फ़रमाया कि सब ज़ेवर उतार कर दे दो। वे नेक औरतें थीं। उन्होंने सब चूड़ियाँ, सब अंगूठियाँ वग़ैरह उतारकर एक रूमाल में रख दीं। आपने उस गठरी में बांधा। डाकुओं के सरदार के हवाले कर दी और फ़रमाया कि हमारे पास जितना ज़ेवर था वह हम ने आपको दे दिया है। आप हमारी पर्दादार औरतों की इज़्ज़त का धब्बा न लगाएं और अब हमारी जान बख़्शी

कर दें। डाकुओं ने जब देखा कि माल की गठरी खुद इन्होंने अपने हाथों से बांधकर दे दी है तो कहने लगे बहुत अच्छा अब आप जाइए।

जब आप थोड़ा सा आगे बढ़े तो घर की औरतों में से एक ने कहा ओहो! मेरी एक उंगली में सोने का बना हुआ एक छोटा सा छल्ला रह गया है। मेरा ध्यान ही नहीं गया। मैंने तो वह दिया नहीं आपने सुना तो सवारी को रोक दिया और उसे कहा कि वह भी उतारकर दे दो क्योंकि मैंने कहा था कि हम तुम्हें सारे ज़ेवरात देंगे। अब यह मुनासिब नहीं कि हम यह छल्ला वापस ले जाएं। चुनाँचे आपने वह छल्ला लिया और डाकुओं के पीछे भागने लगे। जब डाकुओं ने देखा कि कोई पीछे भागता हुआ आ रहा है तो पहले तो वे घबराए फिर उन्होंने कहा कोई बात नहीं। यह तो अपने हाथ से पूरी गठरी बांधकर दे चुका है। अब यह हमारा क्या करेगा? लिहाज़ा वह खड़े हो गए। जब हज़रत रह० वहाँ पहुँचे तो आपकी आँखों में आँसू थे। आप उनकी मिन्नत करके फ़रमाने लगे कि मैंने तो आपसे वादा किया था कि हम अपने सब ज़ेवरात आपको दे देंगे मगर यह एक छोटा सा छल्ला हमारी एक बेटी ने पहना हुआ था उसकी तरफ़ ध्यान ही नहीं गया और यह हमारे साथ जा रहा था। मैं यह लेकर आया हूँ ताकि यह भी आप लोगों के हवाले कर दूं।

डाकुओं के सरदार ने जब यह सुना तो उसके जिस्म के अंदर एक ऐसी लहर दौड़ी कि उसे पसीना आ गया और कहने लगा, ओ हो, यह इतना नेक और दयानतदार बंदा है। यह तो इतनी छोटी सी बात का इतना लिहाज़ रखता है और मैंने भी अपने परवरदिगार का कलिमा पढ़ा है मगर मैं अपने परवरदिगार के कलिमे की लाज नहीं रखता। चुनाँचे उसी वक़्त कहने लगा, हज़रत मेरी ज़िंदगी बुराई करने और लोगों की इज़्ज़तें लूटने में गुज़र गई है और मैंने लोगों का माल छीना

है। मैं बहुत गुनाहगार हूँ, मुझे आप भी माफ़ कर दें और मुझे तौबा का तरीक़ा भी बता दें ताकि मेरा परवरदिगार भी मुझे माफ़ कर दे।

ईसार व हमदर्दी में जान की क़ुर्बानी

इस्लाम अपनी तारीख़ में ईसार व मुहब्बत के ऐसे-ऐसे वाक़िआत पेश कर सकता है कि जिनके बारे में आज की दुनिया तसव्वुर भी नहीं कर सकती। क्या जंगे यरमूक का वाक़िआ याद नहीं है कि एक साहब शहीद होने वाले हैं, तड़प रहे हैं ﴿العطش العطش﴾ प्यास! प्यास! पुकार रहे हैं। उनका चचाज़ाद भाई पानी लेकर जाता है। दूसरी तरफ़ से आवाज़ आती है तो वह अपने होंट को बंद कर लेता है और इशारा करता है कि मेरे बजाए मेरे भाई को पानी दिया जाए। उधर जाते हैं तो तीसरी तरफ़ से आवाज़ आती है तो वह भी होंट बंद कर लेते हैं और तीसरी तरफ़ भेज देते हैं। जब तीसरी जगह जाते हैं तो वह आदमी वफ़ात पा जाता है। फ़ौरन लौटकर दूसरे के पास आते हैं, वह भी वफ़ात पा चुके हैं। फिर लौटकर जब पहले के पास आते हैं तो देखा कि वह भी वफ़ात पा चुके हैं। यूँ अपनी ज़िंदगी के आख़िरी लम्हों में भी दूसरों को अपने से आगे करने की तालीमात इस्लाम ने दी हैं। पूरी दुनिया अपनी टैकनालॉजी के बावजूद ये मिसालें कभी भी पेश नहीं कर सकती। हमें चाहिए कि हम ज़िंदगी को इस्लाम की तालीमात के मुताबिक़ गुज़ारें ताकि कुफ़्र की दुनिया के सामने इस्लाम की हक़ीक़तें खुल सकें, इस्लाम की हक़्क़ानियत उनके सामने आ जाए और वह सारे के सारे इस्लाम के दामन में दाख़िल हो जाएं। आज मुसलमानों की बेअमली की वजह से कुफ़्फ़ार इस्लाम में दाख़िल होने से घबराते हैं। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 5/102)

सच बोलने का करिश्मा

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का वाक़िआ है कि ईरान का एक शहज़ादा जो मुसलमानों के साथ बहुत ज़्यादा जंग करता था और मुसलमानों को नुक़सान पहुँचाता था। वह एक बार गिरफ़्तार होकर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के सामने पेश किया गया। जब आपने जल्लाद को बुला लिया। उस वक़्त शहज़ादा भी सामने खड़ा था। आपने शहज़ादे से पूछा कि तुम्हारी कोई आख़िरी ख़्वाहिश है? क्योंकि आमतौर पर जिस पर हद जारी की जाती है। उससे पूछा जाता था। उसने कहा कि मुझे पानी पीने की तमन्ना हो रही है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि इसको पानी का प्याला दे दो। चुनाँचे पानी का प्याला जब उसे दिया गया तो वह शहज़ादा पी नहीं रहा था। उसके हाथ कांप रहे थे। आपने फ़रमाया कि तू पानी क्यों नहीं पीता। वह कहने लगा, मुझे इस जल्लाद की तलवार का ख़ौफ़ है, कहीं मैं पानी पीने लगूं और यह तलवार का वार करके मेरी गर्दन उड़ा दे। हज़रत ने फ़रमाया, तुम मुतमइन रहो कि जब तक तुम पानी नहीं पी लोगे तो तुम्हें क़त्ल नहीं किया जाएगा। उस शहज़ादे ने चालाकी यह की कि उसने पानी का प्याला ज़मीन पर गिरा दिया। पानी ज़मीन में जज़्ब हो गया। वह कहने लगा कि ऐ मुसलमानों के अमीरुल मुमिनीन! अपने वादे पर पक्के रहिए क्योंकि मैंने पानी नहीं पिया। अब आप मुझे क़त्ल नहीं कर सकते। अब हज़रत उमर के सामने यह ऐसा मौक़ा था कि एक तरफ़ इतना बड़ा दुश्मन इस्लाम खड़ा है और दूसरी तरफ़ ज़बान का क़ौल है। अक़्ल कहती है कि तुम इसकी बात को न सुनो और इसकी गर्दन मार दो क्योंकि यह इस्लाम को नुक़सान देने वाला बंदा है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की सच्ची ज़िंदगी थी। आपने फ़रमाया कि तुमने ठीक कहा कि मैंने

कौल दे दिया था लिहाज़ा क्योंकि वह पानी तुमने नहीं पिया हम तुम्हें क़त्ल नहीं कर सकते। इसलिए मैं तुम्हारे क़त्ल का हुक्म वापस लेता हूँ। जब आपने क़त्ल का हुक्म वापस ले लिया तो मुसलमान बड़े हैरान हुए कि यह शहज़ादा अपनी चालाकी की वजह से फिर बच निकला। लेकिन हैरानी इस बात पर हुई कि जब उसकी माफ़ी का हुक्मनामा सुनाया तो वह कहने लगा, अमीरुल मुमिनीन! मैंने यह हरकत इसलिए की थी कि अगर जल्लाद को देखकर कलिमा पढ़ लेता हूँ तो दुनिया कहती कि शहज़ादा था, मौत के डर की वजह से मुसलमान हो गया। मैंने एक हीला अपनाया जिससे कि अब मेरी जान बच गई। आप मुझे क़त्ल नहीं कर सकते। अब मैं आज़ाद हूँ। अपने दिल से कहता हूँ कि जिस दीन के अंदर सच का इतना एहतिराम है मैं भी उस दीन को क़ुबूल करता हूँ। चुनाँचे वह शहज़ादा कलिमा पढ़कर मुसलमान हो गया। किताबों में लिखा है कि हज़रत उमर कई मामलात में उससे मश्वरा करते थे। वह इस्लाम का दुश्मन फिर इस्लाम का बहुत बड़ा जर्नल बनकर ज़िंदगी गुज़ारने वाला बन गया। इस वाक़िए से हमें यह मालूम हुआ कि अक़्ल कहती है कि झूठ बोलना आसान रास्ता है। जान छूट जाएगी। हर्गिज़ नहीं। हम सच बोलेंगे। सच हमेशा आसान रास्ता होता है। सच के साथ अल्लाह तआला की मदद होती है।

मुसलमान हार गए, इस्लाम जीत गया

कांधला में एक बार एक ज़मीन का टुकड़ा था, उस पर झगड़ा चल रहा था। मुसलमान कहते थे कि हमारा है। हिन्दू कहते थे कि यह हमारा है। चुनाँचे मुक़दमा बन गया। अंग्रेज़ की अदालत में पहुँचा। जब मुक़दमा आगे बढ़ा तो मुसलमानों ने ऐलान कर दिया कि ज़मीन का टुकड़ा अगर मुझे मिला तो मैं मस्जिद बनाऊँगा। हिन्दुओं

ने जब यह सुना तो उन्होंने ज़िद में यह ऐलान कर दिया कि यह टुकड़ा अगर हमें मिला तो हम इस पर मन्दिर बनाएंगे। अब बात तो दो इंसानों की ज़ाती थी लेकिन इसमें रंग इज्तिमाई बन गया। यहाँ तक कि इधर मुसलमान जमा हो गए। उधर हिन्दू इकट्ठे हो गए और मुक़दमा एक ख़ास नौइय्यत का बन गया। सारे शहर में मार-काट हो सकती थी। ख़ून ख़राबा हो सकता था। लोग भी हैरान थे कि नतीजा क्या निकलेगा। अंग्रेज़ जज था वह भी परेशान था कि इस में कोई सुलह सफ़ाई का पहलू निकाले। ऐसा न हो कि यह आग अगर जल गई तो इसका बुझाना मुश्किल हो जाएगा। जज ने मुक़दमा सुनने के बजाए एक सुझाव पेश किया कि कोई ऐसी सूरत है कि आप लोग बातचीत के ज़रिए मसअले का हल निकालें। हिन्दुओं ने एक सुझाव पेश किया कि हम एक मुसलमान आलिम का नाम अकेले में बताएंगे। आप अगली पेशी पर उनको बुला लीजिए और उनसे पूछ लीजिएगा। अगर वह कहें कि यह मुसलमानों की ज़मीन है तो उनको दे दीजिए और अगर वह कहें कि यह मुसलमानों की ज़मीन नहीं है, हिन्दुओं की है तो हमें दे दीजिए। जब जज ने दोनों फ़रीक़ों से पूछा तो दोनों फ़रीक़ इस पर राज़ी हो गए। मुसलमानों के दिल में था कि मुसलमान होगा जो भी हुआ तो वह मस्जिद बनाने के लिये बात करेगा। चुनाँचे अंग्रेज़ ने फ़ैसला दे दिया और महीना या कुछ दिनों की तारीख़ दे दी कि भई। उस दिन आना और मैं उन बड़े मियाँ को भी बुलवा लूंगा। अब जब मुसलमान बाहर निकले तो बड़ी ख़ुशियाँ मना रहे थे, सब कूद रहे थे, नारे लगा रहे थे, हिन्दुओं ने पूछा अपने लोगों से कि तुमने क्या कहा? उन्होंने कहा कि हमने एक मुसलमान आलिम को हकम (फ़ैसल) बना लिया है। वह अगली पेशी में जो कहेगा उसी पर फ़ैसला होगा। अब हिन्दुओं के दिल मुर्झा गए और मुसलमान ख़ुशी से फूले नहीं समाते थे। लेकिन इंतिज़ार में थे अगली में क्या होता है। चुनाँचे हिन्दुओ ने

मुफ़्ती इलाही बख़्श रह० का नाम बताया जो कि शाह अब्दुल अज़ीज़ रह० के शागिर्दों में से थे। और अल्लाह तआला ने उनको सच्ची ज़िंदगी अता फ़रमाई थी। चुनाँचे जब हिन्दुओं ने उनका नाम लिया तो अंग्रेज़ ने अगली पेशी के मौक़े पर उनको बुलवा लिया। अंग्रेज़ ने पूछा कि बताइए मुफ़्ती साहब यह ज़मीन का टुकड़ा किसकी मिल्कियत है? उनको क्योंकि हक़ीक़त का पता था। उन्होंने जवाब दिया कि यह ज़मीन का टुकड़ा तो हिन्दुओं का है। अब जब उन्होंने यह कहा कि यह हिन्दू का है तो अंग्रेज़ ने अगली बात पूछी कि क्या अब हिन्दू इस पर मंदिर बना सकते हैं? मुफ़्ती साहब ने फ़रमाया, जब मिल्कियत उनकी है तो वे जो चाहें, घर बनाएं या मंदिर बनाएं, यह उनका अख़्तियार है। लिहाज़ा फ़ैसला दे दिया गया कि यह ज़मीन हिन्दुओं की है। मगर अंग्रेज़ ने फ़ैसले में एक अजीब बात लिखी। फ़ैसले करने के बाद लिखा :

"आज इस मुक़दमे में मुसलमान हार गए, मगर इस्लाम जीत गया।"

जब अंग्रेज़ ने यह बात कही तो उस वक़्त हिन्दुओं ने कहा आपने तो फ़ैसला दे दिया। हमारी भी बात सुन लीजिए। हम इसी वक़्त कलिमा पढ़कर मुसलमान होते हैं और आज यह ऐलान करते हैं कि अब हम अपने हाथों से यहाँ मस्जिद बनाएंगे। तो अक़्ल कह रही थी कि झूठ बोलो, मस्जिद बनेगी मगर मुफ़्ती साहब ने सच बोला और सच का बोलबाला हुआ।

मैं आप जैसा बनना चाहता हूं

एक बार यह आजिज़ किसी एयरपोर्ट पर फ़्लाइट के इंतिज़ार में बैठा था। एक नौजवान सामने से गुज़रा। वह शराब पी रहा था। एक बार तो वह सामने से गुज़र गया। थोड़ी सी दूर जाकर वह फिर लौटा

और आकर मुझे हैलो हाय करने के बाद कहने लगा,

मैं आप जैसा बनना चाहता हूं (I want to be like you.) जब मैंने उसे देखा कि उसके हाथ में शराब की बोतल थी तो मैं यह समझा कि इसको यह पगड़ी और लिबास अच्छा लगा होगा। हम से जब बाहर मुल्क में लोग पूछते हैं कि आपने यह लिबास क्यों पहना हुआ-है तो हम कहते हैं यह "क्यूट" लिबास है। उन काफ़िरों को हम यह नहीं कहते कि यह सुन्नत लिबास है क्योंकि क्या पता कि वह आगे क्या बकवास कर दें। और क्यूट ऐसा लफ़्ज़ है कि जब हम उनको जवाब में कहते हैं तो वे आगे बोल ही नहीं सकते। ख़ैर जब उसने कहा कि मैं आप जैसा बनना चाहता हूँ तो मैंने उससे कहा,

Do you like this turban and this white dress.

क्या आप यह पगड़ी और सफ़ेद लिबास पसन्द करते हैं? वह कहने लगा,

(No, I want to be like you because I am seeing some light on your face.)

नहीं, मैं आपकी तरह इसलिए बनना चाहता हूँ कि मुझे आपके चेहरे पर नूर नज़र आ रहा है।

जब उसने ये अल्फ़ाज़ कहे तो मुझे फ़ौरन एहसास हुआ कि क्या पता कि अल्लाह तआला ने इसे बदलने का फ़ैसला कर लिया हो। चुनाँचे मैंने उससे कहा,

O brother! then you can be better than me.

ऐ भाई! आप मुझ से भी बेहतरीन बन सकते हैं। वह कहने लगा, क्या सचमुच ऐसा ही है? वह कहने लगा,

Ok. I am just comming.

ठीक है मैं अभी आ रहा हूँ।

वह यह कहकर सामने वाशरूम में चला गया। उसने मेरे देखते हुए शराब की बोतल फेंकी और वाशबेसन पर कुल्ली करके चेहरा धोया। वह ताज़ा दम होकर दोबारा मेरे साथ वाली कुर्सी पर आकर बैठ गया। वह कहने लगा,

Let me to introduce myself.

क्या मैं आपको अपना तार्रुफ़ कराऊँ?

मैंने कहा, जी हाँ कराएं।

अब उसने आपना तार्रुफ़ कराया कि मेरा नाम यह है और मैं ने टोकियो (जापान) की युनिर्वसिटी से एमएससी कंप्युटर साइंस से किया हुआ है और मैं इस वक़्त फ़ुलाँ बड़ी कंपनी के अंदर मैनेजर हूँ। उसने फिर वही बात दोहराई कि मैं आप जैसा बनना चाहता हूँ।

(I want to be like you.)

मैं आप जैसा बनना चाहता हूँ।

मैंने कहा,

You can be better than me.

आप मुझ से भी बेहतरीन बन सकते हैं।

वह कहने लगा, यह कैसे मुमकिन है जबकि मैं नौजवान हूँ।

मैंने कहा तो क्या हुआ? नौजवान ही तो बन सकते हैं।

वह कहने लगा, नहीं, मैं आपको यह कहना चाहता हूँ कि आप मेरी शख़्सियत को देख रहे हैं कि मैं कितना ख़ूबसूरत हूँ। मेरा ओहदा और तंख़्वाह भी आपके सामने है। मुझे इस मुल्क में हर दिन कहीं न कहीं से गुनाह की दावत मिलती है और मैं उनका मेहमान होता हूँ। आज इधर अय्याशी कर रहा हूँ तो कल मेरे ग्राहक रोज़ नए होते हैं। जब मामला यहाँ तक पहुँच चुका है तो बताएं कि मैं गुनाह से कैसे

बच सकता हूँ? मैंने कहा, भई! अगर आपके लिए गुनाहों से बचना मुश्किल है तो अल्लाह तआला के लिए तो आपको गुनाहों से बचा देना आसान है।

वह कहने लगा, हाँ यह तो है। मैंने कहा, हमने गुनाहों से बचने के लिए बड़ों से एक नुस्ख़ा सीखा हुआ है। मैं आपको वह सिखा देता हूँ। फिर उसकी बरकत ख़ुद देखना।

वह कहने लगा, जी बताएं। मैंने उसी जगह पर बैठे हुए उस आदमी को बैअत के कलिमात पढ़ाए और उसको मुराक़बा करने का तरीक़ा बताया। उसने कहीं और जाना था और मैंने कहीं और अलबत्ता हमने एक दूसरे का पता ले लिया।

अल्लाह की शान तीन माह बाद उस नौजवान ने इंगलिश में ख़त लिखा। उस ख़त को मैंने महफ़ूज़ कर लिया। उसने उस ख़त में दो बातें लिखीं :

पहली बात यह लिखी कि "पाँच वक़्त की नमाज़ तो पढ़ता ही हूँ, कभी-कभी मुझे तहज्जुद की नमाज़ भी मिल जाती है।"

दूसरी बात यह लिखी कि "इस बात पर हैरान हूँ कि मैं गुनाहों के समुन्दर में रहते हुए भी गुनाहों से कैसे बचा हुआ हूँ।"

मैंने इसके जवाब में लिखा कि "हमारे बड़ों की दुआएं हमारे गिर्द पहरा दिया करती हैं। (ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 10/138-141)

दूर बैठा कोई तो दुआएं देता है
मैं डूबता हूँ समुन्दर उछाल देता है

بسم الله الرحمن الرحيم

اينما تكونوا يدرككم الموت

ولو كنتم فى بروج مشيده.

मौत व क़ब्र

और

मैदाने हश्र

मौत क़ब्र और मैदाने हश्र

महशर के हौलनाक मंज़र और औलादे

आदम की नफ़्सा-नफ़्सी

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि क़यामत के दिन सूरज दस गुना ज़्यादा तेज़ होगा और हर आदमी को यूँ महसूस होगा कि सूरज ज़मीन से कुछ गज़ के फ़ासले पर है। धूप की सख़्ती की वजह से लोग पसीने में डूबे हुए होंगे। सात क़िस्म के आदमियों को अर्श का साया नसीब होगा। नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया कि मख़्लूक़ धूप और प्यास की वजह से तड़प रही होगी। कोई हाल पूछने वाला न होगा। इस हालत में कई हज़ार साल गुज़र जाएंगे।

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में दरख़्वास्त

आख़िर लोग परेशान होकर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में पेश होंगे और कहेंगे, ﴿يا ابانا﴾ ऐ हमारे अब्बा जान आप हमारे साथ क़दम आगे बढ़ाइए और अल्लाह के हुज़ूर अर्ज़ कीजिए कि ऐ अल्लाह इस सख़्ती को बरदाश्त करना मुश्किल है। आप हमसे हिसाब ले लीजिए ताकि हमने जाना कहाँ है वहाँ जल्दी पहुँच जाएं। यह तंगी हमारी बरदाश्त से बाहर है। मगर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम उस वक़्त यह कहते हुए इंकार फ़रमा देंगे कि नहीं मैंने भूल की वजह से एक दाना खा लिया था और उस दाने की वजह से तीन सौ साल तक रो रो कर माफ़ी मांगता रहा। हदीस पाक में आया है कि पूरे इंसानों के जितने आँसू हैं वे सारे के सारे दसवां हिस्सा हैं

और नौ हिस्से आँसू हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के उन तीन सौ सालों में निकले। और उसके बाद अल्लाह तआला ने उनकी तौबा को क़ुबूल फ़रमा लिया। इतना रोए और माफ़ी मांगने के बाद और तौबा क़ुबूल हो जाने के बाद आख़िर उन्होंने बैतुल्लाह शरीफ़ बनाया और तीस हज पैदल चलकर किए। मगर क़यामत के दिन वह फिर भी फ़रमाएंगे नहीं, मुझे अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के सामने जाने में शर्मिन्दगी महसूस हो रही है। ग़ौर कीजिए कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तौबा की क़ुबूलियत का भी फ़ैसला आ चुका है लेकिन बंदा अपने किए पर पछताता है। जब क़यामत के दिन हमारे जद्दे अमजद का यह हाल होगा तो हम लोग जब अपने गुनाहों को लेकर जाएंगे और बग़ैर तौबा के मर जाएंगे तो हमारे लिए क़यामत के दिन अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के सामने खड़ा होना कितना मुश्किल होगा। इसीलिए क़ुरआन मजीद में आता है :

﴿ولو ترى اذ المجرمون ناكسوا رؤسهم عند ربهم﴾

कि अगर आप उस मंज़र को देखें जिस दिन मुजरिम अल्लाह के सामने खड़े होंगे तो शर्म की वजह से उनके सर झुके होंगे।

जब क़यामत के दिन शर्म महसूस होगी तो बेहतर है कि हम अपने गुनाहों से आज ही तौबा कर लें।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 6/88-90)

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में दरख़्वास्त

उसके बाद हज़रत आदम अलैहिस्सलाम तमाम इंसानों को कहेंगे कि आप लोग हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के पास चले जाएंगे। लिहाज़ा सारी मख़्लूक़ हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की तलाश में लग जाएगी। जब नूह अलैहिस्सलाम मिलेंगे तो मख़्लूक़ अर्ज़ करेगी, ऐ आदम

सानी! आप हमारे लिए अल्लाह की हुज़ूर में सिफ़ारिश कर दीजिए और हमें अल्लाह के सामने पेश कर दीजिए। हज़रत नूह अलैहिस्सलाम उनको फ़रमाएंगे कि नहीं, मैंने अपने बेटे के लिए दुआ कर दी थी और अल्लाह तआला ने फ़रमाया था, ﴿انى اعظك ان تكون من الجهلين﴾ ऐ नूह! ऐसी दुआ न कीजिए कि कहीं आपको नबुव्वत के मर्तबे से उतार न दिया जाए। इसलिए मुझे तो उस फ़रमान से डर लगता है कि मैं वह दुआ ही क्यों कर बैठा था! मैंने अल्लाह तआला के हुज़ूर फ़ौरन माफ़ी मांगी थी। लिहाज़ा मैं अल्लाह तआला के हुज़ूर पेश नहीं हो सकता। हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का असल नाम अब्दुल ग़फ़्फ़ार था मगर वह इस के मांगने के बाद इतना रोए कि उनका नाम नूह पड़ गया। नूह का मतलब है नूहा करने वाला यानी रोने वाला। इतना रोने के बावजूद क़यामत के दिन अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के सामने जाने से जब उनको इतना डर लगेगा तो सोचना चाहिए कि हम तो अपने गुनाहों पर रोते भी नहीं बल्कि जब गुनाह करते हैं तो खुशी-खुशी दूसरों को बताते हैं कि मैंने फ़लाँ गुनाह किया है। सोचें तो सही कि क़यामत के दिन हम अल्लाह के हुज़ूर कैसे पेश होंगे?

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में दरख़्वास्त

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम सब इंसानों को फ़रमाएंगे कि आप हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पास चले जाएं। सारी इंसानियत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को ढूंढकर उनसे अर्ज़ करेगी कि ऐ अल्लाह के ख़लील! आप हमें अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुज़ूर पेश कर दीजिए। लेकिन वह फ़रमाएंगे कि नहीं आज मुझे अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के पास जाते हुए घबराहट हो रही है क्योंकि मेरी ज़िंदगी में तीन बातें ऐसी थीं जो मसलेहत की बिना पर तो हुईं लेकिन ख़िलाफ़े वाक़िआ थीं।

आज मुझे उन तीनों बातों पर शर्मिन्दगी है। उनमें से पहली बात तो यह थी कि एक बार इनको इनकी कौम कहीं ले जाना चाहती थी मगर इन्होंने कह दिया था कि मैं बीमार हूँ। वाकई उन मुश्रिकों के साथ जाने में तो रूहानी बीमारी ही थी। इसलिए उन्होंने उनको उज़्र पेश कर दिया था। अल्लाह तआला ने कुरआन पाक में फ़रमाया था कि उन्होंने फ़रमाया, ﴿فقال إني سقيم﴾ कि मैं बीमार हूँ। उन्होंने यहाँ बीमारी का उज़्र तो किया लेकिन हकीकत के ख़िलाफ़ था, इसलिए फ़रमाएंगे कि मुझे अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के सामने हाज़िर होने से शर्म महसूस हो रही है। दूसरी बात यह कि एक बार वह अपनी बीवी हज़रत सारा रज़ियल्लाहु अन्हा को लेकर मिस्र के करीब से गुज़रे। वक़्त का बादशाह एक ज़ालिम इंसान था। उसने पुलिस वालों को कहा हुआ था कि तुम जहाँ कहीं भी किसी ख़ूबसूरत औरत को देखो तो उसे पकड़कर मेरे पास ले आओ। इस तरह वह उसकी बेइज़्ज़ती करता। अल्लाह तआला ने बीबी सारा रज़ियल्लाहु अन्हा को हुस्न व जमाल का सांचा बनाया था। लिहाज़ा पुलिस वालों ने जब उनको देखा तो उन्हें भी पकड़कर ले गए। उसका दस्तूर यह था कि अगर उस औरत के साथ उसका शौहर होता तो वह उसे क़त्ल करवा देता और अगर भाई या बाप होता तो फिर वह उनको क़त्ल नहीं करवाता था। अलबत्ता बुराई का काम करता था। जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पहुँचे तो उनसे भी उसने पूछा कि तुम कौन हो और इस औरत के क्या लगते हो? आपने अपनी जान की हिफ़ाज़त को निगाह में रखते हुए कह दिया यह मेरी बहन है। अल्लाह तआला ने भी फ़रमाते हैं ﴿إنما المؤمنون إخوة﴾ कि बेशक ईमान वाले भाई-भाई हैं। इसलिए ईमान की निस्बत से मोमिन मर्द और मोमिन को दीनी भाई और बहन कह दिया जाता है। आपने भी इसी निस्बत से हज़रत सारा रज़ियल्लाहु अन्हा को बहन कह दिया क्योंकि वह उसी दीन पर थीं

जिस पर आप थे। वह बात सौ फ़ीसद शरिअत के मुताबिक़ जाएज़ थी। जान बचाने के लिए तो हराम चीज़ भी हलाल हो जाती है। मगर उसके बावजूद हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को झिझक महसूस हो गई।

तीसरी बात यह है कि एक बार हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने बुतों को तोड़ा था। जब काफ़िरों ने आकर उनसे पूछा कि हमारे माबूदों को किसने तोड़ा तो उन्होंने फ़रमाया था कि तुम उससे पूछो जो तुम्हें इन बुतों से बड़ा नज़र आता है। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने बुतों को तोड़कर कुल्हाड़ा सबसे बड़े बुत के कंधे पर रख दिया था। इसलिए बड़े बुत से पूछने को फ़रमाया। अब ज़ाहिर में यह कोई इतनी बड़ी बात तो नहीं थी। काफ़िरों को समझाने के लिए ऐसा किया था कि वे पूछेंगे तो बुत उन्हें जवाब नहीं देंगे लेकिन बात तो हक़ीक़त के ख़िलाफ़ थी। लिहाज़ा इस बात पर भी इतना अफ़सोस होगा कि अल्लाह का ख़लील होने के बावजूद उन्हें अल्लाह के सामने जाते हुए शर्मिन्दगी महसूस हो रही होगी।

इस पर हम लोग सोचें जो दिन रात झूठी क़समें खाते हैं। झूठी गवाहियाँ देते हैं। लोगों के सामने ग़ल्तियों पर पर्दे डालने के लिए और अपने आपको दुनिया की शर्मिन्दगी से बचाने के लिए झूठी बातें करते फिर रहे हैं। क़यामत के दिन हमें अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुज़ूर जाते हुए कितनी शर्मिन्दगी होगी।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में दरख़्वास्त

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम फ़रमाएंगे कि आप सब लोग मूसा कलिमुल्लाह के पास चले जाएंगे। वह आपकी शफ़ाअत करेंगे। चुनाँचे सारी इंसानियत हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के पास आएगी और कहेगी, ऐ कलीमुल्लाह! आप हमारी शफ़अत फ़रमा दीजिए। मगर

हज़रत मूसा कलीमुल्लाह फ़रमाएंगे कि नहीं। मैं आपकी शफ़ाअत नहीं कर सकता क्योंकि एक बार ऐसा हुआ था कि मेरे मुख़ालिफ़ों ने एक आदमी मेरी इत्तिबा करने वालों से झगड़ रहा था और मैंने नसीहत की ख़ातिर उसको एक मुक्का मारा था ताकि उसे समझ आ जाए लेकिन उसको वह मुक्का उसको ऐसा लगा कि वह मर गया और मैंने अल्लाह तआला से माफ़ी का ऐलान भी फ़रमा दिया मगर फिर भी वह मेरा मुक्का लगने की वजह से मरा तो था। इसलिए मुझे इस बात की वजह से अल्लाह तआला के सामने जाते हुए शर्म महसूस हो रही है।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में दरख़्वास्त

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम सारी इंसानियत को फ़रमाएंगे कि आप ईसा अलैहिस्सलाम के पास चले जाएं। सारी इंसानियत हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के पास आएगी मगर वह भी कहेंगे कि नहीं मुझे अल्लाह रब्बुइलज़्ज़त के सामने जाते हुए इसलिए डर लग रहा है कि मेरी उम्मत ने मुझे और मेरी माँ को अल्लाह तआला के साथ शरीक बना दिया था। आज अल्लाह तआला मुझसे कहीं यह न पूछ लें कि क्या आपने तो नहीं कहा था कि मुझे और माँ को अल्लाह के साथ शरीक बना लो। इसलिए आज मुझे अल्लाह तआला के सामने जाते हुए डर लग रहा है।

शाफ़ेअ महशर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में दरख़्वास्त

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम फ़रमाएंगे कि आप अल्लाह तआला के महबूब नबी अलैहिस्सलाम के पास जाएं, चुनाँचे सब लोग नबी

अलैहिस्सलाम के पाए आएंगे। "तर्ग़ीबवत्तरहीब" में हाफ़िज़ मुन्ज़री रह० ने यह बात लिखी है कि इस वक़्त अल्लाह तआला अंबिया किराम के लिए मिम्बर लगवाएंगे और तमाम अंबिया किराम अपने-अपने मिम्बरों पर जलवा अफ़रोज़ होंगे। नबी अलैहिस्सलाम के लिए भी मिम्बर पेश किया जाएगा मगर अल्लाह तआला के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मिम्बर पर नहीं बैठेंगे क्योंकि उस वक़्त आपके दिल में यह ख़्याल होगा कि कहीं ऐसा न हो कि मैं इस मिम्बर पर बैठ जाऊँ और यह उड़कर जन्नत में चला जाए और मेरी गुनाहगार उम्मत पीछे रह जाए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा जाएगा ऐ मेरे महबूब! आप मिम्बर पर क्यों नहीं बैठे? आप अर्ज़ करेंगे, ऐ अल्लाह! मेरी उम्मत के गुनाहगारों का तो अभी फ़ैसला नहीं हुआ। मैं इस मिम्बर पर कैसे बैठूं। फिर अल्लाह तआला आप पर एक ख़ास तजल्ली फ़रमाएंगे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि उस तजल्ली फ़रमाने पर अल्लाह तआला मुझे "मक़ामे महमूद" अता फ़रमा देंगे। मैं वहाँ जाकर एक सज्दा करूंगा और सज्दे में अल्लाह तआला की तारीफ़ें करूंगा जो न पहले किसी ने की और न बाद में कोई करेगा, रोने की हालत में सज्दा करूंगा। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त मेरे सज्दे को क़ुबूल फ़रमाएंगे और मुझसे पूछेंगे, ऐ मेरे प्यारे महबूब! आप क्या चाहते हैं? मैं अर्ज़ करूंगा। ऐ अल्लाह! आप अपने बंदों का हिसाब ले लीजिए। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे, अच्छा तुम लोगों को हिसाब के लिए पेश करो।

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का हिसाब व किताब

रिवायत में आया है कि जब इजाज़त मिल जाएगी तो इस वक़्त

नबी अलैहिस्सलाम अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को हाथ से पकड़कर अल्लाह तआला के हुज़ूर में पेश करना चाहेंगे कि आप जाइए ताकि हिसाब किताब शुरू हो जाए। यह सुनकर हज़रत अबूबक्र की आँखों में आँसू आ जाएंगे और वह कहेंगे कि ऐ अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मैं अपनी उम्र के आख़िरी हिस्से में मुसलमान हुआ था। मेरी उम्र का ज़्यादा हिस्सा इस्लाम से पहले का है। इसलिए मैं चाहता हूँ कि मैं आगे पेश न किया जाऊँ। मगर अल्लाह के महबूब फ़रमाएंगे, अबूबक्र! तुझे आगे जाना होगा। चुनाँचे जब हज़रत अबूबक्र आगे बढ़ेंगे तो वह वही काम करेंगे जो नबी अलैहिस्सलाम ने किया। वह भी क़दम आगे बढ़ाकर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुज़ूर सज्दे में गिर जाएंगे और रोने लग जाएंगे। किताबों में लिखा है कि सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु इतना रोएंगे कि अल्लाह तआला फ़रमाएंगे कि ऐ मेरे महबूब के प्यारे यार! क्यों रोते हो? सज्दे से सर उठाओ क्या चाहते हो? चुनाँचे अल्लाह तआला उनके सज्दे को क़ुबूल फ़रमाएंगे। और उन पर एक ख़ास तजल्ली फ़रमाएंगे। हदीस पाक में आया है :

﴿ان الله يتجلى للخلق عامة ولكن لابي بكر خاصة﴾

क़यामत के दिन अल्लाह तआला अपने बंदों पर आम तजल्ली फ़रमाएगा लेकिन अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के ऊपर ख़ास तजल्ली फ़रमाएंगे।

lfffl

अल्लाह तआला अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस यार से इतने ख़ुश हो जाएंगे कि ख़ास तजल्ली फ़रमाएंगे।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की पेशी

उनके बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को पेश किया जाएगा। हदीस पाक में आया है कि जब हज़रत उमर आगे बढ़ेंगे तो अल्लाह

तआला फ़रमाएंगे ﴿السلام عليك يا عمر﴾ ऐ उमर! तुझ पर सलामती हो। एक और हदीस मुबारक में है कि ﴿اول من يسلم عليه رب عمر﴾ क़यामत के दिन जिसे सबसे पहले अल्लाह तआला सलाम फ़रमाएंगे वह उमर रज़ियल्लाहु अन्हु होंगे। उन्होंने ऐसी साफ़ सुथरी ज़िंदगी गुज़ारी होगी कि उनके आमाल को देखकर अल्लाह तआला ख़ुश हो जाएंगे।

हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु की पेशी

फिर उनके बाद अल्लाह तआला के महबूब हज़रत उस्मान को पेश करेंगे। किताबों में लिखा है कि जब हज़रत उस्मान अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुज़ूर पेश होंगे तो अल्लाह तआला उनका हिसाब बहुत ही जल्दी ले लेंगे। वह इसलिए कि एक बार ईद का दिन था। नबी अलैहिस्सलाम ईद की नमाज़ के लिए तशरीफ़ ले जाने लगे तो हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के महबूब! कुछ दे दीजिए ताकि हम कुछ पका लें। मदीने की बेवाएं और यतीम बच्चे उम्मीद लेकर आएंगे। मैं उनको कुछ दे सकूं। अल्लाह के महबूब ने फ़रमाया कि मेरे पास तो इस वक़्त कुछ नहीं है। चुनाँचे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़ पढ़ने के लिए तशरीफ़ ले गए।

जब वापस आए तो देखा कि घर में सब कुछ पका हुआ है और मदीने की बेवाएं और यतीम ले ले कर जा रहे हैं। महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा यह कहाँ से आया? हज़रत आएशा ने अर्ज़ किया जब आप नमाज़ के लिए तशरीफ़ ले गए तो हज़रत उस्मान ने सामान से लदा हुआ एक-एक ऊँट आपकी सब बीवियों को हदिये के तौर पर भेजा है। यह सुनकर नबी अलैहिस्सलाम का दिल इतना ख़ुश हुआ कि कि आप ने दुआ मांगी

﴿يا رحمن سهل الحساب على عثمان رضي الله عنه﴾

ऐ रहमान! तू उस्मान का हिसाब आसान फ़रमा देना।

नबी अलैहिस्सलाम की यह दुआ क़ुबूल होगी। और हज़रत उस्मान का हिसाब किताब बहुत जल्दी ले लिया जाएगा।

हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु का हिसाब व किताब

उनके बाद हज़रत अली को अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुज़ूर पेश किया जाएगा। हदीस पाक में आया है :

﴿اسرع المحاسبة يوم القيامة حساب علي﴾

क़यामत के दिन सबसे आसान और जल्दी हिसाब अली रज़ियल्लाहु अन्हु का होगा।

पुलसिरात का सफ़र

जब नबी अलैहिस्सलाम के चारों यार पेश हो जाएंगे तो अल्लाह तआला जलाल जमाल में तब्दील हो जाएगा। चुनाँचे अल्लाह तआला फ़रमाएंगे ﴿وامتازوا اليوم ايها المجرمون﴾ ऐ मुजरिमो! मेरे नेक बंदों से आज जुदा हो जाओ। लिहाज़ा काफ़िरों और मुश्रिकों को एक तरफ़ कर दिया जाएगा और दूसरी तरफ़ नेक बंदों को कर दिया जाएगा। उसके बाद अल्लाह तआला फ़रमाएंगे कि जहन्नम के ऊपर बनी हुई पुलसिरात से गुज़कर यह नेक लोग जन्नत में चले जाएं। चुनाँचे जब मोमिन बंदे पुलसिरात के ऊपर गुज़रने लगेंगे तो कुछ ईमान वाले ऐसे बंदे होंगे जो बिजली की तेज़ी से गुज़र जाएंगे। कुछ हवा की तेज़ी से, कुछ घोड़े की तेज़ रफ़्तारी के साथ, कुछ भागते हुए आदमी की रफ़्तार के साथ, कुछ चलते हुए आदमी की रफ़्तार के साथ और कुछ रेंगते हुए आदमी की रफ़्तार के साथ गुज़र जाएंगे। जो लोग भी पुलसिरात से आगे गुज़र जाएंगे अल्लाह तआला उनको जन्नत अता

फ़रमा देंगे। पुलसिरात के ऊपर से हर एक को गुज़रना पड़ेगा। इर्शाद बारी तआला है :

وان منكم الا واردها كان على ربك حتما مقضيا ثم ننجي

الذين اتقوا ونذر الظلمين فيها جثيا.

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जन्नत में दाख़िला

जब पुलसिरात से आगे चले जाएंगे तो अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह समझेंगे कि मेरी उम्मत के सारे लोग मेरे साथ आ गए हैं और जहन्नम से पार हो चुके हैं। लिहाज़ा आप उन सब लोगों को लेकर जन्नत में तशरीफ़ ले जाएंगे यहाँ तक कि जन्नत में रहते हुए बहुत अरसा गुज़र जाएगा।

मुसलमानों को जहन्नम में काफ़िरों का ताना

रिवायत में आया है कि जो लोग पुलसिरात से गुज़रते हुए जहन्नम में गिरेंगे उन्हें अज़ाब होगा। जहन्नम के सबसे ऊपर के दर्जे में ईमान वाले गुनाहगार होंगे। जब बहुत अरसा गुज़र जाएगा तो अल्लाह तआला अपनी हिकमत से उनके और काफ़िरों व मुश्रिकों के बीच आग को शीशे की तरह बना देंगे। काफ़िर और मुश्रिक जब मुसलमान गुनाहगारों को देखेंगे कि वह भी जहन्नम की आग में जल रहे हैं तो वे मुसलमानों को ताना देंगे कि हम तो अल्लाह का इंकार किया करते थे, जिसकी वजह से हम जल रहे हैं लेकिन आप तो ख़ुदा को मानते थे रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मानते थे और इसके बावजूद आप भी हमारी तरह जल रहे हो। आपका ख़ुदा आपके किस काम आया?

जहन्नमी मुसलमानों से जिब्रील अमीन की मुलाक़ात

हदीस पाक में आया है कि जब जहन्नमी काफ़िर मुसलमान गुनाहगारों को ताना देंगे तो अल्लाह तआला जिब्रील अलैहिस्सलाम को बुलाएंगे और फ़रमाएंगे कि ऐ जिब्रील! आज हमारे मानने वालों को ताना दिया जा रहा है कि उनके साथ भी वही सुलूक हो रहा है जो न मानने वालों के साथ हो रहा है। जाओ ज़रा जहन्नम के हालात मालूम करके आओ। चुनाँचे जिब्रील अलैहिस्सलाम जहन्नम में जाएंगे। जहन्नम के दरवाज़े पर उसके दारोग़ा मालिक खड़े होंगे। वह दरवाज़ा खोलकर हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम को अंदर दाख़िल करेंगे। जब गुनाहगार मुसलमान उनको देखेंगे तो वह फ़रिश्तों से पूछेंगे कि ये कौन हैं? उस वक़्त उनको बताया जाएगा कि यह वह फ़रिश्ता है जो तुम्हारे नबी अलैहिस्सलाम के पास "वही" लेकर जाते थे।

शफ़ी-ए-आज़म सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नाम गुनाहगारों का पैग़ाम

जब उनके पास नबी रहमत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तज़्किरा किया जाएगा तो उस वक़्त गुनाहगार लोगों को नबी अलैहिस्सलाम की याद आएगी और वे कहेंगे या मुहम्मदा! या मुहम्मदा! जहन्नमी लोग इन अलफ़ाज़ में जिब्रील अलैहिस्सलाम को रोकर कहेंगे कि ऐ जिब्रील! नबी अलैहिस्सलाम के पास अल्लाह का पैग़ाम लेकर जाते थे, आज हम गुनाहगारों का पैग़ाम भी हमारे सरदार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पहुँचा देना कि आक़ा आप तो हमें भूल ही गए हैं। हम जहन्नम की आग में जल रहे हैं और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जन्नत के अंदर हैं। जिब्रील अलैहिस्सलाम

उनके साथ वादा करेंगे कि मैं आपका पैग़ाम अल्लाह तआला के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ज़रूर पहुँचाउंगा।

शफ़ाअते कुबरा

चुनाँचे जब जिब्रील अलैहिस्सलाम जहन्नम से बाहर आएंगे तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त फ़रमाएंगे, जिब्रील! आपने मेरे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के गुनाहगार उम्मतियों से जो वादा किया है उस वादे को निभाना ज़रूरी है। लिहाज़ा जिब्रील अलैहिस्सलाम जन्नत में जाएंगे। उस वक़्त नबी अलैहिस्सलाम जन्नतुलफ़िरदौस में अंबिया किराम की मज्लिस में मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा होंगे। जिब्रील अलैहिस्सलाम को जब आप देखेंगे तो फ़रमाएंगे, जिब्रील! आज कैसे आना हुआ। जिब्रील अलैहिस्सलाम अर्ज़ करेंगे कि मैं आज आपकी उम्मत के गुनाहगारों का पैग़ाम आपके पास लाया हूं। जब नबी अलैहिस्सलाम यह सुनेंगे कि मेरी उम्मत के कुछ गुनाहगार अभी भी जहन्नम में हैं तो आप हैरान होंगे कि अच्छा! मुझे तो ख़्याल ही नहीं था। चुनाँचे नबी अलैहिस्सलाम उस वक़्त अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुज़ूर सज्दा फ़रमाएंगे और अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के सामने कहेंगे, ऐ परवरदिगार मेरी उम्मत के गुनाहगारों को माफ़ फ़रमा दीजिए। अल्लाह तआला उनको "शफ़ाअते कुबरा" की इजाज़त फ़रमाएंगे कि ऐ मेरे महबूब! आप जिसके बारे में चाहें शफ़ाअत फ़रमाइए, हम उसको जहन्नम से निकाल देंगे।

शफ़ाअते कुबरा की यह ख़ुशख़बरी सुनकर नबी अलैहिस्सलाम जहन्नम की तरफ़ चलेंगे। उस वक़्त जिब्रील अलैहिस्सलाम एक ऐलान कर देंगे कि ऐ जन्नतियों! नबी अलैहिस्सलाम जहन्नमियों की शफ़ाअत के लिए जा रहे हैं। तुम भी साथ चलो। चुनाँचे उस दुल्हे के साथ शफ़ाअत करने के लिए एक बारात चलेगी। नबी अलैहिस्सलाम

शफ़ाअत फ़रमाएंगे। दूसरे अंबिया किराम भी शफ़ाअत फ़रमाएंगे। सारे जन्नती शफ़ाअत फ़रमाएंगे। जिसका जो भी वाक़िफ़ होगा वह उस बंदे को जहन्नम से निकाल लिया जाएगा। यहाँ तक कि अगर दुनिया में किसी मोमिन को एक प्याला पानी पिलाया होगा तो अल्लाह तआला उसके अमल की बरकत से उसको भी जहन्नम से निकाल लेंगे।

उतक़ाउर्रहमान कौन?

जब सब लोग शफ़ाअत कर चुकेंगे तो अल्लाह तआला फ़रमाएंगे, ऐ मेरे प्यारे महबूब! मैंने आपसे वादा किया था कि मैं आपकी उम्मत के तीन लप भरकर जहन्नम से निकालूंगा। लिहाज़ा अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त अपनी क़ुदरत के दोनों हाथों से जहन्नम से तीन लपभर कर निकालेंगे यानी जैसे आदमी दोनों हाथों से आटा निकाल लेता है। उस लप में इस उम्मत के खरबों लोगे होंगे जिनको अल्लाह तआला अपनी रहमत से जहन्नम से निकाल देंगे।

उनके जिस्म जल-जल कर कोयला हो चुके होंगे। अल्लाह तआला की तरफ़ से हुक्म होगा कि इनको नहरे हयात से ग़ुस्ल दिया जाए। चुनाँचे जब उनको ग़ुस्ल दिया जाएगा तो उनके जिस्म ठीक हो जाएंगे। लेकिन उनके माथे पर उतक़ाउर्रहमान का नाम लिख दिया जाएगा, जिसका मतलब यह होगा कि रहमान ने अपनी रहमत से उनकी बख़्शिश कर दी है। उसके बाद उनको जन्नत में भेज दिया जाएगा। अब नबी अलैहिस्सलाम की उम्मत का कोई गुनाहगार भी पीछे नहीं रहेगा। सबको बख़्श दिया जाएगा।

रहमान की तरफ़ से रिहाई पाने वालों की फ़रियाद

हदीस पाक का मफ़हूम है कि जब ये लोग जन्नत में ज़िंदगी

गुज़ारने लगेंगे तो वह जन्नती जो पहले से जन्नत में होंगे जब उनको देखेंगे तो मज़ाक किया करेंगे और कहेंगे कि देखो हम पर तो अल्लाह तआ़ला की रहमत हो गई और उसने हमारे अमलों को क़ुबूल फ़रमा लिया लेकिन आप लोग तो रिआयती पास हैं। आपके माथे पर उतक़ाउर्रहमान का नाम लिखा हुआ है। उन जन्नतियों के साथ पहले वाले जन्नती इस तरह मज़ाक करेंगे जिन जन्नतियों के माथों पर उतक़ाउर्रहमान लिखा होगा। उनको यह बात महसूस होगी। लिहाज़ा एक बार वे सब जन्नती अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुज़ूर दुआ करेंगे, ऐ अल्लाह! आपने हमें जहन्नम से निजात तो दे दी लेकिन माथे पर एक मुहर भी लगा दी। जिसकी वजह से सब पहचान रहे हैं कि हम खुद इस क़ाबिल नहीं थे बल्कि रिआयती पास होकर आ गए हैं। ऐ अल्लाह! हमें इससे बचा लीजिए। अल्लाह तआ़ला उनकी इस फ़रियाद को क़ुबूल करेंगे और फ़रमाएंगे कि हमने खुद यह मुहर लगाई थी ताकि तुम्हारे अपने दिल में यह कैफ़ियत पैदा हो और तुम हम से मांगो और हम तुम्हें अता कर दें। चुनाँचे उनकी फ़रियाद पर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उनके माथों पर से उतक़ाउर्रहमान की इस मुहर को भी हटा देंगे।

शफ़ाअत की दुआ

मोहतरम जमाअत! काश कि हम भी इन रिआयती पास लोगों में क़यामत के दिन शुमार हो जाएं। अपने अमल तो इस क़ाबिल नहीं हैं मगर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शफ़ाअत नसीब हो जाए। दूसरे अंबिया किराम शफ़ाअत, अल्लाह के नेक बंदों की शफ़ाअत नसीब हो जाए। काश! अल्लाह का कोई ऐसा बंदा हो दुनिया में हमें भी पहचानने वाला हो। हम भी किसी की पहचान में आने वाले बन जाएं जो क़यामत के दिन हमें जहन्नम में

जलता देखे तो इतना कह दे कि एक अल्लाह यह मुझसे ताल्लुक़ रखने वाला था। यह मेरी इज़्ज़त करता था और मेरे साथ राब्ता रखने वाला था। काश कि कोई ऐसा कहकर हमें भी जहन्नम से निकालने वाला बन जाए।

रब्बे करीम! से दुआ है कि परवरदिगार आलम हमें अपनी रहमत से क़यामत के दिन इन रिआयती पास लोगों में शामिल कर फ़रमा ले। हमारे आमाल तो इस क़ाबिल नहीं। अलबत्ता अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की रहमत ही का सहारा है और महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिनको अल्लाह तआला रहमतुल्लिल-आलमीन बना दिया दिल में तमन्ना है कि अल्लाह उसी नबीए रहमत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सदक़े हमें शर्मिन्दा होने वालों में शामिल न फ़रमाए बल्कि हमें अपनी रहमत में से हिस्सा पाने वालों में शामिल फ़रमा दे, आमीन सुम्मा आमीन। (खुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 7/88-104)

मुहलते ज़िंदगी का अजीब वाक़िआ

मुहलते ज़िंदगी को समझने के लिए वाक़िआ किताबों में लिखा है कि एक बादशाह का बाग़ था और उस बाग़ के कई हिस्से थे। और हर-हर हिस्से में फल लगे हुए थे। चुनाँचे बादशाह ने एक आदमी को भेजा कि उस बाग़ से फल तोड़कर लाओ। कोशिश करना कि तुम अच्छे फल तोड़कर लाना। मैं तुम से खुश हूंगा और तुम्हें ईनाम दूंगा। लेकिन मेरी एक शर्त है कि जिस हिस्से से एक दफ़ा गुज़र जाओगे उसमें तुम्हें दोबारा वापस आने की इजाज़त नहीं होगी। चुनाँचे उस आदमी ने टोकरी हाथ में ली और बाग़ में दाख़िल हुआ। उसने देखा कि पहले हिस्से में बहुत अच्छे फल लगे हुए थे। दिल में आया कि यहाँ से फल तोड़ लूँ। फिर सोचा कि अगले हिस्से में देख लेता हूँ। जब अगले हिस्से में दाख़िल हुआ तो देखा कि वहाँ बहुत अच्छे फल

लगे हुए हैं। दिल में ख़्याल आया कि यहाँ से फल तोड़ लूँ। फिर सोचा कि अगले हिस्से में जाकर तोड़ लूंगा। हो सकता है कि वहाँ और बेहतर हो। जब वहाँ जाकर देखा तो और बेहतर फल लगे हुए थे। दिल में ख़्याल आया कि यहाँ से फल तोड़ लूँ। फिर सोचने लगा, नहीं मैं अपनी टोकरी में सबसे बेहतरीन फल लेकर जाऊँगा। इसलिए अगले हिस्से में देखता हूँ। जब अगले हिस्से में गया तो देखता है कि वहाँ पर बहुत बेहतरीन फल लगे हुए थे। जब आख़िरी हिस्से में दाख़िल हुआ तो कि उस हिस्से के पेड़ों पर फल नहीं लगे हुए थे। वहाँ रोने खड़ा हो गया कि काश! मुझे पता होता तो मैं पहले हिस्सों में से फल तोड़ लेता। आज मेरी टोकरी ख़ाली तो न होती।

ऐ इंसान! तेरी ज़िंदगी की मिसाल ऐसी ही है। तेरा हर दिन तेरे लिए बाग़ का हिस्सा है। तू इसमें से फल तोड़ सकता है यानी नेकी कमा सकता है। लेकिन इंसान यही सोचता है कि मैं आज नहीं तो कल नेकी कर लूंगा। और यही आजकल करते करते आख़िर इंसान को मौत आ जाती है। फिर उसे इतनी मुहलत नहीं मिलती कि अपने घरवालों को वसीयत करे,

﴿اذا جاء اجلهم فلا يستاخرون ساعة ولا يستقدمون.﴾

मौत आ जाती है तो न एक लम्हा आगे न एक लम्हा पीछे होती है। बस इंसान को अपने वक़्त पर जाना होता है। अगर पानी का प्याला हाथ में हो तो इतनी भी तौफ़ीक़ नहीं होती कि वह पानी का प्याला पी ले। यहाँ तक कि आधा सांस अंदर होता है और आधा बाहर होता है और वहीं उसकी रूह को क़ब्ज़ कर लिया जाता है।

एक इंसान की अजीब मौत

सिर्री सक़्ती रह० फ़रमाते हैं कि हम बैठे हुए थे। एक आदमी

आया और पूछता है कि कोई अच्छी जगह है कि जहाँ कोई मर सके। कहने लगे हमने कुँए का रास्ता दिखा दिया कि वह साएदार अच्छी जगह है। कहने लगे, हमारे सामने वह बंदा गया, वुज़ू किया, दो रकअत पढ़ी और लेट गया। हम समझे कि सोया हुआ है। जब नमाज़ का वक़्त हुआ तो उसे जगाया तो देखा कि वह अल्लाह को प्यारा हो चुका है। अल्लाह वाले ग़ैबदान नहीं होते मगर सुन्नतों की बरकत से हदीस में आता है कि मलकुल मौत उनको बता देते हैं कि तुम्हारी मौत का वक़्त क़रीब है।

मौत की याद दिलाने के लिए आदमी मुक़र्रर था

हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु कितनी शान वाले सहाबी हैं। उन्होंने एक आदमी को अपने साथ लगा रखा था और उसको यह कह रखा था कि तुम मुझे कभी-कभी मौत की याद दिलाते रहना। चुनाँचे मुख़्तलिफ़ महफ़िलों में वह मौत का तज़्किरा करते रहते थे। एक दिन आपने उन्हें फ़रमाया, अब आप कोई दूसरा काम कर लीजिए। कहने लगा, हज़रत! क्या अब मौत को याद दिलाने की ज़रूरत नहीं है? आपने अपनी दाढ़ी मुबारक की तरफ़ इशारा किया जिसमें कुछ सफ़ेद बाल आ गए थे। फ़रमाया, ये सफ़ेद बाल मुझे मौत की याद दिलाने के लिए काफ़ी हैं। मुझे इनको देखकर मौत की याद आती रहेगी।

एक हैरान करने वाला मंज़र

पंद्रह बीस साल पहले की बात है कि मैं किसी के सिलसिले में लाहौर गया था। वहाँ एक दोस्त ने मुझे कहा, हज़रत! अगर आपके पास वक़्त हो तो आपको एक चीज़ दिखाना चाहता हूँ। मैंने पूछा, कौन सी? वह कहने लगा, हज़रत! आप वह चीज़ देखकर यक़ीनन

ख़ुश होंगे। लिहाज़ा अगर आप के पास वक़्त है तो मैं आपको लिए चलता हूँ। मैंने कहा, ठीक है चलें। उसने मुझे अपनी गाड़ी पर बिठा लिया और तक़रीबन दस किलोमीटर का सफ़र करने के बाद उसने ब्रेक लगाई। वह ख़ुद भी गाड़ी से नीचे उतरा और मुझे भी कहा हज़रत! आप भी उतर आएं। चुनाँचे मैं भी उतर गया। उसने मुझे वहाँ सड़क के किनारे पर बरगद का एक ऐसा पेड़ दिखाया जो सख़्त आंधी की वजह से जड़ों से उखड़ा हुआ था। मैंने कहा, इस पेड़ की क्या ख़ूबी है? वह कहने लगा, आप ज़रा इसके क़रीब होकर इसकी जड़ों के अंदर देखें। जब मैंने क़रीब होकर देखा तो मैं हैरान रह गया कि उस पेड़ की जड़ों के बीच वाली मिट्टी में नूरानी चेहरे वाले एक दाढ़ी वाले आदमी की मैय्यत दफ़न थी। उस मैय्यत को पेड़ की जड़ों ने चारों तरफ़ से घेरा हुआ था। पेड़ के उखड़ने की वजह से उसकी जड़ों में से मिट्टी गिर गई जिसकी वजह से उसकी मैय्यत नज़र आ रही थी। और मज़े की बात यह है कि उसका जिस्म और कफ़न सही सलामत था, सुब्हानअल्लाह। बाद में ग़ौर किया कि यह पेड़ तक़रीबन एक सौ साल पहले लगाया गया था। जैसे जैसे पेड़ बढ़ता गया उसकी जड़ें उस आदमी की मैय्यत को चारों से तरफ़ से घेरती गयीं। मालूम नहीं कि उस आदमी को उस पेड़ के लगने से कितना पहले दफ़न किया गया था।

अल्लाह वालों की मौत

अल्लाह वालों की मौत भी ऐसी होती है। ख़्वाजा अलाउद्दीन रह० अत्तार थे। इत्र बेचते थे। छोटी-छोटी शीशियाँ रखते थे। एक अल्लाह वाले आए और बड़े ग़ौर से उनकी शीशियों को देखने लगे। यह नौजवान थे। कहने लगे, बड़े मियाँ! क्या देख रहे हो? फ़रमाने लगे कि देख रहा हूँ कि इतनी शीशियों में तुम्हारी जान अटकी हुई है, यह

कैसे निकलेगी? नौजवान थे, गुस्से में आ गए। कहने लगे, बड़े जैसी तुम्हारी निकलेगी वैसे मेरी निकलेगी। जब उन्होंने यह कहा, बड़े मियाँ उसके सामने लेटे और उन्होंने चादर अपने ऊपर ओढ़ ली और कहने लगे कि मेरी तो फिर ऐसे निकलेगी, (لا اله الا الله محمد رسول الله) "ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" यह कहकर सो गए। पहले तो यह इस वाक़िए को यूँ ही समझे जब हिलाकर देखा तो वह इंतिक़ाल कर चुके थे। बस इस वाक़िए से दिल दुनिया से उचाट हो गया। फिर यह बड़े अल्लाह वालों में शामिल हो गए यहाँ तक कि उन्होंने "तज़्किरातुल औलिया" जैसी किताब लिख डाली। अल्लाहवालों की तो ऐसे मौत आ जाती है।

क़ब्र क्या सुलूक करती है?

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० एक बार जनाज़ा पढ़ने गए। अब ज़रा ग़ौर कीजिए क्योंकि यह आजिज़ जो नुक्ता आपके ज़हन में बिठाना चाहता है वह फ़ौरन ज़हन में आ जाएगा। जनाज़ा पढ़ने के बाद क़ब्रिस्तान में एक क़ब्र के पास खड़े होकर उन्होंने रोना शुरू कर दिया। लोगों ने पूछा, हज़रत! आप तो इस जनाज़े के सरपरस्त थे आप पीछे क्यों खड़े हो गए? फ़रमाने लगे कि मुझे इस क़ब्र में से ऐसे आवाज़ महसूस हुई जैसे यह मेरे साथ बात कर रही हो। लोगों ने पूछा कि क़ब्र ने आपके साथ क्या बात की? फ़रमाने लगे कि क़ब्र ने मुझसे यह बात की कि ऐ उमर बिन अब्दुल अज़ीज़! तू मुझसे यह क्यों नहीं पूछता कि जो बंदा मेरे अंदर आता है तो मैं उसके साथ क्या सुलूक करती हूँ? मैंने कहा, बता दो। क़ब्र कहने लगी कि मैं उसके साथ यह सुलूक करती हूँ कि :

उसका गोश्त खा जाती हूँ,

उसकी उंगलियों के पोरों को उसके हाथों से जुदा कर देती हूँ,
उसके हाथों को उसके बाज़ुओं से जुदा कर देती हूँ,
उसके बाज़ुओं को उसके जिस्म से जुदा कर देती हूँ,
यूँ उसकी हड्डियों को जुदा करके उनको भी खा जाती हूँ।

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० फ़रमाने लगे कि जब क़ब्र ने यह बात कही तो मुझे रोना आ गया।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक़्क़ार 10/179)

क़ब्र में अज़ाबे इलाही के मंज़र

यह वाक़िआ इस आजिज़ ने एक बार एक मुल्क में सुनाया। उस महफ़िल में पीएचडी डाक्टर, एमबीबीएस डाक्टर और साइंसदान क़िस्म के लोग बुलाए गए थे। महफ़िल के ख़त्म पर एक साइंसदान साहब मेरे पास आए और कहने लगे, हज़रत! क्या आप ने यह वाक़िआ किसी किताब में पढ़ा है? मैंने कहा, जी हाँ। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० का यह वाक़िआ हज़रत शेख़ुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करिया रह० ने फ़ज़ाइले सदक़ात में भी नक़्ल फ़रमाया है। जब ऐसे ठोस बुज़ुर्ग कोई वाक़िआ नक़्ल करें तो वह सही होगा।

वह कहने लगे, हज़रत! क्या आप यह सब अपनी आँखों से देखना चाहेंगे? मैंने कहा, भई! आपका क्या मतलब? वह कहने लगा, हज़रत! ये चीज़ें यहाँ एक जगह आँखों से देखी जा सकती हैं। मैं उसकी बात सुनकर बड़ा हैरान हुआ। वह कहने लगा, हज़रत! आप तीन घंटे फ़ारिग़ करें और मैं आपको ले जाकर ये सब मंज़र आँखों से दिखाऊँगा। मुझे और हैरानी हुई। मैंने कहा ठीक है, कल चलेंगे।

अगले दिन वह डाक्टर साहब वक़्त पर ही आ गए और हमें एक

म्युज़ियम में ले गए। उस म्युज़ियम में के अंदर उन काफ़िरों ने कैमिकल लगी हुई लाशें रखी हुई थीं। इस स्टेज पर बैठकर मैं यह बात बड़ी ज़िम्मेदारी से कह रहा हूँ। मैं बावुज़ू हूँ और सौ फ़ीसद सही बात कह रहा हूँ। उन्होंने उस म्युज़ियम में शीशे के कमरे बनाए हुए थे।

जब पहले कमरे में गए तो उसके दरवाज़े पर लिखा हुआ था कि जब इंसान मरता है तो उसकी यह हालत होती है। जब हम अंदर गए तो हमें एक लाश नज़र आई जिस पर उन्होंने कैमिकल लगाकर उसे हर चीज़ से बचाया हुआ था। इसको हनूत (कैमिकल) शुदा लाश कहते हैं। इंगलिश में इसको ममी कहते हैं। उन्होंने कहा कि जब कोई बंदा मरता है तो वह इस हालत में होता है। हमने इसको कैमिकल लगाकर यहाँ रख दिया है। हम उस लाश को देखकर हैरान हुए।

फिर वह दूसरे कमरे में ले गया। वहाँ एक प्लेट पर लिखा हुआ था कि यह आदमी मरा। हमने इसको क़ब्र में डाला और कुछ दिनों के बाद हमने क़ब्र को खोला और जिस हालत पर हमने इसकी लाश को पाया, हमने उसी हालत में इस पर कैमिकल छिड़क कर यहाँ रख दिया है। हमने जब उस बंदे को देखा तो उसका बाक़ी सारा जिस्म ठीक था मगर उसकी दोनों आँखों के ढेले ढुलककर उसके गालों पर आ चुके थे। और उनमें कीड़े पड़ चुके थे। मालूम हुआ कि क़ब्र के अंदर बंदे के जिस्म में जो सबसे पहली तब्दीली आती है वह यह है कि आँखों के ढीले ढुलक कर गालों पर आ जाते हैं और उनमें कीड़े पड़ जाते हैं। जिन आँखों से ग़ैरुल्लाह को मुहब्बत की नज़र से देखता था उन पर सबसे पहले कीड़े चिपटते हैं। गोया अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि मेरे बंदे! तेरी आँखें क़ाबू में नहीं थीं। तू ग़ैरुल्लाह को चाहतों और मुहब्बतों से देखता था मगर यह हक़ तेरे परवरदिगार का था लेकिन तुझे ग़ैर-महरमों के चेहरे अच्छे लगते थे। तो जो आँखें ग़ैर-महरमों को मुहब्बत की नज़र से हवस के साथ देखती फिरती हैं,

क़ब्र में सबसे पहले इन्हीं आँखों को कीड़े खाएंगे। उसके बाद तीसरे कमरे में गए। उस कमरे में पड़ी हुई एक लाश की आँखों के ढेले को भी कीड़ों ने खा लिया था मगर अब उसके होंठों को भी कीड़े खा चुके थे। सिर्फ़ दांतों की बतीसी नज़र आ रही थी। इसके अलावा बाक़ी लाश ठीक थी। तो दूसरी तब्दीली यह आई कि उसके मुँह में कीड़े पड़ गए और कीड़ों ने होंठों को खा लिया जिसकी वजह से दूर से दांत नज़र आ रहे थे। ग़लत मुहब्बत भरी बातें करता, अब दूसरे नंबर पर उसकी ज़बान को कीड़ों ने खा लिया।

फिर हम चौथे कमरे में गए। हमने वहाँ भी देखा कि आँखों से ढेले निकले हुए और कीड़ों ने उनको खा लिया था और ज़बान को भी कीड़ों ने खा लिया था। इसके अलावा हमने देखा कि उसका पेट प्याले की तरह बना हुआ है। और उस प्याले के अंदर कीड़े पड़े हुए हैं। जिस पेट में हराम डालता था उसमें कीड़े पड़ चुके थे और उसे खा रहे थे। फिर अगले कमरे में देखा कि कीड़ों ने फैलना शुरू कर दिया था। आख़िर एक ऐसे कमरे में गए जहाँ कीड़ों ने जिस्म का पूरा गोश्त खा लिया था सिर्फ़ हड्डियाँ मौजूद थीं। फिर अगले कमरों में हड्डियों के बोसीदा होने की हालत को देखा। और जब हम आख़िरी कमरे में पहुँचे तो वहाँ लिखा हुआ था कि जब हमने इस क़ब्र को खोदा तो सिर्फ़ रीढ़ की हड्डी का इतना हिस्सा बाक़ी मिला था, बाक़ी सब हड्डियों को भी कीड़ों ने खा लिया था।

ये सब मामलात इंसान को क़ब्र के अंदर पेश आते हैं। हमारी किताबों में लिखा हुआ था और उस मुल्क के काफ़िरों ने क़ब्र में जो तब्दीली देखी उसे ममी की हुई लाशों की सूरत में लोगों के लिए नुमाइश बनाया हुआ था। मगर वह कौनसी लाशें होती हैं जिनको मिट्टी और कीड़े नहीं खाते। ये उन लोगों की लाशें होती हैं जो गुनाह करते हैं। क्यों उनके अंदर गुनाहों के असरात होते हैं। इसलिए

मिट्टी और कीड़े उनकी लाशों को खाते हैं। और जो लोग गुनाहों से बचते हैं और अल्लाह के हुज़ूर पेश होते हैं क्योंकि उन्होंने अपने इल्म और इरादे से गुनाह नहीं किया होता इसलिए उनकी लाशें कब्रों में भी महफ़ूज़ रहती हैं। अंबिया किराम के बारे में तो हदीस पाक में आया है कि अल्लाह तआला अंबिया किराम के जिस्मों को ज़मीन पर हराम कर दिया। इसी तरह जो अंबिया किराम के वारिस होते हैं और गुनाहों से अपने जिस्मों को बचाते हैं क्योंकि उनके जिस्मों में गुनाहों की गंदगी नहीं होती इसलिए जब उनके जिस्मों को कब्रों में रख देते हैं तो अल्लाह तआला की ज़मीन उनके जिस्मों को भी नहीं गला सकती और कीड़े भी उनके जिस्मों में नहीं पड़ सकते। इसीलिए कुछ औलिया अल्लाह के जिस्म को भी नहीं गला सकती और कीड़े भी उनके जिस्मों में नहीं पड़ सकते। इसीलिए बाज़ औलिया अल्लाह के जिस्म कब्रिस्तान की खुदाई के वक़्त बिल्कुलसही सालिम पाए गए। क्योंकि उनके जिस्म में गुनाहों के असरात नहीं थे।

(ख़ुत्बात ज़ुलफ़ुक्कार 10/180-182)

मौत के वक़्त अल्लाह की तरफ़ इनाबत (तवज्जोह)

हमारे सिलसिले नक़्शबंदिया के एक बुज़ुर्ग गुज़रे हैं हज़रत मौलाना हुसैन दाँफिजराँवाले, हज़रत ख़्वाजा सिराजुद्दीन रह० से ख़िलाफ़त पाई हालाँकि हज़रत ख़्वाजा सिराजुद्दीन रह० उनके शागिर्द थे। उनसे पढ़ते थे। यह भी ख़ुलूस देखिए हमारे बड़ों में इख़लास की इससे बड़ी मिसाल क्या होगी कि जिसको किताबें पढ़ा रहे हैं ख़ुद उसी से बैअत हो रहे हैं सुलूक सीखने के लिए। बड़ों के छोटों से फ़ैज़ उठाने की बेहतरीन मिसाल इस दौर में इससे बड़ी नहीं मिल सकती। उनसे ख़िलाफ़त पाई लेकिन अल्लाह तआला ने मक़ाम बड़ा दिया था। हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही रहमतुल्लाहि अलैहि के शागिर्द

थे। बड़ी निस्बत थी, बड़े भारी आलिम थे लेकिन जब उनका आख़िरी वक़्त आया तो हज़रत की कैफ़ियत थी कि जो भी उनसे मिलने आता। वह इस उससे मुसाफ़ा करते और मुसाफ़ा करके हालचाल पूछते और हालचाल पूछने के बाद फ़रमाते कि देखो! मेरी अल्लाह तआला से मुलाक़ात का वक़्त क़रीब है। आपने भी तैयारी करनी होगी, मैंने भी तैयारी करनी है। अच्छा फिर मिलेंगे और रुख़्सत कर देते। फिर दूसरा आता, मुलाक़ात करते, उसका हाल पूछते और फिर यही फ़रमाते मेरा अल्लाह तआला से मुलाक़ात का वक़्त क़रीब है। मैंने भी तैयारी करनी है आपने भी तैयारी करनी होगी। अच्छा फिर मिलेंगे। कई महीने यही मामूल रहा। शौक़ और इश्तियाक़ इतना बढ़ गया था, सुब्हानअल्लाह। जब कोई परिन्दे को आज़ाद करने लगे ना और परिन्दा देखा कि दरवाज़ा खुलने लगा है तो परिन्दा फड़कता है। ऐसी उनकी कैफ़ियत थी, हालत थी कि मेरा अल्लाह तआला से मुलाक़ात का वक़्त क़रीब है। हमने कभी इस अंदाज़ से सोचा कि मेरा अल्लाह तआला से मुलाक़ात का वक़्त क़रीब है?